

१९४५ ई०
२००१ सं०

सम्पादक—

वार्षिक मूल्य
विदेश ७शि.

विषय सूची

सार्वदेशिक का फर्वरी अङ्क सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लासाङ्क होगा।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष २० | जनवरी १९४५ ई०] | पौष २००१ | दयानन्दाब्द १२१ | अङ्क १२

* वैदिक प्रार्थना *

ओ३म् अस्य ते सख्ये वयं तवेन्दो द्युम्न उत्तमे। सासह्याम पृतन्यतः॥ ऋ ९।६१।२९

अर्थ—(इन्दो) हे चन्द्र के समान सबको आनन्दित करने वाले परमात्मन्! (वयम्) हम भक्त (अस्य ते सख्ये) इस तेरी मित्रता में और (तव उत्तमे द्युम्ने) तेरे श्रेष्ठ प्रकाश मय ज्ञान तथा कीर्तिगान में तत्पर रहकर (पृतन्यत सासह्याम) आन्तरिक और बाह्य शत्रुओं का मुकाबला करें। उन्हें परास्त करें।

विनय—हे आनन्दमय तथा आनन्दप्रद परमेश्वर! हम तुझ सर्वशक्तिमान् को अपना मित्र बनाते हैं तेरे ही उत्तम प्रकाशमय ज्ञान में हम रहना चाहते हैं। तू हमे ऐसी शक्ति दे जिससे हम काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, अहङ्कारादि आन्तरिक तथा बाह्य विरोधियों से जो हमारे ऊपर आक्रमण करना चाहते हैं पूर्णरूप से विजयी हो सकें। तुझ सर्वशक्ति सम्पन्न प्रभु के मित्र और सेवक हम भक्तों को ससार मे कौन दबा सकता है, तेरी मित्रता में रहते और तेरे यश का गान करते हुए हम सदा विजयी बनें यही हमारी प्रार्थना है।

वैदिक सुभाषितामृत

(नवम्बर १६५४ के अङ्क से आगे)

(५१) त्व नृभिर्हव्यो विश्वधा असि ॥ ऋ. ७।२२।७

अर्थ—हे! परमात्मन् ,(त्वम्), तू (नृभिः हव्य) सब मनुष्यों से, स्तोतव्य व उपासनीय और (विश्वधा असि) सारे संसार को धारण करने वाला है।

(५२) न त्वावा अन्योदिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ॥ ऋ ७।३२।२३

अर्थ—हे परमात्मन् । (त्वावान्) तेरे समान कोई (दिव्य) दिव्य पदार्थ (न) नहीं (पार्थिव न) कोई भौतिक प्राणी वा पदार्थ भी तेरे समान नहीं (न जात) न कोई तेरे समान अब तक हुआ है (न जनिष्यते) न कभी होगा— तू अनुपम है।

(५३) साधन्नृतेन धिय दधामि ॥ ऋ ७।३३।७

अथ— मै (ऋतेन साधन्) सत्ययज्ञ और ज्ञान पूवक साधना करता हुआ, (धिय दधामि) शुद्ध बुद्ध को अपने अन्दर धारण करता हू।

(५४) युयात विश्वग् रपस्तनूनाम् ॥ ऋ. ७।३४।१३

अथ—(तनूनाम्) शरीरों के (रप.) मल को वा विकार को (विश्वक्) चारों ओर स भली भाति (युयात) दूर करो। अपने का सवथा निमल और पवित्र बनाओ।

(५५) श नश्चतस्र प्रदिशोभवन्तु ॥ ऋ. ७।३५।८

अथ (चतस्र प्रदिश) चारां दिशाएँ (न) हमारे लिये (श भवन्तु) शान्ति देने वाली होवें।

(५६) इन्द्रेण युजा तरुषेम वृत्रम् ॥ ऋ ७।४८।२

(इन्द्रेण)अपने बलशाली आत्मा और सर्वैश्वर्य-सम्पन्न परमात्मा की सहायता से हम (वृत्रम्) अज्ञान तथा पाप का (तरुषेम) नाश करें।

(५७) विश्वे देवास समनसो जुषन्त ॥

ऋ ७।५२।३

अर्थ—(विश्वे) सब (देवास) सत्यनिष्ठ ज्ञानी लोग (समनस) समान रूप से अपने मनों को मिलाकर (जुषन्त) परस्पर प्रेम करें और शुभ यज्ञादि का सेवन करें।

(५८) ऋतस्य मित्रावरुणा पथा वाम् अपो न नावा दुरिता तरेम ॥ ऋ ७।६५।३

अर्थ—हे (मित्रावरुणा) सब के मित्र और श्रेष्ठ गुण युक्त अध्यापक और उपदेशक महानुभावों हम (वाम्) आपके बताये (ऋतस्य पथा) सत्य के मार्ग द्वारा (नावा अप इव) जैसे नौका से पानी का पार किया जाता है वैसे (दुरिता तरेम) सब पापों और बुराइयों को पार करें।

(५९) देवस्य श्लोक सवितुर्मनामहे ॥ ऋ ७।८२।१०

अर्थ—हम (सवितु देवस्य) सारे जगत् के उत्पादक सब प्रकाशक और आनन्दप्रद भगवान् की (श्लोकम्) कीर्ति का—महिमा का (मनामहे) सदा मनन करते हैं—उसका ध्यान करते हैं।

(६०) प्रपूषण वृणीमहे युज्याय पुरुवसुम् ॥

ऋ ८।४।१५

अर्थ—हम (युज्याय) मित्रता के लिये (पूषणम्) सबको पुष्ट करने वाले (पुरुवसुम्) बहुत अधिक ज्ञानादि ऐश्वर्य वाले परमात्मा को (वृणीमहे) वरण करते हैं—ज्ञान तथा भक्ति-पूर्वक स्वीकार करते हैं।

(६१) मामेम माघमिष्मोमस्य सख्ये तव ॥

ऋ. ८ ४।७

अर्थ—(उग्रस्य तव) अत्यन्त तेजस्वी और दुष्टो के लिये भयङ्कर तेरी (सख्ये) मित्रता में हम (मा भेम) न डरें और (मा श्रमिष्म) न थकें। परमात्मा को अपना मित्र बनाकर हम निर्भय और शक्तिशाली बन जाएँ।

(६०) येषामिन्द्रस्तेजयन्ति ॥ ऋ ८।१६।५

अर्थ—(येषाम्) जिनका (इन्द्र) आत्मा बलवान् है और सर्वैश्वर्यसम्पन्न परमात्मा सहायक है (ते जयन्ति) वही विजय पाते हैं।

(६३) एष इन्द्रो वरिवस्कृत्। ऋ ८।१६।६

अर्थ—(एष) यह (इन्द्र) परमेश्वर (वरिव कृत्) उत्तम कल्याण करने वाला है।

(६४) इन्द्रो मुनीना सखा ॥ ऋ ८।१७।१४

अर्थ—(इन्द्र) परमेश्वर (मुनीनाम) मनन अथवा विचारशील मनुष्यों का (सखा) मित्र व सहायक होता है।

(६५) इन्द्र जैत्राय हर्षया शचीपतिम्

ऋ ८।१५ १३

हे मनुष्य। (शचीपतिम्) शुद्ध बुद्धि और कर्मों के पालक (इन्द्रम्) परमेश्वर को (जैत्राय) काम क्रोधादि आन्तरिक और दुष्ट शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिये (हर्षय) प्रसन्न कर= अपने पवित्र आचार विचार और व्यवहार से सन्तुष्ट कर।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति

आर्य समाज और ज़िकरे वहदत

[ले० प० कन्हैयालाल जी मिश्र आर्योपदेशक विदेश प्रचारक बम्बई]

मै सन् १९३९ मार्च मास में बिलोचिस्थान तथा अरबिस्थानादि मुस्लिम देशों की यात्रा करने निकला। कराची से २४ घंटे का जहाज़ी मार्ग पार कर मैं पसनी नामक बन्दरगाह मे पहुचा जहाज समुद्र के बीच खड़ा कर दिया गया। क्योंकि इस बन्दरगाहमें जेट्टी न थी इस जहाज पर खान क़लात का फरनीचर लन्दन से आया था जो उतारा जाने लगा। पसनी से सेठ गिरधारीमल तुलसीदास के मुनीमजी किश्ती लेकर मुझे उतारने आये थे। खान क़लात के मैनेजर से मैने भेंट की और अपने उतरने की इच्छा प्रकट की। जब वे समझ गये कि मैं वैदिक मिशनरी हूँ उन्होंने उसी समय शाही फरनीचर उतरवाना रुकवा दिया और मुझे जहाज से उतार किश्ती पर बिठला दिया। मै किश्ती पर बैठ कर किनारे आया। इमीग्रेशन आफीसर ने मेरा सामान देखना प्रारम्भ किया, जब उनको पता चला कि मै वैदिक मिशनरी हू उन्हों ने भी मेरा एक ही ट्रंक देखा था पश्चात् सब सामन पर पास का चिन्ह लगा दिया। वे बोले "मिशनरी से कभी आशा नही की जासकती कि इस के पास कोई खतरनाक वस्तु हो" मैं वहाँ से उक्त सेठजी के फर्म में लाकर ठहराया गया।

यह बन्दरगाह लगभग १०० वर्षों से बसा है और इस में लगभग १ हजार बिलोची मुसलमान बसे हैं जो मछली मारने का काम करते हैं। वहा पर किसी अन्य वस्तु की उपज नहीं है। केवल मछलियों का ही व्यापार है। खान क़लात की ओर से यहाँ पर एक अँगरेजी स्कूल है तथा मस्जिद में एक पेश इमाम है। कुल छै दूकानें सिन्धी हिन्दुओं की है। जिन्हों ने वहा पर एक देवी का मन्दिर बनवा रखा है। उस मन्दिर में भैरव तथा राम कृष्ण आदि की भी मूर्तियाँ रखी हैं। इसी मन्दिर मे मेरी नित्य रात्रि के समय दो घण्टा गीता की कथा का प्रबन्ध हुआ। हिन्दुओं के अतिरिक्त लगभग ३०० बिलोची मुसलमान भी कथा सुनने आते थे जो मन्दिर के बाहिर के भाग मे बैठते थे। मै जिस कमरे में ठहराया गया था उसी कमरे में मेरे साथ हाजी दुर्रा साहब जो मकरान के रहने वाले थे ठहरे थे। वे सीधे हज्ज करके लौटे थे वे भी मेरी कथा नित्य रात्रिमें सुनने आया करते थे। एक रात्रि को लौट कर वे मुझसे "ईश्वर एक है और उसे पैगम्बर की आवश्यकता है कि नहीं" विषय पर रात एक बजे तक बातचीत करते रहे। जब उन्हों ने समझ लिया कि पैगम्बर की आवश्यकता नहीं तब वे बोले 'पण्डित साहब! आप यदि मुझे आज से पाँच मास पूर्व मिले होते तो मै हज्ज करके ५००) न बरबाद न करता। मैं कल आप को एक मौलवी से मिलाऊँगा जो मोहम्मद साहब को पैगम्बर नहीं मानते और हज्ज करना पाप समझते हैं।"

दूसरे दिन मैंस्नान सन्ध्या तथा हवनादि से निवृत्त हो सेठ जी के पास बैठा था कि इसी बीच हाजी दुर्रा साहब एक मौलवी सा० को साथ लिये तथा साथ और भी ३० व ४० मुसलमान थे मेरे पास आ गये। हाजी दुर्रा साहब ने आगन्तुक मौलवी का परिचय दिया। मैने उनसे पूछा "आप किस मजहब को मानते हैं?" मौलवी सा०—"हम जिकरे वहदत को मानते

हैं।" मैं 'आप निमाज दिन व रात्रि मे कितनी बार पढ़ते हैं ?" मौलवी हम निमाज पढना पाप समझते हैं बल्कि हमारा यह भी विश्वास है कि निमाज पढ़ने वाले सीधे दोजख की आग में जलाये जायेंगे।' मैं "आप ईश्वर का स्मरण किस प्रकार करते हैं ? मौलवी साहब ने "जिकरे वहदत" ट्रेक्ट मेरे हाथ में देकर कहा 'हम इस को पढ़लेते हैं यही हमारे लिये प्रार्थना की पुस्तक है" मैं—"आप इस प्रार्थना पुस्तक को काबे की ओर मुँह करके पढ़ते होंगे ? मौलवी सा० "आप काबे का अर्थ क्या समझते हैं ?" मैं-मक्का में काबा नामक पवित्र मन्दिर है ससार के सारे मुसल्मान उसी की ओर मुँह के निमाज पढते है' मौलवी सा० "नहीं आप ठीक नहीं जानते 'ओ आर्वदम बखानये काबा रब्बे जलील' यह कुरान की आयत है इस में काबा का अर्थ तरफ से है न कि उस स्थान से कि जहा पर ठग मुल्लों ने ससार को लूटने के लिये स्थान बना रखा है" मैं "क्या आप का हज्ज पर विश्वास है ?" मौलवी सा०—"नहीं, हज्ज करने वाले भी दोजख मे जायेंगे। हज्ज भी धोखे की टट्टी है" मैं-'क्यों साहब ? आप जो जिकरे वहदत नामक पुस्तक काबे की ओर मुँह करके नहीं पढ़ते तो फिर किस ओर मुँह करके पढते हो ?' मौलवी सा०-'वल लिल्लाहिल वल मगरिब वल मशरिक फआईनुमा तवल्लु फसुम्मा व जुल्लाहे" परमात्मा चारों ओर उपस्थित है। हम जिधर उस की प्रार्थना करेंगे वह उधर ही स्वीकार करेगा। यह आयत कुरान शरीफ की है और हम इसी आधार पर किसी ओर भी मुँह करके पुस्तक को पढ़ा करते हैं। यही हमारी प्रार्थना है" मैं-"आप मोहम्मद सा० को पैगम्बर मानते हैं" ? मौ० साहब—"नहीं हम नूरे पाक नूरे मोहम्मद मेहदी को पैगम्बर मानते हैं, नूर पर्वत पर हजरत मूसा को खुदा ने अग्नि के रूप में दर्शन दिया था उसमें आग की लपटें उठी थीं उसी का नाम नूरे पाक नूरे मोहम्मद मेहदी है और वही बिना शरीर वाला हमारा पैगम्बर है। मोहम्मद को पैगम्बर माननेवाले दोजख मे जायेंगे" मैं—लाइलाहा इल्लिलल्ल, मोहम्मदुल रसूलल्ला क्या यह कलमा कुरान शरीफ का है ? यदि है तो इसमें दूसरे फिकरे मे लिखा है "मोहम्मद रसूल पैगम्बर है" आप फिर मोहम्मद सा० को पैगम्बर क्यों नहीं मानते ?' मौ० सा० ने मेरे हाथ से जिकरे वहदत नामक पुस्तक लेकर इस आयत को निकालकर यों पढा "ला इलाहा इलल्लिला, नूरे पाक नूरे मोहम्मद मेहदी रसूलल्ललाः।' हम इसको इस प्रकार पढ़ते हैं। मैं-"मोहम्मद शब्द साथ यह चार शब्द कहाँ से आये" मौ० सा० "यह चार शब्द हमारे पेशे इमाम ने लगाये हैं" मैं "क्या आप कुरान शरीफ को खुदा का कलाम मानते हो ? यदि खुदा का कलाम है तो इसमें चार शब्द खुदा के सिवा कोई नहीं मिला सकता। क्योंकि वह पूर्ण है इस कारण उसका ज्ञान भी पूर्ण है जब उसका ज्ञान पूर्ण है तो यह चार शब्द मिल ही नहीं सकते यदि ऊपर से शब्द मिलाये जा सकते हैं तो कुरान शरीफ खुदा का कलाम नहीं हो सकती।"मौ० सा०-"पंडित साहेब। आप को जान लेना चाहिये कि वर्तमान कुराने शरीफ जिस तरतीब से छपी है यह तरतीब खुदा द्वारा भेजी हुई तरतीब नहीं है किन्तु हजरत अबूबक्र रदी अल्लाहो अनहुम तथा हजरत उमर ने खुदा की दी तरतीब को बदल कर अपनी इच्छानुसार तरतीब लगाई जिस तरतीब से अब कुरान शरीफ छप रही है। जिस आयत को आपने पढ़ा बेशक नहीं किन्तु दो आयतें प्रथम थीं उस समय के

पेशे इमामोंने इन दोनों आयतों को एक स्थान पर कर दिया। क्यों पण्डित सा०। इन निमाजी मुसलमानों के पेशे इमाम कुरान की सारी तरतीब जो खुदा द्वारा प्राप्त हुई थी परिवर्तन कर अपनी इच्छानुसार लगा कर भी कुराने शरीफ को खुदा का कलाम मान रहे हैं। यदि हमारे पेशे इमाम ने केवल चार शब्द केवल एक आयत में बढ़ा दिये तो फिर कुरान शरीफ खुदा का कलाम क्यों नहीं हो सकती ? क्या आप ऐसा ही न्याय करेंगे ?" मैं ने जो वहाँ पर निमाजी मुसल्मान बैठे थे उनसे पूछा 'क्यों साहब ? क्या सचमुच हजरत अबू बकर र्दी अल्लाहो अनहुम ने खुदा की तरतीब को बदल कर अपनी इच्छानुसार तरतीब लगाई थी" सबने कहा "जी, हाँ" मैं-"मौलवी साहब जो वास्तव मे खुदा का कलाम है उसकी तरतीब न कोई बदल सकता है और न उसमें कोई पाई और मात्रा भी बढ़ा सकता है। आप लोगों की बातों से पता चला कि वर्तमान कुरान शरीफ की तरतीब वास्तविक तरतीब नहीं, और आपके पेशे इमाम एक आयत मे चार शब्द मिला रहे हैं। इन दोनों दशाओं में कुरान शरीफ कलामे इलाही इलहाम या ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकती। दोस्तमन। ईश्वरीय ज्ञान वेदे मुक़द्दस है जो २९७२९४९०३१ वर्ष से अब तक एक दशा में चला आ रहा है। आज तक इसमें कोई एक पाई या मात्रा भी नहीं मिला सका और न किसी प्रकार का परिवर्तन ही कर सका। वास्तव में वेदे मुकद्दस ही ईश्वरीय ज्ञान है। इसको मानो, इस पर विश्वास लाओ।" मौ० सा० तथा उपस्थित मुसलमान सब हँसने लगे।

मैं-"क्यों सा०। जिकरे वहदत कबसे चला ? इसका इतिहास क्या है ?" मौलवी क्यार खान-स० १९२४ में मकरान प्रान्त के मौलवी मोहम्मद खान नामक बिल्लोची हज्ज करके किराची उतरे किराची में सन्ध्या समय एक तमाशा जा रहा था जिस तमाशे मे चार गाड़ियाँ थीं जिन गाड़ियों पर लोग बैठे हारमोनियम के साथ गजल व कव्वालियाँ गा रहे थे जिसमे कहते थे मोहम्मद पैगम्बर नहीं, हज्ज करना पाप है, रोजा रखना व भूखा मरना गुनाह है, उठना बैठना निमाज पढ़ना भी पाप है। परन्तु वे लोग ऐसे मीठे राग से गा रहे थे कि हाजी मोहम्मद खान मुग्ध हो गये और साथ साथ घूमने लगे। इस बीच एक किराची के मुसलमान ने उनका हाथ पकड़ा और कहा 'मियाँ। कहाँ घूम रहे हो ? यह सब खुदा को नहीं मानते, काफिर है न हिन्दू हैं न मुसलमान। इनका खुदा शैतान है आप अपना रास्ता लीजिये' वे उनकी बात सुन चल दिये। जब वे मकरान पहुँचे तब उनके मनमें वे विचार गूंजने लगे जिन्हें वे किराची से सुन कर आये थे। उन्होंने अपने छै साथी और बनाये, अब यह वहदानियत (एकेश्वर वाद का) का प्रचार करने लगे दुजदाब के पास एक छोटी रियासत है जिसका हाकिम एक सुन्नी मुसलमान है। उसने जब इन मौलवियों के प्रचार का समाचार सुना तब उनको दरबार में बुलाकर समझाया कि वे लोग हजरत मोहम्मद के विरुद्ध जहाद न उठावें परन्तु उन लोगों ने न मानी। अन्त में उन सातों मौलवियों को जमीन में आधा गड़वा कर सगसार किया गया जिससे वे सातों स्वर्ग को सिधारे। इन सातों मौलवियों के बलिदान का फल यह हुआ कि सारे बिलोचिस्तान में अग्नि के समान यह समाचार फैला और इस समय बिलोचिस्तान के बड़े बड़े रईस और जमीदार तथा व्यापारी व साधारण प्रजा लगभग पचास हजार जिकरे वहदत के मानने वाले हैं। बल्कि सिन्ध प्रान्त में भी हमारे मजहब के मुसल-

मान दस हजार हैं जिकरे वहदत नामक पुस्तक के लेखक किराची निवासी मौलवी नूर मोहम्मद साहब हैं"

पाठकगण ! अब आपने यह समाचार पढ़कर समझ लिया होगा कि सन १६२४ में आर्यसमाज के नगर कीर्तन को ही हाजी महमूद खान ने देखा और भजनीकों के भजन सुने होंगे जिसके फल स्वरूप उन्होंने जिकरे वहदत का जन्म दिया।

सिन्ध के मुसलिम लीगी मिनिस्टरों को समझ लेना चाहिये कि अब सत्यार्थ प्रकाश उनके पीछे जिकरे वहदत के रूप में चिपट गया है जो जिकरे वहदत केवल भारत व विलोचिस्तान में ही नहीं है किन्तु अरब और ईरान में भी मैंने उसका प्रचार देखा है किसी कवि ने सच कहा है –

सदाकत का हर आलम में शोहरा हो ही जाता है
जो सुनता है और समझता है वह शैदा हो ही जाता है ॥

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति

चौदहवां समुल्लास

[लेखक—श्री प० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० प्रधान संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा]

आजकल सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास की धूम है। जिधर देखो इसी का पाठ होता है। किसी साप्ताहिक सत्सग में चले जाइये, चौदहवा समुल्लास पढ़ा जा रहा है, किसी पत्र को उठाइये चौदहवें समुल्लास की आलोचना। कुछ लोग तो चौदहवें समुल्लास को कण्ठ करने लगे हैं। अब तक तो यह विचारा सत्यार्थप्रकाश के एक कोने में पड़ा था, इसकी कहीं माग नहीं थी। कोई मुसलमान मुबाहिस भले पढ़ लेता हो। आर्य्य इसलिये पढते हैं कि इस पर पाबन्दी है, गैर आर्य इस लिये पढते हैं कि कौतूहल है। देखें तो आखिर इस में है क्या? मुझे तो आज इस में कोई विचित्र बात मालूम नहीं होती, विचित्र रहा होगा सन् १८७५ ई० मे। जब तक ऊट पहाड़ के तले होकर नहीं निकला था और अपने को सब से ऊँचा समझा था। आज तो चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ दिखाई देते है। स्वय मुसलमान सुधारकों ने कुरान के सिद्धान्तों की इतनी आलोचना कर रक्खी है कि वह सत्यार्थ-प्रकाश को विजय दुन्दुभी बजाने के लिये पर्याप्त है। जिस सत्यार्थप्रकाश ने मुसलमानों की आखें खोल दीं और अपने घर के निरीक्षण का अवसर दिया उनका गला घोंटने का प्रयास बहुत बड़ी कृतघ्नता है।

हजरत मुहम्मद साहब ने इस्लाम की स्थापना मूर्तिपूजा के विरोध के लिये की थी। इस बात मे वे और ऋषि दयानन्द समान थे। भेद कवल दो थे। प्रथम तो ऋषि दयानन्द मूर्ति भञ्जक न थे केवल विग्रह पूजन के विरोधी थे और वह भी प्रचार और युक्तियों द्वारा। हजरत मुहम्मद साहब और उनके अनुयायी मूर्ति भजन में स्वाद लेते रहे। मूर्ति पूजा वहीं की वहीं रहीं। दूसरे स्वामी दयानन्द उपदेशक थे। ईश्वर के एजेण्ट या बिचौलिया नहीं थे। परिणाम यह हुआ कि पैगम्बर महोदय की कब्र अब तक पूजी जाती है और उनके अनुयायी पीर, खलीफा, शहीद सैकड़ों की कब्रें कुरान की तलावत और नमाज का स्थान बनी हुई हैं। किसी कब्रस्तान में चले जाइये लोग सिर टेकते मिलेंगे मानों उन में खुदा के एजण्ट दबे सोये हुये पडे हैं और उनकी प्रार्थना को सुन रहे है। यदि इस पर ऋषि दया-नन्द ने आक्षेप किया तो बुरा ही क्या किया? केवल हजरत मुहम्मद साहब को आरम्भिक शिक्षा की पुष्टि की और असङ्गति को प्रकट कर दिया। देखिये 'पूर्व पक्षी"—हम मुसलमान लोग बुत परस्त नहीं हैं किन्तु बुतशिकन अर्थात् मूर्ति को तोड़ने हारे हैं। क्योंकि हम किब्ले को खुदा नहीं समझते।

उत्तर पक्षी—जिनको तुम बुत परस्त समझते हो वे भी उन उन मूर्तियों को ईश्वर नहीं समझते किन्तु उनके सामने परमेश्वर की भक्ति करते हैं। यदि बुतों को तोड़ने हारे हो तो उस मस्जिद किबले बडे बुत को क्यों न तोड़ा?

पूर्व पक्षी—वाह जी। हमारे तो किबले की ओर मुख फेरने का कुरान मे हुक्म है, और इन को वेद मे नहीं है फिर वे बुतपरस्त क्यों नहीं? और हम क्यों? क्योंकि हमको खुदा का हुक्म बजाना अवश्य है।

उत्तर पक्षी—जैसे तुम्हारे लिये कुरान में हुक्म है वैसे ही इन के लिये पुराण में आज्ञा है। जैसे तुम कुरान को खुदा का कलाम समझते हो वैसे पुराणी पुराणों को खुदा के अवतार व्यासजी का वचन समझते हैं। तुम में और इन में

बुतपरस्ती का कुछ भिन्न भाव नहीं है। प्रत्युत तुम बड़े बुतपरस्त और यह छोटे हैं। क्योंकि जब तक कोई मनुष्य अपने घर में से प्रविष्ट हुई बिल्ली को निकालने लगे तब तक उस के घर में ऊँट प्रविष्ट हो जाय वैसे ही मुहम्मद साहब ने छोटे बुत को मुसलमानों के मत से निकाला परन्तु बड़े बुत जो कि पहाड़ सदृश मक्के की मस्जिद है वह सब मुसलमानों के मत में प्रविष्ट करा दी। क्या यह छोटी बुतपरस्ती है? हां जो हम लोग वैदिक हैं वैसे ही तुम लोग भी वैदिक हो जाओ तो बुतपरस्ती आदि बुराइयों से बच सको अन्यथा नहीं। तुम को जब तक अपनी बड़ी बुतपरस्ती को न निकाल दो तब तक दूसरे छोटे बुतपरस्तों के खण्डन से लज्जित हो के निवृत्त रहना चाहिये और अपने को बुतपरस्ती से पृथक् करके पवित्र करना चाहिये।

[देखो सत्यार्थप्रकाश चौदहवाँ समुल्लास आयत ३०]

अब जरा विचार कीजिये। क्या स्वामी दयानन्दने मुसलमानोंके मुह में कोई ऐसी बात रखदी जिसके वह दावेदार नहीं है? क्या वे बुतशिकनी का दावा नहीं करते? क्या उन्होंने बुत नहीं तोड़े? और क्या वह मस्जिद को उसी प्रकार पूजा या परिक्रमा नहीं करते जैसे मूर्तिपूजक किया करते हैं। मुहम्मद साहब के जमाने में बुतपरस्त लोग उन बुतों को पूजते थे जो काबे में रक्खे हुये थे। अब वह बुत नहीं है परन्तु मस्जिद ही मूर्तिरूप बन गई है। जैसे पहले बुतपरस्त बुतों के सामने सर झुकाते थे और सिजदा करते थे। मुसलमान भी वैसा करते हैं, भेद केवल इतना है कि पहले छोटी मूर्ति के सामने सिजदा करते थे, अब बड़ी मस्जिद के सामने। यह ठीक ही है कि बिल्ली को निकालते २ ऊँट घुस गया। याद रखना चाहिये कि मूर्ति भञ्जन मूर्ति पूजा-भजन नहीं है। एक सम्प्रदाय के मूर्तिपूजक दूसरे सम्प्रदाय के मूर्तिपूजकों की मूर्ति तोड़ने में संकोच नहीं करते। जिसको मूर्तिपूजनी ही है वह तो किसी कंकड़ पत्थर को उठाकर पूजने लगेगा। पौराणिक लोग पीली मिट्टी को ही गणेश समझ लेते हैं, मुसलमानों ने भी यही किया कि मस्जिद में माबूद की भावना करली और उसका पूजने के लिये बड़े बड़े कष्ट उठाकर हर साल पहुँचते हैं। तुम स्वामी दयानन्द की शिकायत करते हो। देखो शम्श तबरेज क्या कहता है—

एक क़ौम बहज रफ्ता कुजा एद् कुजा एद्।
माशूक हमीं जास्त बियायेद् बियायेद् ॥१॥
माशूक तो हम सायेः तो दीवार बदीवार,
दर बादिये सर गश्ता चिराएद् चिराएद् ॥२॥
हे हज को जाने वालो। कहां हो। कहाँ हो।
तुम्हारा प्यारा तो यहीं है।
लौट आओ लौट आओ ॥१॥

तुम्हारा प्यारा तो तुम्हारा पड़ोसी है तुम्हारी उसकी दीवार मिली हुई है।

तुम अरण्य में क्यों भटक रहे हो।

अब थोड़ी सी स्वर्ग की समीक्षा देखिये। स्वामी दयानन्द लिखते हैं—

'मुसलमानों का स्वर्ग गोकुलिये गुसाइयों के गोलोक और मन्दिर के सदृश दीखता है क्यों कि वहाँ स्त्रियों का मान बहुत, पुरुषों को नहीं।

(देखो आयत ६)

इसमें बुरा मानने की क्या बात है? क्या मुसलमान लोग बहिश्त में हूरें नहीं मानते? एक मुसलमान शायर कहता है—

जाहिद वो कौन कहता है यह हक परस्त है।

हूरों पे मर रहा है वह शहवत परस्त है ॥

कहिये। स्वामी जी की समीक्षा कठोर है या मुसलमान समीक्षकों की जिनके मन में हूरों की लालसा बनी रही वे सांसारिक भोगों से वंचित रहकर भी विषयी तो रहे हो। उनको मुक्ति की क्या आशा रखनी चाहिये।

ऋषि दयानन्द ने उनको एक ऐसी बात सुझाई जो निष्पक्ष साधारण मनुष्य भी समझ सकता है, परन्तु **अर्थी दोषं न पश्यति** यदि निष्पक्ष होकर कोई चौदहवें समुल्लास को पढ़े तो कोई ऐसा वाक्य, शब्द या प्रमाण नहीं है जिससे कई गुना कठोर अन्य धर्मों की पुस्तकों में नहीं है।

स्वामी दयानन्द के यह दो वाक्य उनकी निष्पक्षता को सिद्ध करते हैं—

(१) जो धार्मिक हैं वे सुख और जो पापी हैं वे सब मतों में दुःख पावेंगे। (आ० ८)

(२) जो विचार करके देखा जाये तो सब मत वालों में झूठ पाया जाता है और जो सच है वह सब में एकसा यह सब लड़ाइयाँ मूर्खता की हैं।

स्वामी दयानन्द एक पापी आर्य्य को नेक मुसलमान से बढकर नहीं समझते। इसको कहते हैं निष्पक्षता, परन्तु जरा मुसलमानों को देखिये—

मन् अमिल सालिहन् मिन् जकरिन् औ उन्सा व हुव मौमिनुन् फलनुही पे यन्नहू हयातन् तय्यबतन्। (कुरान)

जो कोई शुभ काम करेगा पुरुष हो या स्त्री और वह मुसलमान होगा तो उसको अच्छा जीवन देंगे।

अर्थात् जो मुसलमान न हो उसके शुभ कर्म भी व्यर्थ हैं। कुरान की इसी शिक्षा ने मुसलमानों को पक्षपाती बना रक्खा है। जैसा उन्होंने खुदा को समझा है वैसा ही स्वयं भी आचरण करना चाहते हैं और यही कारण है कि वे अपनी पुस्तकों के बड़े बड़े दोष नहीं देखते और सत्यार्थ प्रकाश जैसी पुस्तक में व्यर्थ का दोष लगाते हैं।

जहाँ कहीं सत्यार्थ प्रकाश में हजरत मुहम्मद साहब की आलोचना की है वह इसलिये कि उनका पैगम्बर होना सिद्ध न हो सके, उनका तात्पर्य मुहम्मद साहब से द्वेष करना नहीं है और समीक्षा तो स्वयं कुरान और हदीसों के शब्दों से ही प्रकट होती है। यदि मुसलमानों को स्वामी दयानन्द की बातें बुरी लगती हैं तो जरा मिश्कात् को उठाकर देखें, वहां ऐसी ऐसी बातें लिखी हैं कि कानों पर हाथ रखना पड़ता है। इधर कुछ दिनों से आर्यों ने मुसलमानी मत की समीक्षा छोड़ दी थी। अब हमको फिर उभारा गया है, अब आवश्यकता है कि स्वामी दयानन्द के शब्दों को मुसलमानी पुस्तकों से तुलना की जाय।

—

देश और हमारा कर्तव्य (२)

[लेखक प० विद्यानंद जी वेदालङ्कार]

यह भारत राष्ट्र कोई असंस्कृत नई जाति नहीं। न ही आधुनिक परिस्थितियों से बन रहा है। यह संसार भर की प्राचीन तम जाति और वृद्धतम सभ्यताओं में से एक है। अपनी मूल-भूत एकता के नियम से एकता की ओर सदा झुकता रहा है। हम में यह भी विश्वास है कि अपने देश (जाति या समाज) का अपने धर्म का प्रेम ही हमें मानवजाति की सेवा के लिये तैयार करेगा। समान—पशु को केवल देखने सुनने (इन्द्रियों से काम लेने) वाला—होने से पशु कहते हैं (पश्यतीति-पशुः)। वह दर्शक-मात्र होकर जीवन बिताता है। वह स्वार्थी होता है। कुछ भोजन, पानी देकर आदमी जरा थपकिया और शाबासी देता है, कि, वह गुलाम और परतन्त्र बुद्धि स्वीकार कर लेता है। आदमी जैसा चाहता है, वैसा काम करा लेता है। वह अपने स्वार्थ के अनुसार अपने पेट और सुख की चिन्ता में परतन्त्र हो जाता है।

परन्तु मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह समाजके साथ रहना चाहता है। वह केवल अपना ही स्वार्थ नहीं देखता। वह संगठित व सामाजिक भावना के कारण १० साथियों के साथ रहना जानता है। उनके दु:ख-रोग-दीनता में उनको अपना समझकर उनके प्रति कर्तव्य पालन करता है। यही दूसरों के प्रति कर्तव्य पालन प्रेम है। यही समाज को संगठन, नियम और धर्म द्वारा बांधकर एक और सभ्य बनाता है। इसीसे परिवार और महान् परिवार देश व राष्ट्र बनता है। परिवार में एक ही भाषा, सभ्यता और परम्परा हो—तब ही वह एक और संगठित रहता है। बड़े परिवार वाले कुलीन कहाते हैं। ये कुलीन पुरुष स्वार्थ पूर्ण पशुता की जगह सामाजिक बुद्धि से एक बड़े परिवार को बसाते हैं। वह नियम, धर्म व प्रेम जो पारस्परिक कर्तव्य पालन में उनको चलाती है—सामाजिक भावना संगठित भावना, सभ्यता और पारिवारिक बुद्धि व कुलभावना कहलाती है। यही बड़े समाज कुल व देश के प्रति लागू होकर राष्ट्रीय भावना कहाती है। जो कुल में एक हो गया है वह कुल के प्रेम में हर एक के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार करता है। सब के सुख दु:ख मे साथ देता है। उसके कुल में हर एक कुल भावना (संकल्प) से परस्पर कर्तव्य पालन करते हैं। किसी में स्वार्थ व व्यक्तिगत आकर्षण नहीं पैदा होता। वह कुल वीर-उत्साही होकर प्रमोद से भरा रहता है, वह अपनी किसी जरूरत के लिये चिन्तित नहीं होता। सब एक दूसरे के भावों में नजदीकी बनते हैं, दु:ख में सेवा करते हैं, सदा एकमत और एकदिल रहते हैं। यही प्रेम है।

विवाह कुल का भार उठाने के लिये होता है। पति-पत्नी के पारस्परिक सुख के लिये नहीं। वह कुल की प्रेम धारा जिसमें वह (हरएक) पला था—उसके दु:ख सुख में हर एक दु:खी सुखी होता था। यह पिता की बस्ती और राज्य ही कुल है। इसे कायम रखना ही पितृ ऋण है। कुल भावना कुल के हर एक को अपना समझने से ही टिक सकती है। कुल के संगठन और अनुशासन (व्रत-वर्ण) से बाहर होने की भावना ही व्यभिचार है। अत: तलाक प्रथा आत्मनिर्णय का अधिकार नहीं—किन्तु व्यभिचार है, पशुता

व स्वार्थ बुद्धि है सगठित जीवन और सामाजिक भावना का न जानना मात्र है। यह ही कुल के प्रति प्र म हमें राष्ट्र प्र म का भी सिखाता है। पाकिस्तान और तल क छ टे और बडे त्र का भेद मा । है। यदि हम वार्थ (व्यक्तिगत भ वना को छ ड़कर नही रह सकते ता हम विसा सगठन और समाज को न ीं बना म त। हमे देश प्र म सीखने के लिय सगठन और अनुशासन की भावना सीखनी हागी। अत गुरुकुल में र ष्ट्र क अ न म पलकर—हम इस सीखते थे। बाद में प्रतिदिन सगठित और अनुशासित जीवन बिताने क लिये अपने कुल क साथ नगर और ग्राम का भी एक और सगठित बनान क लिये किसी स्थान पर सब एकत्रित हाते थे। यह ही हमारी ग्राम पचायतों का जन्म था हम ग्रामों मे एक नेता की आज्ञा मे प्रति दिन—खलते कूदते और ग्राम एव देश के साथ परिवार की तरह एक और सगठित हाते न ते थे इस प्रेम पूण धारा मे प्र म और देश का ऋण चुकान परम कत व्य समझ कर हम त य र हात थ इस प्रकार कत व्य शील सार दश का प्रम सब के प्रति कत व्य पालन करने वाल (आय) घर ग्राम और देश अ य स्थ सेवक) लोगों से आबाद हाकर आर्यावत कहलान लगा। यह आर्यावत को वासन ही दृ प्र म सामाजिक भावना अथवा देश की सभ्यता और स स्कृति की रक्षा थी जिसे देवऋण और पुण्यभूमि का विचार भी कहते हैं।

ग्रामों और नगरों में हम एक परिवार की तरह रहते हैं। ये सारे ग्राम नगर तथा देश और नगर अपने चुने हुए राजा व वरुण के शासन में एक समाज (देश जाति राष्ट्र) बसाते थे।

वतमान आज हमारे देशमें असुरता स्वार्थ व पशुता का राज्य है कुल प्र म नगर तथा देश ईटो क ढेर की तरह बिखरे पडे हैं। कर्तव्य श ल प्रमी स गठित स भ्य और एक जाति समाज एव राष्ट्र की बुद्धि वाले पुरुषों कीकमी है। यही आय त्व का विनाश है।

मै समाज का अ ग ह समाज मेरा शरीर है जैसे पैर में काटा चुभने पर आखों में आसू आजात है जैस परिवार का एक आदमी बीमार पडन पर सारा परिवार च तित हो जाता है। क्यों कि प िवार को हम एक शरीर की तरह समझने हैं। अ गुल कटने क समान किसी के मरने स हम दुखी हो जात हैं। अपने परिवार के किसी का लगा थप्पड अपन को लगा प्रतीत हाता है। यह भाव परिवार से बाहर बहुत कम हाग । है। बल्कि परिव रों में भी ढ ला हा गया है। अत हम अपने स्वाथ में अ ध होकर अपन को ही समझ र व्यक्तिगतभावना से मन क म करते है अ ज देश प्र म या देश के लागों क दु ख सुख क साथ साचन की भावना हमस दूर हो गई है।

र ष्ट्र निर्माण कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अ र्यत्व का पूण विक स मनुष्यता में है। परन्तु छत पर उछल कर नहीं चढ सकते हैं। हमें परिवार प्रेम और दश प्रेम की सीढियों भी चढनी होंगी तब वेद के ज्ञान के स्रोत प्रभु के प्रति प्रेम द्वारा मनुष्यमात्र और प्राणी मात्रके प्रति प्रेम का पाठ पढा जा सकता है। परन्तु गिन्ती सीखन भी गणित का पढना ही है हम ईश्वर क प्रति प्र म और श्रद्धा का ग्राम र और नगर नगर मे प्रथम पाठ पढाना शुरू कर ईश्वर पुत्र (आय) बनायें।

इसी कार्य को पूरा करने के लिए आर्यवीर दल की शाखा में हम रोज इकट्ठे होते हैं। प्रेम में संगठन और अनुशासन का पाठ पढ़ते हैं। दस आदमियों में काम करने के नियम को सीख कर सभ्य और इस संगठन के लिए आवश्यक कर्तव्यों को पूरा करने के लिए त्याग और बलिदान का पाठ पढ़ते हुए हृदय की दुर्बलता को दूर कर वीर और उत्साही बनते जाते हैं। प्रति दिन एक दूसरे के साथ परिचय बढ़ता है। परस्पर आकर्षण पैदा होता है। तब हम किसी के न आने पर वैसे ही छटपटाते हैं जैसे पारबार के किसी के जाने पर हमारी हालत होती है। इस प्रकार प्रतिदिन एक स्थान पर एक साथ खेलते कूदते और विचारते हुए हम बिना अधिक सोचे समझे बदलते जाते हैं। इस प्रकार हम इस राष्ट्रिय धारा की मछली बनते जाते हैं। अब कोई हम में से किसी को हकीकत की तरह छीन नहीं सकता, न किसी का अपमान कर शान्त रह सकता है। यह राष्ट्र का एकता और प्रेम के साथ जीना सिखाने का कार्यक्रम आर्य वीर दल है।

इस्लामी स्वर्ग और सत्यार्थप्रकाश

(लेखक श्री डाक्टर सूर्यदेवजी शर्मा साहित्यालंकार, सिद्धान्त शास्त्री, एम ए एल टी डी लिट्, अजमेर)

जब से मुस्लिम लीग द्वारा सत्यार्थ-प्रकाश की जब्ती का आन्दोलन उठाया गया है और विशेष कर जब से सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार ने सत्यार्थ-प्रकाश के चौदहवें समुल्लास के प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगाया है, तब से भारतीय जनता में और विशेषकर आर्य सामाजिक जगत् में चौदहवें समुल्लास के अध्ययन करने और उनमें की हुई इस्लाम के सिद्धान्तों की समालोचना की ओर लोगों की प्रवृत्ति बहुत अधिक बढ़ गई है। अब जनता इस बात को जानने की इच्छुक है कि क्या स्वामी दयानन्द द्वारा चौदहवें समुल्लास में की गई इस्लाम की आलोचना असत्य और कटु है? अथवा सत्य और ठीक है? हमें यहाँ पर यही विचार करना है कि स्वामी जी की की हुई आलोचना कितनी तथ्य पूर्ण और हितकर हैं।

स्वामी जी महाराज ने चौदहवें समुल्लास में विशेषकर निम्नलिखित बातों पर बल दिया है —

(१) कुरान शरीफ में दिये गये खुदा के गुण वास्तविक ईश्वर के गुण नहीं हैं। (२) कुरान में भूगोल, खगोल और पदार्थ विद्या के विरुद्ध बातें हैं। (३) इसलिये कुरान ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकता। (४) हजरत मोहम्मद और अन्य पैगम्बरों में ईश्वरीय-दूत होने की विशेषताओं का अभाव हैं। (५) कुरान में वर्णित बहिश्त (स्वर्ग) वास्तविक स्वर्ग नहीं। इन बातों में से प्रत्येक पर पृथक् २ तुलनात्मक विचार पूर्ण लेख लिखे जाने की आवश्यकता है। आज तो मैं केवल इनमें से अन्तिम बात पर (इस्लामी बहिश्त) पर ही कुछ प्रकाश डालने का प्रयत्न करूंगा।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश के चौदहवें समुल्लास में इस्लामी स्वर्ग का वर्णन विशेष रूपेण सात स्थानों पर किया है, अर्थात् समीक्षा संख्या ६, १६, ४६, १३२, १४०, १४१ और १५०। इन स्थानों पर स्वामीजी ने इस्लामी स्वर्ग की विशेषकर निम्नलिखित चार बातों की समालोचना की है —

(१) स्वर्ग का कोई विशेष स्थान ऊपर किसी आसमान पर बना हुआ है। (२) उसमें जन्नती बाग है जिसमें बढ़िया २ मेवे और फल हैं तथा बढ़िया दूध, शराब और शहद आदि की नहरें बहती है। (३) बहिश्त में सदा युवती रहने वाली हूरें और मोती सी आँखों और वर्ण वाले लड़के रहते हैं। (४) प्रलय के दिन जो लोग बहिश्त में भेजे जायेंगे वे अनन्त काल तक वहाँ रहेंगे।

ये चारों बातें ऐसी तर्कहीन, विज्ञान, विरुद्ध और नैतिकता-विरोधी हैं कि साधारण युक्ति वाला पुरुष भी उन्हें स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं होगा और उन्हें मानव समाज के लिये हितकर नहीं मानेगा, फिर विश्व कल्याण की भावना से प्रेरित हुआ ऋषि दयानन्द जैसा एक सन्यासी तो मानव समाज की हित की दृष्टि से (किसी साम्प्रदायिक भावना से नहीं) क्यों न उनकी समालोचना करता? सच तो यह है कि ऋषि दयानन्द ही क्या, मुसलमानों में भी जिन विद्वानों ने तर्क-पूर्ण और नैतिक दृष्टि से इन बातों पर

विचार किया है, उन्होंने या तो स्वामीजी से भी अधिक ज़ोरदार शब्दों मे उनका खण्डन किया है, अथवा उनका अर्थ बदल कर उन्हें उस रूप मे मानने से ही इनकार कर दिया है। पहले प्रकार के लोगों में मुसलमानों के स्वर्गीय नेता सर सैयद अहमद खां का उदाहरण ही पर्याप्त होगा। जिन्होंने इस्लामी बहिश्त के विषय में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "तफसीरुल कुरान" के भाग १ पृष्ठ ४२ पर लिखा है —

"यह समझना कि जन्नत (स्वर्ग) मिस्ल एक बाग के पैदा हुई, उसमे सगमरमर के और मोती के जडाऊ महल हैं, बाग में शादाब व सर-सब्ज दरख्त (वृक्ष) हैं, दूध व शराब व शहद की नदियाँ बह रही हैं। हर किस्म का मेवा खाने को मौजूद है, साकी व साकिनें निहायत खूबसूरत (अत्यन्त सुन्दर) चाँदी के कगन पहने हुए जो हमारे यहा की घोसिनें पहनती है, शराब पिला रही है। एक जन्नती हूर के गले मे हाथ डाले पडा है, एक ने रॉद पर सर धरा है, एक छाती से लिपट रहा है, एक ने जानबख्श का बोसा लिया है, कोई किसी कोने मे कुछ कर रहा है, कोई किसी कोने में कुछ ऐसा बेहूदापन है जिस पर ताज्जुब (आश्चर्य) होता है। अगर बहिश्त (स्वर्ग) यही है तो बेमुबालगा (बिना किसी अत्युक्ति के) हमारे खराबात (वेश्यालय) इससे हजार गुना बेहतर है।

इसके आगे पृष्ठ ४७ पर वह इस बहिश्त की कल्पना का मुसलमानों पर जो प्रभाव पड सकता है उसके विषय में लिखते हैं —

"एक कूढ मगज (दुर्बुद्धि) मुल्ला या शहवत-परस्त (विषय लम्पट) जाहिद यह समझता है कि दर हक़ीकत (वास्तव में) निहायत अनगिनत हूरें मिलेंगी, शराबें पियेंगे, मेवे खायेंगे दूध व शहद की नदियों मे नहायेंगे, और जो चाहेगा, वे मजे उड़ायेंगे। इस लगव (झूठे) व बेहूदा ख्याल से दिन रात अवामिर (आज्ञाओं) के बजा लाने की कोशिश करता है।

इसीलिये शायद उर्दू के एक प्रसिद्ध कवि ने भी लिखा है —

कहता है कौन जाहिद बहदत परस्त है ?
हूरों पे मर रहा है, शहवत परस्त है ॥

कहिये, इस आलोचना की तुलना मे स्वामी दयानन्द की को हुई आलोचना तो कुछ भी नहीं है। उदाहरण लीजिये —

(१) समीक्षा न० ६ में स्वामी जी लिखते हैं, "भला यह कुरान का बहिश्त ससार से कौनसी उत्तम बात वाला है ? क्योंकि जो पदार्थ ससार मे हैं" वे ही मुसलमानों के स्वर्ग मे है और इतना विशेष है कि यहा जैसे पुरुष जन्मते मरते और आते जाते है उसी प्रकार स्वर्ग मे नहीं किन्तु यहा की स्त्रियां सदा नहीं रहती और वहाँ बीबियां अर्थात् उत्तम स्त्रियां सदा काल रहती है।

(२) समीक्षा न० ४२ मे बहिश्त मे नहरों और 'शुद्ध बीबियों' का वर्णन देते हुये स्वामीजी ने लिखा है 'भला यह स्वर्ग है किंवा वेश्या वन ?" स्वामी जी ने तो इस बहिश्त को 'वेश्या वन" के समान ही बताया लेकिन सर सैयद अहमद खां ने इस बहिश्त को वेश्यालयों से हजार गुना और बदतर बताया। कहिये, किस की समालोचना अधिक कड़ी है ? स्वामी जी की अथवा सर सैयद अहमद खां की। फिर मुसलिम लीग की नाराजगी स्वामी जी पर ही क्यों ?

अब जरा दूसरे मुस्लिम विद्वानों को लीजिये, जिन्होंने इस प्रकार के तर्कों से घबड़ा कर बहिश्त का नकशा ही बदल दिया। कुरान की उन आयतों के जिनमे बहिश्त की नहरों, फलों

और बीबियों आदि का वर्णन है, अर्थ ही बदलने आरम्भ कर दिये। उदाहरण के लिये मौलाना मोहम्मद अली एम ए एल एल बी का कुरान का अंग्रेजी अनुवाद देखिए। वे उसकी भूमिका के पृष्ठ ६२ पर लिखते है, "The description of Paradise as a garden with rivers flowing in it is however, only a parable अर्थात् एक बाग की तरह से स्वर्ग का वर्णन जिसमें नदियां बहती हों केवल एक रूपक है। उसी पृष्ठ पर वह लिखते हैं कि स्वर्ग के भोजन से मतलब केवल प्रार्थना से हैं और स्वर्ग के मेवे और फलों से मतलब हमारे कर्मोंके फलों से है 'The fruits of paradise are the fruits of the deeds done" इसी प्रकार स्वर्ग में जो नहरों का वर्णन हैं (कुरान २—२५) जिनका वर्णन स्वामी जी ने समीक्षा नं० ६ में दिया है, उस पर मौलाना साहब अपने अंग्रेजी अनुवाद मे पृष्ठ ८ पर नीचे नोट देते हुए लिखते हैं कि "The rivers Corresponding to faith and the trees of the garden to the good which a man does" अर्थात् नदियों का अर्थ मनुष्य की श्रद्धा है। ठीक है, यही तो स्वामी जी भी कहते थे कि लोग असभव बातों को न मानें। यही नहीं, किन्तु मौलाना साहब ने तो अपनी कुरान की भूमिका में इस्लामी स्वर्ग और नरक की हस्ती को ही बिलकुल उड़ा दिया। पृष्ठ ६३ पर पंक्ति २१ में वह लिखते हैं—'This shows clearly that Paradise and Hell are more like two conditions than two places" अर्थात् स्वर्ग और नरक दो अवस्थाओं का नाम है, दो स्थानों का नहीं। ठीक है, यही तो स्वामीजी भी कहते थे कि स्वर्ग और नरक विशेष सुख दुःख का नाम है, विशेष स्थानों का नहीं।

आश्चर्य तो यह है कि मौलाना साहब ने इस्लामी स्वर्ग के बाग, वृक्ष, फल, नदियों और दूध, शराब आदि की नहरों का वर्णन तो रूपक अलङ्कार बतला कर तर्क-सगत बनाने की चेष्टा की है, लेकिन अपनी समस्त भूमिका और आयतों के अनुवाद की टिप्पणियों में कहीं पर भी बहिश्त में रहने वाले मोती के से वर्ण वाले सुन्दर लडकों और सदा रहने वाली हूरों के लिए किसी प्रकार का कुछ समाधान नही किया। यद्यपि कुरान २—२५ तथा ३—१४ आदि आयतों के अनुवाद में पवित्र बीबियों का अर्थ उन्होंने "Pure Mates" करके छोड दिया है, जिनका कि वर्णन स्वामी जी ने समीक्षा ६, ४६, १४१ आदि में किया है। इसी प्रकार कुरान ७६—१९ में लिखा है "And round about them shall go youths never altering in age, when thou seest them thou wilt think them to be pearls, scattered broadcast" अर्थात् वहां (स्वर्ग मे) कभी न बदलने वाली आयु के लडके इधर उधर फिरेंगे, जब तू उनको देखेगा तो अनुमान करेगा कि सुन्दर मोती बिखरे हुए हैं। इस पर स्वामी जी ने अपनी समीक्षा नं० १५० मे लिखा है 'क्यों जी, मोती के वर्ण से लड़के किस लिये वहाँ रखे जाते हैं ? क्या जवान लोग सेवा से वा स्त्रीजन उनको तृप्त नहीं कर सकतीं ?"

जब इस प्रकार कुरान में अनेक स्थानों पर खूबसूरत स्त्रियों और लड़कों का बहिश्त में सदा रहना पाया जाता है, जैसा कि मौलाना साहब ने अनुवाद में दिया है। (और उसे छिपा भी कैसे

सकते थे और जिस पर सैय्यद अहमद खां ने इतनी कड़ी समालोचना की है, तब अगर स्वामी जी ने अपने चौदहवें समुल्लास में उस पर कुछ समालोचना की तो मुसलमान भाई क्यों नाक भौं सिकोड़ते हैं ? हम तो मौलाना साहब की बात से ही सहमत हैं कि स्वर्ग और नरक कोई विशेष स्थान नहीं है, न वहाँ दूध घी, शहद, शराब आदि की नहरें और फल हैं—ये सब अलंकार रूप में वर्णित हैं। और भी अच्छा होता यदि मौलाना साहब खूबसूरत हूरों और बहिश्ती लड़कों का वर्णन भी किसी अलंकार रूप में दिखा सकते। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया क्योंकि यह सिद्ध करना शायद असम्भव था। हमारा तो कथन केवल इतना है कि मुस्लिम लीगी भाई या तो मौलाना मुहम्मद अली की तरह स्वर्ग का जैसा वर्णन कुरान शरीफ में दिया है, उसको मानना ही छोड़ दें, यदि मानते हैं, तो उसकी युक्ति युक्त समालोचना सुनने के लिये तैयार रहें, और यदि समालोचना को जब्त ही कराने पर तुले हैं तो सर सैय्यद अहमद खां की 'तफसीरुल कुरान' को ही पहले जब्त करायें। सच बात तो यह है, जैसा कि उर्दू के प्रसिद्ध कवि गालिब ने लिखा है —"हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन, दिल के बहलाने को गालिब यह ख्याल अच्छा है।"

पुस्तक समालोचना

भारतवर्ष में जाति-भेद

(लेखक—श्री निरञ्जनलाल जी गौतम विशारद)
प्रकाशक—कार्यालय 'माथुर सेवक" श्रद्धानन्द बाजार देहली।

इस छोटी सी पुस्तिका में जाति भेद की उत्पत्ति तथा उसकी बुराइयों पर सक्षेप में प्राकश डाला गया है तथा वर्ण व्यवस्था से उसका भेद भी दर्शाया गया है। पुस्तिका सर्व साधारण के लिये उपयुक्त है। जाति भेद की बुराइयों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करना सामाजिक संगठन के लिये अत्यावश्यक है जिसका निर्देश इस पुस्तिका में किया गया है। मूल्य।)

हमारे घर

मैंने श्री निरञ्जन लाल जी 'गौतम' विशारद द्वारा लिखित 'हमारे घर' नामक पुस्तक पढ़ी। यह पुस्तक गृहस्थ में प्रवेश करने वाले तथा प्रविष्ट नरनारियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। मेरा विश्वास है कि इसमें दिये निर्देशों पर आचरण करने से गृहस्थ अपने घरों को सुखमय बना सकते हैं। भाषा तथा शैली सरल उत्तम और आकर्षक है।

मूल्य ।।=)

सम्पादक 'सार्वदेशिक'

प्राप्ति स्वीकार

सनातनी संस्कार पद्धति अर्थात् वैदिक सिद्धान्तानुसार अपूर्व मानव संस्कार रहस्य—लेखक—डा० रामचन्द्र मुनि प्रकाशक—श्री तत्व विज्ञान आश्रम गजरौला जिला मुरादाबाद मूल्य २)

सत्यसागर अथवा सत्यार्थप्रकाश का पद्यानुवाद—श्री गदाधर प्रसाद जी कृत मूल्य १।।) समालोचना अगले अङ्क में।

श्रद्धाञ्जलि

[लेखिका—कुमारी कृष्णा चौहान "विदुषी" ' सिद्धान्त शास्त्री" कालपी]

जाग सोये देश

दु:खों को हँस हँस सहा, हा । त्याग सुख सगीत
स्वार्थ को तज गा गया—संसार हित के गीत
छोड़ सुख, गृहद्वार—ले पावन प्रभू का नाम
सुप्त हिन्दू जाति को फिर—दिया जीवन दान
सुन जगाता है हमें—उस महा ऋषी का राग
इतना दीन क्यों हो देश
जाग सोये देश ।।१।।

कटु-वचन सुन, जहर खा, सह पत्थरों की मार
सत्य का उपदेश करता ही फिरा प्रति द्वार
लगन थी, सबका बताया शुचि अतीतादर्श
आर्य्य जन ससार में करते रहे उत्कर्ष
भर रही उत्साह उर में—ऋषि हृदय की आग
मन में दुख क्यों हो लेश
जाग सोये देश ।।२।।

हृदय रख निर्मल, गिरा में शांति का आह्वान
ले विजयिनी विज्ञता—गा एकता के गान
'स्नेह' वसुधा पर रचाया—'ज्ञान' का ससार
सत्य पथ पर चल नशाया—ढोंग पापाचार
'धम धारो' कह रहा ऋषि का समष्टि विराग
प्रनिपल स्वार्थ से रख द्वेष
जाग सोये देश ।।३।।

हे मनुजता के पुजारी—अमर तव इतिहास
अमिट तेरा दिव्य पथ, अरु अमिट तेरी प्यास
सत्य पथ के पथिक बनकर—करें सौम्य विकास
मान्य हो जग में हमारा सत्य अर्थ-प्रकाश
निहित इसमें दुखी भारत का चमकता भाग्य
जीवन का अमर उन्मेष
जाग सोये देश ।।४।।

सत्य-अर्थ प्रकाश दलितों के हृदय का प्रान
सत्य शिव सुन्दर-शिखर की प्राप्ति का सोपान
अनाचार विनाश्य—जीवन रात्रि का सुविहान
डूबता के हेतु जग-भव-सिंधु मे जलयान
यह अमर निधि, दे गया ऋषि, खेल शोणित फाग
नित सह कर अनेकों क्लेश
जाग सोये देश ।।५।।

आर्य समाज के चमकते सितारे

स्व० प्रिन्सिपल रामलाल जी

[लेखक—श्री ला० लब्भूराम जी आनन्दाश्रम लुधियाना]

आर्य जगत् मे यह खबर अत्यन्त दुःख से सुनी जायगी कि आर्य समाज लुधियाना के प्रसिद्ध नेता, आर्य हाई स्कूल आर्य मेडिकल स्कूल व दयानन्द हास्पिटल लुधियाना की आत्मा श्री प्रिन्सिपल रामलाल जी का साधारण सी बीमारी के पश्चात् ६० साल की आयु मे १७ नवम्बर को हृदय की गति बन्द होने से स्वर्गवास होगया। यह खबर नगर में आग की तरह फैल गई जिसने भी सुना एक आह भर कर रह गया॥ जिस उच्च हस्ती के दर्शन मिलने की आशा न होने के कारण इधर उधर मंडलाते फिरते थे वहां सब अब उन्हें श्मशान भूमि में ले जाने की तैयारियों में लग गए। आपके सन्मान मे आर्य हाई स्कूल डा० ला० आर्य पुत्री पाठशाला, मेडिकल स्कूल के अतिरिक्त गवनमेन्ट कालेज तथा नगर के अन्य स्कूल बन्द कर दिये गए आपकी अरथी के साथ हजार विद्यार्थी प्रोफेसर अध्यापक और शहर के मान्य सज्जन श्मशान भूमि तक गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते गए। सबके देखते २ अपने पूज्य भाई के मृतक शरीर को आग के शोलों के सुपुर्द कर उनकी पवित्रात्मा के लिए मंगलकामना और उनके परिवार के लिए धैर्य रखने की प्रार्थना की गई।

३९ साल हुए जबकि प्रिन्सिपल रामलाल जी ने आर्य हाईस्कूल की बागडोर केवल १३५ विद्यार्थियों के साथ सम्भाली थी। आज उससे १८५० विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं और पंजाब की चोटी के स्कूलों में इसकी गणना होती है, यह सब आपके अनथक प्रयत्नों का परिणाम है। आपका शिक्षा विषयक अनुभव कमाल को पहुँचा हुआ था। अपनी योग्यता के कारण विद्यार्थियों के अतिरिक्त शहर की गम्भीर शिक्षित जनता में वे अत्यन्त मान की दृष्टि से देखे जाते थे। आपको यदि कोई चिन्ता थी तो केवल आर्य समाज की। दिन रात इसी मे मग्न रहते थे। कुछ समय से आपको खून के दबाव का रोग लग गया था मगर इस अवस्था में भी पढ़ाई का काम नियम पूर्वक करते रहे जिससे दिल भी निबल हो गया। अन्त में इसी रोग ने उन्हें हमेशा के लिये हमसे पृथक कर दिया। शोक है कि मेरा ३९ साल का साथी भाइयों की तरह प्रेम रखने वाला अकस्मात् हमे रोते छोड़ परलोक सिधार गया आपकी मृत्यु से आर्य समाज का अनमोल रत्न हमसे खो गया जिसकी कमी को पूर्ण करना असम्भव है। स्वर्गीय प्रिन्सिपल रामलाल जी का नाम सदैव के लिए आर्यसमाज के इतिहास मे सुवर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

बरसों आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, कन्या महाविद्यालय जालंधर और कई सामाजिक और कई गैर सामाजिक सस्थाओं की मैनेजिंग कमेटी के प्रतिष्ठित सभासद् थे जहाँ पर आपने अपनी उत्तरदायिता को निहायत सुन्दरता से निभाया। आपके नेक स्वभाव और मधुरता से हरेक व्यक्ति मोहित था। जहां आपकी अकाल मृत्यु से आर्य समाज और उसकी सस्थाओं को सख्त धक्का लगा है वहां उनके अनगिनत इष्ट मित्र अत्यन्त दुःखी हो रहे हैं

ईश्वर इच्छा पूर्ण हुई ब्रह्मप्रभु परमात्मा स्वर्गीय भाई की आत्मा को शान्ति तथा सद्गति प्रदान करें और उनके भाई, बहिन, बच्चों को धैर्य प्रदान करें।

[खेद है कि यह लेख स्थानाभाव से गत मास के अङ्क में न दिया जा सका था अतः इस अङ्क में प्रकाशित किया जा रहा है। स्व० रामलालजी के दुःखित परिवार और मित्र मण्डली से हम आर्य जगत् की ओर से हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं—सम्पादक]

महर्षि दयानन्द और इस्लाम के अन्य समालोचक

(लेखक—प० धर्मदेव विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक आ० प्र० सभा)

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश, के चतुर्दश समुल्लास मे इस्लाम की समीक्षा जिस पवित्र भाव से की उसको प्रकट करने के लिए उनके उस समुल्लास की अनुभूमिका में से निम्न वाक्य उद्धृत करना पर्याप्त होगा "यह लेख केवल मनुष्यों की उन्नति और सत्यासत्य के निर्णय के लिए सब मतों के विषयों का थोड़ा २ ज्ञान होवे इस से मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले और एक दूसरे के दोषों का खण्डन कर गुणों का ग्रहण करें। न किसी अन्य मत पर न इस मत पर झूठ मूठ बुराई व भलाई लगाने का प्रयोजन है किन्तु जो भलाई है वही भलाई और जो बुराई है वही बुराई सब को विदित होवे न कोई किसी पर झूठ चला सके और न सत्य को रोक सके और सत्यासत्य विषय प्रकाशित किए पर भी जिस की इच्छा हो वह न माने वा माने किसी पर बलात्कार नहीं किया जाता। यह लेख हठ दुराग्रह, ईर्ष्या, द्वेष, वाद विवाद और विरोध घटाने के लिए किया गया है न कि इन को बढाने के अर्थ।

महर्षि दयानन्द के शब्द इतने स्पष्ट होते हुए भी मतान्ध मुसलमानों ने इस समुल्लास की जब्ती के लिए आन्दोलन किया और सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार ने इसके प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगा दिया जिस का सब विचारशील लोग घोर विरोध कर रहे हैं। कहा यह जाता है कि सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्दश समुल्लास मे जो इस्लाम की आलोचना की गई है वह अत्यन्त कठोर और दिल दुखानेवाली है इसलिए उसको जब्त कराने का आन्दोलन करना पड़ा। इस छोटे से लेख मे यह सम्भव नहीं कि इस्लाम और उसके प्रवर्तक मुहम्मद साहेब की सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वानों ने जो भयङ्कर समालोचना की है उसे सम्पूर्णतया पाठकों के सन्मुख रक्खा जाए क्योंकि इसके लिए तो पृथक् विस्तृत ग्रन्थ की आवश्यकता है जो तय्यार किया जा रहा है किन्तु केवली पुलाक न्याय से श्री हेच जी वेल्स, बर्नार्डशा, मार्गोलीयथ, आर्नोल्ड आदि विद्वानों के ग्रन्थों से दो चार वाक्य उद्धृत करना अत्यन्त आवश्यक है जिससे निष्पक्षपात विचारक इस बात को देख सकें कि किस की समालोचना अधिक कठोर है।

जगद्विख्यात विचारक श्री हेच जी वेल्स (H G Wells) ने Outline of History नामक अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ में मुहम्मद साहेब के पारिवारिक जीवन की कठोर शब्दों में आलोचना करते हुए लिखा है कि

'There are those who write of this *evidently lustful* and rather shifty leader, as though he was a man to put beside Jesus or Gautam. But it is surely manifest that he (Mohammed) was a being of a commoner clay he was vain, egotistical, tyrannous and a self deceiver, and it would throw all our history out of proportion, if out of an insincere deference to the possible moslem reader, we were to present him in any other light (Outline of History by Mr H G Wells One Volume, New York Edition. P 609.)

अर्थात् कई लोग हैं जो इस स्पष्टतया कामी और अवसर वादी नेता (मुहम्मद) के विषय मे ऐसा लिखते हैं मानो उसे भी ईसा मसीह व गौतमबुद्ध के साथ व उनकी कोटि मे रक्खा जा सकता है किन्तु यह सर्वथा निश्चित और स्पष्ट बात है कि वह एक साधारण मट्टी से बना हुआ था। वह अभिमानी अहङ्कारी अत्याचारी और आत्म-वंचक था और यह हमारे सारे इतिहास को असङ्गत बनाना होगा यदि हम किसी सम्भावित मुसलमान पाठक को अयथार्थ तया प्रसन्न करने की इच्छा से उसे किसी और रूप मे रक्खें।

The Short History of the world नामक ग्रन्थ मे श्री वेल्स ने मुहम्मद साहब के विषय मे निम्न वाक्य लिखे —

"Mohammed seems to have been a man compounded of very considerable vanity, greed, cunning, self deception and quite sincere religious passion He dictated a book of injunctions and expositions —the Qoran, which he declared was communicated to him from God Regarded as literature or philosophy, the Qoran is certainly unworthy of its alleged Divine authorship' (Short History of the world p. 137)

अर्थात् मुहम्मद ऐसा व्यक्ति प्रतीत होता है जिसके अन्दर अहङ्कार, लोभ, धूर्तता, आत्म-प्रवञ्चन और साथ ही धार्मिक भावना व लगन बहुत बडी मात्रा मे पाई जाती हैं। उसने आदेशों और व्याख्याओं की पुस्तक कुरान को लिखवाया जिसके विषय मे उसने घोषणा की कि वह ईश्वर की ओर से उसे दिया गया। साहित्य और तत्वज्ञान (फिलासफी) की दृष्टि से देखा जाय तो कुरान ईश्वरीय ज्ञान कहलाने के सर्वथा अयोग्य है।

(२) औक्सफोर्ड युनिवर्सिटी मे अरबी के प्रोफेसर मार्गोलियथ D Litt ने Encyclopedia of Religion and Ethics के ८ वें खण्ड में Mohammedanism वा मुसलमानी मत पर लेख लिखते हुए मुहम्मद साहब के विषय मे लिखा कि —

"Mohammed's career as tyrant of Medina is that of a robber chief, whose political economy consists in securing and dividing plunder He is himself an unbridled libertine and encourages the same passion in his followers

[Encyclopedia of Religion and Ethics, Vol VIII, P. 878]

अर्थात् मुहम्मद का जीवन मदीने के अत्याचारी शासक के रूपमे एक लुटेरों के सरदार का सा है जिस का कार्य लूट प्राप्त करना और उसका बटवारा करना है।

वह स्वयम् एक असीमित दुराचारी है और अपने अनुयायियों में भी वह उसी प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है।

महर्षि दयानन्द जी ने तो मुहम्मद साहब को कुरान में वर्णित अपनी पुत्र वधू जैनब के साथ विवाहादि के कारण 'विषयी' लिखा पर एच० जी० वेल्स, मारगोलियथ आदि ने Evidently lustful, unbridled libertine आदि शब्दों का उसके लिये प्रयोग किया जो और भी अधिक कठोर हैं फिर सत्यार्थ प्रकाश से ही मुसलमान बन्धुओं को चिढ क्यों है यह समझ मे नहीं आता?

(३) जे० एम० आर्नोल्ड D. D नामक विद्वान् ने Islam and Christianity नाम की पुस्तक में मुहम्मद साहब के विषय में लिखा कि—

"Mohammed completed his career as an imposter who brought forth his pseudo revelations whenever he found it necessary to sanction the most unjustifiable acts (p 77)

अर्थात मुहम्मद के जीवन की समाप्ति एक प्रवञ्चक (ठग) के रूप मे हुई जिसने झट अपने ऊपर इलहाम उतरवाये जब भी उसे ऐसे कार्यों का समर्थन करने की आवश्यकता हुई जिन्हे किसी प्रकार भी न्याय सगत नहीं कहा जा सकता

(४) मुहम्मद साहब के इलहाम के विषय मे रेवरेण्ड ह्यू ज (Rev Hughes) ने Notes on Mohammedanism मे इसी बात को कहा है। उन्होंने लिखा है।

"In the case of Mohammed, his professed inspiration sanctioned and encouraged his own vices,'

'That which ought to have been the fountain of purity, was in fact, the cover for the prophet's depravity

(Notes on Mohammedanism, P 2)

अर्थात् मुहम्मद के विषय मे उसके तथा— कथित इलहाम वा ईश्वरीय प्रेरणा ने उसकी अपनी बुराइयों का समर्थित तथा प्रोत्साहित किया।

वह चीज (ईश्वरीय प्रेरणा) जो पवित्रता का स्रोत होनी चाहिए थी, वास्तव मे, पैगम्बर मुहम्मद के नैतिक पतन वा दुराचार के लिए बहाना बन गई। मुहम्मद साहब के इलहाम की यह आलोचना कितनी कठोर है यह विचार शील पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं। इन पुस्तकों के जब्त कराने का तो मुसल्मान भाइयों को कभी ध्यान तक नहीं आया पर ६० साल पश्चात् सत्यार्थ प्रकाश की "ऐसी बातों से ठीक सिद्ध है कि खुदा कोई नहीं कहता था, केवल देश काल देख कर अपने प्रयोजन के सिद्ध होने के लिए खुदा की तरफ से मुहम्मद साहब कह देते थे," इस प्रकार की आलोचना से ही इतनी चिढ़ क्यों है ?

(५) सर विलियम मूर K C S I, LL.D. D Cl, Ph D, ने जो युक्त प्रान्त में गवर्नर रह चुके थे Life of Mohammed में लिखा कि—

"The sword of Mohammed and Qoran are the most stubborn enemies of civilisation, liberty and truth which the world has yet known

(The Life of Mohammed, P 506)

अर्थात् मुहम्मद की तलवार और कुरान सभ्यता, स्वतन्त्रता और सत्य के ससार में सब से बडे और कट्टर शत्रु हैं। इससे भयकर मुसलमानी मत व कुरान की क्या समालोचना हो सकती है ?

(६) माननीय एलफिस्टन (Honourable Elphinstone) ने 'History of India' में मुहम्मद साहब के विषय में लिखा —

'But whatever may have been the reality of his (Mohammed's) zeal and even the merit of his doctrine the spirit of intolerance in which it was preached, and the bigotry and bloodshed which it engendered and perpetuated, must place its author among the worst enemies of mankind '

(History of India. p, 295)

अर्थात् मुहम्मद का उत्साह कितना भी सच्चा क्यों न हो तथा उसके सिद्धान्त का कोई गुण भी क्यों न हो, असहिष्णुता की भावना

जिसमें उसका प्रचार किया गया तथा मतान्धता और रक्त पात जो इसने उत्पन्न किये और जारी रक्खे इसके प्रवतक (मुहम्मद साहेब) की गणना मनुष्य जाति के सब से कट्टर शत्रुओं में करने को हमें बाधित करते हैं।

क्या यह समालोचना महर्षि दयानन्द की सत्यार्थ प्रकाश में पाई जाने वाली इस आलोचना से किसी अंश में कम कठोर है कि बडे आश्चर्य की बात है कि ऐसी पुस्तक, ऐसा खुदा और ऐसा पैगम्बर ससार मे ऐसी उपाधि और शान्ति भग करके मनुष्यों को दुख देने के लिए कहा से आया? जो ऐसे मत जगत् में प्रचलित न होते तो सब जगत् आनन्द में बना रहता ॥ (सत्याथ प्रकाश चतुर्दश समुल्लास पृ० ३५६ चौबीसवा सस्करण)

७) विलियम् शैक्सपियर नामक जगद्विख्यात महाकवि ने King Lear Act III Scene IV में मुहम्मद को The prince of darkness अथवा अन्धकार के राज शैतान के नाम से याद किया है। The prince of darkness in gentleman made he s called and mahu

(८) थियोडोर लन्ट (Theodore Lunt) नामक विद्वान् ने The Story of Islam नाम की अपनी पुस्तक में इस्लाम का इतिहास देकर लिखा है कि —

'We have traced Islam in history and seen it settling like a deadly blight upon the nations, Chilling and paralying the moral life of man (The Story of Islam P 189) "Give the world to Islam and man s highest vision is gone for ever P 192

अर्थात् हमने इस्लाम का इतिहास में अनुशीलन किया है और इसे जातियों पर एक भयङ्कर कलङ्क की तरह चिपकते हुए मनुष्य के नैतिक जीवन का अर्धाङ्ग रोग की तरह नाश करते हुए पाया है।

यदि ससार को इस्लाम के अर्पित कर दो तो मनुष्य का उच्च लक्ष्य सदा के लिये लुप्त हो जाएगा।

इस्लाम के सदाचार से विरोध पर इससे भयकर टिप्पणी क्या हो सकती है?

(९) डीन लेवोनियन् (Levonian B A M R A S Dean of the School of Religions at Athens) ने Moslem Mentality नामक अत्युत्तम पुस्तक मे इस्लाम का सदाचार पर बुरे प्रभाव की दृष्टि से बडे आडे हाथों लिया है उन्होंने लिखा है—

The Moslem life is degenerate desparately

It is a terrible thing to be born in a Moslem family and to grow up in a Moslem background

Moslem Mentality, P 144)

The Moslem standards of life have been very low The Moslem mind has thought and seen and a t[illegible] lines which are to a great extent immoral (Moslem mentality P 113) Islam as taught by their leaders has poisoned them with wrong ideas and appealing to their animal instincts has led them into cruelties Some how this evil spirit must be taken out of the Moslem heart If there is to be any real progress in Moslem land, the people must be saved from the spirit of Islam (Moslem Mentality P 231-232)

अर्थात् मुस्लिम जीवन निराशाजनक रूप से पतित है। एक मुस्लिम परिवार में उत्पन्न होना और मुस्लिम वायु मण्डल में पलना यह एक अत्यन्त भयङ्कर वस्तु है। जीवन का मुस्लिम मानदण्ड बहुत ही हीन रहा है। मुस्लिम मन ऐसे रूप में विचारता, देखता और काम करता रहा है जो बहुत अंश तक सदाचार विरोधी है। 'इस्लाम ने जैसे कि उसके नेताओं ने सिखाया है मुसल्मानों को अशुद्ध विचारों के विषसे भर दिया है और उसकी पाशविक भावनाओं को अपील करके उन्हें क्रूरताओं में प्रवृत्त कर दिया है। किसी प्रकार से मुस्लिम हृदय से इस बुरी भावना को अवश्य निकालना चाहिये। मुस्लिम देशों में यदि सच्ची उन्नति करानी हो तो लोगों को इस्लाम की भावना से अवश्य ही बचाना चाहिये। इत्यादि महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश चतुर्दश समुल्लास (पृ० ३६६ बचन स० १३७ की समीक्षा में) तो इतना ही लिखा कि 'इसी अपराध से मुसल्मानों के लडके विशेषकर सयलानी और विषयी होते हैं।

पर डीन लेवोनियन ने अपने मुस्लिम देशों में चिरकाल तक निवास के अनुभव से इतना भयङ्कर आलोचना मुस्लिम जीवन की कर दी।

(१०) जगत्प्रसिद्ध लेखक और विचारक बर्नार्ड शॉ ने 'The Adventures of the Black Girl in her search for God नामक पुस्तक में मुहम्मद साहेब के चरित्रादि का जो व्यङ्गपूर्ण चित्र खैंचा है वह इतना हीन है कि किसी भी विचारशील निष्पक्षपात व्यक्ति के हृदय में उस पर श्रद्धा नहीं रह सकती। उस पुस्तक के अनुसार जब अफ्रीका की काली लडकी ईश्वर की जिज्ञासा करती हुई मुहम्मद साहेब के पास पहुँचती है और उनसे ईश्वर विषयक प्रश्न करती है तो मुहम्मद साहेब के मुख से यह उत्तर दिलवाया जाता है

Maiden there is yet room in my house for another wife You are beautiful, your skin is like black satin You are full of life' (p 47)

अर्थात् हे कुमारि। मेरे घर में एक और स्त्री के लिये भी अभी जगह है। तुम सुन्दरी हो, तुम्हारा चर्म, काली रेशम के समान है, तुम जीवन शक्ति से पूर्ण हो। उस अफ्रीकन लड़की के पूछने पर कि How many wives have you? अर्थात् तुम्हारी कितनी स्त्रियां हैं? मुहम्मद साहेब उत्तर देते हैं

'I have long since ceased to count them but there are enough to shew you that I am an experienced husband and know how to make women as happy as Allah permits (p 47)

अर्थात् बहुत समय से मैंने उन (स्त्रियों) की गणना करनी छोड रक्खी है किन्तु वे इतनी पर्याप्त हैं जिनसे तुम्हें यह विश्वास हो जाएगा कि मैं एक अनुभवी पति हूं और जानता हूँ कि अल्ला की आज्ञानुसार उन्हें कैसे प्रसन्न रक्खा जा सकता है तब वह लडकी उत्तर देती है कि

I do not seek happiness, I seek God

अर्थात् मैं सुख की खोज में नहीं हूँ मैं तो ईश्वर की खोज में हूं। इस सारे व्यङ्गों से भरे हुए मुहम्मद साहेब के हीन चरित्र की महर्षि दयानन्द जी की युक्ति युक्त आलोचना से तुलना करने पर आकाश पाताल का अन्तर प्रतीत होता है। तथापि मतान्ध मुसल्मानों का १५० से अधिक सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वानों द्वारा लिखे ग्रन्थों के विद्यमान होते हुए भी जिनमें इस्लाम और उसके प्रवर्तक की बड़ी कठोर आलोचना की गई है (जैसे कि ऊपर उद्धृत वाक्यों से स्पष्ट है) अति पवित्र सद्भावना से लिखे सत्यार्थप्रकाश के पीछे लट्ठ लेकर पड़ जाना उनकी सकुचित मनोवृत्ति तथा पक्षपात का सूचक है और कुछ नहीं। (शेष फिर)

सम्पादकीय

सत्यार्थ प्रकाश विषयक भ्रान्तिनिवारण—

सिन्ध सरकार सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाने पर जो अद्भुत उत्साह समस्त विचार शील जनता मे सत्यार्थप्रकाश की रक्षा और प्रचाराथ देश के प्रत्येक काने में उत्पन्न हो गया है उसे देखकर अब अनेक मुसल्मानों तथा कुछ अन्य लोगों ने स याथप्रकाश विषयक बहुत से भ्रम जनता मे पैदा करने शुरू कर दिये हैं जिनका निराकरण करना सत्य की दृष्टि से आवश्यक प्रतीत होता है (१) इन में से प्रथम भ्रम यह है कि सत्याथप्रकाश का १४ वा समुल्लास स्वामी दयानन्द जो का लिखा हुआ नहीं है इसे किन्हीं आर्य समाजियों ने स्वामी जी की मृयु के पश्चात् मुसल्मानों का दिल दुखाने के लिये लिखा और सत्याथप्रकाश म जोड़ दिया।

इस भ्रम के निवारणाथ यहा अभी इतना ही निर्देश करना पर्याप्त है कि सत्याथप्रकाश क प्रथम सस्करण के दशम समुल्लास के अन्तिम भाग में पृ० ३०७ पर स्पष्ट लिखा है यह दश समुल्लास शिक्षा के विषय मे लिखे इसके आगे आर्यावत वासी मनुष्य, जैन, मुसलमान और अंग्रेजों के आचार, अनाचार, सत्यासत्य, मतमतान्तर के खण्डन और मण्डन के विषय मे लिखेंगे। इन मे से प्रथम समुल्लास में आर्यावर्त वासी मनुष्यों के मतमतान्तर के खण्डन और मण्डन के विषय मे लिखा जाएगा। दूसरे समल्लास में जैन मत के खण्डन मण्डन के विषय मे लिखा जायगा। तीसरे में मुसल्मानोके मतके विषयमे खण्डन और मण्डन लिखेंगे और चौथे मे अंग्रेजों के मत में खण्डन और मण्डन के विषय मे लिखा जाएगा। सो जो देखा चाहे खण्डन और मण्डन को युक्ति उन चारो समुल्लासों मे देखले। (सत्यार्थप्रकाश प्रथम सस्करण पृ० ३०७ सन् १८७५) इस से स्पष्ट है कि १३ वा और १४ वा समुल्लास प्रथम सस्करण क निामत्त हो लिखे गये थे किन्तु शीघ्रता के कारण वे उस सस्करण में प्रकाशित न हो सके थे। मुशी हरिवश लाल जी के नाम जो स्टार प्रस बनारस के मैनेजर थे (जहा सन् १८७५ का सस्करण छपा) महर्षि दयानन्द जी का निम्न पत्र इस विषय मे स्पष्ट है —

सत्य थप्रकाश कितने अध्याय तक छपा। जितना छपा हो तितना राजा जयकिशनदास के पास भेज दो। **जल्दी छापो यहां बहुत से लोग लेने को कहते है।** इस के बिना बहुत हरकत है।

सवत् १६३१ मिति माघ बदी २ शनिवार अर्थात् २३ जनवरी सन् १८७५ का दूसरा पत्र भी जो महर्षि दयानन्द जी ने लिखा इस पर बड़ा उत्तम प्रकाश डालता है कि कुरान तथा बाइबल विषयक समुल्लास भी उन्हों ने स्वय ही लिखे थे —

आगे मुरादाबाद में कुरान के खण्डन का अध्य य शोधन क वास्ते गया रहा सो शोध के आप के पास आया कि नहीं। जा न आया हो

तो राजा जयकिशन दास जी को खत लिखो जल्दी छापने के वास्ते भेज दें और बाइबिल का अध्याय सब शोध कर के छाप दो। दो महीने में छापने के वास्ते जो आप ने लिखा सो दो महीने में सब पुस्तक छाप दो। शुद्ध करके अशुद्ध न होने पाये।"

सत्यार्थप्रकाश के २ य संस्करण की प्रारम्भिक भूमिका में महर्षि जी ने भाद्रपद शुक्ल पक्ष सवत् १९३९ तदनुसार सन् १८८३ में लिखा।

यह ग्रन्थ १४ समुल्लास अर्थात् चौदह विभागों में रचा गया है। इस में १० समुल्लास पूर्वार्द्ध और ४ उत्तरार्द्ध में बने हैं परन्तु अन्त के दो समुल्लास और पश्चात् स्वसिद्धान्त किसी कारण से प्रथम नहीं छप सके थे अब वे भी छपवा दिये हैं। त्रयोदश समुल्लास में ईसाई मत का विषय चौदहवें समुल्लास में मुसलमानों के मत का विषय दशम समुल्लास की समाप्ति (पृ० २६९) पर महर्षि जी ने लिखा अब उत्तरार्द्ध अर्थात् जिस में चार समुल्लास हैं उन में विशेष खंडन मंडन लिखेंगे तीसरे में ईसाइयों और चौथे में मुसल्मानों के मत मतान्तरों के खंडन मंडन के विषय में लिखेंगे।' इत्यादि अत यह प्रकट करना कि १३ वां और १४वां समुल्लास महर्षि दयानन्द जी के लिखे हुए नहीं सर्वथा अशुद्ध और निराधार है।

(२) दूसरा भ्रम यह फैलाया जा रहा है जैसे कि सिन्ध के कुछ अखबारों में प्रकाशित हुआ कि हैदराबाद रियासत में १४ वां समुल्लास बहुत दूर से जब्त है। हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा के उत्साही मन्त्री श्री नरेन्द्र जी ने इस विषय में वक्तव्य देते हुए बताया है कि 'यह समाचार बिल्कुल निराधार है। इस प्रकार का समाचार फैलाना स्वार्थी तथा शरारती लोगों का कार्य है। जनता ऐसे लोगों का विश्वास कदापि न करे। चौदहवें समुल्लास सहित सम्पूर्ण सत्यार्थ प्रकाश का ही हैदराबाद राज्य में सदैव प्रचार होता आया है और अब भी हो रहा है।"

(३) इस सम्बन्ध में तीसरा भ्रम यह फैलाया जा रहा है कि सत्यार्थ प्रकाश के अंग्रेजी अनुवाद में से भी वे सब भाग निकाल दिये जा चुके हैं जिन में विविध मत प्रवर्तकों पर आक्षेप किये गये हैं। कराची के निज़ाम नामक उर्दू अखबार के ६ दिसम्बर १९४४ के अङ्क में यह बात निकली है जो सर्वथा अशुद्ध है। मास्टर दुर्गाप्रसाद जी और डा० चिरञ्जीव भरद्वाज जी दोनों के अंग्रेजी अनुवादों में मूल सत्यार्थ प्रकाश का पूरा अनुवाद है तथा कोई समालोचना का अंश छोड़ा नहीं गया। ऐसी निराधार अथवा असत्य बातें बनाकर जनता में भ्रम फैलाना सर्वथा अनुचित है।

डा० अरुण्डेल का भ्रम जनक वक्तव्य—

डा० जार्ज अरुण्डेल थियासोफिकल सोसाइटी के प्रधान हैं। उनके हैदराबाद (सिंध) में दिये एक सार्वजनिक भाषण का सारांश देहली के मुस्लिम लीगी अंग्रेजी अखबार Dawn में बड़े अशुद्ध रूप में प्रकाशित हुआ था जिस में लिखा था कि उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश को अश्लील पुस्तक (Indecent book) बताते हुए इसे बन्द करने की आर्यों को प्रेरणा की तथा यह भी कहा कि वे सारे संसार में इस की सब प्रतियाँ खरीद लेंगे यदि आर्य समाजों ने ऐसा किया। मुहम्मद साहेब की प्रशंसा के पुल बांधते हुए उन्होंने उसे Brightest luminary अथवा सब से अधिक चमकता दिव्य व्यक्ति बताया था। देहली आने पर डा० अरुण्डेल का

ध्यान जब इस ओर आकर्षित किया गया तो उन्होंने उसका प्रतिवाद Dawn मे भेजा जो १५ दिस० सन् १९४४ के अङ्क मे प्रकाशित हुआ। इसमे उन्होंने लिखा कि मैं ने सत्यार्थ प्रकाश के विषय में Indecent book अथवा अश्लील पुस्तक जैसे शब्दों का कभी प्रयोग न किया था और न मुहम्मद साहेब के विषय में The brightest luminary जसे प्रशसात्मक शब्दों का प्रयोग किया था। ऋषि दयानन्द के प्रति आदर प्रकट करते हुए उन्होंने लिखा I have the very greatest reverence and admiration for the personality and life of the great Swami (Dayananda Saraswati) and I know well his relations with Madame Blavatsky and Colonel Olcott of the Theosophical society in earlier days I am sure he could never have written those chapters (13th and 14th) He was far too a great man

अर्थात् मै महान् स्वामी दयानन्द जी के व्यक्तित्व और जीवन के विषय में अत्यधिक आदर और प्रशसा का भाव रखता हूँ और उनके थियासौफिकल सोसाइटी की मन्त्रिणी मैडम ब्लेवेट्स्की और प्रधान कर्नल आलकाट के साथ प्रारम्भिक दिनों में उत्तम सम्बन्ध का भली भाति जानता हूँ। मुझे निश्चय है कि वे समुल्लास (१३ वा और १४ वा) उन द्वारा नहीं लिखे जा सकते थे वे बहुत ही बडे आदमी थे।

ऊपर जो टिप्पणी दी गई है उस से डा० अरुण्डेल के इस विचार का खण्डन हो जाता है कि सत्यार्थ प्रकाश का १३ वा और १४ वा समुल्लास ऋषि दयानन्द ने न लिखा था। ऋषि दयानन्द ने जिस पवित्र भाव और युक्ति युक्त रूप में ईसाई मत और इस्लाम की अनेक बुद्धि विरुद्ध बातों की समीक्षा की उस से ऋषि दयानन्द के [illegible] कोई कमी नहीं आती बल्कि उनके अद्भुत सत्य निष्ठता और सत्य प्रचार की छाप किसी भी निष्पक्षपात व्यक्ति के हृदय पर पडे बिना नहीं रह सकती मैडम ब्लैवेट्स्की ने उनके विषय मे ठीक ही लिखा था कि

It is perfectly certain that India never saw a more learned Sanskrit scholar a deeper metaphysician a more wonderful orator and a *more fearless denunciator of any evil* than Dayananda since the time of Shankaracharya (The caves and jungles of Hindustan)

अर्थात् यह सर्वथा निश्चत बात है कि भारत ने 'शङ्कराचार्य जी के समय से लेकर अबतक स्वामी दयानन्द जी से बड़ा कोई संस्कृत का विद्वान् गम्भीर तत्त्वज्ञानी, आश्चर्यजनक प्रभावशाली वक्ता और बुराई का निर्भय खण्डन कर्ता नहीं देखा।

डा० अरुण्डेल यदि गम्भीरता से सत्यार्थ प्रकाश की प्रारम्भिक भूमिका और अनुभूमिकाओं को पढ़ेंगे तो हमे निश्चय है कि वे अपने उपयुक्त विचार को अवश्य ही बदल देंगे जैसे कि सार्वदेशिक सभा की ओर से भेजे पत्रों मे उन्हे लिखा गया है।

उलेमाओं का अशक्ति सूचक फतवा

देवबन्द नामक सुप्रसिद्ध मुस्लिम शिक्षा केन्द्र के उलेमाओं ने सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध जो फतवा २४ दिस १९४४ को निकाला है वह मुस्लिमलीगी पत्र Dawn के २८-१२-४४ के अङ्क के अनुसार निम्न है —

The Fatwa holds that it is the duty of the Musalmans to demand

proscription of the Satyarth Prakash on the ground that it is full of indecent and abusive attacks on other religions

अर्थात् फतवे में कहा गया है 'मुसलमानों का वक्तव्य है कि वे सत्यार्थप्रकाश की जब्ती की माग इस आधार पर करें कि यह ग्रन्थ दूसरे मतों पर अश्लील और गालियों से भरे आक्रमणों से भरा हुआ है।

गत ६० वर्षों से जो मुसलमान मौलवी पुस्तकों तथा शास्त्रार्थों द्वारा सत्यार्थप्रकाश में उठाये हुए आक्षेपों का उत्तर देने का यत्न करते रहे अब उनका इसकी जब्ती के लिये यत्न करना स्पष्टतया इस बात को प्रमाणित करता है कि उनके अन्दर मौखिक व लिखितरूप में युक्ति युक्त आक्षेपों का उत्तर देने की शक्ति नहीं रही। यह सर्वथा असत्य है कि सत्यार्थप्रकाश में अन्य मतों पर अश्लील व गालियों से पूर्ण आक्रमण किये गये हैं। उसमें तो सत्य प्रचार और सुधार के पवित्र भाव से युक्ति युक्त आलोचना की गई है पर कुरान में काफिरों व अविश्वासियों के लिये फसादी, अहमक, शैतान, शैतान के भाई, बहरे, गूँगे, अन्धे, बदकार, बन्दर, जलील व ख्वार बन्दर दगाबाज, झूठे नादान, रियाकार (मक्कार), चारपाव के मिस्ल बल्कि उनसे भी गये गुजरे, बदतरीन हैवानात, निरा झूँठ बकनेवाले नाखलफ (हरामजदे), कुत्ते जैसे शब्दों का (जो यहां नजीर अहमद साहब के कुरान के उर्दू अनुवाद से लिये गये हैं) बार २ प्रयोग किया गया है जिनकी तालिका अगले अङ्क में दी जायगी। इस तालिका से स्पष्ट है कि कुरान शरीफ की ७ मजिल है औसतन उसकी हर मजिल मे ५६ बार एक गाली है। कुरान शरीफ के ३० पारा हैं औसतन उसके हर एक पारा मे १४ बार एक गाली है। कुरान शरीफ की ६२८५ आयतें हैं उसकी हर १५ आयतों में एकबार गाली दी है। ऐसी अवस्था में यदि कुरान की जब्ती वा उसमें से इन गालियों के निकलवाने का अन्य मतावलम्बी आन्दोलन करें तो क्या मुसलमान मौलवी इसे सहन करेंगे? यदि नहीं तो सत्यार्थ प्रकाश जैसे आर्यों के मान्य धर्मग्रन्थ की जब्ती की माग करना कराना कितना अनुचित है इस बात का उन्हें गम्भीरता से विचार करना चाहिये। प्रो० अब्दुलमजीद ख्वाजा डा० सैफुद्दीन किचलू डा० सैय्यद महमूद मौलाना सय्यद हबीब आदि विचारशील मुसलमानों ने सिन्ध सरकार के सत्यार्थप्रकाश के १४वें समुल्लास पर लगाये प्रतिबन्ध को अनुचित और पाप बताकर अपनी उदारता और बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है।

सब विचारशील सज्जन हमारे साथ है डा० सैय्यद महमूद और मौलाना सैय्यद हबीब आदि के प्रशंसनीय वक्तव्य—

गत मास कांग्रेस की कार्यकारिणी के भू पू सदस्य डा० सैय्यद महमूद ने 'जागृति' कलकत्ता के विशेष संवाददाता द्वारा यह प्रश्न किये जाने पर कि आप लोग सिन्ध सरकार द्वारा सत्यार्थ-प्रकाश के १४ वें समुल्लास के प्रकाशन पर लगाये प्रतिबन्ध के सम्बन्ध में क्या कर रहे हैं कहा कि 'हमें आशा है सिन्ध सरकार शीघ्र इस प्रतिबन्ध को वापिस ले लेगी। सिन्ध सरकार ने भारत के इतिहास मे इस सङ्कट मय समय में हिन्दू मुस्लिम एकता के मार्ग में बड़ी बाधा उपस्थित कर दी है। मै महात्मा गान्धी जी से सत्यार्थ प्रकाश लेकर उसका १४ वा समुल्लास पढ रहा हूँ। म० गान्धी जी से भी मेरी इस विषय मे काफी बातचीत हुई है। उन्हें सिन्ध

सरकार के इस कार्य से बड़ा दुख हुआ है। हम अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं कि सिंध सरकार इस हुक्म को वापिस ले ले।

मौलाना सैय्यद हबीब ने लिखा है कि 'सिन्ध मुस्लिम लीगी वजीर ने जिसकी हालत लीग के शीरखोर (दूध पीने वाले) मजनू कीसी है और महज जाती मुफाद मवनी (स्वार्थी) है गडे मुर्दे उखेडे हैं और सत्यार्थ-प्रकाश पर हमला करके साबित कर दिया है कि हिन्दुओं का मुसलमान राज से चमकना बे बुनियाद (निराधार) नहीं है। आर्य काँग्रेस के सदर (प्रधान) मुस्तहिक शुक्रिया (धन्यवाद पात्र) हैं कि उन्होंने हिन्दुओं को मशविरा दिया है कि तमाम मुसलमानों को अपना दुश्मन न समझें बल्कि सिर्फ मुस्लिम लीगी वजारत सिन्ध को मद्दे मकाबिल (प्रति द्वन्द्वी) जानें। सत्यार्थ-प्रकाश पर हमला इसलिये हुआ कि हिन्दुओं का सब से बारसूख (प्रभावशाली) तबका (भाग) तजलील (अपमान) का घूँट पीए। डा० किचलू ने सत्यार्थ प्रकाश की हिमायत करके मुस्लिम लीग को कशमकश (दुविधा) में डाल दिया है। शौकत हयात ने न सिर्फ किचलू की मुखालफत (विरोध) नहीं की बल्कि उसके खयाल की ताईद (अनुमोदन) की। क्या शौकत हयात साहब वजीर सिन्ध को यह मशविरा देंगे कि वह अपना हुक्म वापिस ले लें। (प्रकाश २४-१२-४४ से उद्धृत) ऐसे ही अन्य सब मतों के विचारशील सज्जनों ने जिनमे से Bombay Sentinel नामक बम्बई के सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र के वयोवृद्ध सम्पादक श्री बी जी हौर्नीमेन साधु टी एल वास्वानी एम ए तथा सरदार जोगेन्द्रसिंहका नाम विशेष उल्लेखनीय है। सिन्ध सरकार द्वारा लगाये प्रतिबन्ध की घोर निन्दा करते हुए आर्यों से इस विषयक आन्दोलन में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया है।

सत्यार्थप्रकाश रक्षार्थ अपूर्व उत्साह—स० प्र० सम्मेलनों की बाढ

साधुओं में अद्भुत जागृतिः—

जब से सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर 'प्रतिबन्ध लगाने की अत्यन्त निन्दनीय आज्ञा जारी की है उसके विरोध मे इतनी अधिक सभाओं की सूचना सार्व देशिक सभा कार्यालय में प्राप्त हुई हैं कि हमें अत्यन्त दुःख है उनका वृत्तान्त

स्थानाभाव के कारण हम प्रकाशित करने में असमर्थ हैं। यदि उन सब आर्यसमाजों तथा अन्य जैन जागृतिसङ्घ सनातन युवक मण्डल, दलितोवर्ग संघ आदि का केवल नाम भी देने लगें तो कई पृष्ठ भर जायेंगे। कई हजार तार इन संस्थाओं की ओर से भारत सरकार और सिन्ध सरकार को सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध के विरोध में भेजे जा चुके हैं। सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलनों की तो ऐसा प्रतीत होता है कि बाढ सी आ गई है। सत्यार्थ प्रकाश की रक्षार्थ उत्साह का अपार समुद्र सवत्र उमड़ता हुआ दिखाई देता है और जनता इस पवित्र धर्म ग्रन्थ की रक्षार्थ बडे से बडा त्याग और बलिदान करने को न केवल तय्यार है बल्कि अधीर हो उठी है और अत्यन्त उत्सुकता पूर्वक सार्वदेशिक सभा द्वारा नियुक्त कार्य समिति के आदेश की प्रतीक्षा कर रही है। जिन स्थानों से

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलनों की सूचना मिली है उनमे से सनातन धर्मी भाइयों के द्वारा हरिद्वार की हरकी पैड़ी पर श्री १०८ मण्डलेश्वर स्वामी भगवतानन्द जी मन्त्र तीर्थ वेदान्त वागीश मीमांसा भूषण वेदरत्न दर्शनाचार्य के सभापतित्व में १५ दिसम्बर १९४४ को और २८ दिसम्बर १९४४ को श्री १०८ स्वामी जगदीश्वरानन्द जी भारती कैलाश आश्रम वालों के सभापतित्व मे ऋषिकेश मे अत्यधिक समारोह पूर्वक हुए सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन विशेष उल्लेखनीय हैं। इन सम्मेलनों मे महन्त शान्तानन्द जी, महन्त स्वामी शिवदयाल गिरि जी स्वामी रामगिरि जी, स्वामी प्रकाशानन्द जी आदि साधुओं तथा अन्य विद्वानों ने बहुत बड़ी संख्या मे एकत्रित होकर यह घोषणा की कि 'जब तक सिन्ध सरकार सत्यार्थप्रकाश पर इस प्रतिबन्ध को वापिस न ले लेगी तब तक साधु मण्डल चैन से न बैठेगा और इस अनुचित प्रतिबन्ध को वापिस करा कर ही दम लेगा। सभापति स्वामी भगवतानन्द जी ने हरिद्वार मे कहा कि 'सत्यार्थ प्रकाश एक तेजस्वी महात्मा की सद्भावना से लिखा हुआ ग्रंथ है और यह एक ज्योति स्तम्भ है। पवित्र गङ्गा के तट पर सब मिल कर प्रतिज्ञा करो कि सत्यार्थ प्रकाश के १४वे समुल्लास के एक अक्षर को भी नहीं मिटने देंगे। उसकी रक्षा मे प्राण तक दे देंगे "

हमे निश्चय है कि यदि सिन्ध सरकार ने प्रबल लोकमत का मान करते हुए सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध को शीघ्र न हटाया तो जिस प्रकार का अति प्रबल प्रचण्ड आन्दोलन चलाया जाएगा उसमें सभी विचारशील सज्जनों का सहयोग सार्वदेशिक सभा को प्राप्त होगा। आर्य समाजों को जो विज्ञप्ति पत्र इस विषयक तय्यारी के लिये भेजे गये थे उनके बड़े ही सन्तोष जनक उत्तर सब स्थानों से प्राप्त हो रहे हैं और सत्याग्रह की अवस्था मे उसके लिये उद्यत व्यक्तियों की संख्या २५ हजार से अधिक सभा कार्यालय में प्राप्त हो चुकी है। इस बीच में इस्लाम पर समाज के प्रसिद्ध विद्वानों की सम्मतियाँ, ऋषि दयानन्द और सत्यार्थ प्रकाश के महत्व विषयक भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों की श्रद्धाञ्जलियां, सत्यार्थप्रकाश की सार्वभौमता, कुरान में अन्य मतावलम्बियों की कठोर निन्दा इत्यादि विषयक उत्तम अनुसन्धान पूर्ण ग्रंथ सभा की ओर से तय्यार हो रहे हैं जो बहुत शीघ्र विचारशील नर नारियों के सम्मुख आएँगे। कार्य समिति के अध्यक्ष माननीय श्री घनश्यामसिंह जी ने गत १७ दिसम्बर को वक्तव्य देते हुए जो कहा था कि 'हम सब अपने कर्तव्य के विषय मे सजग हैं और आर्य समाज के मुख्य धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिये हम पूर्णतया प्रयत्नशील हैं।

हम बड़े ध्यान से अपने विरोधियों की चालों का अध्ययन कर रहे हैं जिससे कि उनको विफल किया जा सके। प्रत्येक बात तत्काल ही जनता के सामने नहीं लाई जा सकती। इस समय तो केवल यही कह सकता हूँ कि अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिये कोई भी कष्ट वा बलिदान बड़ा न समझा जाएगा और साधारण तया हिन्दुओं और मुख्य तया आर्यों को इसके लिए उद्यत रहना चाहिए।" उस पर पूर्ण विश्वास रखते हुए समस्त आर्य हिन्दू जनता को सत्यार्थ प्रकाश के प्रति दिन स्वाध्याय, उस के अधिक से अधिक प्रचार सत्यार्थ प्रकाश निधि के २ लाख रु० की पूर्त्यर्थ अधिकतम सहायता तथा कार्य समिति के आदेशानुसार बड़े से बड़े त्याग के लिये अपने को तय्यार रखना चाहिये। भविष्य कार्यक्रम के विषय में जो क्रियात्मक निर्देश भेजना चाहें वे सार्वदेशिक सभा कार्यालय में भेज सकते हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक महत्वपूर्ण निश्चय

अन्तरंग सभा तिथि २०।११।४४ के निश्चय सं० १० की प्रतिलिपि

आर्य समाज बम्बई का विषय प्रस्तुत हुआ। इस विषय में हुआ पत्र व्यवहार भी पढ़ा गया। निश्चय हुआ कि समस्त सम्बद्ध प्रान्तीय सभाओं को लिखा जाये कि वे अपने अधीनस्थ आर्य समाजोंको आदेश देवें कि सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत आर्य समाज के नियमोपनियमों को मानें और यदि किसी समाज में उनसे भिन्न नियमोपनियम व्यवहृत होते हों तो उन्हें आदेश देवें कि ३ मास के भीतर भीतर वे अपने नियमोपनियमों का सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत नियमोपनियमों के अनुसार कर लेवें। यदि कोई समाज इस आदेश की अवहेलना करे तो उसे प्रान्तीय सभा के संगठन से पृथक् समझा जाये। और उसे संगठन के लाभों से वंचित कर दिया जाये।

हम समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्यसमाजों का ध्यान अन्तरङ्ग सभा के उपर्युक्त निश्चय की ओर आकर्षित करते हुए उनसे इसके अनुसार कार्य करने कराने का अनुरोध करते हैं जिस से आर्य समाज का संगठन प्रबल बने और उसमें शिथिलता न आने पाए।

ध० दे०

दान सूची सत्यार्थ प्रकाश निधि

मास दिसम्बर सन् १९४४ ई०

बिहार प्रान्त

१००) श्री मन्त्री जी आ० स० जमशीदपुर

५२८४।।) गत योग

५३८४।।) योग

संयुक्त प्रान्त

१००) श्री मन्त्री जी आ० स० फतेहपुर

५००) श्री मन्त्री जी सत्यार्थ प्रकाश समिति झांसी

१०) श्री मन्त्री जी आ० स० शाहजहांपुर (मैनपुरी)

१०) श्री मन्त्री जी आ० स० मण्डल डौरली (मेरठ)

६८४६।।) गतयोग

७४६६।।) योग

राजस्थान प्रान्त

१५०) श्री मन्त्री जी आ० स० बास कृपाल नगर

२०) श्री चा० धन्नाराम जी बहादरा (बीकानेर स्टेट)

२१) श्री प० धम्मन राम जी बहादरा (बीकानेर स्टेट)

३०) श्री चौधरी० अमीचन्द्र जी बहादरा (बीकानेर स्टेट)

१०) श्री मन्त्री जी आ० स० नरसिंहगढ़

१७५८ गत योग

१९५९ योग

मद्रास प्रांत

१२।।) श्री अनन्तैया मन्त्री आर्य समाज हिरिमड्डक (द० क०)

२३६) गतयोग

२४८।।) योग

बम्बई प्रान्त

१०००) श्री राज रत्न नान जी कालीदास महता पोर बन्दर

१०१) श्री प० कन्हैयालाल जी मिश्र आर्योपदेशक बम्बई से, श्री सेठ मगे जी ननन सी अरब वाले से श्री प० जी को भेंट में मिले।

१००) श्री प० कन्हैयालाल जी मिश्र आर्योपदेशक बम्बई से श्री सेठ शूरजी बल्लभदास बम्बई से श्री प० जी को भेंट में मिले।

२५) श्री मन्त्री जी आ० स० वीजलपुर सूरत

१६२३) गतयोग

२८६६ योग

मध्य प्रदेश

६०) श्री मन्त्री जी आ० स० पुसन्द

३०) आ० स० बीना

३३४।) गत योग

४२४।) योग

पंजाब व देहली प्रान्त

१५) श्री लक्ष्मीदास जी चकवाल जि० झेलम

१०) श्री मन्त्री जी आ० स० दतारपुर होशियारपुर

१५) श्री मन्त्री जी आ० स० खन्ना

४) श्री मन्त्री जी आ० स० पोनाहाना गुडगॉव

५१) श्री लाला रामजीवन लाल जी द्वारा श्री प० रामचन्द्र जी पुरोहित नया बास

१५१९।।) गतयोग

१६१४।। योग

बंगाल प्रान्त

१६०) गतयोग

हैदराबाद स्टेट

८।) श्री मन्त्री जी हिन्दू मण्डल सीताराम बाग (हैदराबाद दकन)

२६०) गत योग

२६८।) योग

सिन्ध प्रान्त

५) गत योग

विदेश

७५०) गतयोग

अ० भा० आर्य सम्मेलन

४०००।≈) गत योग

८) विविध

२२७८४।≈) गत योग २२७८।≈) गतयोग

२५१७८≡) सर्व योग २५१७८≡) सर्व योग

सब दाताओं को सभा की ओर से धन्यवाद। शेष आर्यसमाजों और आर्य प्रतिनिधि सभाओं को भी विशेष प्रयत्न करके २ लाख रु० की राशि की शीघ्र पूर्ति कर देनी चाहिये।

मन्त्री सार्वदेशिक सभा

दान सूची मास दिसम्बर सन् १९४४

आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दान

२) श्री मन्त्री जी आ० स० बाम कृपालनगर

५) श्री शिवराजसिंह जी मन्त्री हलद्वार बिजनौर।

१० श्री मन्त्री जी आ० स० नैनीताल।

१७)

१०८७।≈) गतयोग

११०४।≈) योग

सब दाताओं का धन्यवाद। जिन आर्य समाजो ने अपना भाग अभी तक भेज कर अपने कर्तव्य और अनुशासन का पालन नहीं किया उन्हें भी शीघ्र एकत्रित करके अथवा समाज के कोष से अच्छी राशि शीघ्र भेज देनी चाहिये।

दान सूची मास दिसम्बर सन् १९४४

३८०) स्व० ओंकारदत्त जी की सम्पत्ति सोना आदि की बिक्री का।

१०) एम० बी० उकपीकर मनमाड़ (बम्बई)

१२।) श्री मन्त्री जी आ० स० देवास (राजस्थान)

सब दानियों को सभा की ओर से धन्यवाद

मन्त्री सार्वदेशिक सभा।

भूल सुधार

पृ० ३७७ पर भूल से शैक्स पियर के उद्धरण में is a के स्थान पर in और Modo के स्थान पर made तथा आगे Paralysing के स्थान पर Paralying छप गया है। पाठक सुधार कर पढ़ें। सम्पा०

श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा

"चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।

सार्वदेशिक स॰ ॰ ॰ ॰ ॰

नाम पुस्तक — लेखक व प्रकाशक — मूल्य

(१) वैदिक सिद्धान्त स० (सा० सभा) १)
( ) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका बड़ा साइज ,, १।)
(३) आर्याभिविनय बड़ा साइज ,, ।-)
(४) संस्कृत सत्यार्थप्रकाश आ० ,, ।।)
(५) विदेशों में आर्य समाज ,, ।।)
(६) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर ,, १।)
(७) आर्य सिद्धान्त विमर्श ,, १।।)
(८) संसार समाजों की सूची ,, ।।)
(९) सार्वदेशिक सभा का इतिहास ,, अ० २)
(१०) ब्रह्मदान ,, ।।)
(११) आर्य डायरेक्टरी ,, १।)
(१२) आर्य वीर दल शिक्षण शिविर ,, =)
(१३) आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण प इन्द्रजी ।-)
(१४) यमपितृ परिचय प० प्रियरत्न जी आर्ष २)
(१५) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र ,, २)
(१६) वैदिक सूर्य विज्ञान ,, -)
(१७) वेद में असित् शब्द ,, -)।
(१८) ऋग्वेद में देवृकामा ,, -)
(१९) वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां ,, १)
(२०) वमान शास्त्र ,, ।=)।।
(२१) मातृत्व की ओर श्री प० रघुनाथप्रसाद जी पाठक अ० १।), स० १।।)
(२२) आर्य जीवन गृहस्थ धर्म ,, ।=)
(२३) ग्राम कथा नारायण स्वामी जी २।)
(२४) मृत्यु परलोक ,, ।।-)
(२५) उपनिषद् ईश ।=) प्रश्न ।-) मुण्डक -)।।, माण्डूक्य -)।, बृहदारण्यक ४)
(२६) वैदिक सन्ध्या रहस्य ,, =)।।
(२७) सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लास में उद्धृत कुरान की आयतों का देवनागरी में उल्था श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी ।।)
(२८) कुरान में अन्य मतावलम्बियों के लिए कुछ कठोर उत्तेजक वाक्यों का संग्रह ,, =)
(२९) इज़हारे हकीकत श्री ला० ज्ञानचन्द्रजी आर्य ।।।=)
(३०) भक्ति कुसुमाञ्जलि श्री प० धर्मदेवजी वि०वा० ।।।)
(३१) त्रिदेव निर्णय श्री प० शिवशङ्कर जी १)
(३२) भूमिका प्रकाश श्री द्विजेन्द्रनाथ जी १।।)
(३३) ऋग्वेदानुक्रमणिका चन्द्र अनु० श्री प० मधावतजी २)
(३४) वेद और गमर श्री ला० श्यामसुन्दरलाल जी ≈)
(३५) बहिनों की बातें श्री प० सिद्धगोपाल जी कविरत्न १)
(३६) ध्यान योग प्रकाश स्वामी लक्ष्मणानन्द जी १।।-)
(३७) दयानन्द कविता श्री जगदत्त जी त्यागी ।=)
(३८) सत्यार्थ प्रकाश गान श्री सत्यभूषण वेदालङ्कार तथा श्री उन्यवार" ।=)
(३९) हमारे घर श्री निरञ्जनलाल जी गौतम ।।-)
(४०) भारत में जाति भेद , ।)
(४१) आर्यवीर दल गीतमाला श्री ओम्प्रकाश जी १)
(४२) Crucifixion by an eye witness (S Sabha) ।-)
(४३) Truth and Vedas Late Rai Thakur Datt Dhavan ।=)
(४४) Truth Bed Rock of Aryan Culture ।।)
(४५) Vedic Teachings Atma' १।)
(४६) Daily ... er of An Arya (Shr ... ji ।।)
(४७) Com... Ishop... १)
(४८) Voice of A... arta (T L Vaswani) =)
(४९) Kenopanishat ...

[illegible]

... Divina (Swami Bhumanand Saraswati) ४)
(५४) Aryasmaj and Theosophical Society (Shri Shyam Sundarlal Vakil) ≈)



१९४५ ई० | २००१ सं०

सम्पादक—

वार्षिक मूल्य | विदेश ७शि.

सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लासांक

विषय सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष २० | फरवरी १९४५ ई० | माघ २००१ | दयानन्दाब्द १२१ | अङ्क १३

* वैदिक प्रार्थना *

ओ३म् भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्याभर। भूरि घेदिन्द्र दित्ससि ॥ ऋग्वेद ४।३२।२०

हे (इन्द्र) परमेश्वर ! तू (भूरिदा) बहुत देने वाला है (न) हमें (भूरिदेहि) बहुत ज्ञान, बल आदि दे (मा दभ्रम्) थोड़ा नहीं (भूरि आभर) बहुत अधिक ज्ञान और बल आदि हमे प्राप्त करा तू (भूरि घा इत्) बहुत अधिक ही (दित्ससि) देने की इच्छा करता है।

विनय—हे परम ऐश्वर्य युक्त प्रभो! तुम्हारे दान अनन्त हैं। पिता माता के समान तुम हमे सचमुच बहुत अधिक ज्ञान, बल सुख, शान्ति तथा अन्य दिव्य गुणों से भरपूर करना चाहते हो इसलिये हम तुमसे यही प्रार्थना करते हैं कि तुम्हारी कृपा और अपने पुरुषार्थ से हमें थोड़े नहीं, बहुत अधिक ज्ञान शक्ति, सुख, शान्ति, आनन्द आदि की प्राप्ति हो जिससे हम धर्म के मार्ग पर निर्भयतापूर्वक चल सकें और स्वयं सत्य का ग्रहण करते हुए उसके प्रचार में सदा तत्पर रहें। हे परमात्मन् ! तुम ज्ञान, शक्ति, शान्ति के स्रोत और भण्डार हो हमें, उस अपरिमित भण्डार में से अच्छी मात्रा में दिव्यगुणों का दान करके अनुगृहीत करो।

एकेश्वर पूजा

(१) ओंतम्वभि प्रगायत पुरुहूत पुरुष्टुतम्। इन्द्र गीर्भिस्तविषमाविवासत ॥ ऋ ८।१५।१

(२) ओ३म् सस्तोम्य स हव्य सत्य सत्वा तुविकूर्मि एकश्चित् सन्नभिभूति ॥ ऋ ८।१६।८

३ ओं यजिष्ठं त्वा ववृमहे देव देवत्रा होतारममर्त्यम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ ऋ ८।१९।३

शब्दार्थ —(१) हे मनुष्यों (तम्) उस (पुरुहूतम्) बहुत ज्ञानियों और भक्तों द्वारा पुकारे गये और (पुरुष्टुतम्) बहुत विद्वानों द्वारा स्तुति किये गये (इन्द्रम् उ) परमेश्वर को ही (अभि प्र गायत) भली भाति गाओ—उसकी महिमा का गान करो। उस (तविषम्) महान् बल के भण्डार परमेश्वर की (गीर्भि) उत्तम वाणियों से (आ विवासत) पूजा करो (२) (सस्तोम्य) वह परमेश्वर स्तुति करने के योग्य है (स हव्य) वह हृदय मे ग्रहण करने वा पुकारने योग्य है वह (सत्य) सत्यस्वरूप (सत्वा) अनन्त बलशाली और (तुविकूर्मि) अद्भुत कर्मों का करने वाला है (एक चित्) एक होता हुआ ही वह अपने अनन्त बल के कारण (अभिभूति) सब को परास्त करने वाला है—उसके समान कोई बलशाली नहीं है। (३) हे प्रभो ! हम (देवत्रा देवम्) सूर्य चन्द्र नक्षत्र अग्नि आदि प्रकाशकों के प्रकाशक (यजिष्ठम्) सब से अधिक पूजनीय (होतारम्) ज्ञान, बल, सुख और शान्ति देने वाले (अमर्त्यम्) अमर (अस्य यज्ञस्य) इस ब्रह्माण्डरूप यज्ञ के (सुक्रतुम्) उत्तमरीति से निर्माण करने वाले तुझ परमेश्वर को (ववृमहे) चुनते हैं—मित्र और बन्धु के रूप में स्वीकार करते हैं।

विवरण—ऋग्वेद के इन मन्त्रों मे परमेश्वर के उत्तम गुणों का प्रतिपादन करते हुए उसकी स्तुति और उपासना करने का विधान किया गया है। वह सत्य स्वरूप, अनन्त शक्ति का भण्डार सारे ससार का उत्पादक, अमर, सर्वप्रकाशक, ज्ञान और शक्ति का प्रदाता एक परमेश्वर ही पूजनीय है, उसको छोड़कर और किसी की उसके समान पूजा नहीं करनी चाहिये, सभी ज्ञानी और भक्त लोग उस एक परमेश्वर को ही सदा स्मरण करते और भजन द्वारा उसकी अनन्त महिमा का गान करते हैं ऐसा इन मन्त्रों मे स्पष्ट बताया गया है। वेद के ऐसे मन्त्रों के आधार पर ही महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज का यह नियम बनाया कि "ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, और सृष्टि कर्ता है। उसकी उपासना करनी योग्य है। शिव रात्रि को बालक मूल जी के मन में ईश्वर की कृपा से इसी ज्ञान का उदय हुआ था और उसी शिव अर्थात् कल्याण स्वरूप परमेश्वर की प्राप्ति के लिये उन्होंने वेदादि शास्त्रों का ज्ञान सम्पादन तथा योग साधन करके उसे प्राप्त किया था। हम सब का भी कर्तव्य है कि वेद के आदेशानुसार हम उस एक सच्चिदानन्द स्वरूप परमेश्वर का नित्य स्मरण करते हुए सत्य के प्रचार और असत्य के निवारण में सदा तत्पर रहें।

सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास का इस्लाम पर प्रभाव

[लेखक—पूज्यपाद महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ज्वालापुर]

ऋषि दयानन्द की आलोचना का, जो उन्होंने इस्लाम की की थी, इस्लाम पर जो प्रभाव पड़ा उसका फल कादियानी सम्प्रदाय का जन्म है। इस सम्प्रदाय के विद्वानों ने कुरान की अनेक अनर्गल बातों को तर्क सम्मत बनाने की चेष्टा की है। यहा एक उदाहरण दिया जाता है। मुसलमान खुदा का सातवें आस्मान पर एक तख्त (अर्श) होना माना करते थे और अब भी अनेक मुसलमान ऐसा ही मानते हैं। इस्लामी हदीसों और इतिहासों मे वर्णित है कि चार फरिश्ते उस तख्त का उठाये हुये है। वे फरिश्ते कितने बडे लम्बे चौडे है इस बात का अन्दाजा, इतने ही से किया जा सकता है कि उनके एक कान और उसके पास की आंख म ५००० वर्ष की रात का अन्तर है। इस पर अनेकों ने आक्षेप किये हैं। ऋषि दयानन्द ने भी इस १४ वें समुल्लास में उस पर आक्षेप किया था—परन्तु अब मौलवी मुहम्मदअली M A अहमदी सम्प्रदाय के एक विद्वान् ने, इसका रूप कितना अच्छा बना दिया उनका कहना है कि अर्श नाम जगत् का है और उनके चार फरिश्तों द्वारा उठाने का अभिप्राय यह है कि वह जगत् चार वस्तुओं अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी से स्थित है और खुदा के उस पर होने का अभिप्राय यह है कि वह इस जगत् मे व्यापक है। मौलवी साहिब ने इसी प्रकार अनेक बातों को सुधार कर उनका अच्छा रूप देने का यत्न किया है। मुसलमानों को चाहिये कि ऋषि दयानन्द की आलोचना से लाभ उठाकर, उपर्युक्त उदाहरण को लक्ष्य मे रखते हुए, प्रत्येक बुद्धि विपरीत बात का शोध करें और उनको तर्क सगत बनावें और यदि वह बात ऐसी है कि तर्क सगत नहीं बन सकती तो फिर उसे छोड़ देवें।

महर्षि दयानन्द और कुरान शरीफ़ की नई व्याख्यायें

[लेखक—श्री प० हरिदत्त जी वेदालङ्कार गुरुकुल कांगड़ी]

एक कहावत है—जादू वह है जो सिर पर चढ़ कर बोले। आज भले ही कुछ मुसलमान भाई स्वामी दयानन्द जी की आलोचना से असन्तुष्ट और नराज हों किन्तु उस आलोचना ने नवीन मुस्लिम टीकाकारों को अपनी व्याख्यायें बदलने के लिये बाधित कर दिया है। इन टीकाकारों ने ऋषि दयानन्द द्वारा आलोचित एवं समीक्षित स्थलों के शब्दों और अर्थों का अभिप्राय सर्वथा परिवर्तित कर लिया है। ऊपर से भले ही वे यह बात न स्वीकार करें किन्तु इनकी टीकाओं में यह असर इतना स्पष्ट है कि इसे ऋषि दयानन्द का ही जादू मानना पड़ता है।

इस जादू का असर यह हुआ है कि कुरान शरीफ की इन टीकाओं में आक्षेप योग्य या अवैज्ञानिक स्थलों वाली आयतों का नवीन समाधान हो रहा है। उसमें पाये जाने वाले किस्से-कहानियों से सुन्दर भावपूर्ण अलङ्कारात्मक उपदेश निकाले जा रहे हैं। इतना ही नहीं, कुरान शरीफ में से आजकल के हवाई जहाज आदि के आविष्कार निकाले जा रहे हैं। कुरान शरीफ के ऐसे व्याख्याकारों में क़ादियानी सर्व प्रथम हैं। आर्य समाज के कट्टर विरोधी होते हुए भी उन्होंने जिस पद्धति से कुरान शरीफ में से, ये सब बातें निकाली हैं, उसमें ऋषि दयानन्द की पद्धति का पूरा अनुकरण किया गया है। ऋषि दयानन्द ने वैदिक मन्त्रों की परम्परागत कर्मकाण्डपरक व्याख्यायें स्वीकार नहीं की, नैरुक्त पद्धति से उन वेदमन्त्रों के अर्थ किये, प्रजापति अहिल्या आदि के आख्यानों की बहुत सुन्दर व्याख्या की। क़ादियानी भी नैरुक्त पद्धति एवं अलङ्कारों का आश्रय लेकर कुरान शरीफ के अर्थों में आमूल परिवर्तन का प्रयत्न कर रहे हैं। यहां अञ्जुमने इशाअते इस्लाम लाहौर द्वारा प्रकाशित श्री मुहम्मदअली के कुरान शरीफ के अंग्रेजी अनुवाद से कुछ ऐसी परिवर्तित व्याख्याओं के उदाहरण उपस्थित किये जायेंगे। पहले कुरान शरीफ के सदर्भों का सारांश उसके बाद ऋषि दयानन्द की १४ वें समुल्लास में की गयी समीक्षा और तत्पश्चात् मुहम्मद अली की टीका का निर्देश होगा। सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न आकारों के अनेक संस्करण छपे हैं। अत: इनकी पृष्ठ सख्या एक जैसी नहीं। यहां प्रतीक के लिये सर्वत्र समीक्षा की संख्या का सकेत किया जायगा क्योंकि समीक्षा की संख्यायें सब संस्करणों में एक सी ही हैं। कुरान शरीफ के सकेत सूरत और आयत के अनुसार हैं और मुहम्मद अली के १६३४ में मुद्रित होली कुरान की पृष्ठ सख्या के अनुसार।

कुरान शरीफ का एकेश्वरवाद और नये भाष्य—

वेदों में एक अत्युदात्त और निर्मल एकेश्वरवाद की शिक्षा दी गयी है, उसके सर्वशक्तिमान, निर्विकार, अनादि, अजन्मा, अनन्त, अनुपम, अजर, अमर होने के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। इस्लाम को भी अपने एकेश्वरवाद का अभिमान है, उसने बुतपरस्ती को नेस्तनाबूद

करने का पूरा प्रयत्न किया। किन्तु कुरान शरीफ में परमात्मा का जो वर्णन मिलता है उसमें कई स्थलों पर परमात्मा के देहधारी होने का उल्लेख है। ऋषि दयानन्द ने इन स्थलों की इस दृष्टि से आलोचना की है कि यदि परमात्मा देहधारी है तो वह सर्वव्यापक एवं सारे जगत का शासक नहीं हो सकता।

कुर्सी आयत (२।२५५) कुरान शरीफ की बड़ी प्रसिद्ध आयतों में से है। इसमें ईश्वर के स्वरूप का बहुत अच्छा प्रतिपादन किया गया है। परमात्मा की विशालता और महत्ता बताने के लिये कहा गया है कि उसकी कुर्सी ने आसमान और पृथ्वी को समालिया है कुरान के सभी पुराने टीकाकार यहा कुर्सी का बिल्कुल भौतिक स्थूल अर्थ ग्रहण किया करते थे। स्वामी जी के सामने जो भाष्य थे, इन मे भी कुर्सी का यही अर्थ किया गया था। अत स्वामी जी ने समीक्षा स० ४१ मे इस आयत की आलोचना करते हुए लिखा था "जब उसकी कुर्सी है तो वह एकदेशी है, जो एकदेशी होता है, वह ईश्वर नही कहाता क्योंकि ईश्वर तो व्यापक है।"

मुहम्मद अली के होली कुरान में कुर्सी का अर्थ ज्ञान किया गया है। पृ० ४६ की दूसरी पाद टिप्पणी में कहा गया है कि यह अर्थ बुखारी के आधार पर किया गया है किन्तु बखारी का कोई प्रमाण नहीं दिया गया और उपर्युक्त आयत के अश का अनुवाद यह किया गया है—'उसका ज्ञान द्युलोक और पृथिवी लोक पर विस्तीर्ण है।" सरल शब्दों मे इसका अभिप्राय है कि परमात्मा सवज्ञ है। इस आयत की यह नई व्याख्या स्पष्ट रूप से महर्षि के प्रभाव को सूचित करती है।

मुसलमानों का यह विश्वास है कि खुदा सातवें आसमान पर एक सिहासन पर बैठा हुआ है और कयामत के दिन वह सब का न्याय करेगा। कुरान शरीफ (६९।१७) में इसके बारे में, यह वर्णन है "(कयामत के दिन) देवदूत उसके पार्श्वों मे होंगे और उनके ऊपर आठ (व्यक्ति) खुदा के सिहासन को उठाये हुए होंगे।"

स्वामी जी ने समीक्षा स० १४५ मे इस अश की आलोचना करते हुए लिखा है कि—"अब कुरान का खुदा शरीरधारी होने में कुछ सदिग्ध न रहा क्यों कि तख्त पर बैठना, आठ कहारों से उठवाना बिना मूर्तिमान् के कुछ भी नहीं हो सकता।

परमात्मा का सिहासन उठाने वाले आठ व्यक्तियों की नवीन व्याख्या यह है "कुरान शरीफ के प्रथम अध्याय मे परमात्मा के चार महान् गुणों का वर्णन है। ये चार गुण सब व्यक्तियों को वृत्ति देना (Providence) प्रेम, दया और दण्ड है। कयामत के दिन इन गुणों के नूतन आविर्भाव के कारण इनकी सख्या दुगुनी हो जाती है। यही गुण परमात्मा के सिहासन को उठाये हुए है (होली कुरान पृ०५७१, पाद टिप्पणी १)

आठ की सख्या पूरी करने की यह बहुत लचर दलील है किन्तु इससे यह स्पष्ट है कि अब मुस्लिम टीकाकारों को पुरानी व्याख्या से सन्तोष नहीं है।

कुरान शरीफ में अनेक स्थानों पर सात आसमानों का वर्णन है। उदाहरणार्थ ७१।१४ में यह कहा गया है—'क्या नहीं देखा तुमने कैसे उत्पन्न किया अल्लाह ने सात आसमानों को ऊपर नीचे।'

स्वामीजी ने इस पर यह समीक्षा की है "आसमान को ऊपर तले कैसे बना सकता है? क्योंकि वह निराकार और विभु पदार्थ है। यदि दूसरी चीज़ का नाम आकाश रखते हो तो भी उसका नाम आकाश रखना व्यर्थ है। यदि ऊपर तले आसमानों को बनाया है तो उन सब के बीच में चाद सूर्य कभी नहीं रह सकते। (समीक्षा संख्या १४७)

अब ऊपर नीचे बनाये गये सात आसमानों की सर्वथा नयी व्याख्या की गयी है। यह कहा जाता है कि यहाँ ऊपर नीचे का अर्थ अरबी मुहावरे के अनुसार ही लेना चाहिये। सात आसमानों का वास्तविक अभिप्राय सौरमडल के सात मुख्य ग्रहों से ही है। (हो० कु० पृ० ४६१ की दूसरी टिप्पणी)। इस प्रकार पुरानी टीकाओं के अनुसार, पहले जो आयत नितान्त अवैज्ञानिक थी, अब उसे वैज्ञानिक तथ्य सूचित करने वाली बना दिया गया है।

कुरान शरीफ के बारे मे यह अनुश्रुति प्रसिद्ध है कि वह रमजान की एक लैलतुल् क़द्र (शक्ति रात्रि) में सब से ऊपर वाले आसमान से सब से निचले आसमान पर लाया गया (कु श ४४ ३, ९७। १) और वहा एक फरिश्ता समय २ पर, आवश्यकतानुसार वह ज्ञान हजरत मुहम्मद को पहुँचाता रहा। इससे यह प्रतीत होता है कि सात आसमानों की वास्तविक सत्ता है और वे सौर मडल के ग्रहमात्र नहीं है अपितु एक दूसरे के ऊपर खडे हुए सात आसमान हैं। नये टीकाकारों को यह कल्पना मान्य नहीं है। अत उन्होंने सन्दर्भ की परम्परागत व्याख्या से सर्वथा भिन्न एक नयी व्याख्या की है। उनका कहना है कि यहा लैलः शब्द लाक्षणिक रूप से प्रयुक्त हुआ है और उसका वास्तविक अर्थ न लेकर आलंकारिक अर्थ ही ग्रहण करना चाहिये। रात का आलकारिक अर्थ है अज्ञानान्धकार। मानव जाति के इतिहास मे बहुत से ऐसे समय आते हैं जब लोग सच्चे धर्म को बिलकुल भूल जाते हैं, दुनिया से सच्चा ज्ञान नष्ट हो जाता है। यही सच्चे धर्म के लिये रात होती है। ऐसे समय मनुष्यों को सच्चे ज्ञान का प्रकाश देने के लिये पैगम्बरों का आविर्भाव होता है। अरब लोग जब धार्मिक अज्ञान की गहरी अन्धकार पूर्ण रात्रि मे सोये हुए थे, उस समय खुदाने उन्हे ज्ञान देने के लिये हज़रत मुहम्मद को कुरान शरीफ के ज्ञान के साथ भेजा। यही कुरान शरीफ का रमजानकी रात मे सातवें से पहले आसमान मे उतरना है। (हो० कु० पृ० ४६३)

कयामत का नया रूप

मुसलमानों का यह विश्वास है इस सृष्टि की समाप्ति पर एक दिन परमात्मा सब प्राणियों के पाप पुण्य की जाच करेगा। उस दिन कब्रों में गडे हुए सब मुर्दे अपनी कब्रों से उठ खडे होंगे। उन मुर्दों के उठ खडे होने से इस दिन का कयामत कहते हैं। सारा कुरान शरीफ कयामत के विचार से ओतप्रोत है। इसको विभिन्न स्थानों पर अनेक नामों से कहा गया है। ७५। १ में यह पुनरुत्थान का दिन (यौमुल् कियामत) है, ७७। १३ में यह फैसले का (यौमुल् फसल) ३८। २६ मे हिसाब का (यौमुल् हिसाब) ४२ ७ मे सब के इकट्ठा होने का (यौमुल् जमा)।

स्वामीजी ने कयामत के समय न्याय की आलोचना करते हुए लिखा है कि न्यायकारी परमात्मा तो वह है, जो पाप पुण्य का सदा फैसला करता रहे। इसके बाद वे वर्तमान

अदालतों में देर तक टाले जाने वाले मुकद्दमों का व्यय करते हुए कहते हैं कि क्या मनुष्य कयामत तक दौरा सिपुर्द रहेंगे।

कयामत का नया रूप यह बताया जाता है कि मनुष्य किसी पैगम्बर के उपदेश से जब भी कभी सन्मार्ग पर आजाय तो वही क्षण उसके लिये कयामत है। कयामत आध्यात्मिक पुनरुत्थान मनुष्यों का सदा होता रहता है। वह दूसरे जन्म में या किसी विशेष समय में हो, ऐसी कल्पना नहीं करनी चाहिये। शुभ अशुभ कर्मों का फल ऐहिक जीवन को उतना ही प्रभावित करता है जितना पारलौकिक जीवन को। यद्यपि इसका पूर्ण प्रभाव मृत्यु के बाद ही दृष्टि गोचर होता है क्योंकि उस समय शारीरिक बन्धनों के हट जाने से एक नये और ऊँचे जीवन को प्रारम्भ करने की सम्भावना अधिक बढ़ जाती है। फिर भी, यह एक ऐसा नियम है जो जीवन के प्रत्येक क्षण में अपना कार्य कर रहा है और यह नहीं माना जा सकता कि परमात्मा किसी विशेष दिन अपने न्याय के कार्य को सम्पन्न करेगा। परमात्मा का न्याय हमेशा काम करता है, इसका एक प्रबल प्रमाण यह है कि कुरान शरीफ मे अनेक स्थलों पर परमात्मा को जल्दी हिसाब करने वाला कहा गया है। (२ । २०२, ३ । १८) (हो कु. भूमिका पृ० ४७-४८)

क़ुरान शरीफ़ में क़यामत के अनेक चिन्हों का वर्णन आता है। सरतुल् किथामत मे इनका कुछ विस्तार से उल्लेख है। इन चिन्हों मे से कुछ ऐसे भी हैं जो विज्ञान विरुद्ध और असभव प्रतीत होते हैं। उदाहरणार्थ ७५। ९ में यह कहा गया है कि (उस दिन) सूर्य और चाँद इकट्ठे किये जाएँगे। इस पर स्वामी जी ने आलोचना की है—भला सूर्य चाद कभी इकट्ठे हो सकते हैं? देखिये यह कितनी बेसमझी की बात है और सूर्य चन्द्र के ही इकट्ठा करने में क्या प्रयोजन था, अन्य सब लोकों के इकट्ठे न करने मे क्या युक्ति है, ऐसी२ असम्भव बातें परमेश्वर कृत कभी नहीं हो सकती हैं?"

अब सूर्य और चन्द्र के इकट्ठा होने का अर्थ यह किया जाता है कि उस समय ये दोनों अपना प्रकाश खो बैठेंगे और अन्धकारपूर्ण हो जायगे और यह मृत्यु के आगमन का चिन्ह है।

कयामत की कई निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि उस दिन आसमान फट जायगा (६९। १६) और उस दिन एक बड़ा भूचाल आयगा (७१। ७) स्वामीजी ने इस पर यह समीक्षा की है कि वाह क्या फिलासफी और न्याय की बात है। भला आकाश भी कभी फट सकता है? क्या वह वस्त्र के समान है जो फट जावे (समीक्षा स० १४५)। अब यह कहा जाता है कि यह केवल महान् घटनाओं का प्रतीक है। भूचाल का आशय उन महान् विक्षोभों से है जो इस परिवर्तन से पहले होंगे।

स्वर्ग और नरक का नवीन रूप

कुरान शरीफ मे मनुष्यों को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करने के लिये स्वर्ग का बहुत आकर्षक वर्णन किया गया है और बुरे कर्मों से बचने के लिये नरक की दारुण यन्त्रणाओं का एक सजीव चित्र खींचा गया है। इस्लामी बहिश्त एक बड़ा खूबसूरत और सब तरह के आरामों के देनेवाला बगीचा है। इसमें कोई अभाव, दुःख या कष्ट नहीं होगा और आनन्दोपभोग की प्रत्येक

प्रकार की सामग्री होगी। इसमें शहद, और दूध की नहरें चलती हैं, और मोमिनों को वहाँ हूरे मिलती है। ५२। १८। २० में कहा गया है 'जो (बुराई) से बचे रहेंगे। परमात्मा ने उन्हें जो कुछ दिया है, वे उससे प्रसन्न होंगे क्योंकि परमात्मा ने उन्हें प्रज्वलित अग्नि के दण्ड से बचा लिया है। तुमने जो (अच्छे) कर्म किये हैं, उनके बदले में आनन्दपूर्वक खाओ पियो। गद्दियों पर आराम से लेटो, हम तुम्हे शुद्ध सुन्दर हूरों से अवश्य मिलायेंगे। स्वर्ग में हूरों के मिलने का उल्लेख ४४। ५४, ५५। ७२ और ५६। २२ मे है।

स्वामी जी ने स्वर्ग के इन भौतिक सुखों तथा हूरों के वर्णन की बार बार बड़ी कड़ी आलोचना की है। २।२४ मे कहा गया है आनन्द का सन्देश दे उन लोगों का जो ईमान लाये और जिन्होंने अच्छे काम किये। उनके वास्ते बहिश्त हैं जिनके नीचे नहरे चलती हैं। जब उसमें मेवों के भाजन दिये दिये जायगे तो वे कहेंगे कि यह वह वस्तु है जो हमें इससे पहले दिये गये थे और उनके वास्ते पवित्र बीबियाँ सदा वहाँ रहने वाली हैं। स्वामी जी ने इस पर यह लिखा है कि भला यह कुरान का बहिश्त ससारसे कौनसी उत्तम बात वाला है? क्योंकि जो पदार्थ ससार मे हैं वे ही मुसल्मानों के स्वर्ग मे है। मुसल्मानों का स्वर्ग गोकुलिये गुसाइयों के गोलक और मन्दिर के सदृश दीखता है (समीक्षा सख्या ६)। समीक्षा स० ४६ में स्वामी जी ने २। ११ की आलोचना करते हुए कहा है भला यह स्वर्ग है किवा वेश्या वन? शायद कुछ व्यक्तियों को यह आलोचना बहुत कठोर प्रतीत हो किन्तु उन्हे यह नहीं भूलना चाहिये कि सर सय्यद अहमद ने इस्लामी स्वर्ग की इससे भी अधिक कठोर आलोचना करते हुए कहा था कि यदि यही स्वर्ग है तो हमारे चकले (वेश्यालय) उस स्वर्ग से बहुत अच्छे हैं।

मुहम्मदअली ने अपनी कुरान की टीका में स्वर्ग को बिल्कुल आलकारिक माना है। उसका कहना है कि स्वर्ग नरक किसी स्थान विशेष का नाम नहीं है। वे व्यक्ति की दो मानसिक अवस्थायें हैं। शुभ कर्मों से हम अपने मन में एक विशेष प्रसन्नता हल्कापन और प्रसाद पाते हैं, बुरे कर्मों से हम दुख, भारीपन और विषाद का अनुभव करते हैं। यही स्वर्ग और नरक है। वह मृत्यु के बाद ही होता हो, ऐसी कोई बात नहीं है। इस जीवन में प्रतिक्षण हम स्वर्ग और नरक का फल भ गते रहते हैं। कुरान शरीफ में स्वर्ग के लिये जन्नत (उद्यान) शब्द का प्रयोग होता है। जन्नता जन्न धातु से निकला है और इसका अर्थ किसी वस्तु को इस ढग से छिपाना है कि हमारी इन्द्रिया उसका ज्ञान न प्राप्त कर सकें। उद्यान को जन्नत इसलिये कहते हैं कि वहा सारी भूमि पेड़ों और लताओं से ढकी रहती है। स्वर्ग का वास्तविक सुख अतीन्द्रिय एव अवर्णनीय है। उसको समझाने के लिये ही उद्यान का रूपक बाधा गया है। यही हाल स्वर्ग की नहरों, गद्दों, शहद दूध आदि का है (हा कु भू मका पृ० ६१ ६२)

यदि स्वर्ग एक लाक्षणिक वर्णन है तो हूरे क्या हैं? इसकी नयी व्याख्या के लिये हूर के धात्वर्थ की शरण ली गयी है। हूर अहवर (पु) और हौरा (स्त्री) का बहुवचन है और इसका अथ है हवर वाले। हवर का अर्थ है—आख के काले और सफेद हिस्से का अत्यधिक गहरा कालापन और गहरी सफेदी। श्वेतिमा पूर्ण पवित्रता और शुद्धता

का प्रतीक है। अतः हूरों के साथ मिलने का केवल यही अर्थ है कि उत्तम कर्म करने वाले व्यक्ति पूर्ण रूप से शुद्धता और पवित्रता के साथ समागम करेंगे अर्थात् उनके चरित्र निष्कलंक और चन्द्रिका की तरह धवल होंगे। (हो कु पृ. ५२३ की पहली टिप्पणी)

यहां नई व्याख्या एक ऐसी सीमा पर जा पहुँची है, जिसे बहुत कट्टर मुसलमान स्वीकार न करेंगे। स्वर्ग के आनन्द और हूरें लाक्षणिक एव रूपक मात्र हैं इसे कोई सामान्य मुसलमान मानने को तय्यार न होगा किन्तु इस्लाम पर की गयी आलोचनाओं और स्वर्ग क सम्बन्ध मे की गयी कठोर समीक्षाओं का यह परिणाम है कि मुस्लिम टीकाकारों को अपने अर्थ बदलने पड़े हैं। ऋषि दयानन्द को यह श्रेय प्राप्त है कि वर्तमान युग मे, उन्होंने सर्वप्रथम इस्लाम की सद्भावना से खरी आलोचना की थी। मुस्लिम टीकाकार उससे व समय के प्रभाव से प्रभावित हो रहे हैं और परम्परागत व्याख्याओं के स्थान पर नयी आलंकारिक व्याख्यायें कर रहे हैं। ऋषि दयानन्द का जादू उनके सिर पर चढ़ कर बोल रहा है। उन्हें यह नया रास्ता दिखाने के लिये महर्षि का कृतज्ञ होना चाहिये था लेकिन यह बड़े खेद और दुर्भाग्य की बात है कि वे अपने मार्गदर्शक की आलोचनाको खण्डन करानेका आन्दोलन कर रहे हैं। आशा है, परमात्मा उन्हें सद् बुद्धिप्रदान करेगा।

इस्लामी खुदा और सत्यार्थ प्रकाश

[लेखक—श्री डाक्टर सूर्यदेवजी शर्मा सिद्धान्त शास्त्री, साहित्यालङ्कार एम० ए० एल० टी०, डी० लिट् अजमेर]

"सार्वदेशिक" के गत जनवरी मास के अङ्क में मेरा एक लेख "इस्लामी-स्वर्ग और "सत्यार्थ प्रकाश" प्रकाशित हुआ था जिसको पढ़कर अनेक मित्रों ने मुझे लिखा कि सत्यार्थ-प्रकाश के चौदहवें समुल्लास के सम्बन्ध में ऐसे ही तुलनात्मक लेखों की अत्यन्त आवश्यकता है। अत आज मैं चौदहवें समुल्लास में ऋषि दयानन्द ने जो समालोचना इस्लामी-खुदा के स्वरूपकी की है उसपर कुछ प्रकाश डालूँगा जिससे पाठकों को विदित हो जायगा कि स्वामी जी की समालोचना कुरान की ठीक आयतों के ऊपर कितनी तर्कपूर्ण और युक्ति सगत है।

स्वामी जी महाराज ने चौदहवें समुल्लास में खुदा की कुरान के आधार पर जो समालोचना की है उसमें विशेषत. निम्नलिखित चौदह बातों पर प्रकाश डाला गया है—

(१) खुदा पक्षपाती और अन्यायकारी "गडबड़िया" है (समीक्षा न० ५, ६, २४, ४६, ६५, १०१)

(२) खुदा शैतान को दबा नहीं सका, इसलिये सर्वशक्तिमान् कैसा? (समीक्षा ११, १३६)

(३) खुदा ने पहले आदम को सदा स्वर्ग में रहने का आशीर्वाद दिया और थोड़ी देर में कहा कि निकलो। जो भविष्य बातों का जानता होता तो ऐसा वर क्यों देता? यह खुदा की अल्पज्ञता है। (समीक्षा १२)

(४) खुदा में दम्भ और अभिमान है। (समीक्षा ५, १०)

(५) खुदा को कर्ज लेने को जरूरत पड़ती है। (समीक्षा ३६, ६४)

(६) खुदा मकर करता है। (समीक्षा ५०, ७८, १५५)

(७) खुदा लड़ाई बाज है। (समीक्षा ५४, ५८, ७७, ७६)

(८) खुदा लाशरीक नहीं। (समीक्षा ५५, २१, ६६)

(६) खुदा ठट्ठा और हँसी करता है। (समीक्षा ८४)

(१०) खुदा लोगों को गुमराह करता है। (समीक्षा ६५)

(११) खुदा दया हीन है। (समीक्षा ७७)

(१२) खुदा मनुष्यवत् एकदेशीय है। (समीक्षा ४१, १२५)

(१३) खुदा की ऊँटनी भी है। क्या खुदा के यहां भी नवाबो घसड़-पसड़ है? (समीक्षा ६१)

(१४) खुदा ने ६ दिन मे दुनिया बनाई और फिर करार पकड़ा अर्श पर। (समीक्षा ७०, ८८)

हमारे कुछ मुसलमान भाई सत्यार्थ प्रकाश के विरोध में इसलिये आवाज उठाते हैं और स्वामी जी पर इसलिये नाराज हैं कि स्वामीजी ने कुरान की आयतों का गलत अर्थ लिखा है और जो बातें कुरान में नहीं है वे भी उसके मत्थे मढ़ी गई हैं। लेकिन पाठक गण निम्न-लिखित प्रमाणों में देखेंगे कि जो अर्थ स्वामी जी ने उन आयतों का लिखा है, वही मुसलमानों के विद्वान् शाह रफीउल्लाह, डिपुटी नजीर अहमद साहेब, ख्वाजा हसन निजामी ने उर्दू और मौलवी मुहम्मद अली एम० ए० एल० एल०

बी० आदि ने कुरान के अपने अंग्रेजी अनुवाद में किया है, इसलिये स्वामी जी की आलोचना निराधार और असत्य नहीं है, किन्तु दृढ़ आधार भूत सत्य और तर्क पर अवलम्बित है। देखिये, उपरोक्त चौदह बातों के लिये कुरान की आयतें किस प्रकार साक्षी-भूत हैं—

(१) खुदा पक्षपाती है क्योंकि वह कुछ लोगों के दिलों, कानों, पर मोहर लगा देता है और आँखों पर पर्दा डाल देता है। "God has set a seal upon their hearts and upon their hearing and over their eyes is a covering" (कुरान २—७)

In their hearts is a disease so God increased their disease" (कुरान २-१०)

अर्थात् उनके दिल में बीमारी है और खुदा ने उनकी बीमारी बढ़ा दी। इसी प्रकार कुरान ५-१८, में लिखा है—'He frogives whom He pleases and chastises whom He pleases" अर्थात् खुदा जिसको चाहता है माफ करता है और जिसको चाहता है सजा देता है। कहिये, यह है न पक्षपात और अन्याय ?

(२) कुरान ४१-१२ मे लिखा है 'So He ordained them seven Heavens in two periods खुदा ने सात आसमानों को दो दिन में बनाया। यह खुदा की अल्प शक्ति का द्योतक है इसलिये शैतान ने भी खुदा का हुक्म नहीं माना और आदम को सिजदा नहीं किया जैसा कि कुरान २-३४ में लिखा है 'But Iblis refused and he was proud' अर्थात् शैतान (इबलीस) ने मनाकर दिया और वह अभिमानी था।

(३) आगे कुरान २-३५ में खुदा ने आदम को कहा 'Oh! Adam, dwell thou and thy wife in the garden" और आगे कुरान २-३६ में खुदा ने आदम को स्वर्ग से निकाल दिया। यह खुदा की अल्पज्ञता और अपने वचन पर दृढ न रहने की कमजोरी नहीं तो क्या है ?

(४) कुरान २-.१ मे लिखा है कि खुदा ने आदम को सारे नाम सिखाये और फरिश्तों को धोखा देकर वे नाम पूछे। जब उनसे न आये तो आदम से बतलवाये और अपनी शान जमाई 'Did I not say to you that I know what is unseen ?' (कुरान २-३३)

(५) कुरान २-२४५ में लिखा है कि खुदा को कर्ज लेने की भी जरूरत पड़ती है "Who is it that will set apart for God a goodly portion ?"

(६) कुरान ८-३० में लिखा है— "And they devised plans and God too had arranged a plan and God is the best of planners अर्थात् उन्होंने फरेब रचे और अल्लाह ने भी, अल्लाह सबसे अधिक फरेब करने वाला है। इस आयत के नीचे मौलाना साहब ने नोट दिया है कि मक्का में कुरैश लोगों ने जो चालें चली थीं उनका वर्णन इस आयत में है। इससे सिद्ध होता है कि कुरान मक्का से ही सम्बन्धित है, सार्वभौमिक नहीं। इसी प्रकार कुरान ८६-१५ में खुदा कहता है 'They make a scheme and I too make a scheme." क्या खूब ! खुदा भी नई २ स्कीमें बनाया करता है।

(७) खुदा लड़ाई पसन्द करता है और मुसलमानों को हुक्म देता है कि काफिरों को

जहां पाओ पकड़ लो और मार डालो। "Then seize them and kill them where-ever you find them" (कुरान ४-९१) इसी प्रकार कुरान ८-१२ में लिखा है "So Strike above their necks and strike off every fingertip of them" अर्थात् उनकी गर्दनों को उड़ा दो और उँगलियों के पोरे काट डालो। इसी प्रकार कुरान ८-३९ में लिखा है "And fight with them" क्या इससे सिद्ध नहीं होता कि कुरान का खुदा लड़ाई पसन्द है?

(८) कुरान ४-१३ मे लिखा है "who ever obeys God and his Apostle, He will cause him to enter gardens in which rivers flow" अर्थात् जो खुदा और उसके पैगम्बर की आज्ञा मानता है वह जन्नत (स्वर्ग) में जायगा जिसमें नदियाँ बहती हैं आगे की आयत १४ में लिखा है कि जो खुदा और पैगम्बर की आज्ञा भङ्ग करेगा वह नरक की आग मे डाला जायगा। कहिये, पैगम्बर को भी खुदा के बराबर दर्जे पर माना गया या नहीं? फिर खुदा लाशरीक कैसे रहा?

(९) कुरान ९-७९ में लिखा है "God will pay them back their scoffing' अर्थात् खुदा उनके साथ बदले मे ठट्ठा करेगा।"

(१०) खुदा लोगों को गुमराह भी करता है जैसा कि लिखा है 'God leaves in error whom He pleases and guides those who turn" (कुरान १३-२७) कहिये, खुदा जिसको चाहता है गुमराह करता है या नहीं? फिर पक्षपाती है या नहीं?

(११) कुरान का खुदा कितना निर्दयी और लोगों में मारकाट कराने वाला है यह उपरोक्त न० ७ मे दिये गये कुरान के प्रमाण ४-९१ और ८-१२ तथा ८-३९ से स्पष्ट सिद्ध है, जहां खुदा लोगों को मारने और उनकी गर्दन काटने और अगुलियों के पोर काटने तक की आज्ञा देता है।

(१२) कुरान का खुदा मनुष्यवत् एक देशीय है यह अनेक स्थानों पर सिद्ध होता है जैसे कुरान ३२-५ आदि आयतों मे लिखा हुआ है जहां आसमान से पृथ्वी की ओर आने और फिर आसमान पर चढने का वर्णन है। इसी प्रकार खुदा का तख्त पर बैठना, फरिश्तों से बातचीत करना आदि सब बातें खुदा को महदूद (सीमित) और मनुष्यवत् एक देशीय सिद्ध करती हैं, सर्व व्यापक नहीं।

(१३) कुरान ११-६४ मे लिखा है 'This is Gods she camel" 'यह खुदा की ऊँटनी है।" क्या ऊँटनी पर खुदा चढता भी है? शायद इसीलिये मुसलमान ऊँटनी को बहुत महत्व देते हैं क्योंकि वह उनका चिन्ह है और शायद सवारी भी?

(१४) कुरान में एक स्थान पर नहीं किन्तु सात स्थानों पर लिखा है कि खुदा ने ६ दिनों में जमीन और आसमान बनाये और करार पकड़ा अर्श पर। He created the Heavens the earth in six periods of time and holds control on the throne. (कुरान ७-५४), १०-३, १३-२, २०-५ (इत्यादि)। मौलाना साहब ने दिनों का अर्थ Periods लगाना ठीक समझा है और सातों स्थानों पर खुदा का अर्श पर करार पकड़ने के बजाय Control on the throne अर्थ किया है और नीचे नोट में अर्श का अर्थ घुमा

फिराकर समझाने की चेष्टा की है। कुरान के अर्थों में यह युक्त संगत परिवर्तन स्वामीजी की समालोचना का ही फल है जो सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास में की गई है जिसके लिये मुसलमानों को स्वामीजी का कृतज्ञ होना चाहिए।

उपरोक्त प्रमाणों से यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि स्वामी दयानन्द जी ने जो बातें सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास में खुदा के विषय में उपरोक्त १४ गुणों को लेकर लिखी हैं वे स्वामीजी की निज की बनाई हुई बातें नहीं हैं किन्तु स्वामीजी ने जो कुछ लिखा है वह सब कुरान की किसी न किसी आयत के आधार पर ही लिखा है और मुस्लिम विद्वान् और कुरान के अनुवाद-कर्त्ता तथा भाष्यकार भी उन आयतों का प्रायः वही अर्थ लगाते हैं जो कि स्वामीजी ने लिखा है। ऐसी दशा में मुस्लिम लीग का चौदहवें समुल्लास को जब्त कराने की मांग करना सरासर अन्याय है उन्हें चाहिये कि यदि वे आयतें उन्हें पसन्द नहीं तो कुरान शरीफ में से ही उन आयतों को निकलवा दें न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।

है जरा सच्चा तो लाओ उसको सब के सामने।

झूठ चल सकता नहीं अहले हक़ व रब के सामने॥"

चौदहवें समुल्लास का विश्लेषण

[लेखक—प्रोफेसर सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार भू० पू० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी]

जिस चौदहवें समुल्लास पर मुसलमान लोग चमक पड़े हैं, उसमें ऐसा युक्तिपूर्वक उनके मत का विवेचन किया गया है, कि कट्टर से कट्टर मुसलमान भी एक बार इस समुल्लास को पढ़ लेने के बाद विचार में पड़ जाता है, और सोचने लगता है कि क्या यह ईश्वरीय पुस्तक हो सकती है, या मुहम्मद साहब को जिस बात की जरूरत होती गई उसके अनुकूल, उनका प्रयोजन सिद्ध करने के लिए आयतें लिखी जाती रहीं, और मुसलमानों के मुख को इन 'उतारी हुई' आयतों से बन्द किया जाता रहा ? 'सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास का पढ़कर यह युक्ति शृङ्खला स्पष्ट हो जाती है। इसी का दिग्दर्शन कराने के लिये हम इस लेख में उक्त समुल्लास का विश्लेषण कर पाठकों को यह बतलाने का प्रयत्न करेंगे कि ऋषि दयानन्द ने १४वें समुल्लास में किस शैली से, क्या लिखा है।

दृष्टिकोण

१४वें समुल्लास के उपसंहार में ऋषि ने लिखा है—'मुझ से पूछो तो यह पुस्तक—कुरान न ईश्वर, न विद्वान् की बनाई और न विद्या की हो सकती है यह तो बहुत थोड़ा-सा दोष प्रकट किया है, इसलिये कि लोग धोखे में पड़कर अपना जन्म व्यर्थ न गवावें। जो कुछ इसमें थोड़ा सा सत्य है वह वेदादि विद्या पुस्तकों के अनुकूल होने से मुझको ग्राह्य है। इसके बिना जो कुछ इसमें है वह सब अविद्या, भ्रमजाल और मनुष्य की आत्मा को पशुवत् बनाकर शान्ति भंग कराके उपद्रव मचा, मनुष्यों में विद्रोह फैला, परस्पर दुःखोन्नति करने वाला विषय है।"

प्रारम्भ से लेकर अन्त तक १४वें समुल्लास में इसी दृष्टिकोण से काम लिया गया है। जहां प्रशंसा की बात कुरान में पायी गई है वहां प्रशंसा कर दी है। 'ईश्वर के स्वरूप', 'मोहम्मद' 'बहिश्त' काफिर', 'शैतान', 'कयामत', 'सृष्टि-नियम', 'कुरान के ईश्वरीय ज्ञान न होने' के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द ने अपने विचार प्रकट किये हैं, और साधारण बुद्धि रखने वाला भी उनकी युक्तियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

१४वां समुल्लास कुरान की प्रशंसा के लिए नहीं लिखा गया, उसका मुख्य विषय 'कुरान की आलोचना' है। भिन्न २ धार्मिक विषयों को सन्मुख रखकर ऋषि दयानन्द ने कुरान की आयतें दी हैं, और उन पर अपनी युक्ति-पूर्वक आलोचना की है।

ईश्वर का स्वरूप

ईश्वर के स्वरूप के विषय में ऋषि की समालोचना का सार यह है कि कुरान का ईश्वर एक देशीय है, सर्वज्ञ सर्व-व्यापक नहीं। अपने मत की पुष्टि में कुरान की आयतों से ही काम लिया गया है। कुरान के ईश्वर के विषय में ऋषि दयानन्द की समीक्षा निम्न उद्धरणों से स्पष्ट हो जायगी—

'जब मुसलमान लोग सिवा खुदा के किसी पर ईमान नहीं लाते और न किसी को खुदा

का साक्षी मानते हैं, तो पैगम्बर साहब को क्यों, ईमान में, खुदा के साथ शरीक किया ?"

कुरान के इस वचन की कि जिसको खुदा गुमराह करे उसे कदापि मार्ग न मिलेगा, यूं आलोचना की गई है, "जब खुदा ही जीवों को गुमराह करता है। तो खुदा और शैतान मे क्या भेद रहा ? हा, इतना भेद कह सकते है कि खुदा बड़ा शैतान, और वह छोटा शैतान, क्योंकि मुसलमानों का ही कौल है कि जो बहकाता है वही शैतान है, तो इस प्रतिज्ञा से खुदा को भी शैतान बना दिया।"

कुरान में लिखा है कि निश्चय बुरे लोग धोखा देते हैं अल्लाह को, और उनको यह धोखा देता है। इस पर स्वामी जी लिखते है, वाह जी वाह। जो बुरे लोगों के धोखे मे आता, और अन्य को धोखा देता है, ऐसा खुदा हमसे अलग रहे, किन्तु जो धोखेबाज है, उनसे जाकर मेल करे, और वे उनसे मेल करे क्योंकि—यादृशी शीतला देवी तादृश खरवाहन.—जैसे को तैसा मिले तभी निर्वाह होता है। जिसका खुदा धोखेबाज है उसके उपासक धोखेबाज क्यों न हो ? "

अल्लाह जिसको चाहता है क्षमा करता है, जिसको चाहता है दुःख देता है, कुरान के इस कथन पर यू लिखा है —जो ऐसा है तो बहिश्त और दोजख में खुदा जावे, क्योंकि वह पाप पुण्य करने वाला हुआ। जीव पराधीन है। जैसे सेना सेना पति के आधीन रक्षा करती, और किसी को मारती है, उसकी भलाई बुराई सेनापति को होती है, सेना पर नहीं।"

छः दिन में सृष्टि की रचना कर सातवे दिन अल्लाह ने अर्श पर आराम किया, इस प्रकरण मे १४वें समुल्लास मे लिखा है—"यदि छः दिनों मे जगत् बनाया, सातवें दिन अर्श पर आराम किया तो खुदा थक भी गया होगा, और अब तक सोता है वा जागता है ? यदि जागता है तो अब कुछ का करता है वा निकम्मा सैल-सपट्टा और ऐश करता फिरता है ?"

कुरान में लिखा है कि अल्लाह गुमराह करता है जिसको चाहता है, इस पर ऋषि दयानन्द लिखते हैं.—

"जब अल्लाह गुमराह करता है तो खुदा और शैतान में क्या भेद हुआ ? जबकि शैतान दूसरों को गुमराह अर्थात् बहकाने से बुरा कहाता है, तो खुदा भी वैसा ही काम करने से बुरा शैतान क्यों नहीं ? और बहकाने के पाप से दोजखी क्यों नहीं होना चाहिए ?"

हजरत मोहम्मद

१४वें समुल्लास मे 'ईश्वर के स्वरूप का विवेचन करते हुए कुरान की जो आलोचना की गई है उसके, उद्धरण हमने दिये। अब हम सत्यार्थप्रकाश में हजरत मोहम्मद के सम्बन्ध में कुरान के आधार पर जो आलोचनात्मक विचार किया गया है, उसके उद्धरण पाठकों की जानकारी के लिये रखेंगे —

"तुम्हारी बीबिया तुम्हारे लिये खेतिया हैं, जाओ जिस तरह चाहो अपने खेत मे'—कुरान की इस बात का उल्लेख करते हुए ऋषि लिखते हैं—'यह जो स्त्रियों को खेती के तुल्य लिखा, और जैसा जिस तरह से चाहो जाओ, यह मनुष्यों को विषयी करने का कारण है।"

हजरत मोहम्मद अपने मुतबन्ने बेटे जैद की की जैनब पर मोहित हो गये थे, इस पर कुरान

की आयत उतरी थी कि हमने तुम्हारी उससे शादी कर दी। इस पर यूं लिखा गया है—"मनुष्यों में जो जङ्गली भी होगा वह भी बेटे की स्त्री को छोड़ता है, और यह कितने अन्याय की बात है कि नबी को विषयासक्ति की लीला करने में कुछ भी अटकाव नहीं होता। यदि नबी किसी का बाप न था तो जैद बेटा किस का था, और क्यों लिखा? यह उसी मतलब की बात है कि जिससे बेटे की स्त्री को भी घर में डालने से पैगम्बर साहब न बचे अन्य से क्यों कर बचे होंगे?'

एक दूसरे स्थल पर लिखा है 'ध्यान देकर देखना चाहिए कि खुदा क्या हुआ मुहम्मद साहब के घर का भीतरी और बाहरी प्रबन्ध करने वाला भृत्य ठहरा। प्रथम आयत पर दो कहानियां हैं। एक तो यह कि मोहम्मद साहब का शहद का शर्बत प्रिय था। उन की कई बीबियां थीं। उनमें से एक के घर पीने में देर लगी तो दूसरियों को असह्य प्रतीत हुआ। उनके कहने सुनने के पीछे मोहम्मद साहब सौगंद खागये कि हम न पीएंगे। दूसरी यह कि उनकी कई बीबियों में से एक की बारी थी। उसके यहां रात्रि को गये, तो वह न थी, अपने बाप के यहां गई थी। मोहम्मद साहब ने एक लौंडी अर्थात् दासी को बुलाकर पवित्र किया। जब बीबी को इसकी खबर मिली तो अप्रसन्न हो गई। तब मोहम्मद साहेब ने सौगंद खाई कि ऐसा न करूंगा, और बीबी से भी कह दिया कि तुम किसी से यह मत कहना बीबी ने स्वीकार किया कि न कहूंगी। फिर उसने दूसरी बीबी से जा कहा। इस पर यह आयत खुदा ने उतारी, जिस को हमने तेरे पर हलाल किया, उसको तू हराम क्यों करता है? बुद्धिमान् लोग विचारें कि भला कहीं खुदा भी किसी के घर का निपटारा करता फिरता है? जिस मनुष्य को तनिकसी बुद्धि है वह विचार ले सकता है कि ये खुदा-खुदा के काम हैं वा अपने प्रयोजन सिद्धि के। ऐसी २ बातों से ठीक सिद्ध है कि खुदा कोई नहीं कहता था केवल देश काल देखकर, अपने प्रयोजन के सिद्ध होने के लिये खुदा की तरफ से मोहम्मद साहब कह देते थे। जो लोग खुदा ही की तर्फ लगाते हैं उनको हम क्या, सब बुद्धिमान् यही कहेंगे कि खुदा क्या ठहरा, मानो मुहम्मद साहब के लिये बीबियां लाने वाला नाई ठहरा।'

बहिश्त का वर्णन

कुरान का बहिश्त कैसा है, इसे सब कोई जानते हैं। इस बहिश्त की आलोचना करते हुए ऋषि दयानन्द लिखते हैं—

'भला यह स्वर्ग है किंवा वेश्यावन? इसको ईश्वर कहना वा स्त्रैण?"

'वाह जी वाह! क्या कुरान का स्वर्ग है जिसमें बाग, गहने, कपड़े, गद्दी, तकिये आनन्द के लिये हैं। भला कोई बुद्धिमान् यहां विचार करे तो यहां से वहां मुसल्मानों के बहिश्त में अधिक कुछ भी नहीं।"

"वहां अच्छा स्वर्ग है जहां सोने मोती के गहने और रेशमी कपड़े पहनने को मिलें यह बहिश्त यहां के राजाओं के घर से अधिक नहीं दीख पड़ता।"

'लिखा है कि गद्दी, तकिये, मेवे और पीने के पदार्थ वहां मिलेंगे। इससे यह सिद्ध होता है कि जिस समय मुसल्मानों का मजहब चला, उस समय अब देश विशेष धनाढ्य न था इस लिये मोहम्मद साहब ने तकिये आदि की कथा सुनकर गरीबों को अपने मत में फंसा लिया।"

"क्यों जी। मोती के वर्णों के लड़के किस लिये वहां रखे जाते हैं? क्या जवान लोग, सेवक, स्त्री-जन उनको तृप्त नहीं कर सकतीं? क्या आश्चर्य है कि जो यह महा बुरा कर्म लड़कों के साथ दुष्ट-जन करते हैं उसका मूल यही कुरान का वचन हो।"

काफिरों का कत्ल

आज तो 'सत्यार्थ-प्रकाश' के १४वें समुल्लास पर भारत रक्षा कानून लगाया गया है, ऋषि दयानन्द ने १८७४ मे लिखा था कि कुरान पर शान्ति-भंग के विधान को लागू करना चाहिये। कुरान में लिखा है, और लड़ो उनसे, यहां तक कि न रहे फितना, अर्थात् बल काफिरों का, और होवे दीन तमाम वास्ते अल्लाह के। इस पर ऋषि ने लिखा है—'ऐसे अन्याय से लड़ने लड़ाने वाला मुसलमानों के खुदा से भिन्न शान्ति-भङ्ग कर्ता दूसरा कौन होगा? अब देखिए यह मजहब, क्या अल्लाह और रसूल के वास्ते सब जगत् का लूटना-लुटवाना लुटेरों का काम नहीं है? बड़े आश्चर्य की बात है कि ऐसी पुस्तक, ऐसा खुदा और ऐसा पैगम्बर संसार में ऐसी उपाधि और शान्ति-भङ्ग करके मनुष्य को दुःख देने के लिये कहां से आया?"

"अल्लाह के मार्ग में लड़ो उनसे जो तुमसे लड़ते हैं। मार डालो तुम उनको जहां पाओ। कत्लसे कुफ्र बुरा है। यहां तक उनसे लड़ो कि कुफ्र न रहे। और होवे दीन अल्लाह का"। इसकी आलोचना करते हुए ऋषि दयानन्द लिखते हैं.—'जो कुरान मे ऐसी बाते न होतीं तो मुसल्मान लोगों ने इतना बड़ा अपराध जो अन्य मतवालों पर किया है, न करते, और बिना अपराधियों को मारना उन पर बड़ा पाप है जो मुसलमान के मत को न ग्रहण न करना है, उसको कुफ्र कहते हैं, अर्थात् कुफ्र से कत्ल को मुसलमान लोग अच्छा मानते हैं, अर्थात् जो हमारे दीन को न मानेगा उसको हम कत्ल करेंगे, सो करते ही आये। मजहब पर लड़ते लड़ते आप ही राज्य आदि से नष्ट हो गये और उनका मत अन्य मतवालों पर अति कठोर रहता है।"

"अब देखिए महा पक्षपात की बात है कि जो मुसलमान न हो उसको जहां पाओ मार डालो और मुसलमानों को न मारना भूल से मुसलमानों को मारने में प्रायश्चित्त, और अन्य को मारने से बहिश्त मिलेगा। ऐसे उपदेश को कूए में डालना चाहिए। ऐसे २ पुस्तक ऐसे २ पैगम्बर ऐसे २ खुदा और ऐसे २ मत से सिवा हानि के लाभ कुछ भी नहीं। ऐसों का न होना अच्छा।"

और काटो जड़ काफिरों की—इस वाक्य पर ऋषि लिखते हैं—'वाह जी वाह। कैसा खुदा और कैसे पैगम्बर दयाहीन, जो मुसलमानी मत भिन्न से काफिरों की जड़ कटवावे और खुदा आज्ञा देवे, उनकी गर्दन मारो, और हाथ पग व जोड़ों को काटने का सहाय और सम्मति देवे, ऐसा खुदा लंकेश से क्या कुछ कम है? यह सब प्रपंच कुरान के कर्ता का है, खुदा का नहीं, और यदि खुदा का हो तो ऐसा खुदा हम से दूर और हम उससे दूर रहें?"

'वाह गदर मचाने वाले खुदा और नबी। जैसे ये निर्दयी संसार में हैं, वैसे और बहुत थोड़े होंगे। जैसा यह कि अन्य लोग जहां पाये जावें, मारे जावें, पकड़े जावें लिखा है, वैसो ही मुसलमानों पर कोई आज्ञा देवे तो मुसलमानों को यह बात बुरी लगेगी वा नहीं?"

'ऐ नबी ! झगड़ाकर काफिरों और गुप्त शत्रुओं से, और सख्ती कर ऊपर उनके'–कुरान मे से यह उद्धृत कर ऋषि लिखते हैं:–"देखिये मुसलमानों के खुदा की लीला। अन्य मतवालों से लड़ने के पैगम्बर और मुसलमानों को उचकाता है। इसलिये मुसलमान उपद्रव करने में प्रवृत्त रहते हैं। परमात्मा मुसलमानों पर पवित्र दृष्टि करे जिससे ये लोग उपद्रव करना छोड़ कर सबसे मित्रता से बर्तें।"

शैतान

मुसलमान कम के सिद्धान्त को नहीं मानते। हम बुरे कम करते हैं, क्योंकि शैतान हमें प्रलोभित करता है। इस सिलसिले में आलोचना करते हुए ऋषि दयानन्द ने लिखा है–"जो सब को बुराई कराने वाला मनुष्य मात्र का शत्रु शैतान है, तो उसको खुदा ने स्वयं ही उत्पन्न क्यों किया ? क्या वह भविष्यत् की बात नहीं जानता था ? जो कहो कि जानता था, परन्तु परीक्षा के लिये बनाया, तो भी नहीं बन सकता क्योंकि परीक्षा करना अल्पज्ञ का काम है शैतान सब को बहकाता है, तो शैतान को किसने बहकाया ? जो कहो शैतान आप बहकता है, तो अन्य भी आप से आप बहक सकते हैं बीच में शैतान का क्या काम ? और जो खुदा ने ही शैतान को बहकाया है, तो खुदा शैतान का भी शैतान ठहरेगा।"

कुरान म लिखा है, कि जब हमने फरिश्तों से कहा कि बाबा आदम को दण्डवत् करो, सभों ने दण्डवत् किया, परन्तु शैतान ने न माना, और अभिमान किया, क्योंकि वह भी एक काफिर था। इस पर ऋषि ने लिखा है— 'देखिये एक शैतान काफिरने खुदा का छक्का छुड़ा दिया, तो मुसलमानों के कथनानुसार जहा करोड़ों काफिर हैं वहा मुसलमानों के खुदा और मुसलमानों की क्या चल सकती है ? कभी २ खुदा भी किसी का रोग बढ़ा देता, किसी को गुमराह कर देता है। खुदा ने ये बात शैतान से सीखी होंगी, और शैतान ने खुदा से, क्योंकि बिना खुदा के शैतान का उस्ताद कोई नहीं हो सकता।"

कयामत

आर्य हिन्दू–धर्म में तो यह माना जाता है कि कर्म का फल मिलता रहता है, मृत्यु के बाद जन्म और जन्म के बाद मृत्यु। परन्तु मुसलमान लोग मानते है कि मरने के बाद सब लोग कयामत के दिन की प्रतीक्षा करते हैं। जब सब मर चुकते है तब खुदा का फैसला होता है। इस पर ऋषि दयानन्द लिखते हैं — जब कयामत का अर्थात् "प्रलय ही मे न्याय करने–कराने के लिये पैगम्बर और उनके उपदेश माननेवालों को खुदा बुलायेगा तो जब तक प्रलय न होगा तब तक सब दौरा-सुपुर्द सब को दुखदायक है जब तक न्याय न किया जाय। इस लिए शीघ्र न्याय करना न्यायाधीश का काम है। यह तो पोपाबाई का न्याय ठहरा जैसे कोई न्यायाधीश कहे कि जब तक पचास वष तक के चार और साहूकार इकट्ठ न हो तब तक उनको दण्ड या प्रतिष्ठा न करनी चाहिये, वैसे ही यह हुआ कि एक तो पचास वर्ष तक दौरा–सुपुर्द रहा और एक आज ही पकड़ा गया। ऐसा न्याय का काम नहीं हो सकता।"

सृष्टि रचना

कुरान में आस्मान को छत, और पृथ्वी को बिछौना, सूर्य का कीचड़ की झूल में डूबना आदि लिखा है, इस पर १४ व समुल्लास की समीक्षा

यह है—"भला आस्मान छत किसी की हो सकती है? यह अविद्या की बात है। आकाश को छत के समान मानना हँसी की बात है।"

खड़ा किया आस्मान को बिना खम्भे के इस पर लिखा है— "मुसलमानों का खुदा पदार्थ विद्या कुछ भी न जानता था। जो जानता तो गुरुत्व न होने से आस्मान को खम्भे लगाने की कथा कहानी कुछ भी न लिखता।"

"अब आगे की अविद्या की बात देखिये कि इस किताब का बनाने वाला सूर्य को एक झील में रात्रि को डूबा जानता है, फिर प्रातःकाल निकलता है। भला सूर्य तो पृथ्वी से बहुत बड़ा है। वह नदी, वा झील वा समुद्र में कैसे डूब सकेगा?"

और देखेगा तू पहाड़ों को, अनुमान करता है तू उनको जमे हुए, और वे चले जाते हैं मानिन्द चलते बादलों को—इस पर लिखा है बादलों के समान पहाड़ का चलना कुरान बनाने वालों के देश में होता होगा अन्यत्र नहीं।"

फट जावेगा आस्मान—इस पर लिखा है— "वाह क्या फिलासफी और न्याय की बात है, भला आकाश भी कभी फट सकता है? क्या वह वस्त्र के समान है जो फट जावे?

इकट्ठा किया जावेगा सूर्य और चाँद, इस पर लिखा है— भला सूर्य चाँद कभी इकट्ठे हो सकते हैं?"

सूर्य लपेटा जावेगा, तारे गदले होंगे, पहाड़ चलेंगे, आस्मान की खाल उतरेगी इन बातों पर लिखा है—"यह बड़ी बेसमझी की बात है कि गोल सूर्य-लोक लपेटा जायगा? और तारे गदले क्योंकर हो सकेंगे? और पहाड़ जड़ होकर कैसे चलेंगे, और आकाश को क्या पशु समझा जो उसकी खाल निकाली जायगी? यह बड़ी ही बेसमझ और जंगलीपन की बात है।'

"वाह जी कुरान के बनानेवाले फिलासफर! आकाश को क्योंकर फाड़ सकेगा? और तारों को कैसे झाड़ सकेगा? और दर्या क्या लकड़ी है जो चीर डालेगा? और कबरें क्या मुर्दा हैं जो जिला सकेगा? ये सब बातें लड़कों के सदृश हैं।"

कसम है आस्मान बुर्जों वाले की इसपर लिखा है—इस कुरान के बनानेवाले ने भूगोल-खगोल कुछ भी नहीं पढ़ा था नहीं तो आकाश को किले के समान बुर्जों वाला क्यों कहता?

कुरान और ईश्वरीय ज्ञान

हमने मूसा को किताब और मोजजे दिये,—इस पर लिखा है—

"जो मूसा को किताब दी थी तो पुनः कुरान का देना क्या आवश्यक था? क्योंकि जो भलाई बुराई करने न करने का उपदेश सर्वत्र एकसा हो तो पुनः भिन्न भिन्न पुस्तक करने से पुनरुक्त दोष होता है। क्या मूसा जी आदि को दी हुई पुस्तकों में खुदा भूल गया था?"

"यह कुरान स्वतन्त्र नहीं बन सकता क्योंकि इसमें से थोड़ी सी बातों को छोड़ कर बाकी सब बातें बायबिल की हैं।'

यूसफ ने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप मेरे मैंने एक स्वप्न में देखा—इस पर लिखा है— 'इस प्रकरण में पिता पुत्र का सम्वाद रूप किस्सा कहानी भरी है। इसलिये कुरान ईश्वर का बनाया नहीं, किसी मनुष्य ने मनुष्यों का इतिहास लिख दिया है।"

मुसलमान लोग मानते हैं कि मूसा, दाउद,

ईसा और मुहम्मद इन चारों को ईश्वरीय ज्ञान दिया गया। इस पर लिखा है—'जब खुदा ने मूसा की ओर बही भेजी, पुन दाऊद, ईसा और मुहम्मद की ओर किताब क्यों भेजी ? क्योंकि परमेश्वर की बात सदा एकसी और बेभूल होती है। और उसके पीछे कुरान तक पुस्तकों का भेजना पहली पुस्तक को अपूर्ण, भूलयुक्त मानना है। यदि ये तीन पुस्तक सच्चे हैं तो यह कुरान झूठा होगा। चारों का जो कि परस्पर प्राय विरोध रखते हैं, सर्वथा सत्य होना नहीं हो सकता।"

सिद्धान्त विरुद्ध बातें

ऊपर जिन बातों का उल्लेख हमने किया है, उसके अतिरिक्त १४वें समुल्लास मे ऋषि दयानन्द ने जहाँ तहाँ कुरान म पायी जाने वाली कई ऐसी बातों का भी खण्डन किया है जो किसी सिद्धात से भी नहीं मानी जा सकतीं। उनका भी भी हम यहाँ सक्षेप मे सग्रह कर देते हैं—

१—हमने उनके—काफिरों के—दिलों कानों पर मोहर कर दी, और उनकी आँखों पर पर्दा है—इसकी आलोचना करते हुए लिखा है—'जो परमेश्वर ने उनके अन्त करण और कानों पर मोहर लगाई और उसी से वे पाप करते है तो उनका कुछ भी दोष नहीं यह दोष खुदा ही का है फिर उन पर सुख दुख वा पाप पुण्य नहीं हो सकता, पुन खुदा उनको सजा क्यों देता है ? क्योंकि उन्होंने पाप पुण्य स्वतन्त्रता से नहीं किया ?'

"जब खुदा ही ने मोहर लगा दी तो वे बेचारे बिना अपराध मारे गये उन्होंने स्वतन्त्रता से पाप किये ही नहीं, किन्त खुदा के कराने से किये पुन उनका अपराध ही न हुआ, उनको फल न मिलना चाहिये इसका फल खुदा को मिलना उचित है।"

२—उनके दिलों में रोग है, अल्लाह ने उनका रोग बढ़ा दिया, इस पर लिखा है "भला बिना अपराध खुदाने उनका रोग बढ़ा दिया, दया न आई उन बेचारों को बड़ा दुख हुआ होगा। क्या यह शैतान से बढ कर शैतानपन का काम नहीं हुआ ? किसी के मन पर मुहर लगाना, किसी का रोग बढ़ाना यह खुदा का काम नही हो सकता क्योंकि रोग का बढाना अपने पापों से है।

३—वे सदैव बहिश्त अर्थात् स्वर्ग मे वास करनेवाले है इस पर लिखा है—'कोई भी जीव अनन्त पाप करने का सामर्थ्य नहीं रखता, इसलिये सदैव स्वर्ग नरक मे नही रख सकते, और जो खुदा ऐसा करे, तो वह अन्यायकारी और अविद्वान् हो जावे कयामत को रात न्याय होगा तो मनुष्यों के पाप पुण्य बराबर होना उचित है। जो कर्म अनन्त नहीं है, उनका फल अनन्त कैसे हो सकता है ?"

४-'और सृष्टि हुए सात-आठ हजार वर्षो से इधर ही बतलाते है। क्या इससे पूर्व खुदा निकम्मा बैठा था ? और कयामत के पीछे भी निकम्मा रहेगा ? ये बातें सब लड़कों के समान हैं, क्योंकि परमेश्वर के काम सदैव वर्तमान रहते हैं, और जितने जिसके पाप पुण्य हैं, उतना ही उसको फल देता है।'

५-तुम जिधर मुह करो उधर ही मुह अल्लाह का है, कुरान के इस वाक्य पर यह टीका की गई है—जो यह बात सच्ची है तो मुसलमान किबले की ओर मुह क्या करते हैं ?" किबले पर टीका करते हुए लिखा है, तुम बडे बुत्परस्त हो, क्योंकि जब तक कोई मनुष्य अपने घर में प्रविष्ट हुई बिल्ली को निकालने लगे तब तक उसके घर में ऊँट प्रविष्ट हो जाय, वैसे ही

मुहम्मद साहब ने छोटे बुत् को मुसलमानों के मत से निकाला, परन्तु बड़े बुत् जो कि पहाड़ सदृश मक्के की मस्जिद है वह सब मुसलमानों के मत में प्रविष्ट करा दी। क्या यह छोटी बुत्परस्ती है? तुमको, जब तक अपनी बड़ी बुत्परस्ती न निकाल दो तब तक छोटे बुत्परस्तों के खण्डन से लज्जित होकर निवृत्त रहना चाहिए।"

उपसंहार

ऋषि दयानन्द ने कुरान की जो समालोचना की है वह हमने उन्हीं के शब्दों में अविकल रूप में ऊपर दे दी है। हमने सम्पूर्ण समुल्लास का पढ़ कर उसका विश्लेषण मात्र दिया है। अपनी तरफ से कुछ नहीं लिखा—ऋषि दयानन्द की कड़ी से कड़ी बात इसमें आ गई है। इस सम्पूर्ण विश्लेषण को पढ़ कर क्या कोई कह सकता है कि ऋषि दयानन्द ने जो आलोचना की है उससे पारिस्परिक वैमनस्य उत्पन्न हो सकता है। इस आलोचना को पढ़ कर मनुष्य के दिमाग में खलबली अवश्य पैदा हो जाती है और वह आंख मूंद कर किसी बात को मानने के बजाय, अपने दिमाग से सोचने के मार्ग पर चल देता है क्या अपने दिमाग से काम लेना इस्लाम के लिये हितकर है या अहितकर? अगर हितकर है तो सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाने के स्थान पर प्रत्येक मुसलमान को इस समुल्लास का अध्ययन करना चाहिये।

[हिन्दुस्थान' बम्बई के सत्यार्थप्रकाशाङ्क से]

इस्लाम में सुधार और खंडन

[लेखक—श्री प्रा० महेशप्रसाद जी मौलवी आलिम फाजिल हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस]

श्री स्वामी दयानन्द जी का जन्म सन् १८२४ ई० में हुआ। सन् १८६३ ई० में उन्होंने सुधार कार्य आरम्भ किया और मृत्यु काल, सन् १८८३ ई० तक वे इसी कार्य मे लगे रहे। अनेक ग्रन्थों से पता लगता है कि जिस समय में वह सुधार के कार्य क्षेत्र मे थे उस समय मे मुसलमानों के सुप्रसिद्ध नेता श्री सर सैयद महोदय भी मुसलमानों के धार्मिक, सामाजिक सुधार आदि में लगे थे जैसा कि उनके अपूर्व ग्रन्थ कुरान भाष्य, उनके लेख व पत्रादि से स्पष्ट हो जाता है।

भारतीय मुसलमानों में मौलाना अल्ताफ़-हुसैन 'हाली साहब का नाम कुछ कम प्रसिद्ध नहीं है। उनकी एक अपूर्व रचना 'मद व जजर इस्लाम' नाम की उर्दू-पद्य मे है वह प्राय 'मुसद्दस हाली' के नाम से विख्यात है। पिछले सत्तर वर्षों मे इसके जितने संस्करण निकले हैं उतने किसी अन्य उर्दू पुस्तक के कदापि नहीं निकले। यह पुस्तक पहिले पहल जून सन् १८७९ ई० मे प्रकाशित हुई है। लेखक ने इस में भारतीय मुसलमानों की वह दशा भी बतलाई है जोकि जून सन् १८७९ ई० से कुछ पहिले थी अत 'मुसद्दस हाली' के 'सदी एडीशन' हाली पब्लिशिङ्ग हाउस दिल्ली द्वारा प्रकाशित सन् १९३५ ई० के पृष्ठ ४२ में है:—

अगर कान धर कर सुने अहल इबरत[1]
तो सीलोन से ताबा कश्मीर व तिब्बत
जमीं, रूख, बन, फूल, फल, रेत, परबत
यह फरयाद सब कर रहे हैं ब हसरत[2]
कि कल फखर था जिनसे अहले जहाँ को
लगा उन से ऐब आज हिन्दोस्ताँ को ॥

इसके पश्चात् पृ० ६२ पर जो कुछ लिखा है उस से ज्ञात होता है कि मुसलमानों की धार्मिक दशा क्या थी—

नबी को जो चाहे खुदा कर दिखायें
इमामों[3] का रुतबा नबी से बढायें
मजारों[4] पे दिन रात नजरें[5] चढ़ायें
शहीदों से जा जा के मांगें दुआयें
न तौहीद[6] में कुछ खलल[7] इस से आये
न इस्लाम बिगडे न ईमान जाये ॥

पृष्ठ ६९ मे लेखक महोदय का कथन है कि हम (मुसलमानों) की प्रकृति क्या हो गई है:—

उसे जानते हैं बडा अपना दुश्मन
हमारे करे ऐब जो हम पे रोशन[8]
नसीहत[9] से नफरत[10] है नासेह[11] से अनबन[12]
समझते हैं हम रहनुमाओं[13] को रहज़न[14]
यही ऐब है सबको खोया है जिसने
हमें नाव भर कर डुबाया है जिसने ॥

हाँ, उक्त पद्यों के सिवा अनेक अन्य पद भी ग्रन्थ मे ऐसे हैं जिन से स्पष्ट होता है कि सन् १८७९ ई० से पहले भारतीय मुसलमानों की क्या दशा थी और उनके निमित्त सुधार की योजना कितनी आवश्यक थी। परन्तु साथ ही साथ यह

१ अहलइबरत-शिक्षा ग्रहण करने वाले २ खेद, शोक ३.अगुवा लोग ४ कबरों ५. चढ़ावे ६ ईश्वर को एक मानना ७.बाधा ८ प्रकट ९.शिक्षा १० घृणा ११. शिक्षक १२ झगड़ा, लड़ाई १३. मार्ग दिखाने वाले१४. लुटेरा

भी जान लेना चाहिये कि उर्दू गद्य में 'सरात मुस्तक़ीम' व 'तकवीय तुल् ईमान' नाम के दो ग्रन्थ ऐसे भी है जिन से स्पष्ट होता है कि श्री स्वामी जी महाराज के जन्म काल के आस पास वाले समय में भी भारतीय मुसलमानों की दशा प्रायः ऐसी थी कि सुधार की योजना उन में हो।

(१) सरात मुस्तक़ीम—इस में मौलाना सैयद अहमद साहब रायबरेली निवासी के विचार हैं। सैयद साहब ६ मई सन् १८३१ ई० को सिक्खों के साथ लड़ते हुये सीमा प्रान्त में शहीद हुये थे। पुस्तक के रचे जाने का समय सन् १८२५ के आस-पास का है।

(२) तकवीयतुल ईमान—यह रचना मौलाना इस्माईल शहीद साहब की है। ये उक्त सैयद साहब के पक्के शिष्य थे। श्री सैयद महोदय के साथ ही सीमा प्रान्त मे शहीद हुये थे। इन्होंने उक्त ग्रन्थ को सन् १८२५ ई० से कुछ पहिले ही रचा था क्योंकि उक्त सन् मे सिक्खों के मुकाबिले में धर्म-युद्ध के निमित्त इन्होंने प्रस्थान किया था।

उक्त दोनों ग्रन्थों के अनेक संस्करण भिन्न-भिन्न प्रेसों में छपकर प्रकाशित हो चुके है और अब भी मिलते हैं। निदान ऊपर लिखित ग्रन्थों के सिवा कुछ अन्य ग्रन्थों से भी भली भांति पता लगता है कि श्री स्वामीजी के काल में मुसलमानों को सुधार की आवश्यकता थी। अनेक मुसलमानों ने उनके सुधारने के लिये उद्योग किया और श्री स्वामीजी ने भी अपनी ओर से सुधार की योजना सन्मुख रखी और इस विषय मे खण्डन की आवश्यकता थी जिसका समर्थन एक उच्च कोटि के मुसलमान फारसी कवि के शब्दों से ज्ञात हो जाता है।

(१) चू आसासे खनये तू अफ़गनन्द।
औवलों बुनियाद रा बर मी कनन्द॥

(२) गिल बर आरन्द औवल अज़ कारे जमीं।
ता बआखिर बरकशी माये मुईं॥

(३) अज़ हजामत कूद्‌का गिरयन्द ज़ार।
कि नमी दानन्द ईशा सिर्रे कार॥

(४) मर्द जर मीदहद हज्जाम रा।
मीनवाजद नेश खू आशाम रा॥

(१) जब लोग तेरे घर की नींव डालते हैं तो सब से पहले नींव खोदते है।

(२) भूमि की गहराई मे से लोग पहले मिट्टी निकालते है ताकि तू शुद्ध जल को प्राप्त करे।

(३) हज्जामत (नश्तर मारने वाले) से बच्चे बुरी तरह रोते हैं क्योंकि ये कार्य के रहस्य को नहीं जानते।

(४) मनुष्य नश्तर मारने वाले को धन देता है और अत्याचारी डक (नश्तर) का मान करता है। मौलाना जलालउद्दीन रूमी साहब सन् १२७३ ई० में स्वर्गलोक सिधारे थे। उनकी अद्वितीय रचना 'मसनवी मौलाना रूम' के नाम से विख्यात है उसी के दफ्तर दोम अर्थात् दूसरे खण्ड से उक्त पद्य लिये गये हैं। उस मसनवी के विषय में यह कहना काफी है कि एक मुसलमान लेखक ने इसके विषय मे कहा है—

हस्त कुरआ दर ज़बाने पहलवी।*

अब अन्त में यह कह देना अनुचित नहीं कि ऊपर के शब्दों से स्पष्ट है कि श्री स्वामीजी के समय में मुसलमानों के कथनानुसार क्या दशा मुसलमानों की भारत में थी और खण्डन का विषय कितना आवश्यक वस्तु उच्चकोटि के एक मुसलमान ही के विचार से, अब से कितने वर्षों पहले थी।

---

*फारसी भाषा में कुरआन है—लेखक।

सत्यार्थ प्रकाश रक्षा का दृढ़ व्रत

[लेखिका—श्रीमती सन्तोष कुमारी जी हिन्दी प्रभाकर चन्दौसी]

पापों से भरी नेय्या किसकी, ससार भँवर में आई है।
खेवट रत धुनि में मतवाला घन घोर घटा इत छाई है ॥
प्रकाश अँधेरा है जिसको रवि दीख पडे अँधियारे में।
कर नेत्र वन्द जो कूद रहा जलती हुई आग अँगारे में ॥
जिसने कुछ झूठ दिखाने को सच्चाई पै परदा डाल दिया।
सच यह है जिसने सच का अब, अनादर और अपमान किया ॥
जिसने कुछ झूठ छिपाने में अधरम और पाप कमाया है।
श्री स्वामी जी की पुस्तक पर बेसमझे हाथ उठाया है ॥
जीवन से प्यारी हमको इसकी सच मानों डाली डाली है।
प्रति समुल्लास मे खुशबू है रँगत है और हरियाली है ॥
फिर किस व्यक्ति की हिम्मत है, जो पत्ता भी इक तोड़ सके।
फिर माली है चैतन्य पड़ा, क्या ताकत उसको छेड़ सके ॥
क्या ख्वाजा तूने समझा है प्रति हिन्दू भाला भाला है।
अपनी इस हरकत से तूने, कुछ घी ज्वाला में डाला है ॥
इस प्रचण्ड अग्नि की ज्वालायें, जिन्ना अब तुझ तक आयेंगी।
हम दुखियों की आसू नदिया, तुझको अब शीघ्र डुबायेंगी ॥
यह आर्य वीर जीवन देकर, अब अपना मान बचायेंगे।
भारत के कोने कोने मे, हम अब कुहराम मचायेंगे ॥
है समय निकट सत्याग्रह की अब आग भड़कने वाली है।
सत्यार्थ प्रकाश है बाग तुल्य, प्रति हिन्दू उसका माली है ॥
इस गवर्मेण्ट की नीति पर, अपना बलिदान चढा करके।
मानेंगे जुल्मी हाथों से सत्यार्थ प्रकाश बचा करके ॥
अब हिन्दू जनता सभल उठे, है समय निकट तय्यारी का।
पर हालत कहती यह सच है, कहना "सन्तोष कुमारी" का ॥

[यह कविता महिला जगत् मे भी सत्याथ प्रकाश के प्रतिवन्ध से कितना रोष है और उसकी रक्षार्थ कितनी प्रबल भावना है यह दिखाने के लिये यहा प्रकाशित की गई है पाठक पाठिकाएँ इसी दृष्टि से इसे पढ़ें—सम्पादक]

चौदहवाँ समुल्लास

(रच०कवि श्री ओंकार मिश्र जी 'प्रणव' शास्त्री, विद्याभूषण, साहित्याचार्य
प्रोफेसर म० वि० श्री गुरुकुलधाम जेहलम)

वक्त पड़ा बड़ा सख्त क्यों कि इस्लाम के भी
तख्त हिलने की आज आई चिर बेला है
आयतों की अतुल अंधेरी घनी यामिनी मे
हो गया प्रकाश सत्य अर्थ अलबेला है
हुए भयभीत तो अनीतिरीति चालन को
"प्रणव" लगाया लीगी लोगों ने झमेला है
मि०त्र के अकाम म दि चौदहवा समुल्लास
चौदहवी सदी का चान्द चमका उजेला है ॥१॥
कांपती कुरान घड़ी घड़ी है हैरान खड़ी
आपति है आन पड़ी बड़ी घबराती है
तर्क की कटारी ध्यान म्यानसों निकारी कारी
सारी ही सहारी सैन्य आयत अराती है
हो गए अधीर पीर फूटी तकदीर भई
फीकी तकरीर, तदबीर न दिखाती है
भापत प्रणव' समुल्लास व र तेर भाम
लीगी मन्त्री मण्डल की छाती दहलाती है॥२॥

सत्यार्थप्रकाश के चतुर्दश समुल्लास का तुलनात्मक अनुशीलन

महर्षि दयानन्द और इस्लाम के अन्य समालोचक

(२)

(ले०—प० धर्मदेव विद्यावाचस्पति सहायक मन्त्री सार्वदेशिक सभा)

सार्वदेशिक के गत जनवरी अङ्क में हमने सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास में की गई इस्लाम की आलोचना की तुलना सुप्रसिद्ध अनेक अनेक पाश्चात्य विद्वानों द्वारा की गई आलोचना के साथ करते हुए बताया था कि महर्षि दयानन्द कृत आलोचना न केवल पवित्र भाव से की हुई और युक्ति युक्त है किन्तु अपेक्षया कोमल भी है। इसी बात को कुछ उदाहरणों द्वारा इस लेख में भी स्पष्ट किया जाएगा।

(११) महर्षि दयानन्द ने अल्लाह के मार्ग में लड़ो उन से जो तुम से लड़ते हैं। मार डालो तुम उनको जहा पावो। कतल से कुफ्र बुरा है। यहा तक उन से लड़ो कि कुफ्र न रहे और होवे दीन अल्लाह का॥ कुरान म० १ सि० २ सूरा २ आयत १७४-१८८ "इत्यादि आयतों की आलोचना करते हुए लिखा है "जो कुरान में ऐसी बातें न होतीं तो मुसलमान लोग इतना बड़ा अपराध जो कि उन्होंने अन्य मतवालों पर किया है न करते और बिना अपराधियों को मारना उन पर बड़ा पाप है। जो मुसलमान के मत का ग्रहण न करना है उस को कुफ्र कहते हैं अर्थात् कुफ्र से कतल को मुसलमान लोग अच्छा मानते हैं अर्थात् जो हमारे दीन को न मानेगा उस को हम क़तल करेंगे सो करते ही आये। मजहब पर लड़ते २ आप ही राज्य आदि से नष्ट हो गये और उनका मत अन्य मतवालों पर अति कठोर रहता है इत्यादि (समीक्षा स० ३५)

"मुसलमानों को चाहिये कि काफिरों को मित्र न बनाए सिवाय मुसलमानों के। जो कोई यह करे बस वह अल्लाह की ओर से नहीं।"

कुरान सू० ३ आ० ७४ की आलोचना में महर्षि दयानन्द ने लिखा है 'अब देखिये पक्षपात की बातें कि जो मुसलमानों के मजहब में नहीं उनको काफिर ठहराना, उन में श्रेष्ठों में भी मित्रता न रखने और मुसलमानों में दुष्टों से भी मित्रता रखने के लिये उपदेश करना ईश्वर को ईश्वरता से बहि कर देता है। इस से यह कुरान, कुरान का खुदा और मुसलमान लोग केवल पक्षपात अविद्या से भरे हुए हैं, इसीलिये मुसलमान लोग अन्धेर में हैं।" (देखो समीक्षा स० ४८) इस युक्ति युक्त समीक्षा के साथ निम्न लिखित कुछ पाश्चात्य विद्वानों के वचनों की तुलना कीजिये तो महर्षि के कथन की पुष्टि स्पष्टतया मिलेगी। रेवरेण्ड जानपूल (Rev John Pool) नामक विद्वान् ने Studies in Mohammedanism नाम के अपने अत्युत्तम ग्रन्थ में मुसलमानों की मतान्धता की बड़ी कड़ी आलोचना की है। वे लिखते हैं

'Mohammedans have earned for themselves throughout the world, the title of fanatics as a consequence of their wild words and actions in connection with the faith once delivered to them by Mohammed the Prophet. The

feeling amongst the Moslems has been and is, that they are the Chosen of Allah, that they are the appointed instruments of God to bring all men, even by the power of the sword to the knowledge of the only true faith Consequently woe to the individuals, communities or nations that will not listen to the call to accept Islamism with all its forms and ceremonies

The later books of the Koran teem with passages which counsel strong measures to be taken with infidels.—'When ye meet the infidels, strike off their heads, until ye have made a great slaughter among them Verily, God loves those who fight for His religion 'Paradise it was declared is under the shadow of swords The sword, it was asserted is a surer argument than books

(Studies in Mohammedanism by John Pool D D P 364)

अर्थात् मुसलमानों ने सारे संसार में अपने जंगली शब्दों और कामों के कारण जो मुहम्मद पैगम्बर द्वारा प्रचरित विश्वास के सम्बन्ध में उन्होंने दिखाये हैं मतान्ध की उपाधि प्राप्त करली है। मुसलमानों के अन्दर यह भावना रही है और अब भी है कि वे अल्ला या परमेश्वर के चुने हुए हैं और तलवार के भी जोर से मनुष्यों को सच्चे मत (इस्लाम) की ओर लाने का वे साधन हैं इस लिये धिक्कार है उन व्यक्तियों, जातियों और राष्ट्रों को जो इस्लाम के आमन्त्रण को सम्पूर्ण क्रियाकलाप के साथ स्वीकार नहीं करतीं। कुरान के पिछले भाग काफिरों के विरुद्ध प्रबल साधनों को काम में लाने के उपदेशों से भरे हुये हैं जहां लिखा है कि जब तुम काफिरों को मिलो तो उनके सिर उड़ा दो सचमुच खुदा उन्हीं के साथ प्यार करता है जो उस के मजहब के लिये लड़ते हैं—इस बात की घोषणा की गई कि स्वर्ग बहिश्त"चमकती हुई तलवारों के नीचे है साथ ही यह कहा गया कि तलवारें किताबों की अपेक्षा अधिक प्रबल युक्तियां है। इस पर टिप्पणी करते हुए मि० जॉन पूल ने ठीक लिखा है

Is it to be wondered at that a people thus taught should have grown to love war as the very breath of their nostrils and to revel in it with a fanaticism that was cruel as a grave ? In every age Moslems as a whole have been most dogmatic in their teaching and perfectly fanatical in their enforcement upon others of what they have conceived to be truth

(P 368)

अर्थात् क्या यह आश्चर्य की बात है कि जिस जाति का इस प्रकार की शिक्षा दी गई हो उसे अपने प्राण की तरह युद्ध से प्रेम हो जाए और वह कबर की तरह क्रूर मतान्धता के साथ इसी में खुशी का अनुभव करे ? प्रत्येक काल में मुसलमान एक नियम के तौर पर, अपनी शिक्षाओं के विषय में बड़े कट्टर और जिस बात को उन्होंने सत्य मान रखा है उस को दूसरों पर ठोंसने में पूर्णतया मतान्ध रहे हैं।

इन शब्दों को पढते हुए हमें ऐसा प्रतीत होता है मानो हम महर्षि दयानन्द जी कृत समा-

लोचना को पढ़ रहे हैं यद्यपि कठोरता की दृष्टि से यह समालोचना उसकी अपेक्षा अधिक ही है।

उपसंहार करते हुए श्री जान पूल ने बड़ी अच्छी बात लिखी है। वे लिखते हैं —

I wonder some times, whether Mohammedans will ever learn that their best interests lie in realising the great truth of the brotherhood of humanity. There can be no peace, no prosperity and no real happiness in Islam, until the feelings of cruel religious fanaticism nurtured by the Koran have been replaced by feelings of brotherly sympathy and love for all nations and peoples.
(Studies in Mohammedanism by John Pool P. 373)

अर्थात् कई बार मुझे आश्चर्य होता है कि क्या मुसलमान कभी इस बात को सीख जाएंगे कि उनका असली हित मनुष्य मात्र के भ्रातृत्व के महासत्य को अनुभव करने में है? इस्लाम में कभी शान्ति नहीं हो सकती, कभी समृद्धि और सच्ची प्रसन्नता नहीं प्राप्त हो सकती जब तक कि कुरान द्वारा प्रोत्साहित क्रूर मतान्धता की भावना का स्थान भ्रातृभाव सहानुभूति और सब जातियों के लिये प्रेम का भाव न ले ले।'

महर्षि दयानन्दजी द्वारा सत्यार्थ-प्रकाश के १४ वें समुल्लास में की गई समालोचना का मुख्य उद्देश्य ही इस मतान्धता और असहिष्णुता तथा दुराग्रह को दूर करना था जैसे कि उन्होंने चतुर्दश समुल्लास की भूमिका में लिखा है 'यही सज्जनों की रीति है कि अपने व पराये दोषों का दोष और गुणों को गुण जान कर गुणों को ग्रहण और दोषों का त्याग करें और हठियों का हठ दुराग्रह न्यून करें करावें क्योंकि पक्षपात से क्या २ अनर्थ जगत् में न हुए न होते हैं" (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लास भूमिका)

(१०) रेवरेण्ड जे० एम्० आर्नल्ड (Rev. J. M. Arnold D. D.) नामक सज्जन ने कुरान की इस विषयक शिक्षा की कड़ी आलोचना करते हुए इस्लाम ऐंड क्रिश्चियेनिटी नाम की अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक में लिखा है—

'This hatred towards all other religionists, which is the very element of Islam, is continually nourished by the reading of the Koran which is filled with threatening and curses against unbelievers. It is also the necessary consequence of a doctrine which teaches, that the sword is the sanctified means of Conversion.
('Islam and Christianity' by M. Arnold D. D. P. 205)

अर्थात् अन्य सर्व मतावलम्बियों के प्रति घृणा का भाव जो इस्लाम का मुख्य तत्त्व है कुरान के अध्ययन से जो अविश्वासियों के विरुद्ध धमकियों और शापों से परिपूर्ण है निरन्तर पुष्ट होता है। साथ ही यह उस सिद्धान्त का स्वाभाविक परिणाम है जो तलवार को मतान्तर का विहित साधन बतलाता है। महर्षि दयानन्द ने इस असहिष्णुता की समीक्षा करते हुए अपनी उदारता का परिचय इन शब्दों में दिया है "जो दूसरे मतों को जिस में हजारों

करोड़ों मनुष्य हों झूठा बतलावे और अपने को सच्चा उस से परे झूठा दूसरा मत कौन हो सकता है? क्योंकि किसी मत में सब मनुष्य बुरे और भले नहीं हो सकते। यह इकतर्फी डिगरी करना महा मूर्खों का मत है।" (समीक्षा सं० ७३)

(१३) जगद्विख्यात विचारक श्री बर्नार्ड शा (George Bernard Shaw) ने अपनी नवीन रचना Everybody's Political What is what में हिन्दू धर्म के विषय में लिखा है कि "This makes Hinduism the most tolerant religion of the world (P 227 Chapter XV) अर्थात् हिन्दू धर्म संसार में सब से अधिक सहिष्णु धर्म है। इसकी इस्लाम के साथ तुलना करते हुए उन्होंने लिखा है—

Islam is very different. It is ferociously intolerant (P 22) In Islam there was to be no nonsense about toleration. You accepted Allah or you had your throat cut by some body who did accept him, and who went to paradise for having sent you to hell

(Everybody's Political what is what by Bernard Shaw P ..)

अर्थात् इस्लाम इस अत्यन्त सहिष्णु व उदार हिन्दू धर्म से सर्वथा भिन्न है क्योंकि यह अत्यन्त भयङ्कर व उग्ररूप में असहिष्णु है। इस्लाम में सहिष्णुता की (मूर्खता) का अभाव था। या तो तुम अल्लाह को स्वीकार करो नहीं तो तुम्हारा गला उसके द्वारा कटवा दिया जाएगा जो अल्लाह को मानता है और जो तुम्हे नरक में डालकर आप इस काम द्वारा स्वर्ग को जाता है।

इन शब्दों के पीछे जो व्यङ्ग छिपा हुआ है और इस प्रकार महर्षि दयानन्द की इस विषयक आलोचना का इन से जो समर्थन होता है उसके विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं।

(१४) मार्कस डौड्स डी० डी० (Marcus Dods D D) नामक सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान् ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ Mohammed, Buddha and Christ में इस्लाम की निम्न लिखित चार बातों को मुख्यतया आक्षेप योग्य बताया है (जिनकी आलोचना महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश में विशेषरूप से की है)। वे लिखते हैं —

"The four points in the theoretical and practical teaching of Mohammed have chiefly provoked criticism, the material and gross character of the heaven he set before his followers, his allowance of polygamy and divorce, the slavery and fatalism which prevail among Mohammedan population (Mohammed, Buddha and Christ' by Marcus Dods M A D D P 46 47)

अर्थात् मुहम्मद की शिक्षा में ४ ऐसी बातें हैं जो मुख्यतया समालोचना का विषय बनी हैं (१) मुहम्मद साहब ने जो स्वर्ग (बहिश्त) का स्वरूप अपने अनुयायियों के आगे रक्खा उसकी प्राकृतिकता तथा स्थूलता अथवा भौतिक भोग प्रधानता (२) बहुविवाह और तलाक के लिये उसकी अनुमति (३) दासता तथा (४) प्रारब्धवाद जो मुस्लिम जनता में प्रचलित है। इन चारों की विस्तृत समालोचना करते हुए मि० मार्कस डौड्स ने इस्लाम की इन शिक्षाओं को मनुष्य समाज के लिये बड़ा हानिकारक

बताया है। मुसलमानी स्वर्ग का विस्तृत वर्णन कुरान के आधार पर करते हुए उन्हों ने लिखा है कि—

Such passages frequently occur in the early Suras of Koran and I think a candid mind must own to being some—what shocked and disappointed by the low ideal of perfected human bliss set before the Mohammedans (P 48) In the Koran it must be owned, that the promises of physical pleasures are, to say the least, very greatly in excess of promises of a higher kind ('Mohammed' by Marcus Dods P. 49)

अर्थात् कुरान के प्रारम्भिक अध्यायों में ऐसे वाक्य बार २ पाये जाते हैं और मैं समझता हू कि किसी भी पक्षपात रहित व्यक्ति का मन, मानवीय आनन्द की पूर्णता का जो नीच आदर्श मुसलमानों के सामने रक्खा गया है उससे धक्का खाये और निराश हुए बिना न रहेगा।—इस बात को स्वीकार करना ही पडेगा कि कुरान में भौतिक सुखों की जो आशाएँ स्वर्ग में दिखाई गई हैं वे उच्च प्रकार के (आध्यात्मिक) सुख की अपेक्षा बहुत ही अधिक हैं।

पाठक महर्षि दयानन्द जी की मुसलमानी स्वर्ग (बहिश्त) की 'भला यह कुरान का बहिश्त संसार से कौन सी उत्तम बात वाला है? क्योंकि जो पदार्थ संसार में हैं वे ही मुसलमानों के स्वर्ग में हैं इत्यादि (समीक्षा सं० ९) युक्ति-युक्त समालोचना को इस आलोचना के साथ मिलाकर देखेंगे तो उसकी सत्यता उन्हें स्पष्टतया ज्ञात होगी।

'Fatalism in Islam' अथवा इस्लाम में दैववाद की व्याख्या और समालोचना करते हुए मि० मार्कस डौड्स ने लिखा है—

Again and again in the Koran Mohammed asserts that 'God misleadeth whom He will, and whom He will He guideth' (Koran Sura XIV G XIII 27. III 139)

अर्थात् कुरान में बार २ मुहम्मद ने इस बात को दुहराया है कि 'खुदा जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिस को चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है।

इसी पर महर्षि दयानन्द जी ने यह आलोचना की है कि 'जब' अल्लाह गुमराह करता है तो खुदा और शैतान में क्या भेद हुआ? जब कि शैतान दूसरों को गुमराह अर्थात् बहकाने से बुरा कहाता है तो खुदा भी वैसा ही काम करने से बुरा शैतान क्यों नहीं? और बहकाने के पाप से दोजखी क्यों नहीं होना चाहिये? (समीक्षा सं० ६५) बहुविवाह के विषय में मुहम्मद साहब की शिक्षा की आलोचना करते हुए डौड्स महोदय ने लिखा है कि—

'Mohammed restricted polygamy in others, but not in his own case, and this left upon the minds of his followers the inevitable impression that an unrestricted polygamy was the higher state of the two. While he (Mohammed) restricted the number of lawful wives, he did not restrict the number of slave concubines' (Mohammed, Buddha and Christ' by Marcus Dods M.A.P.58)

अर्थात् मुहम्मद साहेब ने औरों के लिये बहुविवाह की सीमा (४ तक) अवश्य बांध दी किन्तु अपने लिये नहीं। और इस प्रकार अपने अनुयायियों पर अनिवार्य रूप से यह प्रभाव छोड़ा कि अनियन्त्रित बहुविवाह की अवस्था एक सब अवस्था है। उसने विवाहित स्त्रियों की संख्या को (४ तक) सीमित कर दिया किन्तु लौंडियों या वेश्या स्त्रियों की संख्या को नहीं।

आगे 'Slavery and concubinage' शीर्षक के नीचे वे लिखते हैं 'Slavery can only be abolished when Concubinage is abolished, and when Concubinage is abolished, the whole Character of Islam and especially its attitude to its prophet and its sacred book, must be altered' ('Mohammed, Buddha and Christ' P. 68)

अर्थात् दासता की प्रथा तभी उठाई जा सकती है जबकि वेश्या वृत्ति का ही अन्त कर दिया जाए और जब वेश्या वृत्ति का अन्त कर दिया जाए तो इस्लाम के सारे चरित्र को विशेषत इसकी अपने पैग़म्बर और पवित्र धर्म ग्रन्थ कुरान के प्रति भावना को अवश्य ही बदलना पड़ेगा।

इसी दृष्टि से महर्षि दयानन्द जी ने यह लिखा कि 'मुहम्मद साहेब के तो आचरण इन बातों से प्रकट ही हैं क्योंकि जो अनेक स्त्रियों को रक्खे वह ईश्वर का भक्त वा पैग़म्बर कैसे हो सके ? और जो एक स्त्री का पक्षपात से अपमान करे और दूसरी का मान्य करे वह पक्षपाती होकर अधर्मी क्यों नहीं और जो बहुतसी स्त्रियों से सन्तुष्ट न होकर बांदियों के साथ फंसे उसको लज्जा, भय और धर्म कहा से रहे ? (समीक्षा स० १४३)

(१५) महर्षि दयानन्द जी की मुहम्मद साहेब के चरित्र विषयक ऊपर उद्धृत समालोचना को अत्यन्त कठोर और सर्वथा अनावश्यक कहा जाता है। समालोचकों का कथन है कि यदि स्वामी दयानन्द जी इस्लाम के मन्तव्यों की आलोचना करते तो उसमें कोई हानि न थी मुहम्मद साहेब के चरित्रादि की आलोचना करना उन्हें उचित न था। इस विषय में इतना ही लिखना पर्याप्त है कि कुरान में ख़ुदा के साथ मुहम्मद साहेब में विश्वास रखना भी स्वर्ग की प्राप्ति के लिये अत्यावश्यक बल्कि अनिवार्य बताया है। इतना ही नहीं, मुसलमान भाइयों का मुहम्मद साहेब के विषयमें जो विश्वास है उसको 'The Great Prophet' नामक मुहम्मद साहेब के चरित्र के लेखक एफ़, के खान दुर्रानी बी० ए० इत्यादि ने इन शब्दों में बताया है कि —

'Mohammed was the most perfect man that ever lived (The Great Prophet P. 3) "His (Mohammed's) life was the purest and his morals the highest thinkable This then is Islam We should love Mohammed who taught us these things and try to walk in his foot steps and follow his example in all things' (The Great Prophet by F. K Khan Durrani P 3)

अर्थात् मुहम्मद संसार में अब तक जितने मनुष्य उत्पन्न हुए हैं उनमें सबसे अधिक पूर्ण था। मुहम्मद का जीवन सब से अधिक पवित्र था और उसका सदाचार इतना उत्कृष्टतम था

जितने की कल्पना हो सकती है अर्थात् सब से ऊंचा। इस्लाम यह है कि हमें मुहम्मद के प्रति प्रेम रखना चाहिये जिसने इतनी अच्छी शिक्षाएं दीं, उसके चरण चिन्हों पर चलने और सब बातों में उनके प्रदर्शित उदाहरण के अनुसरण करने का प्रयत्न करना चाहिये।

मुसलमान बन्धुओं का यह मन्तव्य होते हुए जब महर्षि दयानन्द जी जैसे सत्यान्वेषी ने महम्मद साहेब के चरित्र की इस दृष्टि से विवेचना कर के उसे अनेक त्रुटिपूर्ण पाया तो इस में चिढने की बात ही क्या है? मुहम्मद साहेब के चरित्र को आदर्श मानने का जो कुपरिणाम हुआ है उसके विषय में डा० मार्गोलियथ डी० लिट् (ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी में अरबी के प्रोफेसर) ने Encyclopedia of Religion and Ethics के ८ वें खण्ड में अपने महम्मदीमत विषयक लेख में लिखा है—

'The theory that this person's (Mohammed's) conduct was a model for his followers has in consequence done serious mischief' (Encyclopedia of Religion and Ethics Vol VIII P 873)

अर्थात् इस सिद्धान्त ने कि मुहम्मद का आचार व्योवहार उसके अनुयायियों के लिये आदर्श रूप है, बड़ी गम्भीर शरारत को पैदा किया है।

यदि मुसलमान भाई पूर्वोक्त प्रकार मुहम्मद साहेब को सर्वथा पूर्ण, आदर्श और निष्कलङ्क ईश्वर का भेजा हुआ पैगम्बर न मान कर उन्हें एक सुधारक के रूप में मानते जिन्होंने अपने समय की कई बुरी प्रथाओं और विश्वासों को दूर करने का यत्न किया तो महर्षि दयानन्द जी तथा अन्य समालोचकों को उनके चरित्रादि की आलोचना करने की शायद विशेष आवश्यकता न होती। अतः इसमें मुसलमान बन्धुओं के अपने मन्तव्य का ही दोष है निष्पक्षपात विचारकों का नहीं

(१६) महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्दश समुल्लास में "मत फिरो पृथिवी पर झगड़ा करते" म० २ सि० ८ सूरा ७ आ० ७३ इस आशय की आयत का उद्धृत कर के उस पर समीक्षा करते हुआ लिखा है "यह बात तो अच्छी है परन्तु इस से विपरीत दूसरे स्थानों पर जिहाद करना और काफिरों को मारना भी लिखा है अब कहो पूर्व पर विरुद्ध नहीं है? इस से यह विदित होता है कि जब मुहम्मद साहेब निर्बल हुए होंगे तब उन्होंने यह उपाय रचा हो और सबल हुए होंगे तब झगड़ा मचाया होगा इसी से ये बातें परस्पर विरुद्ध होने से दोनों सत्य नहीं हैं। (समीक्षा स० ५१)

इस विषय में सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वानों ने जो आलोचना की है उस से महर्षि दयानन्द जी के विचार का पूर्ण तया समर्थन होता है उदाहरणार्थ 'Encyclopedia of Islam Vol VI में 'Mohammed' (मुहम्मद) विषयक लेख में मक्का और मदीना की आयतों का भेद दरशाते हुए लिखा है.—

In the Medina period the place of persuation and proof no compulsion in religion (Koran 11 207. XVI was taken by the spread of Islam by force of arms P 653

अर्थात् मदीना काल में, केवल प्रेरणा और प्रमाण तथा 'धर्म की बातों में जबदस्ती का प्रयोग न करो' इस आदेश का स्थान तलवार के बल से इस्लाम के प्रचार ने ले लिया।

यह सब जानते हैं कि मक्का में मुहम्मद साहेब निर्बल थे और मदीना में उन की शक्ति बहुत बढ़ चुकी थी अब इन शब्दों से महर्षि दयानन्द जी की आलोचना की पूर्णता या पुष्टि होती है। रेवरेन्ड सेल (Rev. Sell DD नामक

(१७) विद्वान् ने The life of Mohammed (मुहम्मद का जीवन चरित्र' नाम के अपने ग्रन्थ में मुहम्मद साहेब के विषय में लिखा है'—

'With the increase of worldly power intolerance took the place of freedom and force, of persuation' (The Life of Mohammed by Rev Sell D D p 230)

अर्थात् सांसारिक शक्ति की वृद्धि के साथ विचार स्वतन्त्रता का स्थान असहिष्णुता और प्रेरणा का स्थान जबर्दस्ती ने ले लिया

(१८) श्री बौसवर्थ स्मिथ एम ए (Bosworth Smith M A) नामक अंग्रेज विद्वान् ने जिसे मुहम्मद साहेब का मुस्लिम में सब से अधिक प्रशंसक माना जाता है और जिनके Mohammed and Mohammedanism नामक ग्रन्थ का Life of Mohammed के लेखक मिर्जा अबुल फजल तथा अन्य मुसलमान विद्वानों ने विशेष रूप से अभिनन्दन किया है इस विषय में लिखा है कि—

The free toleration of the purer among the creeds around him, which the prophet had at first enjoined gradually changes into intolerance Persecuted no longer Mohammed becomes a persecutor himself with the Koran in one hand, the scimitar in the other, he goes forth to offer to the nations, the threefold alternatives of conversion, tribute and death 'At the close of his life, in one of his last Suras of the Koran, we are hardly surprised to find the stern command and the magnificent presentment.' 'Fight on, therefore, till there be no temption to idolatry and the religion become God's alone' (Koran Sura VIII 40) (Mohammed and Mohammedanism by Bosworth Smith M.A P. 202)

अर्थात् अन्य मतावलम्बियों के प्रति वह सहिष्णुता का भाव जिसकी मुहम्मद साहेब ने पहले शिक्षा दी थी—धीरे २ असहिष्णुता में परिवर्तित हो जाता है। अब जब कि उस पर अत्याचार नहीं होते, मुहम्मद स्वयम् एक अत्याचारी का रूप धारण कर लेता है और एक हाथ में कुरान और दूसरे में तलवार लेकर अन्य जातियों के सम्मुख मतान्तर, कर और मृत्यु का त्रिविध विकल्प उपस्थित करता है। अपने जीवन के अवसान के समय, कुरान के एक अन्तिम अध्याय में हमें इस कठोर आदेश को पाकर आश्चर्य नहीं होता कि "इस लिये लड़ो और लड़ते चलो जब तक कि मूर्ति पूजा के लिये कोई प्रलोभन न रहे और केवल खुदा का ही मजहब रह जाए। क्या इन शब्दों से महर्षि दयानन्दजी कृत समालोचना का पूर्ण समर्थन नहीं होता ?

(१६) Encyclopedia of Religion and Ethics Vol VIII में Mohammedanism विषयक अत्युत्तम लेख के लेखक डा० मार्गोलियथ डी० लिट् (Margolioth D

Litt) ने कुरान की इस विषयक शिक्षाओं के परस्पर विरोध को इन शब्दों में दिखाया है—

'On the Question of religious toleration, the quoran contains a series of utterances, belonging to different periods and varying from large minded tolerance to extreme fanaticism Friendship with members of other Communities is forbidden The most intolerant utterances are the latest ones

(Encyclopedia of Religion of Ethics Vol VIII P 878)

अर्थात् धार्मिक सहिष्णुता के प्रश्न पर कुरान में भिन्न भिन्न समयों में दी गई मुहम्मद साहेब की अनेक प्रकार की परस्पर विरुद्ध उक्तियां हैं जो उदारता पूर्ण सहिष्णुता से अत्यधिक मतान्धता वा कट्टर पन तक हैं। अन्य मत वालों के साथ मित्रता का भी निषेध किया गया है। इस विषय में सब से अधिक असहिष्णुता सूचक उक्तियां मुहम्मद की अन्तिम उक्तियां हैं।

पाठक महर्षि दयानन्द कृत समीक्षा की इसके साथ तुलना करें तो उसकी यथार्थता स्पष्टतया प्रमाणित होगी इस में सन्देह नहीं।

(२०) Encyclopedia of Islam Vol II में डा० डी० बी० मेकडोनल्ड (Dr D B Macdonald) ने जिहाद (Djihad) पर लेख लिखते हुए बताया है कि The spread of Islam by arms is a religious duty upon Moslems in general. This position was reached gradually but quickly It is now a general duty on all male free, Muslims sound in mind and body and having means enough to reach the Muslim army So it must be continued until the whole world is under the rule of Islam Islam must be completely made over before the doctrine of Djihad can be eliminated

(Encyclopedia of Islam Vol II P 1041-1042)

अर्थात् शस्त्रों के प्रयोग द्वारा इस्लाम का प्रचार साधारणतया सभी मुसल्मानों के लिये एक धार्मिक कर्तव्य है। यह स्थिति क्रमश किन्तु शीघ्रता के साथ प्राप्त की गई थी। यह अब सब मुसल्मान मनुष्यों के लिए जो गुलाम न हों तथा जिनका शरीर और मन ठीक अवस्था में हो और जो मुसल्मान सेना तक पहुँचने के साधन रखते हों सामान्य कर्तव्य रूप है। अबतक सारा संसार इस्लाम के राज्य के अधीन न हो जाए तब तक इस जिहाद वा धर्म युद्ध को जारी रखना चाहिये। इस्लाम का सर्वथा परित्याग करना पडेगा पूर्व इस के कि जिहाद के सिद्धान्त को उस में से निकाल दिया जाए॥

महर्षि दयानन्द जी की जिहाद विषयक समालोचना कितनी यथार्थ और आवश्यक थी यह उपयुक्त प्रामाणिक लेख से स्पष्टतया ज्ञात हो सकता है। (क्रमशः)

आवश्यक घोषणा

बसन्त पञ्चमी के दिन १८ जनवरी १९४५ ई० को मेरी आयु का ७९ वा वर्ष पूरा हो कर ८० वा वर्ष शुरु हुआ है। उस दिन अन्य कुछ बातों के सिवा मैंने यह भी निश्चय किया है कि भविष्य में उन चार उत्सवों के सिवा जिन में शरीक होने की प्रतिज्ञा की हुई है, अन्य उत्सवों में शरीक न हुआ करूंगा। उत्सवों के वेद गेपन के सिवा उन में जाकर शरीक होने में यात्रा में लगभग उतना ही समय व्यय हो जाता है जितना उत्सवों में और यह यात्रा का समय व्यर्थ हो जाता है। इसलिये मैं समस्त आर्य समाजों और आर्य भाइयों से प्रार्थना करता हूँ कि मेरे पास उत्सव के निमन्त्रण न भेजा करें क्योंकि मैंने यह भी निश्चयकर लिया है कि मै ऐसे पत्रोंका उत्तर न दूंगा अब मेरा स्वाध्याय और पुस्तकों के लिखने आदि कार्यों मे प्राय सब समय लगाने का विचार है।

नारायणस्वामी २२-१-४५

कस्तूरबा गाँधी पुस्तकालय में एक प्रशंसनीय विवाह

कस्तूरबा गाँधी पुस्तकालय बम्बई के पुस्तकाध्यक्ष प० धन्नालालजी शर्मा का शुभ-विवाह ता० ८-१ ४५ के शाम के ८ बजे श्रीमती कु० बसन्ती देवी (जो जन्मत एक मुस्लिम लडकी है और शुद्ध की जा चुकी है) के साथ लाला शामलालजी गोयल, डा० मानसिंह जी रत्नाकर, प० कन्हैयालाल जी मिश्र, श्री ला० ज्वाला प्रसाद जी प० लेखराज जी अजमेरी, आदि आदि सज्जनों की उपस्थिति में वैदिक पद्धति से पुस्तकालय में सानन्द सपन्न हुआ।

गिरिराजकिशोर
मन्त्रीः—पुस्तकालय

[हम इस दम्पती के सर्वविध मङ्गल के लिये भगवान् से प्रार्थना करते हैं—सम्पादक]

प्रचारार्थ

सार्वदेशिक सभा के नवीन प्रकाशन

(१) सत्यार्थ प्रकाश की सार्व भौमता इसमें सत्यार्थ प्रकाश की रचना का उद्देश्य महर्षि दयानन्द के अमर शब्दों में बताकर विविध भाषाओं में उसके अनुवादों की विस्तृत तालिका प्राप्त सूचनाओं के आधार पर दी गई है मूल्य –)

(२) Maharshi Dayananda and Satyarth Prakash—Tributes paid by many prominent persons of the east and the west

Compiled by Pt Dharma Deva Ji Vidya Vachaspati Price—As 8
Reduced price upto 31st March As 6

जैसे कि पुस्तक के नाम से ही स्पष्ट है इस में स्व० श्री रोमाराला, रेवरेन्ड ऐन्ड्रूज प्रो० सिड्नी वेब, सर सय्यद अहमद खाँ डा० रवीन्द्र नाथ ठाकुर श्री अरविन्द आदि सुप्रसिद्ध पाश्चात्य और पौरस्त्य विद्वानों द्वारा महर्षि दयानन्द और सत्यार्थप्रकाश के प्रति श्रद्धाञ्जलियों का सग्रह है।

(३) In defence of Satyarth Prakash By Prof. Sudhakar Ji M A Secretary Sarvadeshik Sabha

विषय नाम से ही स्पष्ट है। वर्तमान आन्दोलन के स्वरूप और महत्त्व को समझने के लिये यह छोटीसी पुस्तक प्रत्येक अंग्रेजी जानने वाले के लिये अनिवार्य है।

छप रही है

(४) अर्बी फार्मी में हम और हमारे समालोचक सुप्रसिद्ध विद्वन् श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी द्वारा मिर्जा गु नाम अहमद साहेब कादियानी की पुस्तक से सकलित—कुरान मे अन्य मतावलम्बियों के लिये प्रयुक्त अप शब्दों की सूची सहित मू० –)

मँगवाने में शीघ्रता करें अन्यथा पछताना पडेगा।

मिलने का पताः—
कार्यालय सार्वदेशिक सभा,
बलिदान भवन देहली।

सम्पादकीय

बम्बई मुस्लिम लीग का 'सत्यार्थप्रकाश' पर असत्य आरोपः—

बम्बई प्रान्तीय मुस्लिम लीग की कार्यकारिणी ने अपने ७ जनवरी के अधिवेशन मे जो प्रस्ताव पास किये हैं उनमें से एक का मुख्य अश १३-१-४५ के (Dawn) पत्र में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार निम्न शब्दों में था —

"The 14th Chapter of the 'Satyarth Prakash contains false and baseless attacks against the Holy Quoran, Islam and its Prophet in the most Venomous and Virulent language and wounds the religious feelings of the Musalmans"

अर्थात् सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास में कुरान शरीफ़, और उसके पैगम्बर पर बहुत ही विषमय और भयङ्कर भाषा में आक्रमण किये गये हैं और यह मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं पर आघात पहुचाता है इत्यादि—

सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास के विषय में इस प्रकार का आक्षेप वस्तुत सर्वथा असत्य है। महर्षि दयानन्द जी ने कितने पवित्र भाव से अन्य मतों की बुद्धि विरुद्ध तथा हानिकारक बातों की तरह इस्लाम की भी तक विरुद्ध तथा जगत् की शान्ति में बाधक बातों का खण्डन किया है इस बात को हम अनेक बार इन स्तम्भों में दिखा चुके हैं। तथा इस विशेषाङ्क में प्रकाशित लेखों से न केवल उसकी पुष्टि होती है बल्कि यह भी स्पष्टतया प्रमाणित होता है कि महर्षि दयानन्द की आलोचना कितनी यथार्थ थी और उसका इस्लाम के वर्तमानरूप पर कितना प्रभाव पड़ा है। इस विषय में अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो० महेशप्रसाद जी मौलवी आलिम फाजिल के लेख मे उद्धृत मौलाना हाली की कविता के निम्न भाग की ओर हम अपने मुसलमान बन्धुओं का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करना चाहते हैं जिसमे कहा गया है किः—

'उसे जानते हैं बड़ा अपना दुश्मन,
हमारे करे ऐब जो हम पे रोशन।
नसीहत से नफ़रत है नासेह से अनबन,
समझते हैं हम रहनुमाओं को रहजन।
यही ऐब है सब को खोया है जिसने,
हमें नाव भर कर डुबोया है जिसने॥

अर्थात् जो हमारे दोष हम पर प्रकट करे उसे हम अपना बड़ा शत्रु समझते हैं। हमें शिक्षा से घृणा है और शिक्षकों से विरोध है। हम असली मार्ग दर्शकों को लुटेरा समझते हैं। यही दोष है जिसके कारण हमारा नाश हुआ है इत्यादि। वस्तुत महर्षि दयानन्द जी जैसे पवित्रात्मा और सच्चे मार्ग दर्शक का सबको कृतज्ञ होना चाहिये और उनकी अमर कृति सत्यार्थप्रकाश का अभिनन्दन करना चाहिये न कि उसकी जब्ती का यत्न।

श्रीमती सरोजिनीदेवी का भ्रम जनक वक्तव्य—

श्रीमती सरोजिनीदेवी हमारे देश की एक

सुप्रसिद्ध नेत्री हैं जिन्होंने राजनैतिक क्षेत्र में अपने प्रभावशाली भाषणादि द्वारा अच्छी जागृति उत्पन्न की है। उनकी राजनैतिक क्षेत्र में की हुई सेवाओं का हम अभिनन्दन करते हैं किन्तु धार्मिक विषयों में भी उनका तुलनात्मक अनुशीलन विशाल तथा विश्वसनीय है इस बात को मानने के लिए कोई प्रमाण नहीं है। गत ७ जनवरी को कलकत्ता के मुस्लिम इन्स्टीट्यूट हाल में सर सुहरावर्दी की प्रधानता में भाषण देते हुए उन्होंने इस्लाम—और कुरान की प्रशंसा के जो पुल 'The Holy Quran was great Charter of humanity-a great Magna Charta of freedom As a book of ethics and as a code of conduct she (Mrs Naidu) had not found any other scripture so clear cut and simple Islam gave every man the status of brotherhood and an indivisible code It gave women an economic position in the recognition of their rights in property which was the beginning of self-respect and self reliance." (Dawn 8-1 45) इत्यादि शब्दों में बांधे हैं उनकी पुष्टि कुरान आदि के विवेचनात्मक अनुशीलन से नहीं होती। कुरान में जिस भ्रातृत्व का प्रचार किया गया है वह केवल इस्लाम के मानने वालों तक सीमित है अन्य मतावलम्बियों के साथ मित्रता तक का उसमें निषेध है और काफिरों के लिए तो उसकी आज्ञाएं अत्यन्त कठोर और असहिष्णुता पूर्ण हैं इस बात को अनेक प्रबल प्रमाणों से बड़े २ विद्वानों ने सिद्ध किया है जैसे कि 'सार्वदेशिक' के इस तथा पिछले अनेक अङ्कों दिखाया जा चुका है। तलवार के बल — —ी धर्म के प्रचार का आदेश देने वाले तथा अन्य मतावलम्बियों के लिये इतनी असहिष्णुता का उपदेश देने वाले कुरान को स्वतन्त्रता का घोषणा पत्र कहना सचमुच उपहासास्पद है। यही बात बहु विवाह पर्दा, दासीत्व, आदि का विधान करने वाले इस्लाम के स्त्रियों के स्वतन्त्रता के दावे के विषय में निस्सङ्कोच कही जा सकती है। सर विलियम मूर L. L D D C L Ph D भू० पू० गवर्नर युक्त प्रान्त ने कुरान का विशेष रूप से अध्ययन करके अपना विचार इन स्पष्ट शब्दों प्रकट किया था कि—

Three radical evils flow from the faith (Islam) in all ages and in every country and must continue to flow so long as the Koran is the standard of belief, first polygamy, divorce and slavery strike at the root of public marals, poison domestic life and disorganise society, while the veil removes the female sex from its just position and infinence in the world

Second—Freedom of thought and private judgment are crushed and annihilated Toleration is unknown and the possibility of free and liberal institutions fore closed The Sword of Mohammed and Koran are the most stub-born enemies of civilisation liberty and truth which the world has yet known." (The life of Mohammed by Sir William Muir P 507)

अर्थात् तीन मौलिक बुराइयाँ इस्लाम के

कारण सब कालों और देशों में रही हैं और जब तक कुरान विश्वास का मूलाधार है विद्यमान रहेंगी। (१) बहु विवाह, तलाक और गलामी सार्वजनिक सदाचार पर कुठाराघात करते हैं, पारिवारिक जीवन को विषमय बनाते हैं और समाज को अव्यवस्थित करते हैं जबकि परदे की प्रथा संसार में अपनी उचित स्थिति और प्रभाव से स्त्री जाति को वञ्चित करती है। (२) विचार और निर्णय की स्वतन्त्रता को इस्लाम में सर्वथा कुचला और नष्ट भ्रष्ट किया जाता है। इसमें सहिष्णुता क सर्वथा अभाव है और स्वतन्त्र तथा उदार संस्थाओं का द्वार इसमें बिल्कुल बन्द है। मुहम्मद की तलवार और कुरान संसार में सभ्यता स्वतन्त्रता और सत्य के सबसे कट्टर शत्रु हैं।

कुरान के अंग्रेजी में सुप्रसिद्ध अनुवादक मि० पामर (E Palmer) ने अपने अनुवाद की भूमिका मे ठीक ही लिखा है कि

One of the greatest blots on Islam is, that it keeps the woman in a state of degradation and there fore effectively prevents the progress of any race professing the religion ' (Palmers translation of the qnoran in the Sacred Books of the East Series P 6)

अर्थात् इस्लाम पर सबसे बडे कलङ्कों में से एक यह है कि यह स्त्री को एक गिरी हुई अवस्था में रखता और इस प्रकार अपने अनुयायियों की उन्नति में प्रबल बाधा उपस्थित करता है। इत्यादि

श्रीमती सरोजिनी देवी का बिना विशेष अध्ययन किये हुए इस्लाम की प्रशंसा के पुल बांध देना भ्रमजनक और अनुचित है। गुण को गुण और दोष को दोष बतलाना ही सच्ची स्तुति है।

आर्यजगत् के एक उज्ज्वल रत्न का अवसान

गुरुकुल विश्वविद्यालय काङ्गड़ी के सुयोग्य स्नातक और आर्य जगत् के एक उज्ज्वल रत्न श्री प० चन्द्रगुप्त जी वेदालङ्कार भू०पू० (कार्यालय मन्त्री अखिल भारतीय हिन्दू महासभा) के गत २२ जनवरी को पटना में लगभग ३२ वर्ष की आयु में देहावसान का समाचार समस्त आर्य जगत् में बडे खेद के साथ सुना जायगा। स्व० वेदालङ्कार जी ने इस छोटी सी आयु में ही अपनी अद्भुत भाषण और लेख शक्ति, योग्यता और सच्ची लगन के कारण सर्वत्र बड़ी अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली थी तथा अनेक स्थानों पर वे हिन्दू युवक हृदय सम्राट् आदि नामों से पुकारे जाने लगे थे। उनके अन्दर आर्य जाति की वर्तमान शोचनीय अवस्था को देखकर उसके उद्धारार्थ एक प्रचण्ड ज्वाला जला करती थी। ऐसे होनहार आर्ययुवक का ३०, ३२ वर्ष की आयु में हमसे विदा हो जाना सचमुच अत्यधिक खेदजनक है। दिवगत उच्च आत्मा की सद्गति के साथ हम भगवान् से प्रार्थना करते है कि उनकी दया से ऐसे उत्साही, कर्तव्य परायण युवको बहुत बड़ी संख्या में उत्पन्न हों तथा उनके प्रयत्नों में सफलता हो। स्व० प० चन्द्रगुप्त जी के सब सम्बन्धियों और मित्रों के साथ हम आर्य जगत् की ओर से हार्दिक समवेदना प्रकाशित करते हैं।

धर्म रक्षार्थ आह्वान आर्यजनता तय्यार रहे-

एक महत्वपूर्ण वक्तव्यः—

कार्य समिति अथवा सत्यार्थ प्रकाश रक्षा-

समिति के अध्यक्ष माननीय श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त ने १ फरवरी को एक प्रेस वक्तव्य में घोषित किया कि कार्य समिति की बैठक ८ फर्वरी को मध्यान्ह देहली (श्रद्धानन्द बलिदान भवन) में होगी जिसमें सिन्ध सरकार द्वारा सत्यार्थ-प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर लगाई गई पाबन्दी को हटाने के लिये अब तक किये गये कार्य का सिंहावलोकन किया जायगा। क्योंकि प्रतिबन्ध को हटवाने के अन्य प्रयत्न विफल रहे हैं इसलिये आर्य समाजी बहुत बड़ी सख्या में सत्याग्रह के लिये तय्यार हैं। सत्याग्रह के लिये तय्यार व्यक्तियों को कहा गया है कि वे जेल-जीवन की कठिनाइयों के अभ्यास के लिये तपस्यामय जीवन व्यतीत करें। उपर्युक्त ८ फरवरी की कार्य समिति की बैठक में निश्चित कार्य क्रम निर्धारित किया जाएगा।"

इस वक्तव्य पर हमें कुछ टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं। आर्य जनता को अपने कर्तव्य की सूचना विज्ञप्तियों द्वारा भेजी जाती रही है और हमारा विश्वास है कि वह अपने पवित्र धर्मग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रक्षार्थ सब प्रकार के त्याग और बलिदान के लिये तय्यार है तथा नेताओं के आदेश की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रही है। भगवान् इस पवित्र आन्दोलन की सफलता में हमारे सहायक हों यही हमारी प्रार्थना है।

धार्मिक परीक्षाएँ—

हमें इस बात का हर्ष है कि भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषत् प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलनादि के द्वारा जैसे कि गत दिसम्बर मास सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री गङ्गाप्रसाद जी एम. ए. के सभापतित्व मे देहली में हुआ आर्य कुमारों में धार्मिक जागृति उत्पन्न करने का प्रशसनीय यत्न कर रही है और उसके द्वारा आयोजित सिद्धान्त रत्न, सरोज, भास्कर, शास्त्री आदि धार्मिक परीक्षाएँ बड़ी लोकप्रिय होती जा रही हैं। हम चाहते हैं कि अधिक से अधिक कुमार कुमारियां और युवक युवतियां इन धार्मिक परीक्षाओं में सम्मिलित होकर सत्यार्थ प्रकाशादि धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय से लाभ उठाएँ।

दलितोद्धार का अशुद्ध मार्ग—

अस्पृश्यता (अछूतपन) वर्तमान हिन्दू धर्म पर घोर कलङ्क है जिसके निवारणार्थ प्रयत्न करना प्रत्येक धर्म प्रेमी का कर्तव्य है। इस विषय में दलितवर्ग के उद्धारार्थ जो जो भी महानुभाव प्रयत्न कर रहे हैं वे अभिनन्दनीय हैं किन्तु हमें यह देख कर दुःख होता है कि डा० अम्बेदकर आदि दलित-वर्ग के कई नेता उन्हें बार २ हिन्दू-धर्म के त्यागने का उपदेश देते और इसी में उनके उद्धार का मार्ग समझते हैं। वेदादि सत्य शास्त्र अस्पृश्यता की निन्दनीय पद्धति का कहीं समर्थन नहीं करते। वे मनुष्य मात्र की अन्मत, समानता और स्वतन्त्रता का उपदेश करते हैं। अत उनका निष्पक्षपात अनुशीलन किये बिना डा० अम्बेदकर इत्यादि का उनकी निन्दा में तत्पर हो जाना सर्वथा अनुचित है। हम चाहते हैं कि दलित वर्ग के सब बन्धु आर्य धर्म में दीक्षित होकर अपनी यथार्थ उन्नति में अग्रसर हों। अपने वर्ग में प्रचलित बुराइयों को दूर कर के वे उन्हें उत्तम शिक्षादि द्वारा सब प्रकार से उन्नत करें। आर्य (हिन्दू) धर्म का परित्याग करके ईसाई मुसल्मान बनने से उनका वास्तविक उद्धार सम्भव नहीं है इस बात को उन्हें अनुभव करना चाहिये और अपनी सर्वतो मुखी उन्नति

का साधक भावी कार्यक्रम निर्धारित करना चाहिये। इस कार्य में उनकी सहायता करना प्रत्येक उदार आर्य (हिन्दू) का धार्मिक कर्तव्य है। दलित नेतृ सम्मेलन को जो देहली में १७–१८ फवरी को हो रहा है इसी दिशा में प्रयत्न करना चाहिये ॥

आर्य भाषा (हिन्दी) की क्रियात्मक रक्षाः–

राष्ट्र की उन्नति के लिये एक सर्व सामान्य भाषा का होना अत्यावश्यक है और भारतवर्ष में वह भाषा संस्कृत निष्ठ हिन्दी भाषा ही हो सकती है जिसे स्वनाम धन्य महर्षि दयानन्द जी ने आर्य भाषा के नाम से पुकारा और अपनी मातृ भाषा गुजराती होते हुए भी उसमें अपनी अमर कृति 'सत्यार्थप्रकाश' को लिखा था तथा यह नियम बनाया था कि प्रत्येक आर्य को उसका अभ्यास अवश्य करना चाहिये और उसमें अपना समस्त पत्र व्यवहारादि करना चाहिये। प्रत्येक आर्य तथा राष्ट्र प्रेमी को इस राष्ट्र-भाषा हिन्दी को अपने सब व्यवहारों में अपना कर इसकी क्रियात्मक रक्षा करनी चाहिये अन्यथा रेडियो और डाक विभाग की नीति को केवल निन्दा करने से कोई लाभ नहीं हो सकता।

नारायण अभिनन्दन ग्रन्थ

५ जून से १२ जून १६४५ तक रामगढ़ जिला नैनीताल में श्री नारायणाश्रम रजत जयन्ती महोत्सव मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध नेता श्री महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज को सेवा में सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की ओर से अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का निश्चय किया गया है। सभा ने यह कार्य प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री एम ए० प्रिन्सिपल डी० ए० वी० कालेज लखनऊ को सौंपा है। इस कार्य के लिये उन्होंने एक निम्न सम्पादक मण्डल नियत कर दिया हैः—

१. श्री महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री, लखनऊ।

२ श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति देहली।

३. श्री पं० विश्वम्भर सहाय प्रेमी मेरठ।

इस ग्रन्थ में श्री स्वामी जी महाराज का परिचय, उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटना, प्रमुख विद्वानों के स्वामीजी के प्रति उद्गार, के अतिरिक्त आर्य समाज के धार्मिक तथा सामाजिक काय, प्रमुख संस्थाओं का विस्तार आदि विषय होंगे।

सार्वदेशिक सभा ने आर्य समाज क्या है और उसने क्या किया नामक पुस्तक के लिये जो सामग्री एकत्र की है जिसमें आय समाज के कार्य के तथा वैदिक सिद्धान्तों पर उत्तमोत्तम लेखों का संग्रह सम्मिलित है, उसको भी इसी ग्रन्थ में शामिल करनेका सभा ने निश्चय किया है।

सुधाकर एम० ए०
मन्त्री,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

दान सूची

सत्यार्थ प्रकाश रक्षा निधि मास जनवरी ४५

बिहार प्रान्त

५) श्री प० मुकरन्दी शर्मा कुन्दी (शाहबाद)
५३८४॥ गतयोग

५३८९॥)

सयुक्त प्रान्त

१०१) श्री अलखधारीजी स्पिनिंग और वीविंग मिल्स मुरादाबाद
१५) श्री डा० मथुराप्रसाद जी सक्सेना आ० स० सीपरी बाजार झांसी कन्या विवाह उपलक्ष्य में
१०) श्री मन्त्री जी आ० स० मुजफ्फराबाद (सहारनपुर)
६८) श्री मन्त्रीजी आ० स० चौक इलाहाबाद
१॥।=) श्री महेशचन्द्रजी गुप्त फरीदनगर(मेरठ)
१०) श्री पुष्पलता देवीजी सुपुत्री श्री रामस्वरूप जी गुप्त प्रधान आ० स० बढापुर (बिजनौर)
१०) श्री मन्त्रीजी आ० स० लोको क्वार्टर (गोरखपुर)
५) श्री शिवचरणजी बिजनौर
२५) श्री मन्त्रीजी आ० स० कैन्ट्र० लखनऊ

२४५॥=) योग
७४६६॥) गत योग

७७१२॥=)

राजस्थान प्रान्त

१९७६) गत योग

मद्रास प्रान्त

२१) श्री मन्त्रीजी आ० स० काकल (S K)
द्वारा श्री मजुनाथ जी आर्य
३०) श्री मन्त्री जी आ० स० सन्वाखिगुड्डे मगलौर द्वारा श्री मजुनाथ जी आर्य
३४) श्री मन्त्री जी आ० स० कार्कल (S K)
२५) श्री रामप्पा तिगलाया उडुपी (S K)

११०) योग
२४८॥) गत योग

३५८॥) योग

बम्बई प्रान्त

१०००) श्री राजरत्न नान जी कालीदास जी मेहता यू० रोड पोर बन्दर द्वारा श्री प० आनन्द प्रिय जी मन्त्री आर्य कुमार महा सभा बड़ौदा
१९०) श्री मन्त्री जी आर्य कुमार सभा बड़ौदा द्वारा श्री पं० आनन्दप्रिय जी मन्त्री आ० कु० महासभा बड़ौदा।
२९४) श्री मन्त्रीजी आ० स० फोर्ट बम्बई
११० श्री मन्त्री जी आ० कु० महासभा करौली बाग बड़ौदा।
३५) श्री बाबूसिह दगलसिह जी आर्य कारजा अकोला

१५९९)
२८६९) गत योग

४४६८)

मध्यप्रदेश

२२४) श्री मन्त्री जी आ० स० रेलवे स्टेशन बिलासपुर

४) श्री बी० जेह० वड़गूजर जी आमलनेर
२५) श्री मन्त्री जी आ० स० कटनी सी० पी०

२५३) योग
४२४ गतयोग

६७७॥)

पजाब व देहली प्रान्त

२) श्री भारत भूषण जी बलिदान भवन देहली।
४०) श्री मन्त्री जी आ० स० तीमारपुर देहली द्वारा श्री हेमचन्द्र कोषाध्यक्ष जी
३००) श्री मन्त्रीजी आ० स० हनुमान रोड नई देहली
५००) श्री मन्त्री जी आ० समाज करौलबाग देहली
२९=) श्री मन्त्रीजी आ० स० दूधीचक पो० गुरदासपुर।
५०) श्री मन्त्री जी आ० स० सीवा क्वेटा।
६४) श्री मन्त्री जी आ० स० सनौर (पटियाला)
११) श्री मन्त्री जी आ० स० मीठा टिवाना (पजाब)
१०) श्री मन्त्री जी आ० स० जड़ियाला (पजाब)
२००) श्री मन्त्री जी आ० स० गुरु० सैकशन पेशावर शहर।
७) श्री मन्त्री जी आ० स० कोटनिका (पजाब)

१२१३=) योग
१६१४॥) गत योग

२८७७॥=) योग

बंगाल प्रान्त

५१) श्री मन्त्री जी आ० स० खड़गपुर (बगाल)
१६०) गत योग

२११) योग

हैदराबाद राज्य

१५०) श्री मन्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद स्टेट।

१६८) गत योग

४१८) योग

सिन्ध प्रान्त

५) गत योग विदेश
७५०) गत योग

अ० भा० आर्य सम्मेलन

४०००।=) गत योग
८) विविध

३६२७।) योग
२५१७८=) गत योग

२८८०५।=) सर्व योग

सब दाताओं को सभा की ओर से धन्यवाद। शेष आर्य समाजों ओर आर्य प्रतिनिधि सभाओं को भी विशेष प्रयत्न करके २लाख रु०की राशि की शीघ्र पूर्ति करदेनी चाहिये—मन्त्री सार्वदेशिक सभा

दान सूची

आय समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दान मास जनवरी सन् १९४५

२३॥) श्री मन्त्री जी आ० स० चोक इलाहबाद।
११०४।=) गत योग
११२८=) योग

जिन समाजों ने अपना भाग नहीं भेजा है उन्हें अब अवश्य भेज देना चाहिये।

दान सूची

बगाल पीड़ित सहायता मास जनवरी सन् १९४५

१५) श्री मन्त्री जी आ० स० चौक इलाहाबाद।

दान सूची मास जनवरी सन् १९४५

वेद प्रचार

५) श्री वि० नरसिहराव जी कासर गौड़ (S K) विवाह स स्कार में, द्वारा श्री मजुनाथ जी आय
५।) श्री लक्ष्मण कनोजी जी मिस्त्री वल्लारपुर
३३) श्री मन्त्री जी आ० स० बूडेवाला (मुलतान)
१३॥।) श्री नायक महीपालसिह जी II Q coy 8 | 1 राजपूत रेजीमेन्ट C | o No 10 A. B P O India.
२—) श्री दयालुराम जी परागपुर (काङ्गड़ा)
५) श्री घासीराम जी........ ....
१५) श्री एस० टेकचन्द्र घनश्यामदास काटिन फैक्टरी डाहरकी (सिन्ध)

श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा

"चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली में मुद्रित।

नाम पुस्तक	लेखक व प्रकाशक	मूल्य
(१) वैदिक सिद्धान्त स०	(सार्व० सभा)	१)
(२) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका बड़ा साइज	,	१।)
(३) आर्याभिविनय बड़ा साइज	,,	।-)
(४) संस्कृत सत्यार्थप्रकाश अ०	,,	॥)
(५) विदेशों में आर्य समाज		॥)
(६) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर	,	१।)
(७) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श	,,	१॥)
(८) समस्त समाजों की सूची	,,	॥)
(९) सार्वदेशिक सभा का इतिहास	,, अ०	२)
(१०) बलिदान	,,	॥)
(११) आर्य डायरेक्टरी	,, अ०	१।)
(१२) आर्य वीर दल शिक्षण शिविर	,,	=)
(१३) आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण	प इन्द्रजी	।=)
(१४) यमपितृ परिचय पं० पियरत्न जी आर्य		२)
(१५) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र	,,	२)
(१६) वैदिक सूर्य विज्ञान	,	=)
(१७) वेद में असित् शब्द	,,	-)।
(१८) ऋग्वेद में देवकामा	,,	-)
(१९) वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां	,	१)
(२०) विमान शास्त्र	,,	।=)॥
(२१) मातृत्व की ओर श्री प० रघुनाथप्रसाद जी पाठक	अ० १।), स० १॥)	
(२२) आर्य्य जीवन गृहस्थ धर्म	,,	।=)
(२३) आत्म कथा	नारायण स्वामी जी	२।)
(२४) मृत्यु परलोक	,,	।।=)
(२५) उपनिषद्	ईश ।=) प्रश्न ।=)	
मुण्डक =)॥, माण्डूक्य -)।, बृहदारण्यक २)		
(२६) वैदिक सन्ध्या रहस्य	,,	=)॥
(२७) सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लास में उद्धृत कुरान की आयतों का देवनागरी में उल्था	श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी	॥)
(२८) कुरान में अन्य मतावलम्बियों के लिए कुछ कठोर उत्तेजक वाक्यों का संग्रह	,,	।=)
(२९) हजहारे हकीकत श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य		॥।=)
(३०) भक्ति कुसुमाञ्जलि श्री प० धर्मदेव जी वि०वा०		॥)
(३१) त्रिदेव निर्णय	श्री प० शिवशङ्कर जी	१)
(३२) भूमिका प्रकाश	श्री द्विजेन्द्रनाथ जी	१॥)
(३३) कुमुदनी चन्द्र अनु० श्री प० मेधावतजी		२)
(३४) वेद और गोमेध ... सुन्दरलाल जी		≋)
(३५) बहिनों ... जी कविरत्न		१)
(३६) ध्यान ... नन्द जी		।-)
(३७) दया... त्यागी		
(३८) सत्यार्थ ... वेदालङ्कार तथा श्री उदय वीर"		।=)
(३९) हमारे पर श्री निरञ्जनलाल जी गौतम		॥=)
(४०) भारतवर्ष में जाति भेद	,	।)
(४१) आर्यवीर दल लेखमाला श्री ओमप्रकाश जी		१)
(४२) Crucifixion by an eye witness (... Sabha)		।-)
(४३) Truth and Vedas Late Rai Thakur Datt Dhawan		=)
(४४) Truth, Bed-Rock of Aryan (		॥)
(४५) Vedi...		१।)
(४६) Da... rya (Shri		॥)
(४७) Co... Isho		।)
(४८) V... (T		=)
(४९) ...glish) by ...ji M A		
(५०) ...a Prakash		२॥)
(५१) ...or of (...i Upadhyaya)		१)
(५२) ...ndia		॥)
(५३) Ecclesia Divina (Swami Bhumanand Saraswati)		५)
(५४) Aryasmaj and Theosophical Society (Shri Shyam Sunderlal Vakil)		≋)


ओ३म्
कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सार्वदेशिक

सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दशसमुल्लासाङ्क (२)

विषय सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष २० | मार्च १९४५ ई० | फाल्गुन २००१ | दयानन्दाब्द १२१ | अङ्क १४

* वैदिक प्रार्थना

ओ३म् त्वया वय मघवन्निन्द्र शत्रूनभि ष्याम महतो मन्यमानान् । त्व त्राता त्वमु नो वृधे भूर्विद्यामेष वृजन जीरदानुम् ॥ ऋ० १ । १७८ ५

शब्दार्थ—(मघवन इन्द्र) हे परमैश्वर्य सम्पन्न प्रभो । (वयम्) हम भक्त (त्वया युजा) तेरी सहायता से महत मन्यमानान्) अपने को बहुत बडा मानने वाले (शत्रून्) शत्रुओं को भी (अभि ष्याम) पराजित करदें । (त्वम्) तू (न) हमारा (त्राता) रक्षा करने वाला है (त्वमु) तू ही (न वृधे भू) हमें सब तरह से बढ ने वाला है । हम (इषम्) उत्तम प्राकृतिक और आध्यात्मिक अन्न (वृजनम्) बल और (जीरदानुम्) उत्तम जीवन को (आविद्याम) सब ओर से प्राप्त करें ।

विनय—हे परमेश्वर । आप सब शक्तिमान् हैं हम आपको अपना परम मित्र और सहायक मानते हुए काम क्रोध, लोभ मोह आदि आन्तरिक और बाह्य दुष्ट शत्रुओं पर जो अपने को बड़ा प्रबल समझते हों विजय करने मे समर्थ हो सकें आप ही हमारे रक्षक हैं । आप ऐसी कृपा करें कि कि हम अपनी शारीरिक मानसिक आत्मिक सब प्रकार की उन्नति करने मे सफल हों और हमारा जीवन, शक्ति सम्पन्न,परोपकार परायण और पवित्र हो । दुष्ट लोग हमारे शुभकार्यों मे बाधा डालने मे कभी समर्थ न हो सकें ऐसी शक्ति आप हमें प्रदान करें ।

वेदामृत

संकल्प शक्ति

(१) ओ३म् अध्यक्षो वाजी मम काम उग्रः कृणोतु मह्यमसपत्नमेव। विश्वे देवा मम नाथ भवन्तु सर्वे देवा हवमायन्त म इमम् ॥ अथर्व ९।२।७

(२) ओ३म् अवधीत् कामो मम ये सपत्ना उरु लोकमकरन् मह्यमेधतुम्। मह्यं नमन्तांप्रदिशश्चतस्रो मह्यं षडुर्वीर्घृतमावहन्तु ॥ अथर्व ९।२।११

शब्दार्थ—(१) (मम) मेरा (काम) सकल्प (अध्यक्ष) इन्द्रियादि का स्वामी प्रेरक (वाजी) ज्ञान मय और (उग्र) अत्यन्त प्रबल है वह (मह्यम् असपत्नम् एव कृणोतु) मुझे शत्रु रहित कर देवे। (विश्वे देवा) सब दिव्य गुण और भाव (मम नाथ भवन्तु) मेरे स्वामी वा रक्षक हो जाए (सर्वे देवा) सब दिव्य गुण और सत्यनिष्ठ विद्वान् (मे) मेरी (इम हवम्) इस पुकार को सुन कर (आयन्तु) यहां आ जाए।

(२) (मम काम) मेरे सकल्प ने (ये मे सपत्ना) जो मेरे काम क्रोधादि शत्रु हैं उनका (अवधीत्) वध कर दिया है और (मह्यम्) मुझे (एधतुम्) वृद्धि के लिये (उरु लोकम् अकरत्) विस्तृत क्षेत्र दे दिया है। अब (चतस्रः प्रदिश) चारों दिशाए (मह्य नमन्ताम्) मेरे आगे झुक जाए (षट् उर्वी) छहों दिशाए भी (मह्यम्) मेरे लिए (घृतम्) तेज को (आवहन्तु) धारण कराए अथवा मेरे अभीष्ट की पूर्ति करने वाली हों।

इन मन्त्रों में प्रबल सकल्प की दिव्य शक्ति का प्रतिपादन किया गया है। आत्म ज्ञान के द्वारा जिस सकल्प को दिव्य और प्रबल बना दिया गया हो, जिस में अपवित्रता का लेश मात्र भी न हो ऐसा शुद्ध सकल्प बड़ा ही शक्ति शाली होता है। उसमें काम क्रोध लोभ मोह ईर्ष्या द्वेषादि आन्तरिक शत्रुओं को पराजित करने का सामर्थ्य रहता है। इस लिये प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह आत्मा के ज्ञान को शास्त्रश्रवण मनन, निदिध्यासन तथा सत्सङ्ग आदि द्वारा प्राप्त करके अपनी सकल्प शक्ति को जगावे और उसकी सहायता से शत्रु रहित निर्भय और निश्चन्त होने का यत्न करे। निर्भयता, चित्तशुद्धि, ज्ञान, प्रेम, सत्य, अहिंसा, सयम, धैर्य आदि दिव्य गुणों को अपने अन्दर स्थापित करके सब अशुभ विचारों को चित्त से सर्वथा हटा देना चाहिये और सत्य निष्ठ विद्वानों की सङ्गति में रहकर उनके उपदेश से लाभ उठाना चाहिये ऐसा करने से सब अपवित्रताए दूर होकर दिव्य आत्मिक शक्ति जागृत होती है।

मनुष्य को अपने को निर्बल नहीं समझना चाहिये। उसकी आत्मा के अन्दर बड़ी प्रबल शक्ति विद्यमान है केवल उसे उद्बुद्ध करने की आवश्यकता है। ज्ञान, ध्यान, मनन और सत्सङ्ग द्वारा उसे जागृत करके मनुष्य ऐसा श्रेष्ठ बन सकता है कि सब प्राणी उसके उत्तम गुणों से प्रभावित होकर उसके आगे नम्र हो जाए तथा उसकी शुभ इच्छाओं की पूर्ति में सहायक हों। जब मनुष्य अपनी आत्मिक शक्ति को इस प्रकार बढ़ा लेता है तो ससार की कोई शक्ति उसे भयभीत नहीं कर सकती, न उसे कोई दबा सकता है। हम सबको सर्वशक्तिमान् परमेश्वर का स्मरण और ध्यान कर के ऐसी उत्तम दिव्य शक्ति को प्राप्त करने का यत्न करना चाहिये॥

महिला जगत्

(अपने प्रति)

[लेखिका—कुमारी कृष्णादेवी जी 'विदुषी' 'सिद्धान्त शास्त्री' कालपी]

नित नवीनोत्साह ले मृदु
मै चली ही जा रही हूँ ॥

छा रहा पथ में निविड़ तम
सब तरफ इक करुण निस्वन ।
मनुजता का ह्रास लख कर
व्यथित हैं, यह प्राण निर्मम ॥

किन्तु भय क्यों हो मुझे, जब—
साथ साहस है, सुमति है ।
रुदन अरु नैराश्य कैसा
कर्म-रत उल्लसित गीति है ॥

सीख मुझे क्या चाहिए,
जब स्नेह है 'पाथेय' मेरा
और कुछ पाना नहीं इक—
—'सत्य' ही ध्रुव ध्येय मेरा ॥

मन बने बस दीप माला
बाह्य अन्तर हो उजाला
सद्-असद् पहचान होवे
दूर सब अज्ञान होवे ।

गीत अब से यही जीवन—
—गान कितने गा चुकी हू ।
नित नवीनोत्साह ले मृदु
मैं चली ही जा रही हूं ॥

सत्यार्थप्रकाश के चतुर्दश समुल्लास का तुलनात्मक अनुशीलन

महर्षि दयानन्द और इस्लाम के अन्य समालोचक

(३)

(ले०—प० धर्मदेव विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक सभा)

कुरान में परस्पर विरोध—

महर्षि दयानन्द जी ने 'ऐ लोगो निश्चय तुम्हारे पास सत्य के साथ खुदा की ओर से पैगम्बर आया बस तुम उनपर ईमान लाओ। अल्लाह माबूद अकेला है ॥' कुरान म० सि० ६ सू० ४ आयत १६७-१६८ इन आयतों की समीक्षा करते हुए (देखो स० ६२) लिखा है कि 'जब अल्लाह एकदेशी है व्यापक नहीं तभी तो उसके पास से पैगम्बर आते जाते हैं तो वह ईश्वर भी कभी नहीं हो सकता। कहीं सर्वदेशी लिखते हैं कहीं एक देशी इस से विदित होता है कि कुरान एक का बनाया नहीं किन्तु बहुतों ने बनाया है।" फिर समीक्षा म० ७५ में महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि ='कहीं २ कुरान में लिखा है कि बड़ आवाज से अपने मालिक को पुकार और कही २ धीरे २ ईश्वर का स्मरण कर अब कहिये कौनसी बात सच्ची ? और कौनसी बात झूठी है। जो एक दूसरी बात से विरोध करती है वह प्रमत्त गीत के समान होती है यदि कोई बात भ्रम से विरुद्ध निकल जाए उसको मानले तो कुछ चिन्ता नहीं "

इसी तरह अन्य कई स्थलों में महर्षि दयानन्द ने कुरान मे पाई जाने वाली परस्पर विरुद्धता का निर्देश किया है जिस पर कट्टर मुसलमान बहुत अधिक क्रोध और अप्रसन्नता प्रकट करते हैं। पर इस में नाराज होने की कोई बात नहीं है। मुसलमान बन्धुओं को गम्भीरता से इन परस्पर विरुद्ध वचनों का विचार करना चाहिये इसी दृष्टि से महर्षि दयानन्द जी ने यह समीक्षा की थी। अब इस विषय में कुछ सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वानों के लेखों को देखिये

(२१) डा० डी० बो० मैक्डानल्ड डी० डी० (Dr D B Macdonald D D) नामक विद्वान् ने Development of Muslim Theology and Jurisprudence' नाम की पुस्तक मे कुरान के परस्पर विरोधों का निम्न शब्दों मे प्रतिपादन किया है —

"A revelation proved too wide or too narrow, or left out some important possibility Then there came another to supplement or correct, or to set the first quite aside Mohammed has no scruples about progressive revelation as applied to himself Thus through these interpretative acts, as we may call them, many flat contradictions have come into the Quran "

(Development of Muslim Theology and jurisprudence by D B Macdonald D D P 54)

अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान वा इल्हाम कभी बहुत अधिक विशाल और कभी बहुत सकुचित सिद्ध होता था या कभी कोई आवश्यक सम्भावना छूट जाती थी। तब उसका स्थान लेने या उसको ठीक करने अथवा उसको रद्द करने के लिये दूसरी आयत उतरती थी। मुहम्मद को इस प्रकार उन्नतिशील इलहाम को अपने विषय में मानने में कोई

संकोच न था। इन व्याख्यात्मक कार्यों द्वारा—जैसे कि हम कह सकते हैं—बहुत स सुस्पष्ट परस्पर विरोध कुरान मे आ गये हैं। क्या इस से महर्षि दयानन्द की आलोचना का पूर्णतया समर्थन नहीं होता ?

(२२)Encyclopedia of Islam Vol 1 मे 'Allah पर जो लेख है उस में भी ईश्वरादि विषयक कुरान की परस्पर विरुद्ध कल्पनाओं पर उत्तम प्रकाश डाला गया है। वहा लिखा है—

'In the Koran Mohammed develops quite naively two separate views of Allah's working one rigidly predestination and the other leaving scope for free will This was due to a real confusion in his own mind (Encyclopedia of Islam Vol I P 305)

अर्थात् कुरान में मुहम्मद ने बड़ी सरलता से अल्लाह के कार्य करने के विषय मे दो पृथक् २ विचार प्रकट किये हैं एक तो बिल्कुल भाग्य वा पूर्व निश्चय पर आश्रित और दूसरा जिसमे स्वतन्त्र इच्छा के लिये कुछ अवकाश दिया गया है। इसका कारण मुहम्मद के अपने मनमें इस विषयक भ्रम अथवा गड़बड़ का होना है।

जिस प्रकार महर्षि दयानन्द ने अल्लाह व ईश्वर के विषय में कुरान की परस्पर विरुद्धता का निर्देश किया है ऐसा ही इस लेख के लेखक डा० मैक्डोनल्ड ने किया है। वे लिखते हैं—

"The face of Allah remains and also His throne (Arsh) He descends to the lowest heaven and cries Is there a suppliant ? Is there a seeker of forgiveness ? (Kitab Altawid in Sahih of Bukhari IV.179) At last Allah will take the earth on one of His fingers and the heaven on another and cry aloud "I am the King Where are the Kings of the earth ?

He will press His foot in hell, so as to make room there His qualities become still more flatly contradictory There is the monstruous tradition – These to heaven, and I care not and these to hell and I care not It is significant that it is precisely on such questions of salvation that the most glaring contradictions appear At one point the recital of the first half of the creed and a minimum of works is Judged enough and at another 999 men out of 1000 shall go to the fire

(Encyclopedia of Islam Vol 1 P 305)

अर्थात् अल्लाह के मुख और उसके तख्त का बार २ वर्णन आता है। वह सब से निचले स्वर्ग पर उतरता और चिल्लाता है क्या कोई मागने वाला है ? क्या कोई क्षमा प्रार्थी है ? अन्त में अल्लाह पृथिवी को अपनी एक अगुलि पर और आकाश को दूसरी पर उठा लेगा और चिल्लाएगा मै बादशाह हू। पृथिवी के बादशाह कहा हैं ?

वह अपना पैर नरक में रक्खेगा वहाँ जगह बनाने के लिये। उस (अल्लाह) के गुण बिल्कुल परस्पर विरुद्ध बन जाते हैं। एक भयङ्कर उक्ति प्रसिद्ध है कि 'इनको मैं स्वर्ग मे डालता हूँ इसकी मुझे कुछ पर्वाह नहीं। इनको मैं नरक में डालता हूँ इसकी मुझे कुछ पर्वाह नहीं। यह विशेष

महत्वपूर्ण बात है कि ठीक ऐसे ही मुक्ति से सम्बन्ध रखने वाले आवश्यक विषयों पर अत्यधिक परस्पर विरोध है। किसी स्थान पर केवल कलमे के अर्ध भाग को उच्चारण और कम से कम काम को ही पर्याप्त माना गया है और दूसरे स्थान पर लिखा है कि १००० में से ९९९ व्यक्ति नरक की अग्नि में डाले जाएँगे।

इस उदाहरण में कुरान के अनेक वचनों की परस्पर विरुद्धता का स्पष्ट निर्देश है जिससे महर्षि दयानन्द की समालोचना का पूर्णतया समर्थन होता है साथ ही कुरान का खुदा एकदेशी है सर्वव्यापक नहीं इस बात की भी पुष्टि होती है जिसके विषय में महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि "यदि खुदा अर्शरूप एक स्थान में रहता है तो वह सवशक्तिमान् और सर्वव्यापक नहीं हो सकता।" (देखो समीक्षा स० ९४)

(२३) महर्षि दयानन्द जी ने 'वल् मलकु अला अर्जाइहा, व य मिलु अर्श रब्बिक फ़ौकहुम यौमइज़िन समानियतुन" (कुरान सूरत ६९ आ० १७) अर्थात् 'फरिश्ते होंगे ऊपर किनारों उसके और उठाएँगे तख्त मालिक तेरे का ऊपर अपने उस दिन आठ जन"

इस आयत की समीक्षा में लिखा है 'अब कुरान का खुदा शरीरधारी होने में कुछ सन्दिग्ध न रहा क्यों कि तख्त पर बैठना, आठ कहारों से उठवाना बिना मूर्तिमान् के कुछ भी नहीं हो सकता? जब वह मूर्तिमान् है तो एकदेशी होने से सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् नहीं हो सकता और सब जीवों के सब कर्मों को नहीं जान सकता।" (देखो समीक्षा स० १४५)

मैजर रौबर्ट औसबौर्न (Major Robert Osborn) नामक विद्वान् ने 'Islam under the Khalifs of Baghdad' नामक की सुप्रसिद्ध पुस्तक के पृ० २५७ में इस्लाम में ईश्वर की मनुष्यवत् कल्पना का उल्लेख करते हुए लिखा है —

'Anthromorphism of the wildest kind became identified with sincere and genuine belief in Islam God, it was affirmed, had a body and limbs This as usual, was supported by a Tradition, in which the Prophet was reported to have said 'My Lord came to meet me, and streched forth His hands to meet me and looked into my face and laid His hands between my shoulders, so that I felt the coolness of His finger tips" "God sat upon a throne, in the literal meaning of the words"

(Islam under the Khalifs of Baghdad by Major Robert Osborn P. 257)

अर्थात् बिल्कुल जंगली प्रकार की ईश्वर की मनुष्यवत् कल्पना इस्लाम में सच्चे विश्वास के साथ सम्मिलित हो गई। यह कहा गया कि खुदा का शरीर है और उसके अवयव हैं। इसका समर्थन अन्य विषयों की तरह इस जनश्रुति द्वारा किया गया जिसमें पैग़म्बर मुहम्मद के मुख से कहलाया गया था कि 'मेरा मालिक (अल्लाह) मुझे मिलने आया, उसने मेरा स्वागत करने को हाथ पसारे, मेरे मुख की ओर देखा और अपने हाथों को मेरे कन्धों के बीच में रक्खा जिससे कि उसकी अंगुलियों के अग्रभाग की शीतलता का मैंने अनुभव किया।

ईश्वर (खुदा) एक तख्त पर बैठा (बिल्कुल शाब्दिक अर्थ में) इस प्रकार की बातों से महर्षि दयानन्द जी की इस आलोचना की यथार्थता निरसन्देह सिद्ध होती है कि इस्लाम में खुदा एक देशी है जो सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् नहीं हो सकता।

(२४) ईश्वरीय गुणों के विषय में भ्रमः—

"वह (खुदा) जिसको चाहेगा क्षमा करेगा जिसको चाहे दण्ड देगा क्योंकि वह सब वस्तु पर बलवान् है।" (कुरान सू० २ आ० २६६)

"अल्लाह ने काफिरों के दिलों कानों पर मोहर करदी और उनकी आँखों पर पर्दा है और उनके वास्ते बड़ा अज़ाब है।" (कुरान सू० २।६)

'उन (काफ़िरों) के दिल में रोग है अल्लाह ने उनका रोग बढा दिया।" (कुरान सू० २।६)

इत्यादि आयतों की समीक्षा में महर्षि दयानन्द जी ने लिखा—' जो परमेश्वर ही ने उन (काफ़िरों) के अन्त करण और कानों पर मोहर लगाई और उसी से वे पाप करते है तो उनका कुछ भी दोष नहीं। यह दोष खुदा का ही है फिर उन पर सुख-दु ख या पाप पुण्य नहीं हो सकता पुन उसको सजा क्यों करता है? क्योंकि उन्होंने पाप वा पुण्य स्वतन्त्रता से नहीं किया। (देखो समीक्षा स० ५)

"भला बिना अपराध खुदा ने उनका रोग बढ़ाया दया न आई। उन बेचारों को बड़ा दु ख हुआ होगा? क्या यह शैतान से बढ़कर शैतानपन का काम नहीं है? किसी के मन पर मोहर लगाना, किसी का रोग बढ़ाना यह खुदा का काम नहीं हो सकता क्योंकि रोग का बढाना अपने पापों से है। (समीक्षा स० ६)

अब इस समालोचना की तुलना कुछ पाश्चात्य विद्वानों के निम्न लिखित वचनों से कीजिये तो अद्भुत समानता और यथार्थता प्रकट होगी।

डा० हेनरी मौंट गोमरी (Henry H Montgomery D D.) नामक विद्वान् ने Foreign Missions 'नाम की अपनी पुस्तक में 'Islam and Koran' शीर्षक लेख में इस्लाम की ईश्वर विषयक कल्पना की आलोचना करते हुए लिखा है:—

"Its (Islam's) idea of God is fundamentally erroneous The dominant conception of God in Islam is that of an arbitrary will Anything may be ordered by God and His decrees have no necessary relation to His character He might have inculcated impurity and false hood No where does this come out than in the life of Mohammed, to whom it was revealed (it is in the Koran) that God had dispensed him from the laws that He had made for others regarding the marriage ties and the law of purity Fellowship with God is an idea unknown to Mohammed The idea of worship is also fearfully mechanical

('Foreign Missions by Henry Moutgomery D. D P 65-66)

अर्थात् इस्लाम का ईश्वर विषयक विचार मौलिकरूप से अशुद्ध है। इस्लाम में ईश्वर विषयक मुख्य भाव एक स्वच्छन्द इच्छा का है। इस्लाम का खुदा कोई भी आज्ञा दे सकता है और उसके चरित्र के साथ उसकी आज्ञाओं का

कोई आवश्यक सम्बन्ध नहीं। वह (ख़ुदा) अपवित्रता और असत्य का भी उपदेश दे सकता है। मुहम्मद के जीवन से बढ़कर जिसके विषय में क़ुरान में लिखा है कि ईश्वर ने उसे इल्हाम दिया था इस भाव का कि जो नियम उसने विवाह सम्बन्ध और पवित्रता के विषय में औरों के लिये बनाये थे उनसे उसे मुक्त कर दिया गया और कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं। ईश्वर की उपासना का मुहम्मद को ज़रा भी ज्ञान न था। इस्लाम में पूजा का भाव भी भय पूर्वक और यन्त्रवत् है।

(२५) लेन् (E W. Lane) नामक विद्वान ने 'Selections from the Quran' नाम के अपने ग्रन्थ में कुरान की इस विषयक शिक्षा की कड़ी आलोचना करते हुए लिखा है —

'In the Quran God is repeatedly said 'to lead men astray Thus Surat-alaraf (VII) says —

"They whom He misleadth shall be the lost" (VII-177) There are several passages to the same effect, a few of which may be quoted Suratur Rad (XIII) says —

Whom God causeth to err 'no guide shall there be for him (V 33) Suratun-nahl (XVI) says —

"He causeth whom He will to err (Quran VI-95)

अर्थात् कुरान मे इस बात को बार २ दुहराया गया है कि ख़ुदा मनुष्यों को भटकाता है। उदाहरणार्थ कुरान ७, १७७ में कहा है कि जिनको वह (ख़ुदा) अशुद्ध रास्ते पर ले जाना चाहता है उन्हें सदा के लिये नष्ट कर दिया जायगा।

कुरान (१६। ६५) में लिखा है कि जिन से ख़ुदा ही गल्ती कराये उसके लिये मार्ग दर्शक कोई नहीं हो सकता। ऐसे ही अन्य अनेक वाक्यों में कहा है कि वह जिसको चाहता है गल्ती करवा देता है।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द जी की आलोचना का स्पष्टतया समर्थन होता है।

इस्लाम में मूर्ति पूजा का अंशः—

यह प्रायः कहा जाता है कि मुहम्मद साहेब ने अरब निवासियों में प्रचलित मूर्ति पूजा को सर्वथा दूर कर दिया और इस प्रकार एक बडे भारी धार्मिक सुधार का सूत्रपात किया। यह बात कुछ अंश तक सत्य भी है किन्तु पूर्णतया नहीं। महर्षि दयानन्द जी ने कुरान की सूरा २ आयत १३५ की समीक्षा करते हुए लिखा है (देखो समीक्षा ३०) "यदि तुम (मुसलमान) बुतों के तोड़ने हारे हो तो उस मस्जिद् किबले बडे बुत को क्यों न तोड़ा? तुम में और इन पौराणिकों मे बुतपरस्ती का कुछ भिन्न भाव नहीं है प्रत्युत तुम बडे बुतपरस्त और ये छोटे हैं क्यों कि जब तक कोई मनुष्य अपने घर मे से प्रविष्ट हुई बिल्ली को निकालने लगे तब तक उसके घर में ऊट प्रविष्ट हो जाए वैसे ही मुहम्मद साहेब ने छोटे बुत को मुसलमानों के मत से निकाला परन्तु बडे बुत जो कि पहाड़ सदृश मक्के की मस्जिद है वह सब मुसल्मानों के मत में प्रविष्ट कराही क्या यह छोटी बुतपरस्ती है? (समीक्षा स० ३०)

(२६) पाश्चात्य विद्वानों ने भी इस विषय में मुहम्मद साहेब की बड़ी कठोर आलोचना की है उदाहरणार्थ रेवरेन्ड ह्यूज (Rev. T. P,

Huges M R A S) ने Notes on Mohammedanism में हज के साथ सम्बद्ध क्रियाकलाप के सम्बन्ध में लिखा है —

'The ceremonies observed on this occasion (of Pilgrimage) are so ridiculous that they do more to reveal the imposture of Muhammed than any other part of his system They are even by the confession of the Mohammedans themselves the relics of the idolatrous superstitions of ancient Arabia and they are either evidences of the dark and superstitious character of Mohammed's mind or, what is perhaps even more probable they show how far the 'Prophet' found it suit his purpose to compromise with the heathen Arabians of his day'

(Notes on Mohammadainsm by Rev Hughes M R A S P 131)

अर्थात् इस हज की यात्रा के अवसर पर जो क्रियाएं की जाती हैं वे इतनी उपहासास्पद है कि वे और सब बातों से अधिक मुहम्मद की अयथार्थता या ठगी को सिद्ध करती हैं। वे स्वयं मुसल्मानों की स्वीकृति के अनुसार प्राचीन अरब के मूर्ति पूजापरक अन्ध विश्वासों का अवशेष है और वे या तो महम्मद के मन के अन्धकारमय और अन्धविश्वास पूर्ण होने का प्रमाण है और या शायद (जैसे कि अधिक सम्भव है) वे दिखाती हैं कि मुहम्मद पैगम्बर ने अपने समय के मूर्ति पूजक अरब वासियों से समझौता करने में कैसे अपने लक्ष्य की सिद्धि समझी थी।

यह आलोचना महर्षि दयानन्द जी की आलोचना की अपेक्षा भी अत्यधिक कठोर है इसमे सन्देह नहीं।

(२७) रेवरेण्ड सेल् डी० डी० (Rev Sell D D) ने "Faith of Islam" नामक पुस्तक में हज की क्रियाओं का विस्तृत वर्णन देते हुए लिखा है—

It is certainly very curious to find the old pagan customs, superstitious and silly, of the Hajj incorporated into a religion which professes to be monotheistic in principle and iconoclastic in practice The explanation probably is, that Muhammad was an ardent Arab patriot, and in his great anxiety to unite the Arab tribes into a nation, strong to resist their surrounding enemies, he could not afford to do away with a custom so dear as the Hajj

(Faith of Islam 3rd edition by Rev Sell D D P 345)

अर्थात् यह सचमुच बड़ी विचित्र बात है कि एक ऐसे धर्म (इस्लाम) मे जो सिद्धान्त रूप से एकेश्वर पूजक और क्रियात्मक रूप से मूर्ति भञ्जक होने का दावा करता है हम हज की अन्धविश्वास और मूर्खतापूर्ण पुरानी प्रथाओं को सम्मिलित पाते है। सम्भवत उसकी व्याख्या यह है कि मुहम्मद एक उत्साही अरब देशभक्त था और अरब की जातियों को एक राष्ट्र के रूप में परिणत करने की भारी चिन्ता तथा उत्सुकता में, जो च ों ओर के शत्रुओं का प्रबलता से मुकाबला कर सके, वह हज के समान अरब वासियों की अत्यन्त प्रिय प्रथा को दूर न कर सकता था।

राजनैतिक चाल के रूप में रेवरेण्ड सेल् द्वारा निर्दिष्ट व्याख्या शायद किसी को सन्तुष्ट कर सके किन्तु धार्मिक और सत्य परायणता की दृष्टि से उस पर जो आक्षेप महर्षि दयानन्द जी ने किये हैं उनका कोई सन्तोषजनक समाधान मुसलमान बन्धुओं की ओर से नहीं दिया जा सकता। मालूम होता है कि स्वयं मुसलमान सुधारकों और विचारकों को भी यह काबे के असवद नामक काले पत्थर के चुम्बन और प्रदक्षिणा आदि की बात बड़ी अखरती रही है।

मार्कस डोड्स डी० डी० (Marcus Dods D D.) ने अपनी 'Mohammed, Buddha and Christ' नामक पुस्तक में अरब के ४ प्रसिद्ध हनीफ़ों की सम्मति इस रूप में उद्धृत की है।

"Our tribesmen are in error, they have destroyed religion Are we to encompass a stone which neither hears nor sees, and which neither hurts nor helps us ? Let us seek a better faith '
("Mohammed, Buddha and Christ" by Marcus Dods M A. D D P 84)

अर्थात् हमारी जाति के लोग भ्रम में हैं। उन्होंने धर्म का नाश कर दिया है। क्या हमे उस पत्थर की प्रदक्षिणा करनी चाहिये जो न सुनता है, न देखता है और जो न हमें हानि पहुंचा सकता है न सहायता ? हमे इससे अच्छे विश्वास वा धर्म की खोज करनी चाहिये।

ऐसी अवस्था में महर्षि दयानन्द की इस विषयक युक्ति युक्त आलोचना से चिढ़ने की क्या ज़रूरत है ? क्यों न उसकी सत्यता को स्वीकार करके उचित संशोधन कर दिया जाए।

(२८) डा० मार्गोलियथ डी० लिट् (Dr. D. S. Margoliouth D Litt) नामक विद्वान्ने अपनी 'Mohammedaism' नामक पुस्तक में इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया है कि मुहम्मद जैसे कट्टर मूर्ति भञ्जक ने काबा के काले पत्थर के बोसा लेने तथा प्रदक्षिणा करने आदि की प्रथाओं को कैसे अपने मत में रहने दिया वे लिखते हैं:—

"It is a psychological puzzle that this destroyer of idols (Mohammed) maintained the ceremony of kissing the black stone, which at any rate bears a close resemblance to idolatry" (Mohammedanism by D S Margo liouth D Litt P. 48)

अर्थात् यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है कि इस मूर्ति भञ्जक मुहम्मद ने काले पत्थर को चूमने की प्रथा को जो मूर्ति पूजा के साथ किसी भी अवस्था मे घनिष्ठ समानता रखती है कैसे रहने दिया ?

इसी असम्बद्धता का निर्देश करके यदि महर्षि दयानन्द जी ने मित्र भाव से मुसलमानों को यह परामर्श दिया कि 'हां जो हम लोग वैदिक हैं वैसे ही तुम लोग भी वैदिक हो जाओ तो बुत परस्ती आदि बुराइयों से बच सको अन्यथा नहीं। तुमको जबतक अपनी बुत परस्ती को न निकाल दो तब तक दूसरे छोटे बुत परस्तों के खण्डन से लज्जित होके निवृत्त रहना चाहिये और अपने को बुतपरस्ती से पृथक् करके पवित्र करना चाहिये। (देखो समीक्षा स० ३०) तो इस में बुरा मनाने की बात ही क्या है ?

(२९) क़ुरान के वचनों की परस्पर विरुद्धता विषयक इस प्रकरण को समाप्त करने से पूर्व (E.W.Lane) नामक विद्वान् के 'Selections

from the Quran' नाम के ग्रथ से निम्न उद्धरण देना आवश्यक प्रतीत होता है जो अत्यधिक स्पष्टतया महर्षि दयानन्द की समालोचना का समर्थन करता है और जिसकी पुष्टि में उन्होंने कुरान की परस्पर विरुद्धता के अनेक उदाहरण दिये हैं। वे लिखते हैं:—

"The fact is that there are many contradictions in the Quran Muhammad sometimes either forgot or changed his mind To account for these, the convenient doctrine of abrogation was invented The number of abrogated verses has been variously estimated at between two and three hundred '

(Selections from the Quran by E W Lane Review P 279)

अर्थात् सच्ची घटना यह है कि कुरान में परस्पर विरोध बहुत अधिक हैं। मुहम्मद कई बार या तो भूल जाता था या अपने मन के विचार को बदल देता था। इन परस्पर विरुद्ध बचनों की व्याख्या के लिये Abrogation या मन्सूख कराने के सिद्धान्त को घड़ा गया। इस प्रकार मन्सूख किये गये बचनों की सख्या २०० से ३०० के बीच में है।

पामर (Palmer) नामक विद्वान् ने Sacred Books of the East Series मे कुरान का अंग्रेजी में अनुवाद करने हुए इस परस्पर विरुद्धता का निम्न लिखित स्पष्ट शब्दों मे प्रति पादन किया है:—

"Revealed 'piece meal', particular passages being often promulgated to decide particular cases, it (Quran) cannot fail to contain many things that are at variance with, or flatly contradict, others"

The translation of the Holy Quran by Palmer - Sacred Books of the East Vol VI P 111)

अर्थात् कुरान का 'इलहाम' खण्डशः हुआ जिस में विशेष २ वाक्य विशेष अवस्थाओं का निर्णय करने के लिये उतारे गये इस लिये कुरान के अन्दर बहुत से ऐसे वाक्य पाये जाते हैं जो दूसरे वाक्यों से स्पष्ट टाकरा खाते हैं। ऐसे ही वाक्य अन्य अनेक विद्वानों के ग्रन्थों से उद्धृत किये जा सकते हैं जिन से महर्षि दयानन्द जी कृत इस विषयक समालोचना का स्पष्ट समर्थन होता है पर विस्तार भय से अब इस प्रकरण को यहीं समाप्त करना उचित प्रतीत होता है।

इलहाम' का स्वप्रयोजन सिद्धयर्थ उपयोग:—

कुरान सू० ४ आयत ११३ की 'और शिक्षा प्रकट होने के पीछे जिस ने रसूल से विरोध किया और मुसलमानों से विरुद्ध पक्ष किया अवश्य हम उसको दोजख में भेजेंगे।"

इस आशय की आयत की समीक्षा करते हुए महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है.—

'अब देखिये खुदा और रसूल की पक्षपात की बातें' मुहम्मद साहेब आदि समझते थे कि जो खुदा के नाम से ऐसी हम न लिखेंगे तो अपना मजहब न बढ़ेगा और पदार्थ न मिलेंगे आनन्द भोग न होगा। इसी से विदित होता है कि वे अपने मतलब पूरा करने में पूरे थे और अन्य के प्रयोजन बिगाड़ने में, इसी से ये अनाप्त थे। इनकी बात का प्रमाण आप्त विद्वानों के सामने कदापि नहीं हो सकता।।" (देखो समीक्षा स० ५६)

'प्रतिज्ञा की है अल्लाह ने ईमान वालों से और ईमान वालियों से बहिश्तें चलती हैं नीचे उनके नहरें सदैव रहने वाली इत्यादि (कुरान सू० ६ आ० ७१) की समीक्षा करते हुए महर्षि दयानन्द जी ने लिखा —

'यह खुदा के नाम से स्त्री पुरुषों को अपने मतलब के लिये लोभ देना है क्योंकि जो ऐसा प्रलोभ न देते तो कोई मुहम्मद साहेब के जाल मे न फसता ऐसे ही अन्य मतवाले भी किया करते हैं।" (देखो समीक्षा स० ८४)

"जिस मनुष्य को तनिक सी भी बुद्धि है वह विचार ले सकता है कि ये खुदा खुदा के काम हैं वा अपनी प्रयोजन सिद्धि के। ऐसी २ बातों से ठीक सिद्ध है कि खुदा कोई नहीं कहता था केवल देश काल देखकर अपने प्रयोजन के सिद्ध होने के लिये खुदा की तर्फ से मुहम्मद साहेब कह देते थे। जो लोग खुदा ही की तर्फ लगाते हैं उनको ही क्या सब बुद्धिमान यही कहेंगे कि खुदा क्या ठहरा माना मुहम्मद साहेब के लिये बीबिया लाने वाला नाई ठहरा ॥ (समीक्षा स० १४३)

महर्षि दयानन्द की इस प्रकार की समीक्षा को अत्यन्त कठोर माना जाता है और कहा जाता है कि उन्हें इस प्रकार मुसलमानों का दिल दुखाने वाले शब्द न लिखने चाहियें थे किन्तु जिन अवसरों पर इन समीक्षाधीन आयतों का उतरना बताया जाता है उनको ध्यान में रखते हुए महर्षि दयानन्द की आलोचना न केवल सर्वथा यथार्थ बल्कि अन्य समालोचक विद्वानों के मुकाबिले में कोमल भी प्रतीत होती है उदाहरणार्थ रेवरेण्ड आर्नल्ड डी० डी० और ह्यूज के इस विषयक—

Muhammed completed his career as an imhoster who brought forth his pseudo revelations when ever he found it necessary to santion the most unjustifiable acts (Islam and Christianity by J M Arnold D D P 77) In the case of Mohammed his professed inspiration sanctioned and encouraged his own vices (Notes on Mohammedanism by Rev T P Hughes D D P ?)

इत्यादि वाक्यों का पहले उद्धृत किया जा चुका है जिनमे उन्होंने मुहम्मद के इलहाम' के बारे मे यहा तक लिख मारा है कि जब २ अपने अन्याय सङ्गत अनुचित कार्यों का समर्थन करने की उन्हे आवश्यकता हुई उन्होंने झट से अपने ऊपर तथा कथित ईश्वरीय ज्ञान वा इलहामको उतरवा लिया।—मुहम्मद साहब के विषय में उसके तथा कथित इलहाम वा ईश्वरीय प्रेरणा ने उसकी अपनी बुराइयों का समर्थित तथा प्रोत्साहित किया इत्यादि।

इन वाक्यों में जो ताने भरे हुए हैं वे इस आलोचना को बड़ा भयङ्कर बना देते हैं। इनके अतिरिक्त श्री हेचू जी, वेल्स, सर विलियम् म्यूर, मार्कस डौड्स एम० ए० डी० डी०, मेजर औस बौर्न आदि सभी प्रसिद्ध विद्वानों ने मुहम्मद साहब की तथा कथित ईश्वरीय प्रेरणा को बुरी तरह से आडे हाथों लिया है और उसकी धज्जियाँ उड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मार्क्स डौडस ने तो इस विषयक आलोचना, करते हुए एक पृष्ठ में शीर्षक ही 'Immoral revelations अथवा सदाचार विरोधी इलहाम दे दिया है।

(३१) थ्योडोर लन्ट (Theodore Lunt) नामक विद्वान् ने अपनी, अत्यन्त रोचक और उपयोगी पुस्तक 'The Story of Islam' में इस विषय में लिखा है कि –

"Mohammed poured forth Suras as each new occasion demanded. Many suras are concerned with the most trivial and unimportant matters treated in the most common place ways. Some show his unrivalled skill in getting out of the difficult personal or political situation. some are to give divine authority for his own law or for those actions of his, which outraged even the primitive conscience of Arabia. One instance of this should be given. Within a year of his reaching Medina the prophet greatly admired Zainab the wife of his foster son Zaid and coveted her for his wife. Marriage to one, who was reckoned a daughter in law was utterly abhorrent to the conscience of the Arabs, but he justified this by obtaining a divine commission—a divine blessing for sooth—for the act. We have more than once seen, how the prophet fell into the very convenient habit of retracing or abrogating any previous Suras which he found it convenient to alter." (The Story of Islam by Theodore Lunt P 89)

अर्थात् मुहम्मद साहब ने प्रत्येक नये अवसर पर जब २ आवश्यकता हुई नये २ सूरे (अध्याय) घड़े। बहुत से अध्यायों का सम्बन्ध बहुत ही तुच्छ और अनावश्यक विषयों के साथ है जिन्हें सर्वथा सामान्य रूप से प्रतिपादित किया गया है। कइयों से यह ज्ञात होता है कि उन में कठिन वैयक्तिक वा राजनैतिक परिस्थिति से बच निकलने की कितनी अनुपम निपुणता थी। कइयों का उद्देश्य मुहम्मद के अपने बनाये हुए नियमों के उल्लङ्घन अथवा उनकार्यों के लिये भी। जिनसे अरब वासियों की असंस्कृत (जङ्गली) अन्तरात्मा को भी आघात पहुंचता था ईश्वरीय आदेश का अधिकार प्राप्त करना था। इसका एक उदाहरण अवश्य देना चाहिये। मदीना पहुँचने के एक वर्ष के अन्दर पैगम्बर ने अपने दत्तक पुत्र जैद की स्त्री जैनब की बहुत प्रशंसा की और उसे अपनी स्त्री बनाना चाहा। अपनी पुत्रवधू समझी जाने वाली स्त्री के साथ विवाह अरब वासियों की अन्तरात्मा के लिये भी बड़ा घृणित था पर उसने इस कार्य के लिये ईश्वरीय आदेश और आशीर्वाद प्राप्त करके इसका समर्थन किया। हमने इस बात का पहले भी कई बार देखा है कि पैगम्बर साहब को अपनी सुविधानुसार पहली आयतों को रद्द करने वा मन्सूख करने की सुलभ आदत कैसे पड़ गई थी इत्यादि। पाठकों को यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि सब से अधिक कठोरता पूर्ण आक्षेप महर्षि दयानन्द जी ने मुहम्मद साहब के चरित्र तथा उनके 'इलहाम' के विषय में इसी पुत्र वधू जैनब की घटना को लेकर किया है और सच यह है कि सब के सब धुरन्धर विद्वान् और विचारक इस विषय में उनके साथ हैं। विस्तारभय से दो तीन विद्वानों के उद्धरण देना ही यहाँ पर्याप्त होगा।

(३२) सी० आर० नॉर्थ एम० ए० (C.R.

North M A) नामक विद्वान् ने 'Out line of Islam' में मुहम्मद साहब के तथाकथित 'इलहाम' की आलोचना करते हुए इसी बात को जोर के साथ लिखा है —

'It is difficult to acquit Mohammed of the charge of employing revelation to justify his own private and domestic convenience One day he cast longing eyes on Zainab, the wife of his adopted son Zaid Zaid was quite complacent and divorced his wife in order that the prophet might have her This strange proceeding was justified by a revelation in which Zaid is actually named and Mohmmed is declared to be 'not the father of any man among you, but he is the Apostle of God and the seal of the prophets (Quran 33, 37-40) more over Mohammed is allowed to have more wives than the statutory number of four, 'a privilege for thee above the rest of the faithful" (Quran 33—40)

(Outline of Islam by C R North M A P 32)

अर्थात् मुहम्मद को इस दोष से मुक्त करना कि उसने ईश्वरीय ज्ञान का उपयोग अपनी वैयक्तिक घरेलू सुविधा के समर्थन के लिये किया अत्यन्त कठिन है। एक बार उसने अपने दत्तक पुत्र जैद की स्त्री जैनब पर काममय दृष्टि डाली। जैद ने शान्त भाव से अपनी स्त्री को तलाक दे दिया, ताकि मुहम्मद पैगम्बर उससे विवाह कर सकें। इस विचित्र कार्य का समर्थन एक ईश्वरीय आदेश द्वारा किया गया जिसमें जैद का नाम लिया गया है और मुहम्मद के बारे में कहा गया है कि वे तुममें से किसी एक व्यक्ति के पिता नहीं बल्कि खुदा के आखीरी पैगम्बर हैं (देखो कुरान सूरा ३३ आ ३७-४०) साथ ही मुहम्मद को विवाह के लिये निश्चित चार से अधिक स्त्रियों के साथ विवाह का विशेष अधिकार दिया गया है (कुरान सूरा ३३ आयत ४०) इस पर किसी टिप्पणी की आवश्यकता नहीं। पर क्योंकि महर्षि दयानन्द जी की इस विषयक समीक्षा पर मुसलमान बन्धु बहुत आपत्ति उठाते और उसे अत्याधिक कठोर समझते हैं हमें यह उचित प्रतीत होता है कि ऊपर कुरान शरीफ की जिन आयतों का निर्देश किया गया है उनका सुप्रसिद्ध मुस्लिम मिश्नरी ख्वाजा हसन निजामी देहलवी का कराया हुआ अनुवाद उनके हिन्दी कुरान में से उद्धृत कर दिया जाए जिससे इस विषय में सन्देह का कारण न रहे। महर्षि दयानन्द जी ने कुरान के शाह रफी उद्दीन साहेब के उर्दू अनुवाद को ही देवनागरी मे करा कर उसके आधार पर समीक्षा की थी यह पाठकों को स्मरण रखना चाहिये।

(३३) ख्वाजा हसन निजामी के कुरान की (सूरा ३३ आ० ३७-४०) आयतों का अनुवाद इस प्रकार है —

"मुसल्मानो याद रक्खो जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा तो वह एक स्पष्ट गुमराही मे फँस जायेगा (और अपना लोक परलोक बिगाड़ लेगा) और हे मुहम्मद जब कि तुम (समझाने के लिये) उस मनुष्य से (अर्थात् जैद से) जिस पर अल्लाह ने इतनी बड़ी कृपा की (कि उसको इस्लाम धर्म प्रदान किया) और जिस पर तुमने यह उपकार किया (कि उसको पराधीन से स्वाधीन किया) कह रहे थे कि अपनी

पत्नी को अपने पास रहने दे (तलाक न दे) और अल्लाह से डर (और उसकी ओर से विमुख न हो) और (तलाक हो जाने की दशा मे) तुम अपने जी में वह बात छिपाये हुए थे। जो सामयिक दशा और दूर दर्शिता के पूर्णतया अनुकूल थी और जिसको कि (किसी न किसी दिन) अल्लाह प्रकट ही करने वाला था (अर्थात् तुम्हारा विचार था कि यदि जैद जैनब को तलाक दे देगा) और (इद्दत का समय सम्पूर्ण हो जायगा तो तुम जैनब से विवाह कर लोगे परन्तु) तुम (अपने सुविचार के प्रकट करने मे) लोगों (के ताने कटाक्ष) से भय खा रहे थे—यद्यपि (तुम अच्छी तरह जानते हो कि पृथ्वी व आकाशों मे) अल्लाह (ही सबसे) अधिक इस योग्य है कि तुम उससे भय खाओ। संक्षिप्त यह कि जब जैद ने अपना सम्बन्ध उससे (अर्थात् अपनी पत्नी जैनब से) विच्छेद कर लिया तो हमने उसको (अपनी आज्ञा से) तुम्हारे निकाह मे दे दिया जिससे कि तुम्हारा सुविचार ससार में प्रकट हो जाए और आगे को सर्वदा के लिये मुसलमानों पर—अपने लेपालकों की स्त्रियों (से विवाह कर लेने) में जब कि लेपालक उनसे सम्बन्ध विच्छेद करले अर्थात् अपनी पत्नियों को तलाक दे दें कोई दोष और) कुछ कठिनता न हो। और (इसमें तनिक सन्देह नहीं कि जैनब का तुम से ब्याहा जाना खुदा की आज्ञा से था और) अल्लाह की आज्ञा पूर्ण होकर ही रहती है (चाहे विरोधी उसका कितना ही विरोध करें) इतना समझाने बुझाने के बाद भी यदि अज्ञानी लोग हमारे नबी पर ताने और कटाक्ष करें तो यह उनकी मूर्खता है। निस्सन्देह उस (काम के करने) में हमारे पैगम्बर पर कोई दोष नहीं, जिसे अल्लाह ने उनके लिये आवश्यक कर दिया। • तो हे पैगम्बर! तुम भी इस मामले मे किसी के ताने-कटाक्ष से भय न खाओ, ससार के लोगों मे कोई भी तुम्हारे कर्मों और हिसाब किताब का संरक्षक और उत्तरदाता नहीं है। स्मरण रक्खो हिसाब किताब तो केवल अल्लाह के अधिकार मे है और अल्लाह (अपने समस्त बन्दों का) हिसाब किताब करने के लिये अकेला पर्याप्त है। (हे अज्ञानो! हे खुदा के पैगम्बर पर आक्षेप करने वालो सुनो! जैद या और कोई मनुष्य) मुहम्मद तुम लोगों में से किसी के भी पिता नहीं हैं वरन् (वह तो खुदा के पैगम्बर हैं और (केवल पैगम्बर ही नहीं, वरन्) अन्तिम नबी (और समस्त ससार के लिये कृपा) हैं—(उनका हर काम खुदा की इच्छानुसार और हर बात खुदा की वही के अनुसार होती है अत तुम्हारा उनके किसी काम पर आक्षेप करना मानो सर्व शक्तिमान् अल्लाह पर आक्षेप करना और (अपना लोक-परलोक बिगाड़ना है। मूर्खो! स्मरण रक्खो) अल्लाह हर वस्तु से भली भांति अभिज्ञ है—(उसे अपने पैगम्बर की हर बात का पूरा पूरा ज्ञान है। यदि जैनब का उनसे ब्याहा जाना उसकी इच्छा के विरुद्ध होता तो न जैद जैनब को तलाक देता और न जैनब उसके पश्चात् पैगम्बर से ब्याही जाती।" (कुरान का हिन्दी अनुवाद ख्वाजा हसन निज़ामी कृत पृ० ५६८–५६६)

ठीक इसी आशय का अनुवाद मि० यूसुफ अली एम. ए डिपुटी नज़ीर अहमद साहेब (उर्दू) मि० पिक्थाल (जो अंग्रेज मुसलमान बन गये थे) मौलवी मुहम्मद अली एम ए आदि ने किया है जिसे विस्तार भय से उद्धृत करना अनावश्यक

प्रतीत होता है। जो पाठक चाहें उन अनुवादों को देख सकते हैं।

(३४) Encyclopedia of Islam Vol IX में जैनब (Zainab) पर जो लेख है उससे भी न केवल उपर्युक्त घटना की सत्यता बल्कि महर्षि दयानन्द जी कृत समीक्षा की यथार्थता भी स्पष्टतया ज्ञात होती है। वहां लिखा है—

'In 4 A.H Mohammed calling on Zaid in his home, saw Zainab alone and fell in love with her Zaid divorced her in order that the prophet might marry her, the latter's scruples were set at rest by the revelation of Koran XXXIII 36 39 Zainab was proud of the circumstances of her marriage and used to say that Mohammed's other wives had been given to him by their fathers and brother , while her union had been brought about by special divine revelation."

(Encyclopedia of Islam Vol IX. P 1199)

अर्थात् हिजरी वर्ष ४ में मुहम्मद साहेब जैद् को मिलने उसके घर पर गये उन्होंने जैनब को अकेला देखा और वे उस पर मोहित हो गये। जैद ने इस उद्देश्य से कि पैगम्बर उसके साथ विवाह कर सकें उसे तलाक़ दे दिया। मुहम्मद साहेब का इस विषयक संकोच कुरान के ३३, ३६-३९ की ईश्वरीय आज्ञा द्वारा दूर हो गया। जैनब को अपने इस विवाह की परिस्थिति का अभिमान था और वह कहा करती थी कि मुहम्मद की अन्य स्त्रियों को तो उनके पिता या भाइयों ने दिया था पर उसका सम्बन्ध विशेष ईश्वरीय आदेश द्वारा करवाया गया था इत्यादि।

(३५) Dictionary of Islam P. 378 में रेवरेन्ड ह्यूज (Rev Hughes) ने ठीक इसी प्रकार की घटना जैनब के विवाह के सम्बन्ध में कुरान की आयतों (३३, ३६-४०) के अनुवाद सहित उद्धृत की है और इन शब्दों का प्रयोग किया है "The relations of the Arabs to their adopted children were so strict, that nothing but a revelation from heaven could settle the difficulty It was to meet this domestic em r- gency that the prophet produced the following verses of the Quran, Surah XXXIII 36—39 to sanction his own heart s desire —

The scandal of the marriage was removed by the pretended revelation, and according to the Traditio s, Zainab used to vaunt herself as the one wife of the Prophet's harim who had been given in marriage by God himself"

क्योंकि जैनब के विवाह की घटना का ऊपर विस्तृत वर्णन किया जा चुका है इस लिये इन वाक्यों का शब्दानुवाद देने की आवश्यकता नहीं है। यहां यह बात स्मरणीय है कि रेवेरेंड ह्यूज ने इसे 'Pretended revelation' वा कल्पित इलहाम बताया है।

इस अप्रिय और अरुचिकर विषय पर कुछ अधिक प्रकाश डालने की हमें केवल इस लिये आवश्यकता हुई कि महर्षि दयानन्द जी की इस प्रकरण में की हुई आलोचना को अत्यधिक कठोर और अयथार्थ बताने का प्रायः यत्न किया जाता है किन्तु ऊपर जो उद्धरणादि ख्वाजा हसन

निज़ामी जैसे प्रामाणिक मुसलमान प्रचारक कृत अनुवाद सहित दिये गये हैं उनसे उस समीक्षा की सत्यता में कोई सन्देह नहीं रहता और महर्षि दयानन्द जी जैसे आदित्य ब्रह्मचारी के मन में एक आदर्श और अन्तिम पैगम्बर कहलाने वाले धर्म प्रवर्तक में इस प्रकार की निर्बलता को देख कर मन्यु उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था क्योंकि वे स्वयं सदाचार की मूर्ति थे और सदाचार का समस्त जनता में प्रचार करना चाहते थे। मुसलमान बन्धु भी मुहम्मद साहेब के विषय में 'Muhaemmed s life was the peurst and his morals the highest thinkable (The Great Prophet, by F K Khan Durrani P 3)

अर्थात् मुहम्मद सा० का जीवन सबसे अधिक पवित्र था और उनका सदाचार सबसे अधिक और इतना ऊंचा था जितने की कल्पना की जा सकती है, जैसे विचार न रखकर यदि एक सुधारक के रूप में उन्हें जनता के सामने रखते तो सम्भवतः महर्षि दयानन्द जी को उनके वैयक्तिक जीवन पर लिखने की विशेष आवश्यकता न होती। (शेष फिर)

महर्षि दयानन्द और क़ुरान शरीफ़ की नयी व्याख्यायें—२

[लेखक—श्री प्रो० हरिदत्त जी वेदालङ्कार गुरुकुल कांगड़ी]

पिछले अङ्क में, हम यह देख चुके हैं कि महर्षि दयानन्द की आलोचना से प्रभावित होकर मुस्लिम टीकाकार कुरान के आपत्ति जनक स्थलों की किस प्रकार नई व्याख्यायें कर रहे हैं। इस लेख में हम ऐसी व्याख्याओं के कुछ और नमूने पेश करेंगे।

कुरान शरीफ़ मे, अनेक स्थानों पर कुछ विचित्र किस्से पाये जाते हैं। सूर तुलबकर में (२। १६०) मे यह बताया गया है कि एक बार पैगम्बर अब्राहम ने ईश्वर की मृतसजीवनी शक्ति पर अविश्वास प्रकट किया। उसने कहा—मेरे स्वामी, मुझे इस बात का प्रदर्शन करो कि तुम मृतकों को किस प्रकार पुनरुज्जीवित करते हो परमात्मा ने कहा—'क्या तुम विश्वास नहीं रखते ?' पैगम्बर अब्राहम ने उत्तर दिया, मै विश्वास तो रखता हू, किन्तु अपने हृदय को (उसकी जिज्ञासा को) शान्त करना चाहता हू। तब परमात्मा ने कहा चार जानवरों को ले, उनकी सूरत पहिचान रख, फिर हर पहाड़ पर उनका एक २ टुकड़ा रख दे फिर उनको बुला। वे दौड़ते हुए तेरे पास चले आयेंगे।

स्वामी जी ने इस पर यह आलोचना की है (सभी ४३)—वाह देखो जी मुसलमानों का खुदा भानमती के समान खेल कर रहा है। क्या ऐसी ही बातों से खुदा की खुदाई है ? मौ. मुहम्मदअली एम. ए (हा कु पृ.४२ पाद टिप्पणी१) ने इस दोष के परिहार के लिय एक बड़ी लम्बी चौड़ी व्याख्या की है। वह इसे एक रूपक समझता है। वह इस आयत का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट करता है—यदि वह चार पक्षी लेकर पाले तो वे उसकी आज्ञा का पालन करेंगे और उसकी पुकार पर दूर वर्ती पहाड़ों से भी उड़ कर उसके पास आजायेंगे। पालने वाला पक्षियों के जीवन का स्वामी या उत्पादक नहीं है। किन्तु यदि पक्षी अपने पालक के प्रति इतने आज्ञा पालक होते हैं, तो राष्ट्रों को क्या अपने स्रष्टा परमात्मा के आदेशों के अनुसार आचरण करने वाला नहीं होना चाहिये। ऊपर का प्रकरण देखते हुए यह व्याख्या बिल्कुल निकम्मी, असगत और प्रकरण विरुद्ध है क्योंकि प्रकरण तो यह है कि परमात्मा की मृतसजीवनी शक्ति को बताया जाय किन्तु इस व्याख्या मे उसके प्रति आज्ञा पालन के भाव को स्पष्ट किया जा रहा है। इसमें कोई शक नहीं कि उक्त सदर्भ मे भी एक सुन्दर व्याख्या करने का प्रयत्न किया गया है किन्तु वे उसमें बुरी तरह असफल हुए हैं।

सूर्य का कीचड़ के समुद्र में डूबना

सूर तुल्कहफ मे जुलकरनैन का किस्सा बयान किया गया है। जुल करनैन का अर्थ है—द्विशृंगी। यह कौन है, इसके बारे में बड़ा मतभेद है। अनेक टीकाकारों ने इसे सिकन्दर समझा है। उनका मत है कि सिकन्दर का पूर्व और पश्चिम, एशिया और योरोप दोनों जगह शासन था, अत.उसे द्विशृगी कहा गया है। मुहम्मद अली इसका सकेत दारा प्रथम की ओर समझते हैं। कुरान शरीफ मे कहा गया है कि वह अपनी यात्रा मे यहा तक पहुचा कि उसने सूरज डूबने की जगह पाली और उसने चश्मे के कीचड़ में सूर्य

को डूबते हुए पाया। (१८। ८६)

इस पर स्वामी जी ने यह समीक्षा की थी (स० १०६) अब अगे की अविद्या की बत देखिये कि इस किताब का बन ने व ला सूय को एक झील में रात्रि को डूबा जानत है फिर प्रात काल निकलता है भला सूय तो पृथिवी से बहुत बड़ा है, वह नदी झील वा समुद्र मे कैसे डूब सकेगा ? इससे यह विदित हुआ कि कुरान के बनाने वाले को भू ोल खगाल की विद्या नहीं थी जो हाती ता ऐसी विद्य विरुद्ध ब त क्यों लिख देता ?"

कीचड़ के समद्र में सूय का डूबना वास्तव मे विज्ञ न क विरुद्ध हाने स हास्य स्पद है। यह सब जानते हैं कि सूर्य न तो उदय हाता है और न अस्त हाता है। प्र थवी के अपन अक्ष के चारों ओर घूमन स दिन रात ह ते हैं इस स्थल म दो ब ते अ क्षेप य ग्य है—सूय का पश्चिम म डूबना (२) सूय का कीचड के चश्मे मे डूबना। पहली ब त का उत्तर यह दिया ज ता है कि यहा स्थूल रूप से दिख ई देने व ले तथ्य का ही वरान किया गया है हम सूय को प्राय प श्चम में अस्त होत हुआ देखत हैं, उसी तरह यहा यह कहा गया है कि पश्चिम म सूय अस्त ह ता है किन्तु वह कीचड़ के चश्मे में अस्त नहीं होता। मूल मे शब्द है—फीन ऐ नन् हमे अतिन्। इन शब्दों की सवथा उपेक्षा करते हुए मौ० मुहम्मद अली (पृ ३०२ पहली टिप्पणी) कीचड़ के चश्मे का अथ कृष्ण समुद्र करता है। उसने जुल करनैन दारा प्रथम को माना है (दारा का राज्य आर्मीनिया तक फेला हुआ था कृष्ण समुद्र उसके राज्य की उत्तर पश्चिमी सीमा थी। वह यात्रा करते हुए, अपने राज्य की सीमा कृष्ण समुद्र पर पहुचा तो उन्होंने सूर्य को कृष्ण समुद्र मे डूबते हुए देखा। नि सन्देह यह कीचड़ के समुद्र में सूय डूबने की अपेक्षा अधिक उत्कृष्ट कल्पना है किन्तु इससे स्वामी जी के खगाल विद्य सम्बन्धी आक्षेप का परिहार नहीं होता कृष्ण समुद्र वाली कल्पना इसलिये भी अमा य है कि इसका कोई आधार नहीं है। बिल्कुल स्पष्ट शब्दों का अर्थ किस कारण बदला ज य यह नहीं बताया गया

सुलेमान की कथा

सूरा तुसबा (३४) मे हजरत सुलेमान के सम्बन्ध में कई चमत्कारपूर्ण अनोखी बातें बताई हैं यह कहा गया है कि जिनों पर भी उनका अ धिपत्य था। सुलेमान ने एक मन्दिर बन व ना शुरू किया। जिन्न उसके निरीक्षण में यह मन्दिर बना रहे थे। सुलेमान का यह पता लगा कि उसकी मृ यु समीप है। वह जानता था कि उसक मरने पर जिन्न मन्दिर क निर्माण का कार्य ीरन छाड देंगे। वह हर राज्य जिन्नों के क य का निरीक्षण करने आया करता था। एक दिन वह डण्डे का सहारा लेकर, उनके कार्य की देखभ ल करने लगा इस डण्डे के सहारे पर खड होकर वह बहुत दिनों तक मन्दिर निर्माण को देखता रहा। इसी बीच मे सुलेमान के प्राण पखरू उड़ चुके थे। लेकिन उसका शरीर डण्डे के सहार टिका रहा। जिन्न समझते रहे कि वह हमारा निरीक्षण कर रहा है। उसके डर से जिन्न अपना काय बडी तत्परता से करते रहे। बहुत दिनों बाद जब उस डण्डे को मिट्टी के प्राणी दीमक ने नीचे से खा लिया तो वह डण्डा और उसके सहारे टिका हुआ सुलेमान का शरीर धरती पर गिर पड़ा तब जिन्नों को पता लगा कि यह तो मर चुका

है। उन्होंने वह कार्य छोड़ दिया। लेकिन उस समय तक अधिकांश कार्य पूर्ण हो चुका था।

पता नहीं महर्षि दयानन्द का इन मनोरंजक कथा की ओर ध्यान क्यों नहीं गया? उन्होंने उसकी कोई आलोचना नहीं की किन्तु कुरानशरीफ के वर्त्तमान टीकाकारों को यह स्थल ऐसा जान पड़ा जिस पर विरोधी उंगली उठा सकते हैं। उन्होंने उसकी सर्वथा नये ढंग से व्याख्या की। इनके मत में खाने वाला मिट्टी का प्राणी, एक आलंकारिक परिभाषा है। इसका लाक्षणिक अर्थ लेना चाहिये, दीमक वाला सामान्य अर्थ नहीं। 'मिट्टी के प्राणी' का लाक्षणिक अर्थ है—मनुष्य। वह मिट्टी से बनाया गया है और मिट्टी में मिल जाने वाला है। मिट्टी के प्राणी द्वारा डण्डे को खाये जाने का मतलब है—सुलेमान के पुत्र का निर्बल शासन। इस निर्बल शासन से उसका राज्य सघटित न रह सका और अनेक टुकड़ों में बट गया। राज्य का विघटन ही डण्डे का खाया जाना है। जिन उन विद्रोही जातियों का नाम है। जिन्हें सुलेमान ने जीत कर अपने आधीन किया था। सुलेमान की मृत्यु पर ये जातियां फिर स्वतन्त्र हो गयीं। जिनों के काम छोड़ने का यही आशय था।

पहाड़ों का प्रयोजन-जमीन को स्थिर रखना

कुरान शरीफ में कुछ विज्ञान विरुद्ध स्थल हैं जिनका उत्तर मुस्लिम टीकाकारों ने नहीं दिया। पता नहीं उनके मौन का क्या कारण है। इस में दो कारणों की सम्भावना की जा सकती है। पहला तो यह कि इन सन्दर्भों की ओर उनका ध्यान ही न गया हो और दूसरा यह कि ये सन्दर्भ इतने स्पष्ट रूप से अवैज्ञानिक बातों का प्रतिपादन करते हों कि इनकी दूसरी व्याख्या सम्भव ही न हो। इनमें पहला कारण ही अधिक सम्भव प्रतीत होता है। दूसरे कारण की सम्भावना बहुत कम प्रतीत होती है क्योंकि टीकाकार अर्थ को बदलने तथा खींच तानी करने में बहुत कुशल हैं। सूरतुल्लुकमान में एक इसी प्रकार की विज्ञान विरुद्ध बात का उल्लेख है। इस पर स्वामी जी ने समीक्षा की है किन्तु मुस्लिम टीकाकारों ने इसे अछूता छोड़ दिया है। ३१। १० में कहा गया है परमात्मा ने पर्वतों को जमीन पर रखा ताकि यह स्थिर हो जाय और इधर उधर न हिले डुले। इससे पहले यह भी बताया गया है कि आसमानों को बगैर खम्भों के पैदा किया ताकि तुम उसे देख सको।

स्वामी जी (समीक्षा स० १२४ में) कहते हैं—वाह जी वाह हिकमत वाली किताब। कि जिस में सर्वथा विद्या से विरुद्ध आकाश की उत्पत्ति और उसमें खम्भे लगाने की शंका और पृथ्वी को स्थिर रखने के लिये पहाड़ रखना। थोड़ी सी विद्या वाला भी ऐसा लेख कभी नहीं करता और न मानता। (शेष फिर)

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् देहली की सूचनाएँ।

द्वितीय अन्तरंग सभा

अखिल भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की द्वितीय अन्तरंग सभा ता० ४ मार्च सन् १९४५ ई० रविवार सायंकाल ४ बजे से दीवान हाल देहली में होगी। अनेक आवश्यक विषयों पर विचार होगा।

कार्यकारिणी सभा—प्रधान म० खुशहाल-चन्द लाहौर, श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी, श्री पं० देवव्रत धर्मेन्दु दिल्ली श्री प्रो० सुधाकर जी दिल्ली, श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य सराय तरीन मुरादाबाद, श्री नन्दकिशोर जी खन्ना देहली तथा दीवानन्दयाल कार्यालय मन्त्री।

परीक्षा समिति—प्रधान म० खुशहाल-चन्द जी लाहौर, परीक्षा मन्त्री, श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु, सदस्य श्री विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी मेरठ, श्री प्रोफेसर सुधाकर जी देहली, ला० किशोरी लाल जी, मुजफ्फर नगर श्री पं० भगवत सहाय जी मुरादाबाद, डा० सूर्य देव जी अजमेर श्री ला० भगवान दास एम० ए० लाहौर, श्री प्रो० मुंशीराम जी एम० ए० कानपुर।

दिल्ली प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद्

गत अन्तरंग सभा में प्रान्तीय आर्य कुमार परिषदों के सम्बन्ध में भी विचार किया गया। निश्चय हुआ कि जो २ परिषदें काम कर रही हैं उनका सगठन इसी प्रकार चलने दिया जावे। दिल्ली प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् को सम्बन्धित कराने का प्रार्थना पत्र उपस्थित होकर सर्व सम्मति से इस परिषद् को परिषद् के साथ सम्बन्धित कर लिया गया और नियमानुसार प्रथम वर्ष के लिये श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु को उसका प्रधान निर्वाचित किया गया। संयुक्त प्रान्तीय परिषद् के सम्बन्ध में पुनः विचार किया जावेगा।

सत्यार्थ प्रकाश-दिवस

प्रत्येक आर्य कुमार सभा अपना मास का अन्तिम साप्ताहिक अधिवेशन सत्यार्थ प्रकाश दिवस रूप में मनाया करें।

वैदिक धर्म विशारद परीक्षायें

अ० भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की धार्मिक परीक्षायें इस वर्ष २१ जनवरी सन् १९४५ ई० को भारत के लगभग ११० केन्द्रों में निर्विघ्न सफलता पूर्वक समाप्त हो गई। इस वर्ष सिद्धान्त सरोज परीक्षा में १८८६, सिद्धान्त रत्न परीक्षा में ६५०, सिद्धान्त भास्कर परीक्षा में २२७ तथा सि० शास्त्री परीक्षा में ११४ परीक्षार्थी सम्मिलित हुवे।

दीवानन्दयाल कार्यालय मन्त्री
अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्
दीवान हाल देहली।

आर्य महिलाओं को चेतावनी

[लेखिका—श्री प्रतिभा कुमारी जी हिन्दी प्रभाकर चन्दौसी]

परीक्षा का समय

बहिनो! आर्य समाज क्रान्ति का धधकता हुआ गोला है यह अन्याय अत्याचार तथा दुराचार रूपी तृण समूह को भस्म करने का दावाग्नि बन गया है। अब इसकी परीक्षा का समय है। ऐसे शुभ अवसर बडे सौभाग्य से प्राप्त हुआ करते हैं। जो ऐसे समय में पीछे हटते हैं उनके समान अधम तथा पापी कोई नहीं हो सकता। सुपूत तथा शूरवीर तो ऐसे अवसरों की खोज मे रहते हैं कि कब ऐसे शुभ अवसर मिलें और हम अपने प्राणों की आहुति दें। वे वीरांगनाएं धन्य हैं। जो मातृ भूमि तथा बलिवेदी पर अपने नेत्रों के तारे लालों का सहर्ष चढ़ाती हैं। उस जन्म को धिक्कार है जिसमें जीवन जागृति नहीं सच है.—

वह व्यर्थ ही जन्मा जग या देश का जिसने नहीं।
जातीय जीवन की झलक जिसमे कभी आई नहीं

जब मृत्यु आती है तो कहीं नहीं छोडती। चाहे सात तालों में बन्द हो जायें। रक्षा के सारे साधन व्यर्थ हो जाते है ठीक कहा है —

आस पास योधा खडे, सबै बजावें गाल।
मध महल से ले चला,ऐसा काल कराल॥

आज समस्त संसार मे क्रान्ति की भयंकर अग्नि धधक रही है। फिर भला भारतवर्ष इससे अछूता कैसे रह सकता है? हमारे परम सौभाग्य से आज समाज मे भी वही क्रान्ति दृष्टि गोचर हो रही है। एक दिन इसी क्रान्ति ने हैदराबाद के पाशविक अत्याचारों का अन्त किया था।

आज कल आर्य समाज शैशवावस्था से निकल कर युवावस्था को प्राप्त हो रहा है। इसलिये कम से कम मैं तो इस क्रान्ति का होना परम आवश्यक समझती हू क्योंकि —

क्रान्ति नहीं तो यौवन फीका।
शान्ति नहीं तो जीवन फीका॥

सत्य है। बच्चों की रक्षा भगवान् ही करते हैं। उसी प्रकार आर्य समाज जब तक बच्चा रहा भगवान् ने हर प्रकार से उसकी रक्षा की। यों मरना जीना तो जीवन के साथ लगा हुआ है ही। अब युवावस्था आ जाने पर भगवान् ने उसके कन्धों पर भार डाल दिया। अत हमे घबराना नहीं चाहिये। क्योंकि यह तो दैविक देन है। अन्यथा मुसलमानों के हृदय में आर्यसमाज के प्रति जो बवंडर उठ रहा है वह इससे पूर्व भी उठ सकता था। परन्तु ऐसा नहीं हुआ क्योंकि समाज का शैशवकाल था तथा रक्षक भगवान् थे।

वास्तव मे इस समय माया मोह पर लात मार कर जीवन की आहुति देने वालों की प्रतीक्षा है। क्योंकि देश का गौरव तथा स्वाभिमान इसी पर निर्भर है। कहा भी है.—

जिसको न निज गौरव,
तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा है,
और मृतक समान है।

यह धर्म रूपी अग्नि खरे तथा खोटे सुवर्ण की परीक्षा है। कायरों की भांति १०० वर्ष जीते रहने की अपेक्षा शूरवीरों की भांति एक दिन जीना श्रेयस्कर है। सच है —

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।
सामान सौ बरस का पल की खबर नहीं॥

अन्त मे मैं अपनी बहिनों से प्रार्थना करती हूँ कि स्त्री जाति इस विषय में उदासीन रहकर अपनी जाति पर कलङ्क न लगावे बहिनों आओ धर्म की बलिवेदी पर अपनी आहुति चढ़ा कर अपने रमणी जीवन को सार्थक करलें

क्या कर नहीं सकती कहीं,जो शिक्षिता हों नारियाँ।
रण राज्य और स्वधर्म रक्षा कर सकीं सुकुमारियाँ॥

सत्यार्थ प्रकाश गान,

रचयिता श्री ब्रह्मदेव गुप्त बजार विरिया गंज तिलहर (शाहजहाँपुर) यू० पी०

विजयी प्रिय सत्यार्थ हमारा ॥
ज्ञान का मार्ग दिखाने वाला, प्रेम का पाठ पढ़ाने वाला।
मानव जाति जगाने वाला आर्य जाति का ग्रन्थ यह प्यारा ॥
विजयी प्रिय सत्यार्थ हमारा ॥१॥

इसकी रक्षाहित सब मिल कर, कदम बढ़ाओ आगे बढ़कर।
कर पर प्यारा ग्रन्थ यह रखकर- यह ही हो धन धाम तुम्हारा ॥
विजयी प्रिय सत्यार्थ हमारा ॥२॥

इसी ग्रन्थ को लेकर कर में, भर दो वेद ज्ञान जग भर में।
वैदिक धर्म फैले घर घर में गूंज उठे फिर यह जग सारा ॥
विजयी प्रिय सत्यार्थ हमारा ॥३॥

चाहे सूली पर चढ़वादो-चाहे फांसी पर लटका दो।
चाहे जेल हमें पहुँचादो-मिटा कभी नहीं मिटने हारा ॥
विजयी प्रिय सत्यार्थ हमारा ॥४॥

इसकी लाज न जाने देंगे-अपने प्राणों की बलि देंगे।
दुनिया को यह दिखला देंगे, हमको प्राणों से भी प्यारा ॥
विजयी प्रिय सत्यार्थ हमारा ॥५॥

पाठ करो नित इसका भाई-चाहो अपनी अगर भलाई।
यही तुम्हारी है चतुराई-अमर ग्रन्थ उस ऋषि का प्यारा ॥
विजयी प्रिय सत्यार्थ हमारा ॥६॥

[पाठक इसके भाव की ओर अधिक ध्यान दें। आर्य युवकों की भावना इस में अङ्कित है] स०

प्रस्तुत हिन्दू कोड के सम्बन्ध में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली का मत

८-२-४५ को हिन्दू कानून सुधार उपसमिति द्वारा स्वीकृत

१ यह सभा राव कमेटी के कार्य का इस कारण स्वागत करती है कि हिन्दू कानून नजीरों वा केस ला के भार से इतना दब चुका है कि हिन्दू कोड का बनाया जाना बहुत आवश्यक हो गया था।

२. हिन्दू लॉ कमेटी का यह प्रयत्न भी बहुत प्रशंसनीय है कि उसने हिन्दू कानून के मिताक्षरा दाय भागादि पृथक् २ सम्प्रदायों का समन्वय करके भारत वर्ष की समस्त हिन्दू जनता के लिये एक प्रकार के कानून का मसविदा तैयार किया है।

३ (क) इस सभा को खेद है कि यह अत्यावश्यक विषय ऐसे समय पर धारा सभा मे रखा गया जबकि भारत के बहुत से प्रमुख नेता जिन में कानून के विशेषज्ञ भी सम्मिलित हैं जेलों मे बन्द होने के कारण इस कार्य मे भाग लेने अथवा अपने विचारों को प्रकट करने मे असमर्थ हैं। इस सभा को प्रसन्नता होगी यदि यह कार्य तब तक के लिये स्थगित कर दिया जाये जब तक कि उक्त नेता जेलों से मुक्त न हो जायें तथा देश की परिस्थिति मे शान्त वातावरण उत्पन्न न हो जाये।

(ख) इस मसौदे के विचार को स्थगित करना इस लिये भी इस सभा की सम्मति में उचित होगा कि इस मसौदे का प्रकाशन अभी तक केवल अंग्रेजी में होने के कारण सामान्य हिन्दू जनता को पूर्ण रीति से विचार करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। इस सभा को हर्ष है कि इस कोड का हिन्दी अनुवाद संयुक्त प्रान्तीय सरकार ने हाल मे प्रकाशित कराया है इसी प्रकार देश की अन्य मुख्य २ प्रान्तीय भाषाओं में भी उसका अनुवाद होना उचित होगा जिसके लिये समय की अपेक्षा है।

४ यह सभा इस बात पर भी बल देना चाहती है कि जब कभी यह मसौदा धारा सभा मे विचारार्थ प्रस्तुत किया जाये तो उस पर हिन्दू सदस्यों का ही मत देने का अधिकार हो अन्य मतावलम्बी सदस्यों को नहीं जैसा कि अन्य ऐसे विषयों मे, प्राय होता रहा है।

यह सभा इस सिद्धान्त को भी साग्रह प्रकट करना उचित समझता है कि ऐसे महत्वपूर्ण धर्म सम्बन्धी मसविदों की तैयारी में केवल हिन्दू विशेषज्ञों को ही भाग लेना उचित है।

५ यह सभा मसविदे के विस्तार में न जा कर अभी उसके मुख्य अंशों पर अपना मत प्रकट करना पर्याप्त समझती है।

६ दाय भाग के विषय में सभा इस बात का सहर्ष स्वागत करती है कि इस मसविदे में स्त्रियों के अधिकार को उन्नत करने का प्रयत्न किया गया है। स्त्रियों का सम्पत्ति पर सीमित अधिकार केवल अदालतों के निर्णयों की उपज है और उसका वेदों और स्मृतियों में कोई आधार नहीं पाया जाता। यह प्रसन्नता की बात है कि इस मसविदे में इस बात को बिल्कुल हटा दिया

गया है और स्त्रियों को अपनी सम्पत्ति पर पुरुषों के समान पूर्ण अधिकार दिया गया है। यह बात भी सन्तोषजनक है कि अनेक निकट सम्बन्धियों को जिन्हें पहले दायभाग में कोई अधिकार प्राप्त नहीं था अब दे दिया गया है।

७ परन्तु इस मसविदे में पुत्र के होते हुये भी पुत्री को पैतृक सम्पत्ति मे जो पुत्र से आधा भाग देने का प्रस्ताव रक्खा गया है सभा उसका घोर विरोध करती है। पुत्र के अभाव में पुत्री वा पुत्री की सन्तान को दाय भाग मिलना उचित और न्याय सगत ही है किन्तु पुत्र के होते हुये उसे दाय भाग देना किसी प्रकार भी उचित और न्याय युक्त नहीं क्योंकि यह स्पष्ट है कि स्त्री को अपने पतिकुल में अधिकार मिलता है। पैतृक सम्पत्ति में भी उसका अधिकार रखने से यह पुत्रों के साथ एक प्रकार से अन्याय हो जाता है। इसका यह कुपरिणाम भी बहुत अधिक सम्भव है कि पारिवारिक वैमनस्य में वृद्धि हो जाये क्योंकि बहिनें जो अब तक सब हिन्दू परिवारों में बड़े प्रेम की दृष्टि से देखी जाती हैं भाइयों में प्रतिस्पर्धिनी होने के कारण भय का कारण बन जायेंगी तथा भाई बहनों में अनावश्यक मुकद्दमे बाजी बढेगी। लड़कियां अथवा उनके पतियों को साझीदार बनाने से व्यापारिक दृष्टि से भी बहुत हानि की सम्भावना है।

८ भाग २ धारा २१ मे जो मनुष्य हिन्दू धर्म को छोड़कर अन्य मत स्वीकार कर लेवें उसकी सन्तान को दायभाग से वंचित किया गया है। इस सभा की सम्मति मे वे व्यक्ति स्वयं भी जिन्होंने हिन्दू धर्म का परित्याग करके अन्य मत स्वीकार किया है दायभाग से वंचित किये जाने चाहिये जैसे कि धर्म शास्त्रों में विधान है।

९. विवाह के विषय में यह सभा इस बात पर हर्ष प्रकट करती है कि अन्तर्जातीय विवाहों पर इस मसविदे मे कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया है सिविल मैरेज मे तो इस प्रकार के किसी प्रतिबंध का न होना स्पष्ट ही है संस्कार की विधि से किये विवाह (Sacramental marriage) मे यह विधान किया गया है कि यदि ऐसे विवाह मे वर वधू भिन्न २ जातियों के हों तो इसके कारण वह विवाह अवैध न होगा जिससे अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन मिलता है। यह सभा इस सुधारात्मक विधान का विशेष रूप से अभिनन्दन करती है क्योंकि आर्यसमाज जन्ममूलक जाति भेद को वेद शास्त्र के विरुद्ध और समाज के लिये अत्यन्त हानिकारक मानता है और इसी कारण उसने विशेष उद्योग करके आर्य विवाह ऐक्ट पास करवाया था।

(ख) इस सभा का मत है कि सगोत्र विवाह शास्त्र सम्मत नहीं।

१० यह सभा इस बात का प्रशंसनीय समर्थन करती है कि एक के जीवित रहते समय में अन्य पति विवाह तथा बहु-विवाह को इस मसविदे में वर्जित किया गया है।

११ विवाह विच्छेद के सम्बन्ध में सभा का मत है कि वैदिक विवाह विधि मे उसको कोई स्थान नहीं दिया गया और इसलिये यह सभा उसे प्रोत्साहन देना उचित नहीं समझती परन्तु वर्तमान समय की सामाजिक परिस्थिति को ध्यान में रखते हुये यह सभा उन विशेष अवस्थाओं में जिनका वर्णन भाग ४ धारा ३० में किया गया है एक विवाह विषयक नियम १० का अपवाद मानकर द्वितीय विवाह करने का सुझाव प्रस्तुत करती है।

गंगाप्रसाद एम० ए०
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

इस्लामी साइन्स और सत्यार्थप्रकाश

(ले०—डाक्टर सूर्यदेव शर्मा सिद्धान्तशास्त्री, साहित्यालकार, एम ए (साहित्य, इतिहास, सस्कृत) एल टी.डी लिट अजमेर)

"सार्वदेशिक" के गत कुछ अकों मे मैंने इस्लामी स्वर्ग, खुदा और इस्लामी सिद्धान्तों का जो विवेचन सत्यार्थ-प्रकाश के चौदहव समुल्लास मे किया गया है उस पर तुलनात्मक दृष्टि से कुछ प्रकाश डाला था आज हमे यह देखना है कि इस्लामी सिद्धान्तों में, जिनकी समालोचना सत्याथ-प्रकाश में की गई है कितने ऐसे हैं जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर पूरे उतरते हैं ? और स्वामी दयानन्द ने उनकी कोई अनुचित आलोचना तो नहीं की ?

स्वामी जी महाराज ने चौदहवें समुल्लास के अन्त मे लिखा है अब इस कुरान के विषय को लिख कर बुद्धिमानों के सम्मुख उपस्थित करता हूँ कि यह पुस्तक कैसा है ? मुझ से पूछो तो यह किताब न ईश्वर, न विद्वान् की बनाई और न विद्या की हो सकती है।" इसी प्रकार कई स्थानों पर समीक्षा करते हुये स्वामी जी ने लिखा है कि कुरान का कर्त्ता न तो भूगोल जानता था और न पदाथ विज्ञान से परिचित था। (समीक्षा न० ८८) इसी प्रकार समीक्षा न० ९४ मे लिखा है —"मुसलमानों का खुदा पदाथ विद्या कुछ भी नहीं जानता।" अब देखना है कि स्वामी जी का कथन कहाँ तक सत्य है ?

स्वामी जी ने निम्नलिखित २१ स्थानों पर इस्लामी पदार्थ विज्ञान की समीक्षा की है.—

(१) पृथ्वी को बिछौना और आसमान की छत को बनाया (समीक्षा ७) कुरान के अग्रेजी अनुवाद मे मौ० मोहम्मदअली एम० ए० ने कुरान २-२१ मे बिछौना का अथ Resting place और छत का अर्थ Structure करके बात का टालना चाहा है जो बिल्कुल असगत है।

(२) बहिश्त में शराब शहद की नहरें, हूरों और खूबसूरत लड़कों का वर्णन अनेक स्थानों पर है जिनकी समीक्षा स्वामी जी ने न० ६, ५५, १३२, १४०, १४१ और १५० में की है। इस बहिश्त का मजेदार वर्णन मैं अपने पूव लेख में कर चुका हू। पाठक वहीं देख लें। हाँ दुनिया की सबसे बड़ी २०० इच व्यास वाली दूरबीन द्वारा माउट विलसन पर से भी यदि कोई मुसलमान विज्ञान वेत्ता कुरान की इस बहिश्त का पता लगाकर हमको बतायें तो बड़ी कृपा होगी।

(३) मूसा ने अपना असा (डडा) पत्थर पर मारा और उस मे से १२ चश्मे निकले (समीक्षा २३) मौलाना साहब का कुरान २-६० का अनुवाद देखिए। पृष्ठ २३ पर लिखते हैं:—"Smite the rock with thy Staff so there flowed from it twelve springs" पत्थर पर डडा मारकर पानी निकालना इस्लामी विज्ञान का नमूना है। शायद पत्थर मे H 20 हाइड्रोजन और औक्सीजन गैसें अल्लाह ने छिपा रखी थी जिस से कि पानी बना करता है।

(४) समीक्षा नं० २७ और ४० में लिखा है कि खुदा कहता है कि 'होजा" बस हो जाता है। यह कैसे ? खुदा का हुक्म किसने सुना और कहने मात्र से कुछ कैसे बन गया ? यह कौन सा विज्ञान है ?

(५) सूर्य को अल्लाह पूर्व से लाता है (समीक्षा ४२)

(६) पहाड़ों पर से बुलाने मात्र से जानवरों का दौड़ कर आना (समीक्षा ४३)

(७) पृथ्वी ने बात सुनी और पानी निगल गई। (समीक्षा ६१)

(८) बिना खम्भों के आसमान खड़ा किया (समीक्षा ६४-१५४)

(९) सूर्य और चाँद सदा फिरने वाले किये और वे अल्लाह को सिजदा करते हैं (समीक्षा ६७-११२)

उपरोक्त बातों मे जड़ पदार्थों का सिजदा करना और आज्ञा का सुनना तथा सूर्य का पूर्व से लाना आदि ऐसी बातें हैं जो सरासर तर्क और विज्ञान के विरुद्ध हैं। इन पर विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं है

(१०) ६ दिन में खुदा ने पृथ्वी और आसमान बनाये (समीक्षा ७० और ८८) इस बात को असभव जानकर मौलाना साहब ने ६ दिन का अर्थ Six periods कर डाला है जो कुरान ७-५४ में ही नहीं किन्तु १०-३, १३ २, २० ५ आदि सात स्थानों पर दिया गया है। भला एक जगह तो केवल कुन" कहने से दुनिया बन गई और यहां Six-periods में दुनिया बनाई यह कैसी असगत बात है ? और किस विज्ञान से सिद्ध है ? (शेष अगले अङ्क में)

प्रचारार्थ

सार्वदेशिक सभा के नवीन प्रकाशन

(१) सत्यार्थप्रकाश की सार्वभौमता— इसमें सत्यार्थप्रकाश की रचना का उद्देश्य महर्षि दयानन्द के अमर शब्दों में बताकर विविध भाषाओं में उसके अनुवादों की विस्तृत तालिका प्राप्त सूचनाओं के आधार पर दी गई है मूल्य -)

(२) Maharshi Dayananda and Satyarth Prakash—Tributes paid by many prominent persons of the east and the west

Compiled by Pt Dharma Deva Ji Vidya Vachaspati Price—As 8 Reduced price up to 31st March As 6 जैसे कि पुस्तक के नाम से ही स्पष्ट है इस में स्व० श्री रामातीर्थ, रेवरेन्ड ऐन्ड्रूज प्रो० सिड्नी वेब सर सैयद अहमद खां डा० रवीन्द्र नाथ ठाकुर श्री अरविन्द आदि सुप्रसिद्ध पाश्चात्य और पौरस्त्य विद्वानों द्वारा महर्षि दयानन्द और सत्यार्थप्रकाश के प्रति श्रद्धाञ्जलियों का सग्रह है।

(3) Independence of Satyarth Prakash By Prof Sudhakar Ji M A Secretary Sarvadeshik Sabha Price -)

विषय नाम से ही स्पष्ट है। वर्तमान आन्दोलन के स्वरूप और महत्त्व को समझने के लिए यह छोटीसी पुस्तक प्रत्येक अंग्रेजी जानने वाले के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

(४) हम और हमारे समालोचक— अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी द्वारा मिर्जा गुलाम अहमद साहेब क़ादियानी की पुस्तक से सकलित—कुरान में अन्य मतावलम्बियों के लिये प्रयुक्त अपशब्दों की सूची सहित (हिन्दी में) मूल्य -)

(५) We and our critics—fair criticism is no slander By Mirza Gulam Ahmad of Kadian—Translated by Pt Ganga Prasad ji upadhyaya, M A Price -)॥

मँगवाने में शीघ्रता करें अन्यथा पछताना पड़ेगा। मिलने का पता—

कार्यालय सार्वदेशिक सभा, बलिदान भवन देहली

पुस्तक समीक्षा—संक्षिप्त विमर्श

(१) सत्यसागर अथवा सत्यार्थप्रकाश का पद्यानुवाद अनुवादक श्री गदाधरप्रसाद जी वानप्रस्थी लखनऊ मिलने का पता—संयुक्त प्रान्त आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय हिल्टन रोड लखनऊ मूल्य १॥)

यह सत्यार्थ प्रकाश का ब्रज भाषा में अनुवाद है जो रामायण की तरह दोहों चौपाइयों में किया गया है। इसके चार संस्करणों में १० हजार प्रतियां छप चुकी हैं। यह अनुवाद संयुक्त प्रान्त मध्य प्रदेश बिहार और मध्य भारत के नरनारियों के लिये बड़ा उपयोगी है। आप प्र[illegible] राथ भी इस से अच्छा सहायता [illegible] है।

(२) सामान्य सनातनी संस्कार पद्धति अर्थात् वैदिक हिन्दू [illegible] सनातन संस्कार रहस्य लेखक—डा० [illegible]चन्द्र जी मुनि प्रकाशक—श्री [illegible] मुरादाबाद मूल्य १)

यह पुस्तक महर्षि दयानन्द कृत संस्कार विधि के आधार पर उन लोगों के लिये लिखी गई है जो आर्य समाज में प्रविष्ट नहीं हुए पर उदार सुधारवादी 'हिन्दू' हैं। आजकल के पौराणिक संस्कारों में प्रचलित अनेक बुरी प्रथाओं और मृतक श्राद्धादि का इस में खण्डन किया गया है। मुख्य २ मन्त्रों के अर्थ भी किये गये हैं। यह वैदिक संस्कार विधि का स्थान तो नहीं ले सकती पर उसकी ओर साधारण पौराणिक जनता को लाने में सहायक हो सकती है।

(३) राष्ट्र माता कस्तूरबा (स्मृति काव्य) लेखक—'विकल' कवि प्रकाशक—मां मन्दिर धनोरा मुरादाबाद मू० १)

'विकल' जी बड़े भावुक राष्ट्र वादी कवि हैं। इनके अन्दर देश भक्ति कूट कूट कर भरी हुई है। इस काव्य के अन्दर राष्ट्र माता कस्तूरी बाई गांधी जी के जीवन की अनेक घटनाओं और भावनाओं पर काव्यमय उद्गार प्रकट किये हैं जो सहृदय पाठक पाठिकाओं पर गहरा प्रभाव छोड़े बिना नहीं रह सकते। इसके अनेक अंश विकल जी ने सेवा ग्राम में महात्मा गान्धी जी को भी पढ़ कर सुनाये थे। राष्ट्रीय भाव तथा भाषा की सरलता सरसता और ओजस्विता की दृष्टि से यह पुस्तक अभिनन्दनीय है॥ 'ध्रुव'

The Satyarth-Prakash and its Fourteenth Chapter

(*By Dr S Dutt M A Ph.D Reader University of Delhi*)

The *Satyartha Prakash* is not a scriptural work, (in the sense of a Revealed book like the Veda) but by the adherents of the Arya Samaj who number over 4 millions all over India, it is cherished as a sacred book, the 'Bible' of the Samaj

The movement of Hindu reformation in our country during the last century threw up on its crest two puissant personalities who have influenced deeply and pervasively Hindu thought culture and society of our time Raja Ram Mohan Roy (1772 1833) and Swami Dayanand Saraswati (1824 1883) the founders respectively of the Brahmo Samaj and the Arya Samaj Both of them directed their reformatory energies mainly against Hindu idol worship and the post Vedic and ritualistic accretions of Hinduism But while Brahmoism was eclectic and rationalistic in conception the doctrines of the Arya Samaj were founded on a Return to the Vedas'

Swami Dayanand, says Aurobindo Ghosh, 'seized justly on the Veda as India's Rock of Ages and had the daring conception to build on what his penetrating glance perceived in it a whole education of youth, a whole manhood, a whole nationhood." This ideal reconstruction of Hindu life, religion and society on the original cultural and spiritual foundations of the Vedas is set forth in Part I of the Swami's *magnum opus*, the *Satyartha Prakash* published in 1875

Much of Swami Dayanand's missionary career was spent in polemical and theological controversies with *pundits* and priests of the orthodox school, which sometimes brought down fanatical persecution on his head He was undobtedly a great orator scholar and writer but to his genius there was also a pronounced constructive side The return to the Vedas was not a mere revivalist sentiment or passion with him, but a pragmatic and practical idea on which a whole scheme of individual and national life could, as the Swami believed, be securely based It is the impress of this constructive side of his genius that raises the *Satyartha Prakash* to the rank of a great creative and epoch-making book of our age

The work was undertaken in 1873 when the Swami was staying at Aligarh with his devoted admirer and disciple Raja Jaikishan Dass, then Deputy Collecter of the city. It was dictated to an amanuensis, Pundit Chandra Shekhar by name, in Hindi and the first edition wa published in 1875 at the entire cost of the Raja But the author himself had not seen the work through the press with the result that, when published, it was discovered that passages had been interpolated into it in support of the Hindu ceremony of *Shraddh* and the eating of flesh The fact being brought to the Swami's notice, he ordered the printed copies to be destroyed, expunged the offending passges, corrected and

revised the whole work, and brought out a second edition with a definitive text This lat r edition has gone through translation into almost all the vernacular langu ges of India as well as into three European languages, viz, Eng ish, French and German

The work begins with an Introduction in which the author states "My chief aim in writing this book is to unfold Truth, whi h consists in expounding truth and error' This is followed by fourteen chapters, the last four being a cursory survey and cr ticism strictly from his own poi it of iew of the erroneous doctrines of other rel gions This was in complete conformity with his own declared notion of unfolding Truth' which included the exposition of "error as error also The work concludes with a summary statement of the Swami s beliefs in matters of religion and theology Besides the general ntroduction there is an introduction to each of the last four chapters in which the comparative cri icism of other religions is set forth

The *Satyartha Prakash* is not in the form of a thesis or systematic treatise, and the subject matter in the first ten chapters is somewhat miscellaneous and varied embracing matters purely theological like the 'exposition of *Om*, a discourse on the nature of Godhead and the Vedic conceptions of 'creation sustenance and dissolution of the Universe', and a dissertation on the theories of 'Knowledge and Ignorance Emancipation and Bondage' In the remaining chapters the author is primarily concerned with devising a system of discipline calculated to give a true direction to Hindu life and education They treat of the upbringing of children, of student life and curricula of studies of marriage and married life of asceticism and renuciation, There is also a chapter on *Raja dharma* or Government, which Sir Valentine Chirol once seized upon as being of sed tious tendency, although it is nothing more than a summary presentatio , with appropriate extra ts and references of the ancient Hindu id al of kingship and constituti nal government

Controversy however, has centred more acutely on the last four chapters, specially the concluding one on t e Qoran and Mahammadism It is a very recent controversy, fostered mostly by the Moslem League, and the foll wing facts bearing upon it are taken from the printed maife ts issued from Delhi by the President of the International Aryan League It appears that a certa n journal of Lahore first raised the cry of proscribing the *Satyartha Prakash* and a Moulavi warned the Sind Government, that, unless this was done the Moslems all over India would be compelled to start a *Satyagraha* The agitation crystallised itself in a Resolution, moved at a meeting of the Punjab Moslem League held in Lahore on 13th August, 1943, urging the Government of India and the Governments of the Moslem majority provinces to proscribe the fourteenth chapter of the work, and it was at the same meeting that the Hon'ble Mr Gazdar, then Home Minister of the Sind Goverment, is reported

The question of the merits of Swami Dayanand's criticism of Mahammadism or of any other religion for the matter of that, is a perfectly irrelevant one The methods of historical or sociological criticism, which seek to understand a religious or theological doctrine and interpret it in relation to its proper human and temporal background were not developed in his day and were in any case not available to him He was a passionate believer in the Vedas as divine revelation and based thereon his own conception of God and his attributes It was open to him to judge of the doctrines of other religions only from the point of truth as he had realised it and the following, samples illustrate his critical attitude

(i) "The true religion with God is Islam' (Quoran III, 17) *Comment* Is God the Lord of the Mahammadans alone Did not divine religion exist at all before thirteen hundred years back ? It shows that the Quoran is not the word of God but of some bigot

(ii) "But God loveth not disorder O Believers! Enter completely into the true religion Ibid, 202, 204)

Comment Had not God loved disorder, why should he have prompted them (the Muslims) to fight and befriended the quarrelsome Mohammadans? Is God pleased with one only when he embraces the Mohammadan religion ? If so, He is partial to the Mohammadans He connot therefore be the Lord of the Universe. This clearly shows that neither the Quoran is the word of God, nor is the God described there in the true God

There are comments which are couched in stronger language but epithets of condemnation are 'absurd, ridiculous', 'ignorant', etc, which, from the author's point of view, cannot be said to lack some justification

By the very nature and purpose of his calling, the apostle of a religion is unable to subscribe to the modern *laissez faire* principle in matters of religion The zealot of a faith belies himself if he does not exalt his own over those of others, and the outstanding religious books of the world are not free from attacks on men and things contrary or antagonistic to their creed These books do not lend themselves to judgment and evaluation by our petty and formal standards of logic or reasonableness Will a Sanatani Hindu be justified in demanding the expurgation of the Bible because of its vehement condemnation of idols and images as 'abominations, or a non Mohammadan in asking for the proscription of the Holy Quoran because of such passages against the infidels as the following ?

(i) "Mohammad is the apostle of God, and those who are with him are fierce against the unbelievers but compassionate towards one another" (Sura 48, Raku, 4, Ayat 29)

(ii) O Prophet, attack the infidels (with arms) and the hypocrites (with arguments),

to have declared that the Sind Government, after taking opinion of their legal advisers, had referred the matter to the Government of India, as it was an all India question, and that the book could be legally proscribed as it was not a scripture The Government of Sind itself finally proceeded to proscribe Chapter XIV of of the Satyartha Prakash and put a ban on its publicati n, which result ed in unsuccessful adjournment motion by Bhai Paramanand, ex-President of the Hindu Mahasabha, in the *last* session of the Central Legislative Assembly in Delhi Thus this great work of truly crea tive power and permanent value has come after nearly seventy years of its publication back to the public eye through the sensational atmosp here of communal controversy

Let us turn briefly to the con troversial chapters which form Part II of the work, the supplementary part in which the author in unfold ing the Truth carries out his avow ed purpose of exposing 'error as arror Most of this part is cast in the form partly of catechism and partly of succint comments on the theological doctrines reviewed Chapter XI deals with the various forms and branches of Hinduism or Indian religions, Chapter XII with Buddh ism and Jainism, Chapter XII with the Bible and Christianity, and, lastly Chapter XIV with the Quoran and Mahammadanism The treat ment is the same throughout the author trying from his point of view to test the doctrines of other religions in the light of reason, common sense, logic and facts of knowledge and science. There is no special emphasis on or special condemnation of any one of the religions criticised and it is worthy of note that the advocates of no other religion than Mahammadism have ever thought of moving government to proscribe or suppress the work or any of the four chapters in question

That it was far from the author's intention to rouse feeling against any of th r ligions criticised and that his first and last appeal was only to int llect and reason will be abundantly clear from the words of the Introduction to the much maligned Chapter XIV "It is not our purpose to falsely condemn this or any other religion On the contrary what we aim at is that whatever is true should be recognised as such and whatever is false should be condemned as such, so that no one should be in a posi tion to palm off untruth for truth or hinder the progress of truth One is of course free to accept truth or for the matter of that even refuse to do so, after it has been published, compulsion being impossible in such matters Good men, will, as a rule, after they have realised their merits and demerits, imbibe good qualities and reject bad ones and eradicate bigotry and prejudice wherever found Who does not know something of the prodigious amount of evil that has been wrought by bigotry ?' This is certainly the language of one who would argue and persuade rather than of a fanatic who would send infidels to Hell or threaten them with dire consequences in this life and the next.

and treat them with severity, their abode shall be Hell and ill journey (thither)" (Sura 69, Raku 2, Ayat 9)

(iii) "Verily God hath cursed the infidels, and hath prepared for them a fierce fire wherein they shall remain for ever. They shall find no patron or defender Their faces shall be rolled in hell fire " Sura 33, Raku 8, Ayat 64)

(iv) 'O true believers, take not the Jews or the Christians for your friends they are friends to one another but who so among you taketh them for his friends, he is surely one of them" (Sura 5, Raku 8 Ayat 51).

(v) 'O true believers, verily the idolators are unclean Let them not therefore come near unto the holy temple after this year and, if ye fear want by the cutting off of trade and communication with them, God will enrich you out of his abundance" (Sura 9, Raku 4, Ayat 28)

(vi) "When the months wherein you are not allowed to attack them shall be past, kill the idolators wheresoever ye shall find them and take them prisoners and beseige them, and lay in wait for them in every convenient place But if they shall repent and observe the appointed times of prayer and pay the legal alms dismiss them freely, for God is gracious and merciful ' (Sura 9, Raku 1, Ayat 5)

(vii) 'Whoever followeth any other religion than Islam it shall no be accepted of him and in the next life he shall be of those that perish (Sura 31, Raku 9, Ayat 44)

There is nothing in Chapter XIV of the *Satyartha Prakash* to parallel such threats and denunciations

To any impartial observer, the recent ban on the work placed by the Moslem League Governmrnt of Sind must appear to be a foretaste and prepublished sample of the sort of treatment which the Hindu minorities can expect under the proposed Pakistan regime

सम्पादकीय

अ० भा० रेडियो विभाग की निन्दनीय नीतिः

अखिल भारतीय रेडियो विभाग की पक्षपात पूर्ण और हिन्दी विरोधिनी नीति के सम्बन्ध मे हम पहले भी सम्पादकीय स्तम्भों में विचार प्रकट कर चुके हैं। गत लगभग १ वर्ष से इस नीति के विरुद्ध हिन्दी साहित्य सम्मेलन आदि संस्थाओं की ओर से जो सगठित आन्दोलन (बहिष्कार सहित) इस निन्दनीय नीति को परिवर्तित कराने के उद्देश्य से हो रहा था यह आशा की जाती थी कि रेडियो विभाग के उच्च अधिकारी उस पर निष्पक्षपात दृष्टि से विचार करके जनता के असन्तोष को दूर कर देंगे किन्तु गत १७ फ़रवरी को इस विषय मे जो सरकारी प्रेस विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है वह सर्वथा असन्तोष जनक है। उसमे कहा गया है कि 'हिन्दू और उर्दू में पृथक् २ रूप से समाचार, सवाद आलोचनाए तथा घोषणाए विस्तारित नहीं की जाएगी। सरल भाषा को व्यवहार मे लाया जायगा जिसे हिन्दुस्तानी भाषाभाषी प्रान्तों के अधिकाश श्रोता समझ सकें।" (२) जब कोई उपयुक्त हिन्दुस्तानी शब्द न मिले तब उसका चुनाव फ़ारसी, अरबी अथवा अग्रेजी में से किया जायगा। इत्यादि

उपयुक्त विज्ञप्ति से हिन्दी प्रेमी जनता का असन्तोष दूर होने के स्थान में बढ़ गया है। यह कितने आश्चर्य और अन्याय की बात है कि आवश्यक्त नुसार फ़ारसी, अरबी और अग्रेजी से शब्दों का चुनाव किया जाएगा सस्कृत से नहीं जो सभी भारतीय भाषाओं की तथा अनेक विदेशीय भाषाओं की भी जननी है। यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि हिन्दुस्तानी के नाम से अब तक जो धाधली रेडियो विभाग ने मचा रक्खी है और विशुद्ध हिन्दी की जो हत्या कर रक्खी है वह आगे भी जारी रहेगी। इस धाधली और उर्दू पक्षपातिनी नीति को दूर करने का यही एक मात्र उपाय है कि हिन्दू और उर्दू में समाचार, घोषणा भाषण, तथा कवितादि को पृथक् २ विस्तारित किया जाए जब तक रेडियो विभाग के अधिकारी इस उचित माग को पूरा नही करते तब तक बहिष्कार सहित सगठित आन्दोलन सभी हिन्दी प्रेमी सस्थाओं की ओर से जारी रहना चाहिये।

महात्मा गान्धी जी का परामर्श—

गत फरवरी मास में महात्मा गान्धी जी के प्राइवेट् सेक्रेटरी श्री नरहरि परेख ने गुजरात के एक पत्र गुजरात मित्र' के नाम एक पत्र में लिखा कि 'महात्मा गान्धी का विश्वास है कि सुधारवादी आर्य समाजियों को मूल सत्यार्थप्रकाश में उचित परिवर्तन कर देने चाहियें और उसमें दूसरे मतों पर जो आपत्तिजनक आलोचनाए की हैं उन्हें

निकाल देना चाहिये फिर साथ ही उसमें लिखा- "यद्यपि सत्यार्थप्रकाश के कुछ भागों के सम्बन्ध में महात्मा गान्धी जी का ऐसा विचार है तो भी सिन्ध सरकार द्वारा १४ वें समुल्लास पर लगाये प्रतिबन्ध के सम्बन्ध में उनकी यह सम्मति है कि वह लोगों के धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप है इसलिये अनुचित है। सिन्ध सरकार का यह प्रतिबन्ध किसी भी सुधारवादी के कार्य में बाधा उपस्थित करेगा और इसीलिये उसे लौटा लेना चाहिये।"

जहां आर्य जनता को इस बात पर सन्तोष है कि महात्मा गान्धी जी ने भी सिन्ध सरकार द्वारा लगाये सत्यार्थप्रकाश विषयक प्रतिबन्ध को अनुचित बताया है वहां उनके इस विषयक कारण और परामर्श से उसे कभी सन्तोष नहीं हो सकता। हमारा यह निश्चित दावा है कि सत्यार्थप्रकाश में जो मत मतान्तरों की आलोचना की गई है वह न केवल सुधार और सत्य प्रचार के पवित्र भाव से की गई है बल्कि वह अत्यन्त युक्तियुक्त और अन्य समालोचकों की भाषा की अपेक्षा कोमल भाषा में भी की गई है जैसे कि 'सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास का तुलनात्मक अनुशीलन' विषयक लेखमाला तथा अन्य लेखों में सप्रमाण सिद्ध किया गया है। महात्मा गान्धी जी की इस विषयक शङ्काओं को दूर किया जा सकता है किन्तु उनके इस परामर्श को आर्य जनता कभी नहीं स्वीकार कर सकती कि मूल सत्यार्थप्रकाश में सुधारक आर्यसमाजी परिवर्तन कर दें। ऐसा करने का किसी आर्य को अधिकार नहीं है। क्या महात्मा गान्धी जी के ग्रन्थों वा लेखों में परिवर्तन करने का किसी व्यक्ति को कोई अधिकार प्राप्त है और क्या किसी का उनकी अनुमति के बिना ऐसा करना कभी उचित कहा जा सकता है? ऐसे ही महर्षि दयानन्द जी की अमर कृति सत्यार्थप्रकाश में यदि कुछ तथा कथित सुधारवादी परिवर्तन करने लगें तो बड़ी भारी अव्यवस्था हो जाएगी अतः हम महात्मा गान्धी जी के व्यक्तित्व और उनके देशोद्धारार्थ किये गये त्याग के लिये—अत्यधिक आदर का भाव रखते हुए भी उन्हें यह स्पष्ट बताना चाहते हैं कि उनकी इस एकपक्षीय (क्योंकि अन्य मतावलम्बियों को उन्होंने अपने धर्म ग्रन्थों में संशोधन वा परिवर्तन का कोई परामर्श नहीं दिया) तथा हानिकारक परामर्श को आर्य किसी भी अवस्था में स्वीकार करने को उद्यत नहीं क्योंकि ऐसा करना विचार स्वातन्त्र्य पर कुठाराघात करना और भयङ्कर अव्यवस्था को जन्म देना होगा जो सर्वथा अवाञ्छनीय है। माननीय श्री घनश्यामसिंह जी ने अपने वक्तव्यों में सर्वथा स्पष्ट कर दिया है कि आर्य समाज के सामने सिन्ध में लगे सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध के हटाने का ही प्रश्न है सत्यार्थप्रकाश के संशोधन का नहीं। आशा है इससे उनके वक्तव्यों की अशुद्ध रिपोर्टों के आधार पर उत्पन्न असन्तोष दूर हो जायगा और समस्त आर्य हिन्दू जनता अपने इस पवित्र धर्म ग्रन्थ की रक्षार्थ सब प्रकार के त्याग और बलिदान के लिये अपने को कटिबद्ध रक्खेगी।

सत्यार्थप्रकाश और विचारशील मुसलमान— स्व० मौलाना मुहम्मद अली के विचार

विचारशील सुशिक्षित मुसलमान सत्यार्थ-प्रकाश के महत्व को कितना अनुभव करते हैं

इस बात को दिखाने के लिये हम स्व० मौलाना मुहम्मद अली एम० ए० के (जो महात्मा गान्धी जी के दाए हाथ समझे जाते थे) 'हमदर्द' अखबार के ६ फर्वरी १९२५ के अंक में प्रकाशित लेख के मुख्य अंश को जनता की सूचनार्थ उद्धृत करते हैं जो उन्होंने अब्दुलगफ्फूर (भू० पू० धर्मपाल) द्वारा सत्यार्थप्रकाश की जब्ती के आन्दोलन का प्रबल विरोध करते हुए लिखा था। उन्होंने लिखा कि "सत्यार्थप्रकाश स्वामी दयानन्द की मर्कतुल आरा तसनीफ (सर्वोत्तम रचना) है और स्वामी दयानन्द आर्यों के गुरु हैं। आर्य इनकी इस क़दर इज्जत करते हैं कि उससे बढ़कर किसी इन्सान की इज्जत उनके दिल में नहीं। इसी तरह उनकी तसनीफ (रचना) सत्यार्थप्रकाश की भी वे बेअन्दाज़ इज्जत (असीम आदर) करते हैं और इसको मज़हबी किताब (धर्म ग्रन्थ) का दर्जा देते हैं। हकूमत इस किताब को ज़ब्त नहीं कर सकती और ज़ब्त करके ख़ामख़ाह अपने सर पर मुसीबत (आपत्ति) मोल नहीं लेगी। हकूमत को क्या पड़ी है कि वह एक ऐसी ताकतवर जमायत का (शक्तिशाली सङ्घ) जैसे आर्यों की है बिला वजह (बिना कारण) अपना दुश्मन बना ले। बहर हाल एक नामुमकीन अकल और फ़िज़ूल ख़्वाहिश (व्यर्थ इच्छा) का इज़हार करके हिन्दू अख़बारात (समाचार पत्रों) को दावत दी गई है कि वह क़ुरान पाक के मुतल्लिक भी ऐसी ही मांग करें।

चुनांचे एक हिन्दू मासिर (लेखक) ने लिखा था कि सत्यार्थप्रकाश नहीं, बल्कि जब से क़ुरान हिन्दुस्तान में आया है उस वक्त से फितनाह और फ़साद (उपद्रव) शुरू हुआ है। ...... जब महात्मा गान्धी की नुक्ताचीनी (समालोचना) को बरदाश्त (सहन) नहीं किया गया तो एक मुसलमान अख़बार की मौजूदा नाशुक्र फिज़ा में लिखी हुई तहरीर (लेख) किस तरह बरदाश्त की जाएगी।"

हम स्व० मौलाना मुहम्मद अली के इन स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य शब्दों की ओर सब विचार शील लोगों तथा सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। सिन्ध सरकार को इन शब्दों पर पर विशेष रूप से ध्यान दे करके अपनी अनुचित आज्ञा को वापिस ले लेना चाहिये अन्यथा उसका परिणाम बड़ा भयङ्कर होगा। आर्य, महर्षि दयानन्द की सर्वोत्तम रचना, अपने पवित्र धर्म ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध को कभी सहन नहीं कर सकते। उनके धैर्य की सीमा अब समाप्त होने को है। अब भी समय है कि सिन्ध सरकार अपनी अनुचित आज्ञा को वापिस लेकर अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दे।

स्वामी दयानन्द मुसल्मानों के दयालु मित्र थे—

मिर्ज़ा याकूब बेग भू० पू० मन्त्री अञ्जुमन अहमदिया इशायत इस्लाम ने आर्य गज़ट लाहौर के फर्वरी १९०० के अंक में लेख लिखते हुए ठीक ही बताया था कि 'स्वामी दयानन्द मुसल्मानों के मेहरबान दोस्त (दयालु मित्र) थे क्योंकि दोस्त (मित्र) वही है जो दोस्त के नकायस (त्रुटियां) व कमज़ोरियां जता कर उसे राहेरास्त (सच्चे मार्ग) पर लाने की कोशिश करे।"

स्वयं महर्षि दयानन्द जी ने ठीक इसी आशय के शब्द कहे थे जब एक मुसलमान सज्जन (इब्राहीमतुल्लाह खान साहेब) की कोठी पर लाहौर में उनके अतिथि रूप में ठहरते हुए उन्होंने इस्लाम

की आलोचना की थी और लोगों को इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ था। सत्यार्थप्रकाश में इस्लाम तथा अन्य मतों की आलोचना का इसी मित्र दृष्टि के प्रकाश मे ही लेना चाहिये तभी उसका वास्तविक अभिप्राय समझ में आएगा अन्यथा नहीं। इसी भाव को लेकर मौलवी मुराद अली अजमेरी ने ३ नवम्बर १८८३ के कोहिनूर नामक अखबार में लिखा था कि—

'महर्षि दयानन्द जैसे बुजुग बार २ दुनिया में पैदा नहीं होते। उनकी यादगार न सिर्फ आर्यो बल्कि अंग्रेजों यहूदियों और मुसल्मानों के दिलों मे और उनकी किताबों में हजारों बरस बल्कि कयामत तक कायम रहेगी। आर्यों के अलावा तमाम कौमे (जातियां) इस चश्मे फैज (उपकार स्रोता) वा लाभ प्रद (सत्यार्थप्रकाश) से अबद आबाद तक (सृष्टि के अन्त तक) सैराब (सिञ्चित) होती रहेंगी।"

महर्षि दयानन्द और सत्यार्थप्रकाश के प्रति इससे अच्छी श्रद्धाञ्जलि और क्या हो सकती है? हम चाहते हैं कि सब मतावलम्बियों में ऐसी उदारता उत्पन्न हो जिससे वे महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों से सच्चा लाभ उठा सकें। ध० दे०

आवश्यकता

सार्व देशिक सभा पुस्तकालयार्थ निम्न पुस्तकों की विशेष आवश्यकता है जो सज्जन या समाज उपहार स्वरूप वा उचित मूल्य पर भेज सकें शीघ्र भेजने का कष्ट करें अथवा सूचित कर दें।

(१) सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम (सन् १८७५) से १० म संस्करण तक

(२) वैदिक इतिहासार्थ निर्णय—श्री प० शिवशङ्कर जी का व्यतीथ कृत

(३) श्राद्ध निर्णय " " "

(४) गीता प्रदीपार्य भाष्य—प० आर्य मुनि जी कृत

(५) मीमासार्य भाष्य—पं० आर्य मुनि जी कृत

(६) Eneyclopedia of Religion and Ethics 10 Volumes

(७) An Intelligent woman's guide to Capitalism, Socialism and Sovietism by Bernard Shaw

पुस्तकालयाध्यक्ष सार्व देशिक सभा

बलिदान भवन देहली।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

फ़र्वरी १९४५

दान

१) बा० मिट्ठनलाल जी देहली शाहदरा

दान

५) दान स्थापना दिवस आर्य समाज ब्यावर (राजपूताना)

सत्यार्थप्रकाश निधि

१) आ० स० गगाह जिला सहारनपुर

२) श्री प० केशवदेवजी शास्त्री साडी हरदोई

२) श्री ओंप्रकाश जी सब्जी मंडी देहली

२५) श्रीमती अशर्फीदेवी द्वारा श्री प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति

२००) स्टाफ श्री आनन्द कौटन मिल्स अहमदाबाद

३१६॥) आर्य समाज गोपीताल व बम्बई के प्रबन्ध में हुई सभाओं में सगृहीत द्वारा श्री महेन्द्रचन्द्र जी प्रधान गोपी तालाब समाज

१२५) आर्य समाज हिवर खेड (रूपराव) जि० अकोला द्वारा श्री विद्याभूषण किसन नगर

५) वेद रत्न जी गौतम रामबाग कानपुर

१५) श्रीराम शर्मा नरसी भाई अहमदाबाद

२१) श्री विद्याव्रतजी भुसावर श्री विद्याभूषणजी के विवाह के उपलक्ष्य में

३०) आर्य समाज चडकर पा० पौडी (जि० गढवाल)

सब दानियों को सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद।

सुधाकर एम० ए०
मन्त्री सार्वदेशिक सभा

सत्यार्थप्रकाश रक्षान्दोलन विषयक सूचनादि

अखिल भारतीय सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति

श्री श्रद्धानन्द बलिदान भवन, देहलवी।

सब आर्य समाजों को भेजे विज्ञप्तिपत्र ता० २१।२।१९४५

श्रीमान् मन्त्री जी,

आर्य समाज ·· ·· · ··· नमस्ते।

आशा है १०।१।४५ को यहां से भेजा हुआ विज्ञप्तिपत्र आपको मिला होगा। इस द्वारा आपको निर्देश दिया गया था कि आप सत्याग्रहियों की सूची उनके हस्ताक्षरों सहित तैयार करके शीघ्र ही सभा कार्यालय में भिजवा देवें। सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति ने अपनी ८।२।४५ की बैठक में पुन इन सूचियों के शीघ्र से शीघ्र बनाकर मंगवाने का निर्देश किया है अतः आप कृपया अब इन सूचियों के बनवाने और भेजने में विलम्ब न कीजिये और शीघ्र ही सूचियां भिजवा दी जायें। आप प्रत्येक सत्याग्रही से निम्न नमूने का फार्म लिखवाकर या छपवा कर और उसे भरवा कर हस्ताक्षर सहित यहाँ भेजते रहें और फार्म की १ प्रति अपने पास भी रखते जावें।

आपको विदित ही है कि इस कार्य के लिये सार्वदेशिक सभा ने २ लाख रुपये की अपील की थी। इस राशि का बहुत बड़ा भाग संग्रह होना है। अब आप इस राशि को पूर्ण करने में और भी अधिक उत्साह से लग जाइये। आपकी समाज ने कोई राशि अभी तक न भेजी हो तो वह भेजिये तथा ज्यों ज्यों धन एकत्र होता जाये उसे भेजते रहें।

भविष्य में सत्यार्थप्रकाश रक्षा सम्बन्धी आन्दोलन के विषय में इस समिति के पते पर ही पत्र व्यवहार कीजिये।

भवदीय—
देशराज चौधरी
मन्त्री

सत्यार्थप्रकाश रक्षार्थ प्रतिज्ञापत्र

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत् ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा।

व्रतपति परमात्मा को साक्षी जानकर मैं यह घोषित करता हूँ कि मैं महर्षि दयानन्द की अमर कृति सत्यार्थप्रकाश को अपना पवित्र धर्मग्रन्थ मानता हूं। मैं इसकी रक्षा के लिये सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति का आदेश मिलते ही तदनुसार कार्य करूंगा। मेरे नाम सत्याग्रहियों की सूची में अंकित करलें।

नाम आयु पिता का नाम
व्यवसाय वर्तमान पता——
स्थान डाकघर " जिला प्रान्त
ह० मन्त्री आर्यसमाज ह० प्रार्थी ····
तिथि तिथि

आर्य सज्जन इन प्रतिज्ञा पत्रों को बड़े उत्साह के साथ भर कर सभा कार्यालय में भेज रहे हैं और सर्वत्र सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन बड़ी धूमधाम से किये जा रहे हैं।

श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा।

"चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस" श्रद्धानन्द बाजार देहली में मुद्रित।



१९४५ ई०
२००१ सं०

सम्पादक—

वार्षिक मूल्य
विदेश ७शि०

सत्यार्थप्रकाश चतुर्दस समुल्लासाङ्क (३)

विषय-सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष २१ } अप्रैल १९४५ ई० चैत्र २००१ दयानन्दाब्द १२२ { अङ्क

* वैदिक प्रार्थना

ओ३म् स न पुनान आभर रयि स्तोत्रे सुवीयम् । जरितुवर्धया गिर ॥ ऋ० ९ । ४० । ५

अर्थ—हे परमात्मन् (स पुनान) वह पवित्र करने वाला तू (स्तोत्रे) स्तुति करने वाले भक्त को (रयिम्) ज्ञानादि उत्तम ऐश्वर्य और (सुवीर्यम्) उत्तम वीर्य, शक्ति का (आभर) धारण करा। (जरितु) भक्त की (गिर वर्धय) वाणी की शक्ति को भी बढ़ा ॥

विनय—हे प्रभो। आप सबको पवित्र बनाने वाले हैं। जो भक्त सच्चे हृदय से आपके पवित्र स्वरूप का ध्यान भजन करता है उसके अन्दर आप पवित्रता का सञ्चार कर देते हैं। हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप हम सब भक्तों को पवित्रता के साथ साथ ज्ञानादि उत्तम ऐश्वर्य और श्रेष्ठ शक्ति भी प्रदान करें और हमारी वाणी के अन्दर विशेष बल दें जिससे हम धर्म की रक्षा और अधर्म का विनाश करने में विशेष रूप से समर्थ हो सकें। हमें कोई भी अधर्मी दबा न सके।

वेदामृत

सामाजिक उन्नति

(१) ओ३म् ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वियौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोमि ॥
अथर्व ३ । ३० । ५

(२) ओ३म् समानी प्रपा सहवोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि । सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ॥ अथर्व ३ । ३० । ६

(३) ओ३म् सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन् संवननेन सर्वान्। देवा इवामृतं रक्षमाणाः सायं प्रातः सौमनसो वो अस्तु ॥
अथर्व ३ । ३० । ७

(४) ओं सं वः पृच्यन्तां तन्वः सं मनांसि समु व्रता । सं वोऽयं ब्रह्मणस्पतिर्भगः सं वो अजीगमत् ॥ अथर्व ६ । ७४ । १

शब्दार्थ—(१) हे मनुष्यो तुम (ज्यायस्वन्तः) एक दूसरे से बडे और श्रेष्ठ गुणों से युक्त होकर वा उत्तम नेता से सम्पन्न होकर तथा (चित्तिनः) स्वयं ज्ञानी बनकर (मा वियौष्ट) एक दूसरे से विरोध न करो (संराधयन्तः) मिलकर कार्य को सिद्ध करते हुए और (सधुराः चरन्तः) समान रूप से एक ही केन्द्र में बद्ध होकर तुम विचरण करते रहो—तुम सब का लक्ष्य समाज और राष्ट्र की उन्नति हो (अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत) (परस्पर तुम प्रेम पूर्वक मधुर सत्य युक्त वचन बोलते हुए मिलो (वः) तुम लोगों को मैं (सध्रीचीनान्) एक ही लक्ष्य की ओर जाने वाला और (संमनसः) परस्पर प्रेम युक्त और सम्मिलित मन वाला बनाता हू ॥

(२) हे मनुष्यो। (वः) तुम्हारी (प्रपा) पीने की जगह (समानी) सब के लिये समान रूप से खुली हुई हो—उसमें पीने का सब का समान अधिकार हो (वः अन्नभागः सह) तुम्हारा भोजन का सेवन साथ मिलकर और प्रेमपूर्वक हो (वः) तुम लोगों को मैं (समाने योक्त्रे) एक ही–सामाजिक बन्धन में (सह युनज्मि) साथ साथ जोड़ता हू (सम्यञ्चः) एक लक्ष्य की तरफ मिलकर जाते हुए तुम (नाभिम् अभितः अरा इव) केन्द्र के चारों ओर अरों की तरह (अग्निम्) ज्ञानस्वरूप परमेश्वर विद्वान्, गुरु और यज्ञाग्नि की (सपर्यत) उपासना करो। परमेश्वर का मिलकर भजन करो गुरुओं का सत्सङ्ग करो और यज्ञाग्नि के चारों ओर बैठो।

(३) हे मनुष्यो। मैं तुम (सर्वान्) सब को (सध्रीचीनान्) एक लक्ष्य की पूर्ति के लिये मिलकर उद्योग करने वाला (संमनसः) समान रूप से पवित्र और प्रेम युक्त मन वाला (संवननेन) परस्पर योग्यतानुसार कार्य विभाग करके (एक श्नुष्टीन्) एक जैसा विशुद्ध भोजन करने तथा एक दूसरे के सुख में सुखी होने का उपदेश (कृणोमि) करता हूँ। (अमृतं रक्षमाणा देवा इव) ज्ञान रूपी अमृत की रक्षा करने वाले सत्य निष्ठ ज्ञानियों की तरह (वः) तुम्हारी (सायं प्रातः) सायं काल और प्रातःकाल दोनों समय (सौमनसः अस्तु) मन की पवित्रता और प्रसन्नता रहे।

(४) हे मनुष्यो। (वः) तुम्हारे (तन्वः पृच्यन्ताम्) शरीर मिले रहें—तुम्हारा परस्पर मेल मिलाप बना रहे (सं मनांसि) तुम्हारे मन

मिले रहें (सम् उभ्रता) तुम्हारे शुभ सङ्कल्प और सत्यभाषण, समाज सेवा, देशसेवा दि विषयक व्रत समान हों। (अय ब्रह्मण पति) यह वेद ज्ञान का रक्षक प्रधान विद्वान् वा पुरोहित (व सम् अजीगमत्) तुम्हें सदा मिलाय रक्खे और (भग) ऐश्वर्यशाली राजा भी (व सम् अजीगमत्) तुम्हें सदा एकदूसरे से प्रम सम्बन्ध द्वारा जोडे रक्खे ॥

उपर्युक्त वेदमन्त्रों में सामाजिक उन्नति के लिये आवश्यक मुख्य तत्त्वों का बड़ा उत्तम उपदेश किया गया है। इनमे बताया गया है कि (१) सब मनुष्यों को अपने को सब श्रेष्ठ गुणों से युक्त बनाने का सदा प्रयत्न करते रहना चाहिये। अपनी सब शक्तियों का विकास करना चाहिये (२) परस्पर प्रेममय मधुर शब्दों का प्रयोग करना चाहिये (३) अपने मनों को पवित्र बनाते हुए सामाजिक उन्नति का विचार समान रूप से सब को रखना चाहिए (४) सब का खान-पान एक समान शुद्ध और परस्पर प्रेम पूर्वक होना चाहिये उसमें कल्पित उचनीच भावना को कोई स्थान न देना चाहिये।

(६) सत्यभाषण, समाजसेवा, देशसेवा आदि व्रत सबको ग्रहण करने चाहिए और उनका भली भांति पालन करने में तत्पर रहना चाहिये। पुरोहित तथा अन्य सब विद्वानों का कर्तव्य है कि इन व्रतों के पालन करवाने तथा परस्पर प्रेम और सहयोग की भावना बढाने में वे विशेष रूप से प्रयत्नशील हों। राजा का भी कर्तव्य है कि मनुष्यों को परस्पर प्रेम वृद्धि में वह पूर्णरूप से सहायक हो। वह ऐसे ही नियम बनाए जिससे राष्ट्र और समाज के सब व्यक्ति परस्पर प्रेम पूर्वक रहें। (७) सब का लक्ष्य समाज की उन्नति हो। समाज की उन्नति में ही सब अपनी उन्नति समझें और अपनी २ योग्यता तथा शक्ति के अनुसार सामाजिक उन्नति में तत्पर रहें।

आर्य समाज की स्थापना वैदिक धर्मोद्धारक-शिरोमणि महर्षि दयानन्द जी ने इसी वैदिक आदर्श के अनुसार की थी। आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर जो इस वर्ष १३-४-१९४५ को मनाया जाना है सब आर्य नर नारियों का सामाजिक उन्नति के इन वेदोक्त तत्त्वों का मनन करके अपने जीवनों को अधिक से अधिक उनके अनुकूल बनाने का दृढ़ निश्चय करना चाहिये। ऐसा करने से ही समाज की वास्तविक उन्नति हो सकती है अन्यथा नहीं।

कल्याणकारी विनय

हे दयामय ! हम सभों को शुद्ध मेधा दीजिये।
दोष दुर्गुण दूर कर कल्याण हे हरि ! कीजिये ॥१॥
विश्व पर ऐसा अनुग्रह आपका परमेश ! हो।
धर्मरत हों सकल जन मन में न अघ का लेश हो ॥२॥
कीजिये मानव हृदय को शुद्ध अपने ज्ञान से।
दीजिये वर भक्ति निज गुणी गायन गुण गान से ॥३॥
सीख लें वश करना चल बुद्धि के सञ्चार हो।
जगत् में श्रद्धा सुमन शुभ भक्ति का विस्तार हो ॥४॥
पञ्च यज्ञों से सुपावन शान्तिमय सब देश हो
सब सुखी सम्पन्न होवें नष्ट सारे क्लेश हों ॥५॥
विश्व में नित सत् सनातन वेद धर्म प्रचार हो।
हो परस्पर प्रीति सब में देश का उद्धार हो ॥६॥
त्याग दें हम क्रोध मत्सर लोभ लालच द्रोह को।
काम विषयों से रहित हों छोड़ दें मद मोह को ॥७॥
साधु सङ्गति में रहें हम धर्मयुत पथ पर चलें।
विश्व भर में सकल स्वाधीन सब फूलें फलें ॥८॥
सत्य शम दम ब्रह्मचर्य सुधीरता धारण करें
और अहिंसा व्रत सदा अन्याय का वारण करें ॥९॥
यम नियम पालन करें अति प्रेम पूर्वक सर्वदा।
प्राप्ति परमानन्द की हो अभय हम विचरें सदा ॥१०॥
सर्व रक्षक भक्त वत्सल न्यायकारी मान कर।
आपको ही नित भजें हम, सर्वव्यापी जानकर ॥११॥
हे प्रभो ! रखिये शरण में योग का साधन करें।
मुक्त जीवन प्राप्तकर हम ओ३म् यश कीर्त्तन करें ॥१२॥

❀ ❀ ❀

ऊपर उद्धृत भजन मधु दयानन्द जी ने भेजा है जिसमें प्रचलित भजन में अनेक परिवर्तन उन्होंने किये हैं। बिहार के अनेक प्रतिष्ठित महानुभावों ने अनुरोध किया है कि इसे 'सार्वदेशिक' में प्रकाशित किया जाए जिससे इसका समाजों में प्रचार हो। भजन के भाव बड़े उत्तम हैं अतः उसे यहां प्रकाशित कर दिया गया है।

[सम्पादक सा० दे०]

सत्यार्थप्रकाश और अन्धविश्वास

[लेखक—श्री डा० सत्यप्रकाश जी D Sc प्रयाग विश्वविद्यालय इलाहाबाद]

भारतीय साहित्य में सत्यार्थप्रकाश पहला ग्रन्थ है जिसमें अन्धविश्वास की गम्भीर और उचित समालोचना की गयी है। प्रत्येक धर्म ग्रन्थ के दो रूप हो सकते हैं—एक तो विशेषज्ञों के लिए और एक सामान्य जनता के लिये। यह बात पुराण कुरान बाईबिल और जैन अथवा बौद्ध ग्रन्थों के लिये भी है और वेद के लिये भी। स्वामी जी ने अपने अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में उन भावनाओं की अच्छी आलोचना की है जो सामान्य जनता में अपने धर्म ग्रन्थों के वाक्यों के आधार पर फैली हुई है। पुराणों का ऐतिहासिक मूल्य अथवा साहित्यिक उपयोगी कितना भी क्यों न हो उनके विवरण अलंकारापेक्षित कितने ही क्यों न हों, पर प्रश्न तो यह है कि हिन्दू जनता के भीतर कितने अन्धविश्वास उन्होंने प्रविष्ट करा दिया है—और इस कारण वे आलोचनीय हैं। महात्मा ईसा के चमत्कारों का रहस्यमय अर्थ कुछ भी क्यों न हो, पर साधारण ईसाई और निम्न कोटि का पादरी उन चमत्कारों को किस भावना से देखता है, उस आधार पर ये विषय आलोच्य बन जाते हैं। यही बात कुरान के वाक्यों की भी है इस युग का उदार और शिष्ट साहित्यज्ञ उन आयतों का चाहे कोई अर्थ क्यों न लगाये, पर साधारण जनता और उसके सामान्य मौलवी उन आयतों में क्या भावनायें रखते हैं यह जानना अधिक महत्त्व का है और आलोचनायें इस आधार पर की जानी आवश्यक हैं।

माननीय श्री ऐण्ड्रू ज ने अपनी पुस्तक "What Owe to Christ' में बाईबिल के वाक्यों का जो अर्थ उनके माता-पिता को अभिप्रेत था, और जिसका प्रभाव उनके बचपन के विचारों पर पड़ा, उल्लेख किया है। वे लिखते हैं कि 'Al ng with them I would try to imag ne as a child all the wonderful thi gs that were certain to happen wh n Chr st came Miracles wo ld usher in his c ming Ind ed they h d a ready b gun My father firmly b lieved that he had r ceived the gift f healing, and many remarkable cures had happened at his touch and according to his faith

In th se early boyhood days, while this fervent religious life of the church went on all around me, my wn great difficulty was mainly d e to a vivid nervous imaginati n In some ways this was the greatest natural gift I possessed, but in other ways it was a cause of acute functional dis rders I had no diffi ulty im imagining all that my father and mother described to me concerning the 'c ming' of Christ whom they daily expected, and at first this did me no harm The real injury came later"

बाइबिल के ईसा सम्बन्धी वाक्यों के गूढार्थ चाहें कुछ भी क्यों न हों पर जीवन पर उनका क्या प्रभाव पड़ा—इसकी साक्षी ऐंड्रूज के इन वाक्यों से मिल जाती है। स्वामी दयानन्द इस देश के पहले आचार्य थे जिन्होंने धर्म ग्रन्थों के इन

सामाजिक प्रभावों से हमें सचेत रहने को प्रेरित किया। मोजिज़ों या आश्चर्य शक्ति का स्वामीजी ने हर जगह खण्डन किया है चाहे उसका उल्लेख मूसा की कितावों में हो बाइबिल में या कुरान में

चौदहवें समुल्लास में—"हमने मूसा को किताब और मोजिज़े दिये" —इस वाक्य की आलोचना करते समय स्वामीजी लिखते हैं—"जो मूसा को किताब दी तो कुरान का होना निरर्थक है और उसको आश्चर्य शक्ति दी, यह बाइबिल और कुरान में भी लिखा है, परन्तु यह मानने योग्य नहीं क्योंकि जो ऐसा होता तो अब भी होता जो अब नहीं तो पहले भी न था, जैसे स्वार्थी लोग आजकल भी अविद्वानों के सामने विद्वान् बन जाते हैं वैसे उस समय भी कपट किया होगा, क्योंकि खुदा और उसके सेवक अब भी विद्यमान हैं, पुनः इस समय खुदा आश्चर्य शक्ति क्यों नहीं देता ?"

पुनः कुरान के इस वाक्य की आलोचना लीजिये 'इस तरह खुदा मुर्दों को जिलाता है और तुम को अपनी निशानियां दिखलाता है कि कि तुम समझो,,—"स्वामीजी लिखते हैं कि—"यदि मुर्दों को खुदा जिलाता था तो अब क्यों नहीं जिलाता ? क्या क़यामत की रात तक कबरों में पड़े रहेंगे ? आज कल दौरा सुपुर्द हैं ? क्या इतनी ही ईश्वर की निशानियां हैं ? पृथिवी, सूर्य, चन्द्रादि निशानियां नहीं हैं ? क्या संसार में जो विविध रचना विशेष प्रत्यक्ष दीखती हैं ये निशानियां कम हैं ?"

बीसवीं सदी के वैज्ञानिक युग का उदार साहित्यिक मौलवी कुरान की इन आयतों का कुछ अर्थ क्यों न लगाये, पर वस्तुतः हम तो उन भावनाओं की आलोचना करनी है जिनपर १४ शताब्दियों से आजतक सम्पूर्ण मुस्लिम जगत् विश्वास रखता आया है, स्वामी जी ईश्वर की आस्तिकता अवतार या पैगम्बर के चमत्कारों पर आश्रित नहीं रखना चाहते थे। ये मोजिज़े और चमत्कार यदि सत्य हैं तो इनसे ईश्वर का ईश्वरत्व नहीं, प्रत्युत अनीश्वरत्व सिद्ध होता है।

अन्धविश्वासों में सबसे अधिक महत्त्व का पैगम्बरवाद है। हिन्दुओं का अवतारवाद भी ऐसा ही है। पैगम्बर या अवतार मानकर अनेक अन्धविश्वासों को हमने जन्म दिया है। मोहम्मद साहेब का पैगम्बर होना कैसे आरम्भ हुआ इसके सम्बन्ध में जो किम्वदन्ती है वह अंग्रेज़ी के एक विद्वान् लेखक के शब्दों में इस प्रकार है—'Once in the month of Ramzan, while he repeated his pious exercises and meditations on mount Hira the angel Gabriel came to him by night as he slept, held a silken scroll before him and compelled him, though he could not read to recite what stood written on it This was the first descent of a passage of the heavenly book, the source of revelation from which Moses and Jesus and all prophets had drawn and so Mohammed was called to be a prophet"

यदि मोहम्मद साहेब भारतवर्ष में होते तो अवतार कहलाते क्योंकि यह देश अवतारों के लिए उपजाऊ रहा है। सेमेटिक धर्मों में ऐसे व्यक्ति ईश्वर के समकक्ष अवतार तो नहीं, पर उनके भेजे हुए पैगम्बर अवश्य बन गये। बुद्धिवाद

के आधुनिक युग को महर्षि दयानन्द का परम कृतज्ञ होना चाहिए कि बिना किसी का पक्षपात किये उन्होंने अवतारवाद और पैगम्बरवाद दोनों को ही समूल नष्ट करने का प्रयत्न किया। ये दोनों वाद शुद्ध आस्तिकता-वाद के विरोधी हैं और इन दोनों वादों ने अनेक मिथ्यान्ध विश्वासों को जन्म दिया है। क्या कोई समझदार व्यक्ति उन कथानकों की पुष्टि कर सकता है जिनमें आयतों के अवतरित होने की विस्तृत पद्धति का उल्लेख है। सत्यता को प्रतिपादित करने वाली आयतें यदि असत्य रूप से उतरती हैं तो वे सत्य के प्रतिपादन मे कम, पर असत्य मिथ्यान्ध विश्वास के प्रसार में ही अधिक सहायक होती हैं। बहिश्त के कामों में खुदा के साथ पैगम्बर की शिरकत अन्धविश्वास को बढ़ाने मे और सहायक हुई। हिन्दुओं के विचारों के आधार पर एक तो राम, राम के साथ सीता और हनूमान् की भी शिरकत ने अनेक रूढ़ियों को जन्म दिया। ये सब बातें ऐसी हैं जिनका उन्मूलन कर महर्षि दयानन्द ने मानवता को उपकृत किया है।

पैगम्बर वाद को मान लेने पर फरिश्त भी एक आवश्यक वाद हो जाता है। वह पैगम्बर ही क्या जिसके साथ फरिश्ते न हों—वह महादेव ही क्या जिसके दल में छोटे २ देवता न हों। फरिश्तों द्वारा अल्लाह मनुष्यों को भी सहायता देता है। स्वामी जी ने स्पष्ट और सत्य लिखा है कि "जो मुसलमानों को तीन हजार फ़रिश्तों के साथ सहाय देता था, तो अब मुसलमानों की बादशाही बहुत सी नष्ट हो गयी और होती जाती है, क्यों सहाय नहीं देता ?" वस्तुत फरिश्तों की कल्पना ने साधारण मुस्लिम जगत् को अंधेरे में रक्खा है। हमारे साथ तर्क करने के लिए योग्य समझदार मुसलमान फ़रिश्तों के अभिप्राय को किसी प्रकार क्यों न व्यक्त करें, पर समझाना तो उन्हें उस मुस्लिम जनता का है जो फरिश्तों को फरिश्ता ही समझे बैठे है।

हमें किसी आयत के अन्धविश्वास परक अर्थ का दुराग्रह नहीं है। यदि आयतों के बुद्धि परक अर्थ करके मुस्लिम जगत् के अन्धविश्वासों को दूर किया जा सके तो इससे बढ़कर क्या हो सकता है। पर प्रयत्न तो यह होना चाहिये कि सामान्य मुस्लिम जनता को इन अर्थों से सन्तोष हो और उनके अन्धविश्वास दूर हों। सत्यार्थप्रकाश के लेखक का भी यही अभिप्राय है कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि होकर सत्य का प्रसार हो।

आर्य कुमार जगत्

परीक्षा फल:—

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की सिद्धात शास्त्री आदि धार्मिक परीक्षाओं में सम्मिलित हुये परीक्षार्थियों का परीक्षा फल तैयार हो रहा है तैयार होने पर शीघ्र घोषित किया जायेगा।

पाठविधि के संशोधन:—

भारत वर्षीय आर्यकुमार परिषद् की परीक्षा समिति की बैठक प्रो० सुधाकर जी के सभापतित्व में ता० १८ मार्च सन् १९४५ ई० को हुई जिसमे पाठविधि में निम्नलिखित सशोधन हुये,

पुस्तकें:—सिद्धान्त सरोज परीक्षा के प्रथम प्रश्न पत्र में वैदिक सूक्ति सुधा (प्रकाशक दिल्ली प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद्) नामक पुस्तक और बढ़ा दी गई है। शेष दोनों प्रश्न पत्रों में पूर्ववत् पुस्तकें हैं।

सिद्धान्त रत्न:—रत्न परीक्षा द्वितीय प्रश्न पत्र में कर्त्तव्य दर्पण पुस्तक के स्थान पर भक्ति दर्पण प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्स लगा दी गई है। शेष दोनों प्रश्न पत्रों में पूर्ववत् ही पुस्तकें हैं।

सिद्धान्त भास्कर:—के द्वितीय प्रश्न पत्र में पञ्चयज्ञ प्रकाशके स्थान में 'आर्य समाज क्या है- लेखक महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज तथा तृतीय प्रश्न पत्र मे वैदिक सिद्धान्त के स्थान मे पुनर्जन्म मीमाँसा लेखक प० नित्यानन्द जी तथा अमर जीवन के स्थान में "हम सौ वर्ष कैसे जीयें" नामक पुस्तकों का परिवर्त्तन हुआ है।

सिद्धान्त भास्कर के चतुर्थ प्रश्न पत्र में ऋषि दयानन्द जीवन चरित्र, किसी भी आर्य विद्वान् का पढ़ा जा सकता है।

सिद्धान्त शास्त्री—परीक्षा में प्रथम प्रश्न पत्र में आर्य पर्व पद्धति के स्थान में आर्य पर्वों का परिचय (प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा सयुक्त प्रान्त,) दर्शनानन्द ग्रथ सग्रह के स्थान पर प्रिन्सिपल दीवानचन्द की व्याख्या माला अथवा स्वामी स्वा० सर्वदानन्द जी की व्याख्यान माला इस वर्ष काया कल्प पुस्तक निकाल दी गई है। तृतीय प्रश्न पत्र में चार आरम्भ की उपनिषदों का महात्मा नारायण स्वामी जी द्वारा भाष्य तथा विश्व की पहेली के स्थान में आर्य सिद्धान्त विमर्श, नामक पुस्तकें पाठ्य क्रम में रक्खी गई हैं।

अन्त मे चतुर्थ प्रश्न पत्र मे निबन्ध, आधुनिक वैज्ञानिक व दार्शनिक दृष्टि कोण से धार्मिक विषय पर।

शुल्क

परिषद् की परीक्षाओं मे निम्न लिखित शुल्क होंगे। सि० सरोज १) सि० रत्न २) सि० भास्कर ३) सि० शास्त्री ४)

आवेदन पत्र

परीक्षाओं के आवेदन पत्र मुफ्त कार्यालय से भेजे जावेंगे आर्यकुमार सभा के मन्त्रियों से प्राथना है कि वे अपनी २ कुमार सभाओं की सूचनाए परिषद् कार्यालय को भेजते रहा करें।

संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन

आर्य कुमार सभा गाजियाबाद की अन्तरग सभा ने आगामी दशहरे के अवसर पर गाजियाबाद में सयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन करने का निश्चय किया है जिसकी स्वीकृति भारतवर्षीयआर्य कुमार परिषद् की अन्तरग सभा ने भी देदी है।

देवीदयाल कार्यालय मन्त्री
भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्
दीवान हाल देहली

सत्यार्थप्रकाश के चतुर्दश समुल्लास का तुलनात्मक अनुशीलन

महर्षि दयानन्द और इस्लाम के अन्य समालोचक

(४)

इस्लाम मे जन्नत (स्वर्ग) और दोज़ख (नरक):-

जन्नत का वर्णन कुरान शरीफ़ में बहुत जगह पर आया है जिनमे से सूरा ५५ और ५६ विशेष-रूप से उल्लेखनीय हैं। इनमे से कुछ वाक्यों का अनुवाद जगद्विख्यात मुस्लिम मिश्नरी ख्वाजा हसन निज़ामी ने निम्न प्रकार किया है -

'जन्नत (स्वर्ग) मे ये लोग जड़ाऊ सिंहासनों तथा कामदार बिछौनों पर तकिया लगाये हुए बड़े आनन्द मङ्गल के साथ विराजमान होंगे गिल्मान जो सदा बहार फल की तरह सर्वदा लड़के ही बने रहेंगे उनके पास (उत्तम २ शरबतों के भरे हुए) गिलास और कूजे और ऐसी पवित्र तथा स्वच्छ मदिरा के प्याले ला रहे होंगे कि जिसके पीने से न कुछ उन्माद होगा और न उन्माद उतरते समय जो शिर पीड़ा होती है वह शिर पीडा होगी और न बुद्धि खराब होगी और पीने की वस्तुओं के अतिरिक्त जो मेवा वह खाना पसन्द करेंगे (वह उनके लिये विद्यमान होगा) और मेवा के अति-रिक्त जिन २ पक्षियों का मांस खाना चाहेंगे वह मांस भी। और इन शारीरिक सुखों के अतिरिक्त आत्मा को प्रसन्न तथा प्रफुल्लित करने के लिये उनके लिए ख़ज़ानों मे सेते हुए (चमकदार) मोतियों की तरह गोरी गोरी और मृग नयनों के सदृश बड़े बड़े नेत्रों वाली (हूरवत) स्त्रियां भी होंगी (वास्तव में यह सब कुछ उस मन भरने और उन शुभ कर्मों का प्रतिफल है जो वह दुनिया मे किया करते थे। इत्यादि (कुरानका हिन्दी अनुवाद-ख्वाजा हसन निज़ामी देहलवी कृत) पृ० ७६८ ठीक इसी आशय का अनुवाद डिपुटी नज़ीर अहमद साहेब सेल रौड्वेल, (पृ०६६) पिक्थाल (पृ०७१३) आदि ने भी किया है जिन के आधार पर महर्षि दयानन्द जी ने समीक्षा की है।

भला यह कुरान का बहिश्त संसार से कौनसी उत्तम बात वाला है? क्योंकि जो पदार्थ संसार मे हैं वे ही मुसलमानों के स्वर्ग में हैं और इतना विशेष है कि यहां जैसे पुरुष जन्मते मरते और आते जाते हैं उसी प्रकार स्वर्ग मे नहीं किन्तु यहां की स्त्रियां सदा नहीं रहतीं और वहाँ बीबियाँ उत्तम स्त्रियां सदाकाल रहती हैं। .. समीक्षा स० ९)

'भला यह स्वर्ग है किंवा वेश्यावन? इसको ईश्वर कहना वा स्त्रैण? कोई भी बुद्धिमान् ऐसी बातें जिसमे हों उसको परमेश्वर का किया पुस्तक मान सकता है? यह पक्षपात क्यों करता है? जो बीबियाँ बहिश्त में सदा रहती हैं वे यहाँ जन्म पा के वहाँ गई हैं वा वहीं उत्पन्न हुई हैं? यदि यहां जन्म पाकर वहां गई हैं और जो कयामत की रात से पहले ही वहां बीबियों को बुला लिया तो उनके खाविन्दों का क्यों न बुला लिया? और कयामत की रात में सबका न्याय होगा इस नियम का क्यों तोड़ा? यदि वहीं जन्मी हैं तो क़यामत तक वे क्योंकर निर्वाह करती हैं" इत्यादि [समीक्षा स० ४६]

महर्षि दयानन्द जी की इस आलोचना को अत्यन्त कठोर समझा जाता है और इसको बदलने की सलाह सुधारक आर्य समाजियों को दी जाती है पर सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेता— अलीगढ़

की मुस्लिम युनिवर्सिटी के संस्थापक सर सय्यद अहमद खान ने तफ़सीरुल कुरान में बहिश्त की जो कल्पना मुसलमानों में सर्वमान्य मानी जाती है उसकी जिन कठोर शब्दों में आलोचना की उसके साथ इसको तुलना करने पर इसकी यथार्थता का पाठकों को पता लग सकता है।

(३४) सर सय्यद अहमद खान ने लिखा —

यह समझना कि जन्नत (स्वर्ग) मिस्ल एक बाग के पैदा हुई है उसमें संगमर्मर के और मोती के जड़ाऊ महल हैं, बाग में शादाब व सरसब्ज दरख्त (वृक्ष) हैं दूध व शराब व शहद की नदियां बह रही हैं, हर किस्म का मेवा खाने को मौजूद है साकी व साकिनें निहायत खूबसूरत चांदी के कंगन पहने हुए जो हमारे यहां की घोसिन पहनती हैं शराब पिला रही हैं। एक जन्नती एक हूर के गले में हाथ डाले पड़ा है एक ने रान पर सर धरा है एक छाती से लिपटा रहा है एक ने लबे जां बख्श का बोसा लिया है कोई किसी कोने में कुछ कर रहा है कोई किसी कोने में कुछ ऐसा बेहूदापन है जिसपर ताज्जुब (आश्चर्य) होता है अगर बहिश्त (स्वर्ग) यही है तो बे मुबालगा (बिना किसी अत्युक्तिके) हमारे खराबात (वेश्यालय) इस से हजार गुना बेहतर हैं (तफ़सीरुल कुरान भाग १ पृ० ४४) 'एक खुश्क मिजाज मुल्ला या शहवत परस्त (विषयलम्पट) जाहिद यह समझता है कि दर हकीकत (वास्तव में) निहायत अनगिनत हूरें मिलेंगी शराबें पीएंगे दूध व शहद की नदियों में नहाएंगे और जो चाहेंगे वे मज़े उड़ाएंगे इस लग्व व बेहूदा ख्याल से दिन रात अवामिर के बजा लाने की कोशिश करता है। (तफसीरुल कुरान भाग १ पृ० ४७) सर सय्यद अहमद खान की इस आलोचना से महर्षि दयानन्द जी कृत आलोचना कुछ भी कठोर नहीं बल्कि अत्यन्त युक्ति युक्त कोमल और सत्य है।

पाश्चात्य विद्वानों में से जिन्होंने इस विषय का अध्ययन किया है उन्होंने भी मुसलमानी बहिश्त की वैसी ही कठोर आलोचना की है। मार्कस डोड एम० ए० डी० डी० (Marcus Dods M A D D) की Mohammed, Buddha and Christ नामक पुस्तक में दी हुई आलोचना के कुछ अंशों को हम पहले उद्धृत कर चुके हैं जिसमें कुरान की इस विषयक आयतों को उद्धृत कर के उसने लिखा है कि

S ct passa_ tiejuently o ui in the aily S ri f K ian anl I thin ar hl mind u ist own to bein_ s m s its iocl e l n l h u nt l b lo s u u l jci te t l iman bliss ct t i the Mohammedan (M l ammed Bu ld a and Christ l arcus Dods M A D D P 49)

इसका अर्थ पहले दिया जा चुका है जिसको दुहराने की आवश्यकता नहीं। इसमें उन्होंने कुरान को स्वर्गविषयक कल्पना को उच्च आत्माओं के लिये बड़ा निराशा जनक और आघात पहुंचाने वाला बतलाया है।

(३५) रेवरेन्ड गेरिड्नर नामक विद्वान् ने Reproach of Islam नाम के ग्रन्थ में 'Heaven and hell in Islam "शीर्षक के नीचे लिखा है कि—

'There is indeed little in the representation of Paradise given in

the Koran and expanded by the Commentators to uplift the soul It is first and foremost a garden [illegible] delights of either a gaudy or a sensual nature It is true that in one or two places, the Vision [illegible] God is set down as the greatest joy of all, and the most spiritual of Muslim [illegible] seize that [illegible] spiritual [illegible] employed But [illegible] beneficial [illegible] Moslems always have [illegible] always will take [illegible] Paradise in the Koran as literal (The Reproach of Islam by Rev W. H. T. Gairdner P. 152)

• अर्थात् कुरान में स्वर्ग का जो स्वरूप वर्णित है और जिसकी भाष्यकारों ने व्याख्या की है उसमे आत्मा को उन्नत करने वाली चीज वास्तव में बहुत ही कम है। यह प्रथम और प्रधानतया एक आमोद प्रमोद का बाग है जो आडम्बर मय या भौतिक सुखमय है। यह सत्य है कि एक दो स्थानों पर ईश्वर दर्शन को सब से बडे आनन्द के रूप में वर्णित किया गया है और आध्यात्मिक प्रकृति वाले कुछ मुस्लिम विद्वानों ने इसके आधार पर कुरान में प्रयुक्त स्थूल कल्पना को आध्यात्मिक सिद्ध करने का प्रयत्न करने में कोई कसर नहीं छोड़ी किन्तु ऐसे प्रयत्न सर्वथा असफल सिद्ध हुए हैं। मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या स्वर्ग के स्वरूप को कुरान में वर्णित शब्दों के अनुसार ही भौतिक लेती रही है और आगे भी लेती रहेगी। इस कल्पना के दोष को दिखाते हुए इस विद्वान् ने आगे लिखा है—

"[illegible] of K[illegible]n [illegible] that [illegible] [illegible] piritual [illegible] uplift to [illegible] ont [illegible] the [illegible] w [illegible] allen [illegible] of [illegible] H [illegible] it [illegible] terial

[illegible])

अर्थात् कुरान [illegible] ई यह है कि इसकी सीधी और प्रभाव जनक असल भौतिक है आत्मा का उन्नत करने या आध्यात्मिकता को बढ़ाने का अवसर इस [illegible] इसके विपरीत [illegible] सर्वथा अपना लिया [illegible] रहने से [illegible] मानवीय प्रकृति सन्तुष्ट रहती है। इसी प्रकार नरक की कल्पना भी सर्वथा भौतिक है और इ के विस्तृत और भयंकर वर्णन बिल्कुल [illegible] लिये जाने के लिये हैं स्वर्ग [illegible] की अवस्था पुनरुत्थान और कयामत के सब वर्णन बिल्कुल और साफ तौर पर भौतिक है।

ऐसी अवस्था में महर्षि दयानन्द जी [illegible] समय के प्रामाणिक टीकाकारों तथा अन्य प्रामाणिक माने जाने वाले भाष्यकारों की व्याख्या के अनुसार कुरान की बहिश्त और दोजख की

कल्पना की यदि उपर्युक्त प्रकार युक्ति युक्त आलोचना की तो इसके लिये उनको कैसे दोष दिया जा सकता है ?

यह सच है कि मौलाना मुहम्मदअली एम ए तथा अब्दुल्ला यूसफअली आदि ने अपने कुरान के अंग्रेजी अनुवादों में कुरान की स्वर्ग विषयक कल्पनाओं को आलङ्कारिक (Allegorical) तथा आध्यात्मिक बताने का यत्न किया है किन्तु उसमे स्पष्ट बहुत अधिक खैंचातानी प्रतीत होती है उदाहरणार्थ मौलाना मुहम्मदअली का सूरा ५६ के मुख्य अंशों का अनुवाद इस प्रकार है —

12. In the gardens of bliss 15 On thrones in wronght 16 Reclining on them, facing one another 17 Round about them shall go youths never altring in age 18 With goblets and ewers and a cup of pure drink 20 And fruits such as they Choose 21 And the flesh of fowl such as they desire 22 And pure beautiful ones 23 The like of the hidden pearls. 24 A reward for what they did 35 We have made them to grow into a new growth 36 And we have made them virgins 37 Loving, equals in age 38 for the sake of the Companions of good luck (Maulana Mohammed Ali's translation of the Holy Quoran Chap 56 P 536)

इस अनुवाद में भी स्पष्टतया बागों, पलङ्गों, फलों, शराब आदि के प्यालों पक्षियों के मांसों सुन्दर जवान हूरियों आदि का वर्णन है तो भी समालोचकों के आक्षेपों से बचने के लिये मौलाना मुहम्मदअली ने इस वर्णन को आलङ्कारिक व आध्यात्मिक सिद्ध करने का निष्फल प्रयत्न किया है। भूमिका मे उन्होंने यहा तक लिख दिया है कि

The abiding place of the righteous is generally said to be gardens in which rivers flow, the rivers corresponding to faith and the trees of the garden cor responding to the good which a man does

The description of paradise as a garden with rivers flowing in it is how ever only a parable The blessings of paradise can not be things of this world (Intr duction P IXII)

साराश यह कि पुण्यात्माओं का निवास स्थान बाग बताये जाते हैं जिनमे नदियां बहती हैं जो श्रद्धा की प्रतिनिधि हैं और उन बाग के फल मनुष्य द्वारा कृत कर्मों के प्रतिनिधि वा प्रतीक स्वरूप हैं। स्वर्ग का एक बाग के रूप में वर्णन जिसमें नदियां बह रही हैं एक अलङ्कार है। स्वर्ग के सुखों की इस जीवन में कल्पना नहीं की जा सकती और इस लिये वे इस संसार की वस्तुए नहीं हैं ?

हम इस नवीन आध्यात्मिक कल्पना का जो महर्षि दयानन्द जी आदि की समालोचना से बचने के लिये की गई है यद्यपि स्वागत करते हैं तथापि यह कुरान के शब्दों से जिनमें स्पष्टतया बागों, नदियों, शराब के प्यालों पक्षियों के मांसों, तकियों हूरों और गिलमानों आदि का वर्णन है समर्थित नहीं होता।

मि० अब्दुल्ला यूसफअली के अनुवाद में भी निम्न अर्थ हैं —

15. They will be on thrones, Encrusted with gold and precious stones 16 Reclining on them facing each other 17 Round about them will serve, youths of perpetual freshness 18 with goblets (shining), beakers, and cups filled out of clear flowing fountains 20 And with fruits, Any that they may select 21 And the flesh of fowls Any that they may desire 22 And there will be companions with beautiful big and lustrous eyes 23 Like unto pearls Well guarded 24 A Reward for the Deeds, of their past lives.

(The Holy Quran translated by Yusuf Ali Vol III P 1480)

इत्यादि से भी स्वर्ण तकिये, प्याले, मद्य जवान लड़के, हूरें, फल पक्षियों के मांस इत्यादि की सत्ता स्पष्ट है यद्यपि उनको जबर्दस्ती आध्यात्मिक या आलङ्कारिक सिद्ध करने का नीचे टिप्पणियों में यत्न किया गया है।

सन् १९४४ में ताज कम्पनी लाहौर से कुरान मजीद का उर्दू में अनुवाद छपा है जिस पर जनाब मुफ्ती मुहम्मद किफायत उल्ला साहब सदर (प्रधान) जमायत उलमाए हिन्द देहली का प्रमाण पत्र है कि मैंने ताज कम्पनी लिमिटेड लाहौर की ख्वाहिश पर इस कुरान मजीद का मतन हरफब हरफ़न पूरे गौरोइमआने नजर से पढ़ा और जहां तक इन्सानी सही का ताल्लुक है मैं पूरे वसूक़ से कह सकता हूँ कि इस मसहफे मुकद्दिसे (पवित्र पुस्तक) मतन में कोई गलती नहीं रही। ग़ल्तियों की दुरस्ती भी मैंने अपनी निगरानी में करवा दी।' उसमें से स्वर्ग विषयक आयतों का अनुवाद देना यहां उचित प्रतीत होता है ताकि पाठकों को मालूम हो सके कि महर्षि दयानन्द जी ने जिस आधार पर समालोचना की थी वह कितना ठीक था। उसमें लिखा है —

"ऊपर तार पाइयों सोने की तारों से बनी हुई के हैं तकिये किये हुए ऊपर उनके आमने सामने फिरेंगे ऊपर उनके लड़के हमेशा रहने वाले साथ आबख़ोरों के और आफताबों के और प्यालों के शराब साफ से नहीं सिर दुखाए जाएंगे इससे और न बेहोश होंगे और मेवे इस क़िस्म से कि पसन्द करें और गोश्त जानवरों के इस क़िस्म से कि चाहेंगे और वास्ते उनके औरतें हैं बड़ी आंखों वालियाँ, मानिन्द मोतियों छिपाए हुए के बदला उस चीज़ का कि थे वे करते—और बिछौने बुलन्द तहक़ीक़ हमने पैदा किया और औरतों उनकी को पैदा करना पस किया हमने उनको कुँवारी सुहागवालियां हम उमर, वास्ते दाहनी तरफ़ वालों के" (पृष्ठ ७७७—८८८)

इस प्रकार यह सर्वथा स्पष्ट है कि क़ुरान में जिस प्रकार के जन्नत (स्वर्ग) का वर्णन है वह भौतिक है यहां तक कि हदीसों के अनुवाद में लिखा है कि—

Abu Musa relates that the Apostle of God said, Verily there is a tent for every muslim in Paradise, it is made of one pearl, its breadth is 60 Kos and in every corner of it will be his wives, They will not see one another The Muslims shall love them alternately'

Abu Said relates that the Apostle of God said 'He who is least amon-

gst the people t Paradise shall have eighty thousand lav and seventy two women and has a t n pit l c l for him of pearls rubies and emeralds (S e Mishkat book XXIII Ch XIII t t l i the Dictionary f Islam ?)

अर्थात् अन्बू मूसा ने या कि खुदा के पैगम्बर (हजरत मुहम्मद साहब) ने कहा था कि जन्नत में हरेक के लिए तम्बू ह गा ज मोतियों में बना हाग । इसकी चौडाई ६० कोस हागी और इसके हरेक कोने मे चमकी स्त्रिया होंगी जिनके साथ मुसलमान वासी स प्रेम करगे

अब्बू सय्यद न बताया कि हजरत मुहम्मद साहेब न कहा था कि जो स्वर्ग वासियों में सबसे निचले दर्जे पर है उसको भी ८० हजार गुलाम ७२ स्त्रिया और हार मोतियों से जडा हुआ तम्बू मिलेगा।

इत्यादि उक्तियों से जो सही बुखारी में प्रामाणिक तौर पर अङ्कित है मुस्लिम स्वर्ग की भौतिकता मे जरा भी सन्देह नहीं रहता जिसकी महर्षि दयान द कृत समालोचना ठीक ही है।

स्वर्ग की हूरों के सम्बन्ध में Encyclopedia of Islam Vol III मे जो लेख है उसमें से निम्न उद्धरण पाठकों की जानकारी के लिये यहा दिये जाते हैं —

When the believer enters paradise, he is welcomed by one of these Huries and a large number of them are at his disposal he cohabits with each of them as often as he has fasted days in Ramdan and as often as he has performed good works besides and yet they remain virgins They are equal in age to their husbands i e 33 years

Albadawi observes that it is not agreed whether the Huries are earth women or not

(Encyclopedia of Islam Vol III P ?)

अर्थात् जब एक विश्वासी मुसलमान स्वर्ग मे प्रवेश करता है उसका इन हूरियों म स कोई एक स्वागत करता है और उनकी बहुत बड़ी सख्या उसके लिय विद्यमान रहती है वह उनमे से प्रत्येक क साथ उतनी बार सम्भोग करता है जितने रमजान के दिनों म उसने उपवास किया होता है और उसके साथ अच्छे काम किये होते हैं। तो भी वे कुमारिया ही रहती हैं उनकी उमर पतियों के बराबर अर्थात् ३३ वर्ष की होती है। अलबदावी कहता है कि इस विषय मे सब सहमत नहीं कि हूरिया पृथिवी की स्त्रिया हैं वा नहीं। इससे यह भी स्पष्ट कि महर्षि दयानन्द की इस विषयक आलोचना सर्वथा यथार्थ है।

महर्षि दयानन्द ने 'कहा इससे अच्छी और क्या परहेजगारों की खबर द कि अल्लाह की ओर से बहिश्तें हैं जिनमें नहरें चलती हैं, उन्हीं में सदैव रहने वाली शुद्ध बीबिया हैं, अल्लाह की प्रसन्नता से, अल्लाह उनको देखने वाला है साथ बन्दों के ॥ कुरान सू० ३ आ० ११

इस आशय की आयत की समीक्षा (स० ४६) मे जो यह लिखा है कि 'जो बीबिया बहिश्त में सदा रहती हैं वे यहा जन्म पाके वहा गई हैं। वा वहीं उत्पन्न हुई हैं ?" इसका कोई निश्चित उत्तर मुसलमानों के पास नहीं है यह भी उपयुक्त लेख से स्पष्ट है। Dictionary of Islam में रेवरेण्ड ह्यूज ने ठीक ही लिखा है:—

'Muhammadan doctors, whether Sunni, Shiah or wahabi are all agreed as to the literal interpretation of the sensual enjoyments of the Muslim paradise, and very many are the books written giving minute particulars of the joys in store for the faithful.

(Dictionary of Islam P 1)

अर्थात् सब मुसलमान विद्वान् चाहे वे सुन्नी हों, सिया या वहाबी सब मुस्लिम स्वर्ग के भोगों की भौतिकता के विषय मे सहमत हैं और मुसल्मानों के लिये स्वर्ग में जो आनन्द मिलेंगे उनके विस्तार का प्रतिपादन करने वाली बहुतसी पुस्तकें विद्यमान हैं ऐसी अवस्था में कुछ इने गिने नवीन भाष्यकारों की कल्पना के आधार पर (जो महर्षि दयानन्द जी जैसे सत्यनिष्ठ समालोचकों की आलोचना से बचने के लिये की गई है यह स्पष्ट है) महर्षि दयानन्द को असत्य आलोचना का दोष देना कितना अनुचित है यह निष्पक्षपात विचारक स्वयं सोच सकते हैं।

मुस्लिम नरक (जहन्नुम वा दोजख) का कुछ वर्णन

नरक (जहन्नम वा दोजख) का वर्णन कुरान में बहुत जगह पर आया है जिनमे से सूरा ३७, ५६ और ८८ अधिक स्पष्ट और प्रसिद्ध हैं। सूरा ३७ में स्वर्ग और नरक वासियों की अवस्था की तुलना की गई है जो हम ख्वाजा हसन निजामी के हिन्दी अनुवाद मे से उद्धृत करते हैं —

'अल्लाह के बन्दों के लिए (बधी हुई जीविका और जाने हुए भोजन होंगे अर्थात् मेवे और वे अति सत्कार पूर्वक आनन्दकारी बागों मे रहेंगे। सिंहासनों पर आमने सामने बैठा करेंगे। स्वच्छ मदिरा के प्याले घुमाए जाएंगे (ऐसी मदिरा जिसका) रंग श्वेत होगा और पीने वालों के लिये बहु स्वादिष्ट होगी न उसमें नशा होगा और न उसमे बुद्धि हीन होकर बकेंगे। और उनके निकट नीची दृष्टि रखने हारी सुन्दर नयन वाली हूरें होंगी ऐसी गोरी ? मानो वह बह शतुर मुर्ग के अण्डे हैं (परों मे छिपाए हुए) (कुरान का हिन्दी अनुवाद पृ० ६३५) क्या खुदा की ओर से यह सत्कार उत्तम है वा थूहर का वृक्ष हमने उस थूहर के वृक्ष को उद्दण्ड लोगों को परीक्षा ठहराया है। वह यह वृक्ष है जो दोजख की तह से उगता है। उसके फल ऐसे कुरूप हैं मानो सर्पों के फन हैं तो उनको (दोजखियों को) उसी के फलों का खाना है और इसी से पेट भरना है पुन इसके ऊपर उन्हें रक्त पीप मिला हुआ गर्म पानी मिलता है। सूरा ५६ मे दोजखियों का वर्णन इस प्रकार के शब्दों में है —

ये दोजख की जलन में मुब्तला होंगे और खौलते पानी में मुब्तला और काले धुए की छाहों में घुटते होंगे।

हे रसूल! तुम अपने समय के कयामत के न मानने वालों और कुफ्र शिकन करने वालों से कह दो कि हे पथ भ्रष्टो! सत्य के झुठलाने वालो दोजख की दहकती हुई अग्नि में तुम अवश्य झोंके जाओगे और वहा थूहर जैसे कड़वे वृक्ष को खाओगे और उसी से अपने पेटों को भरोगे। फिर उस पर खौलता हुआ पानी पीओगे और कई दिन के प्यासे ऊँट के समान पीओगे।" (कुरान का हिन्दी अनुवाद ख्वाजा हसन निजामी पृ० ७६६)

ऐसा ही वर्णन सूरा ८८ मे किया गया है कि "दोजखी लोग दहकती अग्नि में प्रवेश करेंगे

और खौलते खोते क पानी उ हे पिलाया जाएगा और उनका उन काटों के अति रक्त जिनको जरीश्र कहते हैं और कोई खाना न मिलेग (कुरान का हिन्दी अनुवाद पृ० ८५६ सूरा ८८ में दोजख का वर्णन इस भाव के शब्दों में है —

कुछ शक नही कि आखिरत मे थूहर का दरख्त बडे मुजरिमों याना काफ़ि ों का खाना होगा जैसे पिघला हुआ ताबा और वह पेट म ऐसा खौलेगा जैसे झुलसत हुआ पानी खौलत ह इसके अलावा हम फरिश्तों को हुक्म दगे कि इसको पकड़ो और घसीटत हुए जहन्नम (नरक) के बीचों ब च तक ले जाओ। फिर इसको यह सजा दो कि इसक सर पर झुलसता हुआ पानी डालो फिर हम दू नयों को मुसीबत बढान को उसको कहग कि ले दस अजाब (पीडा) के मजे चख ॥ (देखो नजीर अहमद स हेब क कुरान का अनुवाद ख्वाजा हसन निजामी कृत अनुवाद में उद्धृत पृ० ७११

इन वर्णनों से नरक की भौतिकता मे काइ सन्देह नहीं रह जाता इसलिय महर्षि दयान दजी ने लिखा है कि नरक वाल सिहाड़ अर्थात् थोर के वृक्षों का खा क पेट भरेंग तो कण्टक वृक्ष भी दोजख मे होंगे तो काट भी लगते होंग और गर्म पानी पियेंगे इत्यादि दु ख दोजख म पाएगे। (देखो सत्यार्थप्रकाश चतुर्दश समुल्लास समीक्षा स० १४१) महर्षि दयानन्द जी ने नरक क प्रकरण में यही संक्षिप्त सी आलोचना की है किन्तु पाश्चात्य विद्वानों मे स कुछ न इस मुस्लिम नरक को जिसमें मुसलमानों को छोडकर सबको डाल दिया जाएगा बड़ी कठोर आलोचना की है उदाहरणार्थ St.dies in Mohammedanism के लेखक रेवरेण्ड ह्यू ज (Rev. T. P. Hughes B. D. M. R. A. S.) ने लिखा है —

Can any thing more awful be imagined than the teaching of Islam with regard to Hell? To all but a favoured few there is no hope of happiness in future life! Mohammedanism is an utterly selfish religion. The doctrines of Koran with regard to the torments of Hell are devilish.

(Notes on Mohammedanism by Rev. T. P. Hughes B. D. M. R. A. S. P. 210)

अर्थात् कुरान में नरक विषयक शिक्षा से अधिक भयङ्कर क्या किसी शिक्षा की कल्पना की जा सकती है? कुछ थोडे से चुने हुए लोगों (मुसलमानों) को छोडकर परलोक म किसी को सुख की आशा नहीं हो सकती मुसल्मानी मत एक बिल्कुल स्वार्थमय मत है। नरक की यातनाओं के विषय म कुरान क सिद्धान्त शैतानी हैं।

निष्पक्षपात पाठक स्वय विचार कर सकते हैं कि यह आलोचना महर्षि दयानन्द जी कृत आलोचना की अपेक्षा भी कितनी अधिक कठोर है। इन इयों क विषय मे मुस्लम नों की मनोवृत्ति वा कुरान की शिक्षा का प्रमाण सहित दिखाते हुए रेवरेण्ड ह्यू ज लिखते हैं कि

No matter how holy the life of a Christian may be there is according to the Moslem teaching, no escape for him from the damnation of Hell, for the Koran which can not lie, says "Who so ever follows any other religion than Islam, it shall not be

accepted of him, and in the next life he shall be of those who perish."

अर्थात् एक ईसाई का जीवन कितना भी पवित्र क्यों न हो, मुसल्मानों के सिद्धान्तानुसार वह नरक की अग्नि से बच नहीं सकता क्योंकि क़ुरान में (जिसे मुसल्मान निर्भ्रान्त मानते हैं) यह लिखा है इस्लाम को छोड़ कर जो किसी और धर्म को मानता है उसे ईश्वर के यहां स्वीकार न किया जाएगा और दूसरे लोक मे वह उनमें से होगा जो नष्ट होने वाले हैं।

यह उद्धरण क़ुरान सू० ३ आ० ८५ का है और ऊपर उद्धृत अनुवाद सेल का है। यह आयत 'वमेंय्यब्तगि ग़ैरल् इस्लामि दीनन् फ़लैय्युक्बला मिन्हु, वहुव फ़िल् आख़िरति मिनल् ख़ासिरीन्' है जिसका अर्थ ख्वाजा हसन निज़ामी के अनुवाद में इस प्रकार है कि "जो कोई इस्लाम के अतिरिक्त किसी और धर्म का इच्छुक हो तो उसका धर्म कदापि स्वीकार न होगा और वह मरणान्त में हानि उठाएगा।" (हसन निज़ामी कृत हिन्दी अनुवाद पृ० ८६) शम्सुल उलमा मौलाना नज़ीर अहमद ने इसका अनुवाद उर्दू में इस प्रकार किया है 'जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन की तलाश में हो तो खुदा के यहां उसका वह दीन मक़बूल नहीं और वह आख़िरत में ज़ियाकारों में होगा। (क़ुरान का उर्दू अनुवाद ख्वाजा हसन निज़ामी कृत अनुवाद में उद्धृत पृ० ८६)

मौलाना मुहम्मदअली M.A LL B ने इस आयत का अंग्रेज़ी अनुवाद इस प्रकार दिया है'—Who ever desires a religion other than Islam, It shall not be accepted from him and in the hereafter, he shall be one of the losers"

(Translation of the Holy Quran by Mohammed Ali M A, LL L, P 65)

जो बात रेवरेण्ड ह्यू ज ने ईसाइयों के सम्बन्ध में लिखी है वही अन्य सब मतावलम्बियों के विषय मे भी सत्य है जैसा कि आगे कुछ उद्धरण देकर बताया जाएगा।

थौमस कार्लाइल (Thomas Carlyle) को मुहम्मद और इस्लाम का यूरप मे सबसे बड़ा प्रशंसक समझा जाता है। किन्तु उसने भी Heroes and Hero Worship नामक पुस्तक के The Hero as Prophet' विषयक अपने सुप्रसिद्ध व्याख्यान मे जिसे मुसल्मान बन्धुओं ने सिर पर चढ़ा रक्खा है कहा है कि—

"Mohammed's Paradise is sensual, his Hell sensual true, in the one and the other there is enough that shocks all spiritual feeling in us But we are to recollect that the Arabs already had it so, that Mahomet, in what ever he changed of it, softened and diminished all this The worst sensualities, too are the work of doctors, followers of his, not his work. In the Koran there is really very little said about the joys of Paradise, they are intimated rather than insisted on"

(The Heroes and Hero-Worship by T Calyle D C Heath & Co, Publishers Boston P 49-50)

अर्थात् मुहम्मद का स्वर्ग भौतिक है उसका नरक भौतिक है यह सत्य है। इन दोनों में बहुतसी

ऐसी चीजें हैं जो हमारा समस्त आध्यात्मिक भावना को आघात पहुचाती है किन्तु हम स्मरण रखना चाहिये कि अरब लोगों में स्वर्ग, नरक का ऐसा कल्पना पहले से विद्यमान थी और मुहम्मद ने उसमें जो कुछ परिवर्तन किया उसके द्वारा उसने उसे कुछ कोमल और कम कर दिया। जो अधिक से अधिक खराब भौतिकता स्वर्ग नरक की कल्पना में पाई जाती है वह मुहम्मद की अपनी नहीं बल्कि उसके अनुयायी मौलवियों की है। कुरान में स्वर्ग के आनन्द के विषय में वस्तुतः बहुत ही कम वर्णन किया गया है। उनका केवल संकेत किया गया है न कि उन पर बल दिया गया है इत्यादि।

कार्लाइल के पूर्ण प्रयत्न करने पर भी मुस्लिम स्वर्ग नरक की भौतिकता तथा अन्य आक्षेपों का कोई सन्तोष जनक समाधान नहीं हो सकता। स्वयं कुरान में भी इस विषयक वर्णन पर्याप्त स्थानों पर पाये जाते हैं जिनका शायद कार्लाइल महोदय को ज्ञान न था। अरब निवासियों में तो मूर्तिपूजा, कन्याघात, मद्यपान आदि बहुतसी बुरी प्रथाएँ और अन्ध विश्वास प्रचलित थे पर जैसे उनको मुहम्मद साहेब ने दूर करने का प्रशंसनीय कार्य किया वैसे इस विषयक कार्य उन्होंने नहीं किया पर उन्हीं भ्रम पूर्ण विश्वासों की प्रबल पुष्टि की यही तो आक्षेप है। पीछे मुहम्मद साहेब के अनुयायियों ने उनकी उक्तियों के आधार पर ही स्वर्ग, नरक विषयक और भी कई कल्पनाएं कर लीं किन्तु स्वयं कुरान में भी इस विषयक अनेक आक्षेप योग्य बातें हैं यह मानना ही पडेगा॥

(शेष फिर)

इस्लामी साइन्स और सत्यार्थप्रकाश

(ले०—डाक्टर सूर्यदेव जी शर्मा सिद्धान्तशास्त्री, साहित्यालंकार, एम ए एल टी डी लिट अजमेर)

(२)

(११) सूर्य कीचड़ के चश्मे में डूबता पाया (समीक्षा १०६) मौलाना साहब अंग्रेजी अनुवाद में कुरान १८ ८६ (पृष्ठ ३०५) मे लिखते हैं The Sun set going down into a Black Sea वाह कीचड़ म न कहो, तो काले सागर में तो आपने सूरज को डुबा ह दिया ? वाहरे भूगोल क ज्ञान ?

(१२) पहाड़ पृथ्वी के बीच में खूटे की तरह हैं जिससे वह हिले नहीं (समीक्षा ११० १२४) अंग्रेजी अनुवाद में पृष्ठ ३२९ में लिखा है 'We have made great mountains in the earth lest it might be Convulse । यह है कुरान की पदार्थ विद्या ? शायद पहाड़ों के बनने का प्रकार जो भूगोल का प्रत्येक विद्यार्थी जानता है कुरान का पता नहीं।

(१३) कयामत (पलय) के दिन मुर्दे उठाये जायेंगे और उस दिन गवाही देंगे हाथ और पैर और इन्द्रियां (समीक्षा नं० ११३ और १ ४) अँग्रेजी अनुवाद मे पृष्ठ ३५६ पर कुरान २४ ·४ मे मौलाना साहब लिखते हैं —

"On the day when their tongues and their hands and their feet shall bear witness against them as to what they did" भला जड़ हाथ और पैर भी कभी बोल सकते हैं ? मौलाना साहब ने अपने अनुवाद मे इसपर कोई नोट नहीं चढ़ाया। लिखते भी क्या ?

(१४) "अल्लाह ने उत्पन्न किया हर जानवर को पानी से।" यह कौनसी फिलौसफी है कि जानवरों के शरीर मे सब तत्त्व दीखते हैं और कहना कि उत्पन्न किया केवल पानी से ? (समीक्षा ११५) कुरान · ३० म पृष्ठ ३ ६ पर लिखा है We have made out of water every thing living जब मैं यह लिख रहा था तो मेरे एक शिष्य चि० अमरनाथ ने जो पास बैठा था मुझे पूछा कि क्या सब मुसलमान भी पानी से ही बने हैं ? मैंने कहा कि इसका जवाब तो कुरान के बनाने वाले से अथवा उसके अनुवाद करने वाले मौलाना साहब से ही पूछना चाहिए ' वाह रे कुरान का पदार्थ विज्ञान ?

(१५) जिस दिन फट जावेगा आसमान साथ बदली के (समीक्षा ११६)

कुरान ·५ ·५ के अनुवाद मे पृष्ठ ३६५ पर लिखा है 'The Heaven shall burst asunder with the clouds' अब तक विज्ञान का कोई आविष्कार यह नहीं बतलाता कि आकाश कोई ठोस चीज है फिर वह फटेगा कैसे ? यह इस्लामी साइन्स ही जानती है ?

(१६) पहाड़ चलते हैं मानिन्द बादलों के (समीक्षा १२०) इसका अनुवाद तो मौलाना साहब ने बड़ी सफाई से किया है। कुरान ·७ ·८ म पृष्ठ ३८२ पर वे लिखते हैं — The mountains shall pass away as the clouds वाह मौलाना, चलने" का अर्थ "Pass away' खूब किया है।

(१७) 'बस बनाए सात आसमान दो दिन में ऊपर तले और किया चाँद को बीच उनके प्रकाशक

(समीक्षा १३६ १४७) कुरान ४१-१२ में पृष्ठ ४७६ पर जो दिन का अर्थ two periods तो कर दिया लेकिन ऊपर तले सात आसमान कैसे बनाये और वे कहां हैं इनको तो कोई इस्लामी दूरबीन ही देख सकती है?

(१८) उठावेंगे तख्त मालिक का ऊपर अपने आठ फरिश्ते उस दिन (समीक्षा १४५) कुरान ६९-१७ में पृष्ठ ४७१ पर लिखा है

And above them eight (angels) shall bear on that day thy Lord's throne' इस पर नोट देते हुए मौलाना साहब लिखते हैं कि यहाँ शायद आठ फरिश्तों से मतलब खुदा के गुणों से हो। वाह मौलाना साहब फरिश्तों का अर्थ गुण खूब सूझा। भला गुण भी कहीं तख्त को साध सकते हैं?

(१९) इकट्ठा किया जायगा सूर्य और चांद को। (समीक्षा १४६) कुरान ७५-९ में पृष्ठ ५०३ पर लिखा है 'The Sun and the moon are brought together' भूगोल के इस रहस्य को शायद कुरान के विद्वान् ही जानते हों।

(२०) जब आसमान की खाल उतारी जायगी (समीक्षा १५२) कुरान पृष्ठ ५६४ पर ८१-११ में लिखा है 'When the Heaven has its Covering removed' भला कहीं आसमान के भी खाल (Covering) होती है जो उतारी जाय?

पाठकों को अब विदित हुआ होगा कि श्री स्वामी दयानन्द जी ने कुरान के लिए जो यह लिखा था कि 'वह विद्या की किताब नहीं है" वह कितना सत्य है। उपरक्त २० असम्भव और विज्ञान-विरुद्ध बातों की ही समीक्षा स्वामी जी ने की है। न मालूम ऐसी विज्ञान-विरुद्ध बातें कुरान में और कितनी भरी पड़ी हैं? अगर उन सबको सग्रह किया जाय तो एक बड़ा पोथा बन जायगा। भला इस विज्ञान युग मे ऐसी विज्ञान-विरुद्ध बातें कभी ठहर सकती हैं?

जो विज्ञान विरुद्ध जगत् में,
है वह कभी न ठहरेगा।
वेद धर्म का झंडा ही बस,
भूमंडल पर फहरेगा॥

अंग्रेज़ी कुरान

[लेखक—प्रो० महेशप्रसाद जी मौलवी आलिम फाज़िल हिंदू विश्वविद्यालय बनारस]

आज बीसवीं शताब्दी ईसवी में समस्त भूमण्डल पर अंग्रेजी भाषा को बड़ा उच्च पद प्राप्त है। सच तो यह है कि इस बात के मूल कारण वह लोग हैं जिनकी यह मातृभाषा है। हाँ, यह बात भी अटूट है कि जो वस्तु जबरदस्त हुआ करती है वह सब लोगों को अपनी ओर अवश्य आकर्षित किया करती है। यही कारण है कि अंग्रेजी में कुरान को उन लोगों ने भी किया है जिनकी यह मातृभाषा नहीं है।

मुसलमानों के मुख्य धर्मग्रन्थ कुरान की असली भाषा अरबी है। मैं देखता हूँ कि अनेक हिन्दी प्रेमी ऐसे हैं जो अरबी न जानने के कारण उसके विषय में यथोचित ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते और अंग्रेजी द्वारा ही बहुत कुछ जान सकते हैं। इस कारण मैं कुरान के अंग्रेजी अनुवादों के विषय में कुछ बतला देना चाहता हूँ।

सम्भव है कि अनेक लोगों को यह जानकर अचम्भा हो कि अंग्रेजी में एक कुरान सन् १७३४ ई० में प्रकाशित हुआ था। इसके अनुवादक जार्ज सेल (George Sale) महाशय एक ईसाई थे। इस सन् वाला संस्करण तो मेरी दृष्टि में नहीं आया और न मैं किसी और ढङ्ग ही से जान सका हूँ कि उक्त अनुवाद कहाँ से और किस आकार में प्रकाशित हुआ था। परन्तु यह बात अवश्य है कि उक्त अनुवाद का प्रचार बहुत ज्यादा हुआ है। सन् १७६४, १७६५ वा १८०१ ई० आदि अनेक समयों तथा अनेक स्थानों में प्रकाशित हुआ है। इन्हीं संस्करणों में से कई संस्करणों की अनेक प्रतियां मेरी दृष्टि में अवश्य आई हैं। मेरा ख्याल है कि कुरान का उक्त अनुवाद ही अंग्रेजी भाषा में प्रथम अनुवाद है क्योंकि मुझे किसी और अनुवाद का उल्लेख नहीं मिला जो कि इससे पहले अंग्रेजी में हुआ हो।

उक्त अनुवाद के कई संस्करण टीका, टिप्पणी व बृहद् भूमिका सहित प्रकाशित हुये हैं। उक्त अनुवाद का भाष्य अंग्रेजी में रेवरेण्ड ई० एम. ह्वेरी* (Rev E M, Wherry) द्वारा किया गया है और उस भाष्य का एक खण्ड ही पहले मेरी दृष्टि में आया था जो कि सन् १८८२ ई० ट्रबनर ऐण्ड को लण्डन (Trubner & Co London) द्वारा A Comprehensive Commentary on the Quran Comprising Sale's translation and preliminary discourse के नाम से प्रकाशित है। बाद को उक्त भाष्य का सन् १८९६ ई० का संस्करण पूर्ण चार भागों में मुझे देखने को मिला किन्तु खेद है प्रकाशक का नाम नोट करना भूल गया।

* इनका श्री स्वामी जी महाराज के साथ अच्छा परिचय था। इन्होंने "मसीह इब्न अल्लाह" नाम की एक उर्दू पुस्तक श्री स्वामी जी के भेंट अवश्य की थी उसमें लिखा है—Presented to Pandit Dayanand Saraswati Swami by his friend E M Wherry Ludhiana, April 11, 1877 पुस्तक को वैदिक पुस्तकालय अजमेर में मैंने ८ जून सन् १८४३ ई० को देखा—

—लेखक।

अंग्रेजी में एक अनुवाद रेवरेण्ड जे एम रौड वेल (Rev J M Rodwell) नामक एक ईसाई साहब द्वारा हुआ है। मुसलमानों का मत है कि कुरान की सूरतें (खण्ड) जिस शैली पर रखी हुई हैं उस शैली (क्रम) पर अल्लाह की ओर से हजरत मुहम्मद पर नहीं उतरी थीं। अत इस अनुवाद मे कुरान की सूरतें उस क्रम के अनुसार रखी गई हैं जिसके अनुकूल उनका हजरत मुहम्मद साहब पर उतरना बतलाया जाता है।

यह अनुवाद पहले पहिल सन् १८६१ ई० मे प्रकाशित हुआ और इस का भी प्रचार बहुत हुआ है क्योंकि अनेक संस्करण इसके भारी संख्या मे निकल चुके हैं।

एक अनुवाद ई० एच० पामर (E H Palmer) द्वारा हुआ है। यह दो भागों मे सेक्रेड बुक्स आफ दी ईस्ट सीरीज (The Sacred Books of the East Series) में प्रकाशित हुआ है। उन सीरीज की जिल्द छ व नौ को देखना चाहिये। इनमे से पहला भाग सन् १८८० मे प्रकाशित हुआ है। दूसरा भाग सन् १९०० ई० में प्रकाशित हुआ है। ज्ञात रहे कि पहले भाग में प्रथम १५ खण्ड और दूसरे मे १६ से ३० खण्ड है।

एक अनुवाद संक्षिप्त टिप्पणी सहित डाक्टर मुहम्मद अब्दुल हकीम द्वारा सन् १९०५ ई० का है। मेरी दृष्टि में इसकी कोई प्रति नहीं आई है। यही ऐसा अनुवाद प्रतीत होता है जो कि किसी मुसलमान द्वारा सब से पहिले अंग्रेजी में हुआ है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इसका प्रचार अधिक नहीं हुआ क्योंकि मैंने भारत के कई बड़े पुस्तकालयों में ढूढा और यह अनुवाद न मिला।

एक अंग्रेजी अनुवाद श्री मिर्जा अबुल फजल ज द्वारा हुआ है। इसमें मूल अरबी भी है। इलाहाबाद के जी ए असगर एण्ड को से दो भागों मे प्रकाशित है। पहिले भाग मे साढ़े सात सौ से कुछ अधिक पृष्ठ हैं और यह सन् १९११ ई० का प्रकाशित है। दूसरे में कुल पृष्ठ लगभग ग्यारह सौ हैं और यह सन् १९१२ ई० का प्रकाशित है। आकार लगभग साढे सात और पाच इञ्च है। इनका पाठ उस क्रम से नहीं जिस क्रम से प्रायः कुरानों मे पाया जाता है बल्कि इसमे सूरतों (खण्डों) का वह क्रम है जिस क्रम से उनका प्राप्त होना प्रायः मुसलमान लोग मानते हैं। इसमे प्रत्येक आयत की संख्या भी पृथक-पृथक अङ्कित है।

एक अनुवाद दिल्ली के मौलाना मिर्जा हैरत साहब द्वारा तीन खण्डों मे सन् १९१८ ई० मे प्रकाशित हुआ है। इसमें कहीं २ छोटी मोटी टिप्पणिया हैं। इस अनुवाद का भी प्रचार बहुत ही कम हुआ है जिस का मूल कारण यह प्रतीत होता है कि इस अनुवाद के प्रकाशन के कुछ काल बाद ही मौलाना हैरत साहब की मृत्यु हुई और उनका सारा कामकाज बुरी दशा में हो गया।

एक अनुवाद मौलाना मुहम्मद अली साहब द्वारा हुआ है। यह साहब अहमदी मुसलमान अर्थात् श्री मिर्जा गुलाम अहमद क़ादयानी को मानने वाले हैं। इस कारण इस अनुवाद मे कुछ बातें ऐसी हैं जिनसे बहुतेरे मुसलमान सहमत नहीं तथापि इसका प्रचार भी कुछ कम नहीं।

यह अनुवाद मूल अरबी तथा कुछ टिप्पणियों सहित पहले-पहिल सन् १९१७ ई० में प्रकाशित हुआ था। इसके पश्चात् सन् १९२० ई० मे छपा

है। किन्तु यह भी ज्ञात रहे कि केवल अंग्रेजी अनुवाद का भी संस्करण पृथक् प्रकाशित हुआ है। दोनों प्रकार के संस्करणों में बृहद् भूमिका है।

एक अनुवाद 'दी मीनिंग आफ दी ग्लोरियस कुरान (The Meaning of the Glorions Koran) के नाम से मारमाड्यूक पिक्थल साहब द्वारा हुआ है। अनुवादक महाशय जाति के अंग्रेज थे किन्तु विचार की दृष्टि से मुसलमान हो गये थे।

एक अनुवाद पहले-पहिल उनके जीवन काल में सन् १९३० ई० में केवल अंग्रेजी में कुछ टिप्पणियों सहित लण्डन से प्रकाशित हुआ था किन्तु उनकी मृत्यु के बाद सन् १९३८ ई० में उक्त अनुवाद मूल अरबी व कुछ टिप्पणियों सहित (अब दो भागों में) हैदराबाद राज्य की ओर से, वहां के सरकारी प्रेस से अति सुन्दर रूप में प्रकाशित हुआ है। राज्य की ओर से लगभग एक लाख रुपया इस पर व्यय हुआ है। लगभग तीन वर्षों में यह तैयार हुआ है और कैरो मिश्र (Egypt) का सुन्दर अरबी टाइप इसमें प्रयोग किया गया है।

एक अंग्रेजी अनुवाद एक मुसलमान सज्जन श्री अब्दुल्ला यूसुफ अली साहब द्वारा हुआ है जो कि कई उच्च पदों पर रह चुके हैं। इनका कुरान मूल अरबी व टीका टिप्पणियों सहित तीन भागों में लाहौर से पहिले-पहिल सन् १९३४ में प्रकाशित हुआ है इसके तीसरे संस्करण प्रकाशित सन् १९३८ ई० से ऐसा पता चलता है कि यह अनुवाद बहुत प्रिय हुआ है।

रेवरेण्ड रिचर्ड बेल (Rev Richard Bell) प्रोफेसर (अरबी भाषा) एडिन बर्ग यूनीवर्सिटी द्वारा जो अंग्रेजी अनुवाद हुआ है वह दो भागों में है। प्रथम भाग सन् १९३७ ई० और द्वितीय सन् १९३९ ई० में टी० टी० क्लार्क ३८ जार्ज स्ट्रीट (T &. T Clark 38 George st) एडिनबरा से प्रकाशित हुआ है। इसके कुरान की सूरतों (भागों) को बहुत जाँच-पड़ताल के पश्चात् क्रमानुसार रखा गया है।

मैंने सुना है कि दरियाबाद जिला बाराबंकी के मौलाना अब्दुल मजीद साहब द्वारा भी कुरान के एक अंश का अनुवाद (अंग्रेजी में) थोड़े दिन हुए छपा है किन्तु अभी तक वह मेरी दृष्टि में नहीं आया।

उक्त अनुवादों में से सब नहीं तो केवल थोड़े से ही अनुवादों पर यदि कोई भली भाँति दृष्टि डाले तो बहुत कुछ कुरान के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

नारायण अभिनन्दन ग्रन्थ

सार्वदेशिक सभा की ओर से जून के प्रथम सप्ताह में श्री नारायण आश्रम रामगढ़ की रजत जयन्ती महोत्सव पर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध सन्यासी श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की सेवा में नारायण अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जायगा। ग्रन्थ के लिये भारत के अनेकों विद्वानों के विभिन्न विषयों पर लेख आ चुके हैं। आर्य समाज से प्रेम व सहानुभूति रखने वाले अनेकों अन्य विद्वानों ने भी इस कार्य में सहायता प्रदान की है। सम्पादन कार्य बड़ी तीव्र गति से चल रहा है। इस बारे में सब से अधिक कठिनाई प्रकाशन की अनुभव की जा रही थी, वह भी दूर हो गई है। पेपर कन्ट्रोलर गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया ने मुद्रण व प्रकाशन की आज्ञा प्रदान कर दी है।

इस बात का पूर्ण रूपेण यत्न किया जा रहा है कि ग्रन्थ में ऐसी सामग्री रहे जो एक प्रकार से आर्य समाज का स्थायी साहित्य हो। इसकी पूर्ति के लिये सैद्धान्तिक विषयों पर लेख लिखाने का पूरा यत्न किया गया है।

पूज्यपाद श्री म० नारायण स्वामी जी महाराज की सेवा में भेंट किये जाने वाले ग्रन्थ में केवल उन्हीं के प्रति उद्गार व संदेश न होंगे किन्तु आर्य समाज के सिद्धान्त, आर्य समाज की गति विधि, आर्य समाज का भावी कार्यक्रम, आर्य समाज की संस्थाओं का महत्वपूर्ण कार्य आदि विषयों पर भी विशेष रूप से लेख होंगे।

प्रत्येक आर्य समाज में ग्रन्थ की एक प्रति पहुंचनी चाहिये। ऐसे अमूल्य ग्रन्थ के लिये प्रत्येक को अपनी प्रति सुरक्षित कर लेनी चाहिये।

अनेकों चित्रों से विभूषित इस ग्रन्थ के साधारण संस्करण का मूल्य ५ रु० रक्खा गया है। सहायकों से पच्चीस रुपये तथा विशेष संरक्षकों से सौ रुपये या अधिक लिये जायेंगे।

ग्रन्थ के सम्बन्ध में निम्न पते पर पत्र व्यवहार करना चाहिये।

पत्र व्यवहार का पता:—
विश्वम्भर सहाय प्रेमी स० सम्पादक
सिपट बाजार, शहर मेरठ।

An open letter to Dr. Bhagwan Das ji Benaras.

Most revered Dr Bhagwan Dass ji

D. A. V College, Cawnpore
21st. Feb, 1945.

Sadar Namaste,

I have just gone through your short note published to day in the Leader on the Satyartha Prakasha controversy, Mahatma Gandhi suggested to the reformist Arya Samajists to revise the Satyartha Prakash and to remove the objectionable criticism against other religions He had once before, perhaps on 29th, May 1924, expressed his views on this book At that time, not only the Arya Samajists but nearly all the Leaders of India including Sir Rabindra Nath Tagore took objection to his article and requested the Mahatma to revise his opinion Therefore Mahatma's recent advice on this question did not move me at all nor did I take his note seriously But as soon as I came to know that a note regarding the Satyarth Prakash Controversy has been published in the paper from your pen, I atonce ran up to a reading room. From my school days I have been reading your books which are full of high scholarship Your fame as an Indian thinker and philosopher has reached beyond the boundaries of mother India, and your expositions and explanation of the Vedic texts have appealed them so much that they can not resist the temptation of quoting you I, therefore, thought your article will remove many doubts and misunderstandings You too have admitted that there is nothing wrong in the criticism by Swami Dayanand in the last 4 chapters of the Satyartha except this that it is not polite, and courteous The criticism has been made in Warlike manner But this has been, as you say, the way of all theologians all over the world, and hence you suggest a thorough revision of all the scripures from the Vedas downward to the Quran

I have to say nothing regarding your views about the scriptures, because for you there is no perfect revelation Every religion is true as well as false This was the position maintained by Raja Ram Mohan Rai and after him by the Brahma Samaj The Theosophical Society from its very inception is taking the same stand That is why both these institutions keep all the scriptures side by side, in their temples for their adherent to worship Besides this they have prepared beautiful compilations representing the various religion Your compilation which you have mentioned, 'The essential unity of all Religions certainly stands unique I have read it only once Only a few days back I have purchased a copy of the same for our theology classes But all the same you should know that howsoever good, beautiful, learned and magnanimous your this or other book may be, it can never be a substitute for the Vedas, the Bible or the Quran By revising the originals of the scriptures or religious books

or by writing highly learned treatise on religion, you can never ignore the scriptures. Being a Muslim Arya Samajist I would never request my Muslim brethren to expunge or remove the objectionable matter from the Quran. The Holy Quran must remain what it was for all time to come. Otherwise how the beauty or ugliness of other scripture will be known. Similarly I oppose the cause for perserving the integrity of the Satyarth Prakash the magnum opus of the nineteenth th century. Taken for granted that the Satyarth Prakash is the worst book, should be preserved in its original form for the future of coming generations. Then and then alone they will be able to give their judgement. Even, when by chance there remains no Arya Samajist to read it the Satyarth Prakash should be preserved and placed on the shelves of the museums of the world, so that the people may know that such an able book could be written by one of the greatest personalities of the World. But the suggestion of revising the scriptures or Satyarth Prakash is entirely absurd and can never appeal to a reasonable man. Your contribution to English and Hindi literature is very great and the people will pay its homage to you in its own way. But allow me at the same time to repeat the truth that all your writings will never be worshipped like those of Christ, Mohammad or Dayanand. So any revision of the Vedas, Bible, Quran or Satyarth Prakash even if, in the last instance it is done by all the Arya Samajists combind, will not be a revision by its author, and therefore the new compilations, howsoever, noble, learned and beautiful they may be, will never compete or will not be a substitute, for the original scriptures. It is not mere logic, philosophy, or intellectual shrewdness, that makes a book or writing a scripture. Hundred and thousands of years sacrifice, tradition, toil and tears are needed to give a religious backing and authority to a particular book. Your suggestion for the revision of scriptures will be acceptable to those only, who have as a matter of fact, no scripture. But to those who regard Veda, Bible or Quran to be revelation, your suggestions will be preposterous, and in many cases will be resented and opposed. For such people, their respective scriptures are perfect revelations from God. How can they tolerate such a remark from a non believer like yourself. If you or any other person thinks that there are objectionable matters in all the scriptures which are retarding the progress of humanity then such portions of the scriptures alone should be criticized and condemned. Because we only discuss where we disagree and not at places where we agree. Mahatmaji also in approaching Mr Jinah or the Muslim League, discusses only those political matters where they disagree, otherwise his efforts will be regarded useless and absurd if he takes the trouble of going over and over again for clearing the already cleared issues. The same methods should be employed in theological discussions. Learned people should and will always write books for or against the beliefs of other people. What we lack is not the method

of criticism but it is the entire absence of toleration Your method of preparing beautiful compilations will not solve the real difficulty Either the theologian of different religions should prove the truth of their principles or should give a reasonable and scientific interpretations of their scriptures The question of revision or removal of the objectionable points from different scriptures does not arise and will always be vehemently opposed so long as the believer have a complete faith in revelations

Swami Dayanand like his innumerable predecessors—the Indian Pundits believed, on the strength of his great learning study and intuition, the Vedas to be a revelation How can therefor his followers with millions of ... [illegible] the revision of the scriptures Your method of solving the communal problem is very old and has proved a failure To you there is nothing wrong, in the criticism of Swami Dayanand except its being unpolite and discourteous The ... book to Mahatmaji appears to be hopeless, So this is nothing but a difference of opinion If from your point of view Swami Dayanand's ... is war like or ... whole attitude of Mahatmaji to the episode of Subhas Babu and now of the assembly towards the communists is more warlike and harsh, and as such condemnable If in politics whose creeds and programmes are always liable to change Mahatmaji or the congress can show such intolerance towards their opponents, then in the matter of religious beliefs which have been built up in centuries, your proposal for revision and reformation is out of place and quite unreasonable

I expect from a philosopher like you to expose the hollowness of ... and ... the good will of the world It is easier to make a sweeping remark than to prove one's contention by specific examples It is true that Swami Dayanand made many ... operations on the blind beliefs of the people Even to a patient the operation is never agreeable or ... in its process Similarly people took objection to his criticism Nay they were satisfied only when they took revenge on his very life and finished him to death It was also the lot of that great Martyr Socrete Therefore let his tory ... judgement on the makers of history ... Arya Samajists, will never feel upset or perturbed if you or even a greater person than yourself, attempts to write ... the Vedas or the Satyarth Prakash, and if we have the power to challenge such writing we shall do so The refore your suggestion of revising scriptures is absurd and will not solve the real difficulty nor will it ... and goodwill ... communities

In your own case also, if other people like to revise your books in your life time or after, without your consent, then such revisions ... will not be by your self

Yours Sincerely,

VISHWANATH TYAGI, B A LL B

Professor of Theology D A V College

CAWNPORE

महिला जगत्

विवाहित स्त्रियों का विद्रोह

[लेखिका—श्रीमती स मित्रादेवी जी पान्का देहली शाहदरा]

कुछ समय हुआ यह घोषणा हुई थी कि हैदराबाद (सिंध) में कुछ विवाहित स्त्रियों ने अपने पतियों को अपने इस निश्चय की सूचना दी थी कि वे ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही उन्होंने अपने पतियों से सिफारिश भी की थी कि वे लोग दूसरी स्त्रियों से शादी कर सकते हैं। पहले तो यह खबर मजाक के रूप में समझी गई थी और ख्याल था कि किसी मनचले ने योंही लिख मारा है। परन्तु बाद की खबरों से इस खबर की पुष्टि हो गई थी। यह भी मालूम हुआ था कि वे स्त्रियां ओं मंडल में दीक्षित हो गई हैं। इस मंडल में हिन्दू बौद्ध और जैन इन तीन मतों के व्यक्ति प्रविष्ट हो सकते थे।

Sindh Observer नामक सिंध के प्रमुख अंग्रेज पत्र में मंडल के सम्बन्ध में विस्तृत रिपोर्ट छपी थी। संवाद दाता ने कराची में मंडल के सदस्यों से भेंट करके अपनी विस्तृत रिपोर्ट अखबार को भेजी थी। सम्वाद दाता के संवाद से ज्ञात मंडल हिन्दू अध्यात्म विद्या के वृत्तान्त में अटपटांग ढंग से लिये हुये विचारों की खिचड़ी मालूम होता था। हमें बताया गया था कि मंडल का विश्वास है कि स्त्रियां मनुष्यों की अपेक्षा आध्यात्मिक विषयों को ग्रहण करने में ज्यादा समर्थ होता है। हमको यह भी बतलाया गया था कि इस मंडल के भक्त स्त्रियां अपने को कृष्ण की गोपियां कहती हैं। संवाददाता के कथनानुसार एक और विचित्र बात प्रकाश में आई थी और वह यह कि गीता मंडल में प्रवेश की एक शर्त रक्खी गई थी। प्रत्येक प्रार्थी से पूछा जाता था कि उसने गीता का कितना अध्ययन किया है। सिंध अरसे से हिन्दू धर्म शास्त्रों के अध्ययन का बड़ा केन्द्र नहीं रहा है मंडल की १५० भक्तिनियों ने गीता का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त किया यह एक पहेली है। गीता के पाठ से उन्होंने जो कुछ समझा था वह एक और भी बड़ी पहेली है गीता का कृष्ण और पुराणों का कृष्ण जो गोपियों के साथ क्रीड़ा करता था एक ही है यह बात बड़ी सन्देह जनक है। गीता का कृष्ण स्त्रियों की उपासना नहीं करता था।

Sindh Observer के संवाददाता को सुनी सुनाई बातों पर विश्वास नहीं हुआ था। गुरु जी के आगमन की प्रतीक्षा में बैठे २ उसने देखा कि कमरे में बढ़िया २ फलों का ढेर लगा था। कोमल गद्दे और तकिये लगे हुये थे। गरज कि राजसी ठाठ और ऐश आराम के वहां सभी लक्षण देख पड़ते थे। उसे आश्चर्य था कि त्यागवाद की फिलासफी में ये बात कैसे फिट हो सकता है। गीता उचित त्यागवाद की शिक्षा देती है गीता इस बात की सिफारिश नहीं करती है कि अपने ब्रह्मचर्य की विशुद्धता की परीक्षा के लिये मनुष्य को जान बूझकर अपने को भोग-विलास और राजसी ठाठ बाट के वातावरण में रखना चाहिए। संवाददाता को थियासाफिस्टों के अवतार मि० कृष्णमूर्ति तथा दादा (मंडल के अध्यक्ष) में सादृश्य देख पड़ता था मि० कृष्णमूर्ति अमेरिका के श्रोताओं के सामने तेज से तेज फैशन और बनाव शृंगार में उपस्थित होते थे। साधारण धर्मजीवी व्यक्ति के लिये उनका रहन सहन बड़ा कलामय आकर्षक और खर्चीला

है। ओरेम् मडल के दादा विवाहित व्यक्ति हैं। सम्व द द ता का कथन है कि वह अब भी वान प्रस्थाश्रम मे अपनी स्त्री के साथ रहते हैं। उनके एक पुत्र और दो पु त्रयाँ हैं इन सबकी शा न्यों हो चुकी है। पुत्र वधू और दाम द उनके सर्व प्रथम चेले हैं वस्तुत पुत्र वधू जिसकी अवस्था १९ वर्ष की है उसकी मुख्य शिष्या है। मडल मे 'दादा"के य द इस का स्थान है। गुरन सव ददाता को इसी के पास मडल की जानकारी प्राप्त करने के लिये भेजा था। सबसे अन्तिम सूचना यह थी कि भक्त स्त्रयों के पतियों ने ओ.म् मडल मे शान्त सत्याग्रह के ढग मे धरना दे दिया था अपनी स्त्रियों के आने के पूर्व ही वे प्रति दिन सुबह को मडल में पहुच जाते थे ताकि वे उसमें प्रवेश करने के पहले ही अपनी स्त्रियों को रोक सकें। उनमे सघर्ष होता रहता था इस घरलू नाटक मे हस्तक्षेप करने से पुलिस ने इन्कार कर दिया था। ये घटनाएं इनर बाद में हो रही थीं जो मडल का मुख्य केन्द्र था जामा करांची मे थे

बुद्ध के समय मे भी स्त्रयों का ऐसा ही विद्रोह हुआ था। पारिवारिक जीवन के प्रति उत्पन्न हुए विरोध के कारण ही बौद्ध धर्म का शीघ्र पतन हुआ था। ओरेम् मडल के संस्थापक के कथनानुसार मडल तपस्या की लाईनों पर चलाया जा सकता है इस तपस्या वाद के भी सुख वाद से कम खतरे नहीं है।

पिछले कुछ समय से इस ओ.म् मडल की गति विधि से सर्व साधारण जनता प्राय अपरि चित रही थी। परन्तु लगभग एक मास हुआ समाचार पत्रों मे प्रकाशित एक समाचार ने इस चर्चा को ताजा कर दिया है। समाचार पत्रों में छपा था कि एक महाशय की धर्म पत्नी ओ.म् मडली म प्रविष्ट हो गई है और उनके पति महोदय बहुत परेशान हैं। यहां तक कि ओ३म् मडली मैं से निकालने के लिए उन्हें कई दिन तक सत्याग्रह का आश्रय लेना पड़ा था। यह तो एक ऐसी घटना हुई जिसकी चर्चा अखबारों में चली परन्तु न मालूम ऐसी कितनी घटनायें अप्रकाश्य रूपमें होती होंगी। सरकार और जनता दोनों को ही इस बुराई का अन्त करने के लिये कटिबद्ध होजाना चाहिये।

सत्यार्थ प्रकाश विषयक साहित्य

(१) In defence of Satyarth Prakash By Prof Sudhakar Ji M A Secretary Sarvadeshik Sabha Price ≈)

विषय नाम से ही स्पष्ट है वर्तमान आन्दोलन के स्वरूप और महत्त्व को समझने के लिए यह छोटीसी पुस्तक प्रत्येक अंग्रेजी जानने वाले के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

(२) सत्यार्थप्रकाश की सार्वभौमता—

इसमें सत्यार्थ प्रकाश की रचना का उद्देश्य महर्षि दयानन्द के अमर शब्दों में बताकर विविध भाषाओं में उसके अनुवादों की विस्तृत तालिका प्राप्त सूचनाओं के आधार पर दी गई है। मू० —)

(३) Maharshi Dayananda and Satyarth Prakash—Tributes paid by many prominent persons of the east and the west

Compiled by Pt Dharma Deva Ji Vidya Vachaspati Price—As 6

(४) हम और हमारे समालोचक—अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी द्वारा मिर्जा गुलाम अहमद साहेब क़ादियानी की पुस्तक से सकलित—कुरान मे अन्य मतावलम्बियों के लिये प्रयुक्त अपशब्दों की सूची सहित (हिन्दी मे) मू —) We and our Critics —॥

पता — सार्वदेशिक सभा, बलिदान भवन देहली

सत्यार्थप्रकाश और कुरान की आलोचना

[लेखक—श्री रघुनाथप्रसाद जी पाठक देहली]

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के अन्तिम ४ समुल्लासों मे पौराणिक मत के विविध सम्प्रदायों, मत मतान्तरों, जैन मत, ईसाइयत और इस्लाम की आलोचना की गई है।

१४ वें समुल्लास में इस्लाम की आलोचना लिखने से पूर्व इस समुल्लास की भूमिका में स्पष्ट रूप से लिख दिया गया था कि इस आलोचना का मुख्योद्देश्य इस्लाम मत के अनुयायियों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं, वरन् सत्यासत्य का निर्णय करना मात्र है।

अन्य मतों की आलोचना का उद्देश्य भी इसी प्रकार का वर्णन किया गया है। श्री स्वामीजी ने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि ये आलोचनाएँ किसी द्वेष वश नहीं की गई हैं। यदि आलोचनाओं में कहीं भूल हुई और उनकी ओर शुद्ध भाव से उनका ध्यान आकर्षित किया गया तो इसमें संशोधन हो सकेगा। स्वामी जी के जीवन काल में जहाँ तक हमे ज्ञात है संशोधन की कोई भी मांग प्रस्तुत नहीं की गई। उनके निधन के पश्चात् आर्य विद्वानों और मुस्लिम मौलवियों के मध्य अनेक शास्त्रार्थ हुए। उनमे भी इस प्रकार की माग नहीं की गई। स्वामी जी महाराज ने यह बात खोलकर लिख दी थी कि उनको कुरान की आलोचना अरबी के मुस्लिम विद्वानों के किये हुए कुरान के प्रामाणिक अनुवादों पर आश्रित है। जहाँ तक हमें ज्ञात हुआ है इन अनुवादों की प्रामाणिकता का भी खण्डन नहीं किया गया है। यह मांग कई वर्षों से उठी हुई है और अब जब कि सिन्ध सरकार ने सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास के प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगाया है, इस माग ने और भी व्यापक रूप ले लिया है। देश के कई विद्वानों ने, जिनका आर्य समाज के वैधानिक संगठन से कोई सम्बन्ध नहीं है इस माग का केवल सत्यार्थप्रकाश के ही लिए अनुचित समझकर कहा कि, संसार के समस्त प्रसिद्ध धर्म-ग्रन्थों की भी जाँच-पड़ताल होकर इनमे उचित संशोधन होना चाहिए। यह माग क्रिया में आ सकती है वा नहीं? अथवा आनी चाहिए वा नहीं? इस सम्बन्ध में हमें कुछ नहीं कहना है।

यह अवश्य कहना है कि इस माग के क्रिया में आने पर सत्यार्थप्रकाश अपनी रक्षा स्वयं करेगा। क्योंकि उसमें इसकी पूर्णक्षमता है।

इस बात को बहुत से विद्वान् मानते हैं कि स्वामी जी के प्रादुर्भाव से पूर्व किसी धर्म-ग्रन्थ की प्रामाणिकता में संदेह करना बड़ा पाप माना जाता था। उस ग्रन्थ की प्रत्येक बात इलहामी और तर्क व सन्देह से ऊपर मानी जाती थी।

स्वामी जी ने अपनी स्वतन्त्र विचार धारा से, इस भावना को चकनाचूर और प्रचलित अनेक ग्रन्थों की बेहूदी बातों पर प्रहार करके उन्हें शुद्ध रूप दे दिया। श्रीयुत Dr M H सय्यद M A. Ph D D Lit के शब्दों में 'ऋषि दयानन्द' को उचित रीति से उस वस्तु के जिसे जर्मनी में धर्म शास्त्रों की उच्च आलोचना कहते हैं। देवदूत कहा जा सकता है।

He may Fitly be Styled as an

apostle of what in Germany is called Higher Criticism on matters mostly pertaining to religious Scriptures"

स्वामी जी ने अपने ग्रन्थों में विशेषतया सत्यार्थप्रकाश मे इस देवदूत होने का पर्याप्त परिचय दिया है। इसलिए हमने कहा है कि सत्यार्थप्रकाश अपनी रक्षा स्वय करेगा। और जब वह परीक्षा म न्दर में जायगा तो निश्चय ही उसमें से वह न केवल सफल निकलेगा, अपितु वह सफलता बड़ी शानदार रहेगी।

श्रीयुत पाल सिम्पसन (Pauls Simpson) को जिन्होंने निकट पूर्व में neareast में मिश्र की अल अजहर यूनिवर्सिटी में एक अध्यापक के रूप में कार्य किया था। इस्लाम पर वर्तमान विचार धारा के प्रभाव का अवलोकन करने का पर्याप्त अवसर मिला था। उन्होंने Moslem World नामक पत्र में कई वर्ष हुए मुस्लिम जगत् परिवर्तन काल में शीर्षक से एक लेख लिखा था ईसाई जगत् World Christianity नामक पत्र में प्रकाशित उस लेख के निम्न अंश ध्यान देने योग्य हैं।

Moslems them selves are now asking if the Koran is literally inspired Such questions challenge the shaikhs embarrassingly.

It means that the Koran must undergo Higher criticism just as the Bible has done. Higher Criticism of the Koran can be post poned no longer.

अर्थात् स्वय मुसलमान लोग अब पूछ रहे हैं कि क्या कुरान अक्षरशः दैवी (इल्हामी) है। इस प्रकार के प्रश्न शेखों को चैलञ्ज रूप में परेशान कर रहे हैं। इसका अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार बाईबिल की उच्च आलोचना हुई है अवश्य ही उसी प्रकार की कुरान की होगी। कुरान की उच्च आलोचना अब और अधिक समय के लिए टाली नहीं जा सकती।

Modern Mohammedan youths refuse to attend this orthodox institution (S. L Agher University) revered as it is many of whose teachings are now regarded as olsolete' (Modern Review for Feb. 1935 p. 2160.)

अर्थात् मुसल्मान नव युवक इस कट्टर पंथी संस्था (मिश्र की अलअजहर यूनिवर्सिटी) मे पढ़ने के लिए इन्कार करते हैं। जिसकी बहुतसी शिक्षाएँ अब पुरानी और अमान्य समझी जाती हैं। अवतरणों से उच्च आलोचना का स्वामी जी महाराज का अग्रदूतत्व भली भाँति प्रामाणित होता है।

प्रसिद्ध इतिहास लेखक श्री युत ऐच० जी० वेल्स ने संसार का संक्षिप्त इतिहास Short History of the world नामक एक पुस्तक लिखी थी। मुहम्मद साहब विषयक उक्त पुस्तक के किसी लेख से मुसल्मानों मे बहुत क्षोभ और असन्तोष फैला। लन्दन मे लगभग २०० मुसल्मान १३.६.३६को एक जलूस के रूपमे तत्कालीन हाई कमिश्नर सर फीरोज खानूनके पास यह प्रार्थना करने गए कि वे इतिहास कार के विरुद्ध ब्रिटिश संस्था के सामने उनका विरोध रखें। इस विरोध का फल क्या हुआ यह तो ज्ञात नहीं परन्तु यह ज्ञात है कि यह पुस्तक अब भी जनता

के बीच में है और खूब पढ़ी जाती है इस विषय पर आलोचना कलकत्ते की सुप्रसिद्ध मासिक अंग्रेजी पत्रिका माडर्न रिव्यू (Modern Rev led) के सुयोग्य सम्पादक स्व० श्री रामानन्द चटर्जी ने निम्न प्रकार की थी —

'What is called religious toleration can be practised in two ways One is not to attack the faith of the sacred books of other Communities or the persons and objects, revered by them The other is to bear with such attacks directed against one's own religion There ought to be reciprocities in these respects among the different religious communities Reasoned Criticism is not attack But even attack upon one s religion should either he borne patiently or met with facts and arguments

अर्थात् सहिष्णुता दो प्रकार से क्रिया में लाई जा सकती है एक प्रकार तो यह है कि किसी को दूसरी जातियों के पवित्र धर्म्म ग्रन्थों, व्यक्तियों और धार्मिक भावनाओं पर आक्रमण नहीं करना चाहिए दूसरा प्रकार यह है कि किसी के धर्म्म पर किए गए इस प्रकार के आक्रमणों को सहन करना चाहिए और इस प्रकार के विषयों में विभिन्न धार्मिक जातियों में परस्पर में भाई चारे का व्यवहार होना चाहिए। युक्ति पूर्ण आलोचना आक्रमण नहीं होती परन्तु यदि किसी धर्म्म पर उचित आलोचना आक्रमण समझा जाय तो वह धैर्य्य पूर्वक सहन की जानी चाहिए। तथा युक्तियों और प्रमाणों से उस आक्रमण का उत्तर दिया जाना चाहिए।"

ये विचार आज भी वही मूल्य रखते हैं जो जो उस समय रखते थे जबकि वे लेखबद्ध हुए थे। क्या हमारे मुसलमान भाई जो सत्यार्थप्रकाश की आलोचना के विरुद्ध जमीन आसमान एक करने को उतारू रहते हैं अनुभव करेंगे कि सत्यार्थ प्रकाश और ऋषि दयानन्द के प्रति उनकी पालीशन कितनी लचर और असंगत है। और संसार के विद्वन् समाज के सामने उनके शोर और कोलाहल का क्या मूल्य है?

सत्यार्थ प्रकाश विषयक चित्रपट

यह चित्रपट श्री गोविन्द राम हासानन्द जी आर्य साहित्य भवन नई सड़क देहली ने प्रकाशित किया है जिस पर सुन्दर शब्दों में 'सत्यार्थ प्रकाश हमारा धर्म ग्रन्थ है। हम इसकी तन मन धन से रक्षा करेंगे' लिखा है। यह प्रचारार्थ उपयोगी वस्तु है। मूल्य १ दर्जन का १)

"Punishment pescribed for the un believers in the Quran" Compiled dy Shri Pt Ram Chandra ji Dehlawi and Published by the Sarvadeshik Sabha Delhi Price—3 Annas

इसमें कुरान से १२३ वाक्यों को मौ० मुहम्मद अली के अंग्रेजी अनुवाद सहित संगृहीत किया गया है जो अन्य मतावलम्बियों के लिए कठोरता और असहिष्णुता की शिक्षा देती हैं। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

॥ ओ३म् ॥ कार्यालय —

सार्वदेशिक सभा की विज्ञप्ति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

देहली। तिथि ८-१२ २००१ / ता० २७-३ १९४५

आर्यसमाज का स्थापना-दिवस तथा सत्यार्थप्रकाश दिवस १३-४-१९४५ को मनाइये।

श्रीमान् मन्त्री जी आर्य समाज नमस्ते।

आर्यसमाज का स्थापना दिवस आर्यसमाज के स्वीकृत पर्वों मे से एक पर्व है। सभा के निश्चयानुसार इस वर्ष यह पर्व १३ ४ १९४५ को मनाया जायगा। इस दिवस का कार्यक्रम इस प्रकार है—

❋ कार्य क्रम ❋

(१) संकीर्तन'—

प्रात काल नर नारी अपने अपने ग्रामो व नगरों मे संकीर्तन और उसके बाद सन्ध्या हवन करे।

(२) सार्वजनिक सभा'—

प्रात, दोपहर वा सायकाल को (स्वसुविधानुसार) आर्य मन्दिरों इत्यादि मे सार्वजनिक सभाये की जाए और सभा मे आर्यपर्व पद्धति के अनुसार प्रथम सरस्वती (वेद वाणी) की महिमा के प्रदर्शक वेदमन्त्रों का पाठ, प्रवचन और व्याख्या हो। तत्पश्चात् आर्यसमाज स्थापना-दिवस की स्मृति मे आर्यसमाज की स्थापना व इतिहास, आर्यसमाज की उपयोगिता और उसके भावी कार्यक्रम पर निबन्ध पाठ तथा भाषणादि किये जाएं। भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध में अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव व आर्य समाजों के साथ सम्बद्ध अंश साथ भेजे जाते है इसके अनुसार कार्यक्रम का निश्चय करें। २४-३-१९४४ की अन्तरङ्ग सभा के निश्चयानुसार सत्यार्थप्रकाश दिवस भी उसी दिन बडे उत्साह के साथ सर्वत्र मनाया जाना चाहिये।

वेद प्रचार-निधि के लिये अपील:—

इस दिन की सार्वजनिक सभा मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद-प्रचार-फण्ड के लिए अधिक से अधिक धन सग्रह करके सार्वदेशिक सभा देहली के पते पर उसे तुरन्त भेज दिया जाये जिससे सभा देशदेशान्तरों मे वैदिक धर्म प्रचार कार्य का अधिक विस्तार कर सके। सब प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की सहमति से सभा ने गत ४ वर्षों से यह निश्चय किया हुआ है कि इस आर्यसमाज स्थापना दिवस के पवित्र उपलक्ष्य मे प्रत्येक आर्यसमाज अपने सभासदों से उनके परिवार के प्रत्येक व्यक्ति पर कम से कम ।) के हिसाब से और अन्य प्रत्येक आर्य से कम से कम ।) के हिसाब से एकत्र करके सभा की वेद प्रचार निधि के लिये भेजे। यह कम से कम राशि धार्मिक-कर के रूप मे है, वैसे तो जितनी भी अधिक राशि आर्य नरनारी दान रूप मे वेद प्रचारार्थ देंगे वे उतने ही पुण्य के भागी होंगे। आशा है आप इस वर्ष पूरे उत्साह से दान की राशि एकत्र करके न्यून से न्यून ५०) भेजने की कृपा करेंगे। कृपया इस आवश्यक कर्त्तव्य को न भूलिये ताकि पुन इस दान को एकत्र करने मे समय और शक्ति का व्यय न करना पडे।

दीपमाला

इसी दिन रात्रि को आर्य समाजों आर्य्य संस्थाओं और आर्य्य गृहों मे रोशनी की जाय।

नवीन आर्य समाजो की स्थापना

यह भी यत्न किया जाय कि उस दिन अधिक संख्या मे निकटवर्ती स्थानों मे जहाँ आर्य समाजें नहीं है आर्य समाजे स्थापित की जाये।

त्रैवार्षिक कार्यक्रम

विषयक

अखिल भारतीय आर्यसम्मेलन के प्रस्ताव के मुख्य अंश

यह सम्मेलन भावी तीन वर्षों के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उद्घोषित कार्यक्रम का निम्न लिखित रूप में समर्थन करता है।

१ स्वाध्याय वैदिक पंचमहायज्ञ तथा वैदिक संस्कारादि और सत्संग द्वारा आर्य नर नारियों के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवनों को उच्च और दृढ बनाया जावे।

२ आर्य वीर दल का दृढ और व्यापी संगठन बनाया जावे। तीन वर्षों में आर्य वीरों की संख्या कम से कम १ लाख का जावे। आर्य वीर और आर्य वीरांगनाओं के संगठन पर समान रूप से बल दिया जावे।

३ आर्य समाज के संगठन को अधिक व्यापी करने के लिए इस समय में कम से कम ३ हजार नई समाजों की स्थापना की जावे और ५० हजार नये आर्य सभासद बनाये जावें।

४ ग्रामों में वैदिक धर्म प्रचार पर अधिक बल दिया जावे प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें तथा स्थानीय आर्य समाज निम्न लिखित तथा ऐसे ही अन्य उपायों से ग्राम प्रचार के कार्य को आगे बढ़ावें

(क) ग्राम प्रचार मण्डलियों द्वारा

(ख) औषधिवितरण तथा अन्य सेवा कार्यों द्वारा

(ग) ग्रामों में प्रारम्भिक शिक्षणालय स्थापना द्वारा

५ दलित और आम वासी कहे जाने वाली जातियों में उच्च जीवन और समानता के वैदिक सिद्धान्तों का क्रियात्मक प्रचार करके उन्हें आर्य जाति का दृढ अंग बनाने का यत्न किया जावे। सब आर्य सामाजिक संगठनों को विशेष यत्न करके आसपास के हल्कों में बसी हुई उन पिछडी हुई जातियों को आर्य समाज के दायरे में लाने का भरसक यत्न करना चाहिये।

यह सम्मेलन आर्य जनता से अनुरोध करता है कि वह गोरक्षा के कार्य को संगठित रूप में बढावे

७ यह सम्मेलन आर्य जनता आर्य प्रतिनिधि सभाओं आर्य संस्थाओं तथा आर्य विद्वानों से अनुरोध करता है कि वे अपने सब कार्यों को आर्य भाषा (हिन्दी) में ही करें।

आगामी तीन वर्षों का यह स्थायी कार्यक्रम होगा समय समय पर नई परिस्थितियों के अनुसार जिन कार्यों की आवश्यकता होगी उनके सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा उसी समय उचित आदेश देती रहेगी। कार्यक्रम की प्रगति की देख रेख के लिये सभा प्रान्तिक सभाओं से त्रैमासिक विवरण मंगाती रहेगी।

समस्त आर्य समाजों को अपने गत वर्ष के इस विषयक कार्य की सूचना अपनी प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं को भेज देनी चाहिये।

सुधाकर एम० ए०, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।
तिथि २२-३-१९४५

सामाजिक जगत् कुछ मुख्य उल्लेखनीय समाचार

प्रशसनीय शुद्धि समारम्भ—५ मार्च १६ ५ को बम्बई प्रान्त य शुद्धि सङ्घ क ओर स थाणा जिला पेटा टवर गाव मे के बडाला प्रम के ४०० ईसाई स्त्री पुरुषों की शुद्धि स व शिक सभा क अवैतनिक उपदेशक प० लक्ष्मण राव जी ओपन तथा प० ज्ञाने द्र जी ने कराई श्री नार यण शर्मा ने सहायता की। श्री ग्ङ्गा र म जी रावल कल्याण वाले सभापति थे डा० य० वि० पुरन्दर ने १५० इस शुभ अवसर पर सङ्घ का दान दिए

सत्यार्थ प्रकाश रक्षान्दोलन

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलनों की भरमार —

अखिल करनाल जिला आर सम्मेलन ३ ४ मर्च को सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा क अन्तरङ्ग सदस्य देश भक्त कुवर चांदकरण जी की प्रधानता में बडे समारोह क साथ किया गय जिस म सिन्ध सरक र द्वारा सत्याथ प्रकाश क १४ वें समुल्लास पर लगाये प्रतिबन्ध की घोर निन्दा करते हुए करन ल जिले के आर्य हिन्दू मात्र अपील की गई कि वे अपने स्थानों मे अधिक स अधिक सं रक्षाथ ब लन न करने के लिए तय्यार हों। इस प्रक र के सम्मेलन से देश के अनेक भागों मे हुए उन में से निम्न लिखित विशेष उल्लेखन य हैं अखिल भारतीय सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समिति के अध्यक्ष माननीय श्री घनश्याम सिंह जी के सभा पतित्व मे हरियाना प्रान्तीय आर्य सम्मेलन १० ११ मार्च को रोहतक में बड़ी धूम धाम और उत्सा ह के साथ किया गया। १७ मार्च को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के वार्षिकोत्सव पर सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन कौन्सिल आफ स्टेट के सदस्य माननीय राजा गोविन्दलाल जी पित्ती की प्र ान ा में हुआ ।जस मे श्री लाला नारायणदत्त जी प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति प धमवीर जी वेदालङ्का र प० वीरेन्द्र जी विद्या लङ्का र बाबा मिल्खा सिंह जी आदि के ओजस्वी भाषण हुए और सत्य र्थ प्रकाश की तन मन धन से रक्षा विषयक प्रस्ताव सवसम्मति से स्वीकृत हुआ। २५ मार्च को गुरुकुल कुरुक्षेत्र के उत्सव पर सत्याथ प्रकाश सम्मेलन किया गया लुधियाना आय समा ज क उत्सव पर श्री लाला खुशहाल चन्द जी क सभ पतित्व में सत्याथ प्रकाश सम्मेलन बड़ी धूम धाम से किया गय ३० मार्च को सन् ाय समाज क उत्सव पर आय सम्मेलन हकीम मगतराम जी के सभापतित्व में उत्साहपूर्वक किया गया जिस मे सिन्ध सरकार की सत्यार्थ प्रकाश पर लग ई पाबन्दी का घोर प्रतिवाद किया गया इस प्रकार गुरुकुल सूपा आर्य समाज हनुमान रोड नई देहली । गुरुकुल कांगड़ी अन्य अनेक स्थानों पर सत्याथ प्रकाश सम्मेलन हुए जिनमे आय जनत ने अपने इस पवित्र धर्म ग्र थ की रक्षार्थ सब प्रकार के त्याग और बलिदान के लिए अपने तय्यार होने की घोषणा की। इस विषयक प्रतिज्ञा पत्र प्रतिदिन सार्वदेशिक सभा कार्यालय में निरन्तर आ रहे हैं जिनमे उत्साही आय सत्याग्रह के लिए अपने को प्रस्तुत कर रहे हैं।

माननीय श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त श्री कुवर चांदकिरण जी शारदा श्री प० ज्ञानचन्द्रजी बी० ए० आय सेवक श्री ला० ब्रजलाल जी और प्रो० ताराचन्द जी एम० ए० मन्त्री सिन्ध आर्य

प्रतिनिनिधि सभा के साथ १४ से २५ मार्च तक सिन्ध प्रान्त में रहकर सत्यार्थ प्रकाश विषयक प्रतिबन्ध के निवारणार्थ प्रयत्न में तत्पर रहे। उनकी सिन्ध यात्रा से सिन्ध प्रान्तीय आर्य हिन्दू जनता में अपूर्व उत्साह का सचार हो गया। उन्हें आर्यसमाजों के अतिरिक्त कराची कौर्पोरेशन की ओर से भी मानपत्र अर्पित किया गया तथा जनता की ओर से लगभग १६ हजार रु० की थैली भेंट की गई। माननीय गुप्त जी के प्रयत्नों की सफलता की समस्त आर्य हिन्दू जनता हार्दिक कामना करती है। यदि दुर्भाग्यवश उस वैधानिक प्रयत्न में सफलता न हुई तो वह नेताओं के आदेशानुसार अगला कदम उठाने को तैयार है। अनेक 'सनातन धर्मी' साधुओं ने भी अपने नाम सत्याग्रह के लिए प्रस्तुत किये हैं।

सत्यार्थप्रकाश प्रतिबन्ध का विरोधः—

गोवर्धन मठ के जगद् गुरु श्री शङ्कराचार्य जी, श्री १०८ स्वामी विद्यानन्द जी, माननीय बा० पुरुषोत्तम दास जी टण्डन स्पीकर यु० प्रा० असैम्बली, बा० श्री कृष्ण सिंह जी भू० पू० प्रधान मन्त्री बिहार सरकार, डाक्टर सच्चिदानन्द सिंह जी—भू० पू० वाइस चासलर पटना युनिवर्सिटी, कुमार गङ्गानन्द सिंह जी भू० पू० प्रधान विहार हिन्दू महासभा बा० श्री नारायण जी अरोड़ा प्रधान विहार प्रान्तीय हिन्दू महासभा आदि महानुभावों ने सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास के प्रकाशन पर लगाए प्रतिबन्ध को सर्वथा अनुचित और भारत रक्षा कानून का घोर दुरुपयोग बताते हुए उसके हटाने का अनुरोध किया है। श्री राजा गोविन्दलाल जी पित्ती ने कौन्सिल आफ स्टेट के वर्तमान अधिवेशन में भी दो बार इस विषय की चर्चा की तथा इसे भारत रक्षा कानून के घोर दुरुपयोग का स्पष्ट उदाहरण बताया।

कई योग्य महानुभावों का खेद जनक देहावसानः

मार्च मास में पजाब प्रान्तीय हिन्दू महासभा के प्रधान राजा नरेन्द्रनाथ जी, पजाब के सुप्रसिद्ध कांग्रेसी नेता श्री ला० दुनीचन्द्र जी M L A जस्टिस सर शादीलाल जी और बंगाली आर्य प्रतिनिधि सभा के भू० पू० प्रधान श्री हरगोबिन्द जी गुप्त का खेद जनक देहावसान हुआ है। इन महानुभावों की सेवाओं की प्रशंसा करते हुए हम उनके परिवारों से समवेदना प्रकट करते हैं।

शामली में संस्कृत कालेज की स्थापना

शामली जिला मुजफ्फरनगर में हिन्दू महासभा के मन्त्री स्वर्गीय श्री प० चन्द्रगुप्त जी वेदालङ्कार की पुण्य स्मृति में 'श्री वेदालङ्कार संस्कृत कालेज' स्थापित करने का निश्चय किया गया है कालेज में संस्कृत और हिन्दी की उच्च परीक्षाओं के साथ साथ केवल अंग्रेजी मे B- A. तक एव वैद्यिक में आयुर्वेदाचार्य तक तथा लेखन सम्पादन, भाषण कला और टाइप राईटिंग की शिक्षा का प्रबन्ध होगा। प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों को शीघ्र आवेदन पत्र भेजने चाहियें अध्यापन के लिए उत्तम अध्यापकों का प्रबन्ध किया जा रहा है।

सम्पादकीय

आर्य समाज की वास्तविक उन्नति

सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार इस वर्ष १३ अप्रैल को सर्वत्र आर्य समाज स्थापना दिवस बडे उत्साह के साथ मनाया जाएगा ऐसी हम आशा करते है और ऐसा करने की सब आर्य समाजों के अधिकारियों तथा अन्य कार्यकर्ताओं को प्रेरणा करते हैं किन्तु यह स्मरण रखना चाहिये कि केवल उस दिन की धूमधाम से विशेष लाभ नहीं हो सकता जब तक सब आर्य नरनारी गतवर्ष के कार्य पर दृष्टिपात करते हुए आगामी वर्ष अधिक उत्साह और दृढ़ता के साथ सार्वदेशिक सभा तथा अ० भा० आर्य सम्मेलन द्वारा निश्चित त्रैवार्षिक कार्यक्रम के अनुसार कार्य करने का दृढ़ निश्चय न करें। वैयक्तिक और पारिवारिक जीवन की पवित्रता, आर्यवीर दलों का व्यापी और दृढ़ सगठन ग्रामों में शिक्षा तथा सेवाकार्यादि द्वारा प्रचार, आर्य भाषा प्रचार दलितोद्धार, गोरक्षा आदि सारा कार्यक्रम अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिनमें से किसी की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। खेद है कि अपने वैयक्तिक और पारिवारिक जीवन को पूर्णतया आर्य आदर्श के अनुकूल बनाने की ओर जितना ध्यान आर्य समाज में प्रविष्ट नर नारियों को देना चाहिये उतना नहीं दिया जाता। सार्वदेशिक आ० प्र० सभा द्वारा स्वीकृत आर्य समाज के नियमोपनियमों की धारा ४ के अनुसार सन्ध्या आदि नित्य कर्म, शुद्ध वृत्ति, वैदिक संस्कार पतिव्रत तथा पत्नीव्रत आदि सदाचार हैं। व्यभिचार मद्यादि मादक द्रव्यों और मांसादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन जुआ, चोरी छल कपट रिश्वत आदि दुराचार हैं ' यदि इस परिभाषा के अनुसार आर्य लोग स्वयं पूर्ण सदाचारी बनें और ऐसे ही सच्चे आर्यों को आर्य समाजों के अधिकारी और अन्तरङ्ग सदस्य चुनें तो आजकल जो शिकायतें अनेक स्थानों पर सुनने में आती हैं उनमें से बहुत सी दूर हो सकती हैं। आर्य वीर दलों के दृढ सगठन की भी विशेषत वर्तमान सकट मय परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए जबकि आर्य धर्म आर्य संस्कृति और और आर्य भाषा पर चारों ओर से गुप्त वा प्रकट रूप में अनेक आक्रमण किये जा रहे हैं बड़ी भारी आवश्यकता है किन्तु इस विषय की ओर कई समाजों का पर्याप्त ध्यान नहीं है यह जानकर दु:ख होता है दलितोद्धार और शुद्धि आन्दोलन मे तबतक सफलता असम्भव है जबतक आर्य नरनारी अपने को जातिभेद की दलदल में से सर्वथा बाहर न निकाल लें और सब के साथ पूर्ण प्रेम और समानता का व्यवहार न करें। आर्य समाज स्थापना दिवस पर इस त्रैवार्षिक कार्यक्रम के प्रत्येक अंश पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके अधिक उत्साह के साथ इसकी पूर्ति का दृढ निश्चय सब आर्यों को करना चाहिये तभी आर्यसमाज की वास्तविक उन्नति हो सकेगी केवल मौखिक प्रस्ताव पास कर लेने वा धुआंधार भाषण

आर्य समाज की प्रशंसा में देने से नहीं। प्रत्येक आर्य सबसे पहले अपने परिवार और मित्र मण्डली को आर्य धर्म का सच्चा अनुयायी बनाने का प्रयत्न करे तो भी इस कार्य में बहुत शीघ्र सफलता मिल सकती है।

ओं मण्डली का निन्दनीय कार्यकलापः—

सिन्ध की ओं मण्डली के विषय में विवाहित स्त्रियों का विद्रोह' इस शीर्षक लेख में बड़ा उत्तम प्रकाश डाला गया है। हम भी उसके साहित्य को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है और हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि आध्यात्मिकता की आड़ में यह मण्डली सदाचार और नैतिकता पर कुठाराघात कर रही है जिसका तीव्र प्रतिवाद करना प्रत्येक सदाचार प्रेमी का कर्तव्य है इस मण्डली की प्रमुख सचालिका प्रजापति ब्रह्माकुमारी ओं राधा के अपने माता पिता भाई पति आदि के नाम लिखे पत्र पुस्तक रूप में प्रकाशित हुए हैं जिनमें उन्हें बड़े तिरस्कार सूचक Undivine hellward bound, degraded un righteous अथवा अदिव्य, नरकाभिमुखी, पतित, पापी आदि शब्दों से स्मरण किया गया है तथा ४ दिसम्बर १९४३ के पत्र में लिखा गया है कि पतिव्रता धर्म और पत्नीव्रत धर्म केवल सत्ययुग और त्रेता में ही चल सकता है द्वापर, कलियुग में बिल्कुल नहीं। इनकी आध्यात्मिकता की पोल तब पूरे तौर पर खुल जाती है जब अपने सम्बन्धियों के प्रति इतने अनादर का भाव दिखाती हुई ओं मण्डली की सचालिका, बम्बई के गवर्नर के नाम ७ सितम्बर १९४३ को लिखे पत्र में उसे Dear God head in the form of Governor (अथवा ईश्वर रूप गवर्नर) के रूप में सम्बोधित करती और खुशामद करने में जरा भी सकोच नहीं करती। इसी तरह बम्बई के गवर्नर की पत्नी को ५ सितम्बर १९४३ के पत्र में वह Dear self या प्रिय आत्मा जैसे आत्मीयता सूचक शब्दों में याद करके खुशामद करती हुई बतलाती है कि हम दिव्य परिवार की ३३० सदस्याएं हैं जो सन्यासियों की तरह सासारिक सम्बन्ध का परित्याग कर अहं ब्रह्मास्मि का श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त करती और उसे अन्यों को देती हैं। वे अपने को दिव्य कुमारियों या प्रजापति कुमारियों के नाम से पुकारती हैं। 'अहंब्रह्मास्मि' 'अहं चतुर्भुज' इत्यादि का आश्रय लेकर अनाचार फैलाने वाली इस ओं मण्डली का जो पहले सिन्ध सरकार द्वारा अवैध (Uulawful) घोषित किये जाने पर भी अपनी कुचेष्टाओं का परित्याग नहीं कर रही घोर विरोध सब सदाचार के प्रेमियों को अवश्य करना चाहिये जिससे कहीं इस दुराचार वर्धिनी मण्डली की जड़ न जमने पाए।

हिन्दी हिन्दुस्तानी विवाद और जनता का कर्तव्यः—

गत कुछ वर्षों से हिन्दी और हिन्दुस्तानी विषयक विवाद चल रहा था जिसने अब पर्याप्त उग्र रूप धारण कर लिया है। जैसे कि हम गत अंक में और उससे पूर्व भी कई बार लिख चुके हैं संस्कृत निष्ठ हिन्दी ही हमारे देश की राष्ट्रभाषा हो सकती है। हिन्दुस्तानी के नाम से अरबी फारसी के कठिन शब्दों से भरी हुई उर्दू को राष्ट्रभाषा के रूप में भारतीयों पर लादने का प्रयत्न करना सर्वथा अनुचित है चाहे यह प्रयत्न किसी भी संघ की ओर से क्यों न किया जाता

हो। हिन्दू मुस्लिम एकता के राजनैतिक उद्देश्य से महात्मा गान्धी जी जैसे मान्य महानुभाव का भी ऐसे अनुचित प्रयत्न को प्रोत्साहित करना सर्वथा अभिनन्दनीय नहीं है। माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने इस सम्बन्ध में युक्त प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भाषण देते हुए ठीक ही कहा है कि 'मैं गान्धीजी से विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि वे प्रत्येक भाषा के विद्वानों तथा भाषा शास्त्रविदों का सम्मेलन बुलाकर सारे देश के लिये एक भाषा ही नहीं बल्कि एक लिपि के निर्माण का प्रयत्न करें। मैं दिल से चाहता हूं कि हिन्दू मुसलमानों में एकता हो लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि हिन्दुओं के न्यायसम्मत हितों की बलि देकर मुसलमानों को सन्तुष्ट करने के लिये ठीक रास्ता छोड़ दिया जाय। यह देखा है कि कांग्रेस की राष्ट्रीयता का दूसरे लोग अनुचित लाभ उठाएं। आगरा में एक पत्र प्रतिनिधि से भेंट में माननीय टण्डन जी ने कहा 'हिन्दी अपने स्थान पर अलग ही रहेगी। हिन्दी उर्दू के संयोग से हिन्दुस्तानी खिचड़ी की पैदायश सभ्यता के लिये हानिकारक है। हिन्दी अलग रहे और उर्दू अलग।" युक्तप्रान्त के भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री श्री सम्पूर्णानन्द जी ने युक्तप्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन में कहा कि 'हिन्दी को राष्ट्रभाषा होने का सहज अधिकार प्राप्त है। उन्होंने राष्ट्रभाषा प्रचार सभा द्वारा एक वर्णसंकर भाषा बनाने और हिन्दुस्तानी के नाम से उर्दू को लोकप्रिय बनाने की तीव्र निन्दा की।" हम इन दोनों महानुभावों के इस विषयक विचारों से पूर्णतया सहमत हैं तथा जनता से अनुरोध करते हैं कि वह केवल प्रस्तावों से सन्तुष्ट न होकर इस राष्ट्रभाषा को पूर्णतया अपनाये। डाकघरों तथा रेडियो विभाग आदि में जो इस राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपमान हो रहा है उसका वास्तविक प्रतीकार इसके क्रियात्मक रूप में पूर्णतया अपनाने से ही हो सकता है। आर्यों को तो महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार इस आर्यभाषा को पूर्णतया अपनाना ही चाहिये अन्य सब भारतीयों को भी इस अपने दैनिक जीवन में अपनाकर अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन करना चाहिये। केन्द्रीय हिन्दी रक्षा समिति श्रद्धानन्द बाजार देहली इस विषय की ओर सरकार और समस्त जनता का ध्यान आकर्षित करके अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य कर रही है और उसने 'भारतीय डाकघरों में हिन्दी का अपमान क्यों' शीर्षक पुस्तिका और सङ्कल्प पत्र' प्रकाशित किये हैं जिन्हें मंगवाकर सबको इस उद्देश्य से कार्य करने वाली संस्थाओं के साथ पूर्ण सहयोग देना चाहिए आर्य जनता को इस विषय में क्रियात्मक उदाहरण रखकर जनता का पथप्रदर्शन करना चाहिये।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में इस्लाम

इस्लाम में सुधार की आवश्यकता पर समझदार मुसलमानः—

तथा अन्य मतों की बुद्धि विरुद्ध बातों की आलोचना केवल सुधार और सत्यप्रचार के भाव से की थी जिसका विचारशील सज्जनों पर अवश्य प्रभाव पड़ा है। समझदार मुसलमान इस्लाम में सुधार की आवश्यकता को कैसे विशेष रूप से अनुभव करते रहे हैं इसका विस्तार से फिर कभी दिखाया जायगा किन्तु यहां इसके दो तीन उदाहरण देना हमें आवश्यक और उचित प्रतीत होता है। आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी के एम ए. श्री खुदाबख्श नामक मुसलमान सज्जन ने Essays Indian and Islamic 'नामक पुस्तक में बहुविवाह, तलाक़, पर्दा तथा मुसल्मानों के अन्दर पाई जानेवाली मतान्धता आदि की

बड़ी कठोर आलोचना करते हुए इनमें सुधार को आवश्यक बताया है। उन्होंने मुसलमानों की मतान्धता के विषय में लिखा है कि 'While the true spirit of our religion has departed from us, we are as fanati al as ever, fanaticism un-reasoned and un reasoning is the lord we implicitly obey' (Essays Indian and Islamic P 265)

अर्थात् जबकि अपने धर्म की सच्ची भावना हम से लुप्त हो चुकी है हम इतने ही मतान्ध वा हठधर्मी हैं जितने सदा से रहे हैं। बुद्धि विरुद्ध, तर्क विरुद्ध मतान्धता वा हठधर्मिता रूप प्रभु की आज्ञा को हम आंख मूंद कर मानते हैं।

एक और स्थान पर श्री खुदाबख्श एम ए ने लिखा है कि 'Instead of liberal minded toleration, we have gross big try But this intelle tual dark ness must necessarily be followed by intellectual dawn'

(Essays Indian & Islamic P 24)

अर्थात् हमारे अन्दर उदारतापूर्ण सहिष्णुता के स्थान पर मतान्धता पाई जाती है। किन्तु इस बौद्धिक अन्धकार का स्थान अवश्य ही बौद्धिक उषा वा जागृति को लेना चाहिये।

इस हठधर्मिता, मतान्धता तथा बौद्धिक अन्धकार को दूर करना ही महर्षि दयानन्द जी का मुख्य उद्देश्य था यह लिखने की आवश्यकता नहीं।

मैसूर युनिवर्सिटी में ईरानी भाषा और साहित्य के प्रोफेसर शुस्त्री नामक मुसलमान सज्जन ने Out lines of Islamic Culture नामक ८०० पृष्ठों की पुस्तक में भी अनेक स्थानों पर मुसलमानों की मतान्धता तथा हानिकारक प्रथाओं की कड़ी आलोचना करते हुए लिखा है कि.—Those muslims who have sense enough for example the turks, have torn to pieces all those customs which have proved obstacles in the way of progress Indian Muslims can do the same, They need not give up Islam and they should not ut they must give up superstition (P 766) 'It is certain that Islam as interpr eted, taught and brought into prac tice by th conservative and Orthodox Mullas or Moulvis, can not endure long Similarly, the belief in Pirs and fakirs may have to end before long (P 767)

इत्यादि अर्थात् जो मुसलमान समझदार हैं उदाहरणार्थ तुर्क उन्होंने उन्नति में बाधक सब प्रथाओं के टुकड़े २ कर डाले हैं। भारतीय मुसलमान भी ऐसा ही कर सकते हैं। उनको इस्लाम का परित्याग करने की आवश्यकता नहीं और ऐसा नहीं करना चाहिये परन्तु उन्हें अन्धविश्वास का परित्याग अवश्य कर देना चाहिये। यह निश्चित है कि अनुदार कट्टर मुल्लाओं और मौलवियों द्वारा व्याख्यात प्रचारित और कार्यरूप में परिणत इस्लाम देरतक नहीं रह सकता। इसी तरह पीरों और फकीरों में भी विश्वास का शीघ्र अन्त करना पड़ेगा इत्यादि। विस्तार भय से इस विषयक अन्य उद्धरणादि हम यहां नहीं दे सकते जिन्हें फिर कभी दिया जायगा। शुस्त्री महोदय ने महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि पढ़े हैं और वे उनसे पर्याप्त प्रभावित प्रतीत होते हैं। हम सब यही चाहते हैं कि हमारे मुसलमान बन्धु मतान्धता असहिष्णुता तथा अन्ध विश्वास का परित्याग करके सत्य को ग्रहण करने के लिये सदा उद्यत रहें।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति

श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पाठनगर के लिये बाबा सेवाराम चावला द्वारा "चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।



१९४५ ई०
२००२ सं०

सम्पादक—

वार्षिक मू य
विदेश ७शि०

सत्यार्थप्रकाश चतुर्दश समुल्लासांक (४)

विषय सूची

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष २१ } मई १९४५ ई०] वैशाख २००२ दयानन्दाब्द १२२ { अङ्क ३

* वैदिक प्रार्थना

ओ ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया। तेभिर्नः सोम मृडय ॥ ऋ० ८। ६१। ५

हे (साम) सकल जगदुत्पादक शान्त स्वरूप परमेश्वर (ये ते ऊर्मय) जो तेरी विश्व प्रेम वीरता, अदम्य उत्साह, दुःखित मात्र पर दया आदि की तरङ्गें (धारया) जगत् के धारण करने वाली तेरी जगद्व्यापक ज्ञान धारा द्वारा (पवित्रम् अभिक्षरन्ति) मनुष्य के पवित्र हुए २ अन्तःकरण में प्रकट होती है—उठती है (तेभि) उन तरङ्गों से (न) हमे (मृडय) आनन्दित कर दो।

विनय—हे शान्ति के स्रोत दयामय प्रभो! आप जगत् के उत्पन्न करने वाले और आनन्द स्वरूप स्वामी हैं। आपकी जगद्व्यापक ज्ञान धारा समस्त जगत् को पवित्र कर रही है। उसके स्पर्श से ही मनुष्य का मन पवित्र हो जाता है और उसमें विश्वप्रेम, वीरता, अदम्य उत्साह, सर्वार्पण कर डालने की उमङ्ग, दुःखित मात्रा पर दया इत्यादि रूप तरङ्गें उठने लगती हैं। मनुष्य को सच्चे सुख और आनन्द की प्राप्ति इन तरङ्गों के मानस सरोवर मे उठने से ही हो सकती है न कि राग, द्वेष, क्रोध, मोह भय, शङ्का इत्यादि अज्ञान मूलक क्षुद्र तरङ्गों से। हे शान्तिमय प्रभो। ऐसी कृपा करो कि हम तुम्हारा स्मरण करते हुए सदा शुभ भावनाओं से प्रेरित होकर उत्तम कार्यों के करने में तत्पर रहें जिससे हमें सच्चे सुख और आनन्द की प्राप्ति हो सके॥

|| ऋग्वेद २।४१।११

हमारे (पश्चात्) पीछे (अघम्) पाप (न नशत्) न लगे तो (न पुरः) हमारे सामने (भद्रम्) कल्याण ही (भवाति) होता रहे ॥

व्याख्या—भाइयो ! इस में सन्देह नहीं कि भगवान् तो हमें सदा सुख ही दे रहे हैं, निरन्तर हमारा कल्याण ही कर रहे हैं। फिर भी जो असुख हमारे सामने आता है, हम दुःख देखना पड़ता है उसका कारण यह है कि हमने अपने पीछे पाप को लगा रखा है और पाप का परिणाम दुःख होना अटल है, अनिवार्य है। यदि हमारे पीछे पाप न लगा हो तो हमारे सामने भद्र ही भद्र आता जाए। जब हम कोई पाप करते हैं तो समझते हैं कि वह वहीं खतम हो गया। हम सम झते हैं कि दो घण्टे पहिले किया हुआ हमारा पाप तभी दो घण्टे हुए उसके कर्म के साथ साथ ही समाप्त हो चुका, अब उसका हमसे कुछ सम्बन्ध नहीं। इस तरह हम पाप करके आगे चलते जाते हैं और चाहते हैं तथा आशा करते हैं कि आगे आगे हमारे लिए भद्र ही भद्र आता जाए। पर हमें मालूम रहना चाहिये कि हमारा किया हुआ पाप चाहे हमारी आंखों के सामने नहीं आखड़ा होता हो पर वह नष्ट भी नहीं होता है। वह तो हमारे पीछे लग जाता है और तब तक हमारा पीछा नहीं छोड़ता है जब तक कि वह अभद्र, अकल्याण वा दुःख के रूप आकर हमें फल नहीं भुगा लेता। अतः याद रखिये कि हमें न दिखाई देता हुआ हमारे पीछे रहता हुआ ही हमारा पाप एक दिन हमारे आगे अभद्र व क्लेश के रूप में आता है और अवश्य आता है जैसे कि हमारा हरेक पुण्य भी पीछे रहता हुआ, दिखाई न देता हुआ एक दिन हमारे आगे भद्र के रूप में आता है। यह हमारी कितनी मूर्खता भरी इच्छा है कि हम चाहते तो यह हैं कि हमारा सदा भला ही होवे, हमारे सामने सदा सुख, स्वास्थ्य समृद्धि आदि ही आते जाएँ पर साथ ही हम पाप करना भी नहीं छोड़ना चाहते यह कैसे हो सकता है? हमारे पीछे तो हमारा नाश करता हुआ हमारा पाप चल रहा होता है और हम मूर्खता पूर्ण आशा में यह प्रतीक्षा करते होते हैं कि हमारे सामने सुख आता होगा। यह असम्भव है। अतः आओ, आज से हम कम से कम आगे के लिये पाप करना तो सर्वथा त्याग दें। यदि हम विशेष पुण्य नहीं कर सकते तो कम से कम इतना तो सकल्प करलें कि हम अब से एक भी पाप अपने से न होने देंगे। इतना करने से भी भगवान् की दया से हमारे शीघ्र ही सुदिन आ जाएंगे। पाप का पीछा छूट जाने से भद्र के लिये मार्ग साफ़ हो जाएगा। पर यदि हम इतना भी न कर सकें तब तो परमेश्वर की सुख व कल्याण की वर्षा में रहते हुए भी हमारे भाग्य में तो दुःख ही दुःख रहेगा॥

धर्म तथा साम्यवाद

[लेखक—प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार बम्बई]

(यह लेख इन्टर रिलिजियस कन्वेंशन में जो सर राधाकृष्णन तथा श्री जयकर की अध्यक्षता में हुई, पढ़ा गया था उपयोगी होने के कारण इसे प्रकाशित किया जा रहा है सम्पादक)

क्या 'धर्म' मनुष्य-जाति को मिलाने वाला है, या फाड़ने वाला ? क्या यह 'केन्द्रीकरण' की शक्ति है—ऐसी शक्ति जो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्यों के, एक जाति को दूसरी जातियों के तथा एक देश को दूसरे देशों के निकट लाती है, या 'विकेन्द्री-करण, की राशि है जो मनुष्य को मनुष्य से, जाति को जाति से तथा देश को देश से दूर करने का कार्य करती है ? इस प्रश्न का उत्तर हां तथा 'न' दोनों में दिया जा सकता है। ऐसे लोग विद्यमान हैं जो धर्म की तुलना उस देव दूत स करते हैं जो क्षुब्ध मानव जाति को शान्ति का सन्देश देता है ऐसे लोग भी हैं जो धर्म का नाम सुनते ही तलवारों की चमचमाहट और नास्तिकों के लिए घोर नरक की यातनाओं का चित्र खींचने लगते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि "धर्म" ने संसार में सुख की अपेक्षा दुख तथा शान्ति की अपेक्षा अशान्ति का अधिक प्रचार किया है। धर्म के नाम पर दूसरों पर हमले करना, परमात्मा के नाम पर खून की नदिया बहाना, जाति पाति के बन्धनों को खड़ा कर मनुष्य को मनुष्य से जुदा करना ये सब "धर्म" के अत्याचार हैं जिन्हें स्मरण कर प्रत्येक व्यक्ति का हृदय आज भी दहल उठता है।

परन्तु फिर भी सोचने की बात यह है कि धर्म के नाम पर इतिहास में जो कुछ होता रहा, क्या उसमें दोष धर्म का ही है ? क्या वह सब कुछ धर्म के मूल भूत सिद्धान्तों के अनुकूल हुआ है ? क्या उन उन धर्म के सचालकों ने ऐसा करने की अनुमति दी थी ? क्या वेद के ऋषियों का, महात्मा बुद्ध, हजरत मसीह, तथा मुहम्मद साहब का, सन्देश मनुष्य जाति में पारस्परिक कलह उत्पन्न करना था या संसार के ये गुरु सम्पूर्ण मनुष्य जाति का पारस्परिक भ्रातृ-भाव मे बाधने का यत्न करते रहे ?

ससार के सब धर्म अन्य किसी बात में भले ही वे मतभेद रखते हों इस बात मे एक मत हैं कि विश्व नियन्ता परमात्मा हम सब का पिता है। हिन्दू हो, ईसाई हो, मुसल्मान हो—परमात्मा सम्बन्धी अन्य विचार उसके भिन्न २ होंगे। परन्तु परमात्मा हम सब का पिता है, इस भावना को सभी स्वीकार करते हैं। 'पिता' के साथ सम्बन्धित विचार 'पुत्र' का है। अगर परमात्मा हम सब का समान रूप से 'पिता' है, तो हम सब उसके पुत्र हैं और आपस में भाई भाई हैं। धर्म के इन आधार भूत विचारों का भी आदि-स्रोत यह विचार है कि धर्म का तत्व 'प्रेम' है। पिता अपने पुत्रों से प्रेम करता है, जैसे पिता पुत्रों से प्रेम करता है, वैसे ही पुत्रों को परस्पर 'प्रेम' सूत्र मे बधे रहना आवश्यक है। ससार के किसी धर्म में द्वेष को इसी लिये कोई स्थान नहीं दिया गया क्योंकि धर्म का मन्दिर प्रेम की नींव पर ही खड़ा हुआ है। जब धर्म प्रेम के स्थान में 'द्वेष' के गीत गाने लगता है तब 'धर्म धर्म' नहीं रहता 'अधर्म' हो जाता है।

धार्मिक दृष्टिकोण से जो भी सामाजिक सगठन होगा, सामाजिक विधान बनेगा, उसका आधार-भूत विचार भी 'प्रेम' ही होगा—ऐसा 'प्रेम' जो एक ही माता पिता की सन्तान मे होता है। धर्म के क्षेत्रमें हम परस्पर 'कामरेड' या साथी ही नहीं हैं यथार्थ अर्थों मे भाई२ हैं। ससार की सब सम्पत्ति, स्थावर, जगम सभी कुछ परमात्मा की सपत्ति है और हम अपने एक ही पिता की सपत्ति के समान रूप से हिस्सेदार हैं। तभी तो जब सूर्य उदय होता है उसकी किरणें भले बुरे सभी पर समान रूप मे पड़ती हैं, जब भगवान् की वर्षा पड़ती है, तो अमीर-ग़रीब सभी के खेतों को समान रूप से तर कर जाती है।

धार्मिक समाज की रचना 'साम्यवाद' के सिद्धान्तों पर ही हो सकती है। अगर परमात्मा हमारा पिता है, और उसके बिना दूसरा कोई संसार का स्वामी नहीं, तब तो इस विचार-धारा का अवश्यभावी तार्किक परिणाम यही निकलता है कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति का ससार की सम्पत्ति मे समान हिस्सा है। परमात्मा को मानने के बाद साम्यवाद की नींव जितनी मजबूत हो जाती है, उतनी बिना परमात्मा को माने मजबूत नहीं हो सकती, तभी ससार का कोई धर्म ऐसा नहीं है जिसने साम्यवाद के अतिरिक्त किसी अन्य विचार के आधार पर सामाजिक सगठन का स्वप्न भी लिया हो।

ससार में 'साम्यवाद' का प्रथम गीत ऋग्वेद ने गाया था जिसने बताया, 'अज्येष्ठासो अकनिष्ठासएते सभ्रातरो वावृधु सौभगा।' तुम लोग परस्पर भ्रातृभाव से सौभाग्य को प्राप्त करते हुए जीवन-क्षेत्र में बढो। तुम में से कोई ज्येष्ठ नहीं,कोई कनिष्ठ नहीं सब समान हो बराबर हो।'

इसी विचार धारा को ऋग्वेद में एक दूसरे स्थल पर यू कहा गया है। 'मोघमन्न विन्दते अप्रचेता॰ सत्य ब्रवीमि वध इत्स तस्यनार्यमण पुष्यति नोसखाय केवलाघो भवति केवलादी।' मूर्ख व्यर्थ ही सम्पत्ति का सचय करता है— मै सच कहता हू उस सचित की हुई सम्पत्ति में ही उसके विनाश का बीज छिपा हुआ है। वह उससे किसी का भला नहीं कर सकता। याद रखो, सम्पत्ति का इकला उपभोग करने वाला निरे पाप का उपभोग करता है।' अथर्ववेद में तो मानो साम्यवाद के राष्ट्र का चित्र खींच कर रख दिया गया है। वहा लिखा है, 'समानीप्रपा सहवो ऽन्नभाग समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि। सम्यञ्चो ऽग्नि सपर्यतारा नाभि मिवाभितः।' 'तुम एक ही जगह से पीओ, एक ही जगह से खाओ एक ही प्रकार स काम में मानो जुते हुए, उस प्रभु की पूजा करो। ससार-चक्रको चलाने में इस प्रकार मिलकर काम करो जैसे धुरी के चारों तरफ आरे लगे होते हैं, वेद के ऋषियों ने जिस समाज की कल्पना की थी उसमे समता की भावना उच्च शिखर पर पहुँच गई थी। वह समाज 'अज्येष्ठास अकनिष्ठास न बडे न छोटे का है-- उसमें सभी भ्रातर —'एक समान भाई-भाई हैं— और इसी भावना का क्रियात्मक रूप देने का ऋषियों ने यत्न किया।

वैदिक—धर्म की तरह संसार को शताब्दियों तक मुग्ध करने वाले धर्मों में बौद्ध धर्म का नाम मुख्य है। बुद्ध राजकुमार था, परन्तु मानव-समाज की समता को घोषित करने के लिये प्रासादों में खेलने वाला, लक्ष्मी का लाड़ला किसानों की झोपड़ियों में मानवता के सन्देश को लेकर फिरता रहा। बुद्ध ने जिस भ्रातृ-सघ की स्थापना की

उसमें जीवन की आवश्यक सामग्री के अतिरिक्त कोई व्यक्ति कुछ न रखता था। बुद्ध ने गरीबों के साथ अपने जीवन को एक कर दिया, और सगठित रूप में साम्यवादी सिद्धान्तों पर अपने सघ की स्थापना की।

समानता तथा भ्रातृ भाव की यही भावना ईसायत की शिक्षाओं में भी ओत प्रोत है। हजरत मसीह के सूली पर चढ़ जाने के बाद उनके शिष्यों ने उनके आदेशों को क्रियात्मक रूप देने के लिए साम्यवाद की भावना से एक सगठन बनाया था। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी निजी सम्पत्ति सगठन को सौंप देता था और उसी में से विधवाओं, अनाथों, बीमारों तथा अन्य सभी व्यक्तियों का पालन पोषण होता था।

क्राइस्ट स्वय एक बढई का पुत्र था और अपने अनुभव से सम्पत्तिशालियों के अत्याचारों से परिचित था। उसका यह कथन कि ऊट भले ही सुई के छिद्र में से पार निकल जाय, परन्तु पैसे वाला स्वर्ग में नहीं जासकता, सम्पत्तिवाद का जिसके अनुसार मुट्ठीभर लोगों के हाथ में दुनिया भर की दौलत इकट्ठी हो जाती है, सबसे बड़ा जगत्प्रसिद्ध उपहास है। क्राइस्ट ने कहा ससार के उस वैभव को एकत्रित करने से क्या लाभ जिसे मिट्टी और दीमक खराब कर सकते हैं और चोर चुरा सकते हैं। विश्वभर के मजदूरों को सम्बोधन करके उसने कहा—"ऐ दुनिया के बोझ से लदे हुए मजदूरो। आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूगा। जब अपने बारह शिष्यों को धर्म का सन्देश चारों तरफ फैलाने के लिये वह भेज रहा था तो उनसे क्राइस्ट ने कहा, सग्रह मत करना सोना चांदी सिक्का कुछ मत जमा करना। जो काम करे उसे भोजन मिलना ही चाहिये।

ससार की भूखी, नगी, पीड़ित जनता को सन्मुख रखकर उसने कहा कि इन में से एक को भी भूखा रखना, एक को भी वस्त्र से वञ्चित रखना, एक को भी पीड़ित करना ऐसा ही है जैसे तुम मुझे ही भूखा रखो, मुझे ही नगा रखो मुझे ही पीड़ा दो। इस्लाम के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद ने भी ससार के अत्याचारों को मूक रूप में सहन करने वाली मनुष्य जाति की वेदना को व्यक्त किया। मुहम्मद ने क्रियात्मक रूप में मनुष्य तथा मनुष्य के बीच के भेद भाव को मिटाकर, देश जाति तथा रग की बाधाओं का दूर कर मुस्लिम मात्र को मानवता के रग मच पर लाकर समान रूप से खड़ा कर दिया। इस्लाम के प्रारम्भिक नेताओं का सादा जीवन साम्यवाद के इतिहास में एक ज्वलन्त उदाहरण है। जिस समय जेरुसलेम का पतन हुआ, और उमर खलीफा ने अपने पराक्रम से पराजित शहर में प्रवेश किया उस समय उसके साथ थोड़ा-सा अनाज, कुछ खजूरें, एक लकड़ी की तश्तरी तथा पानी के लिए एक चमड़े की बोतल थी, और कुछ न था। समता की इसी भावना ने प्रारम्भिक इस्लाम को इतना बल दिया था। आज भी अमीर से अमीर मुसलमान को भोजन करते समय चादर बिछाकर प्रत्येक को भोजन में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रित करते हुए किसने नहीं देखा—

ससार के मुख्य-मुख्य धर्मों से जिसे रत्तीभर भी परिचय है वह जानता है कि प्रत्येक धर्म में परमात्मा को 'पिता' के नाम से सम्बोधन किया गया है, प्रत्येक पुरुष तथा स्त्री को उसकी 'सन्तान' कहा गया है, इन सन्तानों को आपस में भाई-बहन के तौर पर रहने का आदेश दिया गया है।

सम्पत्तिशाली व्यक्तियों को दूसरे का, 'अधिकार, खाने वाला, कह कर धिक्कारा गया है, इच्छा-पूर्वक सांसारिक जीवन का त्याग कर गरीबी से जीवन-यापन करने वालों को स्वर्ग का अधिकारी घोषित किया गया है। वेद के ऋषियों की, बाइबिल के रचयिता की और कुरान के कर्त्ता की यही वाणी है। संसार के धर्म-प्रवर्त्तकों ने अपने जीवन की प्रारम्भिक करमकश में इसी ध्येय को अपने सम्मुख रखा। दुर्भाग्यवश, ज्यों ही किसी धर्म ने जड़ पकड़ी और ज्योंही मानव समाज इसके झण्डे के नीचे संगठित होने लगा उसी समय राजनीति का खेल खेलनेवाले स्वार्थी लोगों के दलने अपने सांसारिक स्वार्थों की सिद्धि के लिए इसे अपना साधन बनाने का यत्न किया। हमें स्मरण रखना होगा कि धर्म पर जो आक्षेप हैं वे वास्तव में अधर्म पर हैं। हिन्दुत्व में जब अहिन्दुत्व घुस जाता है, ईसायत में जब ईसा-मसीह की भावना नहीं रहती, इस्लाम में से जब भ्रातृ भाव आदि के आदेश उड़ जाते हैं तभी हमें इन पर आपत्ति उठाने की विशेष आवश्यकता होती है। प्रभु ने हम सबको पृथ्वी रहने को दी, पानी पीने को दिया, वायु सांस लेने को दी, प्रकाश देखने को दिया और इतनी बड़ी नियामतों को बिना पैसे के सब को समान रूप से दिया, मनुष्य ने पृथिवी पर के इस स्वर्ग में अपना हाथ डालकर अपने स्वार्थ तथा अतृप्त एवं अतर्पणीय तृष्णा से इस स्वर्ग को नरक बना दिया। संसार के धर्मों का आधार भूत तत्व साम्यवाद है—आध्यात्मिक साम्यवाद में मनुष्य तथा मनुष्य के बीच के भेद भाव ही नहीं दूर हो जाते, मनुष्य तथा परमात्मा के बीच में पड़ा पर्दा भी उठ जाता है, जिसे दूर करने के लिये यह आत्मा जन्म-जन्मान्तरों के चक्र में से गुजरता हुआ जन्म से मृत्यु तथा मृत्यु से जन्म की मंजिलों को तय करता हुआ अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ता जा रहा है।

[इस लेख में मतों के लिये धर्म शब्द का प्रयोग गौण रूप से किया गया है वस्तुत सार्व-भौम धर्म एक है मत अनेक हैं—स० सा०]

सत्यार्थप्रकाश

[लेखिका—सरोजकुमारी आर्या दीवानहाल देहली]

नहीं मिटा है नहिं मिट सकता, है प्यारा सत्यार्थप्रकाश।
यह पृथिवी का जीवन है, है कोटि-कोटि मानव की आश॥
देश जाति की उन्नति का यह, सुन्दर पाठ पढ़ाता है।
धर्म अधर्म पन्थ क्या है यह, निर्णय कर बतलाता है॥
जाति पाति और छुआछूत का, बिल्कुल भाव भगाता है।
पोल खोलता है कुमतों की, सदाचार सिखलाता है॥
नारि जाति पर दयानन्द ऋषि ने भारी उपकार किया।
अपनी इस पुस्तक में नारी को समान अधिकार दिया॥
वेदादिक सद्ग्रन्थों को नारियां शूद्र भी पढ़ सकते।
नीच अधम भी उन्नति करके उन्नति पथ पर चढ़ सकते॥
कहां तलक वर्णन हो है सत्यार्थप्रकाश गुणों की खान।
प्राण निछावर करके भी हम सब रक्खेंगी इसका मान॥

सत्यार्थ प्रकाश

[लेखक—श्री नथमल शर्म्मा "किशोर", सुजानगढ़, बीकानेर स्टेट]

इस भूतल की धवल धरा में,
यश फैला है आज महान् ।
जिस ऋषि ने विपदायें सहकर,
सदा दिया जीवन का दान ॥

श्री कृष्ण की पावन गीता,
लाती जीवन में नव आश ।
उसी तरह पावन स्मृति को है,
फैलाता सत्यार्थ प्रकाश ॥

इस जग की है परम साधना,
जिसने पाया ऋषि का गान ।
अन्ध जगत् विश्वास हटा सब,
फैली नव जीवन की तान ॥

सब ऐक्य भाव का सूत्र यही,
इसमें जीवन का भग गान ।
पददलितों, भोले दुखियों का,
रखता 'प्रकाश' है सदा मान ॥

ये हरिजन कितने पावन है,
किसने तुमको यह सिखलाया ।
विधवाओं का करुणा क्रन्दन,
किसने जग को ! सुनवाया ॥

फिर तुम कृतघ्न बनते क्यों हो,
क्यों नहीं बचाते आज लाज ।
सत्यार्थ प्रकाश अमर होवे,
क्यों नहीं सजे बलिदान साज ॥

लोहू से रंजित हो "प्रकाश"
फिर ऐक्य भाव का सुने गान ।
जगती का सारा कोलाहल,
बन जाये जीवन अब महान् ॥

यह दृढ़ संकल्प करें मन में,
'सत्यार्थ' हमारा अमर बने ।
हम भारत आर्य वीर का ~ह,
अब सत्य न्याय का अमर बने ॥

सत्यार्थप्रकाश के चतुर्दश समुल्लास का तुलनात्मक अनुशीलन

महर्षि दयानन्द और इस्लाम के अन्य समालोचक

(५)

[ले०—प०धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति सहायक मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली]

मुसल्मान और मुस्लिमेतरः कुरान के पक्षपातपूर्ण उपदेशः—

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास मे यदि सबसे अधिक आलोचना किसी बात की की है तो वह उन पक्षपात और अन्याय पूर्ण आज्ञाओं की है जो कुरान में अन्य मताव लम्बियों वा अविश्वासियों (काफ़िरों) के विषय मे दी गई हैं। 'मार डालो तुम उनको जहा पाओ कतल से कुफ्र बुरा है। यहाँ तक उनसे लड़ो कि कुफ्र न रहे और होवे दीन अल्लाह का (कुरान सूरा २ आयत १७५ १७८)

मुसल्मानों को चाहिए कि काफ़िरों को मित्र न बनाए सिवाय मुसल्मानों के। जो कोई यह करे बस वह अल्लाह की ओर से नहीं (कुरान सू० ३ आ० २४)

इत्यादि आशय की आयतों की समीक्षा में महर्षि दयानन्द जी ने 'जो कुरान में ऐसी बातें न होतीं तो मुसल्मान लोग इतना बड़ा अपराध जो कि उन्होंने अन्य मत वालों पर किया है न करते और विना अपराधियों को मारना उनपर बड़ा पाप है।" (समीक्षा स० ३५) 'अब देखिये पक्षपात की बात कि जो मुसल्मानों के मजहब में नहीं उनको काफ़िर ठहराना, उनमें श्रेष्ठों से भी मित्रता न रखने और मुसलमानों में दुष्टों से भी मित्रता के लिये उपदेश करना ईश्वर को ईश्वरता से बहि कर देता है।" (समीक्षा स० ४८) इत्यादि जो लिखा है उसे पहले उद्धृत किया जा चुका है। इसी तरह कुरान १७।७ 'किया हमने दोज़ख को वास्ते काफ़िरों के" समीक्षा स० १०२ में लिखा है 'यदि काफ़िर वे ही हैं कि जो कुरान, पैगम्बर कुरान के कहे खुदा सातों आसमान और नमाज़ आदि को नहीं मानते और उन्हीं के लिये दोज़ख होवे तो यह बात केवल पक्षपात की ठहरे क्योंकि कुरान ही के मानने वाले सब अच्छे और अन्य मानने वाले सब बुरे कभी हो सकते हैं ऐसे ही लानत मारे जहाँ पाए जाए कतल किए जाए खूब मारा जाना।' (कुरान सू० ३३।६१) की समीक्षा में महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है जैसा मुसलमानों और उनकी स्त्रियों का दुःख देना बुरा है तो इनसे अन्य मनुष्यों को दुःख देना भी अवश्य बुरा है। जो ऐसा न मानें तो उनकी यह बात भी पक्षपात की है। वाह ग़दर मचाने वाले खुदा और नबी जैसे ये निर्दयी संसार में हैं वैसे और बहुत थोड़े होंगे जैसा यह कि अन्य लोग जहाँ पाए जाँए मारे जाए पकड़े जाए लिखा है वैसे ही मुसलमानों पर कोई आज्ञा देवे तो मुसलमानों को यह बात बुरी लगेगी वा नहीं? (समीक्षा स० १२८)

इस विषय में हम बर्नार्डशा मार्गोलियथ, जान पूल, रेवरेण्ड सेल, स्मिथ, मेक्डानल्ड आदि अनेक प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वानों के विचारों को तुलनात्मक दृष्टिसे पहले उद्धृत कर चुके हैं। अब कुछ और विद्वानों के इस विषयक लेखों को

देखिये जो महर्षि दयानन्द जी की उपर्युक्त समालोचना का प्रबल समर्थन स्वतन्त्र रूप से करते हैं।

मैजर रौबर्ट औस्बार्न (Major Robert Osborn) नामक विद्वान् ने 'Islam under the Khalifs of Baghdad' नामकी अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक में लिखा है कि —

'The only right way of living (according the moslems) was the way of living revealed in the Koran, and all who followed another path were indubitably reserved for the abyss of hellfire The conquered peoples were merely his bondmen They could advance no claim upon his forbearance or justice on the ground of a common humanity They had no rights either civil or religious " (Islam under the Khalifs of Baghdad P 24)

अर्थात् मुसलमानों के अनुसार जीवन का ठीक प्रकार वही था जो कुरान में प्रतिपादित है और जो उससे भिन्न मार्ग पर चलते थे उन सबको नरक की अग्नि में झोंकने के लिये रक्खा जाता था। विजित लोग उसके गुलाम होते थे। उनका मनुष्य होने के नाते उस (मुस्लिम शासक) के धैर्य वा दया पर कोई दावा न था। उनके नागरिक वा धार्मिक कोई अधिकार न माने जाते थे।

"At the first stirring of rebellion on their part these rights disappeared and the precept of the Koran came into operation which ordered that the Faithful should strike off the heads of the un believers and make great slaughter of them Consequently, on the most insignificant pretext Non mohammedan races have always been liable to be savagely slaughtered by their Moslem masters The latter feel no more compunction in acting thus than in crushing a fly " (Islam under the Khalifs of Baghdad by Major Robert Osborn, P 24 25)

अर्थात् जरा भी विद्रोह उठने पर मुस्लिमेतरों के ये अधिकार लुप्त हो जाते थे और कुरान की शिक्षा काम मे लाई जाती थी जिस की आज्ञा थी कि विश्वासियों को चाहिए कि अविश्वासियों के सिर काट डालें और इस प्रकार उनकी बड़ी हत्या करें। इस आज्ञा के परिणाम स्वरूप, बहुत ही तुच्छ बहानों पर मुस्लिमेतर जातियों को मुस्लिम शासकों द्वारा बड़े जगली तौर पर मारी जाती थीं वे मुस्लिम ऐसा करने पर उसी प्रकार दया का अनुभव नहीं करते जैसे कि एक मक्खी मारने में। इत्यादि

इससे महर्षि दयानन्द जी की इस विषयक समालोचना का पूर्ण समर्थन होता है यह लिखने की आवश्यकता नहीं।

डा० जेवौन्स लिट् डी० (नामक डर्बन युनिवर्सिटीमें फिलासफीके प्रोफेसर ने (Dr. Jevons Litt D Professor of Philosophy at Durban University) Comparative Religion नामकी पुस्तक में ठीक लिखा है कि

Non Mohammedans are enemies of Allah and His people and against them, it is the religious duty of the faithful to conduct a holy war of extermination In Mohammedanism

those outside the community are regarded with a disdain and contempt which permits of their treatment, as beings who have no claim to be respected as persons or even to be regarded with compassion as human (Comparative Religion by F G Jevons Litt D P 134).

अर्थात् मुस्लिमेतर अल्ला और उसके आदमियों (मुसलमानों) के शत्रु हैं और विश्वासियों का उनके नाश के लिये पवित्र युद्ध (जिहाद) करना एक धार्मिक कर्तव्य है। मुसलमानों के मत में जो अपनी जाति (मुसल्मानी मत) से बाहर हैं उन्हें ऐसी घृणा की दृष्टि से देखाजाता है कि उनके साथ व्यवहार में आदर का कोई भाव नहीं आ सकता बल्कि उनका मनुष्य के साथ योग्य दया का भी अधिकार नहीं माना जाता।

ये शब्द भी स्पष्टतया महर्षि दयानन्द जी की इस विषयक समालोचना का समर्थन करते हैं।

Encyclopedia of Islam के दूसरे भाग में काफ़िर (Kafirs) विषयक जो लेख है उसमें लिखा है कि—

"In most cases, the reference is to un-believers in general, who are threatened with God's punishment and Hell.

Eternal damnation for Kafirs has remained an established dogma in Islam" (Encyclopedia of Islam Vol II P 619)

अर्थात् काफ़िर से तात्पर्य साधारणतया सभी अविश्वासियों से है जिनको ईश्वरीय दण्ड और नरक की धमकी दी गई है। काफ़िरों का सदा के लिये नरकाग्नि में डाला जाना इस्लाम में एक निश्चित सिद्धान्त रहा है।

महर्षि दयानन्द जी की समालोचना का मुख्य उद्देश्य यही था कि ऐसे लोकहित घातक सिद्धांत को विचार शील मुसलमान न मानें और यह प्रसन्नता की बात है कि अब कई समझदार मुसल्मान विद्वान् इन सिद्धांत को नहीं मानते। उदाहरणार्थ मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, मौलवी मुहम्मदअली M A, LL B, अब्दुल्ला यूसफ अली आदि। मौलवी मुहम्मदअली अपने क़ुरान के अंग्रेज़ी अनुवाद की भूमिका में क़ुरान के विषय में यहां तक लिखते हैं कि—

"It (The Holy Quoran) preaches equal love for all" (The Translation of the Holy Quoran by Mohammed Ali M A, LL B, Introduction, P CVIII)

अर्थात् क़ुरान सब के साथ प्रेम करना, सबके लिये समान आदर का भाव रखना और सब धर्मों में समान विश्वास रखना सिखाता है। किन्तु मौलाना मुहम्मदअली के क़ुरान के अनुवाद पढ़ने से यह स्पष्ट है कि उन पर महर्षिदयानन्द और सत्यार्थप्रकाश के विचारों की छाप बहुत ही अधिक लगी है और उनके युक्ति युक्त आक्षेपों से यथासम्भव बचने के लिये ही नवीन कल्पनाएं की हैं जिन्हें अन्य विद्वान् मौलवी बिल्कुल स्वीकार नहीं करते और वे जिस अहमदिया सम्प्रदाय के लाहौर में प्रधान हैं उन्हें काफ़िर तक कहते हैं।

इस विषय में मजीद खद्दूरी पी एच. डी (Majid Khadduri Ph D.) की The Law of War and Peace in Islam' नामक पुस्तक पठनीय है जिसमें जिहाद या धर्मयुद्ध के विषय में विस्तृत विचार क़ुरान तथा हदीसों के उद्धरण देकर किया गया है। इस में सुयोग्य मुस्लिम लेखक ने बताया है कि:—

"In more precise and technical language the jihad may be stated as a doctrine of permanent war The objective of the doctrine is indeed a definite one, it is a state of war against the un believers until the whole world would be Islamised" (The Law of War and Peace in Islam by Majid Khadduri Ph D. P 31)

अर्थात् स्पष्ट और पारिभाषिक शब्दों मे जिहाद को स्थिर युद्ध के सिद्धान्त के रूप मे वर्णित किया जा सकता है। इस सिद्धान्त का उद्देश्य स्पष्ट है। यह अविश्वासियों के विरुद्ध युद्ध की अवस्था तब तक के लिये है जब तक सारा ससार मुसलमान न बन जाय। इसके आगे खद्दूरी साहेब कुरान की आयत उद्धृत करते हुए लिखते हैं कि —

'The Jihad is a required duty imposed upon the Muslim community as a whole

'O you who believe! Shall I lead you to riches which may deliver you from a painful chastisement? Believe in Allah and His Apostle, and declare Jihad in Allah s path with your wealth and lives This did you but know it, will be best for you. He will forgive your sins, and He will bring you into gardens beneath its shades the rivers flow-into charming abodes in the gardens of Eden' (Quran LXI 10 12)

Ever since the second oath of Aqiba was taken in A D 621 the Jihad was unanimously accepted by the Muslims as a religious obligation both for the defence and spread of Islam This oath marks the beginning of change in the way of preaching Islam from persuation to propagation by the Jihad' (The Law of War and Peace in Islam P 31)

अर्थात् जिहाद सारी मुस्लिम जाति के लिए एक आवश्यक कर्तव्य है। इस विषय मे कुरान सूरा ६१ आ १०—१२ मे कहा है।

ऐ पैगम्बर मुसल्मानों से कहा कि मुसल्मानो। कहो तो मैं तुम को ऐसी सौदागरी बताऊ जो तुम को आखिरत के अजाब दर्दनाक से बचा ले।(वह यह है कि) खुदा और उस के रसूल पर ईमान लाओ और खुदा की राह में अपने माल और अपनी जानें लड़ादें— यह तुम्हारे हक मे बहतर है बशर्ते कि तुम को समझ हो (ऐसा करोगे तो) खुदा तुम्हारे गुनाह (अपराध) माफ कर देगा और तुमको (बहिश्त के ऐसे) बागों में लेजा दाखिल करेगा जिस के तले नहरें बह रही होंगी और नीज उम्दा मकानात मे (कि वह मकानात हमेशा) हमेशा (रहने) के बागों में होंगे—यह बहुत बड़ी कामयाबी है और इन नेअमतों के सिवा एक और नेअमत भी है जिस को तुम दिल से पसन्द करते हो कि खुदा की तरफ से तुम को मदद मिलेगी और तुम अनकरीब मुल्क फतह करोगे।

(मौलाना नजीर अहमद का उर्दू अनुवाद—हसननिजामी कृत कुरान का हिन्दी अनुवाद पृ ७६५)

ख्वाजा हसननिजामी ने इस उपर्युक्त आयत का अनुवाद हिन्दी कुरान में इस प्रकार दिया है —हे रसूल। तुम अपनी उम्मत के ईमान

वालों से कहा कि हे ईमान वालो। क्या मैं तुम्हे ऐसा व्यापार बताऊ जो तुम्हें एक दु खदायी अज़ाब से बचाए और उन्हें बताओ कि वह व्यौपार यह है कि अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह मे अपने धनों और अपने प्राणों के साथ जिहाद करो (अर्थात् खुदा की राह मे तन मन धन सब निछावर कर दो) यदि तुम कुछ भी समझ रखते हो तो समझो कि यह बात तुम्हारे हक़ मे बहुत अच्छी है। नि:स देह यदि तुम अपना तन मन धन अल्लाह के नाम पर निछावर करोगे तो अल्लाह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम को जन्नतों मे प्रविष्ट करेगा (ऐसी जन्नतें) जिन के नीचे नहरें बहती हैं और दिव्य-भवनों मे स्थान देगा जो सवदा रहने वाले बागों मे बने हुए होंगे (ईमान वालो) यह है वास्तव मे बडी सफलता (जिस के आगे दुनिया की सफलता तुच्छ है)

और (उन पारलौकिक नेअमतों के अतिरिक्त तुम को दुनिया भी मे और नेअमतें भी देगा जिन्हें तुम दिल से चाहते हो वह यह कि अल्लाह की ओर से तुम्हें सहायता पहुचेगी और तुम शीघ्र प्रदेशों को विजय करोगे।

(ख्वाजा हसननिजामी कृत कुरान हिन्दी अनुवाद पृ ७६५)

कुरान की ऐसी आयतों को ध्यान मे रखते हुए यदि महर्षि दयानन्द जी ने लिख दिया कि "भला ईश्वर के मार्ग मे मरने मारने की क्या आवश्यकता है? यह क्यों नहीं कहते हो कि यह बात अपना मतलब सिद्ध करने के लिये कि यह लोभ देंगे तो लोग खूब लडेंगे अपना विजय होगा मारने से न डरेंगे लूटमार करने से ऐश्वर्य प्राप्त होगा पश्चात् विषयानन्द करें। इत्यादि स्वप्रयोजन के लिये यह विपरीत व्यवहार किया है (समीक्षा स० ३) तो इस के लिये उन से चिढने और उनपर असत्य आलोचना का आरोप लगाने की क्या आवश्यकता है?

नरक और स्वर्ग के अधिकारी:—

मुसलमानों के विश्वास के अनुसार जिस का आधार कुरान और हदीसों पर है जो भी कुरान की आयतों को न मानने वाला अथवा इस्लाम को छोडकर किसी अन्य मत को मानने वाला है वह नरकयातना का अधिकारी है।

कुरान के सू० ४ आ ५६ मे कहा गया है कि

इन्नल्लज़ीन कफ़रू बिआयातिना सौफ़ नुस्ली हिम् नारन् कुल्लमा नज्वेजत् जुलूदुहुम बद्दल्नाहुम् जुलूदन् गैरहा लियज़ूकुल् अज़ाब, इन्नल्लाह कान अज़ीज़न हकीमा।

इस आयत का अर्थ मौलाना नज़ीरअहमद ने इस प्रकार किया है—

जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया हम उनको क़यामत के दिन दोज़ख़ (नरक) मे लेजा दाखिल करेंगे जब उन की खालें गल जाएगी तो हम इस गर्ज़ से कि अज़ाब (पीडा) का मज़ा अच्छी तरह चखें गली हुई खालों की जगह उनकी दूसरी नई खालें पैदा कर देंगे बेशक अल्लाह बड़ा ज़बर्दस्त साहब तदबीर है। इस का यूसफअली ने अंग्रेजी अनुवाद निम्न प्रकार किया है—

Those who reject our signs, We shall soon cast into the fire As soon as their skins are wasted through, We shall change them for fresh skins, That they may taste, the

Penalty, for God, is exalted in Power, Wise (Yusuf Ali's Translation of Quran Vol I Sura 4 V 56 P 197)

मौ० मुहम्मदअली ने इस ४२६ की आयत का अंग्रेजी अनुवाद यों किया है—

'Those who disbelieve in our communications, We shall make them enter fire, so oft as their skins are thoroughly burned, We will change them for other skins that they may taste the chastisement' (Holy Quoran translated by Mohammad Ali P 89)

सूरत ३३ आयत ६४ का अनुवाद मौलाना नजीरअहमद ने यों किया है "बेशक अल्लाह ने काफिरों को फिटकार दिया है और उन के लिये दहकती हुई आग तय्यार कर रक्खी है। उसमें सदा को हमेशा रहेंगे और न किसी को अपना हिमायती ही पाएंगे और न मददगार (यह वह दिन होगा। जबकि इनके मुंह (सीखों के कबाब की तरह दोजख की) आग में उलट पुलट किए जाएंगे और अफसोस के तौर पर कहेंगे कि ऐ काश हमने दुनिया में अल्लाह का कहा माना होता और ऐ काश हमने रसूल का कहा माना होता। (हिन्दी कुरान हसन निजामीकृत में उद्धृत)ख्वाजा हसन निजामी ने इस आयत का हिन्दी अनुवाद निम्न पृ० ६०४) पर निम्न लिखित प्रकार किया है —

निसन्देह अल्लाह तआला ने काफिरों पर लानत की है और उन के लिये नरक की भड़कती हुई अग्नि तय्यार कर रक्खी है (वह) उसमें हमेशा (पड़े रहते) रहेंगे और इस दशा में वह किसी को न (अपना) मित्र पाएंगे और न सहायक और जिस दिन उनके मुंह (नर्क) (कुण्ड की अग्नि) में उलटे पुलटे जाएंगे (तो उन्हें अपनी दुष्टता अच्छी तरह मालूम हो जायगी और निराशा के साथ कहेंगे हा शोक। हम अल्लाह और रसूल की आज्ञा पालन करते (और इस दुःख सहने के बदले स्वर्ग में जाते) (हसन निज़ामी कृत कुरान का हिन्दी अनुवाद पृ० ६०४)

ताज कम्पनी लाहौर के छपवाये उर्दू अनुवाद में इस आयत के निम्न अर्थ दिये हैं 'तहकीक अल्लाह ने लानत की है काफिरों को और तय्यार किया है वास्ते उनके दोजख हमेशा रहेंगे बीच उसके हमेशा न पावेंगे बीच उसके दोस्त और न मदद देने वाला जिस दिन फेरे जाएंगे मुंह उनके बीच आग के कहेंगे ऐ काश कि हमने फर्मांबरदारी की होती हमने अल्लाह की और फर्मांबरदारी की होती रसूल की ॥ (ताज कम्पनी लाहौर में छपा कुरान का उर्दू अनुवाद पृ० ७०६)

मि० अब्दुल्ला यूसफअली ने इस आयत का अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार किया है।

64 'Verily God has cursed the un believers and prepared for them a Blazing fire' 65 To dwell therein for ever, no protector will they find, nor helper 66 The day that their faces will be turned upside down in the fire they will say—Woe to us! Would that we had obeyed God and obeyed the Apostle (Vol III P. 1128)

मौ० मुहम्मद अली एम ए. ने इन आयतों का अनुवाद निम्न प्रकार दिया है।

33. 64 God has cursed the unbelievers and has prepared for them a burning fire 66. To abide there in for long ages, they shall not find a protector or a helper. 66 On the day when their faces shall be turned back into the fire, they shall say. O would that we had obeyed God and obeyed the Apostle 67 And they shall say O our Lord! We obeyed our leaders and our great men, so they led us astray from the Path. 68. O our Lord! give them a double chastisement and curse them with a great curse " (Translation of the Holy Quran by Maulana Mohammad Ali M A. P. 428-429).

यह अनुवाद भी पूर्व आशय का ही है अन्तर केवल इतना ही है कि मौलाना मुहम्मदअली साहेब नरक में सदा काल निवास के विरुद्ध हैं (जिसको अन्य सब अनुवादकों ने माना है) और इस लिये उन्होंने 'To abide there in for ever, के स्थान पर Abide there in for long ages अर्थात् बहुत लम्बे काल पर्यन्त अविश्वासियों के नरक में निवास परक अर्थ किया है।

अलाहज हाफिज .गुलाम सरवर M. A. ने इन आयतों का अनुवाद इस प्रकार किया है।

33 64. Surely God has disapproved of the un-blievers and has prepared for them the flaming fire. 33-65. They shall abide there in all the time, (And) they shall not find any friend or helper. 33-66 The day their faces shall be turned back into the fire, they will say: Would that we had obeyed God and obeyed the messenger

33-67. And they will say 'our Lord' surely we obeyed our chiefs and our great men, they then caused us to lose the way 33 68 Our Lord ! give tham double agony and disapprove of them a great disapproving " (Translation of the Holy Quran by Ghulam Sarwar. P 245.

क़ुरान सू० ३ आ० १० में लिखा है।

'इन्नल्लज़ीन कफ़रू लन् तुग्निय अन्हुम् अम्वालुहुम् वला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैय्या व उलाइकहुम वक़ूदुन्नार' इसका अर्थ ख्वाजा हसन निजामी के क़ुरान के हिन्दी अनुवाद में इस प्रकार दिया है:—

निश्चित रूप से काफ़िरों को उनकी दौलत और उनकी सन्तान अल्लाह (के दुःख अर्थात् दण्ड) से जरा न बचा सकेगी और यह क़ाफ़िर ही नर्क की आग का ईंधन होंगे।

(हसन निजामी कृत क़ुरान का हिन्दी अनुवाद पृ० ७२)

मौलाना नज़ीर अहमद का अनुवाद निम्न प्रकार है.—

"जो लोग दीन इस्लाम से मुन्किर हैं अल्लाह के हां न तो उनके माल ही उनके कुछ काम आएंगे और न उनकी औलाद ही उनके कुछ काम आएगी और यही हैं जो दोज़ख के ईंधन होंगे ॥"

(मौलाना नज़ीर अहमद कृत क़ुरान का अनुवाद हसन निजामी कृत अनुवाद में उद्धृत पृ० ७२)

ताज कम्पनी लाहौर के छपाये क़ुरान के उर्दू अनुवाद में अर्थ यों दिया है—

"जो लोग काफिर हुए हरगिज न किफायत करेंगे माल उनके और न औलाद उनकी अल्लाह से कुछ और ये लोग वही हैं ईंधन आग के ॥

(ताज कम्पनी लाहौर का सन् १९४४ का छपवाया कुरान का उर्दू अनुवाद पृ० ८०)

मौलाना मुहम्मद अली एम. ए ने इस आयत का अंग्रेजी में अनुवाद यों किया है:—

"Those who disbelieve, neither their wealth nor their children shall avail them in the least against God, and these it is who are fuel of the fire" (English translation of the Quran by Maulana Mohammad Ali P 55).

अब्दुल्ला यूसफ अली कृत अनुवाद —

Those who reject faith—neither their possessions nor their numerous progeny will avail them aught Against God: they are themselves But fuel for the fire (Quran 3 10). (Yusuf Ali's translation of the Holy Quran Vol I P. 124).

ऐसे ही सैंकड़ों अन्य आयतों को प्रामाणिक मुसल्मानों द्वारा किये अनुवादों के साथ उद्धृत किया जा सकता है किन्तु विस्तार भय से अभी इतना ही पर्याप्त है।

जन्नत (स्वर्ग) के अधिकारी केवल मुसल्मान

ऊपर उद्धृत तथा अन्य सैकड़ों आयतों के आधार पर जहां सभी इस्लाम मत न माननेवाले अविश्वासियों (काफ़िरों) को चाहे वे कितने भी सदाचारी क्यों न हों दोजख व नरक का इन्धन बताया गया है वहां सभी मुसलमानों को चाहे कितने भी दुराचारी और व्यभिचारी क्यों न हों जन्नत वा स्वर्ग का अधिकारी कुरान और हदीसों में बताया गया है। कुरान की अनेक आयतों के प्रमाण पहले आ ही चुके हैं हदीसों के कुछ प्रमाण नीचे दिये जाते हैं जो मिश्कात किताबुल ईमान से उद्धृत किये गये हैं।

उस किताब के जिल्द १ सफा १२-१३ हदीस स० २४ में कहा है

(१) "लाइलाहा इल्लिल्लाह कहने वाला चोरी और जिना करे तो भी जन्नत में दाखिल होगा।"

(२) 'जिसने अल्लाह के होने में और मुहम्मद के रसूल होने पर गवाही दी उसके कैसे ही आमाल (कर्म) हों अल्लाह उसे जन्नत में भेजेगा।

(मिश्कात किताबुल ईमान जिल्द १ सफा १३ हदीस नं० २५)

(३) 'मुसलमान और उनके बच्चे जन्नत में जाएंगे। मुनाफिकों के बच्चे और वे दोजख में जाएँगे।

(मिश्कात किताबुल ईमान जिल्द १ हदीस न० ११०)

(४) जन्नती जन्नत में जाएँगे चाहे उनके आमाल कितने ही बुरे होंगे। दोजखी दोजख में जाएगे चाहे उनके आमाल कितने ही अच्छे होंगे।"

(मिश्कात किताबुल ईमान जिल्द १ सफा ३४ हदीस न० ६०)

कुरान और हदीसोंकी इन पक्षपात सूचक बातों को दृष्टि में रखते हुए यदि ऋषि दयानन्दजी ने लिखा कि 'जैसे कुरान में लिखा है कि काफिरों के वास्ते पत्थर तय्यार किये गये हैं तो वैसे ही पुराणों में लिखा है कि म्लेच्छों के लिये घोर नरक तय्यार है। अब कहिये कि किस की बात सच्ची मानी जाय? अपने २ वचन से दोनों

स्वर्गगामी और दूसरे के मत से दोनों नरक गामी होते हैं इसलिये इन सब का झगड़ा झूठा है किन्तु जो धार्मिक हैं वे सुख और जो पापी हैं वे सब सब मतों में दुःख पाएगे।

(सत्यार्थप्रकाश चतुर्दश समुल्लास समीक्षा स० ८)

इससे उत्तम पक्षपात रहित न्याय सङ्गत बात क्या हो सकती है? इसमें चिढ़ने की बात क्या है?

एक और जगह पर महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है --

'क्या ईसाई और मुसलमान ही खुदा की शिक्षा पर हैं उनमे कोई भी पापी नहीं है? क्या ईसाई और मुसलमान अधर्मी हैं वे भी छुटकारा पावें और दूसरे धर्मात्मा भी न पावें तो बड़े अन्याय और अन्धेर की बात नहीं है? और क्या जो लोग मुसलमानी मत को न मानें उन्हीं को काफ़िर कहना यह एकतर्फ़ी डिगरी नहीं है? इत्यादि (समीक्षा स० ५)

इस प्रसङ्ग को समाप्त करने से पूर्व सुप्रसिद्ध जगद्विख्यात विचारक बर्नार्ड शॉ की The Adventures of the Black Girl in her search for God नामक पुस्तक में मुहम्मद साहेब के मुख से जो बात इस स्वर्ग नरक विषयक वर्णन के सम्बन्ध में कही गई है उसका उल्लेख करना अनुचित न होगा उन्होंने अरब नेता के मुख में इस भाव के शब्द रक्खे हैं जो महर्षि दयानन्द की समालोचना की याद दिला देते हैं —

"There are fellows in this world with whom Allah can not be expected to trouble himself His words mean nothing to them. So when I have to deal with them, I am no longer inspired, have to rely on my own invention and my own wit. For them I write terrible stories of the day of Judgement and the hell in which evildoers will suffer eternally. I contrast these horrors with enchanted pictures of the Paradise maintained for them who do the will of Allah, such a Paradise as will tempt them, You under stand, a Paradise of gardens and perfumes and beautiful women"

Without it I can not manage them at all Without it they would desert me for the first chief who promised them a bigger earthly plunder. But what other Chief can write a book and promise them an eternity of bliss after their death with all the authority of a mind which can surround its own inventions with all the majesty of authentic inspiration? (The Adventures of the Black Girl in search for God by Bernard Shaw P 44)

अर्थात् इस संसार में कई ऐसे लोग हैं जिनके साथ अल्लाह अपने को कष्ट में डालेगा ऐसी आशा नहीं की जा सकती। उसके शब्दों का उनके लिये कोई अर्थ नहीं होता। जब मुझे ऐसों के साथ वास्ता पड़ता है तब मैं ईश्वर द्वारा प्रेरित नहीं रहता पर तब मुझे अपनी बुद्धि और अपने आविष्कार पर निर्भर होना पड़ता है। उनके लिये मैं क़यामत के दिन की भयङ्कर कहानियां लिखता हूं और उस नरक की जिसमें बुरे लोगों

को सदा के लिये कष्ट उठाना पडेगा। इन भयङ्कर अवस्थाओं के मुकाबला मैं स्वर्ग के उन मोहक चित्रों के पेश करता हूँ जो अल्लाह के मर्जी पर चलने वालों को मिलेगा ऐसा जो उनको लुभाने वाला हो तुम समझते हो बगीचों का, सुगन्धित पदार्थों का और सुन्दर स्त्रियों का। इसके बिना मैं उनको सभाल ही नहीं सकता। इसके बिना वे मुझे छोड़कर उस पहले सरदार के पीछे लग जाएगे जो उन्हें ज्यादह लूट का वायदा करे। किन्तु कौन और सरदार है जो एक किताब लिखे और मौत के पीछे हमेशा रहने वाले आनन्द का उन्हें आश्वासन दे एक ऐसे अधिकार के साथ जो अपने आविष्कार या कल्पना को ईश्वरीय ज्ञान या इलहाम की शान दे सके ?

इन शब्दों के अन्दर जो व्यङ्ग बताने हैं उनको बुद्धिमान् स्वय समझ सकते हैं। महर्षि दयानन्द जी की युक्ति युक्त सरल आलोचना इस प्रकार की आलोचना की अपेक्षा वस्तुत कोमल और सवथा यथार्थ है इसमें सन्देह नहीं हो सकता।

इस्लाम और जगत् की वास्तविक उन्नति तथा शान्तिः—

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्दश समुल्लास में कुरान की शिक्षाओं की संक्षिप्त समीक्षा करते हुए अन्त मे लिखा हैः—

"अब इस कुरान के विषय को लेकर बुद्धिमानों के सन्मुख स्थापित करता हूं कि यह पुस्तक कैसा है ? मुझसे पूछो तो यह किताब न ईश्वर न विद्वान् की बनाई और न विद्या की हो सकती है। यह तो बहुत थोड़ा सा दोष प्रकट किया इस लिये कि लोग धोखे में पड़ कर अपना जन्म व्यर्थ न गमावें। जो कुछ इस में थोड़ा सा सत्य है वह वेदादि विद्या पुस्तकों के अनुकूल होने से जैसे मुझको ग्राह्य है वैसे अन्य भी मजहब के हठ और पक्षपात रहित विद्वानों और बुद्धिमानों को ग्राह्य है इस के बिना जो कुछ इस में है वह सब अविद्या भ्रम जाल और मनुष्य के आत्मा को पशुवत् बनाकर शान्ति भङ्ग करा के उपद्रव मचा मनुष्यों में विद्रोह फैला परस्पर दुःखोन्नति करने वाला विषय है और पुनरुक्त दोष का तो कुरान जानो भण्डार ही है ? परमात्मा सब मनुष्यों पर कृपा करे कि सब से सब प्रीति, परस्पर मेल और एक दूसरे के सुख की उन्नति करने मे प्रवृत्त हों। जैसे मै अपना वा दूसरे मत मतान्तरों का दोष पक्षपात रहित होकर प्रकाशित करता हूँ इसी प्रकार यदि सब विद्वान् लोग करें तो क्या कठिनता है कि परस्पर का विरोध छूट, मेल होकर आनन्द मे एक मत हो के सत्य की प्राप्ति सिद्ध हो। यह थोड़ा सा कुरान के विषय में लिखा, इस को बुद्धिमान् धार्मिक लोग ग्रन्थकार के अभिप्राय को समझ लाभ लेवें। यदि कहीं भ्रम से अन्यथा लिखा गया हो तो उसको शुद्ध कर लेवें।"

सत्यार्थप्रकाश चतुर्दश समुल्लास श्री गोविन्दराम संस्करण ५ म पृ० ७८६)

महर्षि दयानन्द ने ऊपरके शब्दों में अपने पवित्र भाव को बहुत ही उत्तमरीति से प्रकट कर दिया है। हम तुलनात्मक दृष्टि से कुछ पाश्चात्य विद्वानों के इस विषयक विचार निष्पक्षपात विचारकों के सन्मुख रखते हैं।

इस्लाम में सत्य और असत्य के मिश्रण के विषय में मेजर रोबर्ट औसबोर्न(Major Robert Osborn) ने "Islam under the Khalifs of Baghdad की भूमिका में लिखा

"The true, the false, the sensual and the superstitious have been allowed to exist together in the creed of Islam, the latter choking and destroying the former. A chain is no stronger than its weakest link and it is the veneration paid to a black stone not to One God which denotes the high water mark of the moral and intellectual life of the moslem world" (Islam under the Khalifs of Baghdad Preface p VIII)

अर्थात् सत्य, असत्य भौतिक भोगमय और अन्धविश्वास पूर्ण अंश इन सब का इस्लाम मत में साथ २ रहने दिया गया है जिन में से पिछला अंश (असत्य तथा अन्धविश्वासादि) पहले सत्य के अंश का गला दबाता और उसे नष्ट करता है। कोई जञ्जीर उस से अधिक दृढ़ नहीं मानी जाती जितनी उस की सबसे कमजोर कड़ी होती है और इस दृष्टि से एक ईश्वर की पूजा से नहीं बल्कि काबे के काले पत्थर की पूजा से मुस्लिम जगत् की नैतिक और बौद्धिक जीवन की प्रगति का परिचय प्राप्त होता है।

ये शब्द महर्षिदयानन्द जी की आलोचना का अनेक अंशों में स्मरण कराते हैं यह लिखने की आवश्यकता नहीं।

कुरान की शान्ति भङ्ग और उपद्रववर्धक शिक्षाओं के विषय में हम अनेक विद्वानों के [जिन में श्री बर्नार्ड शा, एच् जी वेल्स जानपूल आर्नल्ड आदि के नाम उल्लेखनीय हैं] ग्रन्थों से अनेक उद्धरण पहले दे चुके हैं। समस्त अन्य मतावलम्बियों से घृणा का जे० एम् आर्नल्ड ने इस्लाम और कुरान की शिक्षाओं का मुख्य तत्त्व बताते हुए

'This hatred towards all other religionists which is the very element of Islam, is continually nourished by the reading of the Koran which is filled with threatenings and curses against un believers (Islam and Christianity by J M Arnold D D P 05) जैसे स्पष्ट शब्दों का प्रयोग किया है

सर विलियम म्यूर K C S I LL D D L C Ph D ने Life of Mohammed मे मदीने में मुहम्मद साहेब के जीवन और शिक्षाओं मे पहले से जो अन्तर आया उसका वर्णन करते हुए लिखा—

We trace from the period of Mohammed's arrival at Medina a marked and rapid declension in the system he inculcated. The name of the Almighty imparted a terrible strength to the sword of the state, and the sword of the state, yielded a willing return by destroying the enemies of God and sacrificing them at the shrine of the new religion 'Slay the un believers where so ever ye find them was now the watch word of Islam Fight in the ways of God until opposition be crushed and the religion became the Lord's alone—Faith soon degenerated into a fierce fanaticism or evaporated in a life less round of formal ceremonies' (The life of Mohammed by Sir William Muir P 505)

अर्थात् मुहम्मद के मदीना पहुंचने के समय से हम उनकी शिक्षाओं में स्पष्ट और शीघ्र परि-

वर्तन पाते हैं। सर्वशक्तिमान् अल्लाह के नाम ने राज्य की तलवार को भयङ्कर शक्ति प्रदान कर दी और उस ने अल्लाह के शत्रुओं का नाश करके और उनकी नये मत (इस्लाम) की वेदी पर बलि चढ़ाकर अपना इच्छापूर्ण प्रत्युत्तर दिया। अब इस्लाम का यही मूल शब्द या नारा था कि अविश्वासियों को तुम जहा पाओ वहीं कतल करदो। अल्लाह के रास्ते में लड़ते जाओ यहा तक कि सारा विरोध कुचला जाए और केवल अल्लाह का ही मजहब रह जाए। • इस्लाम बहुत जल्दी एक भयङ्कर मतान्धता के रूप में अवनत हो गया अथवा बाह्य क्रिया-कलाप के जीवन शून्य चक्रमे उड़ गया। इत्यादि।

महर्षि दयानन्द जी की समालोचना का उद्देश्य ऐसी मतान्धता को इस्लाम तथा अन्य मतोंसे दूर करना था यह सर्वथा स्पष्ट है।

श्री एस् लैंग (S Laing) नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ने 'Modern Science and Modern thought' नामक अपने ग्रन्थमें मुहम्मदीमत और कुरान के विषयमे लिखा है कि

Mohamet unfortunately wrote a book, the Koran, which, while it contained much that t the Arab mind was sublime and beautiful, was of necessity impregnated with the ideas of the age in which he lived, an age of much ignorance, and superstition, of imperfect social arrangements and of barbarous and ferrocious manners. This book came to be accepted as the inspired Word of Allah, which it was impious to question, to which nothing could be added and from which nothing could be taken away. Hence Mohometanism has become what we see it—a narrow and fanatical creed, incompatible with progress and free thought, and stereotyping institutions, such as polygamy and slavery which are fatal to any advance towards a higher civilisation ' ("Modern Science and Modern Thought" by S Laing P, 2-3)

अर्थात् दुर्भाग्य से मुहम्मद ने कुरान नामक एक पुस्तक लिखी जिस मे यद्यपि अनेक ऐसी बातें थीं जो अरब वासियों के लिये उच्च और सुन्दर थीं पर जो उस अज्ञान, अन्धविश्वास अपूर्ण सामाजिक व्यवस्था और जङ्गली तथा क्रूर आचार व्यवहार से पूर्ण समय से प्रभावित तथा उनसे भरी हुई थी। इस पुस्तक को ईश्वरीय वाणी के रूप में स्वीकार कर लिया गया जिसके विषय में कोई शङ्का करना अनुचित वा धर्म विरुद्ध माना गया और जिस में न कुछ जोड़ा जा सकता था न घटाया। इस लिये मुहम्मदी मत एक सकुचित और मतान्धता पूर्ण, उन्नति और विचार स्वातन्त्र्य में बाधक तथा बहुविवाह और गुलामी जैसी संस्थाओं का जो उच्च सभ्यता की ओर लेजाने मे रुकावट डालती हैं समर्थक बन गया है जैसा कि हम देखते हैं। लैंग जैसे बड़े वैज्ञानिक के ये शब्द भी महर्षि दयानन्द जी की समालोचना का स्पष्ट और प्रबल समर्थन करते हैं।

मि० पालग्रेव palgrave ने 'Five years in Damascus' में मुहम्मद और कुरान की शिक्षाओं के कुपरिणाम के विषय में यहां तक लिखा कि—

When the Koran and Mecca shall have disappeared from Arabia then and then only can we expect to see the Arabs assume that place in the rank of civilisation from which Mohammed and his book have more than any other individual cause kept them back

(Quoted in Islam and Christianity P 232)

अर्थात् जब कुरान और मक्का अरब से नष्ट हो जाएगे तब और केवल तब हम इस बात की आशा कर सकते हैं कि अरब वासी सभ्यता के उस शिखर पर पहुच सकेंगे जिससे अन्य सब कारणों की अपेक्षा मुहम्मद और उसकी पुस्तक (कुरान) ने उन्हे रोक रक्खा है महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि यह कुरान पुस्तक विद्वान् की बनाई नहीं। इस बात को प्राय मुसलमान भी स्वीकार करते हैं कि मुहम्मद साहेब विद्वान् न थे। पाश्चात्य विद्वानों ने इस विषय मे स्पष्ट ही मुहम्मद को अज्ञानी वा Ignorant लिखा उदाहरणाथ मार्कस डौडस एम ए डी डी ने Mohammad, Buddha and Christ में लिखा है।

In plain terms, Mohammed was an ignorant man, a man so ignorant that he did not know his own ignorance ' (Mohammed, Buddha and Christ' by Marcus Dods M A D D P 123)

अर्थात् स्पष्ट शब्दों मे मुहम्मद अज्ञानी मनुष्य था इतना अज्ञानी कि अपने अज्ञान का भी उसे ज्ञान न था। History of Europe (H A L Fisher) ने मुहम्मद साहेब के विषय मे लिखा —

Mohammed was one of those men of whom religious history offers many examples in whom a passionate animal Nature is combined with the temper of a visionary He was cruel and crafty Lustful and ignorant lacking in physical courage and the gift of self criticism (History of Europe by H A L Fisher Vol I P 139)

अर्थात् मुहम्मद उन व्यक्तियों में से एक है जिनके धार्मिक इतिहास में अनेक उदाहरण मिलते हैं, जिनमें उग्र पाशविक प्रकृति काल्पनिक विचार रखने वाले के स्वभाव के साथ मिश्रित होती है। वह क्रूर कपटी चालाक (धूर्त) कामी और अज्ञानी था। उसमें प्राकृतिक साहस और आत्म निरीक्षण की कमी थी।

महर्षि दयानन्द जी की समालोचना से भी यह बहुत अधिक कठोर है इसमें सन्देह नहीं।

महर्षि दयानन्द जी ने कुरान की अनेक बातों को तर्क और विज्ञान के विरुद्ध बताया है और इसके अनेक उदाहरण दिये हैं। उनमें से कुछ प्रसिद्ध उदाहरणों को हम उपलब्ध टीकाओं वा भाष्यों में दिये अर्थ सहित देते हैं जिनसे महर्षि की समीक्षा की यथार्थता समर्थित होती है। उदाहरणार्थ कुरान सू० १८। आ० ८६ में एक वाक्य आया है जिनका सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास में निम्न अर्थ पाया जाता है 'यहा तक कि पहुचा जगह डूबने सूर्य की पाया उसको डूबता था बीच चश्मे कीचड़ के।

इस पर महर्षि ने निम्न समालोचना की है

'अब आगे की अविद्या की बात देखिये कि इस किताब (कुरान) का बनाने वाला सूर्य को एक झील में रात्रि को डूबता जानता है फिर प्रात काल निकलता है। भला सूर्य तो पृथवी से बहुत बड़ा है वह नदी वा झील वा समुद्र में कैसे डूब सकेगा। इससे यह विदित हुआ कुरान के बनाने वाले को भूगोल खगोल की विद्या नहीं थी जो होती तो ऐसी विद्या विरुद्ध बातें क्यों लिख देता ? और इस पुस्तक के मानने वालों को भी विद्या नहीं है जो होती तो ऐसी मिथ्या बातों से युक्त पुस्तक को क्यों मानते ? (देखो समीक्षा स० १०६) अब जिस कुरान की आयत पर यह समीक्षा महर्षि दयानन्द जी ने की है उसके भिन्न २ कुरान के अनुवादों में मुसलमान मौलवियों द्वारा दिये अर्थों को देखिये।

शाह रफीउद्दीन साहबने अनुवाद यों किया है कुरान १८। ८६ ".जुलकुरनैन पीछे चला एक राह के यहा तक कि जब वह पहुँचा जगह डूबने सूरज के पाया उसको डूबता था बीच चश्मे कीचड़ के (शाह रफ़ीउद्दीन कृत क़ुरान का उर्दू अनुवाद कुतुबखाना मकबूल आम रेलवे रोड लाहौर पृ० ३६२)

हजरत अल्लामिया आगारफीक साहब बुलन्दशहरी के (रसाला पेशवा जामामस्जिद देहली में छपा) क़ुरान के उर्दू अनुवाद में अर्थ इस आयत का यों दिया है —

फिर पीछे पड़ा एक असबाब के यहा तक कि जब पहुचा सूरज डूबने की जगह पाया कि वह डूबता है एक दलदल की नदी में (पृ० १४१)

नजीर अहमद साहेब कृत अर्थः— यहाँ तक कि जब (चलते चलते) आफ़ताब के गुरूब होने के मकाम पर पहुँचा तो उसको आफ़ताब ऐसा दिखाई दिया कि जैसे वह काली काली कीचड़ के कुण्ड में डूबता है। (हसन निज़ामी कृत क़ुरान के अनुवाद में उद्धृत पृ० ४२३)

ख्वाजा हसन निज़ामी कृत अनुवाद—यहाँ तक कि जब वह (सिकन्दर) सूर्य अस्त होने के स्थान पर पहुचा तो उसने सूर्य को जो देखा (तो ऐसा ज्ञात हुआ कि मानो वह) एक काली कीचड़ के तालाब मे डूब रहा है।'

(हसन निज़ामी कृत कुरानका हिन्दी अनुवाद पृ० ४२३)

ताज कम्पनी लाहौर द्वारा प्रकाशित कुरान के उर्दू अनुवाद मे इस १८८६ का अर्थ यों दिया है "बस पीछे चला एक राह के यहा तक कि जब पहुँचा जगह डूबने सूरज के पाया उसको डूबता था बीच चश्मे कीचड़ के।

(ताज कम्पनी लाहौर द्वारा प्रकाशित उर्दू अनुवाद पृ० ५०१)

मौलाना मुहम्मद अली कृत अंग्रेजी अनुवाद—

18-85 So he (Alexander) followed a course

18-86 Until when he reached the limit whither the sun set, he found it going down into a black sea (Translation of the Holy quoran by Mohammad Ali P. 305)

अब्दुल्ला यूसफअली कृत अंग्रेजी अनुवाद निम्न प्रकार है —

18-85. One (such) way he followed.

18-86. Until when he reached The setting of the sun, He found it set In a spring of murky water.

(Holy quran translated by Yusuf

Ali, Vol II, P. 754)

पिक्थाल (Pickthall) नामक अंग्रेज मुसलमान ने Glorious Quran में इन आयतों का अनुवाद यों दिया है —

18–85 And he followed a Road.

18–86 Till when he reached the setting place of the sun, he found it setting in a muddy spring" (The Glorious quran Vol II, P 391)

रौडवल (Rodwell) ने अनुवाद यों दिया है

18–85. And a route he (Alexander) followed,

86 Until when he reached the setting of the sun, he found it to set in a mirky fount' (Rodwell's translation of the Koran P 188)

अलहज हाफ़िज़ गुलामसरवर एम०ए० मुफ्ती पेनाङ्ग ने क़ुरान के अंग्रेजी अनुवाद में निम्न अर्थ किया है।

18–85 So he followed one resource

18–86 Till he reached the side where in the sun set And found it setting in a hot spring- P 172

इस प्रकार पाठक देखेंगे कि क़ुरान के प्राय सभी अनुवादकों ने सूर्य के डूबने परक अर्थ किया है अन्तर केवल इतना है कि किसीने उसके कीचड़ के चश्मे में, किसी ने दलदल की नदी में, किसी ने काले समुद्र और किसी ने काले पानी में डूबने का अर्थ किया है जिन सब पर महर्षि की समीक्षा समान रूप से लागू होती है क्योंकि इस बात की विद्या-विज्ञान विरुद्धता अत्यन्त स्पष्ट है।

दूसरी क़ुरान की आयत सू० ७५ आ० ९ 'व जुमिअश्शम्सु वल्क़मरु' यह है जिसका अर्थ सत्यार्थ प्रकाश १४ वें समुल्लास में 'इकट्ठा किया जाएगा सूर्य और चाद' यह करते हुए महर्षि दयानन्द जी ने निम्न आलोचना की है —

'भला सूर्य चाद कभी इकट्ठे हो सकते हैं? देखिये यह कितनी बेसमझी की बात है? ऐसी ऐसी असम्भव बातें परमेश्वर कृत कभी हो सकती हैं? बिना अविद्वानों के अन्य किसी विद्वान् की भी नहीं होती (समीक्षा स० १४९)

इस आयत के अन्य मुसलमान टीकाकारों ने जो अनुवाद उर्दू व अंग्रेजी में किया उसे हम तुलनार्थ यहां उद्धृत करते हैं।

शाह रफ़ीउद्दीनकृत उर्दू अनुवाद "और इकट्ठा किया जाएगा सूरज और चाद" (पृ० ६९२)

नज़ीर अहमद कृत उर्दू अनुवाद— 'जब सूरज और चाद दोनों यकजा कर दिये जाए।"

(हसन निज़ामी कृत अनुवाद में उद्धृत पृ० ८३४)

ताज कम्पनी लाहौर के उर्दू अनुवाद में "और इकट्ठा किया जाएगा सूरज और चॉद' (ताज कम्पनी का क़ुरान का उर्दू अनुवाद पृ० ९६६)

अब्दुल्ला यूसफ़ अली कृत अंग्रेजी अनुवाद —

And the sun and the moon Are joined together (Yusof Ali's translation of the quoran Vol III, P, 1650)

मौ० मुहम्मद अली कृत अंग्रेजी अनुवाद-

75–6. And the sun and the moon are brought together (Mohammed Ali's translation P 583)

इस प्रकार शब्दार्थ अन्य अनुवादकों के समान देकर भी मौ० मुहम्मद अली ने नीचे

टिप्पणी में लिख दिया है 'Both become dark. अर्थात् सूर्य चाँद दोनों काले हो जायगे। यह व्याख्या स्पष्टतया महर्षि दयानन्द के आक्षेप से बचने के लिए की गई प्रतीत होती है।

पिक्थल नामक अंग्रेज मुसलमान का Glorious quran में किया अनुवाद —

And sun and moon are united (Glorious quran by M Pickthall Vol II P 778)

अलहज हाफिज गुलाम सरवर कृत अनुवाद —

"And the sun and the moon are in conjunction P 350

मि० रौडवल (Rodwell) ने अन्य मुस्लिम अनुवादकों के अनुसार ही

And the sun and the moon shall be together'

अर्थात् सूर्य और चांद इकट्ठे होंगे यही अर्थ दिया है।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द जी की समालोचना की यथार्थता स्पष्ट है। तीसरी विशेष बात जिसकी महर्षि दयानन्द जी ने समीक्षा की है वह है कुरान सू० ८१ आ० १ २, ३, ११

जिनका अर्थ निम्न प्रकार दिया है —

"जबकि सूर्य लपेटा जाए और जबकि तारे गदले हो जाएं' और जबकि पहाड़ चलाये जाएं और जब आसमान की खाल उतारी जाए।"

समीक्षा—यह बड़ी बेसमझी की बात है कि गोल सूर्य लोक लपेटा जाएगा ? और तारे गदले क्योंकर हो सकेंगे ?और पहाड़ जड़ होने से कैसे चलेंगे ? और आकाश को क्या पशु समझा कि उसकी खाल निकाली जाएगी' यह बड़ी ही बेसमझ और जंगलीपन की बात है। (समीक्षा सू० १५२)

इन आयतों के भिन्न २ कुरान के टीकाकारों ने निम्न अर्थ दिये हैं:—

शाह रफीउद्दीन— जिस वक्त कि सूरज लपेटा जाए और जब तारे गदले हो जाएं और जिस वक्त कि पहाड़ चलाए जाएं और जिस वक्त कि आसमान की खाल उतारी जाए। (कुरान का उर्दू अनुवाद शाह रफीउद्दीन कृत पृ० ७०१

डिप्टी नज़ीरअहमद कृत अनुवाद—

'जिस वक्त आफ़ताब (के नूर की चादर) को लपेट लिया जाए और जिस वक्त तारे झड़ पड़े और जिस वक्त पहाड़ अपनी जगह से चलाए जाएं और जिस वक्त आसमान की खाल खेंची जाए। (हसन निजामी कृत हिन्दी अनुवाद में उद्धृत पृ० ८४७)

हसन निज़ामी कृत अनुवाद—'जब सूर्य (के प्रकाश) को समेट लिया जाएगा (अर्थात् जब सूर्य प्रकाश रहित हो जाएगा) और जब तारे प्रकाश रहित होकर गिर पड़ेंगे और जब पर्वत चलाये जाएंगे और जब आकाश का पर्दा खींच लिया जाएगा(हसन निज़ामीकृत अनुवादपृ०८४७)

ताज कम्पनी लाहौर का अनुवाद —

'जिस वक्त कि सूरज लपेटा जावे और जिस वक्त कि तारे गदले हो जाएं और जिस वक्त कि पहाड़ चलाए जाएं —११ और जिस वक्त आसमान की खाल उतारी जाए (ताज कम्पनी लाहौर का कुरान अनुवाद सन् १९४४ पृ० ६८२)

"And the sun and the moon shall be in conjunction" Mirza Abul Fadl's translation of the quran 75. New Ed P. 576

मौ० मुहम्मद अली कृत अनुवाद—

Chap, 81. '1 When the sun is covered 2 And when the stars darken

3 And when the mountains are made to pass away 4 And when the heaven has its covering removed (Mohammed Ali's translation of the quran P 694)

पिक्थल कृत अनुवाद–

'81-1 When the heaven is cleft asunder 2 When the planets are dispersed 3 When the seas are poured 4 And when the sky is torn away (The Glorious Quran by M Pickthall Vol II P 792

अब्दुलायूसफ अली कृत अनुवाद —

'81-1 When the sun (with its specious light) is folded up 2 When the stars fell losing their lustre 3 When the mountains vanish (like a mirage) 4 When world on high is un-veiled (Holy Quran Vol III P 1693-1695)

रौडवेल (Rodwell) कृत अनुवाद —

'When the sun shall be folded up and when the stars shall fall, and when the mountains shall be set in motion, 4 And when the Heaven shall be stripped away

Foot Note—Like a skin from an animal when flayed (Rodwell's translation of Koran P 44)

इस प्रकार इन अर्थों से महर्षि दयानन्द जी कृत समीक्षा सर्वथा पुष्ट होती है और उनका दिया हुआ अर्थ बिल्कुल ठीक है यह स्पष्टतया ज्ञात होता है।

चौथी विद्या विज्ञान विरुद्ध बात जिसका महर्षि दयानन्द ने उल्लेख किया है कुरान सू० ८२ आ० १, २, ३, ४ की है जिसका अर्थ निम्न दिया है और जबकि आसमान फट जाए और जब तारे झड़ जाएं और जब दर्या चीरे जाएं और जब कबरें जिला कर उठाई जाए।

इस पर समीक्षा निम्न प्रकार दी है "वाह जी कुरान के बनाने वाले फिलासफर। आकाश को क्योंकर फाड़ सकेगा? और तारों को कैसे झाड़ सकेगा? और दर्या क्या लकड़ी है जो चीर डालेगा? और कबरें क्या मुर्दे हैं जो जिला सकेगा मगर ये सब बातें लड़कों के सदृश हैं? (सम ला स० १५३) इन आयतों के मुसलमानों तथा अन्य विद्वानों कृत अर्थ नीचे दिये जाते हैं शाह रफीउद्दीन कृत उर्दू अनुवाद—'जिस वक्त कि आसमान फट जाए और जिस वक्त कि तारे झड़ जाएं और जिस वक्त दर्या चीरे जाएं और जिस वक्त कबरें जिन्दा कर के उठाई जाएं" पृ० ७०२

मिर्जा अबुल फजल कृत अर्थ —

"81-1 When the sun shall be folded up 2 And when the stars shall grow dim 3 And when the mountains shall be moved away 4 And when the heavens shall be peeled off" (P 588)

अलहज हाफिज गुलाम सरवर कृत अनुवाद

81-1 When the sun shine is folded up 2 And when the stars are dimmed 3 When the mountains are made to flow 4 And when the covering of the sky is peeled off (P 355)

डिपुटी नजीरअहमद कृत अनुवाद—"जबकि आसमान फट जाए और जब सितारे झड़ पड़ें और जब दरियाओं को (उनकी असली जगह से

उछाल कर दूसरी तरफ को) बहा दिया जाए और जब कबरें उखाड़ दी जाएं।

(ख्वाजा हसन निजामी कृत अनुवाद मे उद्धृत पृ० ८४८)

ख्वाजा हसन निजामी कृत अनुवाद—जब आकाश फट जाएगा और जब नक्षत्र झड़ पड़ेंगे और जब नदें ऐसी उमड़ पडेगी (कि अपना २ स्थान छोड़ कर एक दूसरे से मिल जाएगी और समस्त भूमि पर बहती फिरेंगी) और जब कब्रों के मुर्दे जिन्दा किये जाएंगे।"

(ख्वाजा हसन निजामी कृत अनुवाद पृ० ८४८)

ज [illegible] रफाक स हबबुलन्दशहरी

[illegible] आसमान चिर जाए और जब तारे झड़ [illegible] नदियां बह चलें और जब कबरें [illegible]

ज [illegible] लाहौर का अनुवाद— जिस वक्त कि आसमान फट जावे और जिस वक्त कि तारे झड़ जावे और जिस वक्त कि दरया चीरे जाएं [illegible] जिस वक्त कि कबरें जिन्दा कर उठाई [illegible] कम्पनी लाहौर का छपवाया कुरान [illegible] सन् १९४४)

[illegible] मुहम्मदअली कृत अनुवाद—

-1 When the heaven becomes cleft asunder 2 And when the stars become dispersed 3 And when the rivers are made to flow forth [illegible] And when the graves are laid o[illegible] (Mohammad Ali's translation P [illegible])

अज हनहाफिज ,गुलाम सरवर कृत अनुवाद

82 1 When the sky is opened out 2 And when the planets are dispersed 3 And when the seas flow fast 4 And when the burial places are raised up P 359

यूसफअली कृत अनुवाद

82 1 When the sky is cleft asunder 2 When the stars are scattered 3 When the oceans are suffered to burst forth 4 And when the graves are turned up side down (Vol III P 1699)

पिक्थाल नामक अंग्रेजी मुसलमान कृत अनुवाद

82 1 When the sun is over thrown 2 And when the stars fall 3 And when the hills are moved 4 And when the sky is torn away (The Glorious Koran by M Pickthall Vol II P 792-793)

रौडवेल कृत अनुवाद

When the heaven shall cleave asunder And when the stars shall disperse, And when the seas shall be commingled, And when the graves shall be turned upside down (Rodwell's translation of the Koran 82-1 to 4 P 44)

इस प्रकार इन अर्थों के देखने से महर्षि दयानन्द कृत अर्थ और उसके आधार पर की गई समालोचना की स्पष्ट पुष्टि होती है यद्यपि कुछ नवीन भाष्यकारों ने अपनी टिप्पणियों में इन वर्णनों को आलङ्कारिक बताने का असफल प्रयत्न किया है।

एक अन्य अवैज्ञानिक और प्रकृति नियम विरुद्ध बात पर जिसका उल्लेख कर के महर्षि दयानन्द जी ने निम्न आलोचना की है तुलनात्मक

दृष्टि से हमें थोड़ा सा विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है—

यह कुरान सू० २ आयत २ है जिसका सत्यार्थप्रकाश मे निम्न अर्थ पाया जाता है "कहा चार जानवरों से ले उनकी सूरत पहचान रख फिर हर पहाड़ पर उनमें से एक २ टुकड़ा रख दे फिर उनको बुला दौड़ते तेरे पास चले आएँगे।"

महर्षि की आलोचना—वाह २ देखो जी मुसलमानों का खुदा भानुमती के समान खेल कर रहा है? क्या ऐसी ही बातों से खुदा की खुदाई है? बुद्धिमान् लोग ऐसे ख़ुदा को तिलाञ्जलि देकर दूर रहेंगे और मूर्ख लोग फँसेंगे इससे खुदा की बड़ाई के बदले बुराई उनके पल्ले पडेगी।"

(समीक्षा स० ४३)

इस आयत का अनुवाद मौलवियों ने निम्न प्रकार दिया है

शाह रफ़ीउद्दीन साहेब—कहा पस ले चार जानवरों से पस सूरत पहचान रख उनकी तरफ अपने फिर कर दे ऊपर हर पहाड के उनमें से एक टुकडा फिर बुला उनको, चले आएगे तेरे पास दौड़ते और जान यह कि अल्ला गालिब है हिकमत वाला।" (उर्दू अनुवाद शाह रफीउद्दीन कृत पृ० ५०)

डिपुटी नजीर अहमद साहेबकृत अनुवाद—अल्लाह ने अब्राहीम से कहा—

अच्छा चार परन्दला और उनको अपने पास मँगवाओ (और बोटी बोटी कर डालो) फिर एक २ पहाड़ी पर उनका एक २ टुकड़ा रख दो, फिर उनको बुलाओ तो वह आप से आप तुम्हारे पास दौड़े चले आएगे (यह नमूनाए कुद्रत देखो) और जाने रहो कि अल्लाह जबर्दस्त और हिकमत वाला है।" (हसन निज़ाम कृत अ[illegible] में [illegible] पृ० ६२)

ख्वाजा हसन निजामी कृत हिन्दी अनुवाद

'अल्लाह ने फर्माया अच्छा [illegible] चार (भिन्न २ प्रकार के) पक्षी ले आओ (उन्हें अपने) अपने पास रखकर हिलाओ और उनकी सूरतें (आकृतियां) अपने जेहन में जमा लो (और) फिर (उनके टुकडे २ करके) उनका एक एक टुकडा पहाड़ों पर डाल दो और [illegible] पश्चात् उन्हें पुकारो वह तुम्हारे पास दौड़ते [illegible] जायेंगे और उसी से तुमको समझ [illegible] कि अल्लाह बहुत बुद्धिमान् और शक्तिशाली [illegible]।"

(हसन निज़ामी कृत अनुवाद पृ० ६२)

ताज कम्पनी लाहौर के क़ुरान उर्दू अनुवाद में यों अर्थ किया है:—

(अल्लाह ने अब्राहीम से) कहा पस ले चार जानवरों से पस सूरत पहचान रख उनको तरफ अपने फिर कर दे ऊपर हर पहाड के इनमे से एक टुकडा फिर बुला उनको चले आएगे तेरे पास दौड़ते और जान यह कि अल्ला गालिब है हिकमत वाला।" (ताज कम्पनी का कुरान अनुवाद पृ० ६६-७०)

अब्दुल्ला यूसफअली कृत अँग्रेज़ी अनुवाद

2-26 "He (Allah) said 'Take four birds' Tame them to turn to thee, Put a portion of them on every hill, and call to them, They will come to thee (flying) with speed, Then know that God is exalted in power, wise" (Yusuf Ali's translation Vol I P. 106)

मौ० मुहम्मदअली कृत अनुवाद

2-26 "He (God) said. Take four birds, then train them to follow thee, then place on every mountain a part of them, then call them they will come to thee flying, and know that God is mighty, wise" (Mohammad Ali's translation P 46)

पिक्थाल कृत अनुवाद

Abraham's Lord said "Take four of the birds and cause them to incline unto thee, then place a part of them on each hill then call them, they will come to thee in haste. And know that Allah is mighty wise" (Glorious Quran Vol I P 54 translated by M Pickthall).

रौड्वेल कृत अनुवाद

"When Abraham said 'O Lord' show me how thou wilt give life to the dead" He (God) said 'Hast thou not believed?' He said, yes, but I have asked thee that my heart be well assured" He said "Take then four birds, and draw them towards thee, and cut them into pieces then place a part of them on every mountain, then call them and they shall come swiftly to thee, and know thou that God is mighty, wise." (Rodwell's translation of the Koran P 36)

इन भिन्न २ टीकाकारों द्वारा किये गये अर्थों के तुलनात्मक अनुशीलन से भी यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि महर्षि दयानन्द ने जो अर्थ इस आयत का किया है वही सभी पुराने क़ुरान के अनुवादकों और भाष्यकारों को इष्ट था यद्यपि मौलाना मुहम्मदअली और यूसफ़अली आदि नवीन भाष्यकारों ने वही अर्थ लेकर भी उसके भाव को टिप्पणियों में बदलने का प्रयत्न किया है। अब्दुल्ला यूसफ़अली ने अपनी टिप्पणी में लिखा है।

'The received commentators understand this to mean that the birds were to be cut up and pieces of them were to be put on the hills The cutting up or killing is not mentioned, but they say that it is implied by an elipsis, as the question is how God gives life to the dead Of the modren muslim commentators M Pickthall is non-committal, but H. G S and M. M. A (Maulana MohammadAli) understand that the birds were not killed but a portion here means a unit single birds were placed on hills and they flew to the one who tamed them This last view commends itself to me, as the cutting up of the birds to pieces is no where mentioned, unless we understand the word for 'taming' in an un-usual and impossible sense" (Yusuf Ali's translation of the Holy Quran Vol I. P. 106).

इस टिप्पणी से भी यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि पुराने सब क़ुरान के भाष्यकारों ने इन आयतों का वही अर्थ किया था जो महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है (जैसे ऊपर दिये शाह रफ़ीउद्दीन, ताज कम्पनी, रौड्वेल आदि के उद्धरणों से प्रकट है) और उसके आधार पर महर्षि की

समालोचना सर्वथा यथार्थ है चाहे अब मौलाना मुहम्मदअली जैसे भाष्यकार उन आयतों की अवैज्ञानिकता और प्रकृति नियम विरुद्धता को देखकर प्रकरण का भी ध्यान में न रख कर अर्थ बदलनेका कितना भी यत्न क्यों न करें ? ऐसे अर्थ परिवर्तन से तो यही सिद्ध होता है कि महर्षि दयानन्द की युक्ति युक्त आलोचना का विचारशील मुसल्मानों के दिल पर कितना प्रभाव पड़ा है

ऐसे ही अन्य भी अनेक उदाहरण कुरान की विद्या-विज्ञान विरुद्धता के दिये जा सकते हैं पर विस्तार भय से इस प्रकरण को यहीं समाप्त करना उचित प्रतीत होता है। कुरान की तर्क विरुद्धता के विषय मे जैसे महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास मे कई स्थलों पर लिखा है वैसे ही बल्कि उनसे भी अत्यन्त कठोर शब्दों में अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने लिखा है। उदाहरणार्थ डिडरौट् (Diderot) नामक विद्वान् ने मुहम्मद साहेब के विषय मे लिखा कि—

"Mohammed was the greatest enemy of sober reason who ever lived" (Quoted here from 'Mohammed the man and his faith' by Tor Andre)

अर्थात् मुहम्मद गम्भीर तर्क का सबसे बड़ा शत्रु था। वाल्टेयर (Voltaire) नामक सुप्रसिद्ध फ्रान्स देशीय विद्वान् ने 'Mohammet' नामक अपने फ्रेंच नाटक में मुहम्मद की अत्यन्त भयङ्कर आलोचना करते हुए लिखा कि—

"Had Mahammed been born a prince, or had he been called to former by the choice of the people, and had he established peaceful laws and defended his country against his enemies, then it would be possible to honour him But when a camel dealer stirs up rebellion, claims to have conversed with Gebriel and to have received this incomprehensible Book (Koran) in which every page does violence to sober reason, when he murders men and and abducts women in order to force them to believe in this book, Such conduct can be defended by no man unless he is born a Turk or unless superstition has choked all of the light of nature in him" (Quoted here from 'Mohammed by Prof. Tor Andre P 245 246).

The Arya Samaj, Chintadripet. Madras

Inauguration by Sri K M Munshi, Bar at Law (Ex Minister of Bombay)

Inaugurating a branch of the Arya Samaj in chintadripet (organised by Sri M Krishna Rao a prominent Arya worker) on the evening of Sunday the 15th April 45 at the Vijiaraghavalu Chetti Hall Mr K M Munshi paid a tribute to its founder, Swami Dayananda Saraswathi and urged the need for revitalising Hinduism as a modern force so that they could take their legitimate place in the forefront of modern nations

Mr P Narayana Kurup M A, B L, Advocate, (patron of the Arya Samaj, Chintadripet) who presided, said that although the western world had a lot of ideas, it had not understood properly the essentials of Hinduism If Hinduism was to spread throughout the world, a good deal of propaganda as is being done by the Arya Samaj and its workers was necessary If the message of Swami Dayananda is spread to whole of South India, Hinduism will surely become a living force He congratulated Sri M. Krishna Rao, for his organising capacity in opening branches of the Samaj and successful arrangement made for the day's function

Mr Munshi said that the Arya Samaj carried with it the torch of enlightened Hinduism and its founder Dayananda Saraswathi, was the first architect of modern India. He was the first to free Hinduism from the excrescences which had grown around it during Muslim rule The present caste system, Mr Munshi said, was not enjoined either by authority or by practice when Hinduism was a live cult On account of political crises which overtook the country between the 13th and 18th centuries Hinduism was put to a terrible test It was Swami Davananda who enlarged the horizon of Hinduism and restored its pristine form And wherever the Arya Samaj went, it carried with it the torch of enlightened Hinduism

Mr Munshi urged that they of the present generation must forget the narrow, rigid barriers which had been imposed upon them on account of historical vicissitudes of the mediaeval age They should restore the whole of their manhood to that strength and equality as preached by Swami Dayananda which alone would make India stand on a firm foundation in the modern world. They should restore Hindu society to its fullest strength and they

should not "drive" out those who were converted to other faiths from its fold. Swami Dayananda and the Arya Samaj have opened the doors of Hinduism to Non-Hindus

Referring to Dr Ambedkar's denunciation of the Vedas and the Gita, Mr Munshi observed that the Vedas and the Gita preached the equality of man in the eyes of God and untouchability had no sanction in the highest scriptures of the Hindus, viz. the Vedas. Even if later books had sanctioned it, it was the duty of the present generation of Hindus to remove it so that Hinduism could live as a virile culture or religion It was a slur on the higher castes that the movement for the removal of untouchability was not progressing as rapidly as it should be In this line the Arya Samaj is doing its yeoman service Dr Ambedkar had either not read the Vedas or the Gita or if he had read them, he had forgotten what he had read

STATUS OF WOMEN IN HINDU SOCIETY

Dealing with the position of women, Mr. Munshi said that unless they were prepared to put women in the same position of equality with men, Hindu society would never rise in the scale of culture. In this respect Swami Dayananda Saraswati was a pioneer. It was also due to Gandhiji's uncanny methods and political movements that the women of India were taking an equal place with men in the different spheres of life Mr Munshi referred to the Hindu Law Reform Committee's work and urged that they should have legislation which forbade polygamy

If Hinduism had to live in the modern world, Mr Munshi pointed out, it could only do so as a modern force, as preached by the Arya Samaj and its founder It could not live as an ante deluvian social system or culture Hinduism was not made of mere beliefs and superstitions It had kept alive for all these years and it had taken them through difficult situations in history Today it was as vital as ever Mr. Munshi added that he had a tremendous faith in the Hindu culture and doctrines which had shaped their thoughts and beliefs during the last thousands of years and he was sure that they were going to emerge soon from the "present phase of adjusting ourselves to new conditions" Hinduism would be tested not by the Sandhya they performed but by the vitality of those in its fold. The Arya Samaj has got a bright future in this line of work They should therefore remove the distinction between man and man and allow every Hindu to

rise to the height to which he was capable

In proposing a vote of thanks Sri V Padmanabhan, Secretary, said that the message of Swami Daya nanda has to be spread to every nook and corner of South India—more particularly in every locality of this big City The members of this Samaj and resident of Chinta-dripet are fortunate to have Mr M Krishna Rao, a prominent Arya Samaj worker as a resident of this locality His organising capacity and vast experience with the Arya Samaj movement for the past fifteen years, are well known With his co operation and guidance, our Samaj will grow from strength to strength and will be a great centre of activities I thank him for all his strenuous efforts taken for the successful celebration of this Inaugu ration I once again thank our disguished guest Sri K M Munshi for his kind response to our invi tation, and above all we have to thank our patron Sri P Narayana Kurap M A, B L

More than 1,000 people assem bled to attend the above inaugu ration and the function ended with great success The prestige of the Samaj has been enhanced considerably The Councillors and many prominent leaders of this locality attended the function Be fore the commencement of the meeting, a group photo with Mr K M Munshi and the office bearers of the Arya Samaj, Chintadripet, Madras, was taken

Jt Hon Secretary
1945 Arya Samaj Chintadripet,
Madras

A HIGH CLASS CHRISTIAN LADY RECONVERTED TO HINDUISM

Under the auspices of the Arya Samaj–Chintadripet, Madras, Miss Leila Srihari, B A L T, Officer in W A C (I) a highly cultured Chri stian lady belonging to the Church of England, who comes off from a prominent and well known Indian Christian family of Madras, was reconverted to Vedic Dharma at the Arya Samaj Mandir, Chintadri pet, Madras, on 7 4 45 After chan-ting of Gayatri she was given the Hindu name of Srimathi LEELA SRIHARI Pandit M Sundaram officiated over the Shuddhi ceremony

A very large gathering of mem-bers and sympathisers of this Samaj attended the function, most promi nent among them being Sri C G Viswanathan B Sc (Hons) Presi-dent, Aryasamaj, Chintadripet, Sri M Barathan B Sc. Secretary, Sri G R Eswar B A (Hons), Capt. P L Naidu, Lt C K Raman Sri P Ramanjulu Naidu (Commercial) Tax Officer), Sri Purushotham (S I of Police), Sri C N Murthy,

Hon Secretary

आर्य कुमार जगत्

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की अन्त रग सभा की द्वितीय बैठक ता० २५ मार्च सन् १९४५ को दीवान हाल में हुई जिसमें बहुत से आवश्यक निश्चय हुए —

संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन

आर्य कुमार सभा गाजियाबाद ने सम्मेलन को सफल बनाने के लिये निम्न सज्जनों की एक उपसमिति बनादी है जो स्वागत समिति के बनने तक सम्मेलन की कार्यवाही करेगी

संयोजक—देवीदयाल आर्य सदस्य श्री बा० यमुनाप्रसाद जी श्री ब्रजमोहन जी, हीरालाल जी, लहरचन्द्र जी, बा० सागरमल जी, श्री जनार्दन शर्मा, बा० हरिराम जी, ला० श्यामलाल जी, रमेशचन्द्र जी सम्मेलन की स्वागत समिति के सदस्य बनाए जा रहे हैं।

परीक्षा फल:—

जनवरी सन् १९४५ में जो सिद्धान्त शास्त्री आदि परीक्षाए भारत के लगभग १०१ केन्द्र में हुई उनका परीक्षा फल १५ मई तक सब केन्द्रों में भेज दिया जावेगा देवीदयाल आर्य कार्यालय मंत्री

भीलों का सुधार:—

आर्य समाज प्रतापगढ़ (राजपूताना) में महा शिवरात्रि के उपलक्ष्य में बराबर तीन दिन प्रभात फेरी निकाली गई और इस महान् पर्व के दिन श्रीमन् प० बालेश्वरदयालु जी संचालक भील सेवा संघ बामनियाँ ने स्थान जटाशंकर जाकर करीब २०० भीलों को यज्ञोपवीत देकर उनको क्षत्रिय घोषित कर उनके आचरण सुधारने के लिये सुन्दर उपदेश उन्हीं की भील भाषा में दिये।

भीलों पर इसका इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने गो माँस पाड़ा माँस मुर्दा मांस खाना व मदिरा पीने का त्याग किया और देवी देवताओं के नाम पर बलिदान करने की प्रथा से मुक्त रहने का भी निश्चय किया।

गौतमलाल-डेन्टिस्ट मन्त्री आर्यसमाज
प्रतापगढ़ (राजपूताना)

[भीलों और गोंडों में इस प्रकार के कार्य को संगठित रूप में सर्वत्र करना चाहिये स० स०]

सामाजिक जगत्

पूर्वीय अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के समाचार

(१) पूर्वीय अफ्रीका की भिन्न २ colonies में वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिये श्री प० सत्यपालजी वैदिक मिशनरी यात्रा पर गये हुए हैं। उनके सरस तथा विद्वत्तापूर्ण उपदेशों का जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ रहा है।

(२) आर्य जनता को यह समाचार सुनकर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वीय अफ्रीका को कायम हुए २, २५ वर्ष व्यतीत हो गए हैं। इन २५ वर्षों में सभा ने पूर्वीय अफ्रीका के भिन्न २ उपनिवेशों में आर्य धर्म के विस्तार तथा प्रसार में बड़ा प्रयत्न जारी रक्खा है। २५ वर्षों की समाप्ति पर सभा अपनी रजत जयन्ती मनाने का विचार कर रही है और निश्चय किया गया है कि ५ अगस्त १९४५ में सभा की रजत जयन्ती उत्साह पूर्वक मनाई जाए। उस अवसर पर "प्रतिनिधि" नाम का एक Annualभी प्रकाशित किया जाएगा। विनयकुमार विद्यालङ्कार उ०मन्त्री

गाजियाबाद आ० स० का उत्सवः—

ता० २० अप्रैल से २३ अप्रैल तक आर्य समाज गाजियाबाद का ६१ वाँ वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। नगर-कीर्त्तन ता० २१ अप्रैल शनिवार को निकला। श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी, प० रामचन्द्र जी देहलवी, ठा० धर्मसिंह जी सरहदी, पं० सिद्धगोपाल जी कविरत्न, पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु, चौ० देशराज जी, श्री राम गोपाल जी आर्य, श्री ओमप्रकाश जी त्यागी, श्री ज्ञानेन्द्र जी, श्री लहरी जी, श्री सेठानी जी के सारगर्भित उपदेश हुए।

ता० २२ अप्रैल को चौ० देशराज जी के सभापतित्व में सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन हुआ जिसमें प० रामचन्द्र जी देहलवी, पं० सिद्धगोपाल जी कविरत्न, पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु तथा बा० हीरालाल जी के भाषण हुए।

ता० २३ अप्रैल को प० रामचन्द्र जी देहलवी के सभापतित्व में आर्य भाषा सम्मेलन हुआ जिसमे प० उदयवीर जी शास्त्री, प० रामचन्द्र जी शास्त्री, प० रघुवरदयालु जी भारद्वाज बी० ए० शास्त्री, पं० सिद्धगोपाल जी कविरत्न, श्री ओम्प्रकाश जी वेदालङ्कार एम० ए०, श्री धर्मवीर जी प्रेमी एम० ए० के भाषण हुए।

रघुवरदयालु उपमन्त्री
आर्य समाज गाजियाबाद

नयागाँव आ० स० का उत्सवः—

आर्य समाज नया गाँव (बम्बई) का वार्षिक महोत्सव बड़े ही समारोह के साथ गत एप्रिल मास में सम्पन्न हुआ। पं० विद्यानन्दजी फ़िलासफ़र, स्वामी चिदानन्दजी मन्त्री श्रद्धानन्द शुद्धि सभा देहली, स्वामी परमानन्द जी आगरा, आचार्य विश्वश्रवाजी बरेली आदि महानुभावों के प्रभावशाली भाषणों और गायनाचार्य प०के०सी० चक्रवर्ती, ठाकुर विन्ध्येश्वरी सिंह जी आदि के भजनोपदेशों से जनता ने बड़ा लाभ उठाया आचार्य विश्वश्रवा जी के द्वारा यज्ञ और कठोपनिषद् की कथा १२ दिनों तक होती रही। उत्सव में उपस्थिति बहुत ही अच्छी रहती थी।

कन्हैय्यालाल मिश्र, प्रधान

सार्वदेशिक आ० प्र० सभा का नया चुनाव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन में जो ता० १५-४-४५ को श्रद्धानन्द बलिदान भवन, देहली में श्री प० गंगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज की अध्यक्षता में हुआ। आगामी वर्ष के लिए निम्नांकित पदाधिकारी तथा अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए

प्रधान

१. श्रीमहात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

उपप्रधान

२. श्री स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी
३. श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय
४. श्री राजा नारायण लाल जी

मन्त्री

५. श्री प्रो० सुधाकर जी एम० ए०

कोषाध्यक्ष

६ श्री ला० नारायणदत्त जी

पुस्तकाध्यक्ष

७ श्री ला० ज्ञान चन्द्र जी आर्य

अन्तरंग सदस्य

८ श्री कुंवर चांद करण जी शारदा
९. श्री प० वासुदेव जी शर्मा
१० श्री प्रो० ताराचन्द्र जी एम० ए०
११ श्री पं० विजयशङ्कर जी
१२ श्री ला० देशबन्धु जी गुप्त
१३ श्री बा० ज्योतिस्वरूप जी
१४ श्री चौ० देशराज जी
१५ श्री प० गंगाप्रसाद जी एम० ए०
१६ श्री माननीय घनश्यामसिंह जी
१७ श्री प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री
१८ राजगुरु श्री प० धुरेन्द्र जी शास्त्री
१९ श्री प० ज्ञानचन्द्र जी आर्य सेवक
२० श्री म० कृष्ण जी
२१ श्री प० ठाकुरदत्त जी शर्मा।

पुनर्जन्म मीमांसा

लेखक श्री प्रो० नन्दलाल जी एम० ए० प्रोफेसर गुरुकुल कांगड़ी

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् ने यह पुस्तक इस वर्ष अपनी परीक्षा में नियत की है। विद्यार्थियों के लिए सुलभ बनाने के उद्देश्य से शारदा मन्दिर ने पुस्तक का मूल्य २) के स्थान में १) कर दिया है। भूल से गत मास की सूचना मे लेखक का नाम प० नित्यानन्द जी लिखा गया था।

मैनेजर
शारदा मन्दिर लिमिटेड
नई सड़क देहली

दान सूची

कुछ राशियां जो मास मार्च अङ्क में छपने से रह गई थीं।

१००) श्री मन्त्री जी आ० स० जयनगर (काठियावाड़)
२१) श्री मन्त्री जी गढ़वाल आर्य सभा देहली।
५॥) श्री प्रधान जी सोपरी बाजार कॉलोनी।
५=)॥ श्री महेन्द्रदत्त जी c/o आ० स० झांसी।
२) श्री गोविन्दराम जी c/o आ० स० झांसी।
५०००) श्री मन्त्री जी प्रतिनिधि सभा यू० पी०।
१७००) श्री मन्त्री जी प्रतिनिधि सभा बंगाल।
५) श्री स्वामी शिवानन्द जी तीर्थ लोहारदगा।
२०) गुप्तदान
५१) श्री मन्त्री जी आ० स० सुजानगढ़।
१००) श्री टेकचन्द्र जी कोषाध्यक्ष मियावाली।
५०) श्री राजनारायणसिंह जी बारिकपुर।
५) श्री मन्त्री जी आ० स० छतिया (बरेली)
१६।) श्री मन्त्री जी आ० स० काटनिका।
५०) श्री मन्त्री जी आ० स० नागौर।
११०) श्री गोयल प्रसाद जी आ० स० फलौना।

दान सूची प्रान्तवार संयुक्त प्रान्त

१००) श्री मन्त्री जी आ० स० फजाबाद।
१००) श्री काषाध्यक्ष जी आ० स० आगरा छावनी
२५) श्री चौ० अमीचन्दजी थानेदार c/o S. K. bhatia ग्राम खदाना पो० भाखना (बुलन्दशहर)
१२६०६—)॥ गतयोग।
१३१३१—)॥ योग।

बिहार प्रान्त

५४४४।) गतयोग।

बम्बई

१००१) श्री मन्त्री जी आ० स० चिरबोहा बाया आनन्द गुजरात
१००) श्री भाणजी देवजी मन्त्री आ० स० खम्भालिया (काठियावाड़)
१०१) श्री मन्त्री जी आ० स० जोगरपटेल बम्बई।
५०) श्री मन्त्री जी आ० कु० सभा बड़ौदा।
१०१) श्री मन्त्री जी आ० स० कोकाड़ा।
२७६) श्री मन्त्री जी आ० कु० सभा बड़ौदा।
५२४४॥) गतयोग।
६८६१॥) योग।

बंगाल

३६११) गतयोग।

पंजाब तथा देहली

५०) श्री मन्त्री जी आ० स० मोरसराय।
१०) श्री चौ० अमरसिंह जी फरवाना रोहतक।
१०००) श्री ला० ज्ञानचन्द जी ठेकेदार न्यू देहली।
२५०) श्री महन्त पूज्य स्वामी रामदास जी धमशाला खावाली।
१०१) श्री मन्त्री जी आ० स० चीचावतनी।
५) श्री मन्त्री पुनहाना (गुड़गावां)
२६६५।=) गतयोग।
४४११।=) योग।

राजस्थान

१६।) सभासद् आ० स० गुरुकुल चित्तौड़।
१७।) श्री स्वामी व्रतानन्द जी आचार्य गुरुकुल चित्तौड़।
२०४०) गतयोग।
२०७३॥) योग।

मध्य प्रदेश

३००) श्री मन्त्री जी आ० स० खामगाव।
१००) श्री मन्त्री जी आ० प्रति० सभा मध्य प्रदेश
५०) श्री मन्त्री जी आ० स० गोरखपुर।
६७७॥) गतयोग।
११२७॥) योग।

हैदराबाद

४१८।) गतयोग।

मद्रास

१०) श्री माधव रामचन्द्र जी कार्कल।
४०८॥) गतयोग।
४१८॥) योग।

सिन्ध प्रान्त

११९६।) श्री मन्त्री जी आर्य प्रति० सभा सिन्ध।
७०५) मेरठ के सिन्धियों से।
२५००) गुप्त दान।
२५००) गुप्त दान।
५००) गुप्त दान।
१०१) श्री मुन्नालाल मिठाई वाला कराची।
१०१) श्री मोहनदास कम्पनी कराची।
२५०) श्री मन्त्री जी गढ़वाल आ० स० कराची।
१०१) श्री मन्त्री जी वैदिक साहित्य प्रचारिणी सभा कराची।
१०००) श्री मन्त्री जी टाउन आ० स० कराची।
५००) श्री मन्त्री जी आ० स० क्यामारी।
२५१) श्री सेठ मुरलीधर जी ठेकेदार कराची।
१०१) श्री मन्त्री जी आ० स० खैरपुर नाथनशाह
५१) श्री मन्त्री जी आ० स० थाड़ी मोहब्बत (सिन्ध)
१०) श्री मन्त्री जी आ० स० भड्ड (सिन्ध)
५०) श्री मन्त्री जी आ० स० डाकरी।
१००) श्री मन्त्री जी आ० स० शिकारपुर।
१०००) श्री मन्त्री जी आ० स० सक्खर।
१०००) श्री जे० बी० मघाराम जी कराची।
२५०) श्री मन्त्री जी आ० स० घोटकी।
१०८) श्री टीकमदास प्रीतमदास जी खे पडे वाला कराची।
५) गतयोग।
१२३६५।) योग।

विदेश

७५०) गत योग।

विविध

२०) गुप्त दान।
५०) श्री मन्त्री जी आ० स०
४०२४।) गतयोग।
४०९४।) योग

५५०३६॥।≡)॥ सर्व० योग।

दान स्थापना दिवस एप्रिल मास १९४५

४०) श्री मन्त्री जी आ० स० कैथल।
१३५॥≡)११ श्री मन्त्री जी आ० प्रतिनिधि सभा (सिन्ध)
६०) श्री मन्त्री जी आ० स० बूडेवाला मुलतान।
१०२) मन्त्री जी आ० स० पेशावर शहर।
५) गतयोग।
३४२॥≡)११ योग।

दान वेद प्रचार निधि मास एप्रिल १९४५

५) श्री राज नारायणसिंह जी आ० स० बारिकपुर
१२) श्री घनश्यामलाल जी चावला सिकन्दराबाद (निजाम)
१६) श्री माधोलाल जी गुप्ता ग्राम छम्मदोरी।
१०१) श्री सेठ शूरजी वल्लभदास जी बम्बई।
५०) श्री मन्त्री जी आ० स० कैथल आर्य वीर दल रक्षार्थ।
४७०)१ श्री मन्त्री जी प्रति० सभा करांची।
हैदराबाद सत्याग्रह का शेषधन (दक्षिण प्रचार)
२६३) बम्बई सत्याग्रह कमेटी द्वारा हैदराबाद सत्याग्रह का शेष धन (दक्षिण प्रचार)

सब दाताओं को सभा की ओर से धन्यवाद। यह खेद की बात है कि सब आर्य समाजों को विज्ञप्ति पत्र भेजने पर भी आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दान राशि अभी तक बहुत ही कम समाजों से प्राप्त हुई है। अन्य सब समाजों को भी सभा के आदेशानुसार यह धन एकत्रित करके अन्यथा अपने कोष से तुरन्त सार्वदेशिक सभा कार्यालय में भेजकर अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये। शिरोमणि सभा के आदेश की अवहेलना निन्दनीय है।

मन्त्री सार्वदेशिक सभा।

सम्पादकीय

विश्व सुरक्षा सम्मेलन और भारतः—

अमरीका के सन् फ्रांसिस्को नगर में गत २४ अप्रैल से जो विश्व सुरक्षा सम्मेलन का अभिनय हो रहा है उसके सामने अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्न हैं और विश्वशान्ति की स्थापना का उच्च उद्देश्य है किन्तु हमें आशा नहीं कि इन उच्च उद्देश्यों की पूर्ति इस सम्मेलन के द्वारा हो सकेगी। हम महात्मा गान्धी जी के इस विचार से पूर्णतया सहमत हैं कि मित्र राष्ट्रों अथवा संसार के लिये तब तक शान्ति स्थापित न हो सकेगी जब तक कि महान राष्ट्र अपनी युद्ध प्रवृत्ति तथा छल कपट को त्याग संसार के सभी राष्ट्रों के लिये समानता और स्वतन्त्रता की योजना नहीं बनाएंगे। अतएव स्थायीशान्ति के के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि भारत को जो महान् देश है, जिसकी सभ्यता और संस्कृति प्राचीन है और जिसके लाखों सैनिक इस युद्ध में दूसरे देशों की स्वतन्त्रता के लिये वीरतापूर्वक लड़े हैं पूर्ण स्वतन्त्र कर दिया जाए। जहां विश्व शान्ति के लिये भारत जैसे पराधीन देशों की स्वतन्त्रता आवश्यक है वहां यह भी आवश्यक है कि जर्मनी और जापान की जनता को भी शान्ति के फल से वञ्चित न रक्खा जाय। इसी तरह मित्र राष्ट्र उन्हें अपना मित्र बना सकेंगे अन्यथा तृतीय महा युद्ध की सम्भावना करना अत्यन्त स्वाभाविक होगा। जगद्विख्यात विचारक श्री बर्नार्डशॉ तथा अमरीका की प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती पर्लबक आदि ने भी इन्हीं विचारों का प्रबल समर्थन किया है। भारत सरकार की ओर से जो प्रतिनिधि मण्डल सर रामस्वामी मोदोलियार की अध्यक्षता में उस सम्मेलन में भाग लेने के लिये भेजा गया है उसे भारतीय जनता का प्रतिनिधि किसी भी अवस्था में नहीं समझा जा सकता। श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित भारतीय प्रश्न को वहां की जनता के सन्मुख रखने का प्रशंसनीय प्रयत्न कर रही हैं किन्तु खेद की बात है कि उसमें भी ये लोग रोड़े अटका रहे हैं और भारत के मान्य नेताओं के विरुद्ध विषवमन कर रहे हैं। वास्तव में इस सम्मेलन की सफलता भारत तथा अन्य पराधीन राष्ट्रों की स्वतन्त्रता और समानता के द्वारा मापी जाएगी न कि कोरे प्रस्तावों से चाहे वे कितने ही आकर्षक और मोहक प्रतीत हों। हमारा तो निश्चित विश्वास है कि विश्व बन्धुत्व और भ्रातृत्व के वैदिक सिद्धान्तों को क्रियात्मक रूप देने से ही विश्व में शान्ति की स्थापना हो सकती है अन्यथा नहीं।

आर्य्यों के धैर्य की सीमा समाप्त प्रायः—

आर्यों के परम पवित्र धर्म ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास के प्रकाशन पर सिंध सरकार की ओर से प्रतिबन्ध लगे आज लगभग ६ मास समाप्त हो चुके हैं। इस बीच में सत्यार्थ-प्रकाश रक्षार्थ आन्दोलन निरन्तर जारी रहा। देश के सभी सुप्रसिद्ध नेताओं ने सिन्ध सरकार के इस कार्य की घोर निन्दा करते हुए उसे भारत

रक्षा विधान का घोर दुरुपयोग बताया। इस प्रतिबन्ध को हटवाने के लिये जितने वैधानिक उपाय काम में लाये जा सकते थे वे लाये गये। किन्तु आज ४ मई गुजर जाने पर भी उस अनुचित आदेश के वापिस लिये जाने की कोई घोषणा प्रकाशित नहीं हुई यह अत्यधिक खेद की बात है। सिन्ध सरकार के मन्त्रिमण्डल के लिये यह अत्यन्त लज्जाजनक बात है कि उसने आर्य-नेताओं को दिये अपने आश्वासनों को अभी तक पूरा नहीं किया यद्यपि गत अप्रैल मास के अन्त तक उस प्रतिबन्ध के हटाये जाने की विश्वस्त सूत्रों से प्राप्त सूचनाओं द्वारा सर्वत्र आशा की जा रही थी और सिन्ध सरकार के भू० पू० गृह सचिव मि० गजदर ने लाहौर की प्रेस कान्फ्रेंस में भी उस आशा को उत्तेजित किया था। हमें यह लिखने में सकोच नहीं कि आर्य जनता के धैर्य की सीमा अब समाप्त हो चुकी है। अत्यधिक कठिनता से माननीय श्री घनश्यामसिंह जी तथा उनके सहयोगियों ने आर्यों को इतने समय धैर्य रखने के लिये प्रेरित किया था पर अनन्त वा अपरिमित समय के लिये आर्य जनता से यह आशा करना सर्वथा असम्भव है कि वह अपने प्राणप्रिय धर्मग्रन्थ, अपने दिव्य ज्योति स्तम्भ सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध को चुपचाप सहन कर लेगी आर्य जनता अब विह्वल हो उठी है। उसे नियन्त्रण में रखना नेताओं के लिये दिन प्रति दिन अधिक कठिन होता जा रहा है। हम सिन्ध सरकार से सानुरोध निवेदन करते हैं कि वह इस अत्यन्त अनुचित प्रतिबन्ध को बिना विलम्ब लौटाकर अपनी विश्वासपात्रता और उदारता का परिचय दे अन्यथा आर्य बड़े से बड़े त्याग और बलिदान का आश्रय लेकर भी अपने पवित्र धर्म ग्रन्थ की रक्षा करेंगे और अवश्य करेंगे चाहे उन्हें कितनी भी भयङ्कर आपत्तियों का सामना करना पड़े। इस अनिष्ट परिणाम की सारी उत्तरदायिता सिन्ध सरकार और उसके अनुचित आदेश को रद्द करवाने में असमर्थ भारत-सरकार की होगी। आर्य जनता को प्रतिकूल और उत्तेजक परिस्थिति में भी धैर्य और अनुशासन का परित्याग न करते हुए त्याग तथा बलिदानार्थ उद्यत रहना चाहिये।

गुल्बर्गा में अमानुषिक बर्बरता की पराकाष्ठाः—

हैदराबाद रियासत आर्य्य सम्मेलन बड़ी धूम धाम से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री राजा नारायणलाल जी के सभा पतित्व में २२ से २४ एप्रिल तक गुल्बर्गा में हुआ। उसकी लगभग समाप्ति पर २४ एप्रिल को सायकाल जो दुघटना घटी और जिस प्रकार वहा की पोलीस के ६०, ७० जवानों ने उच्च पुलीस अधिकारियों की उपस्थिति मे हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्व मान्य प्रधान दक्षिण केसरी प० विनायकराव जी विद्यालङ्कार बार-एट्-लॉ उप प्रधान प० गणपति श्री शास्त्री बी० ए० एल् एल् बी और मन्त्री प० नरेन्द्र जी पर निर्दयतापूर्वक लाठियों और बर्छियों से प्रहार किया उसका विश्वस्त सूत्र से प्राप्त वृत्तान्त पाठकों ने अनेक समाचारपत्रों में पढ़ा होगा अतः उसे यहाँ विस्तार से देना अनावश्यक है। इस का प्रारम्भ सम्मेलन के द्वार पर खडे एक पोलीस के जवान को महिलाओं से छेड़ छाड़ करते और सीग्रेट् पीते देखकर आर्य स्वय सेवक के मना करने से हुआ जिसे पोलीस मैन ने गालियां दीं और दो चार तमाचे लगाए। इस पर आर्य स्वय सेवकों और पोलीस के जवानों में

कुछ झड़प हो गई। थोड़ी देर में पोलीस के सब जवान मुसलमान अफसर और दूसरे मुसलमानों के जत्थे भी वहा जमा होने लगे। आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों ने जब पुलिस के अधिकारियों का ध्यान मुसलमानों के समूह को वहाँ से दूर करने की ओर आकर्षित किया ता उन्होंने कहा कि हमारी पोलीस फोर्स इस वक्त बिगड़ी हुई है हम कुछ नहीं कर सकते।" पोलीस के उच्च अधिकारियों के बुलाने प॰ जब श्री प॰ विनायक राव जी, श्री गणपतिजी शास्त्री तथा पं॰ नरेन्द्रजी उस स्वयं सेवक को लेकर जिसके मना करने पर यह मामला शुरू हुआ था पोलीस चौकी पर पहुचे और सारा स्थिति बतलाने लगे तो इन चारों को लगभग ६०, ७० पोलीस जवानों ने चारों तरफ से घेर लिया और अनेक उच्च अधिकारियों की उपस्थिति मे दनादन लाठियों से मारना प्रारम्भ कर दिया। इसको रोकने में उच्च अधिकारी सर्वथा असमर्थ पाये गये। मार खाकर ये चारों महानुभाव जब मूर्छित होकर गिर पडे तो इन्हें मोटर मे डालकर सिविल हस्पताल मे भेज दिया गया। श्री प॰ विनायक राव जी के सिर पर दो और सारे शरीर पर लगभग १०, १२ लाठियों की मार के निशान हैं प॰ गणपति जी शास्त्री के सिर पर एक बड़ा छ॰ इञ्च का जख्म हो गया जिससे बहुत रक्त बहा और उनके सब कपड़े लहू लुहान होगये। उनके शरीर पर लाठियों के १०, ११ निशान है। प॰ नरेन्द्र जी का बाँई टाग पर फ्रेक्चर हो गया और सिर में भी भारी जखम है उनके भी सारे कपडे लोहू लुहान हो गये उनको हस्पताल मे प्रविष्ट कर दिया गया। उनके शरीर पर १५, २० लाठियों की मार के निशान हैं और उनकी अवस्था अत्यन्त चिन्ताजनक है। इस घटना के बाद रात भर गुलबर्गा शहर मे बड़ी गड़बड़ रही और पोलीस के जवान और मुसलमान गुडे रास्ते आते जाते लोगों पर उनको अकेला पाकर हमले करते रहे। दो दिन तक शहर भर में आतङ्क छाया रहा। सैकड़ों लोगों को (जिनमें अनेक देवियां भी सम्मिलित थीं) शहर मे से गुजरना असम्भव प्राय होने के कारण मीलियों मील चलकर गुलबर्गा स्टेशन के समीप वर्ती स्टेशनों से रेल मे सवार होकर अपने स्थानों को जाना पड़ा।"

श्री प॰ विनायक राव जी विद्यालङ्कार, प॰ गणपति जी शास्त्री और प॰ नरेन्द्र जी जैसे प्रतिष्ठित आर्य नेताओं पर पोलीस के जवानों द्वारा उच्च पोलीस अधिकारियों की उपस्थिति में ऐसा अमानुषिक बर्बरतापूर्ण आक्रमण तथा अन्य निरपराध देवियों बालकों, और सज्जनों पर निर्दय प्रहार अत्यधिक निन्दनीय है। हैदराबाद रियासत के प्रधान मन्त्री महोदय के नाम सार्वदेशिक सभा की ओर इस मामले की निष्पक्ष जाच करा कर दोषियों को कठोर दण्ड दिलाने विषयक तार दिया जा चुका है। सब आर्य समाजों को भी अपने २ नगरों में सार्वजनिक सभाए करा के निम्न आशय का प्रस्ताव पास करके प्राइम मिनिस्टर हैदराबाद स्टेट् तथा उसकी प्रतिया वायसराय, सार्वदेशिक सभा देहली और आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद दक्षिण को शीघ्रातिशीघ्र भेजनी चाहिये।

'यह सभा आर्य सम्मेलन हैदराबाद के चतुर्थ अधिवेशन (गुलबर्गा) के समय आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम स्टेट् के मान्य अधिकारियों को पोलीस

चौकी पर बुलवा कर जो पिटवाया गया उसके प्रति अत्यन्त रोष प्रकट करती है और उन सज्जनों के प्रति जिन्हें चोट आई है अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है साथ ही यह सभा हैदराबाद सरकार से प्रार्थना करती है कि वह इस घटना की पूरी जाच (तहकीकात) कर के दोषियों को कड़ी सजा दिलवा कर इसका इन्तजाम करे कि भविष्य में इस प्रकार की कोई कार्रवाई ही न हो।

यह सभा वायसराय महोदय का ध्यान भी इस बात की ओर आकर्षित करती है कि ऐसी घटनाओं को देख कर जो गुलबर्गा सम्मेलन के अवसर पर अमल में आई यह कदापि नहीं कहा जा सकता कि हैदराबाद रियासत में हिन्दुओं की जान वा माल सर्वथा सुरक्षित हैं और उनसे प्रार्थना करती है कि भारत सरकार की सर्वोपरि शक्ति (Paramount Power) के नाते वे हैदराबाद स्टेट् की सरकार को हिदायत करें कि भविष्य में स्टेट् में ऐसी घटनाए न होने पाए और इस घटना की पूर्ण जाच कराई जाकर दोषियों को सजा दिलाई जाए।

एक दृढ संकल्प आर्य का अनुकरणीय कार्य—

अब से लगभग ४२ वर्ष पूर्व लुधियाना के अत्यन्त उत्साही आर्य श्री लब्भूराम जी ने पवित्र सकल्प किया था कि वे गुरुकुल कांगड़ी के लिये २ लाख रु० एकत्र कर देंगे। उनके अदम्य उत्साह तथा लगन के परिणाम स्वरूप उनकी प्रतिज्ञा इस वर्ष पूरी हो गई है यह जान कर हमें अत्यधिक प्रसन्नता हुई है। हम इस शुभ सकल्प की पूर्ति पर ला० लब्भूराम जी का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं और आशा करते हैं कि अन्य आर्य भी उनका अनुसरण करके वैसा ही अदम्य उत्साह अपने अन्दर धारण करेंगे।

आवश्यकता

सार्वदेशिक सभा पुस्तकालयार्थ निम्न पुस्तकों की विशेष आवश्यकता है जो सज्जन या समाज उपहार स्वरूप वा उचित मूल्य पर भेज सकें शीघ्र भेजने का कष्ट करें अथवा सूचित कर दें।

(१) सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम (सन् १८७५)से १० म सस्करण तक

(२) वैदिक इतिहासार्थ निर्णय—श्री प० शिवशङ्कर जी का व्यतीर्थ कृत

(३) Encyclopedia of Islam 10 Volumes

(४) गीता प्रदीपाय भाष्य—प० आर्य मुनि जी कृत

(५) मीमासार्य भाष्य—प० आर्य मुनि जी कृत

(६) Eneyclopedia of Religion and Ethics 12 Volumes

(७) An Intelligent woman's guide to Capitalism, Socialism and Sovietism by Bernard Shaw

पुस्तकालयाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा
बलिदान भवन देहली।

नारायण अभिनन्दन ग्रन्थ

सार्वदेशिक सभा की ओर से जून के प्रथम सप्ताह मे श्री नारायण आश्रम रामगढ़ की रजत जयन्ती महोत्सव पर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध सन्यासी श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज की सेवा में नारायण अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जायगा। ग्रन्थ के लिये भारत के अनेकों विद्वानों के विभिन्न विषयों पर लेख आ चुके है। आर्य समाज से प्रेम व महानुभूति रखने वाले अनेकों अन्य विद्वानों ने भी इस कार्य मे सहायता प्रदान की है। सम्पादन कार्य बड़ी तीव्र गति से चल रहा है। इस बारे में सब से अधिक कठिनाई प्रकाशन की अनुभव की जा रही थी वह भी दूर हो गई है। पेपर कन्ट्रोलर गवनमेण्ट आफ इण्डिया ने मुद्रण व प्रकाशन की आज्ञा प्रदान कर दी है।

इस बात का पूर्ण रूपेण यत्न किया जा रहा है कि ग्रन्थ मे ऐसी सामग्री रहे जो एक प्रकार से आर्य समाज का स्थायी साहित्य हो। इसकी पूर्ति के लिये सैद्धान्तिक विषयों पर लेख लिखाने का पूरा यत्न किया गया है।

पूज्यपाद श्री म० नारायण स्वामीजी महाराज की सेवा मे भेंट किये जाने वाले ग्रन्थ में केवल उन्हीं के प्रति उद्गार व सदेश न होंगे किन्तु आर्य समाज के सिद्धान्त, आर्य समाज की गति विधि, आर्य समाज का भावी कार्यक्रम, आर्य समाज की संस्थाओं का महत्वपूर्ण कार्य आदि विषयों पर भी विशेष रूप से लेख होंगे।

प्रत्येक आर्य समाज में ग्रन्थ की एक प्रति पहुँचनी चाहिए। ऐसे अमूल्य ग्रन्थ के लिये प्रत्येक को अपनी प्रति सुरक्षित कर लेनी चाहिये।

अनेकों चित्रों से विभूषित इस ग्रन्थ के साधारण संस्करण का मूल्य ५) रु० रक्खा गया है। सहायकों से पच्चीस रुपये तथा विशेष संरक्षकों से सौ रुपये या अधिक लिये जावेंगे।

इस रजत जयन्ती महोत्सव को सफल बनाने और इसमे अधिक से अधिक संख्या मे सम्मिलित होने के लिए आर्य्य नर नारियों को अभी से तय्यारी करनी चाहिए। उत्सव ३ से १० जून ४५ तक होगा।

नारायणाश्रम रामगढ़ में ग्रन्थ के सम्बन्ध मे निम्न पते पर पत्र व्यवहार करना चाहिये।

पत्र व्यवहार का पता —
विश्वम्भर सहाय प्रेमी स० सम्पादक
खिपट बाजार, शहर मेरठ।

श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा।

"चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।

आनन्द आर्य सभा पुस्तक भण्डार की उत्तमोत्तम पुस्तकें

नाम पुस्तक	लेखक व प्रकाशक	मूल्य
(१) वैदिक सिद्धान्त स०	(सार्व० सभा)	१)
( ) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका बड़ा साइज	,	१।)
(३ विदेशों में आर्य समाज	,	॥)
(४) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर	,,	१।)
(५) आर्य सिद्धान्त विमर्श		१॥)
(६) समस्त समाजों की सूची		
(७) सार्वदेशिक सभा का इतिहास		
८ बलिदान		
(९) आर्य डायरेक्टरी	,,	
(१० आर्य वीर दल शिक्षण शिविर		)
(११ आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण	पं० इन्द्रजी	।=)
(१२ आर्य वीर दल लेखमाला	श्री ओमप्रकाश जी	१)
(१३) यम पितृ परिचय	पं० प्रियरत्न जी आर्ष	२)
(१४) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र	,,	२)
(१५) वैदिक सूर्य विज्ञान		=)
(१६) वेद में असित् शब्द	,	-)
(१७) ऋग्वेद में देवृकामा		-)
(१८ वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां		१)
(१९) विमान शास्त्र	,,	।=)॥
(२०) मातृत्व की ओर	श्री प० रघुनाथप्रसाद जी पाठक अ० १।), स० १॥)	
(२१) आर्य जीवन गृहस्थ धर्म	,	-)
(२२ आत्म कथा	श्री नारायण स्वामी जी	।)
(२३) उपनिषद	ईश ≡) प्रश्न ।-) मुण्डक =॥ माण्डूक्य -)॥ ऐतरेय) बृहदारण्यक	)
(२४) वैदिक सन्ध्या रहस्य	,	=)॥
(२५) शहीदी पत्रिका		।-)
(२६) आर्य समाज मन्दिर चित्र		।)
(२७) इजहारे हकीकत	श्री ला० ज्ञानचन्द्रजी आर्य	॥=)
(२८) भक्ति कुसुमाञ्जलि	श्री प० धर्मदेव जी विद्या०	।॥)
(२९) त्रिदेव निर्णय	श्री प० शिवशङ्कर जी	१)
(३०) भूमिका प्रकाश	श्री द्विजेन्द्रनाथ जी	१॥)
(३१) कुमारसम्भव चन्द्र अनु०	श्री प० मेधाव्रतजी	२)
(३२) वेद और गोमेध	श्री बा० श्यामसुन्दरलाल जी	≡)
(३३) बहिनों की बातें	श्री ठा० सिद्धगोपालजी कविरत्न	१)
(३४) ध्यान योग प्रकाश	स्वामी लक्ष्मणानन्द जी	१।-)
(३५) In defence of Satyarth Prakash		=)
(३६) Rishi Dayanand and Satyarth Prakash		।=)
(३७) We and our critics—		-)
Punishment Prescribed for the u eli vers in the fuese		
(३८) सत्यार्थ प्रकाश की सार्वभौमता		-)
(३९) हम और हमारे समालोचक		-)
(४०) हमारे घर	श्री निरञ्जनलाल जी गौतम	।।=)
(४१) भारतवर्ष में जाति भेद	,	।)
(४२) Voice of Arya Varta (T L Vaswani)		=)
(४३) Crucifixion by an eye witness	(S Sabha)	।-)
(४४) Truth an ... Late Rai ... Dhavan		।=)
(४५) Truth ... Aryan C...		॥)
(४६) Vedic ...		।)
(४७) Dail ... Arya (Shri ...)		॥)
(४८) Cor ... Ishop		)
(४९) K ... glish) by ... dji M A		
(५०) A ... ya Prakash		२॥)
(५१) ... ion of A ... (Pt ... dji Upadhyaya)		१)
(५२) Christianity in India		॥)
(५३) Ecclesia Divina (Swami Bhumanand Saraswati)		५)
(५४) Aryasmaj and Theosophical Society (Shri Shyam Sunderlal Vakil)		≡)



१९४५ ई०
२००२ सं०

वार्षिक मू
विदेश ७शि

विषय सूची

—

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष २१ } जून १९४५ ई०] ज्येष्ठ २००२ दयानन्दाब्द १२२ { अङ्क ४

* वैदिक प्रार्थना

ओं दृते दृँ ह्मा ज्योक् ते सन्दृशि जीव्यासम्। ज्योक् ते सन्दृशिजीव्यासम् ॥ यजु० ३६।१९

अर्थः—(दृते) हे अविद्यान्धकार नाशक परमेश्वर। (मा दृंह) मुझे दृढ बना और सब तरह से उन्नत कर मैं (ते सदृशि) तेरे सम्यक दर्शन में (ज्योक्) देर तक—दीर्घायु पर्यन्त (जीव्यासम्) जीता रहूं (ते सन्दृशि) तेरे उत्तम दर्शन वा निरीक्षण में (ज्योक् जीव्यासम) चिर काल तक जीता रहूं।

विनय:—हे परमात्मन्। आप अज्ञान रूप अन्धकार और सब बुराइयों के दूर करने वाले हैं। आपसे हम सब यह प्रार्थना करते हैं कि आप हमें दृढ बनाए। हमारे अन्दर आप दृढ़ता को धारण कराए तथा शारीरिक, मानसिक, आत्मिक सब दृष्टियों से हमें उन्नत करें। यह तभी सम्भव है जबकि हम तुम्हें सर्वत्र देखें—सर्वत्र तुम्हारी सत्ता का अनुभव करें अपने अन्दर, बाहर सब जगह तुम्हे व्यापक जानें तथा इस प्रकार तुम्हारा साक्षात्कार करते हुए अपने जीवन को पवित्र बनाए। तुम्हें सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी रूप से देखने पर हम कभी पाप में प्रवृत्त हो ही नहीं सकते। पाप की भावना तब तक हमारे अन्दर रह नहीं सकती। आवश्यकता इस बात की है कि हम इस प्रकार का सच्चा शान्तिदायक अनुभव प्राप्त करें। तुम्हें अङ्ग सङ्ग जानते हुए सदा पवित्र और निर्भय बने रहें। तुम ऐसी शक्ति हमें प्रदान करो यही हमारी प्रार्थना है ॥

वेदामृत

विजय का मूलमन्त्र

(१) ओ३म् अप्रतीतो जयति सधनानि प्रति-
जन्यान्युत या सजन्या। अवस्यवे योवरिव
कृणोति ब्रह्मण राजा तमवन्ति देवा ॥
ऋ० ४।५०।७

(२) ओ३म् अजैष्माद्यासना माद्या भूमानागसो वयम् ॥ शब्दार्थ — अथर्व वेद १६।१।७

(१) (अप्रतीत) पीछे पैर न हटाने वाला दृढ़ निश्चयी पुरुष ही (प्रति जन्यानि) एक व्यक्ति के साथ सम्बन्ध रखने वाले सुख आनन्द, ज्ञानादि धनों (उत या सजन्या) और जो सामूहिक ऐश्वर्य—राष्ट्रीय उन्नति आदि हैं उन्हें (सजयति) अच्छी प्रकार से जीतता है। (य राजा) जो राजा आवर उत्तम गुणों से प्रकाशमान अन्य मनुष्य (अवस्यवाब्रह्मणे) सब की रक्षा चाहने वाले ब्रह्मज्ञानी पुरुष का (वरिव कृणोति) सत्कार वा सेवा करता है (देवा) सत्यनिष्ठ विद्वान् (तद अवन्ति) उसकी रक्षा करते हैं।

(२) (अद्य अजैष्म) आज हमने विजय प्राप्त कर लिया है (अर्थ असनाम) आज यथार्थ सुख शान्ति और आनन्द का हमने अनुभव प्राप्त कर लिया है क्योंकि (वयम्) हम अब (अनागस. अभूम) पाप रहित हो गये हैं।

व्याख्या —वेदों के इन तथा अ य अनेक मन्त्रों में सच्चे विजय के साधनों और उसके लिये आवश्यक भावना का उपदेश दिया गया है। विजय या सफलता भी उसी को प्राप्त होती है जो दृढ निश्चयी पुरुष डटा रहता है आपत्तियों के अथवा विघ्न बाधाओं के आने पर जो भयभीत नहीं होता अपने कदम पीछे नहीं हटाता ऐसे अध्यवसायी पुरुष ही अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सफल होते हैं और इस प्रकार के अध्यवसायी-दृढ निश्चयी वीर नर नारियों से युक्त समाज व राष्ट्र सदा उन्नत और विजयशील होता है। समस्त महापुरुषों के जीवन चाहें उन्होंने धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक अथवा शिक्षा विषयक किसी भी क्षेत्र में काय क्यों न किया हो इस वैदिक सत्य की साक्षी देते हैं। नीति शास्त्रकारों ने ठीक ही कहा है कि —

'प्रारभ्यते न खलु विघ्न भयेन नीचै प्रारभ्य विघ्न विहता विरमन्ति मध्या विघ्नै पुन पुनरपि प्रति हन्यमाना प्रारभ्यमुत्तमजना न परित्यजन्ति ॥' पञ्चतन्त्र

अर्थात् नीच पुरुष विघ्नों के भय से काय को प्रारम्भ ही नहीं करते। मध्यम पुरुष विघ्न बाधाओं के आने पर कार्य को बीच में ही छोड़ देते हैं किन्तु उत्तम पुरुष विघ्न बाधाओं द्वारा बार बार सताये जाने पर भी प्रारम्भ किये हुए श्रेष्ठ कार्य का कभी परित्याग नहीं करते।

ऐसे दृढ निश्चयी धीर श्रेष्ठ पुरुष ही सच्चा विजय प्राप्त करते हैं। वे काम क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य रूप आन्तरिक शत्रुओं पर विजयी होते हैं और धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में सुधार का लक्ष्य सन्मुख रख कर वे निरन्तर प्रयत्न करते हुए सफलता लाभ करते हैं।

वही समाज और राष्ट्र विजयी होता है जिसमें ऐसे दृढ़ निश्चयी, साहसी धीर वीरों की संख्या अधिक होती है पर साथ ही जो सब का हित चाहने वाले ब्रह्म ज्ञानियों का सत्कार करता है, उनके उत्तम उपदेशों का अनुसरण करता है, उन्हें क्रियात्मक रूप देता है।

यह भी आवश्यक है कि यह विजय की भावना वीर पुरुषों मे सदा बनी रहे। जो अपने को दीन हीन दुर्बल समझते हैं, जो निरुत्साह और निराश रहते हैं वे कभी किसी कार्य मे सफलता नहीं प्राप्त कर सकते। वे सच्चे सुख, शान्ति और आनन्द का भी कभी अनुभव नहीं ले सकते। ऐसे विजयैश्वर्य की प्राप्ति के लिये इस बात की भी आवश्यकता वेद के इन मन्त्रों मे बताई गई है कि हम सब निष्पाप बनें। पाप वासना मनुष्य को निर्बल और निरुत्साह बना देती है, वह मनुष्य की शक्ति को क्षीण कर देती है। मनुष्य जितना अधिक निष्पाप और पवित्र बनने का प्रयत्न करता है उतना ही अधिक वह शान्ति और शक्ति का अपने अन्दर अनुभव करता है और अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का विकास करते हुए वह अवश्य विजयी होता है। समस्त आर्य वीरों को इन मन्त्रों में कहे हुए उच्च भावों को विशेष रूप से अपने हृदय में अङ्कित कर लेना चाहिये, उनके अनुसार आचरण बनाना चाहिये तब विजय श्री उनके चरणों का चुम्बन करेगी इसमें सन्देह नहीं॥

सत्यार्थ प्रकाश गायन

(लेखक—श्री सत्यनारायण जी आर्य M A B T प्रधान आर्यसमाज केसठ जिला शाहाबाद)

उठ कर एक स्वर में बोल पड़ो,
कह दो दुनिया वालो सुन लो।
प्राणों से भी बढ़ कर प्यारा, सत्यार्थ प्रकाश हमारा है ॥
था क्रान्ति पुजारी विश्व वन्द्य, मानव जाति का दयानन्द।
उस ज्ञान स्रोत से स्रवित हुआ सत्यार्थ प्रकाश हमारा है ॥
पावन यह, परम पुनीत प्रेम का, पथ दर्शाता कर प्रकाश।
करता विनाश अज्ञान तिमिर, सत्यार्थ प्रकाश हमारा है ॥
इसके अन्दर है आर्य जाति की, आन शान, अरमान भरा।
करता प्रदान नित नव जीवन, सत्यार्थ प्रकाश हमारा है ॥
हिन्दू मुस्लिम ईसाई क्या, जितने मजहब हैं दुनिया के।
बतलाता उन सबको सत पथ, सत्यार्थ प्रकाश हमारा है ॥
उन सब को तुम ललकार कहो, हे आर्य जाति के युवक वन्द।
हम दयानन्द के सैनिक हैं, सत्यार्थ प्रकाश हमारा है ॥
हम से लड़ना आसान नहीं, हम खेल के हैं सामान नहीं।
हम सब की आज धमनियों में, राणा के रक्त की धारा है ॥
सरकार सिन्ध सुन लो दृढ़ प्रत, हम आर्य वीर सरदारों का।
इस धर्म ग्रन्थ की वेदी पर, सब कुछ बलिदान हमारा है ॥
हे आर्य जाति के नर नारी, करलो अपनी सब तैयारी।
चल पड़ो आज रण आङ्गण में, बजता रण शङ्ख हमारा है ॥
जै जगत पिता जगदीश कहो, फिर आर्य जाति की जै बोलो।
है अमिट अमर रहने वाला, सत्यार्थ प्रकाश हमारा है ॥

अध्यात्म सुधा

भक्त की अभिलाषा

१ मैं बन जाऊं गुण का सागर
ऐसी करुणा कर करुणाकर ॥
तेरा ध्यान निरन्तर धर कर
मैं जाऊं भवसागर को तर ॥

२ विद्या विनय बसें मम अन्दर
आप्लावित इन से मन मन्दिर।
मेरे सब दुर्गुण गण को हर
मुझ मे अनुपम शम दम को भर ॥

३ मै हूँ तेरा पुत्र परात्पर
सर्व शक्ति मय तू विश्वम्भर।
अपना मङ्गल कर सर पर धर
मुझको नाथ बना निज अनुचर ॥

४ तव अनुकम्पा से बल पाकर
पाप ताप जनता का हर कर।
बन जाऊं प्रमुदित नित शङ्कर
तव पावन चरणों में सर धर ॥

'ध्रुव'

आर्य समाज के सच्चे सेवक—स्वर्गीय हरगोविन्दजी गुप्त

[लेखक—श्री अवधविहारीलालजी एम० ए० बी० एल०]

अर्जुन जैसी हरगोविन्दजी गुप्त की भी दो प्रतिज्ञायें थीं। न दैन्य न पलायनम्। इन प्रतिज्ञाओं पर आप बिल्कुल अटल, अडिग रहे। गुप्त जी (या गुप्ताजी जैसा लोग आपको कहा करते थे) सारी उम्र न तो दीन वचन बोले और न दीनता को प्रश्रय दिया। आपका सारा जीवन जीवन का प्रत्येक पहलू संघर्ष मय रहा। फिर भी वीर आत्मा ने अपने दुःख किसी से नहीं कहे। दूसरा कोई भी यदि आपकी दुर्बलता की धारणा बनाता था तो आप तत्काल उसका प्रबल प्रतिवाद करते थे। आपको कोई दुर्बल या बूढ़ा कहने की हिम्मत करे तो उसकी शामत आजाती थी। आप बराबर हिसाब लगाया करते थे और सौ वर्ष में बीती उम्र के वर्षों का घटा कर शेष वर्ष आपके जीवन के शेष हैं ऐसा लोगों को बतलाया करते थे। आप सामने आये कठिन से कठिन कार्य को भी कठिन या दुष्कर नहीं कहते थे। तुरत उसके करने मे लग जाते थे। आप 'कठिन' 'दुष्कर' 'आफत' 'विपद्' आदि शब्द बोलना तो क्या सुनना भी पसन्द नहीं करते थे। आप ने घर वालों तक से कभी नहीं कहा कि "मै कमजोर हूँ' 'कष्ट मे हूँ' 'मेरी सहायता करो' इत्यादि। आप लक्ष्मी के लाडले नहीं रहे, सारा जीवन विपत्तियों और आर्थिक कठिनाइयों से युद्ध करते बीता। बडे बडे धनपतियों ने लाख लाख रुपयों तक से आपकी आर्थिक सहायता करने का विचार व्यक्त किया। आप सदा ऐसे आह्वानों को ठुकराते रहे। आप कहा करते थे कि 'धनिकों मे दानशीलता है तो समाज को दान दे दें। मैं तो प्रभु से मांगता हूँ। मनुष्य मुझे क्या देगा ?"

विपत्तियों मे भी आपकी ऐसी अकड़ से लोगों को विश्वास नहीं होता था कि आप इतना शीघ्र महाप्रस्थान कर देंगे। आजकल यद्यपि ६९ वर्ष की आयु में हुई मृत्यु अकाल मृत्यु नहीं कहला सकती फिर भी आपकी मृत्यु के समाचार सुनने को कान तैयार नहीं थे। गत २७ जनवरी को आप समाधिनगर (फरीदपुर) के आर्य संघ के उत्सव मे सम्मिलित होने गये थे। वहा तीन दिन मै आपके साथ रहा। देखा रात मे आपको नींद नहीं आती थी, दम फूलता था। पूछने पर आप उसे साधारण बात कह कर टाल देते थे। दिन-भर आप सभा सचालन, व्याख्यानादि शान से करते रहते थे। आप समाधिनगर न जाते तो अपने रोजगार में उस दिन आप को ५००) रु० लाभ होता। आप जानबूझ कर समाधिनगर गये। मेरे कहने पर कि आपको आर्थिक हानि उठाकर यहा नहीं आना चाहिये था आपने कहा 'देखिये पद लेने से कुछ नहीं होता। बिना त्याग के समाज का काम होने का नहीं। इसके बक्त करू कि मैं यादे खुदा करू। दोनों नहीं होंगे। एक को छोड़ना ही होगा।'

समाधिनगर से लौट कर शीघ्र ही आप बनारस के लिये रवाना हुए। कुटुम्ब में कहीं विवाह था। १५ फरवरी को आप कलकत्ता लौटे पॉवों में सख्त चोट के साथ। ग्राम में बैलगाड़ी पर जा रहे थे। गाड़ी उलट गई। आपको बड़ी

चोट आई घर पर देखने गया। पूछा 'सख्त चोट लगी है?' बोले 'नहीं हलकी।' उठ बैठ नहीं सकते थे। १७ तारीख को बेलिया हटा के समाजोत्सव में पहुच गये, पावमे पट्टी बाधे मै सभापति था। 'पूछा कुछ उपदेश कीजियेग ?" बोले— 'कहियेगा तो कुछ बाल देंगे।" बोलने को खडे हुए पक्का सवा घण्टे बाले। फिर १८ फरवरा को भी बेलिया हाटा पहुँचे। १९ फरवरी का माननीय श्री घनश्यामसिंह गुप्त क स्वागतार्थ हवडा स्टेशन गये। लौटकर आर्य विद्यालय मे आर्य विद्यालय के छात्रों की एक सभा २२ फरवरी को आयोजित करने का विचार विमर्श किया।

२३ ता० को प्रातःकाल एक आर्यबन्धु के व्यक्तिगत कार्य से आप अलीपुर गये। जहा जाना था वहा से मेरा काफी परिचय है। आप के पाव में पट्टी बधी ही थी। मैने कहा—'मुझसे ही काय हो जायगा आप मत जाइये।' आप कब मानने वाले थे? आपने कहा मेरे न जाने से कार्य न होगा। आप भी चलिये मै भी चलूगा। १२॥ बजे तक वहीं रहना पडा। लोहा व्यवसायियों के कार्य से ३ बजे की गाड़ी स धनबाद जाना था, न जा सके।

रात्रि की गाडी से रवाना होने के विचार से बस पर चढ़ने गये। रोग का प्रबल आक्रमण हुआ। घर लौट आये, भयङ्कर ज्वर हुआ, न्यूमोनिया भी हो गया। १३ वें दिन ७ मार्च बुधवारको नश्वर शरीर से नाता छूट गया। बीमारी मे भी आप बीमारी की चर्चा न कर समाज की ही चर्चा करते रहे।

गत ३८ वर्षों से आप बगाल के आर्यसामाजिक प्रगतियों के कर्णधार रहे। आपसे पृथक् आर्यसमाज की कल्पना नहीं की जा सकती थी। आर्यसमाज, आर्य प्रतिनिधि सभा, कन्या-महाविद्यालय, आर्य विद्यालय किसी भी आर्य-सामाजिक संस्थाके आप प्रधान हों या मन्त्री हों, या ट्रस्टी या सदस्य या कुछ भी नहीं, आप इन सभी संस्थाओं के सब कुछ थे। मन्त्री आये गये। प्रधान आये, अवधिकी समाप्ति पर चले गये। मन्त्री कौन और प्रधान कौन संस्था के लोग भले ही जानते हों। साधारण जनता जानती थी हरगोविन्द जी गुप्त सर्वेसर्वा हैं। आपके विरोधी आपकी इस लोकप्रियता से चिढ़कर आपको डिक्टेटर, तानाशाह आदि कहा करते थे यत्न करते थे। कि आपकी डिक्टेटरी न चलने दी जावे। आप पदग्रहण से पृथक् हो भी जाते थे परन्तु पदाधिकारी आपके बिना एक पग भी नहीं उठा सकते थे। आपकी अनिवार्य आवश्यकता अनुभव करने लगते थे। पद पर हो या नहीं आर्यसमाज की सेवा से विरत रहना आपके लिये असह्य था, असम्भव था।

आप बडे स्पष्टवादी थे। स्पष्टवादिता आप मे इस हद तक पहुच गई थी कि दोष के रूप मे परिगणित होती और कटुवादिता समझी जाती थी। इनकी लपेट मे सभी आये जिनको उनकी सत्सङ्गति का अवसर आया। इससे न धनी बचे न सेठ, न मन्त्री बचे न प्रधान, न पंडित बचे न सन्यासी। परन्तु आप किसी को भी अपना स्थायी शत्रु नहीं बनने देते थे। आप आवेश में कुछ बोल बैठते तो तुरन्त पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त करके क्षमा याचना करने लगते थे। शक्ति रखते हुए भी आप अपने प्रति अशिष्ट व्यवहार करनेवालों को क्षमा कर देते थे। भीषण अपमान सहकर

भी आपने सामाजिक परहितकारी कार्यों से मुख नहीं मोड़ा। वाक्‌पटुता होते हुए भी आप सदाचारी और नैष्ठिक कर्म्मक एडी थे। कोरी जबानदारी आपको पसन्द नहीं थी। उच्चकोटि के स्वाभिमानी होते हुए भी संस्था को आपकी अकड़ से क्षति न हो इस विचार से ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होते ही आप अपनी अकड़ अथवा स्वाभिमान छोड़ देते थे। आपने अपने क्रोध अथवा अपने स्वार्थ से किसी को भी नुकसान नहीं पहुंचाया। गरीब स गरीब और अमीर तक सैकड़ों व्यक्ति प्रतिदिन किसी न किसी काम से आपसे मिलने आते ही रहते थे। प्रातःकाल ५ बजे स रात क ११ बजे तक लोग बे रोकटोक आपके सोने के कमरे तक पहुँच सकते थे। आप इतने मिलनसार थे कि प्रत्येक को ऐसा अनुभव होता था कि वह ही आपका परम मित्र और विश्वासपात्र है।

विधाता ने बड़े सङ्कट के समय आर्य समाज के इस कमठ और अनुभवी नेता को उठा लिया सत्यार्थ प्रकाश को लेकर सत्याग्रह छिड़ने की अवस्था में बंगाल से आप सर्वप्रथम ही सत्याग्रहियों के दलपति के रूप में सिन्ध के लिये प्रस्थान करने की घोषणा कर चुके थे। आर्य प्रतिनिधि सभा के लिये एक विशाल भवन बनाने की आप की उत्कट इच्छा थी। आर्य विद्यालय की व्यवस्था भी दृढ़ करने में आप यत्नवान्‌ हो रहे थे। आप को खोकर बंगाल का आर्यसमाज कंगाल हो गया है कहा नहीं जा सकता आर्य समाज की इस क्षति की पूर्ति किस प्रकार होगी।

मांस-भक्षण और ऋषि दयानन्द

(लेखक—श्री प०गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज न केवल स्वयं ही मांस भक्षण नहीं करते थे, अपितु मांस भक्षण को वेद विरुद्ध, अनाचार तथा पाप समझते थे। यह बात उनके ग्रन्थों से इतनी स्पष्ट है कि सन्देह अथवा विवाद के लिए कोई स्थान ही नहीं है, सत्यार्थ प्रकाश में हमें ३२ ऐसे स्थान मिले हैं जहां मांस-भक्षण निषेध का थोड़ा बहुत संकेत है। इनको हम कई कोटियों में बांट सकते हैं—

(१) मांस-भक्षण पाप है। (देखो सं० २, ६, ८, १३, १९)

(२) मांस-भक्षण वेद विरुद्ध है। (सं० ३, १५, १७ २७)

(३) मांस-भक्षण का दोष वेदों के सिर उन लोगों ने मढ़ा है जो वाम मार्गी थे। (१४, १५, १६, १७, २०, २१, २२,)

(४) मांस-भक्षण मनुष्य जाति के लिये अहित कर है। (देखो सं० ९, १०,)

(५) मांस-भक्षण से अन्य गुण भी नष्ट हो जाते हैं। (सं० १०, २४, २५, २६)

(६) मांस-भक्षण की प्रथा विधर्मियों ने फैलाई है। (सं० १०, १२, २४, २९)

(७) यज्ञों में पशु-हिंसा विहित नहीं है। (सं० १८)

(८) मांस-भक्षण घृणित कर्म है। (सं० २८, ३०, ३१, ३२)

(१)

माता, पिता, आचार्य अपने सन्तान और शिष्यों को सदा सत्य उपदेश करें और यह भी कहें कि .... मद्य मांसादि के सेवन से अलग रहें। (समुल्लास २,)

(२)

ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी मद्य मांस...आदि कुकर्मों को सदा छोड़ देवें। (समु० ३)

(३)

जब मांस का निषेध है तो सर्वदा ही निषेध है

(समु० ४,)

(४)

मद्य मांसादि वर्जित हो कर सदा विचरता रहे।

(समु० ५, सन्यास प्रकरण)

(५)

जैसे सिंह वा मांसाहारी—हृष्ट पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं वैसे (राष्ट्रीय विशमत्ति स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है। (सं० ६,)

(६)

जो लोग मांस-भक्षण और मद्य-पान करते हैं उनके शरीर और वीर्यादि धातु भी दुर्गन्धादि से दूषित होते हैं इस लिये उन के सङ्ग करने से आर्य्यों को भी यह कुलक्षण न लग जॉय यह तो ठीक है। परन्तु जब इनसे व्यवहार और गुण ग्रहण करने में कोई भी दोष वा पाप नहीं

है कि तु इनके मद्यपानादि दोषों को छोड़ गुणों को ग्रहण करें।

(समु० १०,)

(७)

हा इतना अवश्य चाहिए कि मद्य मास का ग्रहण कदापि भूलकर भी न करें।

(समु० १०,)

(८)

हाँ, मुसल्मान, ईसाई आदि मद्य माँसा हारियों के हाथ के खाने में आर्यों को भी मद्य-माँसादि खाना पीना अपराध पीछे लग पड़ता है।

(समु० १०,)

(९)

मद्य माँसाहारी म्लेच्छ कि जिनका शरीर मद्य माँस के परमाणुओं ही से पूरित है उनके हाथ का न खावें। जिस से उपकारी प्राणियों की हिंसा अर्थात् जैसे एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल गाय उत्पन्न होने से एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर सहस्र छ सौ मनुष्यों को सुख पहुँचता है वैसे पशुओं को न मारें न मरने दें

बकरी के दूध से २५९२० (पचीस सहस्र नौ सौ बीस) आदमियों का पालन होता है। वैसे हाथी, घोड़े, ऊँट, भेड़ गदहे, आदि से भी बड़े उपकार होते हैं। इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा।

(समु० १०,)

(१०)

जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमश आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है।

(समु० १०)

(११)

(प्रश्न) जो सभी अहिंसक हो जायें तो व्याघ्रादि पशु इतने बढ़ जायें कि सब गाय आदि पशुओं को मार खाँय, तुम्हारा पुरुषार्थ ही व्यर्थ हो जाय।

(उत्तर) यह राज पुरुषों का काम है कि जो हानि कारक पशु वा मनुष्य हों उनको दण्ड देवें, और प्राण से भी वियुक्त करदें।

(प्रश्न) फिर क्या उनका मास फेंक दें ?

(उत्तर) चाहे फेंक दें चाहे कुत्ते आदि मांसाहारियों को खिला देवें वा जला देवें। अथवा कोई मांसाहारी खावे तो भी संसार की कुछ हानि नहीं होती किन्तु उस मनुष्य का स्वभाव माँसाहारी होकर हिंसक हो सकता है। जितना हिंसा और चोरी, विश्वासघात, छल, कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य और अहिंसा धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना भक्ष्य है।

(समु० १०)

(१२)

देखो। महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में भूगोल के राजा, ऋषि महर्षि आये थे। एक ही पाकशाला में भोजन किया करते थे। जब से ईसाई, मुसल्मान आदि मत मतान्तर चले आपस मे वैर विरोध हुआ। उन्हीं ने मद्यपान गोमांसादि का खाना-पीना स्वीकार किया उसी समय से भोजनादि में बखेड़ा हो गया।

(समु० १०)

(१३)

इस से देश में विद्या, सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुणता, और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं, जैसे कि मद्य मांसादि सेवन.................. ...

(समु० ११)

(१४)

पश्चात् जब विषयासक्त हुए तो माँस मद्य का सेवन गुप्त २ करने लगे। पश्चात् उन्हीं में से एक वाम मार्ग खड़ा किया।

(समु० ११,)

(१५)

अर्थात् देखो इन गवर्गण्ड पोपों की लीला कि जो वेद विरुद्ध महा अधर्म के काम हैं उन्हीं को श्रेष्ठ वाम मार्गियों ने माना। मद्य माँस मीन अर्थात मच्छी... ....

(समु० ११)

(१६)

एक पात्र में मद्य भर के मांस और वडे आदि एक स्थाली में धर रखते हैं।

(समु० ११)

(१७)

प्रोक्षित अर्थात् यज्ञ में माँस खाने में दोष नहीं ऐसी पामर पन की बात वाम मार्गियों ने चलाई हैं। उनसे पूछना चाहिये कि जो वैदिकी हिंसा हिंसा न हो तो तुम और तेरे कुटुम्ब को मार के होमकर डालें तो क्या चिन्ता है? मांस भक्षण करने, मद्य पीने, परस्त्री गमन करने आदि में दोष नहीं है यह कहना छोकड़ापन है। क्योंकि बिना प्राणियों के पीड़ा दिए मांस प्राप्त नहीं होता, और बिन अपराध के पीड़ा देना धर्म का काम नहीं। मद्यपान का तो सर्वथा निषेध ही है। क्योंकि अबतक वाममार्गियों के बिना किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा किन्तु सर्वत्र निषेध हैं। और बिना विवाह के मैथुन में भी दोष है, इस को निर्दोष कहने वाला सदोष है। ऐसे २ वचन भी ऋषियों के ग्रन्थ में डाल के कितने ही ऋषि मुनियों के नाम से ग्रन्थ बना कर गोमेध, अश्वमेध नाम के यज्ञ भी कराने लगे थे। अर्थात् इन पशुओं को मारकर होम करने से यजमान और पशु को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। ऐसी प्रसिद्धि का निश्चय तो यह है कि जो ब्राह्मण ग्रन्थों मे अश्वमेध, गोमेध नरमेध आदि शब्द हैं उनका ठीक २ अर्थ नहीं जाना है क्योंकि जो जानते तो ऐसा अनर्थ क्यों करते। (समु० ११ पृ० ३७९)

(१८)

प्रश्न—यज्ञ कर्त्ता कहते हैं कि यज्ञ करने से यजमान और पशु स्वर्गगामी तथा होम करके फिर पशु को जिन्दा करते थे यह बात सच्ची है वा नहीं।

उत्तर—नहीं, जो स्वर्ग को जाते हों तो ऐसी बात कहने वाले को मार के होम कर स्वर्ग में पहुँचना चाहिए। वा उसके प्रिय माता, पिता, स्त्री और पुत्रादि को मार होम कर स्वर्ग में क्यों नहीं पहुँचाते ? वा वेदी मे से पुन क्यों नहीं जिला लेते हैं। ?

(समु० ११ पृ० ३८०)

(१९)

नववां—दुष्ट पुजारियों को धन देते हैं, वे उस धन को वेश्या, परस्त्री गमन, मद्य, मांसाहार लड़ाई-बखेड़ों में व्यय करते हैं जिस से दाता का सुख का मूल नष्ट होकर दुःख होता है।

(समु० ११ पृ० ४२१)

(प्रकरण—मूर्त्ति पूजा के दोष)

(२०)

इत्यादि मन्त्र जपते, मद्य मांसादि यथेष्ट खाते पीते, भृकुटी के बीच में सिन्दूर रेखा देते कभी २ काली आदि के लिए किसी आदमी को पकड़ मार, होमकर कुछ २ उसका मांस खाते भी हैं। जो कोई भैरवी चक्र मे जावे मद्य मॉस न पीवे न खावे तो उसको मार होम कर देते हैं। उनमें से जो अघोरी होता है वह मृत मनुष्य का भी मास खाता है। अजरी बजरी करने वाले विष्ठा मूत्र भी खाते-पीते हैं।

(समु० ११ पृ० ४७२)

(वाम मार्गियों के दोष)

(२१)

और जो मांस खाता है वह भी उन्हीं वाम मार्गी टीकाकारों की लीला है। इसलिए उनको राक्षस कहना उचित है। परन्तु वेदों में कही मास का खाना नहीं लिखा। इसलिए इत्यादि मिथ्या बातों का पाप उन टीकाकारों को और जिन्होंने वेदों के जाने सुने बिना मनमानी निन्दा की है नि सन्देह उनको लगेगा।

(समु० १२ पृ० ५४५)

(२२)

परन्तु बौद्धों में वाममार्गी मद्य मांसाहारी बौद्ध हैं।

(समु० १२ पृ० ५५८)

(२३)

इनका दयाधम कथन मात्र है और जो है सो क्षुद्र जीवों और पशुओं के लिए है जैन—भिन्न मनुष्यों के लिए नहीं।

(समु० १२, पृ० ५८६)

(२४)

क्या एक को प्राण कष्ट देकर दूसरों को आनन्द कराने से दयाहीन ईसाइयों का ईश्वर नहीं है? जो माता-पिता एक लडके को मरवाकर दूसरे को खिलावे तो महा पापी नहीं है? इसी प्रकार यह बात है। क्योंकि ईश्वर के लिए सब प्राणी पुत्रवत् हैं, ऐसा न होने से इनका ईश्वर कसाईवत् काम करता है। और सब मनुष्यों को हिंसक भी इसी ने बनाया है। इस लिए ईसाइयो का ईश्वर निर्दय होने से प पी क्यों नहीं?

(समु० १३, पृ० ६४१)

(२५)

अब देखिए, सज्जन लोगो जिनका ईश्वर बछडे का मास खावे उसके उपासक गाय बछडे आदि पशुओं को क्यों छोड़ें? जिसको कुछ दया नहीं और मास के खाने में आतुर रहे वह बिना हिंसक मनुष्य के ईश्वर कभी हो सकता है?

(समु० १३, पृ० ६४३)

(२६)

मास हारिय कुतो दया।" जब ईसाइयों का ईश्वर मॉसाहारी है तो उसको दया करने से क्या काम है?

(समु० १३, पृ० ६५३)

(२७)

जब ईसाइयों का खुदा भी बैलों का बलिदान लेवे तो उसके भक्त गाय के बलिदान की प्रसादी से पेट क्यों न भरें? और जगत् की हानि क्यों न करें। ऐसी ऐसी बुरी बातें बाइबिल में भरी है

और इसी के कुसंस्कारों से वेदों में भी ऐसा झूठ दोष लगाना चाहते हैं। परन्तु वेदों में ऐसी बातों का नाम भी नहीं।

(समु० १३ पृ० ६५६)

(२८)

तनिक विचारिए कि बैल को परमेश्वर के आगे उसके भक्त मारें और वह मरवावे और लोहू को चारों ओर छिड़कें, अग्नि में होम करें, ईश्वर सुगन्ध लेवे, भला यह कसाई के घर से कुछ कमती लीला है ?

(समु० १३, पृ० ६५८)

(२९)

भला कपोत के बच्चे का गला मरोडने से वह बहुत देर तक तडफता होगा तब भी ईसाइयों को दया नहीं आती। दया क्योंकर आवे इनके ईश्वर का उपदेश ही हिंसा करने का है।

(समु० १३, पृ० ६६०)

(३०)

भला कोई मनुष्य एक लडके को मरवावे और दूसरे लड़के को उसका मांस खिलावे ऐसा कभी हो सकता है ? वैसे ही ईश्वर के सब मनुष्य और पशु पक्षी, आदि सब जीव पुत्रवत् हैं। परमेश्वर ऐसा काम कभी नहीं कर सकता।

(समु० १३ पृ० ६६०)

(३१)

कसाई आदि मुसलमान, गाय आदि के गले काटने में भी "बिस्मिल्लाह" इस वचन को पढ़ते हैं, जो यही इसका पूर्वोक्त अर्थ है तो बुराइयों का आरम्भ भी परमेश्वर के नाम पर मुसल्मान करते हैं।

(समु० १४, पृ० ७०४)

(३२)

जिस वस्तु से अधिक उपकार होवे उन गाय आदि के मारने का निषेध न करना जानो हत्या कराकर खुदा जगत का हानिकारक है। हिंसारूप पाप से कलंकित भी हो जाता है।

(समु० १४ पृ० ७२१)

सत्यार्थप्रकाश के चतुर्दश समुल्लास का तुलनात्मक अनुशीलन

महर्षि दयानन्द और इस्लाम के अन्य समालोचक

(६)

[ले०—प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति सहायक मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली]

इस उद्धरण मे से मुख्य अंश जिसका इस प्रकरण से सम्बन्ध है वह यह है कि कुरान के विषय मे यहा कहा गया है उस (कुरान) का प्रत्येक पृष्ठ गम्भीर तर्क के विरुद्ध मानो विद्रोह करता है।

कुरान मे पुनरुक्त :—

महर्षि दयानन्द ने कुरान के विषय में लिखा है कि 'पुनरुक्त दोष का तो कुरान जानो भंडार ही है। (पृ० ७८६) इसी बात को अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने स्पष्टतया लिखा है। थामस कार्लाइल ने जिसे पाश्चात्यों मे मुहम्मद साहेब का सबसे अधिक प्रशंसक माना जाता है कुरान के विषय में स्पष्ट लिखा है कि —

"We also can read the Koran. One Translation of it by Sale is known to be a very fair one I must say, it is as toilsome reading, as I ever under took A wearisome, confused jumble, crude, incondite, endless iterations, long windedness, entangle ment, most crude, incondite —in suppertable stupidity in short '

'Yet with every allowance, one feels it difficult to see how any mortal ever could consider this Koran as a book written in Heaven, too good for the earth, as well written book or indeed as a book at all, and not as a bewildred *rhapsody*, written, so far as writing goes, as badly as almost any book ever was" (Heroes and Hero—worship by Thomas Carlyle P 70)

अर्थात् हम भी कुरान पढ़ सकते हैं। सेल का अंग्रेजी अनुवाद बहुत अच्छा समझा जाता है। मैं इस बात को अवश्य कहना चाहता हूँ कि इसको पढना सबसे अधिक थकाने वाला कार्य है। यह कुरान बहुत ही थकाने वाला, गड़बड़ वाला असम्बद्ध अनन्त पुनरुक्ति पूर्ण सबसे अधिक असङ्गत और अव्यवस्थित पुस्तक है। सक्षेप में कहना हो तो यह कहा जा सकता है कि यह कुरान ऐसा मूर्खता पूर्ण है जिसका कोई समर्थन ही नहीं कर सकता।

सब प्रकार की रियायत देने पर भी, किसी के लिये भी यह जानना कठिन है कि कोई भी मनुष्य इस कुरान को आकाश मे लिखा हुआ (ईश्वरीय) अथवा भूमिस्थ प्राणियों के लिये अत्युत्तम, एक अच्छी लिखी हुई पुस्तक और वास्तव में एक पुस्तक के रूप में भी कैसे मान सकता है। क्यों न इसे एक असम्बद्ध असङ्गत उद्गारों वाली चीज जो इतने खराब रूप में लिखी हुई पुस्तक है जितनी कोई हो सकती है ऐसा माने बिना कोई कैसे रह सकता है?

कुरान के लिये यह प्रमाण पत्र उस थामस कार्लाइल का दिया हुआ है जिसके एक वीर (Hero) के रूप में मुहम्मद साहेब को दिये

प्रमाण पत्र का हमारे मुसलमान भाई और उनके प० सुन्दरलाल जी जैसे प्रबल समर्थक ढिण्ढोरा सारे संसार में पीटते फिरते हैं और ऐसा करते हुए वे कभी नहीं थकते। महर्षि दयानन्द जी की समालोचना के साथ विचारशील पाठक स्वयम् इसकी तुलना कर के देखें।

इस सम्बन्ध में लेन् (E W Lane) नामक विद्वान् ने Selections from the Koran की भूमिका में इस प्रकार लिखा है —

"There are several translations of the Koran in several languages but there are very few people who have the strength of mind to read any of them through. The chaotic arrangement and frequent repetitions and the *obscurity* of the language are sufficient to deter the most persistent reader, whilst the nature of a part of its contents renders the Koran unfit for a woman's eye"

(Selections from the Koran (T O S) by E W Lane Preface)

अर्थात् कुरान के कई भाषाओं में कई अनुवाद हैं किन्तु बहुत थोडे व्यक्ति हैं जिनके अन्दर उन्हें सम्पूर्णतया पढने की मानसिक शक्ति विद्यमान है। क्रम की गड़बड़, बहुत अधिक पुनरुक्ति तथा भाषा की अपरिचिति अत्यधिक धैर्य शाली पाठक को भी अनुत्साहित करने को पर्याप्त हैं। इनके साथ इसके कई भाग ऐसे हैं जो इसे स्त्रियों के लिये अयोग्य वा अनुचित बनाते हैं।

इत्यादि वाक्यों से महर्षि दयानन्द जी की कुरान विषयक समालोचना का पूर्ण समर्थन होता है। समीक्षा सं० १८० में महर्षि ने यह लिखकर कुरान की कई अश्लील बातों की चर्चा छोड़ दी कि 'दूसरा अन्याय कि वह मर्यम कुमारी के लड़का होना, किसी का संग करना नहीं चाहती थी परन्तु खुदा के हुक्म से फरिश्ते ने उसको गर्भवती किया यह न्याय से विरुद्ध बात है। यहां अन्य भी असभ्यता की बातें बहुत लिखी हैं उन को लिखना उचित नहीं समझा।"

कुरान के अशान्ति वर्धक उपदेश—

इस विषयक अनेक आयतों और कुछ पाश्चात्य विद्वानों की आलोचनाओं को पहले उद्धृत किया जा चुका है। कुछ अन्य अतिस्पष्ट कुरान के वचनों को प्रामाणिक अनुवादों सहित उद्धृत किया जाता है। कुरान सूरा ८ आ० ७ में कहा है "व यक्तव अ० दाबिरल् काफिरीन जिसका अर्थ सत्यार्थ प्रकाश १४ वें समुल्लास में "और काटे जड़ काफिरों की" किया है।

कुरान सू० ८ आ० ६ और १२ का अर्थ यों दिया है।

अवश्य मैं काफिरों के दिल में भय डालूंगा बस मारो ऊपर गर्दनों के मारो उनमें से प्रत्येक पोरी (सन्धि) पर।

इस पर महर्षि दयानन्द जी ने निम्न समीक्षा की है—

वाह जी वाह। कैसा खुदा और कैसे पैगम्बर दया हीन, जो मुसलमानी मत से भिन्न काफिरों की जड़ कटवाने और खुदा आज्ञा देवे उनकी गर्दन मारो और हाथ पग के जोड़ों को काटने का सहाय और सम्मति देवे ऐसा खुदा लङ्केश से क्या कुछ कम है? यह सब प्रपञ्च कुरान के कर्ता का है खुदा का नहीं, यदि खुदा का हो तो ऐसा खुदा हम से दूर रहे और हम उससे दूर

(समीक्षा स० ७७)

अब देखना चाहिये कि इन आयतों का अर्थ अन्य प्रामाणिक टीकाकारों ने क्या किया है ?

शाह रफीउद्दीन कृत अनुवाद—काटे जड़ काफिरों की अलबत्ता डालूंगा मैं बीच दिलों इन लोगों के कि काफ़िर हुए रौब पस मारो ऊपर गरदनों के और मारो इनमें से हर पोरे पर यह इस वास्ते है कि इन्होंने खिलाफ किया अल्लाह का और रसूल उसके का और जो कोई खिलाफ करे अल्लाह का और रसूल उसके का पस तहकीक अल्लाह सख्त अजाब करने वाला है।

(शाह रफीउद्दीन कृत कुरान अनुवाद पृ० २११-२१३)

मौ० नज़ीरअहमद साहेब कृत अनुवाद—

अल्लाह की मर्जी यह थी कि अपने हुक्म से दीन-हक को कायम करे और काफिर की जड़ बुनियाद काट डाले ताकि हक (सत्य) को हक और नाहक को नाहक कर दिखाये गो काफिरों को बुरा ही क्यों न लगे। हम अनकरीब काफ़िरों के दिलों में दहशत (भय) डाल देंगे (अच्छा) तो लगे इन काफिरों की गर्दनों पर और लगे इनकी पोर पोर पर यह इस बात की सजा है कि इन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफत की और जो अल्लाह और उसके रसूल की मुखालफत करेगा तो उसको ऐसी सजा मिलेगी क्योंकि अल्लाह की मार बड़ी सख्त है॥

(नजीरअहमद कृत अनुवाद—हसननिजामी कृत कुरान हिन्दी अनुवाद में उद्धृत २५१-२५२)

ख्वाजाहसन निज़ामी कृत अनुवाद—अल्लाह की मर्जी यह थी कि अपनी आज्ञा से सत्य (धर्म) को गालिब व दृढ़ कर दे और काफिरों की जड़ काट डाले ? ताकि सच को सच और झूठ को झूठ कर दिखावे चाहे काफिरों को कितना ही बुरा लगे। मैं अभी काफिरों के दिलों में भय उत्पन्न किये देता हूँ। तुम निश्चिन्त हो कर इनकी गर्दनों पर वार करो और इनका पोर पोर काट डालो। यह दण्ड उन्हें अल्लाह और अल्लाह के रसूल का विरोध करने के कारण मिला है।'

(हसन निज़ामी कृत कुरान का हिन्दी अनुवाद पृ० २५१)

ताज कम्पनी लाहौर के छपवाये उर्दू अनुवाद में इन आयतों का अर्थ यों दिया है। इरादा करता है अल्लाह यह कि साबित करे हक को साथ बातों के अपनी के और काटे जड़ काफ़िरों की अल्बत्ता डालूंगा मैं बीच उन लोगों के कि काफिर हुए रअब पस मारो ऊपर गर्दनों के और मारो उन में से हर पोरे पर यह इस वास्ते है कि उन्होंने खिलाफ किया अल्लाह का और रसूल उसके का।

(ताज कम्पनी लाहौर का कुरान उर्दू अनुवाद सन् १९५४ पृ० २९२)

(शेष अगले अङ्क में)

श्री नारायणाश्रम रामगढ़ का रजत जयन्ती उत्सव समारोह

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध नेता श्री महात्मा नारायणस्वामी जी प्रधान सार्वदेशिक सभा द्वारा स्थापित श्री नारायणाश्रम रामगढ जिला नैनीताल का रजत जयन्ती उत्सव ३ से १० जून तक बड़ी धूमधाम से रामगढ मे मनाया गया। आने जाने तथा भोजन आदि विषयक अनेक कठिनाइयों के होते हुए भी ४०० से अधिक नर नारी (जिनमे देवियों की सख्या २५० के लगभग होगी।) बहर से और लगभग ५०० आस पास के ग्रामों से उत्सव में सम्मिलित होकर श्री महात्मा नारायण स्वामी जी तथा अन्य महानुभावों के उपदेशों और व्याख्यानों से जिनमें श्री ला० खुशहालचन्द्र जी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा लाहौर श्री मदन मोहन जी सेठ चीफ जस्टिस भरतपुर रियासत प्रधान सयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति स० मन्त्री सार्वदेशिक सभा, श्री ला० नारायण दत्त जी कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा प्रो० विश्वनाथ जी त्यागी डी० ए० वी० कालेज कानपुर तथा श्यामस्वरूप जी सत्यव्रत (बरेली) इत्यादि के नाम विशेष उल्लेखनीय है विशेष लाभ उठाया। से ६ जून सम्पूर्ण यजुर्वेद से यज्ञ श्री नारायणाश्रम मे प्रात ७ से ६ तक होता रहा जिसके ब्रह्मा श्री महात्मा नारायणस्वामीजी थे और ऋत्विक श्री बलदेव जी शास्त्री अग्नि होत्री, प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, स्वामी रामानन्द जी और श्री सुधीन्द्र जी शास्त्री थे। कन्यागुरुकुल सासनी की ब्रह्मचारिणिया और अध्यापिकाए भी वेद पाठ में और यज्ञ में सम्मिलित होती रहीं। यह यज्ञ माता सत्यवतीजी परिव्राजिका ने करवाया था। यज्ञके पश्चात प्रतिदिन महात्मा जी का स्फूर्तिदायक उत्तम उपदेश होता रहा जिस का जनता पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता रहा।

उत्सव में निम्न लिखित सम्मेलन हुए।

३ ६ ४५ आर्य महिला सम्मेलन अध्यक्षा माता लक्ष्मी देवी जी आचार्या कन्या गुरुकुल सासनी ४ ६ ४५ स्वाध्याय सम्मेलन श्री प० गगाप्रसाद जी एम० ए० रिटा० चीफ जज ५ ६ ४५ सत्यार्थ-प्रकाशसम्मेलन श्री मदन मोहन जी सेठ चीफ जस्टिस भरतपुर ६ ६ ४५ दलितोद्धार सम्मेलन श्री प० गङ्गा प्रसाद जी एम० ए० रि० जज ७ ६ ४५ स्वास्थ्य सम्मेलन श्री प्रिन्सिपल मदन मोहन जी बरेली ८ ६ ४५ वर्णाश्रम धर्म सम्मेलन श्री ला० नारायणदत्त जी देहली रात्रि को आर्य सम्मेलन डा० श्याम स्वरूपजी सत्यव्रत ६ ६ ४५ जिला और ग्रामोद्धार सम्मेलन श्री जगन्नाथजी पाँडे प्रधान डिस्ट्रिक्ट बोर्ड नैनीताल। रात्रिको कविता सम्मेलन सभापति श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति साहित्य भूषण। १०-६ ४५ रात्रि आर्यकुमार सम्मेलन-श्री ला० खुशहालचन्द्र जी, सगीत सम्मेलन—श्री मदन मोहन जी सेठ इन सम्मेलनों के कारण उत्सव और भी रोचक और लाभप्रद रहा। विशेष व्याख्यान श्री प्रो० विश्वनाथ जी बी० ए० एम० एल० बी० का आर्य सस्कृति' पर प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति का 'वैदिक धर्म की विशेषता' पर और श्री ला० खुशहालचन्द्र जी के जीवन की सफलता ईश्वरभक्ति आदि पर हुए। १० जून को श्री महात्मा नारायण स्वामी जी हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य मे उन्हे सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री नारायण अभिनन्दन ग्रन्थ (जिसमें लगभग ३१० पृष्ठ हैं) तथा अभिनन्दन पत्र समर्पित किये गये। सयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा,

गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी, वृन्दावन ज्वालापुर आर्य समाज रामगढ़, कन्या गुरुकुल सासनी आदि अनेक आर्य संस्थाओं की ओर से भी अभिनन्दन पत्र समर्पित किये गए जिन का महात्मा नारायणस्वामी जी ने यथाचित उत्तर देते हुए धन्यवाद दिया। इस प्रकार यह उत्सव बड़े समारोह और आशातीत सफलता के साथ समाप्त हुआ जिस के लिए जयन्ती समिति के प्रधान श्री प० गंगाप्रसाद जी एम० ए० रि० चीफ जज, श्री राजेन्द्रनाथ जी M A, L LB मैनेजर नारायण हाईस्कूल श्री विद्यासागर जी दीक्षित B A L T मुख्याध्यापक नारायण हाईस्कूल श्री प० कपिलदेव जी शास्त्री शिविराध्यक्ष इत्यादि महानुभाव विशेष बधाई तथा धन्यवाद के पात्र हैं। इस उत्सव का विस्तृत वृतान्त जिसमें श्री महात्मा नारायण स्वामी जी तथा अन्य महानुभावों के व्याख्यानों और सम्मेलनों का विवरण चित्रों सहित होगा शीघ्र प्रकाशित करने का जयन्ती समिति ने निश्चय किया है।

साहित्य समीक्षा

वैदिक ब्रह्मचर्यगीत—

लेखक—श्री स्वामी अभयदेवजी विद्यालङ्कार भू० पू० आचार्य गुरुकुल काङ्गड़ी, प्रकाशक—श्री आचार्यजी गुरुकुल काङ्गड़ी मूल्य २)

श्री आचार्य अभयदेव जी वेदों के सुप्रसिद्ध योगी विद्वान् हैं जिनकी 'वैदिक विनय' आदि पुस्तकें स्वाध्याय के लिए बहुत ही अधिक उपयोगी सिद्ध हुई हैं। आपने आजीवन ब्रह्मचय का व्रत धारण किया हुआ है। वे जो कुछ लिखते हैं अपनी तपस्या और अनुभव के आधार पर लिखते हैं। प्रस्तुत पुस्तक जो गुरुकुल स्वाध्याय मञ्जरी के १५ वें पुष्प के रूप में प्रकाशित की गई है अथर्ववेद के सुप्रसिद्ध ब्रह्मचय सूक्त (काण्ड ११ सू० ५) की अत्युत्तम हृदयङ्गम व्याख्या है। वेद मन्त्रों की अत्यन्त मननीय व्याख्या के अतिरिक्त परिशिष्ट रूप में ऊर्ध्वरेता कैसे हों, देवयान मार्ग, ब्रह्ममुहूर्तके वचन, शीर्षक के तीन लेख इस पुस्तक में दिए गए हैं जो ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत करनेवाले तथा अन्य सब साधकों के लिये अत्यन्त उपयोगी और मननीय हैं।

"यह ससार युद्धमय है यह बिल्कुल ठीक है। मैं भी कहता हूँ कि लड़ो और लड़ते चलो पर लड़ो भगवान्के सैनिक बनकर न कि शैतान के।" (पृ० १७२) "जब हृदय तल से आत्म सन्तोष का आनन्द निकलता है जिसमें अन्दर का आत्मा हमें शाबाशी देता है तब विजय होती है फिर बाकी की सब दुनिया चाहे कुछ भी समझती रहे और जब गहराई में बेचैनी होती है ज़रा ध्यान दें तो अन्दर से आत्मा हमें धिक्कारता सुनाई देता है तब वह पराजय होती है चाहे फिर सारी दुनियाँ हम पर फूल ही क्यों न बरसा रही हो।" (पृ० १७५) इत्यादि वाक्य बडे गम्भीर और महत्त्वपूर्ण हैं। पुस्तक सब विद्यार्थियों, नवयुवक नवयुवतियों तथा अन्य सब अध्यात्ममार्ग पर चलने वालों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। इसका खूब प्रचार होना चाहिए।

ध० दे०

जर्मनी की आर्थिक उन्नति का रहस्य—

लेखक—श्री० चौ० मुख्तारसिंह जी भूतपूर्व एम० एल० ए०, प्राप्तिस्थान—मैनेजर प्रेमी प्रेस मेरठ शहर, पृष्ठ सख्या २७२, मूल्य ३ रु०, छपाई-सफाई आकर्षक।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम भाग में पुराने जर्मनी की स्थिति को प्रगट किया गया है और बताया गया है कि यह देश सैकड़ों छोटे २ टुकड़ों में विभाजित था। न इसमे शिक्षा थी और न कला-कौशल। आर्थिक दृष्टि से यह देश बहुत पिछड़ा हुआ था। धीरे धीरे जर्मनी को संगठित किया गया।

लेखक ने उद्योग-धन्धों, कृषि, कच्चा सामान सम्बन्धी आकडे देकर यह बात भली प्रकार से प्रगट की है कि जर्मनी शिक्षा तथा कृषि की उन्नति करता हुआ उद्योग धन्धों की ओर बढ़ा।

वरसाई की सन्धि के पश्चात् जर्मनी का एक प्रकार से अंग भंग ही हो गया था। परन्तु धीरे धीरे जर्मनी के शुभचिन्तकों ने उसकी आर्थिक स्थिति को संभाला। कड़े नियम व कानून लागू करके जर्मनी से कच्चा माल बाहर जाना रोका और १९२९ में फिर उसने अपनी स्थिति को संभाल लिया। इसके पश्चात् उसके कारखानों का बना माल संसार भर के देशों में जाने लगा और वह शक्ति शाली राष्ट्र बन गया।

लेखक ने यह बात भी प्रकट की है कि हिटलर किस प्रकार जर्मनी का डिक्टेटर बना और किन सिद्धांतों पर उसने जर्मनी को उन्नत करने का यत्न किया। जर्मनी का यह आर्थिक इतिहास प्रत्येक नवयुवक को अवश्य पढ़ना चाहिए।

सम्पादकीय

श्रद्धेय स्वामी जी का अभिनन्दनः—

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध नेता, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान, १० उपनिषदों की सरल व्याख्या, आत्मदर्शन, मृत्यु और परलोक, योग रहस्य, कर्मरहस्य, कर्तव्य दर्पण, विद्यार्थी जीवन रहस्य आदि उत्तम ग्रन्थोंके रचयिता, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी श्री पूज्यपाद महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज अपनी आयु के ८० वें वर्ष को समाप्त करके ८१ वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं और उन द्वारा रामगढ़ जिला नैनीताल में स्थापित नारायणाश्रम की रजत जयन्ती ३ से १० जून तक बड़े समारोह के साथ मनाई गई जिस अवसर पर श्रद्धेय महात्मा जी की सेवा में सार्वदेशिक सभा की ओर से जिसके निर्माण और उन्नत करने में उनका बहुत अधिक भाग रहा है अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया। हम श्रद्धेय स्वामी जी के जीवन की पवित्रता, सरलता नियमितता कर्तव्यपरायणता, ईश्वर भक्ति, संयम, तप, स्वाध्याय शीलता आदि अत्युत्तम गुणों के कारण उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पण करते हुए उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं और मङ्गलमय भगवान से उनके आरोग्य और दीर्घायु के लिये प्रार्थना करते हैं ताकि उनके नेतृत्व में आर्य समाज अधिकाधिक उन्नति करने में समर्थ हो सके। प्रत्येक आर्य समाज में भी १० जून रविवार को नारायण अभिनन्दन दिवस के रूप में मनाये जाने की सूचना सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रकाशित की जा चुकी है जिससे समस्त आर्य जगत में उस दिन श्री पूज्य महात्मा जी के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए आर्य लोग उनके सन्देश को क्रियात्मक रूप देने का दृढ निश्चय करें।

आर्य परिवार सङ्घ की योजनाः—

हमारे पास श्री ला० खुशहालचन्द्र जी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा लाहौर, प० भीमसेन जी विद्यालङ्कार भू० पू० सम्पादक आर्य भू० पू० मन्त्री पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रो० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एम० ए० प्रिन्सिपल डी० ए० वी० कालेज लखनऊ, श्री वंशीलाल जी भू० पू० मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद दक्षिण, प० सूर्यदेव जी एम० ए०, एल० टी०, डा० लिट, अजमेर, प्रो० ताराचन्द्र जी एम० ए०, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा सिन्ध, श्री प० वासुदेव जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार आदि अनेक प्रतिष्ठित आर्यमहानुभावों के हस्ताक्षरों से 'आर्य परिवार सङ्घ' की एक प्रस्तावित योजना प्राप्त हुई है। खेद है कि

स्थानाभाव से सारी योजना को इस अङ्क में प्रकाशित नहीं किया जा सका किन्तु विषय अत्यावश्यक होने के कारण उसकी ओर समस्त आर्य-जनता का ध्यान आकर्षित करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। इस योजना को आर्य-पुरुषों के विचारार्थ प्रस्तुत करते हुए प्रस्तावक महानुभावों ने जो भूमिका आर्य परिवार सङ्घ की आवश्यकता के विषय में लिखी है उसमें से निम्न अंश विशेषतया उल्लेखनीय है—

'यह बात ध्रुव सत्य है कि आर्य समाज की उन्नति का मुख्य साधन गुण कर्म स्वभावानुसार वर्णाश्रम व्यवस्था ही है। बिना वर्णाश्रम व्यवस्था के प्रचलित हुए आर्य समाज की वास्तविक उन्नति कठिन ही नहीं अपितु नितान्त असम्भव है। किन्तु खेदसे कहना पड़ता है कि आर्य समाज अन्य लोकोपयोगी कार्यों में तो संलग्न है किन्तु अपनी उन्नति के मुख्य साधन गुण कर्म स्वभावानुसार वर्णाश्रम व्यवस्था की ओर से सर्वथा उदासीन है। यही कारण है कि अभी तक आर्य समाज अपनी वास्तविक उन्नति से बहुत दूर है। आज आर्य समाज का न केवल सर्वसाधारण व्यक्ति प्रत्युत बड़े से बड़ा अधिकारी तथा नेता वर्ग भी गुणकर्मानुसार वर्ण व्यवस्था को सर्वथा तिलाञ्जली देकर आर्यसमाज की अवनति के मुख्य कारण अपनी पौराणिक विरादरी का हो दास बन रहा है। आर्यत्व की कसौटियों पर सर्वथा पूरा उतरने वाला एक कट्टर से कट्टर आर्य भी अपने तथा अपनी सन्तति के विवाह आदि सम्बन्धों को अपनी जन्म विरादरी की कुछ भी परवाह न कर गुणकर्मानुसार करने की परीक्षा में सर्वथा अनुत्तीर्ण हो जाता है। इसका कारण जहां हमारी आत्मिक निर्बलता है वहां ऐसे सज्जनों को आर्य समाज की ओर से किसी भी प्रकार के प्रोत्साहन का न मिलना भी है। हमारी इस ओर सर्वथा उपेक्षा और उदासीनता के कारण जहाँ हम आर्यों की सन्तानें आर्य नहीं बन रहीं वहां आर्य समाज तथा वैदिक सिद्धान्तों से प्रेम रखने वाले इतर धर्मावलम्बी सज्जन भी आर्यसमाज मे सम्मिलित होने का साहस नहीं कर रहे। यही कारण है कि आर्य समाज न अन्दर से वृद्धि को प्राप्त हो रहा है न बाहर से। आज आर्यसमाज की अवस्था ठीक उस स्थल तोय बावड़ी के समान है कि जिसमे न तो अन्दर से जल आने का स्रोत है और न ही बाहर से उसमें वर्षा आदि के जल प्राप्त होने का कोई साधन है किन्तु खेद से लिखना पड़ता है कि आर्य समाज अपने अन्दर इस भारी त्रुटि का अनुभव करता हुआ भी इसे दूर करने के लिये अग्रसर होने का साहस नहीं कर रहा। आर्यों मे परस्पर जन्मगत जात-पात का विचार न कर गुणकर्मानुसार विवाह सम्बन्ध हों, तथा आर्य बन्धुओं में परस्पर सहानुभूति तथा सहयोग की भावना जागृत होकर भ्रातृभाव उत्पन्न हो सके इसके लिये हमने 'आर्य-परिवार सङ्घ' की योजना तैयार की है। इस सङ्घ का उद्देश्य (१) गुणकर्म स्वभावानुसार वर्णों की व्यवस्था करना (२) जन्मगत जात-पात का विचार छोड़ कर आर्यों में परस्पर गुणकर्म स्वभावानुसार विवाह सम्बन्ध करना (३) सहयोग तथा सहानुभूति द्वारा आर्यों में परस्पर प्रेम तथा भ्रातृभाव उत्पन्न करना। इत्यादि

इस भूमिका को हमने कुछ विस्तृत रूप से प्रस्तावक महानुभावों के अपने शब्दों में इसलिए उद्धृत कर दिया है ताकि उनके भावों को पाठक महोदय स्पष्टतया ज्ञात कर सकें। हम प्रस्तावक गण के इस विचार से सर्वथा सहमत हैं कि जन्मगत जात-पात के विचार का परित्याग करके गुण कर्मस्वभावानुसार वर्णाश्रम व्यवस्था के आदर्श को क्रियात्मक रूप दिए बिना आर्य समाज की उन्नति असम्भव है। यह सचमुच अत्यधिक खेद की बात है कि जन्मसिद्ध वर्ण व्यवस्था का जातिभेद को सिद्धान्त रूप में न मानते हुए और उसका प्रबल खण्डन करते हुए भी अनेक आर्य अभी तक जातिभेद और उसके परिणाम स्वरूप अस्पृश्यता की दलदलमें फँसे हुए हैं जिससे दलितोद्धार, शुद्धि आदि के आन्दोलन उस सफलता को नहीं प्राप्तकर सके जिसकी आर्यों जैसे प्रगतिशील वर्गसे आशा की जानी चाहिए। 'आर्य परिवार सङ्घ' के प्रस्तावक गण ने आर्यों की इस विषयक असन्तोष जनक अवस्था का जो चित्र ऊपर उद्धृत उद्धरण मे खैंचा हैं सम्भवत उसे अत्युक्ति पूर्ण और कुछ अश तक निराशा पूर्ण मनोवृत्ति का सूचक कहा जाए किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि आर्य समाजके अनेक सदस्य और कार्यकर्ता इस विषय मे अपने आदर्श से अभी बहुत दूर हैं और उस आदर्श तक पहुचने के लिए उन्हे बहुत अधिक साहस पूर्ण प्रयत्न करनेकी आवश्यकता है। इस दृष्टि से हम 'आर्य परिवार सङ्घ' जैसी क्रियात्मक योजना का स्वागत करते है। इसी प्रकार की योजना सार्वदेशिक सभा द्वारा श्री प० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ-जजके सभापतित्व मे नियुक्त जातिभेद निवारिणी उपसमिति द्वारा प्रस्तुत की गई है जिसे शीघ्र जनता के सम्मुख रखा जाएगा। आवश्यकता इस बात की है कि समस्त आर्य अपने सिद्धान्तों और आचरण के वर्तमान विरोध को दूर करने का साहस अपने अन्दर धारण करें और जन्मगत जात पात का क्रियात्मक रूपेण सर्वथा परित्याग करें। अपने और सन्तति के विवाह वर्तमान जातिभेद पद्धति को जानबूझ कर तोड़ कर केवल गुण कर्म स्वभाव का ध्यान रखकर किए जाए। अपने नाम के पीछे जन्म जाति या उपजाति सूचक कोई पद न लगाए जाएँ। जातिभेद का खण्डन करने वाले आर्यों के नामों के पीछे भल्ला, चावला, चोपड़ा, गाजरा, नारङ्ग इत्यादि का प्रयोग सचमुच उपहास जनक है। शर्मा वर्मा गुप्त का प्रयोग भी इस दृष्टि से आक्षेपयोग्य है। यदि इनका प्रयोग करने वाले सज्जन सचमुच ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य के कर्तव्यों का पालन न कर रहे हों, उपयुक्त योजना के प्रस्तावक महोदयों मे से (जिसकी सदस्यता के नियमों मे 'जो अपने नाम के पीछे जन्म जाति या उपजाति सूचक कोई पद न लगाते हों' ऐसा लिखा है) कइयों के नाम के पीछे ऐसे जाति सूचक गाजरा आदि का प्रयोग देखकर आश्चर्य होता है। वैदिक वर्ण व्यवस्था के आदर्श का प्रचार और उसके अनुसार अपने जीवन को बनाना आवश्यक है यद्यपि वैदिक आदर्शानुसार स्वराज्यकी प्राप्तिके बिना जिसके अधीन विद्यार्य सभा धर्मार्य सभा और राजार्यसभा हों वर्ण व्यवस्था को अपने प्राचीन विशुद्धरूप मे स्थापित किया जा सकता है इसमें अनेक विद्वान् विचारकों को सन्देह है।

आर्य समाज क्षेत्र में भी अनेक बार तपस्वी धार्मिक विद्वानों की अपेक्षा धनियों का अनुचित मान वर्णव्यवस्था के सिद्धान्त और आदर्श के विरुद्ध है जिस प्रवृत्ति को दूर करने की आवश्यकता है। यह खेद की बात है कि आश्रमों की मर्यादा स्थापित करने की ओर आर्य जनता का पर्याप्त ध्यान नहीं है। जब ७०,७५ वर्ष की आयु तक अनेक आर्य गृहस्थ जीवन में पड़े रहते दिखाई देते हैं तब लोगों को सचमुच आक्षेप करने का अवसर मिलता है। हमारा समस्त आर्यों से अनुरोध है कि वे अपने वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक जीवन की वर्णाश्रम व्यवस्थादि विषयक आदर्शों के अनुसार बनाने का अधिक से अधिक प्रयत्न करें और जातिभेद तथा अस्पृश्यता के कलङ्क से जो हमारा उन्नति और संगठन के प्रबल शत्रु हैं अपने को सर्वथा मुक्त कर दें अन्यथा सैकड़ों प्रयत्न करने पर भी हम अपने उच्च उद्देश्यों की पूर्ति में समर्थ न हो सकेंगे।

गुलबर्गा काण्ड विषयक एक सन्तोषप्रद समाचार—

'सार्वदेशिक' के गत अङ्क में हमने 'अमानुषिकता और बर्बरता की पराकाष्ठा' इस शीर्षक से गुलबर्गा कांड विषयक एक सम्पादकीय टिप्पणी दी थी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार अनेक आर्यसमाजों तथा अन्य संस्थाओं ने उस घोर अत्याचार के विरुद्ध प्रतिवाद सूचक तार हैदराबाद राज्य के प्रधानमन्त्री तथा वायसराय महोदय को दिये सार्वदेशिक सभा ने इस सम्बन्ध में निष्पक्ष जाच के लिये तार हैदराबाद राज्य के प्रधानमन्त्री और वायसराय महोदय को देने के अतिरिक्त माननीय श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त स्पीकर सी. पी. ऐसम्बली और श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी उपप्रधान सार्वदेशिक सभा को हैदराबाद रियासत में इस विषयक जाँच के लिये अधिकारियों को प्रेरित करने तथा ऐसी दुर्घटनाएं भविष्य में न हो सकें ऐसी व्यवस्था अधिकारियों से मिल कर करवाने के लिये भेजा था। यद्यपि हैदराबाद रियासत की सरकार की ओर से जो वक्तव्य प्रकाशित हुआ उसमें अनेक आवश्यक बातों (उदाहरणार्थ उन नेताओं के नाम जिन पर आक्रमण किया गया था) को छोड़ दिया था और कई बातों को भ्रमजनक रूप में प्रस्तुत किया गया था तथापि यह सन्तोष की बात है कि हैदराबाद सरकार ने गुलबर्गा काण्ड विषयक जाँच करवा कर पाच पोलीस सिपाहियों को नौकरी से पृथक कर दिया है और अन्यों को भिन्न २ दण्ड दिया है। हम आशा करते हैं कि हैदराबाद रियासत के अधिकारी न केवल इस मामले की पूर्ण और निष्पक्ष पात जाँच करा कर अपराधियों को कठोर दण्ड दिलाएंगे बल्कि भविष्य में ऐसी दुर्घटनाएं न होने पाएं ऐसी उचित व्यवस्था करेंगे।

सूचना

कन्या गुरुकुल हाथरस पो० सासनी जि० अलीगढ़ के लिए कुछ अध्यापिकाओं की आवश्यकता है।

(१) हेडमिस्ट्रेस—कम से कम बी० ए० बी० टी० हों आयु कम से कम ३० वर्ष हो आर्य सिद्धान्तों का ज्ञान हो। (२) संगीत और सिलाई में निपुण हों। (३) मैट्रिक तक का गणित अच्छी तरह करा सकें। कन्या गुरुकुल हाथरस का ग्रीष्मावकाश ३० जून को समाप्त होकर २ जौलाई से विद्यालय प्रारम्भ होगा। नवीन छात्राओं का प्रवेश १ जौलाई से बराबर होता रहेगा। जो सज्जन कन्याओं को प्रवेश कराना चाहें वे शीघ्र लाने की कृपा करें।

लक्ष्मी देवी आचार्या

श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा

"चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस" श्रद्धानन्द बाज़ार देहली में मुद्रित।

नाम पुस्तक	लेखक व प्रकाशक	मूल्य
(१) वैदिक सिद्धान्त स० (मार्द० मना)		१)
( ) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका बड़ा साइज	,	१।)
(३) विदेशों में आर्य समाज		॥)
(४) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर	,,	१।)
५) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श	,,	१॥)
(६) समस्त समाजों का सूची	,,	।)
७) सार्वदेशिक सभा का इतिहास	, अ०	≈
८ बलिदान	,,	।)
(९) आर्य डायरेक्टरी	,, अ०	१)
(१०) आर्य वीर दल शिक्षक शिविर	,,	≈)
(११) आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण पं० इन्द्रजी		।)
(१२) आर्यवीर दल लेखमाला श्री ओम्प्रकाश जी		१)
(१३) यमपितृ परिचय पं० प्रियरत्न जी आर्ष		२)
(१४) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र		
(१५) वैदिक सूर्य विज्ञान		
(१६) वेद में असित श		
(१७) ऋग्वेद में देवृकामा		
(१८) वेद में दो बड़ी वैज्ञा		
(१९) विमान शास्त्र		
(२०) मातृत्व की ओर श्री प	... प्रसाद जी पाठक	१।) स० १॥)
(२१) आर्य जीवन गृहस्थ धर्म	,	-)
२२) कथा माला	,	।॥)
(२३) आत्म कथा श्री नारायण स्वामी जी		-)
(२४) उपनिषद् ईश ≈) केन ।) प्रश्न -) मुण्डक -)॥ माण्डूक्य ≡) ऐतरेय) बृहदारण्यक २)		
(२५) वैदिक सन्ध्या रहस्य	,	-)॥
(२६ शहीदों पादुका		।-
(२७) आर्य समाज मन्दिर चित्र		।)
(२८) इजहारे हक़ीक़त श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी		।=)
(२९) भक्ति कुसुमाञ्जलि श्री पं० धर्मदेव जी विद्या०॥)		
३०) त्रिदेव निर्णय श्री पं० शिवशङ्कर जी		१)
३१) भूमिका प्रकाश श्री द्विजेन्द्रनाथ जी		१।)
(३२) कुमुदिनीचन्द्र अनु० श्री पं० मेधाव्रत जी		२)
३३) वेद और गोमेध श्री बा० श्यामसुन्दरलाल जी		≈)
(३४) बहिनों की बातें श्री पं० सिद्धगोपाल जी कविरत्न		१)
(३) ध्यान योग प्रकाश स्वामी लक्ष्मणानन्द जी		१।।-
(३६) सत्यार्थ प्रकाश गान		।=)
(३७ हमारे घर श्री निरञ्जनलाल जी गौतम		।।=
(८) भारतवर्ष में जाति भेद	,	।)
(३९) सत्यार्थ प्रकाश की सार्वभौमता		-
(४०) हम और हमारे समालोचक		-)
४१) In Defence of Satyarth Prakash		=)
(४२) Rishi Dayanand and Satyarth Prakash		।-)
We and Our Critics		-)॥
Universality of Satyarth Prak		-)
...rya Varta		=)
...u)		
... by an Eye Witness (S Sabha)		।-)
...edas		=)
...hakur Datt Dhawan		
(४७) Truth Bed Rock of Aryan Culture		॥)
(४) Vedic Teachings Atma		।)
(५०) Daily Prayer of An Arya (Shri Narayan Swamiji)		॥)
(५१) Commentary on Ishopnishat	,,	।)
(५) Kenopanishat (English) by Pt Ganga Prasadji M A		।)
(५) Agnihotra Dr Satya Prakash		२॥
(५४) The Scope, Mission of Aryasamaj Bound (Pt Ganga Prasadji Upadhyaya)		१)
(५५) Christianity in India	,,	॥)
(५६) Ecclesia Divina (Swami Bhumanand Saraswati)		५)
(५७) Aryasmaj and Theosophical Society (Shri Shyam Sunderlal Vakil)		

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष २१ } जौलाई १९४५ ई०] आषाढ २००२ दयानन्दाब्द १२२ { अङ्क ५

* वैदिक प्रार्थना

ओ३म् देवस्य चेततो मही प्रसवितुर्हवा महे । सुमति दू सत्यराधासम् ॥ यजु० २०।११

शब्दार्थ—हम (चेतत) ज्ञान देने वाले (सवितु) जगत् के कर्त्ता सर्व शक्तिमान (देवस्य) सर्व प्रकाशक सुखदाता परमेश्वर की (सत्य राधसम्) सत्य को प्राप्त कराने वाली सुमतिम् उत्तम बुद्धि को (प्रहवामहे) अच्छी तरह से ग्रहण करते अथवा प्रार्थना करते हैं।

विनय—हे परमात्मन् ! आप समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले, सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ, सब का प्रकाशित करने वाले और सुख-शान्ति आनन्द के देने वाले स्वामी हैं। आपका ध्यान करने से वह उत्तम बुद्धि प्राप्त होती है जो सत्य का यथार्थ ज्ञान देती है अत: हम आपके पवित्र स्वरूप का चिन्तन करते हुए उसी सत्यमय शुद्धि-बुद्धि की आप से प्रार्थना करते हैं जिस से हमारे अन्दर किसी प्रकार का अज्ञान, असत्य और अपवित्रता न रहे। आप ऐसी शुद्ध बुद्धि देकर हमें अनुगृहीत करे ॥

वेदामृत

गायत्री मन्त्र व्याख्या

[श्री पूज्यपाद महात्मा नारायण स्वामी ने नारायणाश्रम रामगढ को रजतजयन्ती के अवसर पर यजुर्वेद द्वारा जो यज्ञ ३ से ६ जून तक किया गया उसकी पूर्णाहुति (६ जून) के दिन जो प्रवचन गायत्री मन्त्र की व्याख्या मे दिया उस से जनता अत्यन्त अधिक प्रवाहित हुई थी विशेष उपयोगी जान कर हम उसके मुख्य अंशों को पाठकों के लाभार्थ उद्धृत करते हैं। सम्पादक]

ओ३म् भूर्भुव स्व तत्सवितुवरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि। धियोयोन प्रचोदयात्॥ यजु ३६। ३

इसे गुरु मन्त्र तथा सावित्री मन्त्र आदि के नाम से कहा जाता है। गुरु वेदारम्भ सस्कार के समय इसी मन्त्र द्वारा शिष्य को दीक्षा देता है इसलिए इसे गुरु मन्त्र कहते है। गायत्री छन्द मे होने तथा गायन्त त्रायत इति श्रद्धापूवक गान करने व जप करने वाले भक्त की रक्षा करने के कारण इसे गायत्री मन्त्र के नाम से कहते हैं। परमात्मा का स्मरण 'सविता' के नाम से इस मन्त्र मे किया गया है इसलिए इसे 'सावित्री मन्त्र' कहा जाता है। गायत्री मन्त्र का पाठ ओ३म् और व्याहृति अर्थात् भू, भुवः स्व सहित किया जाना है। ओ३म् परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है। जिसके जप का विधान 'ओ३म् क्रतास्मर' इत्यादि वेद मन्त्रों तथा सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति, तपासि सर्वाणि च यद्वदन्ति। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्त, तत्ते पद समहेण ब्रवीम्योम्॥ इत्यादि उपनिषद वाक्यों मे किया गया है। माण्डूक्य उपनिषत् आदि मे इसी ओ३म् की विशेष व्याख्या है। योगदर्शन मे "तस्य वाचक प्रणव" इस सूत्र द्वारा 'ओ३म् को परमेश्वर का मुख्यनाम बताकर तज्जपस्तदर्थ भावनम्' द्वारा उसका अर्थ भावना सहित जप का चित्त की एकाग्रता के लिए विधान किया गया है। केवल उच्चारण से लाभ नहीं हो सकता जब तक उसके अर्थ का चिन्तन भली भाति न किया जाए। ओ३म् का मुख्यार्थ रक्षक है। रक्षक के रूप मे परमेश्वर का ध्यान करने से चित्त के अन्दर निर्भयता आती है। जब सर्वशक्तिमान् परमेश्वर हमारा रक्षक है तो भय चिन्ता का क्या काम है? इस प्रकार 'ओ३म् का जप मनुष्य को सर्वथा निर्भय बना देता है। भू' भुव, स्व ये तीन व्याहृति के शब्द परमेश्वर के गुण सूचक हैं। भूसत्तायाम से भू शब्द बनता है जिसमें परमेश्वर के सवत्र अस्तित्व का सव व्यापकता का भाव आता है। भुव मे सवज्ञता का भाव आता है और स्व में सुखस्वरूप का भाव। इस प्रकार भू, भुव, स्व, ये शब्द सच्चिदानन्द स्वरूप का भाव सूचित करते हैं। प्रकृति का स्वरूप सत् है जीव का सत् चित् है और परमात्मा का सच्चिदानन्द स्वरूप है यह इनका भेद है। जीव का उद्देश्य वा लक्ष्य इन शब्दों से सूचित होता है कि वह सच्चिदानन्द स्वरूप परमेश्वर का ध्यान कर आनन्द को प्राप्त करे। जप के लिए ईश्वर के उन गुणों को लेना

चाहिए जिनको हम अपने अन्दर धारण कर सकते हैं। 'राम' शब्द का आध्यात्मिकदृष्टि से अर्थ कई ग्रन्थों में 'रमन्ते' योगिनोऽस्मिन' अर्थात जिसमें योगी लोग रमण करते हैं ऐसा किया गया है किन्तु यह मान लेने पर भी इसके जप से इस लिये लाभ नहीं हो सकता क्योंकि हम सर्व-व्यापक नहीं बन सकते। अर्यमा (न्यायकारी) मित्र, वरुण आदि परमात्मा के गुणों का हम अपने अन्दर धारण कर सकते हैं। सविता का अर्थ सत्योत्पादक है। इस रूप में परमेश्वर का चिन्तन करने से उसके प्रति श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न होते हैं। श्रद्धा का अर्थ श्रत् अर्थात् सत्य को धारण करना है। इसका अर्थ लोगों ने अशुद्ध समझ रक्खा है। वे समझते हैं कि केवल विश्वास से सब बातें स्वयमेव पूर्ण हो जाती है। किन्तु यह सत्य नहीं है। यदि एक यात्री अल्मोड़ा की तरफ जाने वाली सड़क पर न जाकर काठगोदाम की सड़क पर चल पड़े और विश्वास करे कि वह अल्मोड़ा पहुंच जाएगा तो यह कैसे हो सकता है। एक बच्चा कौतुक वश अग्नि में हाथ रख देता है जिससे उसका हाथ जल जाता है तब वह इस सचाई का अपने अन्दर धारण कर लेता है कि आग जलाती है कोई कितना ही कहे तब वह आग में हाथ रखने का नाम नहीं लेता इस प्रकार करना ही श्रत् या सत्य को धारण करना है। जितना ज्ञान हृदय में अङ्कित कर लिया जाता है वही अपना होता है शेष तो पुस्तकों में ही रह जाता है।

वरेण्यम् का अर्थ ग्रहण करने योग्य वा उपासनीय है। भर्ग में पवित्रता का भाव आता है जो अपवित्रता अज्ञानादि को दूर कर दे। हमें इस पवित्रता को अपने अन्दर धारण करना चाहिये।

'अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति, मनः सत्येन शुद्ध्यति।
विद्या तपोभ्यामात्मा भूता बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति ॥

इत्यादि द्वारा मनु महाराज ने अनेक प्रकार की पवित्रता का प्रतिपादन किया है। इसमें उन्होंने बतला है कि शरीर के अङ्ग जल से शुद्ध होते हैं मन सत्य के धारण करने से पवित्र होता है। मनुष्य का आत्मा विद्या और तप से पवित्र होता है और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है। देवस्य में भाव ज्ञान प्रकाश देने वाले का है। इस ज्ञान की प्राप्ति से मनुष्य को अमृत की प्राप्ति होती है जैसे कि प्रतिबोध विदित मतम्, अमृतत्व हि विन्दते' इत्यादि उपनिषद् वचनों में कहा है। साधारणतया इन्द्रियों से बाह्य विषयों का ज्ञान ज्ञान और आत्मा द्वारा परमेश्वर का विशेष ज्ञान विज्ञान के नाम से शास्त्रों में स्मरण किया गया है। ज्ञान, विज्ञान का भेद वही है जो अंगरेजी Intellect और Intentional Perception में है। आम आदि का स्वाद जैसे पूर्णतया शब्दों द्वारा वर्णन करना असम्भव प्राय है वैसे ही ईश्वर ज्ञान के आनन्द का शब्दों द्वारा वर्णन करना असम्भव है। बुद्धि के द्वारा जगत् का ज्ञान और निदिध्यासनादि द्वारा आत्मा में परमात्मा का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। यही परमात्मा का साक्षात्कार है जो अनुभव का विषय है। इस प्रकार इन गुणों को धारण करने के

पश्चात् हम ईश्वर को अपने अन्दर धारण कर सकते हैं। ईश्वर को इस लिये अपने अन्दर धारण किया जाए अथवा उस का ध्यान किया जाए ताकि हमारी बुद्धि कल्याण कारिणी प्रेरिता तथा पवित्र हो जाए।

पाश्चात्य लोगों का आचार व्यवहार यदि प्रेरिता बुद्धि के अनुसार होता तो पशुओं की तरह परस्पर युद्ध तथा भीषण हत्या का घोरदृश्य न दिखाई देता। वे लोग केवल बुद्धि तक सीमित हैं निदिध्यासनादि की उन के अन्दर अभाव के कारण ही सब हानि हैं। ईश्वर से भी अधिक माँगने की आवश्यकता नहीं। केवल शुद्ध बुद्धि को माँगना ही पर्याप्त है जैसे कि इस गायत्री मन्त्र में किया गया हैं। इस प्रकार अर्थ सहित इस गायत्री मन्त्र का चित्त को एकाग्र कर के जप करने से विशेष लाभ हो सकता है॥

अध्यात्म सुधा

प्रभुका ध्यान

ऐसा होवे प्रभुका ध्यान॥

१ रोम रोम से ओम् ओम् की निकले मीठी तान।
दूर करे जो शोक मोह भय,
काम कोप अभिमान॥

२ जिस करुणासागर ने हमको, दियाअपरिमितदान।
उसका हो दिन रात हृदय से,
मृदुवाणी से गान॥

३ स्थिर मनही निर्वात देश में, रक्खे दीप समान।
सकल मलों का मर्दन करदे,
भक्ति गङ्ग मे स्नान॥

४ कितने ही तूफान चलें पर, चित्त रहे अम्लान।
मन में चिन्तन निशिदिन उसका,
जो है दया निधान॥

५ ज्योतिजगे भीतर जो तम का, कर देव परिहाण।
जिस से शाश्वत शान्ति शक्ति का,
होवे मुझ को भान॥

६ लौकिक विषय न आने पावें, नहीं रहे अज्ञान।
उसका स्मरण करूं निशिवासर,
जो गुण गण की खान॥

"ध्रुव"

मेले की मनोवृत्ति

(लेखक— श्री प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० उपप्रधान सार्वदेशिक सभा)

मैं अभी कुछ दिनों मे आगरे के एक समाज में गया था। वहा एक उत्साही महाशय ने इस बात पर बड़ा खेद प्रकट किया कि कांग्रेस में सब जाते हैं। आर्य समाज में कोई नहीं आता उनका तात्पर्य यह था कि आर्य समाज को अपने प्रोग्राम मे कुछ ऐसी बातें शामिल कर देनी चाहिये कि सब लोग आकर्षित होने लगें। लोगों की यह भी शिकायत है कि आर्य समाज के बने हुए पुराने प्रोग्राम को अन्य लोगों ने अपना लिया जैसे विधवा विवाह बाल-विवाह विरोध इत्यादि। अब आर्य समाज कैसे जीवित रहेगा। मेरे उत्साही मित्र ने वही कहा जो सब-साधारण कहते है। कोई नई बात नहीं थी। परन्तु मैं समझता हूँ कि मनोवृत्ति मे कुछ भेद है। यदि आर्य समाज के सिद्धान्त तथा प्रोग्राम ठीक नही है तो उनमें उस समय भी परिवर्तन होना चाहिये जब सर्व साधारण हमारे साथ हैं। और यदि ठीक हैं और लोग नही आते तो केवल लोगों के आकर्षण के लिये हम को कुछ परिवतन नहीं करना चाहिये।

दो प्रकार की मनोवृतिया होती हैं एक साध्य-साधन की और दूसरी मेला देखने की मै अपने आशय को उदाहरण देकर समझा दूँ कल्पना कीजिये कि मेरा एक सम्बन्धी घर में बीमार पड़ा है। अभी रात का समय, अँधेरी छाई हुई है। वैद्य का घर ऐसे स्थान मे है कि सुनसान मार्ग से जाना पड़ता है। अपने सम्बन्धी के इलाज के लिये मै वैद्य के घर जारहा हूँ। मार्ग मे कोई साथी नहीं मिला परन्तु मैं धुन में लगा हू। मैं यह नहीं पूछता कि कौन मेरे साथ हैं, मैं अकेला हू। फिर भी चल रहा हूँ, क्योंक एक साध्य का साधन अभिप्रेत है।

यह हुआ पहला उदाहरण दूसरा उदाहरण लीजिये। मै अपने द्वार पर खड़ा हूँ। मैंने देखा कि बहुत बड़ी भीड़ सड़क पर से जारही है। मै पूछता हू "क्या है?' लोग कहते हैं "जमुना पर आज बहुत बड़ा मेला है।" मै कहता हू "चलो हम भी चलें।" इस प्रकार मुझ जैसे सैकड़ों व्यक्ति भीड़ को देखकरचल पड़ते-है औरभीड़ अधिक हो जाती है। इसको कहते हैं 'मेले की मनोवृति'। मै नहीं पूछता कि उद्देश्य क्या है। मेरा उद्देश्य तों भीड मे मिलना है। जहाँ सब जायगे हम भी जायगे।

आर्यसमाज का भी वही हाल है, इसमें कुछ लोग तो उद्देश्य, सिद्धान्त, नीति और प्रोग्राम को समझ कर आये हैं। वे अकेले भी उसी धुन मे हैं।

कोई न आवे तो भी उनको समाज में जाना। कोई साथ न दे और सब छोड़कर अलग हो जाय फिर भी लगे रहना। क्योंकि साध्य निश्चित, मार्ग निश्चित। उनका सिद्धान्त है चरैवेति चरैवेति। परन्तु जो यह देखकर समाज में आते हैं कि हम में बहुत से अन्य आ रहे हैं वह दूसरों के छोड़ने

पर छोड़ भी बैठते हैं। उनके सामने मेला है उद्देश्य नहीं। वह भीड़ के साथ हैं। भीड़ कैसी भी क्यों न हो। ऐसे पुरुष किसी महान् काय को नहीं कर सकते। यह बात आर्य समाज तक ही सीमित नहीं है। यह सब तन्त्र सिद्धान्त है। कांग्रेस को लीजिये। कभी कभी कांग्रेसी अकेले रहगये परन्तु वह लगे रहे। छोड़कर नहीं भागे। परन्तु बहुत से कांग्रेसी उस समय तक हैं जबतक भीड़ कांग्रेस के साथ है। जब कांग्रेस में भीड़ कम देखी उसको छोड़कर अन्यत्र भागे। सैकड़ों मनुष्य ऐसे हैं जो हवा का रुख देखते रहते हैं। वह वर्ष भर में छः पार्टियां बदलते हैं। इन्हीं के विषय में तो कहा है—

अन्त शाक्ता बहि शैवा सभा मध्ये तु वैष्णवा। नाना रूप धरा कौलाबि चरन्ति मही तले।

जो लोग आर्य समाज के सिद्धान्त को पढ़ते और स्वामी दयानन्द के मिशन को समझते हैं वे हर दशा मे हर स्थान पर और हर समय आर्य समाज के मिशन की पूर्ति में लगे रहेंगे। जो मेले की मनोवृत्ति रखते हैं उन के लिये तो भारी प्रश्न है। आप अपने प्रोग्राम बदलते रहिये। दूसरा और बदल देगा वे उनके साथ हो जायंगे। दूसरे कीर्तन करते हैं आप भी कीजिये। स्वामी जीने सत्यार्थ प्रकाश में जैनियों और पौराणिकों की परस्पर स्पर्धा का उल्लेख किया है कि मन्दिर, मूर्तियां, पुराण तथा बाजे गाजे किस प्रकार वृद्धि को प्राप्त होते गये। दोनों दल अपने अनुयायियों को बढाना चाहते थे। उद्देश्यों का कोई विचार नहीं था। मेरी समझ मे अनुयायियों की संख्या वृद्धि के अर्थ कोई काम करना गाड़ी के पीछे घोड़ा जोतना है। पाछे चलने वालों के पीछे दौड़ना है। आर्य समाज के लिये यह गौरव की बात है कि उसका प्रोग्राम लोगों ने अपना लिया। परन्तु आर्यों के लिये अभी तो बहुत कुछ शेष है। केवल दो चार बातें ही तो प्रचलित हो पाई है। वह भी उन लोगों मे जो मेले की मनोवृत्ति रखते हैं। वस्तुत आर्य समाज के असली नेता वही हैं जिन्होंने अकेले रहकर भी समाज को नहीं छोड़ा। और अपने उद्देश्य की पूर्ति में लगे रहे। साध्य साधन और कौतूहल समाधान में भेद है।

सत्यार्थप्रकाश के चतुर्दश समुल्लास का तुलनात्मक अनुशीलन

महर्षि दयानन्द और इस्लाम के अन्य समालोचक

(७)

[ले०—प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति अध्यक्ष अनुसन्धान विभाग सार्वदेशिक सभा, देहली]

मौ० मुहम्मद अली M A L L B कृत अंग्रेजी अनुवाद —

8 7 God desired to manifest the truth of what was true by His words and to out off the roos of the unbelievers 12 I will cast terror into the hearta of those who dis believe, so strike above their necks and strike off every finger tip of them '

13 This is because they acted adversely to God and whoever acts adversely to God and His Apostle then surely God is severe in requi ting evil This taste it and know that for the unbelievers is the Chastisement of fire '

(Mohammed Ali s translation of the Holy Quran P 181)

अब्दुल्ला यूसुफअली कृत अंग्रेजी अनुवाद —

8 7 But God willed
To justify the truth
According to His words
And to out off the roots
Of the unbelievers

8 13 I will instil terror
Into the hearts of the un believers
Smite ye above their necks
And smite all their
Finger tips off them

8 14 This because they contended
Against God and His apostle
If any contend against God
And His apostle, God
is strict in punishment

(Yusuf ali s translation of the holy Quran Vol I P 417-418)

पिकथाल नामक अंग्रेज मुसल्मानकृत अनुवाद निम्न प्रकार है —

8 7 'and allah willed that he should cause the Truth to triumph by his word and cut root of the disbelievers

8 12 I will throw fear into the hearts of those who disbelieve Then smite the neck and smite of them each finger

8 13 That is because they opposed Allah and His messenger who so opposeth Allah and His messenger, (for him) lo Allah is severe in punishment

8 14 That is the award so taste it and know that for disbelievers is the torment of the Fire

(the Glorious Quran by M P Pickthall Vol I P 226 927)

इस प्रकार कुरान के सब प्रारम्भिक वद् और

अंग्रेजी अनुवादों द्वारा महर्षि दयानन्द जी द्वारा उद्धृत अर्थ और उसके आधार पर कृत समालोचना की पुष्टि होती है।

कुरान सू० ९ आ १२३, १२६ का उल्लेख कर के उनका निम्न अर्थ सत्यार्थ प्रकाश मे दिया है।

'ऐ लोगो जो ईमान लाए हो लडो उन लोगों में से कि पास तुम्हारे हैं काफिरों से और चाहिये कि पावें बीच तुम्हारे दृढता।" इस पर महर्षि ने निम्न समीक्षा की है —

'देखिए—ये भी एक विश्वास घात की बातें खुदा मुसलमानों को सिखलाता है कि चाहे पडोसी हों या किसी के नौकर हों जब अवसर पावें तभी लडाई व घात करें ऐसी बातें मुसलमानों से बहुत बन गई है इसी कुरान के लेख से। अबतो मुसलमान समझ के कुरानोक्त बुराइयों को छोड दें तो बहुत अच्छा है समीक्षा नं० ८७

इन आयतों का प्रामाणिक कुरान के अनुवादकों ने निम्न अर्थ किया है —

शाह रफीउद्दीन साहब— ए लोगो जो ईमान लाए हो लडो उन लोगों से कि पास तुम्हारे हैं काफिरों मे से और चाहिये कि पावें बीच तुम्हारे सख्ती (शाह रफीउद्दीन कृत उर्दू अनुवाद पृ० २४६)

मौ० नजीर अहमद कृत अनुवाद— मुसलमानों! अपने आस पास के काफिरों से लड़ो और चाहिये कि वह तुम में करारापन मालूम करें। (हसन निजामी कृत हिन्दी अनुवाद पृ० २८८ मे)

हसन निज़ामी कृत अनुवाद—ईमानदारो। जो काफ़िर तुम्हारे आस पास रहते हैं उनसे लड़ो और उनके साथ ऐसा बर्ताव रक्खो कि जिस से वह तुम में कठोरता (व सख़्ती और शक्ति व जागृति) का अनुभव करें॥ हसन निजामी कृत हिन्दी अनुवाद पृ० २८८)

मौ० मुहम्मद अली कृत अंग्रेजी अनुवाद— O you who believe fight those of the unbelievers who are near to you and let them find in you firmness (Mohammed Ali s translation of the Quran P 209)

O ye who believe ! Fight those of the disbelievers who are gird you about and let them find firmness in you

(Yusuf Ali's translation Vol II P 471)

O ye who believe fight those of the disbelievers who are near to you and let them find harshness in you (The Glorious Quran by Pickthall Vol I P 293)

इस प्रकार इन सब प्रामाणिक अनुवादों द्वारा महर्षि दयानन्द द्वारा उद्धृत अर्थ और उसके आधार पर की गई समालोचना की यथार्थता स्पष्ट तया प्रमाणित होती है।

इस सम्बन्ध में मजीद खद्दरी पी० एच० डी० (Majid Khadduri Ph. D नामक विद्वान् की The Law of war and peace in Islam नामक पुस्तक से कुछ उद्धरण हम पिछले

दे चुके हैं। वही विद्वान् पृ० ३३ पर लिखते हैं–

6 "The jihad is a continuous state of war against the unbelievers

Theoretically speaking, Islam and Shick (Polytheism) could not exist together in this world, and it is the divine duty of the Muslims to slay the idolaters whereever you find them (Quran IX 5)

The whole world is reserved for the believers, as to idolaters their abode is hell and evil is the destination, (Quran IX 74) The nature of Islam's religiosity is its exclusiveness, especially of non heavenly religions

(The Law of War and Peace in Islam by Majid Khadduri Ph D. P 35)

अर्थात् जिहाद अविश्वासियों के विरुद्ध निरन्तर युद्ध की अवस्था है। सिद्धान्त रूप मे इस्लाम और शर्क (बहुदेवता वाद) इस ससार मे इकट्ठे नहीं रह सकते और कुरान ९ ५ के अनुसार यह मुसलमानों के लिये ईश्वरीय कर्तव्य है कि "मूर्ति पूजक तुम्हे जहा मिलें वहा उन्हे मार डालो।" सारा ससार केवल विश्वासियों के लिये सुरक्षित हैं। मूर्ति पूजकों का निवास दोजख वा नरक में है जो बहुत बुरी जगह है। (देखो कुरान ९ ७४) इस्लामी धर्मिकता का स्वरूप यह है कि केवल यही पृथक् रूप में रहे विशेषत जो यहूदी वा ईसाई मत के समान ईश्वरीय मत नहीं हैं वे सर्वथा न रहने दिये जाए

इन सब बातों से भी महर्षि दयानन्दजी की यह समालोचना सर्वथा सत्य सिद्ध होती है कि इस्लाम वा कुरान के उपदेश ससार में असहिष्णुता और अशान्ति के बढाने वाले हैं। विस्तार भय से इस विषयक अन्य आयतों पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार नहीं किया जा सकता।

कुरान की ऐसी शिक्षाओं का क्रियात्मक परिणाम:—

कुरान की घृणा असहिष्णुता और अशान्ति वर्धक शिक्षाओं का जो कुपरिणाम हुआ है इतिहास उसका स्पष्ट साक्षी है।

मि० ह्वीलर (Wheeler) ने History of India नामक ग्रन्थ में मुस्लिम काल का इतिहास लिखते हुए बताया है कि—

"There is but one God and Mohammad is His Prophet Believers were to be rewarded as loyal subjects unbelievers were to be punished as enemies and rebels' (History of India by Wheeler Vol IV Part 1 P 9"

अर्थात् अल्लाह एक है और मुहम्मद उसका पैगम्बर है। उस पर विश्वास करने वालों को इनाम दिया जाता था और अविश्वासियों को शत्रु और विद्रोही मानकर दण्ड दिया जाता था

रेवरेण्ड गैरिडनर Rev. W H T Gairdner) ने 'Reproach of Islam' नामक अपने ग्रन्थ में मुसलमानों द्वारा तलवार द्वारा किये गये अत्याचारों का वर्णन करते हुए लिखा है कि—

"The connection of Islam with India has been violent and bloody Before the 11th century violent and destructive expeditions had

taken place and forced conversions had been made Mahmud's expedition in 1019 A D was one of naked conquest murder and robbery

'The later invasion of Timur with his Mongols was unspeakably cruel and bloody To say that Islam's success here (in the Moghul period) also is not primarily due to the sword is to say what is a lie (Reproach of Islam by R v Gauidner P 109)

अर्थात् इस्लाम का भारत के साथ सम्बन्ध अत्यन्त हिंसा और रक्तपात पूर्ण रहा है ग्यारहवीं सदी से पूर्व भी हिंसा और विनाशात्मक अनेक आक्रमण भारत में किए जा चुके थे और अनेक जबर्दस्ती मुसलमान भी बनाये गये थे। सन् १०१६ में महमूद का आक्रमण ऐसे ही नग्न विजय, हत्या और लूट-मार का था।

पीछे तैमूर लंग का अपने मंगोलों के साथ आक्रमण अवर्णनीय क्रूरता और रक्तपात का था। यह कहना कि मुगल काल में इस्लाम की सफलता मुख्यतया तलवार के कारण नहीं हुई ऐसी बात कहना है जो सर्वथा असत्य है।

मि० टी० डब्लू आर्नल्ड (Mr. T W Arnold) M A C I E Professor of Arabic London University College के Preaching of Islam नामक पुस्तक की मुसलमान बन्धु तथा उनके समर्थक पं० सुन्दरलाल जी आदि अत्यधिक प्रशंसा करते हैं तथा इस बात को जानने के लिए कि प्रचार द्वारा इस्लाम कैसे फैलाया गया (न कि तलवार के ज़ोर पर) इसे पढ़ने की सब को सिफ़ारिश करते हैं। हम उस पुस्तक में से दो तीन स्पष्ट उदाहरण देना चाहते हैं जिससे यह ज्ञात हो कि कुरान की उपरिलिखित शिक्षाओं का कट्टर मुसलमानों के दिल पर क्या असर पड़ा था और उन्होंने मतान्धता में कैसे अत्याचार किए।

मि० आर्नल्ड अपनी पुस्तक के पृ० २५६ पर लिखते हैं—

'To many of them (Mohammedan invaders and founders of Great Empires) their invasion of India appeared in the light of a holy war Such was evidently the thought in the minds of Mahmud of Ghazni and Timur The latter (Timur) after his capture of Delhi writes as follows in his auto biography—

'I had been at Delhi fifteen days which time I passed in pleasure and enjoyment, holding royal courts and giving great feasts I then reflected that I had come to Hindustan to war against infidels, and my enterprise had been so blessed that whenever I had gone, I had been victorious I had triumphed over my adversaries I had put to death some lacs of infidels and idolaters and I had stained my proselytising sword with the blood of the enemies of the faith Now this crowning victory had been won and I felt that I ought not to indulge in ease, but rather to exert

myself in warring against the infidels of Hindustan (The History of India as told by its own historians, The Mohammedan Period by Sir H M Elliot edited by Prof John Dowson London Vol II P. 448.

Quoted in Preaching of Islam by T W Arnold P 256

अर्थात् भारत के अनेक आक्रान्ताओं और राज्य संस्थापकों में से बहुतों का यह भारत पर आक्रमण धार्मिक युद्ध के प्रकाश में दिखाई देता था।

महमूद गजनवी और तैमूर के मन मे स्पष्टतया ऐसा ही भाव था। तमूर लग ने देहली पर अधिकार जमाने पर अपने आत्मचरित्र मे यों लिखा '१५ दिन मैं देहली मे रहा जिस समय को मैंने खुशी मनाने, दरबार लगाने और बडे २ सहभोज करवाने में खर्च किया। तब मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि मैं हिन्दुस्तान मे काफ़िरों के साथ युद्ध करने के लिए आया था और मैं जहा भी गया वहाँ मुझे सफलता मिली। शत्रुओं पर मुझे विजय प्राप्त हुआ और लाखों काफ़िरों और मूर्ति पूजकों को मैंने तलवार के घाट उतार दिया तथा खुदा के शत्रुओं के रक्त से मैंने अपनी तलवार को रंजित किया। अब जब कि विजय श्री मुझे प्राप्त हो चुकी है, मुझे आराम नहीं करना चाहिए किन्तु हिन्दुस्तान के काफिरों के विरुद्ध युद्ध करने में अपने आप को पूर्णतया लगा देना चाहिए।

केवल तैमूर लग के ही मन मैं यह विचार न था किन्तु बहुत से मुस्लिम आक्रान्ताओं और शासकों का ऐसा ही विचार था। इस लिये मि० आर्नेल्ड कहते हैं।

"Most of the Muslim invaders, seem to have acted in the similar way in the name of Allah, idols were thrown down, their priests put to the swords, and their temples destroyed while mosques were often erected in their place It is true that the offer of Islam was generally made to the unbelieving Hindus before any attack was made upon them (Preaching of Islam by T W Arnold M A P 256)

अर्थात् प्राय सब मुस्लिम आक्रान्ताओं ने इसी उपरिनिदिष्ट भाव से काम किया। अल्लाह के नाम पर, मूर्तियां फैंक दी गईं हिन्दू पुरोहितों को तलवार के घाट उतारा गया, उनके मन्दिरों को नष्ट किया गया और उनके स्थानों पर मस्जिदें खड़ी की गईं। यह सत्य है कि आक्रमण प्रारम्भ करने से पूर्व प्राय इस्लाम स्वीकार कर लेने का निमन्त्रण अवश्य दिया जाता था।

टीपू सुलतान ने सन् १७८८ में निम्न आशय की घोषणा निकाली—

Every being in the district of Malabar with out distinction should be honoured with Islam that the houses of such as fled to avoid that honour should be burned, that they should be traced to their lurking places, and that all means of truth and falsehood, force and fraud should be employed to effect their universal conversion

Thousands of Hindus were accordingly circumcized and made to eat beef" (Malabar & Anjengo by C A Innes P. 72, 73) quoted

here from (Preaching of Islam by T W Arnold P 262)

अर्थात् मालाबार के जिले में प्रत्येक व्यक्ति का बिना किसी भेदभाव के इस्लाम में दीक्षित होने का गौरव दिया जाए। जो उसे स्वीकार न करने के लिये भाग जाए उनके घरों को जला दिया जाए, वे जहां छिपे हुए हों उनका पीछा किया जाए और सत्य असत्य, बलात्कार और छलकपट सब प्रकार के साधनों का सर्वथा मुसलमान बनाने के लिये काम में लाया जाए।

ऐसे ही मुस्लिम काल से औरङ्गजेब आदि के सैकड़ों उदाहरण दिये जा सकते हैं पर विस्तार भय से ऐसा करना अनावश्यक है।

अल्लाह और रसूल शिर्क

कुरान सू० ३ आ० १७८ में लिखा है फ आमिनू बिल्लाहि व रसुलिही ॥ अर्थात् अल्लाह और उसके रसूल के साथ ईमान लाओ।

सू० ४ आ० १३ मे कहा है "ये अल्लाह की हदें हैं जो अल्लाह और उसके रसूल का कहा मानेगा यह बहिश्त में पहुचेगा जिनमें नहरें चलती है और यही बड़ा प्रयोजन है।

सू० ४ आ० १४में कहा है व मै अस्सिल्लह व रसूलहू व यत अद्दहुदूदहू युद्खिल्हु नारन् खालिदीना फी हा व लहू अजाबुम् मुहीना ॥

अर्थात् जो अल्लाह की और उसके रसूल की आज्ञा भङ्ग करेगा और उसकी हदों से बाहर हो जाएगा वो सदैव रहने वाली आग मे जलाया जाएगा और उसके लिए खराब करने वाला दुःख है ॥

कुरान सू० ५ आ० ९० में लिखा है अती-उल्लाह व अत्तीउर्रसूल।

अर्थात् आज्ञा मानो अल्लाह की और आज्ञा मानो रसूल की। इन आयतों की समीक्षा करते हुए महर्षि दयानन्द जी ने लिखा—जब मुसलमान सिवाय खुदा के किसी के साथ ईमान नहीं लाते और न किसी को खुदा का साझी मानते हैं तो पैगम्बर साहेब का क्यों ईमान मे खुदा के साथ शरीक किया? अल्लाह ने पैगम्बर के साथ ईमान लाना लिखा इसीसे पैगम्बर भी शरीक हो गया पुनः लाशरीक कहना ठीक न हुआ। यदि इसका यह अर्थ समझा जाए कि मुहम्मद साहेब के पैगम्बर होने पर विश्वास लाना चाहिये तो यह प्रश्न होता है कि मोहम्मद साहेब के होने की क्या आवश्यकता है? यदि खुदा उसको पैगम्बर किये बिना अपना अभीष्ट कार्य नहीं कर सकता तो अवश्य असमर्थ हुआ॥ (समीक्षा स० ५३)

खुदा ही ने मुहम्मद साहेब को अपना शरीक कर लिया है और खुदा कुरान ही मे लिखा है और देखो खुदा पैगम्बर साहेब के साथ कैसा फसा है कि जिसने बहिश्त में रसूल का साझा कर लिया है। किसी एक बात मे भी मुसलमानों का खुदा स्वतन्त्र नहीं तो लाशरीक कहना व्यर्थ है ऐसी २ बातें ईश्वरोक्त पुस्तक में नहीं हो सकतीं। (समीक्षा स० ५५)

देखिये यह बात खुदा के शरीक करने की है फिर खुदा को लाशरीक मानना व्यर्थ है।
(समीक्षा स० ६६)

"अल्लाह और रसूल की एक अविरुद्ध आज्ञा है व भिन्न २ विरुद्ध? यदि एक है तो दोनों की आज्ञा पालन करो कहना व्यर्थ? और जो भिन्न २ विरुद्ध है तो एक सच्ची और दूसरी झूठी? एक खुदा और दूसरा शैतान हो जाएगा? और शरीक भी होगा।" (समीक्षा स० १२७)

अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने भी इस विषय की बड़ी कठोर आलोचना की है उदाहरणार्थ डा० मार्कस डौड्स(Marcus Dods M A D D.) ने Mohamed Buddha and Christ नामक पुस्तक में लिखा है कि—

The modesty and humility apparent in Mohammed so long as his mind was possessed with objective truth gradually gives way to the presumptuousness and arrogance of a mind turned more to a sense of its own importance To put the second article of the Mohammedan creed on the same level as the first, to make it as essential that men should believe in the mission of Mohammed as in the unity of God was ignorant, incongruous and false combination"

(Quoted in the Dictionary of Islam by T P. Hoghes P 395)

अर्थात् मुहम्मद के अन्दर जो नम्रता और विनय उस समय तक थे जब उसका मन सत्य की खोज में मग्न था धीरे २ लुप्त हो जाते हैं और उनका स्थान अभिमान और अहङ्कार ले लेते है जिन में अपने को अत्यावश्यक और महान् समझने की प्रवृत्ति होती है। मुसल्मानी कलमा के दूसरे भाग को (मुहम्मद रसूलअल्लाह) भी उतना ही आवश्यक बना देना जितना कि पहला भाग [लाइला इल्लल्लाह] है अथवा यह कहना कि मुहम्मद के पैगम्बर पन में विश्वास भी इतनाही अनिवार्य है जितना खुदा के एक होने मे विश्वास यह अज्ञान पूर्ण, असङ्गत वा असम्बद्ध तथा असत्य मय मिश्रण है।

मुहम्मद साहेब के विषय में मुसलमानों का विश्वास—

मुसलमानबन्धुओं का मुहम्मद साहेब के विषय में जो दावा है उसे The Great prophet नामक मुहम्मद के जीवन के लेखक एफ० के० खान दुर्रानी बी० ए० ने निम्न शब्दों में बताया है

"Mohammed was the most perfect man that ever lived" (The Great prophet by F K Khan Durrani B A, P 3)

"His (Mohammed's) life was the finest and his morals the highest thinkable This then is Islam—We should love Mohammed who taught us these things and try to walk in his footsteps and follow his example in all things" (The Great Prophet P. 3)

अर्थात्, मुहम्मद संसार में अब तक जितने मनुष्य उत्पन्न हुए हैं उनमें सब से अधिक पूर्ण था।

मुहम्मद का जीवन सब से अधिक पवित्र था और उसका सदाचार इतना उत्कृष्टतम था जितनी कल्पना हो सकती है अर्थात् सबसे ऊंचा था। इस्लाम यह है कि हमें मुहम्मद के प्रति प्रेम रखना चाहिये जिस ने इतनी अच्छी शिक्षाएं दीं उसके चरण चिन्हों पर चलने और सब बातों मे उसके प्रदर्शित उदाहरणके अनुसरण करने का प्रयत्न करना चाहिये

G A Asghar & Co अलाहाबाद द्वारा प्रकाशित The Life and Teachings of Mohammed the Great Arabian Prophet by a learned Mohammedan में अबुल बुखारी तथा Manners & morals of the Prophet by Imam Mohammed Ghiali के आधार पर मुहम्मद साहेब के विषय में लिखा है कि

"God Almighty had concentrated

in him (Mohammed) the noblest morals and the most exalted principles He was illiterate, unable to read or write, born in a benighted country among wild and ignorant people, to tend goats in a state of poverty and orphanage But God Almighty adorned him with the best of noble qualities, the highest morals and the most exalted habits, and taught him all that had passed and what was to be, all that was useful for future good and salvation all that was needful"

The Life & Teachings of Mohammed by a Learned Mohammedan P. 169

अर्थात् सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मुहम्मद साहेब के अन्दर सब से श्रेष्ठ आचार और सर्वोत्तम सिद्धान्त को एकत्रित कर दिया। वे अशिक्षित थे लिखने अथवा पढ़ने में असमर्थ थे, जगली और अज्ञानी लोगों के अन्दर वे पैदा हुए थे, गरीबी और अनाथता की अवस्था में वे बकरियां चराते थे किन्तु सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ने सर्वश्रेष्ठ गुणों सर्वोत्तम आचार और सर्वोत्कृष्ट स्वभावों से उनको सुभूषित किया था तथा भूत, वर्तमान और भविष्य में मनुष्यों के कल्याण और मुक्ति के लिये आवश्यक सारी बातों का ज्ञान उन्हें दे दिया था।

डा० मुहम्मदअली अलहज सलामीन B. Litt H.M.D ने Mohammad the Commander of the faithful नामक पुस्तक में मुहम्मद साहेब के विषय में लिखा है

"Mohammad was the first and last of all the Reformers, the greatest of all who laid the solid foundation of common and universal brotherhood He brought the worship of God into existence, not of gods and godesses in whose presence, the pauper and the prince are alike"

Mahammad the Commander of the Faithful by Dr Mohammad Ali Ali Haj Salmin B Litt H M D Preface P IV

'Inthis Book efforts are made to disclose and display at length the different qualities that the great Prophet had possessed Every minute incident shows how his character and conduct was exemplary, a model man in every respect, and on this basis the last revealed Book of God emphasised when it declared "O Believers ! You got in the Apostle of Allah the best example"

(Mohammad the Commander o the Faithful by Dr Mohammad Ali Preface P VII

अर्थात् मुहम्मद साहेब सब सुधारकों में प्रथम और अन्तिम थे। जो उन सब से बड़े थे जिन्होंने सार्वजनिक भ्रातृत्व की दृढ़ आधार शिला रक्खी। उन्होंने ईश्वर की पूजा (न कि देवी देवताओं की) प्रचलित की जिस के आगे राव रंक सब समान हैं।

इस पुस्तक में मुहम्मद साहेब के गुणों को विस्तारसे दिखाने का यत्न किया गया है। प्रत्येक घटना दिखाती है कि उनका चरित्र और आचार

व्यवहार आदर्श रूप था। वे प्रत्येक दृष्टि से एक आदर्श व्यक्ति थे और अन्तिम ईश्वरीय ज्ञान (कुरान) इसी बात पर बल देता है जब यह घोषणा करता है कि तुमने खुदा के पैगम्बर में सर्वोत्तम आदर्श पाया है।'

देहली के मुस्लिमलीगी अंग्रेजी अखबार 'Dawn' के २६ फर्वरी १६४५ के अङ्क में Prophet Mohamad Greatest reformer of Mankind लेख लिखते हुए शेरअली ने मुहम्मद साहेब के विषय में बताया कि Mohammad's Character was pure and stainless अर्थात् मुहम्मद साहेब का चरित्र सर्वथा पवित्र और निष्कलङ्क था। इस सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों की सम्मति का जिक्र करते हुए मि. शेरअली ने लिखा—

"Recent writers like Arnold and Tor Andrae to mention only a few have shown to the world, the purity of inspiration and the high quality and nobility of the Prophet's teachings and character "Prophet Mohammad was the greatest reformer the world has ever seen (Dawn dated 26th February 1945) अर्थात् अर्नल्ड और टोर एन्ड्रे जैसे वर्तमान लेखकों ने संसार को पैगम्बर मुहम्मद के इलहाम की पवित्रता और उसकी शिक्षाओं की उच्चता और श्रेष्ठता को संसार के सामने रक्खा है पैगम्बर मुहम्मद संसार में अबतक जितने सुधारक हुए हैं उनमें सबसे बड़ा था।

महर्षि दयानन्द जी ने इस विषय में लिखा है कि 'यदि सब पर प्रबल पैगम्बर मुहम्मद साहेब होते तो सबसे अधिक विद्वान् और शुभ गुण युक्त क्यों न होते। इसलिए कूजड़ी अपने बेरों को खट्टा नहीं बतलाती वैसी यह बात भी है।"

"यदि नबी खुदा का भेजा होता तो (लेपालक) बेटे की स्त्री पर मोहित क्यों होता?" (समीक्षा) स० १३०) पूर्व इसके कि महर्षि दयानन्द जी के उपर्युक्त लेख की यथार्थता पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया जाए आर्नल्ड और टार ऐन्ड्रे के ग्रन्थों से कुछ उदाहरण देना आवश्यक प्रतीत होता है क्यों कि मौ० शेरअली तथा अन्य मुसलमान लेखकों ने यह प्रसिद्ध कर रखा है कि वे मुहम्मद साहब के चरित्र और उनके इलहाम की पवित्रता और श्रेष्ठता को मानने वाले थे। निरसन्देह टोर ऐन्ड्रे नामक जर्मन विद्वान् ने अपनी 'Mohammad the man and his faith' नाम की पुस्तक में इस बात में मुहम्मद साहेब की बड़ी प्रशसा की है कि उन्होंने अरब में प्रचलित मूर्ति पूजा, कन्या घात, आदि कई कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज उठाई पर उनके चरित्र के सम्बन्ध में उन्होंने स्पष्ट लिखा—

Unfortunately it can not be said that righteousness and straight forwardness are the most prominent traits of Mohammed's character as a whole We have already cited examples, like the Nakhla expedition and the murder of Kabibn Al Ashraf and there are similar cases which sometimes show a very repulsive leanings towards craftiness and trickery " (P 260)

"No doubt the trait of Mohammed's character most offensive to the Christian occident is his sexsou-

ality. Even the Jews in Medina found Mohammed's conduot to be offensive in this respect, and then asked 'what kind of prophet is this man who only thinks of marrying? "Undonbtedly a prophet who declares that women and children belong to the enticements of worldly life and who nevertheless accumulates harem of nine wives, in addition to various slave women is a strange phenomena when regarded from the standpoint of morality The situation is not improved by the fact that upto Khadijah's death that is until Mohammed was fifty years old he was content with one wife At the height of his career when he was already an ageing man, he gave free reign to his sexsual impulses"

(Mohammed the man and his faith by Prof Tor Andrae P 264)

अर्थात् दुर्भाग्य से यह नहीं कहा जा सकता कि सदाचार वा धर्मपरायणता तथा सरलता मुहम्मद के चरित्र के सम्पूर्णतया मुख्य चिन्ह थे। हम इसके कुछ उदाहरण पहले दे चुके हैं और ऐसे ही अन्य अनेक हैं जो उसकी कई बार चालाकी वा धूर्तता और छल कपट की और घृणा जनक प्रवृत्ति को दिखाती हैं।

निस्सन्देह पाश्चात्य ईसाइयों को मुहम्मद साहेब के चरित्र की जो बात सबसे अधिक अप्रिय तथा कुत्सित प्रतीत होती है वह उसका विषयीपन है। मदीना के यहूदी भी इस विषय में मुहम्मद के आचार व्यवहार को अप्रिय अथवा कुत्सित पाते थे और वे पूछते थे यह किस तरह का पैगम्बर है जो केवल शादियों का विचार करता है?

इसमें सन्देह नहीं कि एक पैगम्बर के लिए जो इस बात की घोषणा करता है कि स्त्रियां और बच्चे सांसारिक जीवन के बन्धन हैं पर साथ ही ६ स्त्रियों और बहुत सी दासी स्त्रियों के अन्त पुर को एकत्रित करता है सदाचार की दृष्टि से बड़ी विचित्र बात है। यह कहने से स्थिति सुधरती नहीं है कि खदीजा की मृत्यु तक जब मुहम्मद की आयु ५० वर्ष की थी वह एक ही स्त्री से सन्तुष्ट था। अपने जीवन की उन्नत अवस्था मे, जब वह वृद्ध हो चुका था उसने अपनी भोग प्रवृत्ति को खुला अवकाश दे दिया।" यदि मुसलमान बन्धु मुहम्मद साहेब के चरित्र अथवा आचार व्यवहार विषयक प्रो० टोर ऐन्ड्रे द्वारा दिए गए इस प्रमाण पत्र से सन्तुष्ट हैं तो हमें इसके विषय में कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं। महर्षि दयानन्द जी की आलोचना को किसी भी रूप में कठोर नहीं कहा जा सकता फिर उससे हमारे मुसलमान भाइयों को इतनी चिढ़ क्यों है कि उस पर कहीं सरकार द्वारा जब्त कराया जाता है यह समझ में नहीं आता।

आनल्ड नामक जिस विद्वान को मुहम्मद साहेब के इलहाम तथा आचार व्यवहार का बड़ा प्रशंसक इस मौ० शेरअली के लेख में बनाया गया है? मि आनल्ड D D की इलहाम विषयक सम्मिति को हम पहले उद्धृत कर चुके हैं जिसमें उन्होंने लिखा कि

'Mohamad completed his career as un imposert, who brought forth his psendo relations tins when ever he foundil hecessarn to sanction

the most unjustifiable acts"

(Islam and Christianity by J M Arnold D D P 77)

इसी पुस्तक मे आगे उन्होंने मुहम्मद साहेब के आचार व्यवहार के सम्बन्ध में अपनी सम्मति इन शब्दों में प्रकट की—

In Mohammed's personal life, those moral requisitions only were fulfilled which would answer to a prophet of Arabia, for although he must be condemned as a false Prophet if brought before the tirbunal of pure ethics, yet according to the ethics of Arabia his very faults would be deemed virtues, thus it becomes intelligible why his claims to the dignity of a Prophet were not rejected notwithstanding those flagiant immoralities, which the Koran records to his shame"

Islam and Christianity by J M. Arnold D D P 176)

'The character of Mohammed himself furnishes a powerful argument against his claims to be a messenger from God Intellectually he stood high, but morally low A Mohammedan author informs us that the Prophet confessed he delighted in women and perfumes Licentiousness grew upon him in the latter part of his life and upto its very close. He had in all fifteen wives, at the time of his death he had nine."

Islam & Chistianity by J M. Arnold D D. P 229-230)

अर्थात् मुहम्मद साहेब के वैयक्तिक जीवन में केवल वही नैतिक गुण पाये जाते थे जो अरब के पैगम्बर के लिये पर्याप्त समझे जाते थे क्यों कि यदि उसे शुद्ध सदाचार के न्यायालय के सामने लाया जाए तो उसे एक असत्य पैगम्बर के रूप में तिरस्कृत किया जाएगा तो भी अरब के सदाचार शास्त्र के अनुसार उस के दोषों को भी गुण समझा जाएगा। इस प्रकार यह समझ में आजाता है कि उसके पैगम्बर होने के दावे को कुरान मे निर्दिष्ट उसकी सदाचार विषयक भयङ्कर त्रुटियों के होते हुए भी क्यों नहीं अस्वीकृत कर दिया गया।

मुहम्मद साहेब का अपना चरित्र उसके ईश्वरीय दूत होने के दावे के विरुद्ध प्रबल युक्ति प्रस्तुत करता है वह बौद्धिक दृष्टि से उन्नत था किन्तु सदाचार की दृष्टि से हीन। एक मुसलमान लेखक हमें बताता है कि मुहम्मद साहेब को अपनी स्वीकृति के अनुसार उन्हे स्त्रियों और सुगन्धित पदार्थों से विशेष प्रसन्नता होती थी। जीवन के पिछले भाग में और अन्त तक कामुकता उन पर सवार हो गई थी। उनकी मिलाकर १५ स्त्रियां थीं और मृत्यु के समय ६ जीवित थीं।

यदि हमारे मुसलमान बन्धु आर्नल्ड के इस प्रमाण पत्र से प्रसन्न हैं तो हमे इस पर कुछ टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं। केवल इतना ही लिखना पर्याप्त है कि महर्षि दयानन्दजी ने तो मुहम्मद साहेब के लिये केवल विषयी शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ मैक्डनल्ड कृत संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी आदि के अनुसार Given to sensual pleasure है। ऊपर की आलोचना उसकी अपेक्षा कई गुणा अधिक कठोर है यह पाठक स्वयं देख सकते हैं।

ऊपर जो उद्धरण मुसलमान बन्धुओं के The Great Prophet आदि पुस्तकों से हमने दिए है उनमें मुहम्मद साहेब को सर्वथ

पूर्ण निष्कलङ्क आदर्श तथा सब विषयों में अनुकरणीय बताया गया है। वहाँ कहा गया है कि W sho ıl l try t valk n Moha n med s f ot steps n l follow his xam ple ın all things F o Gt at prophet by F K Kh ı D ırı ı ıı b A P 31

अर्थात् हमें मुहम्मद साहेब के चरण चिन्हों पर चलने और सब बातों में उनके द्वारा प्रदर्शित उदाहरण के अनुसरण करने का प्रयत्न करना चाहिए

अब यह सर्वसम्मत मत है कि मुहम्मद साहेब ने ... जब शादी की तो उनकी उमर ५ ... थी ... ४० ... M l aı m l he comm and ctl Lai tul ... मुहम्मद अली I I tt H M D ने इस विषय में लिखा है M namne l aırıed only at the २० of 25 nd tl at to a widow of 40 (Mol amm d tl om an ler of the fait f ıl l v D Muhammad Aly Haj l Jıtt H M D) I 7

अर्थात् मुहम्मद साहेब ने २५ वें वर्ष ... थे ४० ... एक विधवा (खदीजा) से शादी की ... ही सब जीवन चरित्रों में लिखा है। क्या इस प्रकार के विवाह का मुसलमान भाई आदर्श विवाह मान सकते हैं ?

आयशा के साथ मुहम्मद साहेब के विवाह का विषय भी इस सम्बन्ध में विचारणीय है। मुहम्मद साहेब की आयु लगभग ५२ वर्ष की थी और आयशा की आयु के बारे में मिनहाजुल ... सफ १०५ में लिखा है कि

आयशा ... शादी के वक्त छ साल की थी।" उसी पुस्तक के सफे १५८ में लिखा है कि आयशा जफाफ (सम्भोग) करने के समय ६ साल की थी। स १५८

Dictionaıy of Islam P 399 में आयशा के बारे में प्रामाणिक पुस्तकों के आधार पर ऐसा लिखा है कि Ayishah was betrothed when she was only 7 years old and was married at 10 about the 9th month after the flight to Al Med na

अर्थात् आयशा सगाई के समय केवल ७ साल की थी और विवाह के समय १० वर्ष की। The Sp ııt of Islam के लेखक राइट आनरेबल सर सय्यद अमीर अली एम ए ने इस विषय में निम्न टिप्पणी दी है —

Abu Bakr had a little laughter na med Ayesha a ıd ıt was the desıre of his life to ement the atta hment wh ch existe l between himself nd the prophet by giving Mohmmed his laughter ın marriage The child was only seve years of age but the mai ners of the country recognised s ch al iances At the earı est so licitati n of th disciple th lit le maiden be ame the wife of the pro phet

The Spirit of Islam hap iv p 194

यहां बताया गया है कि आयशा ७ साल की आयु में मुहम्मद साहेब की स्त्री बन गई।

आज कल के कई मुसलमान लेखक इस बात को स्वीकार नहीं करते कि आयशा बेगम की आयु विवाह के समय ७ ६ या १० वर्ष की थी। Mohammad the Commander of the faithful के लेखक डा मुहम्मद अली इस विषय में लिखते हैं —

His marriage with Aisha This marriage was considered some thing tyrannical to Aisha who was then only nine years old, where as the prophet

was an old man अर्थात् इस विवाह को अत्याचार पूर्ण समझा गया था क्यों कि आयशा ९ वर्ष की थी और मुहम्मद साहेब वृद्ध थे। इसका खण्डन करते हुए मुहम्मद अली ने लिखा है:--

First of all, It is wrong to say that Aisha was only Nine at the time of her marriage' and amidst all the conflicting accounts, thirteen may be safely put as her age then (Mohammad the commander of the faithful P 8) अर्थात् यह कहना अशुद्ध है कि आयशा विवाह के समय केवल ९ वर्ष की थी। इस विषय में जो परस्पर विरुद्ध वृत्तान्त पाये जाते हैं उन में से १३ वर्ष की आयु को ठीक माना जा सकता है।

वैसे आयशा की १३ वर्ष की आयु मानने पर भी प्रश्न ज्यों का त्यों बना रहता है कि क्या ५२ वर्ष के पुरुष का १३ वर्ष की कन्या के साथ विवाह का आदर्श और अनुकरणीय माना जा सकता है?

मुहम्मद साहेब के अपने दत्तक पुत्र जैद की पत्नी जैनब के साथ विवाह की चर्चा पहले की जा चुकी है। प्रश्न यह है कि क्या इस प्रकार के विवाह को हमारे मुसलमान बन्धु आदर्श वा अनुकरणीय मानने को तय्यार हैं? यदि नहीं तो वे महर्षि दयानन्द तथा अन्य सत्य प्रिय समालोचकों की इस विषयक आलोचना को क्यों बुरा मानते हैं?

(शेष फिर)

The Satyarth Prakash & Our Duty

(P esident al a llr s delivered by Shri Madan Mohan ji Seth M.A LL B Chief Justice Bhara pu S ate Pres le U P Arya Pratinidhi Sabha at the Satyarth Prakash Conference held at Ram Ga h on 5th June 1945)

One should always be ready to ccept truth and renounce untruth" is the 4th pr nciple of the Arya Samaj,

It was to put into practice th s precept that Swami Davanand the founder of the Arya Sam ij wrote Satyarth Prakash which has been happily called 'Light of Iruth" in English The great Swan i in the introduction to the Satyarth Prakash observes 'My chief aim in writing thisbook is to unfo d truth "

He further goes on to say, "It is not our object to hurt any one's susceptibilities o to injure any one, on the other hand our a m is t further the advancement,and advance i w d b i g of mankind help (all) men in the ascert unment of what is right and to enable them to accept truth and reject falsehood In our opini n there is no other way of elevatii g the human race

The Satyarth Prakash consists of fourteen chapters the first ten chap ters are devoted to the exposition of Vedic pri ciples, while the last four chapters contain a criticism of different religions For in tance chapter eleven is devoted to criticism of various religious sects of Hindu ism, while other Chapters deal with Budhism, Christianity and Islam Chapter Eleven clearly shows how uuprejudiced Swami Dayanand was He criticised the sects belonging to his own religion pr babably with greater force than other religions, but in doing so his aim was always to place truth before the human race He a iticipated some of his readers might not like some of his observations and to meet them he wrote in his introductlon to Satyarth Prakash as follows —

"It is our firm belief that every thing calculated to the advancement of knowledge and righteousness is like poison to begin with but like nectar in the end We have kept all this in view while writing this book Let all those who read or hear it being read keep an open mind, enter into the spirit of the author and form an independent opinion'

At first his own co-religionists raised a hue and cry but when they calmly studied his works they got reassuredbut, as the irony of fate would have it, now those who are much closer to him in their faith in God have begun to decry his observations in the fourteenth chapter of the Satyarth Prakash. In this behalf I shall respectfully draw the

attention of my Muslim Brethren to the following observations of the late Sir Syed Ahmed Khan, the greatest leader that the Islam has produced in India in modern times —

"I was much acquainted with the late lamented Swami Dayanand Saraswati I respected him very much as he was such a good and learned man that the followers of every religion were bound to hold him in respect I may possibly be mistaken but so far as I recollect the Swami believed Matter which he called Maya to be an eternal substratum, and but for this his faith in God was similar to that of Mohammedans On the whole, he was a man whose equal is not now to be found in India Every man should deplore the loss caused by the death of such a great man' (Translation of an extract taken from a lengthy article in Urdu published in the Akhbar Kohi noor of Lahore, for 1883 p 1465)

This great Muslim leader did not find anything objectionable in the writings of Swami Dayanand Nor do we find any other Muslim leader of those times taking any such objection as is now raised by some followers of Islam. For instance we find a great Muslim writer, late Khan Bahadur Moulvi Zaka Ullah Khan writing about Swami Dayanand and the Arya Samaj in the following strain in his learned thesis on religious progress under British Rule —

'Let us look at Swami Dayanand Saraswati a great religious reformer of this reign How much the Hindus have been benefited by his criticism of their relgious system The Swami was educated in Sanskrit by pandits of the old school The new English system had nothing to do with his education He found no new religion but had belief in those very Shastras that were held sacred by the Hindus He wrote their commentaries and translated them into Hindi Many Hindus do not acknowledge the authority of his commentary The Swami freely attacked the popular religion of the Hindus and never cared as to what the Hindus would call him

In former days, if any Hindu read 'kalma (i e accepted Islam) or got himself baptised he could by no means re enter his former, religion but was outcaste l for ever But the Arya Samaj has now begun to reclaim them to their creed In the Etawah district the Samaj has recently reconverted 370 Raj puts who had embraced Mohammedanism. Besides this it has reclaimed many Hindus who had become Christians During the present famine the orphanages

under the control of the Arya Samaj have publicly announced that no Hindu child be made over to the followers of a different religion but be sent to the Samaj orphanages which would bear the whole expense of travelling and of his rearing. The samaj has washed away from the skirts of Hinduism the stain of non admittance of men of other religions into its fold.

It may be that this reclamation of Hindu renegades carried out by the Arya samaj has given offence to some bigoted votaries of other religions and that seems to be the cause of the present agitation started by some of our Muslim friends. But I am sure if they calmly study the writings of Swami Dayanand they will be as much satisfied with them as the Hindus have been.

Recently in very high quarters a suggestion has been made to revise the Fourteenth Chapter of the Satyarth Prakash. To my mind it is a very curious suggestion. I may respectfully submit that nobody has got a right to revise the work of an author except he himself. It is not a case of a law book bringing it upto date in the light of the Rulings of the Highest Courts of the land. Satyarth Prakash is not a book compiled by Arya Samaj and I consider that the Arya Samaj has no right whatsoever to revise it. I remember of a similar suggestion which was made in 19 0 by a noted Arya Samajist of the Panjab—late Bhagat Iswar Dassji, regarding the remarks about Sikh religion in Satyarth Prakash. At that time the meetings of the Paropkarini Sabha and probably of the Sarvadeshik Sabha were held at Lahore where the noted Exhibition took place. We discussed that matter and the then leaders of the Arya Samaj amongst whom were included late Pt Ghasiramji, M. A., and Mahatma Narain Swamiji who is happily still amongst us came to the conclusion that they and the Arya Samaj had no such right to tamper with the writings of the founder of the Arya Samaj. Similar is the case with the present suggestion. It is true that it comes from one of the greatest men of our times but we have to consider whether we have got such right and such a power. I submit we have not got. On the merits too, much can be said on either side and as we have seen above the whole intention of the author of the Satyarth Prakash, we consider there was nothing malafide in it. I shall like to request you to take a strong line in the matter and to decide once for all that the Arya Samej can not entertain the

suggestion and we should thereby finally set at rest the movement which may prove mischievous and against the best interests of the Arya Samaj

What is required of the Arya Samaj is that we should afford all facilities particularly for the study of the Satyarth Prakash to as wide a circle as possible, so that every right thinking man may form his own idea of the teachings of the Satyarth Prakash For this purpose we should print and publish as large a number of copies of Satyarth Prakash as possible and that too in every language of the country Wide circulation of English Translation of the Satyarth Prakash is specially indicated If there be any difficulty owing to present circumstances in the way of the Sarvadesik and the Propkarini Sabhas to print and publish Satyarth Prakash in English on account of their not publishing and printing it before the Paper Control Order came into force, then this work may be entrusted to the Arya Partinidhi Sabha of the United provinces which Sabha published the second edition of the Egnlish Translation of the Satyarth Prakash in 1915

In order to concentrate on the work of giving widest publicity to Satyarth Prakash I suggest that a Satyarth Prakash Jayanti be celebrated Before that, steps should be taken to widely publishing the Satyarth Prakash and in presenting its copies to learned men of the world and collecting their opinions and publishing them in a commemoration volume at the time of the Jayanti The introduction of the Satyarth Prakash by Swami Dayanand shows that the work was written on Bhadrapad shukla Paksh 1931 Vikram Thus little over sixty years have passed and we can very well celebrate the Diamond Jubilee "हीरक जयन्ती of Satyarth Prakash, say at the end of 1945 or in the beginning of 1946 at a central place like Delhi I believe by that time the clouds would break and the atmosphere would be cleared and we shall have the Vedic sun shining brightly and giving the world full Light of Truth

---

पुस्तक समीक्षा

प्रणवरहस्य—

मूल लेखक स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती अनुवादक—स्वा स्वरूपानन्द जी सरस्वती प्रकाशक- जेनरल प्रिन्टिंग वर्क्स लिमिटेड् ८३ पुराना चाइना बाजार स्ट्रीट कलकत्ता मूल्य ॥=)

इस पुस्तक में स्वा शिवानन्द जी सरस्वती ने ओ३म् के महत्व और रहस्य को प्रकट करते हुए उसके ध्यान के प्रकार पर प्रकाश डाला है। भूमिका में स्वामी जी ने ठीक ही लिखा है कि 'ओ३म् का निरन्तर जप, सगीत और ध्यान वेदान्तिक साधना का आवश्यक अङ्ग है। बार २ ओ३म् का यश गाओ। अपने हृदय और आत्मा को ओ३म् के सगीत की ओर सदा लगाए रक्खो। जीवन की समस्त क्रियाए पवित्र प्रणव की पूजा के रूप मे करो। ओ३म् ही तुम्हारे जीवन का लक्ष्य हो ओ३म् के दिव्य आनन्द मे ही तुम सदा डूबे रहो इत्यादि।" जहा स्वामी जी ने अद्वैत के भावों का जगह २ पर प्रवेश कराया है उन से हम सवथा असह मत हैं विशेषत 'ओ३म् ध्यान के लिये उपयुक्त मन्त्र' शीर्षक ३य परिच्छेद से जिस मे उन्होंने लिखा है कि 'आप ही सर्व व्यापी विशुद्ध चिदानन्द हैं। आप ब्रह्म से पृथक जीव हैं ऐसी विपरीत वा द्वैत भावना को अपने हृदय मन्दिर में घुसने भी न दें। द्वैत भाव का पूर्ण बहिष्कार कर दें। ब्रह्म सत्य जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापर "सच्चिदानन्द स्वरूपोऽहम्, मह ब्रह्मस्म्यह सदा।' इत्यादि का जप करें।" प्रारम्भ में 'ओ३म् की प्रार्थना' शीर्षक के नीचे 'श्री व्यासभगवान् नमो ऽस्तुते, जय विष्णु अवतार नमोऽस्तुते।

जय शङ्कर अवतार नमोऽस्तु। इत्यादि वाक्यों का प्रयोग हमें सर्वथा अनावश्यक और अनुचित प्रतीत होता है। इस प्रकार कई अशों में मत भेद रखते हुए भी हम इस पुस्तक को परमेश्वर के सर्वोत्तम और 'ओ३म् क्रतो स्मर' इत्यादि वेदमन्त्रों द्वारा प्रतिपादित सर्वसम्मत नाम 'ओ३म्' के जप की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने की दृष्टि से उपयोगी समझते हैं। कहीं कही पौराणिक और नवीन वेदान्त के भावों का इसमें समावेश न होता तो यह पुस्तक सब के लिये अधिक उपयुक्त हो जाती॥ (ध० दे०)

सत्यार्थ प्रकाश रक्षा आन्दोलन सम्बन्धी आवश्यक समाचार

Mr Horniman Condemns Satyarath- Prakash ban

"The banning of the publication of Satyartha Prakash one of the holy scriptures of the Hindu faith is a monstrous abuse of power by the Government of Sind, whose action in the matter has a communal flavour which is altogether deplorable and reprehensible , writes Mr B G Horniman of Bombay Sentinel to Mr S Chandra, Asstt Secretary, All India Satyarth Prakash Defence Committee in reply to his letter Mr Horniman further writes, "It is a matter which interests or should interest and provoke the condemnation of every individual in the country for what has been done in the case of a religious book, held in reverence by all Hindus today may, if this outrage is condoned be done in the case of the scriptures of any other religion tomorrow There seems to be no justification whatever for the action of the Sind authorities and it should meet with the condemnation of all who value the liberty of the press and the right of free publication, whether matter published be religious, political or social I shall heartily support any movement or action taken to have this outrageous ban removed .

Rajen Babu Condemns Ban on Satyarth Prakash

Dr Rajendra Prasad in a statement, says that the ban on the 14th Chapter of the Satyartha Prakash by the Sind Government is unjustifiable In my opinion he says, there should be no ban on the publication or circulation of any book This is also applicable in the case of religious books The ban on any portion of the Satyartha Prakash cannot be justified in any way particularly when the book has been in circulation for such a long time Such things as have been held objectionable in the book are contained in other religious books also and similar things are published every day in periodicals and magazines The Sind Cabinet should be well advised to lift the ban

Pandit Nehru condemned the ban of Government on ' Peoples War and order in Sind on Satyartha Prakash, he made it clear that it was not because he liked or disliked them that he condemned the order but because the order itself was wrong as it curtailed and infringed the civil liberties of the people, and in this light only he was condemning the orders

ता० २३ जून को अखिल भारतीय सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति का निश्चय

ता० २३ जून १९४५ की अखिल भारतीय सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति की बैठक में समिति के प्रधान माननीय श्रीयुत घनश्यामसिंह जी गुप्त तथा श्री ला० ब्रजलाल जी ने उन प्रयत्नों का सविस्तार वर्णन किया जो उन्होंने सत्यार्थप्रकाश पर से सिन्ध सरकार द्वारा लगाये गये प्रतिबन्ध को हटवाने के लिये किये और उन्होंने तत्सम्बन्धी आवश्यक पत्र व्यवहार सुनाया। समिति के विभिन्न विभागों ने जो इस विषय में आगे कार्य किया उसे भी बताया।

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि इस विषय ने जो अब अंतिम रूप धारण किया है उसको दृष्टि में रखते हुए सम्प्रति कोई भी निश्चित कदम नहीं उठाया जा सकता। अतः मीटिंग ता० १५ जौलाई के लिये स्थगित की जावे।

देशराज चौधरी
मन्त्री
अखिल भारतीय सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति

The following letter and telegram included in the letter were sent by the President and the Secretary respectively of the International Aryan League to the Viceroy, Mahatma Gandhi and all other delegats to the Simla Conference —

Dear Sir,

I beg to confirm the following telegram sent to you yesterday

"This meeting of the working committee of the International Aryan League declares on behalf of the Arya Samaj world, that the Ban imposed on Satyarth Prakash by the Sind Government clearly shows that the Muslim League is saturated with the Medieval religious intolerance and persecution and therefore no settlement with it (the Muslim League) will be acceptable to the Arya Samaj unless religious liberty is guaranteed and the present ban is removed"

(Sd) SUDHAKAR
Secretary,

International Aryan League Delhi

I would like to bring to your notice and that of the conference what is well known that the Arya Samaj is a religious body engaged in religious charitable, and educational work It has, as such, no politifal ambitions or rivalry with any political party in India, The Samaj is however, naturally deeply concerned that their fundamental rights of religious liberty should not be attacked on any pretext and in any shape or form

It is evident that the ban has been imposed by the Sind Government, at the behest of the Muslim League and in obedience to its Lahore resolution, to serve some political ends. It is a flagrant misuse of the Defence of India Rules for persecuting a small minority

Ths book has been in existence for over seventy years widely published in almost all the languages of India It has been the subject of extensive preaching from pulpits and platforms all these years

For the last 75 years the British Government in India whom we have been calling beauracratic has been tolerant (even though Chapter 13 of the book contains criticism of the Christian Faith as Chapter 14 Muslim Faith) although Her Majesty Queen Victoria and Successive Kings have been the defenders of the Christian Faith It is really lamentable that the foreign British Government can be better relied on for protection of our religious rights than the indiginous Muslim League Government

The International Aryan League (Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha) would like to impress that it is as anxious as any one else that there should be settlement of the political problems and that the dead-lock should end But all political progresc will be a mirage when the very foundation of civilized Government i e religious tolerance, is absent from the minds of the political party with whom settlement is sought. Swaraj will have no meaning unless there is religious liberty

Narayan Swami.

उक्त पत्र का हिन्दी अनुवाद

निम्नलिखित पत्र तथा तार जो पत्र मे सम्मिलित है सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा मन्त्री ने वायसराय महोदय, महात्मा गाधी, मिस्टर जिन्ना, श्री राजगोपालाचार्य, श्री बी जी० खेर, श्री गोविन्द बल्लभ पन्त पण्डित आर० एम० शुक्ला डाक्टर खॉ साहिब श्री श्री कृष्ण सिन्हा सर मोहम्मद सादुल्ल, सरगुलामहुसैन, हिदायत उल्ला, मलिक खिजर हयातखॉं, सर नजीमुद्दीन, राजा पालमडी, श्री भूलाभाई देसाई, नवाबजादा लियाकतअलीखा डाक्टर पी० एन० बनर्जी, सर हेनरी रिचर्डसन, राना गोबिन्दलाल शिवलाल मोती लाल मिस्टर हुसैन इमाम राव बहादुर एन शिव-राज, मास्टर तारासिंह जी तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद को शिमले भेजे हैं —

"मै आपको कल भेजे हुये निम्न लिखित तार की सम्पुष्टि करता हूॅ —

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्त-रग सभा समस्त आर्य जगत् की ओर से घोषणा करती है कि सिन्ध सरकार ने जो सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाया है उससे स्पष्ट विदित होता है कि मुस्लिम लिग मध्यकालीन समय की मज-हबी असहनशीलता तथा अत्याचारो की मनोवृति से ओतप्रोत है और इसलिये मुस्लिम लीग के साथ कोई भी समझौता आर्य समाज को स्वीकार नहीं होगा उस समय तक जब तक धार्मिक स्वत-न्त्रता की गारन्टी नहीं दी जाती और वर्तमान प्रतिबन्ध को नहीं हटाया जाता।"

सुधाकर मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य
प्रतिनिधि सभा, देहली।

मैं आपके तथा कान्फ्रेंस के ध्यान में यह बात लाना चाहता हूॅ जो कि भली प्रकार विदित है कि आर्यसमाज एक धार्मिक सस्था है जो धार्मिक, परोपकारी तथा शिक्षा के कार्य में लगा हुआ है। इसलिए इसकी कोई राजनैतिक आका

स्वार्थ नहीं हैं और न यह भारत में किसी राजनैतिक पार्टी का प्रतिद्वन्द्वी है। आर्य समाज का तो विशेष सम्बन्ध इस बात से है कि उसको धार्मिक स्वतन्त्रता के मौलिक अधिकारों पर किसी भी बहाने से अथवा किसी भी रूप में प्रहार न हो।

यह स्पष्ट है कि सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध मुस्लिम लीग के लाहौर प्रस्ताव के आदेशानुसार सिन्ध सरकार ने अपने कुछ राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए लगाया है बहुत न्यून संख्या वालों पर अत्याचार करने के लिये यह भारत रक्षा कानून का शरारत से भरा हुआ दुरुपयोग है।

यह ग्रन्थ गत ७० वर्ष से स्थित है और भारत वर्ष की लगभग समस्त भाषाओं में विस्तार के साथ प्रकाशित हो चुका है। इन वर्षों में यह ग्रन्थ उच्च सिंहासनों तथा वेदियों से विस्तृत प्रचार का विषय रहा है

गत ७८ वर्षों में भारत वर्ष में अंग्रेजी सरकार ने जिसे हम साम्राज्यशाही के नाम से पुकारते हैं सहनशील रही है। ग्रन्थ के १३ वे समुल्लास में ईसाई मत की आलोचना है जिस प्रकार १४ वें समुल्लास में मुस्लिम मत की है। यद्यपि महारानी विक्टोरिया और उनके बाद के तमाम नरेश ईसाई मत के रक्षक रहे हैं। यह वास्तव में बडे दुख की बात है कि विदेशी अंग्रेज सरकार का देशी मुस्लिम लीगी सरकार के मुकाबले में धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए अधिक विश्वास किया जा सकता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा राजनैतिक समस्याओं के निपटारे और गतिरोध की समाप्ति के लिये उतनी ही उत्सुक है जितना कोई भी और हो सकता है। किन्तु समस्त राजनैतिक प्रगति एक मृगतृष्णा मात्र होगी यदि उन राजनैतिक दलों से जिनसे समझौता किया जा रहा है, सभ्य सरकार के आधारभूत सिद्धान्त अर्थात् धार्मिक सहिष्णुता से विरत रहे। स्वराज्य उस समय तक कोई अर्थ नहीं रखता जब तक उसमें धार्मिकस्वतन्त्रता नहीं है।"

नारायण स्वामी

गुलबर्गा काण्ड

घायलों के वक्तव्य

समिति की ओर से गुलबर्गा दुर्घटना में घायल लोगों के बयान प्राप्त किये गये हैं। अबतक केवल गुलबर्गा के लगभग ५० ६० लोगों ने अपने बयान दिये हैं। गुलबर्गा के अतिरिक्त ग्रामों से भी घायल तथा पीड़ित लोगोंके बयान प्राप्त किये जा रहे हैं। यदि किसी स्थान पर समितिकी ओर से बयान लेने के लिये कोई न पहुँचे तो स्थानिक आर्यसमाज के अधिकारियों अथवा उस ग्राम के प्रत्येक जिम्मेदार व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह अपनी ओर से घायलों अथवा पीड़ितों के बयान प्राप्त करके समिति के पतेपर भेजनेकी कृपा करे। यदि किसी आर्यसमाजकेप्रधान अथवा मन्त्री को यह ज्ञात हो जाय कि उनके ग्रामके समीप किसी व्यक्ति को गुलबर्गामे घायल किया गया है तो वह उस स्थानपर स्वय पहुचकर अथवा किसी समझदार और जिम्मेदार व्यक्तिको भेजकर उसका बयान प्राप्त करले। समिति इस कार्यके लिये बड़ी कृतज्ञ रहेगी बयान लेते समय निम्न बातोंपर विशेष ध्यान रखा जाय।

(१) बयान व्यक्तिके हाथ का लिखा हुआ हो।

(२) बयान देने वालेको यदि लिखना न आता हो तो उसका अगूठा ले लिया जाय।

(३) बयान देने वालेका पूरा नाम और पता।

(४) घाव शरीरके किस भाग पर लगा है।

(५) घाव किस चीज या शस्त्र का है।

(६) गुलबर्गा नगर के किस हल्ले या भाग में उनपर आक्रमण किया गया था।

(७) आक्रमण करने वालों में कौन थे। यदि याद हो तो नाम भी लिखवा दें। इत्यादि।

आर्यों पर अभियोग

इस दुर्घटना के सम्बन्धमें ७ आर्यसमाजियों पर एकदम कतल के अधीन अभियोग चलाया जारहा था। इस अभियोगमें आ रा सम्मेलनके स्वागताध्यक्ष श्री रामकृष्णजी पटेल कोषाध्यक्ष श्री प्रेमकुमारजी, श्री शिवकुमारजी श्री प० धर्मवीर जी सि र आर्योपदेशक इ० को भी सम्मिलित किया गया है। अब यह ज्ञात हुआ है कि एक दामे कतलका दोष निकालकर बलवा और सरकारी कर्मचारी के कार्यमे विघ्न डालनेका दोष बाकी रखा गया है। श्री रामकृष्णजी पटेल, श्री प्रेम कुमारजी, श्री धर्मवीरजी, श्री शिवकुमारजी इत्यादि की जमानत स्वीकार की गई है। अदालत में चालान पेश होकर पेशी होचुकी है।

अपीलकी ओर ध्यान

समितिकी ओरसे दुर्घटनासे सम्बद्ध कार्यवाही को चलानेके लिये न्यून से न्यून २५००० रुपयोंकी अत्यन्त आवश्यकता है तथा इस धाधली से प्रचार के कार्य को जो धक्का पहुँचा तथा भविष्यमे ऐसी परिस्थिति की रोकथाम करनेके लिये प्रचार को अधिक तीव्र बनानेके उद्देश्य से लगभग एक सौ उपदेशकों व प्रचारकों के रखने की योजना बनाई जारही है। इस कार्यके लिए एक लाख रुपये की अपील निकाली गई है। जिसकी पूर्तिका दायित्व केवल आर्यजगत् परही नहीं अपितु समस्त हिन्दुओं पर है। इस कार्यके लिये तथा दुर्घटना का प्रचार करने के लिये एक शिष्टमण्डल भ्रमण के लिये निकल चुका है। तथापि प्रत्येक सज्जन को अपने २ कर्त्तव्य की पूर्ति के लिए अवश्य प्रयत्न करना चाहिये तथा अपने २ ग्रामों में धन एकत्रित करके श्री विनायकराव जी विद्यालंकार बार एटला, जामबाग हैदराबाद (दक्षिण) के पते पर भेज दिया जाय।

आर्य नेताओंका स्वास्थ्य

श्री प० विनायकरावजी विद्यालंकार, बार-एट ला, प्रधान, आ प्र नि सभा, है स्टेट अब स्वस्थ हैं, चलते फिरते तथा कार्य करते हैं। किन्तु सिरकी तथा शरीरकी दो एक चोटों के कारण उनमें निर्बलता आगई है। विशेष सिरकी चोटसे उन्हें अब भी कष्ट होता है। चोट का प्रभाव अभीतक है अधिक दिमागी कार्य करने पर पीड़ा उठती है श्री प० गणपतिशास्त्रीजी बी ए, एल एल बी उप प्रधान, आ प्र नि सभा, है स्टेट भी स्वस्थ हैं। किन्तु माथेकी चोट के कारण वह भी अधिक देर तक दिमागी काम नहीं कर सकते श्री प० नरेन्द्रजी मन्त्री, आ प्र नि, सभा, है स्टेट के पाव की हड्डी जुड़ गई है। १६ जून १९४५ को एक्स रे (क्ष किरण) लिया गया। पाव पर जघा तक प्लास्टर लगा दी गई थी, जा अभी निकाली नहीं गई। १०।१२ दिनों के पश्चात् प्लास्टर निकाली जायगी। पण्डितजी इस समय लकड़ीके सहारे खड़े होकर कमरे में धीरे धीरे चल रहे हैं। इस प्रयत्न मे कभी २ चक्कर आजाता है। बीच बीचमें कभी २ किंचित् सा ज्वर आजाता है। डाक्टरने प्लास्टर खोलने की अवधि एक सप्ताह के लिये बढ़ादी है। अब भी पण्डितजी के स्वास्थ्य को पूछने के लिये मित्रों तथा श्रद्धालु भक्तोंका ताता लगा रहता है और नित्य प्रति दर्जनों पत्र आरहे हैं।

जनता से नम्र निवेदन

हैदराबादकी जनता से नम्र निवेदन है कि यदि किसीको दुर्घटना के सम्बन्धमे कुछ जानकारी प्राप्त करनी हो तो वह दुर्घटना समितिके कार्यालयमें पत्र भेजकर या प्रत्यक्ष आकर हर प्रकारके प्रश्न पूछ सकते हैं। यदि किसी सज्जन या सार्वजनिक संस्थाको गुलबर्गा दुर्घटना से सम्बन्धी समितिकी किसी विज्ञप्ति अथवा साहित्य की आवश्यकता हो तो वह पत्र लिखकर मगवा लें इस से समितिके कार्य में न केवल सहयोग होगा

अपितु इसके कारण काफी प्रचार भी होगा। यदि किसी सज्जनको समितिके किसी कार्यमें त्रुटि या न्यूनता देख पडे तो वह समितिको पत्र लिखकर या प्रत्यक्ष कार्यालयमें आकर उसको बतला सकते हैं। समिति उनके इस उपकार के लिए कृतज्ञ होगी। प्रत्येक व्यक्तिको दुर्घटना के सम्बन्धमें अपनी उचित सम्मति व सलाह देने की पूरी स्वतन्त्रता है। समितिकी ओरसे समय-समयपर जो विज्ञप्तियें निकलती हैं उन्हें अधिक से अधिक प्रचारित किया जाय।

पुलिसके जवानों पर अभियोग

सरकारकी ओरसे दूसरी विज्ञप्ति प्रकाशित की गई थी। इस विज्ञप्ति में यह दर्शाया गया था कि पाच पुलिस कान्स्टेबलोंको, जिनका आर्यनेताओं पर आक्रमण करने में अधिक भाग था, नौकरियों से निकाल दिया गया है तथा उन्हें भविष्य में किसी सरकारी विभाग में किसी प्रकार की नौकरी पर न लेने की आज्ञा जारी की गई है। इसके पश्चात् उन पाच कान्स्टेबलों को गिरफ्तार करके रिमाण्ड किया गया था। किन्तु यह ज्ञात हुआ है कि अबतक उनका चालानही अदालतमें पेश नहीं किया गया है। उन कान्स्टेबलोंको भी जमानत पर मुक्त कर दिया गया है।

अन्य कान्स्टेबलों को सजा

इसी प्रकार को तादीबी कारवाही के सम्बन्धमें लगभग ५०।६० कान्स्टेबलोंको भिन्न २ स्थानों पर तबादला करके भेज दिया गया है। इस सम्बन्धमें एक बड़ी त्रुटि यह हुई है कि गुलबर्गे के वह मुरतेहल तथा अनियन्त्रित पुलिस कान्स्टेबल अनेक स्थानों पर फैल गये हैं। सार्वजनिक कार्यकर्ता तथा उपदेशक अब जहां २ जाते हैं उन में से अनेक स्थानों पर ऐसे कान्स्टेबल उन्हें मिलते हैं। इस प्रबन्ध से तो सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को अब स्थान २ पर अधिक भय लगा हुआ है। ऐसी अवस्था में निश्चित ही यह कान्स्टेबल जहां २ होंगे वहा अपनी मनोवृत्ति को फैलायेंगे और गुलबरगा का दूषित प्रभाव अनेक स्थानों पर हो जायगा।

पं० नरेन्द्रजी ने त्याग- पत्र नहीं दिया।

हैदराबाद के स्थानिक पत्रों में यह गलत समाचार छप चुका है कि श्री पं० नरेन्द्रजीने स्वास्थ्य की खराबी के कारण आ० प्रा० नि० सभा हैदराबाद से त्यागपत्र दिया है। यह समाचार निराधार और गलत है। पण्डितजी ने ४ जून को अन्तरङ्ग सभाकी स्वीकृति से छ माह का अवकाश लिया है, क्यों कि विश्राम की उन्हें अत्यन्त आवश्यकता है। ७ जुलाई १६४४ को सभा की साधारण बैठक होगी, जिसमें सभा के अधिकारियों का चुनाव होगा। उस चुनाव तक सभा का कार्य चलाने के लिये अन्तरङ्ग ने श्रीकृष्णदत्तजी बी ए सम्पादक आर्य-भानु को कार्यदर्शी मन्त्री का कार्य सौंपा है।

समिति के कतिपय कार्यों का दिग्दर्शन

समिति ने अपने स्थापना दिवस से अबतक यथा शक्ति तथा प्रत्येक सम्भवनीय साधन को काम में लाकर निम्न लिखित कार्य किये हैं।

(१) सार्वदेशिक सभा ने समितिकी प्रार्थना पर श्री पू स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज तथा माननीय श्री. घनश्याम सिंहजी गुप्त को हैदराबाद भेजा।

(२) घायलोंके वक्तव्य प्राप्त किये।

(३) समाचार पत्रों तथा विज्ञप्तियों द्वारा सम्पूर्ण भारत में दुर्घटना प्रचार किया।

(४) भारत की समस्त समाजों द्वारा प्रस्तावो की प्राप्ति।

(५) हैदराबाद स्टेट के प्रधान मन्त्री की-सेवामें एक प्रार्थना-पत्र।

(६) अभियोगोंकी पैवीं तथा अन्य कार्यों के लिये धन संग्रह।

(७) अन्य संस्थाओंसे सहयोग प्राप्त करना इ०

Vedic Marriage

"Under the auspieces of the Arya Samaj-Chintadripet, the marriage of Sri T.A Rajaram with Sow Rajambal took place on 22-6-45 in Choolai, when a large number of friends and relatives of the couples were present The bridegroom is the cousin of Sri K A Babu Singh a staunch Aiyasamajist Pandlt M Sundram assisted by Sri K' Shriramulu officiated the ceremony Many prominent Aryas, including Sri V Cunnish Chetty (President, South India Arya Pratinidhi Sabha) attended the function".

Yours faithfully,
BHARATHAM,
Hony Secretary

On 18th May 1945 (Friday) One Miss Nargis Nadiraha Doctor (Parsi) of Poona was taken into Hindu Religion—at Arya-samaj, Poona Camp, under the presidentship of—Dr G S Gore, and after her conversion into Hindoo Religion her name as Shakuntala was kept and her marriage ceremony according to Hindu system (Vaidik) was celebrated with Mr Tulsing Ramchandra Mudliar, Madrasi by caste The religious and auspicious ceremony was executed through Pandit Ravi Shankar This is the first mixed caste marriage between Madras and Parsi community by Arya samaj Poona Both of them are from high class family

R .S SHRINIWAS,
Secy. Arya Samaj, Poona Cantt

ज्योतिःस्तम्भ

जब भू पर असत्य तम का छाया था अ धियाला
अघ अत्याचार अनय का फैला था चादर काला
भ्रम, भेद, भाव का विष, पीता था जग भर प्याला
धर्म-कर्म औ ईश-भजन सब छोड़ा था मतवाला
ऐसे ही दुष्काल दिवस में देव दयानन्द आया
सत्यार्थ-प्रकाश के प्रकाश में सारे जग को लाया

जिसके प्रकाश में बिखरे, सब रत्न बटोरे
हो सचेत, भागे दल, डाकू, चोर लुटेरे
उल्लू, चिमगादर के डूबे रहबर चाँद सितारे
फैली सत्य सूय की किरनें प्रम गली घर सारे
सब का कर पकड़-पकड़ कर झक झोर जगाया
सत्यार्थ-प्रकाश के प्रकाश मे सारे जग को लाया

जिसको पढ़ पढ़ कर कितने मूर्ख अज्ञानी
पाया ज्ञान महान बातें ईश धर्म की जानी
त्रिब माण आर्य-जाति ने पाई निज गई जवानी
राष्ट्रिय जागृति में भी इसने ही दिया खानी
क्यों कि जन्म क्रान्तिकारी युग में था पाया
सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाश में सारे जग को लाया

मुहमद अली पुकारा ऋषि की सर्वोतम रचना है,
है ये चश्मे फैज, मुराद अली का कहना है,
मनन कर जिसका 'टालस्टाय' वानप्रथी बना है,
ओ ज्योति स्तम्भ सुधारा तुमने लोग घना है,
नास्तिक मि० लिग पढ़ कर प्रभु गुण गाया
सत्यार्थ-प्रकाश के प्रकाश में सारे जग को लाया

वर्षों से मजहबी जग में किया जो परिवर्तन है।
पढ़ कर, जिसे तुर्क विद्वान् किया कुरा, सशोधन है।
पढ़ते मन दुर्गन्धि खुले औ होता शूल शमन है।
ऐसे ग्रन्थ पर प्रतिबन्ध लगाना क्या नहीं पागल पन है।
पागलपन है, या है औरंगजेबी माया,
सत्यार्थ-प्रकाश के प्रकाश में सारे जग को लाया

है जो इंजील का स्थान इसाई जनों में
है जो कुरा का सम्मान यार यवनों में
गुरु ग्रन्थ का जो मान सिक्खों के मन में
धम्मपद हित जो ध्यान बौद्ध जनों में
कल हीपरमानन्द इसके हित बलिदाना चढ़ाया
सत्यार्थ-प्रकाश के प्रकाश में सारे जग को लाया

तुम लेखराम के तन से बहा खू की धार सकते हो,
तुम श्रद्धानन्द के सीने पै गोली भी दाग सकते हो,
तुम राजपाल नाथू का भी कर संहार सकते हो
पर सत्यार्थ-प्रकाश का न रोक प्रचार सकते हो

क्या सत्य-सूर्य जग से जा सकता कभी छिपाया
सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाश में सारे जग को लाया

तारिणी प्रसादसिंह
मन्त्री
आर्यकुमार सभा चिन्तामणि चक (मोकामा) बिहार

(पाठक इसे कविताकी दृष्टि से नहीं, भाव की दृष्टि से विशेषरूपसे पढ़े—सम्पादक)

सम्पादकीय

उपहासजनक महान् अनर्थ—२ वर्ष की विधवा

मथुरा के एक संवाददाता ने निम्न समाचार गत मास पत्रों में प्रकाशित करवाया है "मथुरा के चौबों की भांति भारत की किसी भी जाति मे बाल विवाह की इतनी बुरी प्रथा प्रचलित नहीं है इनके यहा गर्भ के बच्चों के भी विवाह पक्के होते हैं। ६ ६ मास के बालक बालिकाओं के भी विवाह हो जाते है। इसीलिये इनके यहा सबसे अधिक विधवाए भी होती हैं। इसके फलस्वरूप जाति घटकर अब आधी भी नहीं रही। अभी परसों चौबों की एक दो वर्ष की बालिका विधवा हो गई। एक सप्ताह हुआ उसका ५ वर्ष के बालक से विवाह हुआ था जिसका हैजे से देहान्त हो गया। बच्ची की माता रो रो कर उसकी चूड़िया फोड़ रही थी। वह दृश्य बड़ा ही करुणाजनक था।" (लोकमान्य २१ ६ ४५)

इस उपहासजनक महान् अनर्थ के सूचक समाचार पर क्या टिप्पणी की जाय। चौबे शब्द चतुर्वेदी का अपभ्रंश है जिसका अर्थ चारों वेदों का जानने वाला है। ऐसे चतुर्वेदियों की सन्तान जो ब्रह्मचर्य पूर्वक वेदों का पठन पाठन करते थे आज इतनी अधोगति को प्राप्त हो चुकी हैं कि नन्हे बच्चे बच्चियों का विवाह करवाने में भी संकोच नहीं होता यह कितने दुःख और लज्जा की बात है। शारदा कानून के होते हुए भी जिसके अनुसार लड़के लड़की की आयु विवाह के समय क्रमश १८ और १४ से कम न होनी चाहिए ये अनर्थ हमारे देश मे प्रचलित हैं यह कितनी लज्जाजनक तथा हम भारतीयों को अन्य देशवासियों की दृष्टि मे गिराने वाली बात है। जनता और सरकार की उपेक्षा के कारण खेद है कि शारदा कानून से यथोचित लाभ नहीं हो सका। समस्त समाज प्रेमियों का कर्तव्य है कि बाल विवाह जैसी समाज विघातक प्रथाओं के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन करके उन्हें दूर करदें और सरकार की शारदा ऐक्ट के प्रति उपेक्षा वृत्ति को हटाने का प्रयत्न करें जिससे ऐसे उपहासजनक महान् अनर्थ जो उपर्युक्त अविश्वसनीय किन्तु सत्य घटना से प्रकट होते है भविष्य में असम्भव हो जाए।

अ० भा० रेडियो विभाग की हिन्दी विरोधिनी नीति तथा उसका प्रतीकारः—

अखिल भारतीय रेडियो विभाग की हिन्दी विरोधिनी नीति के सम्बन्ध में हम मार्च अङ्क में सम्पादकीय टिप्पणी दे चुके हैं। उसके अन्त में हमने लिखा था कि "यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि हिन्दुस्तानी के नाम से अब तक जो धांधली रेडियो विभाग ने मचा रक्खी है और विशुद्ध हिन्दी की जो हत्या कर रक्खी है वह आगे भी जारी रहेगी। इस धांधली और उर्दू पक्षपातिनी

नीति को दूर करने का यही एकमात्र उपाय है कि हिन्दी और उर्दू में समाचार घोषणा, भाषण तथा कवितादि को पृथक् २ विस्तारित किया जाए जब तक रेडियो विभाग के अधिकारी इस उचित माग को पूरा नहीं करते तब तक बहिष्कार सहित सगठित आन्दोलन सभी हिन्दी प्रेमी सस्थाओं की ओर से जारी रहना चाहिये '

हमने जो सभावना उस समय प्रकट की थी वह सर्वथा यथार्थ निकली है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा अन्य समस्त हिन्दी प्रेमी सस्थाओं द्वारा प्रबल आन्दोलन करने पर भी रेडियो विभाग के अधिकारियों के कानों पर जू नहीं रेंगी और उनका हिन्दी के प्रति सौतेलो मा जैसा वर्ताव पूर्ववत् जारी है जिसका प्रबल विरोध २४ जून को सर्वत्र रेडियो दिवस मनाकर किया गया है। अब केवल विरोध और वक्ताओं अथवा कवियों द्वारा रेडियो विभाग के बहिष्कार से भी काम नहीं चल सकता। अब तो यही उपाय सफल हो सकता है कि जिनके पास रेडियो सेट हैं (जिनमें बहुत अधिक सख्या हिन्दुओं की है) वे इस बात को स्पष्टतया सूचित करदें कि यदि अधिकारियों ने हिन्दी प्रेमियों की इस उपर्युक्त माग को ठुकराया कि उनके लिये सरल हिन्दी मे भाषण, कवितादि का विस्तार किया जाय तो वे अपने लाइसेन्स रद्द करा देंगे। हमें निश्चय है कि इसका यथेष्ट परिणाम अवश्य होगा। सर सुलतान अहमद की हिन्दी विरोधिनी नीति के कारण उनको अपने पद से च्युत करने का जो प्रस्ताव लाहौर आदि में किया गया है उससे भी हम पूर्णतया सहमत हैं। डाक विभाग रेडियो विभाग तथा अन्य सब विभागों में हिन्दी की जो उपेक्षा की जा रही है उसका प्रबल प्रतिवाद करना और इस राष्ट्र भाषा के अधिकारों की रक्षा करना समस्त आर्य हिन्दू जनता का कर्तव्य है जिसकी ओर हम उसका ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करते हैं।

शिमला सम्मेलन और मि० जिन्ना की अड़ियल नीतिः—

लार्ड वेवल ने गत १४ जून को जो योजना भारतीय गतिरोध को दूर करने के लिये प्रस्तुत की और उस पर विचार करने के लिये कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति के अवशिष्ट सदस्यों को बन्धन मुक्त करके २५ जून को शिमला में नेताओं के सम्मेलन को बुलाया उसके लिए उस योजना के अनेक अशों से असहमत होते हुए भी प्रत्येक देशभक्त उनकी कुछ प्रशसा करेगा। हिन्दू महासभा को जो राजनैतिक दृष्टि से हिन्दुओं की एकमात्र प्रतिनिधि सस्था होने का दावा करती है इस सम्मेलन म पूर्ण बहिष्कार किया गया है, उसके नेताओं को परामर्श तक के लिये नहीं बुलाया गया जबकि मुस्लिम लीग को बहुत अधिक प्रमुखता दी गई है यह बात स्वयम् अत्यधिक आक्षेप योग्य है। हिन्दु महासभा के मान्य प्रधान डा० श्यामाप्रसाद मुखोपाध्याय के इस कथन मे काफी सत्य प्रतीत होता है कि 'इस योजना का प्रधान ध्येय मुस्लिम लीग को प्रसन्न करना और हिन्दुओं के न्यायपूर्ण राजनैतिक अधिकारों का हनन है। किसी भी न्याय के अनुसार हिन्दू मुसलमान दोनों जातियों को बराबर सीट प्रदान करना ठीक नहीं समझा जा सकता जबकि हिन्दुओं की सख्या २५ करोड़ और मुसलमानोंकी ६ करोड़ है। पुन ६ करोड़ मुसलमानों को किस प्रकार ५ सीटें कार्यकारिणी में दी जाएगी और

और ६ करोड़ हरिजनों को केवल एक। अतएव हिन्दुओं के हितों की इस योजना में बलि दी जाएगी। इत्यादि

कांग्रेस ने केवल योजना को स्वीकार करके अपने पहले के कई मन्तव्यों को त्याग दिया है उदाहरणार्थ युद्ध प्रयत्न से असहयोग की नीति, मन्त्रिमण्डल निर्माण में अन्य दलों को न लेने की नीति, साम्प्रदायिक आधार पर सरकार न बनाने की नीति 'वीटो' के रहते वायसराय के अधीन काम न करने की नीति तथा सेना विभाग को अंग्रेजों के हाथों में न रहने देने का प्रश्न। कांग्रेस इस योजना को सफल बनाने के लिये इन सब बातों में झुक गई है किन्तु मि० जिन्ना ने अपनी अड़ङ्गा लगाने की नीति को पूर्ववत् जारी रक्खा है। वे इसी बात पर अड़े हुए हैं (यद्यपि यह सर्वथा असत्य है) कि मुस्लिम लीग ६६ प्रतिशतक मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करती है अतः वायसराय की कार्यकारिणी के पांचों सदस्यों को चुनने का उसे ही अधिकार होना चाहिए। अब यह स्पष्ट दीखने लगा है कि मि० जिन्ना की अड़ियल नीति के कारण शिमला सम्मेलन शायद सफल न हो सकेगा। उसे १४ जुलाई तक के लिये वायसराय द्वारा स्थगित किया जाना और यह घोषणा करना कि कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग आदि के प्रतिनिधि कार्यकारिणी के निर्माण के सम्बन्ध में किसी समझौते पर पहुंचने में असमर्थ रहे हैं इसी बात को सूचित करता है। यह अत्यन्त अनुचित होगा कि मुस्लिम लीग और उसके प्रधान मि० जिन्ना को इस प्रकार राष्ट्रीय सरकार के निर्माण में बाधक बनने दिया जाय। जहां एक ओर कांग्रेस को मुस्लिम लीग को प्रसन्न करने की नीति का सर्वथा परित्याग कर देना चाहिये वहां वायसराय को भी चाहिये कि मि० जिन्ना की अड़ियल नीति को ध्यान में रखते हुए उसकी उपेक्षा करें और अन्य राष्ट्रीयतावादी मुसलमानों का सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न करें। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से इस विषयक जो तार २४ जून को वायसराय और शिमला सम्मेलन के सब निमन्त्रित सज्जनों को दिया गया है वह भी बड़ा महत्त्वपूर्ण है कि मुस्लिम लीग से कोई समझौता तब तक नहीं हो सकता जब तक वह अपनी असहिष्णुता और धार्मिक स्वतन्त्रता में बाधा की नीति का परित्याग न करदे और उसके क्रियात्मक रूप के तौर पर सिन्ध में सत्यार्थ प्रकाश के प्रतिबन्ध को वापिस न ले ले। हम आशा करते हैं कि सभी निष्पक्षपात, स्वातन्त्र्यप्रेमी सज्जन इस विषय की ओर भी विशेष ध्यान देंगे और मुस्लिम लीग को उसकी अड़ियल नीति का उचित उत्तर दिया जायगा।

देशरत्न श्रीयुत राजेन्द्रप्रसाद जी का महत्त्वपूर्ण वक्तव्य:—

देश के मान्य और विद्वान् नेता श्रीयुत बा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने जेल से मुक्त होते ही सत्यार्थप्रकाश के प्रतिबन्ध विषयक अत्यन्त महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया है जिसमें उन्होंने कहा है कि सिन्ध सरकार द्वारा सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास पर लगाया गया प्रतिबन्ध सर्वथा अनुचित है। किसी पुस्तक के प्रकाशन और प्रचार पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न होना चाहिये। धार्मिक पुस्तकों पर भी यही सिद्धान्त लागू होता है। सत्यार्थप्रकाश के किसी भाग पर भी किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न्यायसङ्गत नहीं ठहराया जा सकता विशेषतः जबकि यह पुस्तक इतने लम्बे

समय से प्रकाशित होती रही हैं। ऐसी चीजें जो इसमें आक्षेप योग्य समझी जाती हैं अन्य धार्मिक पुस्तकों में भी पाई जाती हैं और इस प्रकार की समालोचनाएं पत्र पत्रिकाओं मे प्रतिदिन प्रकाशित होती रही है। सिन्ध मन्त्रिमण्डल को चाहिये कि इस प्रतिबन्ध को अवश्य ही हटाले।

सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री बी. जी हार्नीमैन ने भी इसी आशय का वक्तव्य सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध के सम्बन्ध मे दिया है। यह खेद की बात है कि सिन्ध के मन्त्रिमडल ने बार २ आश्वासन देने पर भी अभी तक अपने वचन को पूरा नहीं किया और इस प्रकार जनता के असन्तोष को बढ़ाने का वह कारण बना है। हम सिन्ध सरकार से सानुरोध निवेदन करते हैं कि वह अपने अविवेकपूर्ण आदेश को तुरन्त हटाकर जनता के प्रतिदिन बढ़ते हुए घोर असन्तोष को दूर करे अन्यथा उसके भयङ्कर परिणामों के लिए वही उत्तरदायी होगा। शीघ्र ही अ० भा० सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति देहली में इस विषयक अन्तिम निर्णय करेगी। आर्यों को सब प्रकार के बलिदान के लिये उद्यत रहना चाहिये।

घ० दे०

आवश्यक सूचना

सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति की बैठक स्थगित

अखिल भारतीय सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति की बैठक जो ता० १५ जौलाई को होने वाली थी विशेष परिस्थितियों के कारण स्थगित कर दी गई है। आगामी तारीख की सूचना यथा समय दीजावेगी।

शिवचन्द्र स० मन्त्री
आ० भा० सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समिति

आवश्यकता

सार्वदेशिक सभा पुस्तकालयार्थ निम्न पुस्तकों की विशेष आवश्यकता है जो सज्जन या समाज उपहार स्वरूप वा उचित मूल्य पर भेज सकें शीघ्र भेजने का कष्ट करें अथवा सूचित कर दें।

(१) सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम (सन् १८७५)से १० म सस्करण तक
(२) वैदिक इतिहासार्थ निर्णय—श्री प० शिवशङ्कर जी काव्यतीर्थ कृत
(३) Encyclopedia of Islam'10 Volumes
(४) गीता प्रदीपार्य भाष्य—पं० आर्य मुनि जी कृत
(५) मीमासार्य भाष्य—पं० आर्य मुनि जी कृत
(६) Encyclopedia of Religion and Ethics 12 Volumes
(७) An Intelligent woman's guide to Capitalism, Socialism and Sovietism by Bernard Shaw

पुस्तकालयाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा
बलिदान भवन देहली।

दान सूची सत्यार्थ प्रकाश निधि

मास जून १९४५

संयुक्त प्रान्त

२००) श्री मन्त्री जी आ० स० सैदपुर
१६) ,, ,, गजाधर वानपुर बस्ती
१) श्री गोविन्दराम जी छीपरी बाजार झाँसी
२) श्रीमती गिरजा शंकर ,, ,, ,,
६) श्री मन्त्री जी आ० स० चटिया (बरेली)
२०) ,, फीरोजपुर
१००) ,, ,, अपरौली
१३१३१-)॥ गत योग
१३४७६-)॥

सिन्ध प्रान्त

२०००) श्री मन्त्री जी आ० स० कराची
१२३६५) गत योग
१४३६५ ।) योग

बम्बई प्रान्त

५) श्री जगदीश प्रसाद जी बरली विलेज बम्बई
६८९१ ॥।) गतयोग
६८९६॥।) योग

विहार प्रान्त

६।≈) श्री नैनीसिंह जी वैसागुन बाबाद्र पो० मुरार
२०) श्री सत्यानन्द जी आ० स० दिघवा दुर्भेज्ञा
१०) श्री मन्त्री जी ,, ,, गोबरी (चम्पारन)
२) श्री विजय नाथ गुप्ता मेमर बेबीपुरा
३०) श्री मन्त्री जी आ० स० केसोल
५४४४॥) गतयोग
५५१२॥।≈) योग

पंजाब व देहली प्रान्त

७) श्रीमती गुरुदित्ता देवी जी मा० ला० लाल-चन्द्र जी नानक टला
५१) चौ० छोटूराम जी आर्य खरड़
२०) Students All India Jat College Rohtak
४०) श्री मन्त्री जी आ० स० DAnbha Channa
१००) ,, ,, काकी ले
६७) ,, ,, ,,Dhrangadhpa
४४११।≈) गत योग
४६६६≈)

बङ्गाल

३९११) गत योग

राज स्थान

२०७३॥) गत योग

मध्यप्रदेश

२५) श्री मन्त्री जी आ० स० खडवा
२५) श्री ,, अ० कु० सभा ,
२५) ,, ,, अ० स० बरोरा (चांदा)
५) ,, ,, ,, अठोलो
२५) ,, ,, ,, खडवा
६०) श्री विद्याभूषण जी कविराज शिवरखेड़ा (अकोला)
१६) श्री वैद्य रत्न प० दुर्गा प्रसाद त्रिवेदी द्वारा सुधा धरोवद फार्मेसी सागर
११२७॥) गत योग
१२०८॥) योग

हैदराबाद

३०) श्री मन्त्री आ० स० वारंगल

४१८।) गत योग

दक्षिण

४०) श्री बिट्ठल दास काली दास जी आ० स० कैम्प पूना

५) श्री बी देवदास शेणाई द्वारा श्री बी वेंकट राय शेणाई व्यापारी पुत्तुर (द क)

४१८।) गत योग

४६३।) योग

विदेश

५०१) श्री मन्त्री जी द्वारा आ० स० कम्पाला (पूर्वीय अफ्रीका)

३८८) श्री मन्त्री जी आ० स० दारे इस्लाम पूर्वीय अफ्रीका

७५०) गत योग

१६६६) योग

विविध

२) श्री हजारी लाल आर्य

४८≈) श्री मोती लाला जी आ० स०

४०६४।) गत योग

४१४४) योग

५८,६३५।≈)।। सर्व योग

दान

वेद प्रचारनिधि

मास जून स.१६४५

११६।-) १० श्री मन्त्री जी आ स बगदाद

१०) श्री तारा पादादत्त जी आ. स, कुसाटी

४०) श्री मन्त्री जी आ. स मनकापुर

१२६) श्री रामचन्द्र जी

५१) श्री गोपालसिंह जी

२०) श्री चेतराम जी स. ६५५६२२

२५) एल, ई, ए, सी, श्री भीमसिंह जी स ४३८०५ बम्बई

८≈) श्री आर ए सी गजाधर

४) श्री हरदत्त राम श्री एल ई ए सी

८।।≈) श्री चौ भरतसिंह जी नम्बरदार कलंदा मेरठ

२) श्री मिलानन्द जी प्रधान आ स हयात नगर सरायतरीन सुपुत्र विवाह उपलक्ष्य

१०) श्री पन्नालाल जी कोभरी (अलीगढ़)

२५ मन्त्री जी अ स

५) „ केसरिया (चम्पारन)

५) श्री मन्त्री जी अ स. बालगंगीर

१२) „ „ सदर बाजार नागपुर (वेद प्रचार)

५५) „ „

४।) „ „ अमरौठी (बलिदान स्मारक)

२) श्री श्याम सुन्दर लाल जी स्वीपरी बाजार झाँसी

२) लाला शारदा प्रसाद जी „

।।) श्री प्रकाश गोविन्दराम जी „

७) श्री रामनारायन जी ठेकेदार

दान दाताओं को धन्यवाद

सुधाकर मन्त्री, सार्वदेशिक सभा देहली

आर्य पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज नया बाँस देहली को एक और पुरोहित की जो कि दृढ़, आर्य समाजी, सदाचारी और आर्य भाषा तथा बागल भाषा का पूरा २ ज्ञान रखता हो, आवश्यकता है।

भूल सुधार

मुझे खेद है कि गतमास मेरे अवकाश पर बाहर होने और शीघ्रतादि के कारण लेखों की छपाई में अनेक अशुद्धियां रह गई हैं जिन्हें विज्ञ पाठक स्वय सुधार लें और क्षमा करें।

अ० वे०

श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा 'चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस', श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।



१९४५ ई०
२००२ सं०

सम्पादक—

वार्षिक मूल्य
विदेश ७शि

विषय-सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* मार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष २१ | अगस्त १९४५ ई० | श्रावण २००२ | दयानन्दाब्द १२२ | अङ्क ६

* वैदिक प्रार्थना *

ओ३म् इन्द्र प्रेहि पुरस्त्व विश्वस्येशान ओजसा । वृत्राणि वृत्रहन् जहि ॥ ऋ० ८ । १७ । ६

अर्थ—(इन्द्र) हे परमैश्वर्य सम्पन्नप्रभो । (ओजसा) अपनी शक्ति से (विश्वस्य) सारे संसार का (ईशान त्वम्) स्वामी तू (पुर प्रेहि) हमारे आगे चल-हमारा नेता बन (वृत्रहन्) हे पाप व अज्ञानान्धकार का नाश करने वाले परमेश्वर । हमारे (वृत्राणि) पाप और अज्ञानादि शत्रुओं को (जहि) मार दे—विनष्ट कर दे।

विनय—हे परमात्मन् । तुम सारे संसार के सर्वशक्तिमान् स्वामी हो। हम चाहते हैं कि तुम हमारे नेता बन जाओ । हम ज्ञानचक्षु द्वारा तुम्हारा साक्षात्कार वा दर्शन करें और तुम्हे अपना नेता वा पथदर्शक मान कर तुम्हारे बताये हुए मार्ग पर सदा निर्भय और निश्चिन्त हो कर चलते रहें। तुम परम पवित्र हो। तुम ही सर्वज्ञ हो। हमारे सारे पापों और ज्ञान के आवरण रूप अज्ञान आदि शत्रुओं को नष्ट करने वाले तुम हो। तुम ऐसी कृपा करो कि हमें सर्व ज्ञान की प्राप्ति हो और हम सब पापों से मुक्त हो कर पवित्र आर्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ हो सकें ॥

वेदोपदेश

ज्ञान-प्रशंसा—अज्ञान-निन्दा

(१) ओ३म् सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत। अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि॥ ऋ० १०।७१।२

(२) ओ यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति। यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्॥ ऋ० १०।७१।६

(३) ओ सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभा साहेन सख्या सखायः। किल्विषस्पृत् पितुषणिर्ह्येषाम् अरं हितो भवति वाजिनाय॥ ऋ० १०।७१।१०

शब्दार्थ (यत्र) जिस विद्वानों के समुदाय रूप यज्ञ मे विद्वत्समवाये यज्ञ इति स्कन्द स्वामी निरुक्त भाष्य' (तितउना सक्तुम् पुनन्त इव) चलनी से जैसे लोग सत्तू को छानते वा पवित्र करते हैं वैसे (धीरा) बुद्धिमान् लोग (मनसा) मन वा शास्त्र द्वारा उत्पन्न विवेक ज्ञान से (वाचम् अक्रत) वाणी को पवित्र-दोषरहित करते हैं (अत्र) वहा (सखाय) समान कीर्ति वा ज्ञान वाले विद्वान् (सख्यानि जानते) ज्ञानादि रूप मित्रभाव को जानते हैं (एषाम्) इन विद्वानों की (वाचि) वाणी मे (भद्रा) कल्याण मयी (लक्ष्मी) ज्ञान रूप लक्ष्मी (अधि निहिता) रक्खी हुई है।

(२) (य) जो (सचिविदं सखायम्) विद्वानों से मिलाने वाले वेद रूपी मित्र को (तित्याज) छोड़ देता है (तस्य वाचि अपि) उसकी वाणी में भी (भाग न अस्ति) भजनीय वा सेवन करने योग्य उत्तम अंश नहीं रहता। (यत् ईं शृणोति) वह जो कुछ सुनता है (अलकं शृणोति) असत्य सुनता है। वह (सुकृतस्य पन्थाम्) पुण्य व धर्म के मार्ग को (नहि प्रवेद) अच्छी प्रकार से नहीं जान सकता।

(३) (सर्वे सखाय) सब समान ज्ञान वाले विद्वान् (यशसा आगतेन) यश के साथ आये हुए (सभा साहेन सख्या) सभा को अपने तेज से वश करने में समर्थ मित्र ज्ञानी पुरुष से (नन्दन्ति) अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। वह (एषाम्) इन के बीच मे (पितु सनि) अन्न दाता के समान ज्ञान रस का प्रदान करने वाला और (किल्विषस्पृत्) पापाचरण, अज्ञानादि का नाश करने वाला हो कर (वाजिनाय) वाणी के स्वामी पद के लिये (अरं हित भवति) बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है-सभापति बनने के योग्य होता है।

ये तीन मन्त्र ऋग्वेद के ज्ञान सूक्त (१० ७१) से लिये गये हैं जिन मे ज्ञान की प्रशंसा और अज्ञान तथा अज्ञानियों की निन्दा का बड़ी उत्तमता से प्रतिपादन है। जिस प्रकार साधारण लोग छाननी वा चालनी से सत्तू को छान और पवित्र करके फिर उसका सेवन करते हैं इसी प्रकार विद्वान् लोग सत्य तथा व्याकरणादि शास्त्र ज्ञान पूर्वक अपनी वाणी को पवित्र करके उसका प्रयोग करते हैं। वे कभी अशुद्ध और अपवित्र शब्दों का—असत्य तथा अपशब्द मय वाणी का

सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली

सैंतीसवां वार्षिक वृत्तान्त

१३-२-४४ से १२-२-४५ तक

वियोग

वर्ष का कार्य विवरण देने से पूर्व यह प्रकट कर देना आवश्यक है कि इस वर्ष श्री राजा ज्वाला प्रसादजी श्री प० रासविहारी तिवारी जी श्री प० हरिगोविन्दजी गुप्त श्री मा० लक्ष्मणजी श्री प राम-लाल जी तथा श्री चन्द्रगुप्त जी वेदालंकार के निधन से आर्य जगत् को हानि उठानी पड़ी। श्री राजा नरेन्द्रनाथ जी तथा सर छोटूराम जी की मृत्यु से इस वर्ष आर्यसमाज अपने दो श्रद्धालु सहायकों से वञ्चित हुआ।

निर्माण व्यवस्था

इस वर्ष के आरम्भ में सभा में १४ प्रतिनिधि सभाएं और नियम धारा ५ के अनुसार सभा में सीधे प्रतिनिधित्व प्राप्त करने वाली २ आर्य-समाजें सम्मिलित थीं

इस वर्ष आर्यसमाज वच्छोवाली लाहौर, नया बास देहली व आर्यसमाज बाला गिर (उड़ीसा) इस सभा से सम्बद्ध हुये। (२७।८।४४। की अन्तरंग के निश्चयानुसार) वर्ष के अन्त में यह सभा प्रतिनिधि सभाओं और समाजों के ५८ प्रतिनिधि सदस्यों और १३ प्रतिष्ठित वा आजीवन सदस्यों कुल ७१ सदस्यों का समुदाय थी।

सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन का पांचवां अधिवेशन

सत्यार्थप्रकाश विरोधी आन्दोलन के निरा-करण के लिये समस्त आर्य जनता को अपने साथ प्रत्यक्ष लेने के उद्देश्य से देहली नगर में सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन का पांचवा अधिवेशन सभा की २१।११।४३ की अन्तरंग के निश्चयानुसार करना निश्चित हुआ था २० २१।२२ फरवरी ४४को सम्मेलन श्री डा० श्यामाप्रसाद जी मुकर्जी के सभापतित्व में बड़े समारोह और सफलता के साथ हुआ। भारत के समस्त प्रान्तों के प्रति निधियों ने सम्मेलन में भाग लिया। सभा कार्यालय में प्रतिनिधियों की जो सूची प्राप्त हुई थी उसका प्रान्तवार ब्यौरा इस प्रकार है

१ संयुक्त प्रान्त	१०८५
२ पंजाब	५६०
३ राजस्थान	४३३
४ बिहार	३४१
५ हैदराबाद राज्य	१६०
६. बंगाल	१५७
७ सिन्ध	१४०
८ बम्बई	१२१
६ देहली	१२०
१० मध्यप्रदेश	६०
११ मद्रास	५
	३२४२

इस अवसर पर आर्य कुमार सम्मेलन आर्य प्रचारक सम्मेलन आर्य युवक सम्मेलन आदि कई सम्मेलन भी हुये।

आय व्यय

सम्मेलन सम्बन्धी कुल आय व्यय का विवरण इस प्रकार है —

आय		व्यय	
स्वागत समिति के सदस्यों का शुल्क	६६०५)	कार्यालय मय छपाई	४८८५॥।-)॥
प्रतिनिधि शुल्क	२७३७)	आर्य वीर दल	६४६॥≡)
विषय निर्धारिणी के टिकटों की बिक्री	२६६)	स्वागत	८९१॥≡)॥
दर्शक	४३१०)	आर्य नगर व पडाल	१२७५९॥)॥।
किराया दूकानों का	४३४)	प्रचार	८०६॥≡)
बिक्री सामान पडाल	१३५८।)	प्रकाशन	५५५॥-)॥
बिक्री सामान ऋषिनगर	२३२५।=)॥।	स्वास्थ्य	१०३॥=)
बिक्री डेलीगेट बैजों को	३२।-)	बैजेज	६५॥।)॥।
बिक्री फूलों को	२१॥=)	ऋषि नगर	८६९३।≡)॥।
विविध	५०)	विविध	१४३॥।)।
दान	१५५००॥।)		
	३३६४०॥-)॥।		३००९१॥।)।
			३५४८॥।-)॥ शेष

इस प्रकार ३५४८॥।)॥ शेष रहा।

अ० भा० पंचम आर्य-सम्मेलन, देहली में स्वीकृत प्रस्ताव

१ शोक प्रस्ताव

यह अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन निम्न लिखित आर्य जाति के नेताओं तथा अन्य उत्साही कार्यकर्ताओं व देवियों के देहावसान पर दुःख प्रकाशित करते हुये उनकी आर्य जाति के लिये की गई सेवाओं के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है तथा भगवान् से इन दिवंगत आत्माओं की सद्गति के लिये प्रार्थना करता है

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के समस्त हुतात्मा (शहीद), श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज, श्री प्रो० शिवदयालु जी एम० ए० उपप्रधान पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा श्री कुंवर हुक्म सिंह जी भूत पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री स्वामी शङ्करानन्द जी, श्री भक्त फूलसिंह जी, श्री गुरुदित्तामल जी, श्री आदि पुडुर्वी सोमनाथ रावजी मद्रास श्री पुट्टैया जी मैसूर, श्री प० देवेन्द्र नाथ जी शास्त्री (संयुक्त प्रान्त) श्री सत्यमूर्ति जी प्रधान, दक्षिण भारत आर्य सम्मेलन मद्रास, श्रीमती सुवीरा देवी जी धर्मपत्नी डा० केशवदेव जी शास्त्री, श्री महादेव जी देसाई, श्री रणजित् सीताराम जी पंडित, श्री कैप्टेन रामचन्द्र जी संस्थापक दयानन्द मैडिकल मिशन मसूरी, श्री ठा० नत्थासिंह जी भजनोपदेशक, श्री चौ० तेज सिंह जी, श्री धर्मसिंहजी, श्री आचार्य रामदेवजी, श्री डा० बालकृष्ण जी एम० ए० पी० एच० डी०, श्री होतराम जी, प्रधान सिन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री बाघूमल जी मन्त्री, सिन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री पं० जगन्नाथ जी निरुक्त रत्न, अमृतसर, श्री कुंवरपाल जी भजनीक आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रांत।

२. स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पर प्रतिबन्ध

यह अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन

देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व उप-प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पर पजाब सरकार द्वारा लगाये गये प्रतिबन्धों को अत्यन्त अनुचित तथा अनावश्यक समझता है और पजाब सरकार से अनुरोध करता है कि उन पर से सब प्रकार के प्रतिबन्धों को हटाकर आर्य जनता के घोर असन्तोष को दूर करे।

३. विद्यार्य सभा

आर्य समाज के बढ़ते हुये शिक्षा सम्बन्धी कार्य के मार्ग प्रदर्शन और सवधन के लिए आवश्यक हो गया है कि बिना किसी विलम्ब के आर्य विद्या सभा की स्थापना की जाये। यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से अनुरोध करता है कि वह शीघ्र से शीघ्र विद्यार्य सभा की योजना बनाकर उसे कार्य परिणत करे।

४. सत्यार्थप्रकाश विषयक

अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन का यह अधिवेशन बड़ी गम्भीरता से अनुभव करता है कि मुस्लिम लीग की ओर से जो कि अपने को राजनीतिक सस्था कहती है, हिन्दुओं की धार्मिक स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप करने का सगठित प्रयत्न किया जा रहा है और सत्यार्थ प्रकाश का विरोध इस आन्दोलन का आरम्भ मात्र है।

सत्यार्थप्रकाश में लाखों मनुष्य वैसी ही श्रद्धा और भक्ति रखते हैं जैसे किसी अन्य धर्म ग्रथ के प्रति उसके अनुयायियों की होती है। यह ग्रन्थ ६० वर्ष से जनता के समक्ष है। इसका भारतवर्ष की भिन्न-भिन्न भाषाओं में अनुवाद और प्रकाशन हो चुका है और डके की चोट इसका देश भर में प्रचार होता रहा है। बहु-सख्यक आर्यसमाजों के मच से यह व्याख्यानों का विषय रहा है और सत्सगों में इसका नित्य पाठ होता है, परन्तु देशवासियों के किसी भी भाग की ओर से कभी इस पर आपत्ति नहीं उठाई गई।

यह सम्मेलन घोषणा करता है कि सत्यार्थ-प्रकाश मे दूसरे मतों की या सम्प्रदायों की समालोचना के रूप में कोई ऐसी बात नहीं कही गई जो अन्य मतावलम्बियों के धर्म ग्रन्थों में विद्यमान न हो।

कहा जाता है कि सत्यार्थप्रकाश का यह विरोध इसलिए है कि इससे मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को आघात पहुचता है परन्तु यह बात ठीक नहीं है। इसके पीछे तो राजनीतिक चाल स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रही है।

आर्यसमाज सत्यासत्य का निर्णय शास्त्रार्थ द्वारा करने के लिए सर्वदा उद्यत रहा है। परन्तु आर्यसमाज किसी प्रकार भी यह सहन नही कर सकता कि किसी को भी बलात् काट-छाट करने के प्रयोजन से सत्यार्थप्रकाश की जाच करने का अधिकार है। ऐसी जाच का स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि अत्यन्त भीषण आन्तरिक झगडे उत्पन्न हो जायेंगे और अन्य मतावलम्बियों के धर्म ग्रन्थों की इस प्रकार की समीक्षा के लिये भी द्वार खुल जायेगा।

इस सम्मेलन को आशा है कि न केवल सभी हिन्दू, अपितु अन्य मतावलम्बी भी मुस्लिम लीग के इस आन्दोलन के गम्भीर तथा भयावह परिणाम पर पूर्ण रूपेण विचार करेंगे। सत्यार्थ प्रकाश का वर्तमान विरोध केवल आरम्भ मात्र है और हिन्दुओं के तथा अन्य मतावलम्बियों

के धर्म ग्रन्थों में हस्तक्षेप करने की ओर पहिला पग है। सभी पुरुषों को चाहे वे किसी भी मत धर्म, सम्प्रदाय या जाति के क्यों न हों कर्तव्य है कि इस आन्दोलन का दृढ़ता पूर्वक एवं सङ्गठित रूपेण तत्काल विरोध किया जाये।

यह सम्मेलन स्पष्ट घोषणा करता है कि सामान्यतः समस्त हिन्दू जगत् और विशेषतः आर्यसमाज अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने के लिये कोई कसर उठा न रखेगा और अपना सर्वस्व त्याग करने के लिए उद्यत रहेगा।

इस सम्मेलन की धारणा है कि मुस्लिम लीग की माग का मुख्य उद्देश्य यह है सरकार और आर्य समाज तथा हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य मे गहरा विरोध उत्पन्न हो जाये। इस सम्मेलन का विचार है कि मुस्लिम लीग अपने इस उद्देश्य की पूर्ति में अवश्य विफल होगी।

इस सम्मेलन को पूर्ण आशा है कि ब्रिटिश सरकार जिसकी आरम्भ से धार्मिक तटस्थता की निश्चित नीति रही है मुस्लिम लीग के जाल मे फस कर आर्यसमाज के धार्मिक अधिकारो मे पक्षपात पूर्ण हस्तक्षेप करना कदापि स्वीकार न करेगी।

५. नगरकीर्तन प्रतिबन्ध

यह सम्मेलन सयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार ऋषिबोध सप्ताह के अवसर पर प्रतिवर्ष निकलने वाली आर्यसमाज फतेहपुर की प्रभात फेरी की शान्त टोली पर १६।२।४४ को वहा के कुछ मतान्ध मुसलमानों के आक्रमण पर रोष प्रकट करता है तथा उन के इस कार्य को घृणा की दृष्टि से देखता है और सरकार से अनुरोध करता है कि घटना की शीघ्र जॉच कर अपराधियों को उचित दण्ड देवे। साथ ही इस मामले में अधिकारियों द्वारा निर्दोष आर्यों (हिन्दुओं) की गिरफ्तारी एवं प्रभात फेरी पर लगाये गये प्रतिबन्धों का घोर विरोध करता है।

६. सत्यार्थप्रकाश निधि

यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के इस निश्चय का समर्थन करता है कि ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश की हर प्रकार के आक्षेपों से रक्षा तथा प्रचार के लिये एक सत्यार्थप्रकाश निधि स्थापित की जावे जिसके लिये इस समय दो लाख रुपये एकत्रित किये जावें।

७. सत्यार्थप्रकाश दिवस

यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से अनुरोध करता है कि एक सत्यार्थप्रकाश दिवस नियत करे जिस पर सम्पूर्ण भारत के नगरों तथा ग्रामों में प्रतिवर्ष सत्यार्थप्रकाश का पाठ हुआ करे।

८. पाकिस्तान

इस सम्मेलन की सम्मति मे अखण्ड भारत के टुकडे करना हर दृष्टि से हानिकारक है और उसका हिन्दुस्थान और पाकिस्तान में विभाजन करने की योजना का यह सम्मेलन तीव्र विरोध करता है और अखण्ड शक्ति सम्पन्न केन्द्रीय सरकार का ही होना परमावश्यक समझता है।

६ त्रैवार्षिक कार्य-क्रम विषयक

यह सम्मेलन भावी तीन वर्षों के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उद्घोषित कार्यक्रम का निम्नलिखित रूप में समर्थन करता है।

१. स्वाध्याय, वैदिक पञ्चमहायज्ञ तथा वैदिक संस्कारादि और सत्सग द्वारा आर्य नर नारियों के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवनों को उच्च और दृढ़ बनाया जावे।

२ आर्य वीरदल का दृढ़ और व्यापी सगठन बनाया जावे। तीन वर्षों में आर्य वीरों की संख्या कम से कम १ लाख की जावे। आर्य वीर और आर्य वीरांगनाओं के सगठन पर समान रूप से बल दिया जावे।

३ आर्य समाज के सगठन को अधिक व्यापी करने के लिये इस समय में कम से कम ३ हजार नई समाजों की स्थापना की जावे। और ५० हजार नये आर्य सभासद् बनाये जावे।

४ ग्रामों में वैदिक धर्म प्रचार पर अधिक बल दिया जावे। प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें तथा स्थानीय आर्य समाजें निम्न लिखित तथा ऐसे ही अन्य उपायों से ग्राम प्रचार के कार्य को आगे बढ़ायें।

(क) ग्राम प्रचार मडलियों द्वारा।

(ख) औषधिवितरण तथा अन्य सेवा कार्यों द्वारा।

(ग) ग्रामों में प्रारम्भिक शिक्षणालय स्थापना द्वारा।

५ दलित और आदि वासी कही जाने वाली जातियों मे उच्च जीवन और समानता के वैदिक सिद्धान्तों का क्रियात्मक प्रचार करके उन्हें आर्य जाति का दृढ़ अग बनाने का प्रयत्न किया जावे। सब आर्यसामाजिक सगठनों को विशेष यत्न करके आसपास हल्कों में बसी हुई उन पिछड़ी हुई जातियों को आर्य समाज के दायरे में लाने का भरसक यत्न करना चाहिये।

६ यह सम्मेलन आर्य जनता से अनुरोध करता है कि वह गोरक्षा के कार्य को सगठित रूप में बढ़ावे।

७ यह सम्मेलन आर्य जनता, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य संस्थाओं तथा आर्य विद्वानों से अनुरोध करता है कि वे अपने सब कार्यों को आर्य भाषा (हिन्दी) में ही करें।

८. यह सम्मेलन सार्वदेशिक सभा से अनुरोध करता है कि वह वैदिक धर्म के प्रचारार्थ भिन्न २ भाषाओं में व्यापक विस्तृत और आकर्षक वैदिक साहित्य का निर्माण करावे।

९ ऐसे प्रान्तों में जहाँ आर्य प्रतिनिधि सभायें नहीं है अथवा शिथिल अवस्था में हैं प्रचार कार्य को बढाया जाये और जिन भील थिया आदि जातियों मे आर्य धर्म का सुगमता से प्रचार किया जा सकता है उनमे विशेष रूप से कार्य किया जावे।

आगामी तीन वर्षों का यह स्थायी कार्य-क्रम होगा। समय समय पर नई परिस्थितियों के अनुसार जिन कार्यों की आवश्यकता होगी उनके सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा उसी समय उचित आदेश देती रहेगी। कार्यक्रम की प्रगति की देख रेख के लिये सभा प्रान्तिक सभाओं से त्रैमासिक विवरण मगाती रहेगी।

१० हैदराबाद राज्य के सम्बन्ध में

यह सम्मेलन निजाम हैदराबाद की गवर्नमेंट का ध्यान इस तरफ आकर्षित करना अत्यन्त आवश्यक समझता है कि उन आश्वासनों को लक्ष्य मे रखते हुये जो उस गवर्नमेंट ने आर्य सत्याग्रह के पश्चात् अपनी २२ जुलाई और २८ अगस्त १९३९ वाली विज्ञप्तियों द्वारा प्रकट किये

थे और जिन मे से कुछ अभी तक पूर्ण नहीं हुए हैं उनको पूर्ण किया जाये। इसके साथ ही रियासत भर में धार्मिक प्रचार के कार्य में जो नई कठिनाइयाँ उत्पन्न हो गई हैं उनको दूर कर दिया जाये।

इसी भाव को सामने रखते हुये यह हैदराबाद गवर्नमेंट का ध्यान इस तरफ आकर्षित करता है कि वह गवनमेंट, आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद स्टेट की निम्न मांगों को शीघ्रातिशीघ्र कार्यरूप मे परिणत करे।

१-कवायद् तकारीबमजहबी में इस प्रकार के आवश्यक परिवर्तन किये जयें जिससे धार्मिक प्रचार मे आन वाली बाधायें दूर हो जायें और उसमे सबके लिये पूर्ण स्वतन्त्रता बनी रहे।

२-धर्म मन्दिरों के निर्माण के विषय में हैदराबाद राज्य में जो नियम इस समय प्रचलित हैं उनमें ऐसे आवश्यक परिवर्तन कर दिये जायें जिससे रियासत में आर्यसमाज मन्दिरों के निर्माण मे सुविधा उत्पन्न हो।

३ आर्य समाज के जिन उपदेशकों को अभी तक हैदराबाद स्टेट में प्रवेश की मनाई है उनसे वह मनाई दूर करदी जाये।

४- बम्बई और पजाब के जिन आर्य समाजी समाचार पत्रों का हैदराबाद रियासत में प्रवेश बन्द है उन पर से यह बन्दिश दूर कर दी जाये।

५- हैदराबाद गवर्नमेंट ने निजाम स्टेट आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र वैदिक आदर्श को सत्याग्रह समय में बन्द कर दिया था और बार बार प्रार्थना करने पर भी वह बन्दिश अभी तक उठाई नहीं गई उसे उठा दिया जाये और साथ ही स्टेट में हिन्दी, उर्दू तथा दूसरी स्थानीय भाषाओं में आर्य प्रतिनिधि सभा को समाचार पत्र प्रकाशित करने की आज्ञा प्रदान की जाये।

६- अब चूंकि हैदराबाद में हिन्दी भाषा भाषियों की और उसको समझने वालों की संख्या बहुत बढ़ गई है इसलिए उसे स्टेट भर में वही स्थान दिया जाये जो दूसरी स्थानीय भाषाओं को दिया गया है।

७- आर्य प्रतिनिधि सभा के उस्मानिया विश्वविद्यालय के आधीन डी ए. वी कालेज खोलने के प्रार्थना पत्र को जो अस्वीकृत किया गया है उसको स्वीकृत किया जाये।

११. राष्ट्र निर्माण

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि वर्तमान राजनीति और महायुद्ध के बाद राष्ट्र और विश्व के नव निर्माण के लिए बनाई जाने वाली योजनाओं को वैदिक आदर्शों के अनुकूल क्रियात्मक रूप में परिणत करने के लिये आर्य राजनैतिक कार्यकर्ताओं तथा विचारकों का एक सगठन बनाना आवश्यक है जो राजार्य सभा का रूप ग्रहण करे और उस सगठन के निर्माण के लिये निम्न लिखित समिति नियुक्त करता है।

वह सभा किसी दशा में भी आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा के निर्देशों के विरुद्ध कार्य न करेगी।

उपसमिति,

१ श्री प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति (सयोजक)
२ श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार
३ श्री प० सत्यदेव जी विद्यालंकार
४. श्रीयुत प० ज्ञानचन्द्र जी बी ए.
५. श्री बा० उमाशंकर जी
६. श्री प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री

७. श्री प० विजयशंकर जी
८. श्री प० विनायकराव जी विद्यालंकार
९. श्री प० मिहिरचन्द्र जी धीमान्
१० श्री प्रो० रामसिंह जी एम ए
११. श्री चौ० देशराज जी
१२. श्रीयुत शिवचन्द्र जी
१३ श्री कुंवर चांदकरण जी शारदा
१४. श्री बा० ज्योतिस्वरूप जी
१५ श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति

इस समिति को सदस्य बढानेका अधिकार होगा।

१२. जन्म मूलक जाति

यह जन्म मूलक जाति पाति प्रथा हिन्दू जाति की एकता को नष्ट करके हिन्दू जाति के अध पतन का मुख्य कारण रही है और कई अन्य प्रकार से यह अत्यन्त हानिकारक सिद्ध हो चुकी है साथ ही बह अनेक सामाजिक सुधारों विशेष कर शुद्धि कार्य और अस्पृश्यता के निवारण में बाधक रही है।

इसलिये —

१ यह सम्मेलन समस्त आर्य तथा हिन्दू जाति को प्रेरणा करता है कि वे इसके मूलोच्छेद के लिये समस्त सम्भव उपायों को काम में लायें।

२ यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा समस्त प्रान्तीय सभाओं को प्रेरणा करता है कि वे क्रियात्मक रूप से जाति पांति के भाव को मिटाने के लिये उचित योजना बना कर विश्वविद्यालयों, कालेजों और जन साधारण में इसके विरुद्ध सुव्यवस्थित रूप में प्रचार करें और आर्य विवाह ऐक्ट को उपयोग में लाकर जात पात का विचार किये बिना गुण-कर्मानुसार विवाहों को प्रोत्साहित करें।

१३. फौजों में प्रचार

प्राय फौजों में देखा जा रहा है कि सिखों के लिये सिख, मुसलमानों के लिये मौलवी, ईसाइयों के लिये पादरी उनकी धार्मिक जरूरतों को पूरा करने के लिये रखे गये हैं। परन्तु आर्य समाजियों की अच्छी सख्या होने के बावजूद भी कोई आर्य पुरोहित किसी फौज में नहीं है। यह सम्मेलन सरकार से माग करता है कि दूसरे धर्मों के पुरोहितों की तरह आर्यसमाजियों के लिये आर्य पुरोहित नियुक्त किये जायें।

१४ देश के राजनैतिक बन्दियो की रिहाई

आर्य सम्मेलन का दृढ मत है कि वर्तमान वैधानिक गति अवरोध के रहते देश की जनता का सरकार को सच्चा सहयोग नहीं मिल सकता और जनता के हार्दिक सहयोग के बिना भोजन समस्या का सही हल नहीं हो सकता और न ही युद्ध प्रयत्नों में देश का सच्चा सहयोग प्राप्त हो सकता है। इसलिये यह सम्मेलन ब्रिटिश सरकार से बल पूर्वक अनुरोध करता है कि वह वैधानिक गति अवरोध को दूर करने के लिये कांग्रेस नेताओं को बन्धन मुक्त करके देश में अनुकूल वातावरण पैदा करे

१५. विविध

निश्चय हुआ कि अखिल भारतीय आर्य सम्मेलनार्थ भेजे गये जिन प्रस्तावों पर समयाभाव के कारण इस सम्मेलन मे विचार नहीं हो सका उन्हें सार्वदेशिक सभा के पास बिचार तथा यथोचित कार्यवाही के लिये भेजा जाये।

इस सम्मेलन को सफल बनाने मे देहली के आर्य भाइयों मुख्यतया श्री० ला० नारायणदत्त जी स्वागताध्यक्ष आदि ने जो यत्न किया वह श्लाघनीय

है और उसके लिए यह सभा उन्हें धन्यवाद देती है।

इन प्रस्तावों पर यह सभा उचित कार्यवाही कर चुकी है। सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट पृथक् छप चुकी है।

सत्यार्थप्रकाश विरोधी आन्दोलन

आर्य सम्मेलन देहली के पश्चात् मुख्यतया सिन्ध सरकार की २६-१०-४४ की उस आज्ञा के कारण जिसके द्वारा सिन्ध प्रांत के भीतर सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास की छपाई वर्जित की गई सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा का प्रश्न इस सभा तथा समस्त आर्य जगत् की प्रगतियों का मुख्य लक्ष्य बन गया। सत्यार्थ प्रकाश की मॉंग इतनी अधिक बढ़ गई कि इस सभा परोपकारिणी सभा तथा आर्य साहित्य मण्डल अजमेर को उसकी पूर्ति करना कठिन हो गया और ये सब छपाई के लिए कागज प्राप्ति के यत्न में लग गई क्योंकि कागज की असुलभता के कारण ही मांग की पूर्ति में कठिनाई थी। सर्व साधारण आर्य जनता और प्रांतीय सभायें सत्यार्थ प्रकाश निधि के लिए धन संग्रह के कार्य में लग गईं। इस सभा की २५-४-४४ की अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार ७ मई ४४ को समस्त आर्य जगत् में सत्यार्थ प्रकाश दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश के पाठ और प्रवचन हुए तथा सत्यार्थ प्रकाश निधि के लिए धन एकत्र किया गया। सभा का प्रकाशन विभाग सत्यार्थ प्रकाश विरोधी आन्दोलन के निराकरणार्थ उपयोगी साहित्य की वृद्धि करने में लग गया। आर्य समाज के प्रेस और प्लेटफार्म पर से भी मुख्यतया इस विरोधी आन्दोलन की चर्चा होने लग गई और इसके निराकरण के उपायों पर विचार होने लग गया। लगभग सब बड़े आर्य समाजों तथा अन्य आर्य संस्थाओं के उत्सवों पर सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन होने लगे। उधर आन्दोलनकारी भी अपने कार्य में लगे रहे। हैदराबाद सिन्ध के मुसलमानों ने १०-४ ४४ को एक सार्वजनिक सभा करके पीर गुलाम मजीद सरहिन्दी को अधिकार दिया कि वे सिन्धी सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशकों पर १ सप्ताह के भीतर फौजदारी मुकद्दमा दायर करें। यह फैसला अभी तक वहां कार्यान्वित नहीं हुआ है। कराची की डिस्ट्रिक्ट जेल की लायब्रेरी में से सत्यार्थ प्रकाश की प्रति हटा दी गई और जब इस सभा के कार्यालय से १७ ७ ४४ को सिंध के गवर्नर के पास इस अनुचित कार्य के प्रति विरोध भेज कर इस भूल के सुधार के लिए लिखा गया तो सिन्ध सरकार का १-९-४४ का निम्न पत्र प्राप्त हुआ।

"With reference to your letter dated the 17th July 1944, I am directed to state that Government do not consider it desirable to allow prisoners to be supplied with the book in question the "Satyarth Prakash"

इस उत्तर के मिलने पर ११-९-४४ को सभा कार्यालय से सिन्ध सरकार को एक पत्र भेज कर पूछा गया कि वे कारण बताये जायें जिन के आधार पर यह पग उठाया गया है। इस पत्र के उत्तर में सिन्ध सरकार का २६-१० ४४ का सभा को निम्न पत्र मिला:—

"With reference to your letter dated 11th September 1944, I am directed to state that the Govern-

ment regrets that they are not prepared to enter into further correspondence with the International Aryan League on the subject"

सरकार को दु:ख है कि वह इस विषय पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ आगे पत्र व्यवहार करने को तैयार नहीं है।

२५ मई की रात को १० बजे के लगभग कुछ मतान्ध मुसलमानों ने उर्दू सत्यार्थ प्रकाश के फार्मों के बण्डल को लाहौर के मती चौक मे आग लगाकर जला डाला और जब उस आग को बुझाने के लिए श्री स्व० परमानन्द जी ने जो हिन्दू दफतरी के भाई थे यत्न किया तो किसी मुसलमान ने छुरे से उन पर आक्रमण कर दिया जिसके फल स्वरूप उनकी मृत्यु हो गई।

लाहौर में मुसलमानों द्वारा अदालतों मे उर्दू सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशकों के विरुद्ध २ मुकद्दमे भी चलाये गये हैं जो विचाराधीन हैं। इन मुकद्दमों के दावों में कहा गया है कि १४ वें समुल्लास से मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचती है और माग की गई है कि उसमें से उनके निकाले जाने की आज्ञा दी जाये।

इधर सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास की जब्ती के लिए इस प्रकार के सगठित यत्न हो रहे थे उधर सिंध की सरकार ने शान्ति और सुरक्षा के नाम पर डी० आई० आर० (भारत रक्षा विधान) की आड लेकर २६-१०-४४ को अपने प्रान्त में सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास के प्रकाशन और मुद्रण पर प्रतिबन्ध लगा दिया जिसकी ओर ऊपर सकेत किया जा चुका है। आर्य जगत् को जो आशका हो रही थी वह सत्य सिद्ध हुई। इस आज्ञा के पत्रों में प्रकाशित होते ही एक विशेषतार के द्वारा सिन्ध सरकार को समूचे आर्य जगत् का विरोध लिख कर भेजा गया और माँग की गई कि इस प्रतिबन्ध को शीघ्र वापस ले लिया जाए अन्यथा इसके बहुत से दुष्परिणाम होने की आशका है। अन्य प्रान्तीय सभाओं और समाजों ने भी इसी आशय के तार व पत्र भेजे। सिन्ध सरकार की आज्ञा इस प्रकार है—

HOME DEPARTMENT SPECIAL

Sind Secretariat Karachi
26th Oct 1944.

Order

No 8 D 321—Where as the Government of Sind considers it necessary for the purpose of securing the public safety and the maintenance of public order to make the following order—

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subrule 41 of the Defence of India Rules, the Government of Sind is pleased to direct that no copies of the book entitled "Satyarth Prakash' written by Swami Dayanand Saraswati shall be printed or published, unless chapter xiv (Chapter 14th) thereof is omitted

By order of the Governor of Sind
Sd. S Ridley
Chief Secretary

Witness my hand and seal, this 26th day of Oct 1944

इस प्रतिबन्ध की देश के प्रायः सब ही बड़े २ व्यक्तियों ने जिन में मुसलमान सिख ईसाई और सनातन धर्मी भी सम्मिलित हैं तथा प्रसिद्ध २

समाचारपत्रों ने घोर निन्दा की और इसे डी. आई आर० का दुरुपयोग बताया। यह प्रश्न केन्द्रीय धारा सभा में भी गया। श्री भाई परमानन्द जी ने ७।११।४४ को कामरोको प्रस्ताव उपस्थित किया। एक दो मुस्लिम वक्ताओं ने सत्यार्थप्रकाश की निन्दा की इस पर सभापति महोदय ने इस प्रकार के भाषणों को रोकते हुये कहा कि यह विवाद पुस्तक के विषय में नहीं है वरन् इस विषय पर है कि क्या सिन्ध सरकार ने डी० आई आर का दुरुपयोग किया है, श्री सरदार सन्त सिंह जी श्री लालचन्द्र नवलराय जी श्री अनङ्ग मोहनदास जी श्री सर चन्दावरकर जी ने प्रस्ताव के समर्थनमें भाषण देकर सरकार के इस कार्य के अनौचित्य का खूब भंडा फोड़ किया। होम मेम्बर महोदय ने अपने भाषण में बतलाया कि यह प्रतिबन्ध समूचे भारत के लिये नहीं है और सिन्ध में सत्यार्थप्रकाश के प्रचार पर भी नहीं है। केवल १४ वें समुल्लास सहित सिन्ध में सत्यार्थप्रकाश नहीं छप सकता। सम्मति लेने पर यह प्रस्ताव गिर गया। इस अवसर पर कांग्रेस पार्टी ने धार्मिक स्वतन्त्रता की रक्षा के मौलिक सिद्धान्त के इस प्रश्न पर तटस्थ रह कर अच्छा नहीं किया। उसकी इस स्थिति को निन्दनीय समझा गया।

इस सभा के आदेश पर १२।११।४४ को समस्त देश के आर्य भाइयों ने इस प्रतिबन्ध के विरोध में सभायें करके और प्रस्ताव पास करके भारत सरकार, समाचार पत्रों तथा इस सभा को भेजे।

भावी कार्यक्रम का निश्चय करने के लिये इस सभा के तत्वावधान में १६।११।४४ को देहली में आर्य नेताओं की महत्वपूर्ण कान्फ्रेंस हुई जिस में निम्न प्रस्ताव पास हुआ जिसका २०।११।४४ की अन्तरंग सभा द्वारा सपुष्टि हो चुकी है।

RESOLUTION

(Adopted at the Meeting of the Leaders of the Arya Samaj assembled at Delhi on 19th Nov 1944, under the auspices of the Sarvadeshik Sabha (International Aryan League)

This meeting of the representatives of Arya Samajists, all over the country, strongly condemns the wholly indefensible and thoroughly unjust order of the Sind Government in directing that no copies of Satyarth Parkash shall be printed or published unless Chapter 14th thereof is omitted, and considers it to be a gross abuse of the Defence of India Rules

This meeting feels convinced that this act of the Sind Muslim League Government is an act of religious persecution and a fore-taste of Pakistan, and the ground given therefor viz, securing the public peace and maintenance of public order is a mere pretext for suppressing the legitimate religious rights and liberties of a religious minority.

Resolved that with a view to get the wrong redressed and to vindicate our religious rights and liberties, this meeting authorises Hon'ble Shriyut Ghanshyam Singh Gupta to nominate a committee with full powers to take all suitable and necessary steps in this connection.

This meeting assures the Aryan public that no efforts will be spared

and no sacrifice considered too great to preserve and safeguard our religious rights

इस प्रस्ताव के अनुसार निम्न क्रिया समिति (Council of action) बनाई गई है —

१. श्री माननीय घनश्याम सिंह जी। अध्यक्ष।
२ श्री प्रो० सुधाकर जी एम० ए०
३. श्री ला० ब्रज लाल जी B A LL B
४. श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज
५ श्री प० गगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज
६ श्री म० कृष्ण जी बी० ए०
७. श्री प० रामदत्त जी M. A LL B
८ श्री राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री
९ श्री राजा नारायणलाल जी पित्ती
१० श्री ला० नारायणदत्त जी
११ श्री प्रो० ताराचन्द्र जी एम० ए०
१२. श्री कुवर चान्दकरण जी अजमेर
१३ श्री प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०
१४. श्री प० ज्ञानचन्द्र जी आर्य सेवक
१५ श्री चौ० देशराज जी
१६ श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
१७ श्री स्वामी अभेदानन्द जी
१८. श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी।
१९ श्री प० विनायकराव जी विद्यालङ्कार
२० श्री प० विजय शकर जी
२१. श्री प० मिहिर चन्द्र जी
२२ श्री ला० खुशहाल चन्द्र जी आनन्द
२३ श्री चौ० माडू सिंह जी वकील रोहतक

नोट—२७-१-४५ की अन्तरङ्ग के निश्चयानुसार इस समिति का नाम 'सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समिति' रखा गया।

यह समिति अपना कार्य कर रही है और प्रतिबन्ध को हटाने के लिये वैधानिक उपायों का आश्रय ले रही है यद्यपि जनता मे ज्यों २ प्रतिबन्ध के हटने मे देरी होती जा रही है त्यों २ बेचैनी बढ रही है और मॉग उठ रही है कि सत्याग्रह का शीघ्र से शीघ्र आश्रय लिया जावे। जोश की जो लहर आर्य जगत् में इस प्रश्न को लेकर दौड़ी हुई है और जो स्थान २ पर होने वाले लगभग प्रत्येक समाज वा सस्था के उत्सव के साथ सत्यार्थप्रकाश सम्मेलनों के अवसर पर दृष्टि गोचर होती है वह श्लाघनीय और उत्साहवर्द्धक है सम्भव है कि सरकार आर्यों को परीक्षा में डाल कर धार्मिक इतिहास में बलिदान और उत्कृष्ट आत्मोत्सर्ग का एक और अनूठा अध्याय जुड़वाना चाहती हो। इस समिति के अध्यक्ष जहाँ प्रतिबन्ध को वैधानिक प्रयत्नों से हटवाने के लिए कोई उपाय नहीं छोड़ना चाहते वहाँ आर्य जगत् को भी आवश्यकता पड़ने पर तैयार रहने के लिए आदेश दे चुके हैं और इसके लिये नियमित फार्म भरवाये जा रहे हैं। समिति के कार्यालय में बहुत से फार्म भर कर प्राप्त हो रहे हैं।

आर्य सम्मेलन के प्रस्तावानुसार सत्यार्थप्रकाश निधि के लिए दो लाख रुपये की अपील की गई थी इस मे से वर्ष के अन्त १२-२-४५ तक इस सभा के कार्यालय में प्राप्त हुई राशिया का ब्यौरा प्रातवार इस प्रकार है। अभी बहुत सा धन समाजों में पड़ा हुआ है तथा बहुत सा समाजों द्वारा सीधा प्रान्तीय समाजों मे जा रहा है। इस सब धन को सभा कार्यालय में मगाये जाने का यत्न हो रहा है —

सत्यार्थ प्रकाश रक्षा निधि

दान सूची १२ फरवरी १९४५ तक

१२८६६ रु० १ आना ६ पाई	संयुक्त प्रान्त
५४४४ ,, ८ ,,	बिहार प्रान्त
४५६८ ,, ४ ,,	बम्बई प्रान्त
३६११ ,,	बङ्गाल प्रान्त
२६४७ ,, ६ ,,	पंजाब तथा देहली प्रान्त
२०४० ,, ६ ,,	राजस्थान प्रान्त
६७७ ,, ८ ,,	मध्य प्रदेश
४८० ,, ४ ,,	हैदराबाद राज्य
४०८ ,, ८ ,,	मद्रास प्रान्त
५ ,,	सिन्ध प्रान्त
७५० ,,	विदेश
४०४४ ,, ४ ,,	विविध

३८०८३ रु० ११ आने ६ पाई

सत्यार्थप्रकाश की मांग की पूर्ति

इस समय जनता में यद्यपि हिन्दी सत्यार्थ प्रकाश की मॉग बहुत बढ रही है तथापि अंग्रेजी सत्यार्थप्रकाश की मॉग भी कम नहीं है। परोप कारिणी सभा के लिए कागज की आवश्यक व्यवस्था कराने का यह सभा यत्न कर रही है। आशा है परोपकारिणी सभा दोनों सत्यार्थप्रकाशों की माग को भले ही वह आंशिक क्यों न हो शीघ्र पूरा करेगी।

साहित्य जो इस वर्ष तैयार होकर वितरित हुआ।

१ सत्यार्थप्रकाश की सार्वभौमता। २ Maharshi Dayananda & Satyarth Prakash 3 In Defence of Satyarth Prakash ४ हम और हमारे समालोचक ५ We and our Critcs

आर्य वीर दल संगठन

गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष आर्य वीर दल की प्रगतिया प्रचार और संगठन पर ही केन्द्रित रहीं। विभिन्न प्रान्तों मे हुये कार्य का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

पंजाब

पंजाब प्रान्त मे १०१ दल सुचारु रूप से कार्य कर रहे हैं। इनको नियमित रखने के लिये रावलपिंडी मुलतान, स्यालकोट, मुरीदके तथा लुधियाना प्रमुख केन्द्र हैं। वीरों की संख्या लगभग २५०० है। अभी सीमा प्रान्त के कोहाट, बन्नू, मर्दान, पेशावर में नई शाखा खुली हैं।

पंजाब के दलपति श्री राजेन्द्र पाल जी हैं और वहा का वीर दल केन्द्रीय आर्य वीर दल के पूर्ण नियन्त्रण मे और अनुशासन में काय कर रहा है। यहा आर्य वीर दल के प्रति पर्याप्त उत्साह पाया जाता है।

संयुक्त प्रान्त

इस प्रान्त में ३५ शाखायें सुचारु रूप से कार्य कर रही हैं। आर्य वीरों की संख्या लगभग ७०० है। मुख्य केन्द्र बरेली, मुरादाबाद और सहारनपुर हैं।

इस प्रान्त के दलपति श्रीरुद्रमित्रजी शास्त्री हैं जिनकी नियुक्ति आर्य प्रतिनिधि सभा की इच्छानुसार हुई है यहा भी दल के प्रति पर्याप्त प्रेम और उत्साह पाया जाता है और उनसे पूरा २ लाभ उठाये जाने की चेष्टा हो रही है।

हैदराबाद राज्य

यहा की आर्य प्रतिनिधि सभा इस दल की उपयोगिता और आवश्यकता को भली भॉति अनुभव करती हुई दल के संगठन पर विशेष ध्यान दे रही है। इस वर्ष इस राज्य के ५ आर्य वीरों ने केन्द्रीय शिविर (बदरपुर) में शिक्षण

प्राप्त किया जो प्रान्तीय सभा की प्रेरणा पर शिक्षण के लिये आये थे।

प्रतिनिधि सभा ने इन ५ वीरों की सहायता से राज्य में १० शाखाए स्थापित करली हैं और वे वहा एक प्रान्तीय शिक्षण शिविर लगवाने का यत्न भी कर रहे हैं।

देहली

गत वर्ष की अपेक्षा इस प्रान्त में भो दल का अच्छा व्यवस्थित कार्य हुआ। इस प्रान्त के दलपति श्री ला० रामगोपाल जी तथा मन्त्री श्री हर स्वरूप जी हैं। ये दोनों सज्जन बडे उत्साह से कार्य करते हैं। प्रान्त म आर्य वीर दल को प्रगति देने के उद्देश्य से इस वर्ष गुरुकुल झज्झर में एक शिविर लगाया गया जिसमें ३५ वीरों ने शिक्षण प्राप्त किया। गाजियाबाद, पानीपत, रोहतक, भिवानी, तथा रिवाड़ी को केन्द्र बनाकर शाखायें स्थापित की गई। इन केन्द्रों के अन्तर्गत भी शाखायें चल रही है। इस प्रान्त में २१ शाखाये चल रही हैं। वीरों की सख्या ८०० है।

अन्य प्रान्तों में दल का कार्य प्राय' नहीं के बराबर है। राजस्थान में अवश्य कुछ शाखाये हैं। जो स्वतन्त्र रूप से चल रही हैं परन्तु उनकी कोई सन्तोषप्रद व्यवस्था नहीं है।

शिविर

१ सार्वदेशिक सभा की ओर से उसके व्यय पर अखिल भारतीय आर्य वीर दल शिक्षण शिविर २७ अगस्त से २७ सितम्बर ४४ तक बदरपुर में लगाया गया जिसमें भिन्न २ प्रान्तों के २३ वीरों ने शिक्षण प्राप्त किया।

२ देहली प्रान्तीय समिति की ओर से १।४।४४। से ३०।४।४४ तक गुरुकुल झज्झर में शिविर लगाया गया ३५ वीरों ने शिक्षण प्राप्त किया। ३. २ जून से २० जून तक सहारनपुर में शिविर लगाया गया जिस में २१ वीरों ने भाग लिया।

४. मुरीदके (पजाब) जिला शेखूपुरा में शिविर लगाया गया जिस में पजाब आर्य वीरदल के १५ प्रमुख कार्यकर्ताओं ने शिक्षण प्राप्त किया दल के स० मुख्य सेनापति श्री ओमप्रकाश जी त्यागी हैं। उन्होंने इस वर्ष पजाब प्रान्त तथा सीमाप्रान्त में लगभग १॥ मास तक भ्रमण करके दल के कार्यों का निरीक्षण किया और नए दलों की स्थापना तथा पुराने दलों को सुव्यवस्थित करने का भी यत्न किया। यह दल आर्थिक दृष्टि से किस प्रकार अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है तथा इस कार्य के प्रति किस प्रकार अधिकाधिक अनुराग उत्पन्न करके यह जीवित सस्था बनाई जा सकती है इन दोनों प्रश्नों पर सभा गम्भीरता से विचार कर रही है।

स्थिर पुस्तकालय

इस वर्ष पुस्तकालय मे ४५१ नई पुस्तकें आई जिन मे से २७० पुस्तकें क्रय की गई और १८१ दानियों द्वारा प्राप्त हुई। इस वर्ष श्री प० ठाकुर दत्त जी शर्मा धर्मार्थ ट्रस्ट से ५०८० की आर्थिक सहायता प्राप्त हुई तथा पंजाब के प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्ता श्री लब्भू राम जी नेयर के उद्योग से श्री चौ० देवराज जी थापर रईस लुधियाना ने २५ रु० एक अलमारी के लिये दान रूप भेजे सभा इन सब महानुभावों की कृतज्ञ है। इस समय पुस्तकालयमे वेद, वेदाग, उपनिषद, पूर्वीय और पाश्चात्य दर्शन इतिहास, जीवन-चरित्र, समाज शास्त्र, ब्राह्मण

वैदिक सिद्धान्त, स्मृति, ईसाईमत, मुहम्मदी मत, जैन, बौद्ध मत, पारसी व सिक्ख मत आदि विविध विषयों और संस्कृत, हिन्दी अ ग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन उर्दू, गुजराती, मराठी बगाली, तामिल, तिलगू, कनाडी, उड़िया आदि भाषाओं की लगभग २००० पुस्तकें हैं।

अन्तरंग सभा तिथि २०।११।४४ के निश्चयानुसार स्व० प० ओंकारदत्त जी रायपुर सी० पी० निवासी से दान रूप में प्राप्त हुई पुस्तकों की बिक्री का धन भी इस पुस्तकालय की वृद्धि में व्यय किया जायेगा। ये पुस्तकें लगभग ८०० के मूल्य की हैं जिन में से इस वर्ष ६२रु० ६ आने ६ पाई की पुस्तके बिकी हैं।

उपसमितियां

इस वर्ष विविध कार्यों के लिये अन्तरंग सभा में निम्न उपसमितियां बनाई गई थीं।

दक्षिण प्रचार

१ श्री प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय
२ श्री मन्त्री सभा
३. श्रा प० विजय शंकर जी,
४. श्री प० विनायकरावजी

इस उपसमिति की सिफारिश पर दक्षिण भारत के इस सभा के नियमित प्रचारकार्य को २७।८।४४ की अन्तरंग सभा के निश्चय स० ८ के अनुसार दक्षिण भारत आर्य प्रतिनिधि सभा मद्रास के आधीन किया गया। इस प्रचार पर अभी यह सभा ही व्यय कर रही है। दक्षिण भारत प्रतिनिधि सभा को दृढ करने का प्रयत्न किया जा रहा है। उसके दृढ होने पर प्रचारका सम्पूर्ण व्यय भार उसी सभा पर छोड़ा जायेगा। यह सभा आवश्यकतानुसार अपनी नैतिक व आर्थिक सहायता उसे देती रहेगी। इस प्रचारकार्य का विवरण पृथक् दिया गया है।

आर्य वीर दल उपसमिति

१. प्रधान सार्वदेशिक सभा
२. मन्त्री सार्वदेशिक सभा
३ कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा
४. श्री प० देशबन्धु जी विद्यालङ्कार
५. श्री प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री
६ श्री प० ज्ञान चन्द्र जी आर्य सेवक
७. श्री कुवर चादकरण जी शारदा
८. श्री प० मिहिर चन्द्र जी धीमान्
९. श्री प्रो० ताराचन्द्र जी
१० श्री प० विजय शंकर जी
११. श्री चौ० देश राज जी
१२ श्री सिद्धेश्वर प्रसाद सिह जी
१३. श्री प० विनायक राव जी विद्यालङ्कार
१४. श्री प्रो० के० वी० अइयर बगलौर।

गाजियाबाद भूमि

१. श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति
२. श्री ला० नारायण दत्त जी,
३ श्री हरशरण दास जी रईस गाजियाबाद
४. श्री रायसाहिब अमृतराय जी
५. श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी नई दिल्ली।

इस भूमि को उन्नत और इसका उचित उपयोग करने के उपायों पर विचार हो रहा है।

धन विनियोग

१.मन्त्री सभा २.कोषाध्यक्ष ३. पुस्तकाध्यक्ष सभा

इस वर्ष ८००००रु० पंजाब नैशनल बैंक में और २०००० रु० प्रताप बैंक में फिक्स डिपोजिट में जमा कराये गये।

हिन्दू कानून परिवर्तन विचारार्थ उपसमिति

१ श्री प० पूर्ण चन्द्र जी ऐडवोकेट

२ श्री प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार

३ श्री प० गंगाप्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ जज

४. श्री प० रामदत्त जी शुक्ल ऐडवोकेट

५ श्री माननीय घनश्याम सिंह जी गुप्त

हिन्दू कानून के प्रस्तावित परिवर्तनों पर सभा की ओर से निम्न सम्मति पत्र भेजा गया।

प्रस्तुत हिन्दू कोड के सम्बन्ध मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली का मत

८-६-४५ को हिन्दू कानून-सुधार उपसमिति द्वारा स्वीकृत

१ यह सभा राव कमेटी के कार्य का इसी कारण स्वागत करती है कि हिन्दू कानून नजरों वा केस ला के भार से इतना दब चुका है कि हिन्दू कोड का बनाया जाना बहुत आवश्यक हो गया था।

२ हिन्दू ला कमेटी का यह प्रयत्न भी बहुत प्रशसनीय है कि उसने हिन्दू कानून के मिताक्षरा दायभागादि पृथक् २ सम्प्रदायों का समन्वय कर के भारत वर्ष की समस्त हिन्दू जनता के लिये एक प्रकार के कानून का मसविदा तैयार किया है।

३ (क) इस सभा को खेद है कि यह अत्याव श्यक विषय ऐसे समय पर धारा सभा में रखा गया जबकि बहुत से भारत के प्रमुख नेता जिन में कानून के विशेषज्ञ भी सम्मिलित हैं जेलों में बन्द होने के कारण इस कार्य में भाग लेने अथवा अपने विचारों को प्रकट करने में असमर्थ हैं। इस सभा को प्रसन्नता होगी यदि यह कार्य तब तक के लिये स्थगित कर दिया जाये जब तक कि उक्त नेता जेलों से मुक्त न हो जायें तथा देश की परिस्थिति मे शांत वातावरण उत्पन्न न हो जाये।

(ख) इस मसौदे के विचार को स्थगित करना इस लिये भी इस सभा की सम्मति में उचित होगा कि इस मसौदे का प्रकाशन अभी तक केवल अंग्रेजी में होने के कारण सामान्य हिन्दू जनता को पूर्ण रीति से विचार करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। इस सभा को हर्ष है कि इस कोड का हिन्दी अनुवाद सयुक्त प्रान्तीय सरकार ने हाल मे प्रकाशित कराया है इस प्रकार देश की अन्य मुख्य २ प्रान्तीय भाषाओं में भी उसका अनुवाद होना उचित होगा जिसके लिये समय की अपेक्षा है।

४ यह सभा इस बात पर भी बल देना चाहती है कि जब कभी यह मसौदा धारा सभा में विचारार्थ प्रस्तुत किया जाये तो उस पर हिन्दू सदस्यों को ही मत देने का अधिकार हो अन्य मतावलम्बी सदस्यों को नहीं जैसा कि अन्य ऐसे विषयों में, प्राय होता रहा है।

यह सभा इस सिद्धान्त को भी साग्रह प्रकट करना उचित समझती है कि ऐसे महत्वपूर्ण धर्म सम्बन्धी मसविदों की तैयारी में केवल हिन्दू विशेषज्ञों को ही भाग लेना उचित है।

५. यह सभा मसविदे के विस्तार में न जा कर अभी उसके मुख्य अशों पर अपना मत प्रकट करना पर्याप्त समझती है।

६ दाय भाग के विषय में सभा इस बात का सहर्ष स्वागत करती है कि इस मसविदे में स्त्रियों के अधिकार को उन्नत करने का प्रयत्न किया

गया है। स्त्रियों का सम्पत्ति पर सीमित अधिकार केवल अदालतों के निर्णयों की उपज है और उसका वेदों और स्मृतियों में कोई आधार नहीं पाया जाता। यह प्रसन्नता की बात है कि इस मसविदे में इस बात को बिल्कुल हटा दिया गया है और स्त्रियों को अपनी सम्पत्ति पर पुरुषों के समान पूर्ण अधिकार दिया गया है। यह बात भी सन्तोषजनक है कि अनेक निकट सम्बन्धियों को जिन्हें पहले दायभाग में कोई अधिकार प्राप्त नहीं था अब दे दिया गया है।

७ परन्तु इस मसविदे में पुत्र के होते हुये भी पुत्री को पैतृक सम्पत्ति में जो पुत्र से आधा भाग देने का प्रस्ताव रक्खा गया है सभा उसका घोर विरोध करती है। पुत्र के अभाव में पुत्री वा पुत्री की सन्तान को दाय भाग मिलना उचित और न्याय संगत ही है किन्तु पुत्र के होते हुये उसे दाय भाग देना किसी प्रकार भी उचित और न्याय युक्त नहीं क्योंकि यह स्पष्ट है कि स्त्री को अपने पतिकुल में अधिकार मिलता है। पैतृक सम्पत्ति में भी उसका अधिकार रखने से यह पुत्रों के साथ एक प्रकार से अन्याय हो जाता है। इसका यह कुपरिणाम भी बहुत अधिक सम्भव है कि पारिवारिक वैमनस्य में वृद्धि हो जाये क्योंकि बहिनें जो अभी तक सब हिन्दू परिवारों में बड़े प्रेम की दृष्टि से देखी जाती हैं दायभाग में प्रतिस्पर्धिनी होने के कारण भय का कारण बन जायेंगी तथा भाई बहनों में अनावश्यक मुकदमे बाजी बढ़ेगी। लड़कियां अथवा उनके पतियों को साझीदार बनाने से व्यापारिक दृष्टि से भी बहुत हानि की सम्भावना है।

८ भाग २ धारा २१ में जो मनुष्य हिन्दू धर्म को छोड़कर अन्य मत स्वीकार कर लेवें उसकी सन्तान को दायभाग से वंचित किया गया है। इस सभा की सम्मति में वे व्यक्ति स्वयं भी जिन्होंने हिन्दू धर्म का परित्याग करके अन्य मत स्वीकार किया है दायभाग से वंचित किये जाने चाहिये जैसे कि धर्म शास्त्रों में विधान है।

९ विवाह के विषय में यह सभा इस बात पर हर्ष प्रकट करती है कि अन्तर्जातीय विवाहों पर इस मसविदे में कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया है। सिविल मैरेज में तो इस प्रकार के किसी प्रतिबन्ध का न होना स्पष्ट ही है संस्कार की विधि से किये विवाह(Sacramental marriage) में यह विधान किया गया है कि यदि ऐसे विवाह में वर वधू भिन्न २ जातियों के हों तो उसके कारण वह विवाह अवैध न होगा जिससे अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन मिलता है। यह सभा इस सुधारात्मक विधान का विशेष रूप से अभिनन्दन करती है क्योंकि आर्यसमाज जन्ममूलक जाति भेद को वेद-शास्त्र के विरुद्ध और समाज के लिये अत्यन्त हानिकारक मानता है और इसी कारण उसने विशेष उद्योग करके आर्य विवाह ऐक्ट पास करवाया था।

(ख) इस सभा का मत है कि सगोत्र विवाह शास्त्र-सम्मत नहीं।

१० यह सभा इस बात को प्रशंसनीय समझती है कि एक के जीवित समय में अन्य पति विवाह तथा बहु पत्नी विवाह को इस मसविदे में वर्जित किया गया है।

११ विवाह विच्छेद के सम्बन्ध में सभा का मत है कि वैदिक विवाह विधि में उसको कोई स्थान नहीं दिया गया और इसलिये यह सभा उसे

प्रोत्साहन देना उचित नहीं समझती परन्तु वर्तमान समय की सामाजिक परिस्थिति को ध्यान में रखते हुये यह सभा उन विशेष अवस्थाओं में जिनका वर्णन भाग ४ धारा ३० में किया गया है एक विवाह विषयक नियम १० का अपवाद मानकर द्वितीय विवाह करने का सुझाव प्रस्तुत करती है।

जन्ममूलक जातिभेद-विच्छेदनी उपसमिति

आर्य महा सम्मेलन देहली के निश्चय को क्रियान्वित करने और सुनिश्चित योजना बनाने के लिये २५। ३। ४५ की अन्तरग के निश्चय के अनुसार निम्न उपसमिति नियुक्त हुई थी।

१ प्रधान सभा श्री प० गङ्गाप्रसाद जी रि० चीफ जज
२ श्री राजा ज्वालाप्रसाद जी
३ श्री प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी
४ श्री प० मदनमोहन जी विद्यासागर
५ श्री साधु शिवप्रसाद जी
६ श्री प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री
७. श्री प० कन्हैयालाल जी

इसकी योजना बना ली गई है और उस पर विचार हो रहा है। सभा को अत्यन्त खेद है कि राजा ज्वालाप्रसाद जी का, जिन से इस कार्य में अत्यन्त व्यावहारिक सहायता की दृढ आशा थी, वर्ष के भीतर अकस्मात् देहावसान हो गया।

विद्यार्य-सभा

१. श्री प० गगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज
२ श्री प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति मन्त्री सभा,
३. श्री प्रो० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री

आर्य महा सम्मेलन के निश्चयानुसार योजना बनाने के लिये यह उपसमिति २४। ३। १९४५ की अन्तरग के नि० स० ४ के द्वारा बनाई गई थी। उपसमिति की निम्न योजना तैयार हो कर अन्तरग के निश्चयानुसार सम्मति के लिये प्रचारित की गई है।

(१) नामः—इस सभा का नाम विद्यार्य सभा, होगा।

(२) उद्देश्यः—आर्य समाज के शिक्षा सम्बन्धी काम का मार्ग प्रदर्शन सम्वर्धन और नियन्त्रण।

(३) निर्माण-व्यवस्थाः—

(क) प्रान्तिक प्रतिनिधि सभाओंके प्रतिनिधि निम्नलिखित रीति से—सयुक्त प्रान्त २। पजाब २। अन्य सब प्रान्त १-१।

(ख) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध प्रान्तिक सभाओं तथा आर्यसमाजों द्वारा सचालित सस्थाओं के प्रतिनिधि निम्नलिखित रीति से—

(ग) स्नातक की उपाधि देने वाले प्रत्येक गुरुकुल के दो प्रतिनिधि।

(घ) अधिकारी परीक्षा के लिये छात्रों को तैयार करने वाले प्रत्येक गुरुकुल का १ प्रतिनिधि।

(ङ) स्नातिका परीक्षा लेने वाले कन्या गुरुकुल के दो प्रतिनिधि।

(च) विद्याधिकारिणी या उसके समान परीक्षाओं के लिये छात्राओं को तैयार करने वाले गुरुकुलों का एक एक प्रतिनिधि।

(छ) प्रत्येक डिग्री कालेजके २ प्रतिनिधि।

(ज) इन्टरमीजियेट कालेज का १ प्रतिनिधि होगा।

(झ) चार हाईस्कूलों का एक समुदाय माना जावेगा जिसका १ प्रतिनिधि होगा।

(ञ) सार्वदेशिक सभा के सात प्रतिनिधि।

(ट) विद्यार्य सभा के उपर्युक्त सदस्यों द्वारा निर्वाचित ५ सदस्य।

नोट (१) निर्वाचित सदस्यों के लिये आर्य समाज का सदस्य होना आवश्यक होगा। केवल नियम धारा (ट) द्वारा निर्वाचित सदस्यों पर यह नोट लागू नहीं होगा।

(२) जिन संस्थाओं के प्रतिनिधि विद्यार्य-सभा के सदस्य बनेंगे उन्हें हर एक प्रतिनिधि पर दो रुपया वार्षिक चन्दा देना पड़ेगा।

(४) विद्यार्य-सभा का इन संस्थाओं के अतिरिक्त प्रबन्ध से कोई सम्बन्ध नहो होगा। प्रत्येक संस्था अपनी प्रबन्धकर्त्री सभा के आधीन रहेगी।

(५) विद्यार्य-सभा गुरुकुल, कालेज, तथा स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी कार्यों के लिये अलग अलग स्थायी कमेटिया निर्वाचित करेगी। वह उन उन विभागों के लिये विद्यार्य-सभा की सलाहकार कमेटिया समझी जायेंगी अधिकार तथा कार्य कारिणी —

(६) इस सभा के निम्न अधिकारी होंगे।

(क) प्रधान १ (ख) प्रधान-मन्त्री १ (ग) मन्त्री ३ (घ) कोषाध्यक्ष। सार्वदेशिक सभा का कोषाध्यक्ष ही विद्यार्य सभा का कोषाध्यक्ष होगा।

(ङ) ये अधिकारी निज अधिकार से कार्यकारिणी के सदस्य समझे जायेंगे। कार्य-कारिणी के शेष नौ सदस्य निर्वाचित होंगे।

(७) इस सभाके सदस्यों अधिकारियों तथा कार्य-कारिणी के सदस्यों का निवाचन प्रति तीसरे वर्ष हुआ करेगा।

(८) अधिकारियों के कर्तव्य और अधिकार निम्नप्रकार होंगे।

प्रधानः—(क) समस्त बैठकों में सभापति का आसन ग्रहण करना।

(ख) सभासदों की लेखबद्ध सम्मति मगवाकर बहु सम्मति के अनुकूल किसी विषय के निर्णय की घोषणा करना।

(ग) सभा के समस्त कार्यों पर दृष्टि रखना कि सब काम नियमानुकूल होते हैं। यदि कोई कठिन कार्य हो तो उसका उसी समय प्रबन्ध करना और उसके बिगड़ने पर उत्तरदाता होना।

प्रधान मन्त्रीः—(क) सभा की बैठकों की कार्यवाही नियम पूर्वक लिखना।

(ख) लेखबद्ध सम्मतियों और उनके अनुकूल प्रधान के निर्णय को भी कार्यवाही पुस्तक में अंकित करना।

(ग) सभा तथा प्रधान की आज्ञानुकूल पत्र व्यवहार करना।

(घ) सभा के समस्त कार्यों पर दृष्टि रखना।

(९) अधिवेशनः—इस सभा का एक वार्षिक साधारण अधिवेशन हुआ करेगा जिसमें निम्न कार्य हुआ करेंगे। नैमित्तिक अधिवेशन विशेष कार्य के लिये यथावश्यक हो सकेंगे।

(क) वार्षिक कार्य विवरण सुनने के लिये।

(ख) विवादास्पद विषयों के निर्णय के लिये।

(ग) अधिकारियों का निर्वाचन (यदि वाजिब हो) करने के लिये।

(१०) विज्ञापन व कोरमः—अधिवेशन का नियम पूर्वक विज्ञापन समस्त विषयों को अंकित करके अधिवेशन की तिथि से एक मास पूर्व दिया जाया करेगा।

(११) सात सदस्यों की उपस्थिति होने पर सभा का कार्य आरम्भ हुआ करेगा।

(१२) विद्यार्यसभा के सब निश्चय सम्पुष्टि के लिये सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा मे उपस्थित हुआ करेंगे।

(१३) विद्यार्य-सभा को अपने उद्देश्यों की पूर्ति तथा कार्य-संचालन के लिये उपनियमों के निर्माण का अधिकार होगा। उपनियमों की पुष्टि भी सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग-सभा से होनी आवश्यक है।

(१४) मन्त्रियों में कार्य का बटवारा कार्यकारिणी करेगी।

(१५) विद्यार्य सभा का कोरम ११ और कार्यकारिणी का ५ को होगा।

(१६) इन नियमो मे परिवर्तन तथा परिवर्द्धन का अधिकार सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा का होगा।

राष्ट्रनिर्माण समिति

१. श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति
२ श्री प० बुद्ध देव जी विद्यालङ्कार
३ श्री प० सत्यदेव जी विद्यालङ्कार
४ श्री प० ज्ञानचन्द्र जी
५ श्री बा० उमाशंकर जी
६ श्री प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री
७ श्री प० विजयशंकर जी
८ श्री प० विनायकराव जी
९. श्री प० मिहिरचन्द्र जी धीमान्
१०. श्री प्रो० रामसिंह जी
११. श्री चौ० देशराज जी
१२. श्री शिवचन्द्र जी
१३ श्री कुंवर चाँदकरण जी शारदा
१४. श्री बाबू ज्योतिस्वरूप जी
१५ श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति
१६ श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु
१७ श्री प० मदनमोहन जी विद्यासागर
१८ श्री बा० दयास्वरूप जी प्रयाग।

राजार्य सभा का विधान सम्मति के लिये प्रचारित किया गया है। सम्मतियाँ प्राप्त हो रही हैं।

आर्यपौरोहित्य परीक्षापटल

आर्य जगत् के लिए सुशिक्षित और प्रामाणिक पुरोहित तैयार करने के उद्देश्य से २७-८-४४ की अन्तरंग सभा ने निम्न परीक्षापटल नियत किया है —

१. अध्यक्ष श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज
२ प्रस्तोता श्री प० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय
३ सदस्य श्री प० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति
४ „ श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति
५ „ श्री प० रामदत्त जी ऐडवोकेट

पटल के विस्तृत नियम बन गये हैं। उन पर सम्मति ली जा रही है।

अंग्रेजी सत्यार्थप्रकाश

श्री स्व० डा० चिरंजीव भारद्वाज जी कृत सत्यार्थप्रकाश के अंग्रेजी अनुवाद का कुछ शर्तों के आधीन सर्वाधिकार उनकी धर्मपत्नी तथा पुत्रों ने इस सभा को दे दिया है और सभा ने २७।८।४४ की अन्तरंग के निश्चयानुसार उसे स्वीकार कर लिया है। इस सम्बन्ध में कानूनी कार्यवाही होने वाली है। अंग्रेजी अनुवाद की मांग अधिक होने के कारण अन्तरङ्ग ने निश्चय किया था कि अभी स्व० डा० चिरंजीव भारद्वाज का अनुवाद जैसे का तैसा फिर छपा दिया जावे।

विहार भूकम्प

इस वर्ष विहार में हैजा और मलेरिया बड़े भयङ्कर रूप में फैला। पीड़ितोंकी सहायतार्थ आर्य प्रतिनिधि सभा विहार ने प्रशसनीय सहायता कार्य 'रिलीफ वर्क' कराया था। सभा के कोष में विहार भूकम्प के समय के ६००० रु० जमा थे जो इस वर्ष रिलिफ के कार्य के लिए प्रतिनिधि सभा विहार को दिये गये।

श्री स्व० ओंकारदत्त जी का दान

रायपुर (सी० पी०) के प्रसिद्ध आर्य कार्य-कर्ता प० ओंकारदत्त जी ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपने समस्त घरेलू सामान, आभूषणों, तथा पुस्तकों की इस सभा के नाम वसीयत करदी थी। मृत्यु के पश्चात् आर्य समाज रायपुर के द्वारा ७०० रु० सामान की बिक्री का और ३८०) आभूषणों की बिक्री का कुल ५८०) नकद सभा को प्राप्त हुये। बिकाऊ पुस्तकें लगभग ८०० रु० के मूल्य की प्राप्त हुई थीं। २०-११-४४ की अन्तरग सभा के निश्चय स० ४ के द्वारा यह दान स्वीकार किया गया था।

आर्य-मंदिर-चित्र

समस्त आर्यजगत् में आर्य मन्दिरों के भवन वा अगले भाग एक ही नमूने के बना करें, इस विचार को सामने रख श्री दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा के अवसर पर एक प्रस्ताव पास हुआ था कि यह सभा शीघ्र से शीघ्र आर्य मन्दिरों का चित्र तैयार करा देवे। जन्म शताब्दी के समय से ही सभा ने इस कार्य को हाथ में लिया हुआ था। सबसे पहले प्रसिद्ध इंजीनियर स्व० श्री राजा ज्वालाप्रसाद जी द्वारा यह चित्र तैयार कराया गया था। इसके पश्चात् प्रतिनिधि सभा पञ्जाब आदि संस्थाओं ने जो अपने चित्र बनाये हुये थे वे भी मगाये गये और उन पर भी विचार हुआ। अन्त में सभा ने यह कार्य अम्बाले के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री राव साहब अमृतराय जी के सुपुर्द किया और ये सब चित्र सभा ने अपने विशेष निर्देशों के साथ श्री-राय साहब को भेज दिए। राय साहब ने चित्र तैयार करके सभा को भेजा और सभा की २०-११-४४ की अन्तरग ने उसे समाजों में प्रचारित करने का निश्चय कर दिया है।

नारायणस्वामी-अभिनन्दन ग्रन्थ

२०-११-४४ की अन्तरग सभा ने श्री प्रो० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री के प्रस्ताव को स्वीकार करके श्री पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी की सेवा मे उनकी आयु ८० वर्ष पूरे हो जाने के उपलक्ष्य मे आगामी जून में अभिनदन ग्रन्थ भेंट करने का निश्चय किया है। यह भी निश्चय हुआ है कि सभा मे जो सामग्री, आर्य समाज क्या है और उसने क्या किया नामक पुस्तक के लिए एकत्रित की गई थी उसका भी इसी ग्रन्थ में उपयोग होवे तथा इस ग्रन्थ के सम्पादन का कार्य प्रो महेन्द्र प्रताप जी के सुपुर्द किया जाये और यह ग्रन्थ इस सभा की ओर से ही प्रकाशित कराया जाये। यह ग्रन्थ तैयार हो रहा है।

सार्वदेशिक सभा की जायदाद व सम्पत्ति

सार्वदेशिक तथा बलिदान भवन

सभा के पास देहली में २ भवन सार्वदेशिक और बलिदान भवन हैं। सार्वदेशिक भवन ११० रु० और बलिदान भवन का सबसे नीचे का भाग अर्थात् दो दूकानें ७०) मासिक किराये पर चढ़ी हुई हैं। ५० रु० मासिक सभा-कार्यालय से

किराया लिया जाता है। सार्वदेशिक भवन के किराये से ११२० रु० और बलिदान भवन के किराये से १४४० की आय हुई। बलिदान भवन के म्यूनिसिपल टैक्सों पर ४४८ रु० ६ आने ७ पाई तथा सार्वदेशिक भवन की मरम्मत आदि पर ५४२ रु० १४ आने व्यय हुआ।

गाजियाबाद भूमि

देहली से मेरठ और गाजियाबाद से मेरठ जाने वाली सड़कों के बीच में यह भूमि स्थित है। यह ४३ बीघे १८ बिस्वे है और १००० रु० में क्रय की गई थी।

श्रद्धानन्द नगरी भवन

श्रद्धानन्द नगरी देहली में इस सभा के अधीन श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा द्वारा निर्मित २ भवन हैं। १ आर्यसमाज मंदिर। २ पाठशाला भवन। इन दोनों की लागत ६८६३ रु० है।

समयपुर पाठशाला

देहली के निकट ग्राम समयपुर में इस सभा के तत्वावधान में एक दलितोद्धार पाठशाला चल रही है। पाठशाला का व्यय देहली डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की २० रु० मासिक की सहायता और पाठशाला की अपनी भूमि की आय से चलता है। पाठशाला के नाम ३० बीघे कच्ची जमीन तथा १३७०) की लागत के अपने भवन हैं। कुआ पाठशाला में और १ भूमि में बना हुआ है

वैदिक आश्रम ऋषिकेश

इस आश्रम की भूमि तथा उस पर बने मकानों का मूल्य १४०० रु० है यह सभा की सम्पत्ति है। यह आश्रम प्रबन्ध के लिये वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के अधीन किया हुआ है।

सार्वदेशिक पत्र (हिन्दी मासिक)

इस पत्र का सम्पादन सभा के स० मन्त्री श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति करते रहे। पत्र की ग्राहक संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। यदि वृद्धि की गति यही रही तो आशा है १।२ वर्ष में पत्र अपने पैरों पर स्वयं खड़ा हो जायेगा। इस वर्ष चन्दे व विज्ञापन से ३६३६ रु० १३ आने ६ पाई आय व ४२५० रु० १३ आने ६ पा० व्यय हुआ। घाटा ६११ रु० ३ पाई रहा। इस समय पत्र का वार्षिक मूल्य ३ रु० है पत्र के गत वर्ष ८१६ ग्राहक थे। इस वर्ष ११०२ हैं। गत वर्ष घाटा १२१३ रु० १२ आने था।

इस वर्ष पत्र के निम्न विशेषांक निकले ०

१ आर्य-सम्मेलनांक मार्च ४४

२ सत्यार्थप्रकाश प्रतिबन्ध निषेधाङ्क दिसम्बर ४४

३ सत्यार्थप्रकाश १४वां समुल्लासांक फरवरी ४५

धर्मार्य-सभा

इस वर्ष आगामी ३ वर्षों के लिये इस सभा का नवीन निर्वाचन हुआ और निम्न अधिकारी और अन्तरंग सदस्य चुने गये —

अधिकारी

१ प्रधान श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

२ मन्त्री श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

३ स० मन्त्री श्री प० धर्म देव जी विद्यावाचस्पति

४. अन्तरंग सदस्य श्री प० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री

५. „ श्री प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार

६ श्री प० रामदत्त जी शुक्ल

७. श्री स्वामी वेदानन्द जी

८ श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय
९ श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी
१० श्रीमती विद्यावती जी विशारदा
११ श्री प० गंगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज

व्यवस्थायें

श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति के इस प्रस्ताव पर कि एक पत्नी के जीवित रहते हुये दूसरा विवाह करना वैदिक धर्म के विरुद्ध है या नहीं इस सभा ने व्यवस्था दी कि पत्नी के जीवित रहते हुये दूसरा विवाह करना वैदिक धर्म के विरुद्ध है। (क्रमश)

उड़ीसा प्रान्त की सुधि लो

दानवीर ध्यान दें।

कोटि जनसंख्यायुत उत्कल (उड़ीसा) प्रान्त मे अभी तक आर्य धर्म का प्रचार नहीं था। राय साहेब श्री मदनमोहन जी सेठ को प्रचेष्टा से १९४२ में प्रचारकार्य आरम्भ हुआ। श्रीमती सार्वदेशिक सभा की ओर से दो प्रचारक कार्य कर रहे है। इस स्वल्प काल में पटना राज्य में ३ और सबलपुर जिले में ५ आर्यसमाजें स्थापित हुई हैं। वर्तमान प्रचार-केन्द्र राज्य की राजधानी बालांगिर है। केन्द्र कार्यालय, साधारण सभा, साप्ताहिक सत्संग, पुस्तकालय तथा प्रचारकों के निवासादि के लिये समाज मन्दिर की बड़ी आवश्यकता है। एतदर्थ श्रीमान् पटनाधीश तथा शासक महोदय ने निःशुल्क एव निष्कर भूमि प्रदान की है। मन्दिर का आनुमानिक व्यय १०५०० रु० है इस मे से सभा ने स्थानीय उदार दानवीरों से ७००० रु० संग्रह कर मन्दिर निर्माणार्थ ठेका दे दिया है। बहुत कुछ काम हो भी गया है। इस प्रान्त मे आर्यसमाज नया होने के कारण इससे अधिक धन यहा से संग्रह करना असम्भव है। अवशिष्ट राशि ३५०० रु० के लिये हम बाहर के उदार दानियों पर निर्भर हैं। अत हमारा विनीत अनुरोध है कि इस ओर उदार दानवीर ध्यान दें।

प्रधान,

आर्यसमाज, बालांगिर (पटना राज्य)

नोट:—इस अपील का समर्थन किया जाता इस सभा की अन्तरंग सभा स्वीकार कर चुकी है अत मै जोरदार शब्दों में आर्यसमाज बालांगिर की इस अपील का समर्थन करता हूँ। उदार धनी मानी सज्जन और आर्यसमाजों को इस ओर विशेष ध्यान देकर शीघ्रातिशीघ्र ३५०० रु० की अल्पराशि को पूरा करना चाहिये धन इस सभा को भेजना चाहिये।

मन्त्री,
सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा।

हा ! भाई वासल जी,

(लेखक—श्री० प्रो० सुधाकर जी एम ए मन्त्री सार्वदेशिक सभा)

आर्यजगत् को यह समाचार सुनकर अत्यन्त हार्दिक खेद होगा कि कलकत्ता के प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री विष्णुदास वासल १७ जुलाई को सायंकाल ५॥ बजे यकायक हृदय की गति बन्द हो जाने के कारण हमसे हमेशा के लिए जुदा हो गए। आप पिछले २, ३॥ वर्ष से देहली मे ही रह रहे थे और देहली के प्रसिद्ध नागरिक श्री० हस राज जी गुप्त आयरन सिंडीकेट वालों के साथ मिलकर औद्योगिक व्यवसाय की उन्नति में लगे थे। श्री वासलजी भारत के प्रसिद्ध इजीनियरों में से एक थे गवर्नमेंट ने युद्ध के पश्चात व्यवसाय उन्नतिके सबधमे जो उपसमितिया बनाई थीं उनमें आपको प्रतिष्ठित स्थान मिला हुआ था। वे सदा अपने आर्यत्व के बल से सर्वत्र मान प्राप्त करते थे। देहली मे थोडे समय मे ही उन्होंने जो ख्याति पा ली थी वह किसी दूसरे को उपलब्ध नहीं हुई। उनका सद् व्यवहार तथा मृदु और कोमल स्वभाव सबके लिए एक विशेष आकर्षण रखता था।

कलकत्ता मे आर्यसमाज की उन्होंने जो सेवा की वह किसी से छिपी नहीं। कई वर्षों तक आर्यसमाज के मन्त्र, आयसमाज के प्रधान रह कर उन्होंने आयसमाज के काम को कलकत्ता मे खूब उन्नत किया। श्री वासल जी हमारी सार्व देशिक सभा के बगाल की आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि रूप मे कई वर्षों तक सदस्य रहे हैं। आजकल वे दीवान हाल देहली आयसमाज के उपप्रधान थे।

मेरा आपसे पिछले ३० वर्षों से मेल मिलाप रहा परन्तु यह मेल मिलाप अन्त मे घनिष्ठ मैत्री मे बदल गया था। इतने लम्बे अरसे के सम्बन्ध के आधार पर मै यह कह सकता हू कि मुझे भाई वासल सरीखे विरले ही आर्यसमाजी मिले हैं उन्होंने आर्यसमाज के उच्च उद्देश्यों को अपने जीवन मे घटा लिया था। दूसरे सम्प्रदाय वाले भी उनको मिलकर उनकी आर्यत्व की छाप का लोहा मानते थे। उदारताका यह हाल था कि किसी दुःखी के दुःख को नहीं देख सकते थे जब तक उस दुःखी के दुःख के निराकरण का उपाय न करलेते थे उन्हें चैन नहीं आता था दूसरे कई लोग उनसे बहुत अधिक पैसा रखते थे परन्तु उनकी दानशीलता विलक्षण थी। वह जो कुछ देते थे हँसते २ बिना किसी लम्बी चौड़ी भूमिका के दे देते थे। एक बार वह मुझे कहने लगे कि भाई लोग मुझे लखपति समझते हैं और इसी भ्रम मे पड कर वे मुझे हर अवसर पर दान देने को बाधित करते हैं। मैने उनसे कहा 'यह ठीक है आप लखपति नहीं हैं। परतु आपका हृदय तो करोड़पति है। यदि इस भ्रम से लोगों का हित-साधन हो रहा है तो उसको बने रहने देना चाहिए और कोई चिन्ता न करना चाहिए।" मेरी इस बात को सुनकर वे हँस दिए और चुप हो गए। मेरी लम्बी बीमारी मे वह लगभग प्रति दिन मेरे को आश्वासन देने को आते थे। मुझे इस बात का अत्यन्त दुःख है कि उनके अन्तकाल मे हममें से कोई उन्हें आश्वासन न दे सका। जिन्होंने अपने जीवन काल में किसी को दुःख न दिया हो भला वह कब गवारा कर सकते हैं कि

वे अन्त-काल मे किसी को आश्वासन देने का कष्ट देवें।

मैं यह विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि यदि भाई वासल सरीखे आर्य थोड़े से भी हमारे अन्दर उपस्थित हो जायं तो हम गौरव से अपना सिर बहुत ऊंचा कर सकते हैं। ससार में वैदिक धर्म का प्रभाव अपने आचरण से इतना गहरा डाल सकते हैं कि जिसका मिटना असम्भव हो जाय।

मैं पंजाब तथा बंगाल के आर्य भाइयों से जो वासल जी के मित्र-मण्डल में शामिल थे अपनी हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूँ तथा उनसे यह आशा करता हू कि वे सब इस बात का यत्न करेंगे कि वासल जी के नाम को चिरस्थायी करें) और उसका सबसे बडा उपाय यह है कि वासल जी को हम अपने जीवन में जीवित रखें और उनके गुणों को सर्वत्र प्रकाशित करें।

मैं उनके परिवार से भली प्रकार परिचित हू। वे आदर्श पति आदर्श पिता और मित्र थे। ईश्वर ने उनको ३ सच्चरित्र दामाद दिए हैं। वे परिवार की देख-रेख भली भाति करेंगे। ऐसी हमें पूर्णाशा है। वासलजी की आत्मा को भारी प्रसन्नता होगी यदि उनका मित्र-मण्डल उनके औद्योगिक कार्य को जारी रख सके क्योंकि उस कार्य को जारी रखने और उन्नत करने में भारत की भावी भलाई निहित है।

इस्लाम और स्त्रियों की स्थिति

श्री खुदाबख्श आदि के विचार

(लेखक—प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति अध्यक्ष अनुसन्धान विभाग सार्वदेशिक सभा देहली)

इस्लाम के विषय में कई बार यह दावा किया जाता है कि इस ने स्त्रियों की स्थिति को उन्नत करने के लिये जितना प्रयत्न किया है उतना किसी भी धर्म या धर्मग्रन्थ ने नहीं किया। मौ० मुहम्मद अली M A LL B ने इस विषय में अपने कुरान के अंग्रेजी अनुवाद की भूमिका मे लिखा है कि—

'No other religious book and no other reformer has done one tenth of what the Holy quran or the Holy Prophet Mohammad has done to raise the position of woman No other religious book has given such a high spiritual position to a woman (Maulavi Muhammad Ali s translation of the quran Introduction P C XII)

किन्तु इस विषयक निष्पक्षपात विवेचन से उपर्युक्त दावे की पुष्टि नहीं होती। महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्दश समुल्लास में पर्दा प्रथा, बहुविवाह, तथा तलाक की संक्षिप्त आलोचना 'यह बड़े अन्याय की बात है कि स्त्री घर में क़ैद के समान रहे और पुरुष खुले रहें क्या स्त्रियों का चित्त शुद्ध वायु, शुद्ध देश भ्रमण करना, सृष्टि के अनेक पदार्थ देखना नहीं चाहता होगा (समीक्षा स० १२७) जो अनेक स्त्रियों को रख ले वह ईश्वर का भक्त वा पैग़म्बर कैसे हो सके (समीक्षा स० १४३) इत्यादि शब्दों में की है।

इस लेख में हम श्री एस खुदाबख्श एम० ए० बी० सी० एल० बार एट् ला (S Khuda Buksh M A (Oxon) B C L Bar at Law नामक मुसलमान विचारक के Essays Indian and Islamic नाम की पुस्तक से कुछ उद्धरण तुलनात्मक दृष्टि से देना उचित समझते हैं श्री खुदाबख्श एम० ए० बहुविवाह और तलाक के विषय में लिखते हैं

The author of 'Reforms under Muslim Rule' seeks to make out that polygamy is an institution which Islam does not sanction, but I am not quite sure that he is right At all events the unanimity and consensus of opinion is the other way The question resolves itself into this Is this institution to be retained or done away with ? Is it conducive to the interests of society or otherwise ? There can be no two opinions on this point To our mind, the social corruption behind the Zenana is, to a large extent, due to this system It is a fruitful source of discord, strife harassing litigations the ruin of many wealthy families Nor can we ignore the fact that it is this system which, is responsible in no small degree, for the degraded view of womanhood current in the East It is impossible to expect among a polygamous people that exalted idea of wedded life which we would expect

and which we do as a matter of fact, find among those that are monogamous'

(Essays Indian and Islamic' by S Khuda Bukhsh M A P 256)

अर्थात् Reforms under Muslim Rule के लेखक ने सिद्ध करने का यत्न किया है कि इस्लाम बहु विवाह की अनुमति नहीं देता किन्तु मुझे निश्चय नहीं कि उनका यह विचार ठीक है किसी भी अवस्था में सर्व सम्मति इस विचार के ठीक विरुद्ध है। प्रश्न यह है कि क्या यह बहुविवाह की प्रथा जारी रखनी चाहिये या इसे बन्द कर देना चाहिये। क्या यह (बहुविवाह) समाज हित साधक है अथवा बाधक ? इस विषय में दो सम्मतियां नहीं हो सकतीं। हमारी सम्मति में जनाना के पीछे जो सामाजिक विकार है वह बहुत अधिक अंश में इसी कुप्रथा का परिणाम है। यह प्रथा परस्पर विरोध वैमनस्य, चिंता जनक मुकद्दमेबाजी तथा अनेक धनी परिवारों के विनाश का सफल मूल है हम इस बात को भी नहीं भूल सकते कि यह प्रथा अनेक अंशों में पूर्व देशों में प्रचलित स्त्री विषयक हीन भावना के लिये उत्तरदायी है। बहुविवाह की प्रथा वाले लोगों से विवाहित जीवन की उस उच्च भावना की आशा नहीं की जा सकती जो हम एक विवाह पद्धति का अनुसरण करने वाले लोगों में पाते हैं। इस के आगे मुसलमान देशों में स्त्रियों की शोचनीय अवस्था का चित्र खैंचते हुये श्री खुदा बख्श ने लिखा है—

Polygamy and divorce generally go hand in hand In Eastern Bengal div rce is the order of the day and wives are put away as we cast off our old clothes And so also in Egypt and Arabia No judicial enquiry no positive proof not a tittle of evidence of any sort is needed The lord of creation is invested with the power of divorce and he makes full and free use of it Is a high regard and reverence of woman kind conceivable under a system such as this ? Marriage becomes only one remove from promiscuous intercourse Its significance, sanctity importance in domestic life is destroyed and women become mere instruments to satisfy passion and gratify lust P 258

आवश्यकता

सार्वदेशिक सभा के कार्यालय के लिए एक अनुभवी और आर्यसमाजी लेखक की आवश्यकता है जिसकी हिन्दी और अंग्रेजी की योग्यता अच्छी हो। सम्प्रति लेखक को ३ मास लिए परीक्षार्थ रखा जायगा परन्तु कार्य सन्तोषजनक होने पर वह स्थिर भी हो सकेगा। और प्रौवीडेन्ट फंड इत्यादि का लाभ भी उठा सकेगा। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। हिन्दी तथा अंग्रजी टाइपिस्ट को विशेषता दी जायगी।

प्रार्थना पत्र प्रमाण पत्रों सहित शीघ्र भेजिए या दिन के ११ और ५ बजे के मध्य कार्यालय में आकर मिलिए।

सुधाकर, एम० ए०,
मन्त्री सार्वदेशिक सभा
श्रद्धानन्द बलिदान भवन देहली।

अर्थात् बहुविवाह और तलाक साधारणतया साथ २ चलते हैं। पूर्वीय बंगाल में तलाक प्रति दिन की घटना है और स्त्रियों को वहां ऐसे ही तलाक दे दिया जाता है जैसे हम पुराने कपड़ों को उतार देते हैं। मिश्र देश (इजिप्ट) और अरब में भी यही अवस्था है। किसी अदालती जांच स्पष्ट प्रमाण और साक्षी की जरा भी आवश्यकता तलाक के लिये नहीं समझी जाती। पति को तलाक देने का पूर्ण अधिकार है और वह उसका पूरा और खुला उपयोग करता है। क्या ऐसी प्रथा के होते हुये स्त्रियों के लिये आदर सम्मान के भाव की कल्पना की जा सकती है? विवाह अनियन्त्रित सम्भोग से एक ही कदम दूर रह जाता है। इसकी उपयोगिता, महत्ता पवित्रता और पारिवारिक जीवन में आवश्यकता नष्ट हो जाती है और स्त्रियां केवल पुरुषों की भोग और कामवासना की तृप्ति का यन्त्र मात्र रह जाती हैं। इस्लाम में अनुमोदित बहुविवाह और तलाक की हानियों का इस से अधिक प्रभाव जनक चित्रण और क्या किया जा सकता है यदि महर्षि दयानन्द जी जैसे आदर्श समाज सुधारक ने ऐसी प्रथा का विरोध किया तो इस में चिढ़ने की बात ही क्या है? पर्दे की प्रथा पर विचार करते हुए खुदाबख्श साहेब लिखते हैं कि—

"What ever may have been the origin of the Purdah system, it is clear enough that it is founded in the belief, though not openly confessed yet clear enough, that women can not be trusted to themselves that the female sense of virtue, piety and chastity is too frail and feeble to withstand the temptations of free social intercourse In no other light is the existence of this system to be explained or justified I may be charged with drawing a picture of our society in colours far worse than it is but I am confident that no thoughtful man will disagree with me that these are defects, most vital defects which we must seriously attempt to remove and set right" P 256

अर्थात् पर्दा पद्धति का मूल कुछ भी रहा हो, यह स्पष्ट है कि इसका आधार इस विश्वास पर है यद्यपि इसे खुले तौर पर स्वीकार नहीं किया जाता कि स्त्रियों पर विश्वास नहीं किया जा सकता और उन के गुण पवित्रता और पातिव्रत की भावना इतनी निर्बल है कि वह खुले सम्पर्क के

आवश्यकता

हैदराबाद स्टेट में प्रचार की अत्यन्त आवश्यकता अनुभव की जा रही है। इसलिए हमें एक योग्य और अनुभवी उपदेशक चाहिये उन्हें वैदिक सिद्धान्तों व अन्य धर्म तथा वादों का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है जिस भाई को आर्य समाज के सिद्धान्त और ऋषिदयानन्द जी महाराज के मन्तव्यों के प्रचार करने की धुन हो वह प्रार्थना पत्र भेजें उन्हें दक्षिणा रूप में मासिक ७५) की जी भेंट किये जावेंगे। प्रार्थना पत्र शीघ्र सभा कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए।

मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद स्टेट

सुल्तान बाजार

हैदराबाद दक्षिण

प्रलोभन का मुकाबला करने में असमर्थ है। अन्य किसी भी रूप में इस प्रथा के अस्तित्व की व्याख्या नहीं हो सकती और न उसका समर्थन किया जा सकता है। मुझ पर शायद यह दोष लगाया जाए कि मैने अपने मुस्लिम समाज की अवस्था का अधिक काले रूप में चित्रण किया है किन्तु मुझे विश्वास है कि कोई भी विचार शील व्यक्ति मुझ से इस बात में असहमत न होगा कि ये त्रुटियां हैं, अत्यधिक आवश्यक विषयों में भयङ्कर त्रुटियां हैं जिन का दूर करने का हमें गम्भीरता पूर्वक प्रयत्न करना चाहिये।

इस सुधार विषयक प्रयत्न की विशेष आवश्यकता की ओर मुस्लिम जनता का ध्यान आकर्षित करते हुये श्री खुदाबख्श ने उपसंहार के रूप में लिखा है कि

'True, with in the last quarter of a century there has been a distinct and pronounce d tendency to check these evils, but there is not yet a deliberate, strenuous, persistent effort to destroy them, root and branch Occasional voices, indeed, do we hear protesting against them, but they fall on unwilling ears. The Muslim societies, in our opinion, should take it upon themselves to grapple with these problems, to arouse an interest in them, to bring home to our people the necessity of united and concerted effort to purify the stream of domestic life ond social system."

(Essays Indian and Islamic by S Khuda Bukhsh M.A B.C.L P.259 Published in London in 1912

अर्थात् यह सत्य है कि पिछले २५ वर्षों में (यह पुस्तक सन् १९१२ में लिखी गई थी) इन बुराइयों को दूर करने की स्पष्ट प्रवृत्ति विद्यमान रही है किन्तु अभी तक विवेक पूर्वक निरन्तर प्रयत्न इन कुप्रथाओं का समूल नाश करने के लिए नहीं किया गया। हम समय २ पर इन कुप्रथाओं के विरोध में आवाजें सुनते रहे हैं किन्तु वे बहिरे कानों पर पड़ती रही हैं। हमारी सम्मति में इन समस्याओं के हल करने, उनकी ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने और पारिवारिक जीवन तथा सामाजिक पद्धति की धारा को पवित्र करने के लिये सम्मिलित और सगठित प्रयत्न करने की आवश्यकता को अनुभव करने का भार मुस्लिम संस्थाओं को अपने ऊपर लेना चाहिये।

औक्सफ़ार्ड युनिवर्सिटी के एम० ए० खुदाबख्श बैरिस्टर जैसे विचार शील मुसलमान विद्वान् के इन लेखों से महर्षि दयानन्द जी कृत समालोचना का पूर्ण तथा प्रबल समर्थन होता है यह लिखने की आवश्यकता नहीं।

योगिराज श्री कृष्ण का उत्तम उपदेश

(ले०—श्री प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० उपप्रधान सार्वदेशिक सभा)

दैवी और आसुरी सम्पत् ।

दैवी सपद् विमोक्षाय
निबन्धायासुरीमता ।
मा शुचः सपदं दैवीम-
भिजातोसि पाण्डव ॥
(गीता १६।५)

मोक्ष सब चाहते हैं और बन्धन कोई भी नही चाहता मनुष्य ही नही पशु पक्षी और कीट पतङ्ग भी मोक्ष के इच्छुक हैं। इस से सिद्ध ह ता है कि मोक्ष जीव का जन्मसिद्ध तो नहीं अपितु नैसर्गिक अधिकार है। परन्तु अधिकार बिना कर्तव्य के ऐसा है जैसे बुनियाद के बिना भवन। इसी लिये हमारे शास्त्रों ने मोक्ष को पुरुषार्थों मे चौथा दर्जा दिया है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चार आवश्यक पदार्थ माने गये हैं। हमारा जीवन धर्म अर्थात् कर्तव्य से प्रारम्भ होता है और मोक्ष इसकी अन्तिमश्रेणी है य यों कहना चाहिये कि जिस वृक्ष का मूल धर्म है उस का फल मोक्ष है। कर्त्तव्य (धम) से ही अर्थ की प्राप्ति हो सकती है और अर्थ की प्राप्ति से ही काम अर्थात् समी चीन भोग मिल सकता है। यदि इन तीन दर्जों को पार कर लिया तो मोक्ष अनायास ही आ सकता है। पेड को सींचना ही फल की प्राप्ति करना है। इस से अतिरिक्त फल की प्राप्ति का यत्न करना व्यर्थ है क्योंकि फल मिलेगा ही नहीं। और यदि वृक्ष का मूल सींचा गया है तो फल के लिये चिन्तित रहना भी अनावश्यक है क्यों कि फल स्वय ही मिल जायगा।

हमारे आधुनिक जीवन में चार पदार्थों के स्थान में दो पदार्थ रह गये है अर्थात् अर्थ और काम। सुखों की सामग्री जुटाओ और सुख भोगो इसका परिणाम यह है कि न तो सुख की सामग्री जुटपाती है न सुख की प्राप्ति हो सकती है। गीता ने इसी को आसुरी सम्पत् कहा है। इस का फल गीता के शब्दों मे बन्ध है मोक्ष नहीं। मोक्ष के लिये तो दैवी सम्पत् चाहिये। दैवी सम्पत् ही का नाम धर्म है। दैवी सम्पत् के बिना मोक्ष तो मिलेगा नहीं और बन्धन कहां होगा ही। आप कितना ही मना क्यों न करें यह समस्या तो हल होती नहीं। स्वतन्त्रता सब चाहते हैं। फल सब खाना चाहते है दैवी सम्पद् की ओर किसी का ध्यान नहीं न उस पर हमारी श्रद्धा है। अच्छा। न हो। कर के देख लो। व्यक्तिगत जीवन मे, सामाजिक जीवन में नैतिक जीवन में, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में। किसी में क्यों न हो दैवीसम्पद् की कमी है। अत न तो हमको वैयक्तिक मोक्ष प्राप्त है न आर्थिक न सामाजिक और न राष्ट्रीय। एक बन्धन को काटते हैं दस नये उत्पन्न हो जाते हैं।

आसुरी सम्पत् क्या है? गीता के शब्दों में सुनिये —

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च, क्रोधः पारुष्यमेवच।
अज्ञानंचाभिजातस्य, पार्थ सपदमासुरीम्।
(गीता १६।४)

पाखण्ड घमण्ड, अभिमान क्रोध, कठोरता, तथा, अज्ञान।

अब ज़रा अपने जीवन की आन्तरिक अव-

स्था को इस कसौटी पर कसिये तो। गीता पाठी तो बहुत हैं। गीता की पोथी बगल में दबाने वाले, गीता की कथा कहने वाले, गीता सुनने वाले, गीता रटने वाले, गीता का प्रचार करने वाले, गीता की पुस्तकें छपने, बेचने और बाटने वाले, गीता का तावीज बना कर गले में लटकाने वाले, परन्तु गीता के इस श्लोक पर विश्वास रखने वाले और अपने जीवन में इस को धारण करने वाले बहुत कम हैं। जिसने आसुरी सम्पत् का नहीं छोड़ा उसकी बेडियां और हथकड़िया तो दिन प्रति दिन कड़ी पड़ती जायेगी। ससार के प्रत्येक विभाग मे कितना पाखण्ड है? जिस को हम धार्मिक जीवन कहते हैं उसमे तो पाखण्ड सीमा को उल्लङ्घन कर गया है। क्या पाखण्डी दुकानदार को दुकान मे अर्थ की प्राप्ति हो सकती है? क्या पाखण्डी राजा राज का पालन कर सकता है? क्या पाखण्डी ब्राह्मण आत्मिक उन्नति कर सकता है? परन्तु क्या हमारे वैश्य, हमारे क्षत्रिय हमारे ब्राह्मण आसुरी सम्पत् का विकार नहीं है? क्या हमारे कई सुधारक और उपदेष्टा आसुरी सम्पत् के ही अभिवर्धक नहीं हैं? यदि हैं तो विमोक्ष का क्या प्रश्न?

दैवी सम्पत् क्या है? इस को भी गीता के ही शब्दों मे सुनिये —

अभयं सत्व संशुद्धिर्ज्ञान योग व्यवस्थितिः।
दान दमश्च यज्ञश्च स्वाध्याय स्तप आर्जवम्॥
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्ति रपैशुनम्।
दया भतेष्वलोलुप्त्वंमार्दवं ह्रीरचापलम्॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सपद दैवीम भिजातस्य भारत॥
(गीता १६। १—३)

अभय, अन्तः करण की शुद्धि, ज्ञान, योग, दान, दम, यज्ञ, स्वाध्याय, तप, ऋजुता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति, चुगली न खाना, प्राणियों पर दया, लोलुपता का अभाव, कोमलता, चपलता का अभाव, तेज, क्षमा, धृति, शौच, अद्रोह, और निरभिमान, गीता के वे वचन मनु के धर्म के दश लक्षणों से मिलाइये और सोचिये कि क्या बिना इस दैवी सम्पत् के हम धर्म के किसी विभाग में उन्नति कर सकते हैं।

हम को चाहिए कि दैवी सम्पत् को धारण करने और आसुरी सम्पत् से बचने का यत्न करें।

श्री कृष्ण महाराज के जन्मोत्सव (३० अगस्त) के दिन यदि हम इन श्लोकों पर विचार करें तो हमारी बहुत सी समस्यायें हल हो सकती हैं।

कृतज्ञता प्रकाश

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी रामगढ़ (नैनीताल) से सूचित करते हैं —

"मेरी आयु के ८० वें वर्ष के उपलक्ष्य में श्रीमती सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने कृपा करके जो 'अभिनन्दन ग्रन्थ' भेंट किया है और उसके साथ भारत के आर्य्य समाजों ने सभा के इस आयोजन का स्वागत करते हुए मेरी आयु वृद्धि के सम्बन्ध मे जो प्रस्ताव पास करके मेरे पास भेजे हैं, वह इतनी बड़ी सख्या में है कि पृथक २ उत्तर देना सम्भव नही है, इन सबके लिए मैं आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद देता हूं।"

आर्यसमाज का वास्तविक स्वरूप

(लेखक—श्री शिवचन्द्र जी, बलिदान-भवन देहली)

महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज चाहते थे कि जिस प्रकार वैदिक धर्म का प्रचार समस्त ससार मे महाभारत से पूर्व था उसी प्रकार उसका प्रसार पुन हो। उन्होंने यह भी अनुभव किया था कि वह स्वय अकेले अपने थोड़े से सीमित जीवन मे इस महान् कार्य को पूर्ण नहीं कर सकते, किन्तु उन जैसे लाखों ही मनुष्य इस ओर लग जायें तो भी थोडा है। इसी महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिये साधन के रूप मे उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी अर्थात् उनका लक्ष्य था वैदिक धर्म और साधन आर्य समाज। यदि हमें लक्ष्य की ठीक ठीक प्राप्ति नहीं होती तो स्पष्ट है कि हमारे साधनों मे कहीं त्रुटि है। चतुर लोग लक्ष्य के अनुसार ही साधन भी जुटाया करते हैं।

महर्षि दयानन्द का लक्ष्य था वैदिक धर्म्म। वैदिक धर्म का साधरण सा अर्थ है ज्ञान सहित कार्य करना। धर्म शब्द की सब से सुन्दर तथा सरल व्याख्या कणाद मुनि, ने की है' यतोऽभ्युदय निश्रेयस सिद्धि स धर्म। अर्थात् जिसके द्वारा सांसारिक उन्नति तथा परमात्मा का आनन्द दोनों ही प्राप्त हों। सासारिक उन्नति में वह सारी बातें आ जाती हैं जिनके द्वारा मनुष्य व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन दोनों में ही उन्नति प्राप्त कर सके। यही बात परमात्मा की आनन्द प्राप्ति के विषय में भी कही जा सकती है। सांसारिक उन्नति के बाहर ऐसी कोई भी वस्तु नहीं रहती जो मानवी जीवन को सांसारिक दृष्टि से सर्वाङ्गपूर्ण बनाने वाली हो। मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन की उन्नति के लिये उसके जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत जिन जिन बातों की आवश्यकता होती है वह सब कुछ उसके अन्दर आ जाती है उसी प्रकार मानवी सामाजिक जीवन की उन्नति के लिये सृष्टि के आरम्भ से लेकर सृष्टि के अन्त तक जिन जिन बातों की आवश्यकता होती है वह सब कुछ उसके अन्दर आजाती है। मनुष्य का व्यक्तिगत जीवन जहा उसके सस्कारों द्वारा उन्नतिशील बनता है उसी प्रकार मानवी सामाजिक जीवन राजनीति, ज्ञान, विज्ञान, वाणिज्य, व्यापार, व्यवसाय, उद्योग, कृषि, तथा बकिंग आदि द्वारा उन्नतिशील बनता है। इन सब बातों को महर्षि ने अनुभव किया था। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का छठा समुल्लास राजनीति पर ही लिखा था, जिस का प्रचार आर्य समाज ने एक प्रकार से स्वयम् ही बन्द कर रक्खा है। आर्य समाज मे एक ऐसा समुदाय है जो राजनीति के नाम मात्र से ही भय खाता है। यदि धर्म का अर्थ कर्तव्य है तो राजनीति भी तो कर्तव्य का एक छोटा सा अग है। जिस धर्म मे राजनीति नहीं वह धर्म अपूर्ण है। यह हो सकता है कि आर्य समाज देश की वर्तमान राजनैतिक पार्टियों से मिल कर देश के राजनैतिक उत्थान के लिये कार्य न करे परन्तु उसके पास तो विशुद्ध वैदिक राजनीति है उसे क्यों नहीं अपनाता और देश का नेतृत्व करता आर्यसमाज ने प्राय न तो वेदों के राजनैतिक भाव को ही समझा और न इस विषय मे महर्षि और सत्यार्थप्रकाश को, जिसका परिणाम यह हुआ कि आज देश का समस्त

युवक समुदाय या तो कांग्रेस में चला गया या अन्य किसी संस्था में। आर्य समाज में नवीन रुधिर का आना बन्द सा हो गया। मेरा तो पूर्ण विश्वास है कि यदि आर्य समाज ने वेदों महर्षि दयानन्द तथा सत्यार्थप्रकाश द्वारा बताई हुई राजनीति को अपनाया होता और देश का नेतृत्व किया होता तो आज देश में निश्चय रूप से न तो कांग्रेस होती न हिंदू महासभा न मुसलिम-लीग, और न पाकिस्तान की ही चर्चा होती। किन्तु देश की राजनैतिक बागडोर महर्षि दयानन्द के शिष्यों के हाथ में होती और आज देश का नकशा ही बदला हुआ होता।

महर्षि ने अपने जीवन का बहुमूल्य अन्तिम समय देशी रजवाड़ों के सुधार तथा उनके सगठन में लगाया था इसका भी एक राजनैतिक महत्व था। परन्तु आर्य समाज ने इस पर भी बाद को कोई विशेष ध्यान नहीं दिया है। यदि इस कार्य को आर्यसमाज ने किया होता तो इससे भी आज देश का नक्शा बदला हुआ होता। इसी प्रकार उच्च कोटि के शिक्षित वर्ग (Intellectuals) तथा विश्वविद्यालयों के छात्रों में प्रचार की कोई विशेष व्यवस्था नही हुई।

महर्षि ने महाराणी विक्टोरिया से गौ रक्षा के सम्बन्ध में पत्र व्यवहार किया था और इस कार्य को भी बड़े वेग के साथ अपने हाथ में लिया था। परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात आयसमाज ने उधर भी कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।

उद्योग (Industry) आदि की उन्नति भी महर्षि चाहते थे और इसी लिए उन्होंने इस विषय में जर्मनी से पत्र-व्यवहार किया था परन्तु आर्यसमाज ने उधर भी कोई उल्लेखनीय पग नहीं उठाया। होना तो यह चाहिये था कि आर्य-समाज के आज अपने कारखाने होते, अपने बैंक होते अपनी बीमा कम्पनिया होती तो देश की आर्थिक कुंजी भी आर्यसमाज के हाथ में होती। अर्थ तो धर्म का सबसे बड़ा तथा प्रथम साधन है। परन्तु आर्य समाज ने अभी तक इसे भी नही समझा प्रतीत होता।

निःश्रेयस मार्ग (अध्यात्मवाद) में भी आर्य समाजको कोई खास सफलता नहीं मिली देश के शिक्षित वर्ग (Intellectuals) को आज आर्य सन्यासियों के पास आत्म विद्या सीखने के लिए आना चाहिए था। परन्तु वे जाते हैं अरविन्द आश्रम अथवा रमण आश्रम में।

पाठक इस लेख से यह न समझें कि आर्य-समाज ने कुछ किया ही नहीं। आर्यसमाज ने सामाजिक क्षेत्र वा सेवा के क्षेत्र (Social Service field) में देश में ईसाइयों को छोड़ कर सब से अधिक कार्य किया है। परन्तु उतना ही आर्यसमाज का वास्तविक स्वरूप नही है मैं तो स्पष्ट शब्दों में कहूगा कि अभी तक हम लोगों ने उस आर्यसमाज का जिसको महर्षि दयानन्द ने स्थापित किया था वास्तविक स्वरूप पूर्णतया समझा ही नही। महर्षि दयानन्द के आर्यसमाज का वास्तविक स्वरूप तो हम ससार के सम्मुख तब ही रख सकते है जब हम आर्यसमाज के द्वारा मानव समुदाय की चतुर्मुखी अर्थात् सर्वांगपूर्ण उन्नति कर सकें।

क्या आर्य समाज अपने वास्तविक स्वरूप को कभी ससार के सम्मुख रख सकेगा ?

आर्य कुमार जगत्

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्

भारत वर्षीय आर्यकुमार परिषद् की अन्त रग सभा ने सयुक्त प्रान्तीय सम्मेलन ग जियाबाद में ५-६ ७ अक्तूबर १९४५ का करने की स्वीकृति गाजियाबाद आर्य कुमार सभा का दे दी है।—जिस की स्वागत समिति इस प्रकार बन गई है —

स्वागताध्यक्ष-श्री बाबा हरिरामजी म्युनिसिपल क०

उपस्वागताध्यक्ष—श्री सागरमल जी, श्री बाल-स्वरूप जी श्री शम्भुदयाल जी, श्री जनार्दन जी

प्रधान मन्त्री—श्री देवी दयाल जी

मन्त्री—श्री ब्रज मोहन जी

सहायक मन्त्री—श्री रिपुदमन पाल जी

उप मन्त्री—श्री रमेशचन्द्र जी

कोषाध्यक्ष—श्री पन्नालाल जी

लेखा निरीक्षक-श्री यमुन प्रसाद जी

इसके अतिरिक्त कार्यकारिणी तथा उपसमितियों का चुनाव हुआ।

द्वितीय जिला मेरठ आर्य कुमार सम्मेलन

आर्यकुमार सभा गुलावठी के निमन्त्रण पर उनके तृतीय वार्षिकोत्सव पर ता० १३ जून को द्वितीय मेरठ जिला आर्य कुमार सम्मेलन श्री पण्डित देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्य मिशनरी की प्रधानता में हुआ—सम्मेलन के सभापति, श्री देवीदयाल जी उपप्रधान मेरठ जिला आर्य कुमार परिषद् क साथ ८ बजे बाल गाड़ी से गुलावठी पहुँचे।

स्थानीय कार्यकर्त्ताओं ने स्टेशन पर उनका स्वागत किया दोपहर को प्रचार हुवा। सायकाल मेरठ जिला आर्य कुमार परिषद् की बैठक हुई।

रात्रि को एक पण्डाल में सम्मेलन प्रारम्भ हुवा स्वागताध्यक्ष का भाषण- सम्मेलन के अध्यक्ष के भाषण हुवे। तत्पश्चात् सत्यार्थप्रकाश रक्षा दहेज निषेध शारीरिक उन्नति—स्वाध्याय सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकृत हुवे। गाजियाबाद हापुड़, मेरठ मवाना-गढमुक्तेश्वर आदि स्थानों से प्रतिनिधि आये।

पजाब आर्य युवक परिषद्

ता० ९—१० जून १९४५ को डी० ए० वी० हाईस्कूल लाहौर में पजाब आर्य युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन हुआ। पजाब के बहुत से नगरों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुवे। सम्मेलन सफलतापूर्वक हो गया।

प्रमाण पत्र

जनवरी सन् १९४५ की परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के प्रमाण पत्र तैयार हो रहे हैं। अगस्त तक सब केन्द्र व्यवस्थापकों के पास भेज दिये जावेंगे।

देवीदयाल

कार्यालय मन्त्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्

दीवानहाल—देहली।

सामाजिक जगत्

दक्षिण भारत के कुछ उल्लेखनीय समाचार

दक्षिण भारत आर्य सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन —

दक्षिण भारत आर्य सम्मेलन के प्रथम तृतीय अधिवेशन क्रमश मदुरा, मद्रास और बगलौर में हो चुके हैं। चतुर्थ अधिवेशन इस वर्ष २८ २६ मई को बड़े समारोह के साथ आन्ध्र प्रान्त के नैल्लोर नामक सुप्रसिद्ध नगर में हुआ। प्रथम दिन सम्मेलन स्वामी हसानन्द जी और द्वितीय दिन श्री प गोपदेव जी की प्रधानता में हुआ जिस में सार्वदेशिक सभा के सुयोग्य और अत्यन्त उत्साही प्रचारक श्री प० मदनमोहन जी विद्या सागर वेदालङ्कार प०रुद्रदत्त जी शास्त्री (उड़ीसा) तथा अन्य विद्वानों के वैदिक धर्म और आर्य समाज आदि विषयक प्रभाव शाली व्याख्यान हुए। श्री प० गोपदेव जी के सभापतित्व में प्रचा रक सम्मेलन और सत्यार्थ प्रकाश के तिलगू अनुवादक प० वेकट रत्नम् जी के सभापतित्व में शुद्धि तथा जातिभेद विच्छेदक सम्मेलन हुए। जिनमे दक्षिण भारत में प्रचार विषयक योज नाओं पर विचार किया गया तथा शुद्धि अन्दो- लन और जातिभेद विरोधी आन्दोलन को प्रबल बनाने के साधन सोचे गये। २६ मई को प्रात कई ईसाइयों की शुद्धि भी श्री प० गोपदेव जी ने कराई। आर्य सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष आन्ध्र हिन्दू महासभा के प्रधान श्री पैड़ा सुब्रामैय्या जी थे। इस सम्मेलन को सफल बनाने का सब से अधिक श्रेय प० मदनमोहन जी विद्यासागर वेदालङ्कार को है जिनका आन्ध्र में अपनी योग्यता और लगन के कारण बहुत ही उत्तम प्रभाव है। (मद्रास के श्रीयुत कृष्णराव जी आदि अनेक सज्जनों ने भी इस में पूर्ण सहयोग दिया था।

कॉजीवरम् (मद्रास सस्थान) में आर्य समाज की स्थापना।—

काञीवरम् दक्षिण भारत का एक सुप्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहा श्र युत कृष्ण राव जी मन्त्री दक्षिण भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में मद्रास के अनेक आर्य कार्य कर्ताओं का एक दल प्रच रार्थ काञ्जीवरम् पहुँचा। श्री प० मदनमोहन जी विद्यासागर वेदालङ्कार को आर्य समाज स्थापनार्थ विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। उनके दो प्रभाव शाली व्याख्यान 'आर्य समाज के मिशन और वर्तमान हिन्दू धर्म' पर श्रीयुत कृष्णराव बी ए बी टी (रि डिस्ट्रिक्ट एज्यू केशनल आफिसर) और हौबर्ट सुन्दरम् B A B L डिस्ट्रिक्ट मुन्सिफ के सभापतित्व में हुए जिनका बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ा। महिलाए भी अच्छी सख्या में उपस्थित थीं। २ जुलाई को प० मदन मोहन जी ने आर्य समाज के नियमों की व्याख्या करते हुए आर्य समाज की स्थापना की। आशा है इस समाज की स्थापना से ईसाई मत के प्रचार को रोकने में बड़ी सहायता मिलेगी।

मद्रास में एक प्रशसनीय अन्तर्जातीय अन्तः प्रान्तीय विवाह:—

मद्रास आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्रीयुत गणेश जी की बहिन सुशीला देवी का विवाह सस्कार श्रीयुत खुशीराम जी नामक पजाबी सज्जन के साथ केन्द्रीय मद्रास आर्य-समाजमन्दिर में पूर्ण

वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अन्तर्जातीय और अन्त प्रान्तीय विवाह का जनता पर उत्तम प्रभाव पड़ा।

पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी प्रधान

सार्वदेशिक सभा द्वारा अपील

नैनीताल, काश्मीर को छोड़ कर उधर के पहाड़ों मे सर्वोत्तम और खूबसूरत पहाड़ी शहर है। यू० पी० गवर्नमेन्ट की सीट होने से उसमे और चार चाद लग गये हैं। यहा तमाम देश स धनीमानी और बड़े २ राजे महाराजे आया करते हैं। यहा का आर्य समाज मन्दिर नगर के अनुरूप नहीं। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आय समाज नैनीताल के स्थानिक सदस्यों ने १७००) में आय समाज मन्दिर से मिली हुई एक जाय दाद ले ली है। दोनों का मिल कर नया मन्दिर बनाने में लग भग ५००००) रुपये की जरूरत है। नैनिताल में एक अच्छे आय मन्दिर की आवश्यकता है इसलिए मै सभी नैनीताल निवासियों और बाहिर की बहिनों, भाइयों और समाजों से अपील करता हू कि वे यथा सम्भव शीघ्र उपर्युक्त राशि की पूर्ति के लिए अधिक स अधिक जितना धन दे सकें दे देवें। धन कोषाध्यक्ष आर्य समाज नैनीताल के नाम भेजना चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश रक्षा आन्दोलन सम्बन्धी समाचार

अखिल भारतीय सत्याथ प्रकाश रक्षा समिति की एक विशेष बैठक ता० १२ तथा १३ अगस्त १६४५ दिन रविवार तथा सोमवार को दिन के २ बजे से श्रद्धानन्द-बलिदान भवन देहली में होगी। इस बैठक मे सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समिति के सदस्यों के अतिरिक्त, सावदेशिक के अन्तरङ्ग सदस्यों, समस्त प्रान्तीय आर्यप्रतिनिधि सभाओं के प्रधान तथा मन्त्री, प्रमुख आर्य महानुभावों तथा कान्ग्रेस व हिन्दू महा सभा के प्रमुख नेता जो सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन में आर्य समाज के साथ सहानुभूति रखते हैं, उन सब को आमन्त्रित किया गया है।

आशा है सब ही आमन्त्रित महानुभाव इस सभा में अवश्य सम्मिलित होंगे।

देशराज चौधरी मन्त्री—अखिल भारतीय सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समिति

सत्यार्थ प्रकाश प्रतिबध पर डा० राजेन्द्र बाबू से चर्चा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अखिल भारतीय सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समिति के सहायक मन्त्री श्री शिवचन्द्र जी ने दा दिन कई घन्टे तक बिरला हाउस में देश रत्न श्रीयुत डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी से सत्याथ प्रकाश' पर प्रतिबन्ध के विषय मे बातचीत की। डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने उनको आश्वासन दिया कि आर्य समाज धर्म ग्रन्थ की रक्षा के लिए जो भी उचित आन्दोलन करेगा उसका मैं समर्थन करूगा।

श्री शिवचन्द्र जी ने उन्हें सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी साहित्य भी भेंट किया जिसे पढ कर बहुत प्रभावित हुये।

—सूचना—

समस्त आर्य समाजों आर्य सस्थाओं व आर्य सज्जनों को विदित हो कि मैं अब 'आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड अजमेर' की सेवा से मुक्त हूँ। आर्य सस्थाए, समाजें व सज्जन पत्र व्यवहार निम्न लिखित पते से करें—

प० जयदेव शर्मा
विद्यालङ्कार मीमासा तीर्थ
ज्ञान भवन—आदर्श नगर
अजमेर

सम्पादकीय

शिमला सम्मेलन की असफलताः—

गत जुलाई मास की २ ता० को 'सार्वदेशिक' के लिए शिमला सम्मेलन पर सम्पादकीय टिप्पणी देते हुए हमने लिखा था "अब यह स्पष्ट दीखने लगा है कि मि जिन्ना की अड़ियल नीति के कारण शिमला सम्मेलन सफल न हो सकेगा। य, अत्यन्त अनुचित होगा कि मुस्लिम लीग और उसके प्रधान मि जिन्ना को इस प्रकार राष्ट्रीय सरकार के निर्माण में बाधक बनने दिया जाए" इत्यादि।

दुर्भाग्यवश यह हमारी भविष्योक्ति सत्य ही सिद्ध हुई और १४ जुलाई को वायसराय ने इस अभिनय पर पटाक्षेप करते हुए अपने को उसके लिए उत्तर दाता बताया। अत्यन्त स्थूल बुद्धि वाला व्यक्ति भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि मि० जिन्ना की अड़ियल नीति तथा सीमातीत हठधर्मिता इस सम्मेलन की असफलता के लिए प्रधान कारण बनी पर जो लोग मि० जिन्ना को जानते हैं वे इस बात की तो पहले ही कल्पना कर सकते थे। वायसराय महोदय भी इस सम्भावना से अपरिचित हों यह स्वीकार करना असम्भव है। सम्मेलन प्रारम्भ होने से पहले उन्होंने स्वय कांग्रेस के प्रधान मौ० अब्दुल कलाम आजाद को स्पष्ट कहा था कि कोई भी दल या नेता इस सम्मेलन को भङ्ग न कर सकेगा। मि० जिन्ना की इस न्याय विरुद्ध मांग को कि 'कार्यकारिणी के सब मुस्लिम सदस्यों को चुनने का अधिकार मुस्लिमलीग को ही दिया जाए क्योंकि वही मुसलमानों की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था है ठुकराने की वायसराय महोदय ने जो दृढ़ता दिखाई थी उससे प्रतीत होता था कि सम्मेलन को सफल बनाने पर वे तुले हुए हैं परन्तु एक दम उन्होंने जो अपना रुख बदल लिया उसका रहस्य डा० पट्टाभिसीतारामैया के २३ जु० को मछली पट्टम् में दिए भाषण के इस अंश से खुलता है कि 'शिमला सम्मेलन जिन्ना की अकड़ी नीति के कारण असफल नहीं हुआ। जब सम्मेलन की कार्यवाही चल रही थी तो इङ्गलैण्ड से संवाद आया कि मि० जिन्ना को नाराज मत करो और उसे अपने विपरीत भी मत करो। यही कारण था कि वायसराय को अपने ऊपर उद्धृत शब्दों से जो उन्होंने मौ० आजाद को कहे थे हट जाना पड़ा।"

इस प्रकार ब्रिटिश सरकार और लार्ड वेवल का भी शिमला सम्मेलन की असफलता में उत्तर दायित्व सर्वथा स्पष्ट है। वे यदि चाहते तो मि० जिन्ना की उपेक्षा करके अन्य दलों के सहयोग से राष्ट्रीय सरकार का निर्माण कर सकते थे पर उन्हें मुस्लिम लीग को नाराज करने का साहस नहीं हुआ। इस तरह केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार के निर्माण की आशा पर तुषार पात हो गया पर आशा करनी चाहिए कि अब जब कि इङ्गलैण्ड

में मि० चर्चिल के अनुदार दल को करारी हार खानी पड़ी है और मजदूर दल की सरकार जो भारतीय स्वतन्त्रतान्दोलन के प्रति पूर्ण सहानुभूति का दावा भरती रही है मि० ऐटली के प्रधान मन्त्रित्व में बन चुकी है लार्ड वेवल साहस करके आगे बढ़ेंगे और अपनी योजना के अनेक न्याय विरुद्ध अंशों को सुधार करके हिन्दू महासभा आदि का भी सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे। सरकार तथा कांग्रेस दोनों को शिमला सम्मेलन की असफलता से शिक्षा लेते हुए मुस्लिमलीग की अनुचित मांगों के आगे सिर झुकाने की नीति का सर्वथा परित्याग कर देना चाहिए और शीघ्रातिशीघ्र केन्द्र और प्रांतों में वास्तविक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करनी चाहिए भारत को स्वतन्त्रता देकर ही मजदूर दल सरकार अपनी विश्वसनीयता और यथार्थवादिता का परिचय दे सकती है केवल बातों से नहीं।

आर्य परिवार कैसे बनें ?

हम इन स्तम्भों में कई वार पारिवारिक जीवन को आर्य बनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाल चुके हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि आर्य सज्जनों और आर्य समाजों का ध्यान अब इस विषय की ओर विशेष रूप से आकर्षित हो गया है और अनेक समाजों में आर्यपरिवार सम्मेलनों को आयोजित किया जा रहा है। आर्य समाज दीवान हाल देहली ने प० धर्मवीर जी वेदालङ्कार के मन्त्रित्व में इस विषय में एक उत्तम उदाहरण अन्य समाजों के सम्मुख उपस्थित किया है और प्रतिमास आर्य परिवार सम्मेलन का आयोजन प्रारम्भ किया है। इस सम्मेलन के १५-७-४५ के अधिवेशन में मन्त्री जी के भूमिकात्मक उत्तम भाषण के पश्चात् इन पंक्तियों के लेखक द्वारा प्रस्तुत निम्न प्रस्ताव मान्य श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी के सभापतित्व में सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ :—

यह सम्मेलन आर्य समाज ... की अन्तरङ्ग सभा को परामर्श देता है कि वह आर्य परिवारों मे आर्यत्व की अभिवृद्धि के लिए निम्न लिखित योजना को कार्यान्वित करने की व्यवस्था करे।

१ महर्षिदयानन्द प्रणीत ग्रन्थों तथा अन्य वैदिक साहित्य का अधिकाधिक पठन पाठन तथा प्रचार।

२. पञ्च महायज्ञों, १६ संस्कारों तथा वर्णाश्रम धर्म का विधिपूर्वक अनुष्ठान तथा प्रचार।

३ लड़कों का आर्य कुमार सभाओं और स्त्रियों का आर्य स्त्री समाजों में प्रवेश।

४ आर्य विद्यालयों तथा अन्य आर्य संस्थाओं में आर्य अध्यापक अध्यापिकाओं और कार्यकर्त्ताओं की ही नियुक्ति।

५. स्वदेशी व सादगी का व्यवहार।

६. समस्त आर्यों को अपनी दिन चर्या लिखने की प्रेरणा।

७ आर्य बिरादरी में समस्त आर्यों का सङ्गठन करने का प्रयत्न करना।

आर्य समाज की वास्तविक उन्नति के लिये इस प्रस्ताव को क्रियात्मक रूप देना अत्यन्त आवश्यक है इस में सन्देह नहीं हो सकता। इस प्रस्ताव को जिस परिवार में जितना ही क्रियात्मक रूप दिया जाएगा वह उतना ही अधिक आर्य आदर्श के अनुकूल बन जायगा तथा आर्य समाज की यथार्थ उन्नति में सहायक होगा। पोप लीला के स्थान में जो 'स्रोप लीला' अनेक परिवारों में

प्रचलित होती जा रही है उसको तुरन्त दूर करने की आवश्यकता है जो स्वाध्याय दैनिक पञ्चमहायज्ञ और वैदिक संस्कारों के विधि और श्रद्धापूर्वक अनुष्ठान से ही हो सकती है। अनेक आर्य विद्यालयों और आर्य कन्यापाठशालाओं में आर्य अध्यापक अध्यापिका न होने के कारण बालक बालिकाओं पर वैदिक धर्म के संस्कार दृढ नहीं होने पाते अत विद्यालयों के सचालकों को इस प्रस्ताव के चतुर्थ अश पर ध्यान देना अत्यावश्यक है। फ़ैशनों का भूत आर्य घरों मे भी बालक बालिकाओं और युवक युवतियों पर सवार होता जा रहा है। सिनेमाओं ने ऐसी कुत्सित प्रवृत्तियों में बहुत ही वृद्धि करदी है अत उन से निवृत्त रह कर स्वदेशी व सादगी का व्यवहार आर्यों के लिये सामाजिक, नैतिक तथा राष्ट्रप्रेम की दृष्टिसे आवश्यक है। आत्मनिरीक्षण मनुष्य की उन्नति के लिये अनिवार्य है इसी लिये इन्द्रिय स्पर्श और अङ्ग मार्जन के मन्त्रों द्वारा ऋषियों ने उसे दोनों काल की दैनिक सन्ध्या का आवश्यक अङ्ग बताया है। दिन चर्या को लिखने के अभ्यास से जैसे कि महापुरुष प्राय सदा करते रहे हैं मनुष्य अपने जीवन को उन्नत बनाने में विशेष सफलता प्राप्त कर सकता है। प्रस्ताव के ७ म अश की पूर्ति तभी हो सकती है जब कि जाति भेद (जात पात) और अस्पृश्यता (अछूतपन) की तुच्छ भावनाओं का परित्याग करके आर्य अपने को एक बिरादरी का सदस्य समझें और केवल गुण कर्मस्वभावानुसार ही विवाहादि सम्बन्ध करने लगें। इस प्रकार प्रस्ताव के सभी अश अत्यन्त उपयोगी हैं। उनका उद्देश्य परिवार के समस्त वातावरण को आर्यत्व की भावनाओं से ओत प्रोत करना है। इस प्रकार जब सब आर्यों के परिवार आर्यत्व की पवित्र भावनाओं से ओत प्रोत होंगे और आर्य विद्यालयों में भी उन के लिये वैसे ही दृढ अध्यापक अध्यापिकाओं को रक्खा जाएगा तभी यह शिकायत दूर हो सकेगी कि पुराने आर्यों की सन्तान और परिवारों मे भी प्राय आर्यत्व दृष्टिगोचर नहीं होता हम समस्त आर्य जनता का ध्यान इस प्रस्ताव को क्रियात्मक रूप देकर परिवारिक जीवनों को आर्य बनाने की ओर आकर्षित करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

हैदराबाद सरकार का नादिर शाही आदेशः--

अभी गुलबर्गा काण्ड के कारण हैदराबाद सरकार की घोर अव्यवस्था की चर्चा समाप्त भी न हो पाई थीकि उसने एक इस आशय का नादिर शाही आदेश जारी करके कि कोई खाद्य-पदार्थ आग मे न डाले जाए समस्त आर्य हिन्दुओं के अन्दर जो हवन यज्ञ और संस्कारों को अपना पवित्र कर्तव्य समझते हैं और जो अग्न मे घी आदि डाले विना नहीं किये जा सकते असन्तोष और रोष की ज्वाला को प्रदीप्त कर दिया है। यदि हैदराबाद सरकार का तात्पर्य हवन यज्ञादि धार्मिक कृत्यों मे घी आदि के प्रयोग पर पाबन्दी लगाना नहीं था तो उसे यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिए थी पर उस अवस्था में इस आदेश का कुछ अर्थ ही नहीं रहता। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो व्यर्थ खाने की वस्तुओं को अग्नि में डाल कर नष्ट करना पसद करे। देव-यज्ञ अथवा हवन आर्य हिंदुओं के दैनिक कर्तव्यों में से हैं। उसे इस आदेश के द्वारा रोकना स्पष्टतया धार्मिक अधिकार पर कुठाराघात करना है जात-कर्म, नाम करण, यज्ञोपवीत, विवाह संस्कार इत्यादि आर्यों के सब संस्कारों मे घी को अग्नि

में डाला जाता है क्या हैदराबाद सरकार इस नादिर शाही आदेश द्वारा इन पवित्र संस्कारों को बन्द करना चाहती है यदि हां, तो उसे समझ लेना चाहिए कि आर्य अपने धार्मिक कृत्यों में इस प्रकार के अनुचित हस्तक्षेप को (जिनके कारण ही मुख्यत सन् १९३९ में सत्याग्रह करना पड़ा था) कभी सहन न करेंगे। बुद्धिमत्ता इसी में है कि सरकार अपने इस आदेश को वापिस ले ले अथवा यह स्पष्ट कर दे कि धार्मिक कृत्यों पर प्रतिबन्ध लगाने का उसका तात्पर्य नहीं है अन्यथा समस्त आर्य जगत् मे जो असन्तोष की ज्वाला भड़क उठेगी उसके लिए उसका अपना उत्तरदायित्व होगा। २३ अगस्त (श्रावणी उपाकर्म के दिन) सत्याग्रह स्मारक दिवस उत्साह पूर्वक मनाते हुए आर्यों को इस अनुचित आदेश का घोर प्रतिवाद करना चाहिये।

सत्यार्थ प्रकाश विषयक टालमटोलः—

सिंध मंत्रियों के रोषोत्पादक वक्तव्य—

सत्यार्थ प्रकाश समस्त आर्यों का मान्य धर्म ग्रन्थ है। उसकी रक्षा और प्रचार का प्रश्न उनके लिये जीवन मरण का प्रश्न है। उस पर किसी प्रकार का भी प्रतिबन्ध उनके लिये असह्य है किन्तु अपने नेताओं के आदेशानुसार जो अब तक वैधानिक उपायों द्वारा इस विषयक प्रतिबन्ध को दूर करने में प्रयत्न शील रहे हैं वे इस आशा में धैर्य धारण किये हुये हैं कि बहुत शीघ्र यह अनुचित प्रतिबन्ध उठा लिया जाएगा पर सिन्ध के कुछ मुस्लिम मन्त्रियों के जो वक्तव्य गतमास समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए हैं उनसे प्रतीत होता है कि वहा का मन्त्रिमण्डल इस विषय में केवल टालमटोल की ही नीति का अवलम्बन किये हुये है। सिन्ध सरकार के गृह सचिव मीर गुलामअली ने गत मास एक प्रेस कान्फ्रेंस में कहा कि सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्दश समुल्लास पर प्रतिबन्ध हटाने का विषय अब बन्द अध्याय है। सिंध सरकार इस पर विचार भी नहीं कर रही और न इसके मन्त्रिमण्डल के सन्मुख आने की कोई सम्भावना है इत्यादि। सिंध के प्रधान मंत्री सर गुलामहुसैन हिदायतुल्ला ने १० जुलाई को शिमला में हिंदी मिलाप के विशेष प्रतिनिधि के यह पूछने पर कि 'सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर जो प्रतिबन्ध लगाया गया है वह कब हटाया जाएगा? उत्तर दिया कि 'मैं निजी तौर पर प्रतिबध के पक्ष में नहीं हूं। पर जब तक सिन्ध के राजनैतिक दल सहमत नहीं हो जाते मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं पाबन्दी हटा कर नई मुसीबत नहीं मोल लेना चाहता।'

क्या इस प्रकार के वक्तव्यों से यह स्पष्ट ज्ञात नहीं होता कि इन लगभग ९ महीनों मे सिंध के मन्त्रिमण्डल ने केवल टालमटोल कर के आर्यों के असन्तोष को दूर करना चाहा है। उसने इसे एक राजनैतिक स्वार्थ का साधक विषय बना लिया है और वह इसके साथ खिलवाड़ करना चाहता है। श्री निचल दास बजीरानी तथा अन्य हिंदुओं को इस विषयक पूर्ण दृढ़ता दिखानी चाहिए। इस सारी परिस्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके स भा. सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समिति १२, १३ अगस्त को देहली में अन्तिम क्रियात्मक निर्णय करेगी जिसके आदेश का समस्त आर्यों को उत्साह और दृढ़ता पूर्वक पालन करना चाहिये तथा सब प्रकार के त्याग और बलिदान के लिये उद्यत रहना चाहिये।

'सार्वदेशिक' के प्रेमी परिवार से:—

'सार्वदेशिक' को जनता के लिये अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का हम गत ३ वर्षों से निरन्तर प्रयत्न कर रहे हैं। २ सत्यार्थ प्रकाश विशेषाङ्क, १ सत्यार्थ प्रकाश प्रतिबन्ध विरोधी अङ्क तथा ४ सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लासाङ्क आदि द्वारा सत्यार्थप्रकाश प्रचार और रक्षा के आन्दोलन में इसे अधिकाधिक सहायक बनाने का यत्न किया जाता रहा है यह हमारे प्रेमी पाठक जानते हैं कागज नियन्त्रण आज्ञादि के कारण हमें पृष्ठों की संख्या सीमित रखनी पड़ी है किन्तु उन पृष्ठों में ठोस सामग्री को देने का हम प्रयत्न करते रहे हैं। हम अपने प्रेमी पाठकों से निवेदन करते हैं कि वे पूर्ववत् अपनी कृपा दृष्टि 'सार्वदेशिक' पर बनाये रक्खें तथा उनमें से प्रत्येक वर्ष में कम से कम ५ नये ग्राहक बनाने का दृढ़ संकल्प करे तो हमें उनके इस क्रियात्मक सहयोग से पत्र को और भी अधिक उन्नत करने में विशेष सहायता मिलेगी। विद्वान् लेखकों और कवियों का सहयोग भी हमें पूर्ववत् अपेक्षित है। हमें निश्चय है हमारा यह निवेदन व्यर्थ न जाएगा तथा हमारे स्नेही पाठक इस प्रकार ग्राहक वृद्धि करके अपने प्रेम का परिचय देंगे।

शोक समाचार

गतमास सार्वदेशिक सभा के सदस्य और आर्य समाज दीवानहॉल देहली के उपप्रधान श्री विष्णुदासजी बासल, (जिन के विषय में श्री प्रो. सुधाकर जी एम. ए मन्त्री सा सभा का एक लेख पाठक इसी अङ्क में पढ़ेंगे), उडपी (द कर्णाटक) आर्य समाज के प्रधान और दक्षिण भारत के एक सुयोग्य विद्वान् श्री लक्ष्मण भट्ट जी B. A L T, (Retired Dy Inspector of Schools) तथा गाजियाबाद आर्य समाज के अत्यन्त उत्साही मन्त्री श्री जनार्दन शर्मा जी के होन हार सुपुत्र श्र देव व्रत (आयु १२ वर्ष) के आकस्मिक देहावसान के शोकदायक समाचार प्राप्त हुए हैं। हम इन सब महानुभावों के शोक सन्तप्त परिवारों के साथ आर्य जगत् की ओर से समवेदना प्रकट करते हुए भगवान् से उनकी सद्गति उनके सब सम्बन्धियों की शान्ति के लिये हार्दिकप्रार्थना करते हैं। ध० दे०

दान सूची सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

जुलाई १९४५

आर्य-समाज स्थापना दिवस

२४॥≡)	आर्यसमाज स्यालकोट सिटी
१००)	" डेरा सलेम (पूर्वी अफ्रीका)
५०)	" साबुन बाजार लुध्याना
५)	" मोर सराय देहली
१।)	श्री गुरुदत्तजी गौतम आ० स० बिरलालाइन सब्जी मण्डी देहली
१।)	श्री प० रामचन्द्रजी पुरोहित "
१००)	आर्यसमाज कुपरौली (मेरठ)
४)	,, मसेवी पो० कुँदरकी (मुरादाबाद)
१२)	,, गुजरात (पंजाब)
२)	,, अजीतमल (इटावा)
१०)	,, बरेली
६।)	,, गङ्गोह (सहारनपुर)
७)	,, बिसाऊ (जयपुर)
६।-)।	,, फिल्लौर (जालन्धर)
३॥=)	,, क़िला शोभासिंह रेलवे स्टेशन स्यालकोट
१८)	,, नारनौल (पटियाला स्टेट)
१४॥)	,, जौनपुर (यू पी)
१०)	,, खुर्जा ,,
२)	,, चेला (झंग) (पंजाब)
१०)	,, गढ़मुक्तेश्वर (मेरठ)
१००)	,, हरदोई (यू पी.)
३०)	,, बिहार (पटना)
४८=)	,, कोटली (पंजाब)
१४)	,, मीरपुर (झेलम)
१३॥)	,, कोटा (राजस्थान)
४)	,, छोटी सादड़ी (मेवाड़)
१५)	,, आज़मगढ़ (यू. पी.)
११)	,, सदर बाजार
५)	चौलकी (मेरठ)
१०)	श्री आ० स० अलीगढ़
१६॥)	आ० स० हसनपुर (मुरादाबाद)
२)	,, नया कटरा (प्रयाग)
३॥)	,, मिठा टिवाना (पंजाब)
२)	,, खगोल (पटना)
१०)	, लोअर बाजार शिमला
१०)	,, बलरामपुर (गोंडा)
१०)	,, वारसलीगञ्ज गया (बिहार)
१०)	,, देहरादून (संयुक्त प्रान्त)
२=)	,, बालकृपालनगर (अलवर)
५)	,, भिलसा (ग्वालियर)
६।)	,, पूरनपुर (स० प्रा०)
१५।)	,, सुजानपुर (पंजाब)
१०)	,, चौगामा पो दाहा (मेरठ)
५)	,, रामपुर स्टेट
८)	,, Hov. Ic I IL. no 14507 K. C. त्रिवेदी मन्त्री आ स I. A W Pai force Line. 7. B O. D.
५)	काकीनारा २४ परगना (बङ्गाल)
७)	,, जहानाबाद (गया)
५)	,, उन्नाव (अवध)
५॥।)	,, अमरावती (मध्य प्रदेश)
५)	,, खुसरोपुर (बिहार)
५)	आ स. कांठ (मुरादाबाद)
५)	" " बादली रोहतक (पंजाब)
२६)	" " ब्यावर (राजस्थान)
५)	" " राजगढ़ (अलवर)
१००)	" " समस्था (वारंगल निजामराज्य)
१)	" " मुहमदी खेरी (संयुक्त प्रान्त)
५-)	" " हिरिअड्क (दक्षिण कनारा)
५)	" " बसपुरा पट्टी सीलापो दुगड्डा (गढ़वाल)
१५)	" " सरदार पुरा (जोधपुर)
५)	" " आबू रोड (राजस्थान)

१०) आ. स. वरबीघा (मुँगेर)
१॥) " " खड़गपुर मेमन सिंह
५) " " नवादा (गया)
३०) " " मलिक बाजार कलकत्ता
३११॥) " " जयपुर
५) आ स. पथरगवाँ (विहार)
१८॥।) " " नई मयडी मुजफ्फरनगर
१।=) " " अल्वर
५) " " कुतुबपुरा (झींद)
४६।।।) " " सूरत
१०) " " ची चा वत नी (पजाब)
१०) " " गोबरी (चम्पारण)
६॥) " " नैनीताल

११४८॥) ३
३६२॥≡) ११ गतयोग

१५११।) २ सर्वयोग

मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि इस वर्ष आर्य समाजों ने सभाकी 'स्थापना दिवस' की अपील का तत्परता के साथ उत्साह वर्धक उत्तर दिया है। जिन आर्य समाजों का भाग अभी आना शेष है वह उन्हें शीघ्र ही भेजदेना चाहिए। मुझे सन्तोष है कि आर्य समाजें इस दिवस पर धन सग्रह करने की अभ्यस्त होती जा रही है और अब उचित रीति से यह आशा की जा सकती है कि 'सार्वदेशिक सभा' के अधिकारी स्थिर आय की चिन्ता से मुक्त होकर अपनी शक्ति अन्य कार्यों में लगा ने में समर्थ हो सकेंगे और सभा स्थिर रूप से विविध उपयोगी कार्यों को जिन्हें स्थिर आय के न होने के कारण हाथ में नहीं ले सकती थी अब हाथ में ले सकेगी।—

सुधाकर
मन्त्री
सार्वदेशिक सभा देहली

विविध दान

५) श्री मुन्शीराम जी द्वारा
पं शिवदत्तजी " उपदेशक विद्यालय लाहौर
३) " " किला शोभा सिंह (स्याल कोट)
४॥।=) श्री जय नारायण जी गुप्त माजरा पो जानी (मेरठ)
४) " आ स चूनिया (लाहौर)
२४॥=) " चौ भोला सिंह जी निजामपुर माजरा डा फरमाना (रोहतक)
५) " गुरुदत्त जी गौतम (गुलबर्गा फड के लिए)
५) श्री हजारीलाल जो मिस्सर सभा मौजा रतना डा तीथल (रायबरेली)
४) श्री श्यामलाल आर्य पूनाहाना (गुड़गाँव)
५) आ. स सन्तोगा कालेज सेक्शन लाहौर
२) " " लक्ष्मणगढ़ (अलवर)

६१॥)
९४०॥—) १० गत योग

१००२— १०

श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा "चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस" अद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।

नाम पुस्तक	लेखक व प्रकाशक	मूल्य
(१) वैदिक सिद्धान्त स०	(सार्व० सभा)	१)
(२) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका बड़ा साइज	,,	१।)
(३) विदेशों में आर्य समाज	,,	॥)
(४) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर	,,	१।)
(५) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श	,,	१॥)
(६) समस्त समाजों की सूची	,,	॥)
(७) सार्वदेशिक सभा का इतिहास	,,	अ० २)
(८) बलिदान	,,	॥)
(९) आर्य डायरेक्टरी	,,	अ० १।)
(१०) आर्य वीर दल शिक्षण शिविर	,,	=)
(११) आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण	प इन्द्रजी	।=)
(१२) आर्यवीर दल लेखमाला	श्री ओमप्रकाश जी	१)
(१३) यमपितृ परिचय	पं० प्रियरत्न जी आर्ष	२)
(१४) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र		२)
(१५) वैदिक सूर्य विज्ञान		=)
(१६) वेद में असित् शब्द		
(१७) ऋगवेद में देवृकामा		
(१८) वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक		
(१९) विमान शास्त्र		
(२०) मातृत्व की ओर	श्री प० रघु… अ०	१॥)
(२१) आर्य्य जीवन गृहस्थ धर्म	,,	।=)
(२२) कथा माला	,,	।॥)
(२३) आत्म कथा	श्री नारायण स्वामी जी	२।)
(२४) श्री नारायण स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ		५)
(२५) उपनिषद् ईश ।≈) केन ॥) प्रश्न ।=) मुण्डक =)॥, माण्डूक्य ≡), ऐतरेय ।) बृहदारण्यक २)		
(२६) वैदिक सन्ध्या रहस्य	,	=)॥
(२७) शहीदी पद्दिका		।=)
(२८) आर्य समाज मन्दिर चित्र		।)
(२९) हकीकत हकीकत	श्री ला० ज्ञानचन्द्रजी आर्य	।॥=)
(३०) भक्ति कुसुमाञ्जलि	श्री प० धर्मदेवजी वि० वा०	।॥)
(३१) त्रिदेव निर्णय	श्री प० शिवशङ्कर जी	१)
(३२) भूमिका प्रकाश	श्री द्विजेन्द्रनाथ जी	१॥)
(३३) कुमुदिनीचन्द्र	अनु० श्री प० मेधाव्रतजी	२)
(३४) वेद और गोमेध	श्री बा० श्यामसुन्दरलाल जी	≈)
(३५) …ऋषियों की…	श्री प० सिद्धगोपालजी कविरत्न	१)
(३६) …(कवित)	प० यज्ञदत्त त्यागी	।=)
(३७) ध्यान योग प्रकाश	स्वामी लक्ष्मणानन्द जी	१।-)
(३८) सत्यार्थ प्रकाश गान		।≈)
(३९) हमारे घर	श्री निरञ्जनलाल जी गौतम	॥=)
(४०) भारतवर्ष में जाति		।)
(४१) सत्यार्थ प्रकाश की		-)
(४२) हम और हमारे स…		-)
(४३) In Defence of … Prakash		≈)
(४४) Rishi Day … Sat a …		।≈)
(४५) We ar…		-)॥
(४६) Univ… Satyarth Pr…		-)
(४७) Voi… a (T. L…		=)
(४८) Cru… ye Witness … Sabha)		।-)
(४९) Tri… Late … Datt Dhavan		।=)
(५०) Truth Bed Rock of Aryan Culture		॥)
(५१) Vedic Teachings 'Atma'		१।)
(५२) Daily Prayer of An Arya (Shri Narayan Swamiji)		॥)
(५३) Commentary on Ishopanishat	,,	।)
(५४) Kenopanishat (English) by Pt Ganga Prasadji M A.		।)
(५५) Agnihotra Dr Satya Prakash		२॥)
(५६) The Scope, Mission of Aryasamaj Bound (Pt. Ganga Prasadji Upadhyaya)		१)
(५७) Christianity in India	,,	॥)
(५८) Ecclesia Divina (Swami Bhumanand Saraswati		५)
(५९) Aryasmaj and Theosophical Society (Shri Shyam Sunderlal Vakil)		≈)



सम्पादक—

वार्षिक मूल्य

विषय सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र

वर्ष २१ | सितम्बर १९४५ ई० | भाद्रपद २००२ | दयानन्दाब्द १२२ | अङ्क ७

वैदिक प्रार्थना

ओ३म् यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि। मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिर्विद्विषो विमृधो जहि ॥ ऋग्वेद ८।६१।१३

अर्थः—(इन्द्र) हे परमेश्वर! हम (यत भयामहे) जिस वस्तु वा प्राणी से डरते हैं (ततः) उस २ से (नः) हमें (अभयं कृधि) निर्भय बनाइये (मघवन् शग्धि) हे परम ऐश्वर्य युक्त प्रभो! आप सर्वशक्तिमान् हैं। (तत्) इसलिये (तव ऊतिभिः) अपनी ज्ञान तथा रक्षा शक्तियों से (न. विद्विषः) हमारी द्वेष भावनाओं तथा आन्तरिक और बाह्य शत्रुओं को (विजहि) नष्ट कीजिये। और (मृधः) मनुष्यों को धोखा देने वाले कपटी हिंसक पुरुषों को (विजहि) नष्ट कीजिये।

विनय-हे सर्वशक्तिमन् परमेश्वर! आप सारी शक्ति के भण्डार हैं। आप का आश्रय लेने से हमारा सारा भय दूर हो जाता है इसलिये हमारी आप से यही प्रार्थना है कि हमें आप सर्वथा निर्भय बना दें। आप को अपना सहायक मित्र मानते हुए हम किसी से भी भयभीत न हों। आप उत्तम ज्ञान और शक्ति देकर हमारे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, अहङ्कारादि रूप आन्तरिक शत्रुओं तथा छली कपटी हिंसक दुष्ट पुरुषों का नाश कर दें। आप सब को ऐसी सुबुद्धि प्रदान करें जिससे सब धर्मात्मा बन जायें।

वेदोपदेश

हमें क्या क्या प्राप्त हो

(ले० प्रो० रामनाथ जी वेदालङ्कार, गुरुकुल काँगड़ी)

जितमस्माकमुद्भिन्नमस्माकमृतमस्माकं तेजोऽस्माकं ब्रह्मास्माकं स्वरस्माकं यज्ञोऽस्माकं पशवोऽस्माकं प्रजा अस्माकं वीरा अस्माकम्॥ अथर्व० १६। ८। १

(जितम् अस्माक) हमे विजय प्राप्त हो (उद्भिन्नमस्माकम्) हमे अभ्युदय प्राप्त हो(ऋत-मस्माकम्) हमें सत्य प्राप्त हो (तेज अस्माकम) हमे तेज प्राप्त हो (ब्रह्म अस्माकम्) हमे ब्रह्म प्राप्त हो (स्व अस्माकम्) हमे आनन्द प्राप्त हो (यज्ञ अस्माकम्) हमे यज्ञ प्राप्त हो (पशव अस्माकम्) हमे पशु प्राप्त हो (प्रजा अस्माकम्) हमे प्रजा प्राप्त हो (वीरा अस्माकम्) हमे वीर पुत्र प्राप्त हो।

हमे सुखी जीवन के लिए किन किन वस्तुओ की आवश्यकता है यह इस मन्त्र मे दिखाया गया है। सबसे पहली वस्तु है 'विजय । हमारा जीवन एक सग्राम है, चारो ओर हम शत्रुओ से घिरे हुए है। पग पग पर हमार जीवन में सघर्ष आते हैं। कभी तो हमे अन्दर क शत्रुओ काम, क्रोध, आदि से लड़ना है, कभी शरीर पर आक्रमण करने वाले रोग राक्षसो से लड़ना है, कभी बाहर के मानवी शत्रुओ से तथा अनेक प्रकार की दैवी विघ्न बाधाओं से लड़ना है। इन सब लड़ाइयो मे हम विजयी हो। अपने जीवन मे जिस क्षेत्र मे हम जावे विजय प्राप्त करें, कभी किसी से परास्त न हो। यह सब भाव 'विजय' की प्रार्थना से सूचित होता है। दूसरी प्राप्तव्य वस्तु है 'उद्भिन्न' अर्थात् अभ्युदय या उन्नति कभी हम नीचे न गिरें, सदा ऊपर उठने वाले, उन्नति की ओर अग्रसर होने वाले बने 'उद्भिन्न' शब्द मे यह भाव है कि जैसे बीज मे से फूटता हुआ अकुर ऊपर जाने मे रुकावट डालने वाले जमीन क स्तर को भेद कर ऊपर ही ऊपर बढता चलता है वैसे ही हमारे जीवन-मार्ग मे जो रुकावटें आये उन्हे चीरते हुए हम सदा ऊपर की ओर उठते चले, लगातार उन्नत होते चले।

तीसरी वस्तु 'ऋत' है। ऋत का अर्थ है सत्य। हम अपने जीवन मे सदा सत्य-मार्ग पर चले, कभी असत्य मार्ग का अवलम्बन न करे। हमारा ज्ञान और आचरण दोनो सत्य हो। मन मे सत्य हो, वाणी मे सत्य हो, क्रिया में सत्य हो। सत्य की बड़ी महिमा है। वेद के शब्दो मे ही देखना है तो- सत्यनोत्तभिता भूमि यह भूमि सत्य के बल से ही थमी हुई है। यदि इसके आधार मे ईश्वरीय सत्य नियम काम न कर रहे होते तो यह कभी की नष्ट भ्रष्ट हो चुकी होती। यदि दुनियाँ मे से सचाई उठ जाये तो कोई भी व्यवहार नहीं चल सकता। इसलिये समाज मे प्रत्येक को अपने अन्दर यह वैदिक भावना जगानी चाहिये कि- "इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि," यजु १।५-यह लो मैं असत्य को छोड़ कर सत्य को अपनाता हूँ।

चौथी वस्तु 'तेज' है, तेज को पाने की प्रार्थना वेद मे बहुत आती है। हम अपने जीवन मे अग्नि की तरह तेजस्वी हो, सूर्य की तरह तेजस्वी हो, दहकते हुए अगारे की तरह तेजस्वी हो। बुझे कोयले की तरह निस्तेज न हो। सदा अपने सामने

यह ध्येय रखे, "तेजोऽसि तेजो मयि धेहि"- हे अग्ने, (परमेश्वर) जैसे तू तेजस्वी है वैसे मुझे भी तेज प्रदान कर।

मन्त्र में आगे कहा है 'ब्रह्म अस्माकम्' हमे ब्रह्म प्राप्त हो। ब्रह्म के वेद मे कई अर्थ होते हैं, जिनमे ज्ञान या वेद और परमेश्वर अर्थ मुख्य हैं। तो ब्रह्म-प्राप्ति का अभिप्राय हुआ हमे वेद या ज्ञान की प्राप्ति हो, अज्ञान के अन्धकार मे हम न पडे रहें और हमे प्रभु के दर्शन प्राप्त हो, उसे हम अपना सखा बना लेवें। इसके बाद 'स्व' की प्रार्थना है-हमे 'स्व' प्राप्त हो। 'स्व' का अर्थ है आनन्द इसका दूसरा अर्थ ज्योति भी होता है। इसीलिये असल मे 'स्व' शब्द से जो आनन्द सूचित होता है वह कोई निकृष्ट दर्जे का आनन्द नहीं है, किन्तु वह है ज्योति से जगमगाता हुआ आनन्द। हमारा जीवन शुष्क, नीरस, तमोग्रस्त, शोकाकुल नहीं रहना चाहिये, किन्तु आनन्द-उल्लास से भरपूर रसीला, ज्योतिर्मय और प्रफुल्ल रहना चाहिये। हमारे आगे प्रकाश ही प्रकाश और आनन्द ही आनन्द हो।

अगली वस्तु जिसे हम पाना चाहते हैं वह 'यज्ञ' है। यज्ञ का भाव है बडो की पूजा करना और त्यागमय परोपकार का जीवन बिताना। जो हम से बडे माता पिता आचार्य, विद्वान्, सन्यासी आदि हैं उनकी हम पूजा-सत्कार करने वाले हो तथा साथ ही हमारा जीवन स्वार्थमय न हो किन्तु समाज की तथा दीन-दुखियो की सेवा करने वाला हो। वैदिक पद्धति मे जो पञ्च-यज्ञ हैं-ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ-उनका भी हम पालन करने वाले बने।

आगे पशुप्राप्ति की प्रार्थना है-"पशवोऽस्माकम्" हमारे उपयोग मे आने वाले जो अनेक पशु गौएँ, बैल, घोडे आदि हैं, वे हमे प्राप्त होवें। हमारे घरो में दुधार गौएँ हो ताकि यथेच्छ दूध दही घी प्राप्त हो सके। कृषि के लिये उपयोगी बैल हो तथा सवारी के लिये घोडे हो। अन्य भी जो काम मे आने वाले पशु हैं वे आवश्यकतानुसार हमें प्राप्त होते रहें ताकि हम खूब ऐश्वर्यशाली होते हुये सुखपूर्वक जिन्दगी बिता सके। मन्त्र के अन्त मे कहा है। "प्रजा अस्माक, वीरा अस्माक" हमे प्रजा प्राप्त हो वीर पुत्र प्राप्त हो। प्रजा प्राप्ति का अभिप्राय है कि हम सर्वसाधारण की अपेक्षा विशेष शक्ति वाले हो ताकि हम उच्च पदो पर आरूढ हो और हमारे नीचे बहुत सी प्रजा होवे जिस पर हम शासन करते हो। हम नीचे दब कर रहने वाले, यूँ ही घिसटते घिसटते जीवन बिताने वाले, महत्वाकाक्षा रहित जीव न हो। हमारी ऐसी महत्वाकाक्षा होनी चाहिये कि हम एक राजा के समान हो जिसके आधीन बहुत सी प्रजा होती है। अन्त मे, ऐसे पुत्र प्राप्त हो जो अपनी वीरता मे अद्वितीय हो, ऐसे बहादुर हो कि दुनियाँ मे बडी से बडी शक्ति उन्हें पराजित न कर सके। अपनी वीरता से वे ससार मे अपना तथा हमारा नाम चमकाने वाले हो।

ये दश वस्तुये उपर्युक्त मन्त्र मे माँगी गई हैं। ये दशो जिसे अपने जीवन में प्राप्त हो जाये उससे बढ कर भाग्यशाली कौन है।

"आर्य वीर दल को दृढ़ बनाइये"

(लेखक—श्री चौ० देशराज जी मन्त्री अखिल भारतीय आर्य वीर दल समिति)

आर्य समाज ने अपने जन्म दिन से ही देश, धर्म तथा जाति की रक्षा तथा सेवा का भार अपने कन्धो पर लिया है। इस सम्बन्ध मे इसने जो कार्य किये हैं उनके लिये आर्य जाति सदैव इसकी ऋणी रहेगी। अन्य मतावलम्बियो ने समाज को अपने मार्ग का काटा समझ इसे समूल नष्ट करने का सकल्प कर लिया है और नाना प्रकार से उन्हो ने इस पर आक्रमण भी करना प्रारम्भ कर दिया है। ऐसी विषम परिस्थितियो को सन्मुख देख आर्य समाज ने अनुभव किया कि एक सुसगठित क्षात्र बल के बिना वह निर्विघ्न अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर सकती। समाज सुधार का अप्रिय कार्य हाथ मे लेने के कारण आर्य समाज को देश की अन्य सस्थाये भी अपना सहयोग देने मे असमर्थ हैं इस लिये आज से तीन वर्ष पूर्व आर्य शिरोमणि सार्व० आ० प्र० सभा ने एक अ० भा० आर्य वीर दल की स्थापना करदी और समस्त आर्य जगत् से गत आर्य महासम्मेलन मे इसकी स्वीकृति भी लेली अर्थात् सम्मेलन मे यह प्रस्ताव पास किया गया कि प्रत्येक आर्य समाज मे आर्य वीर दल की अनिवार्य रूप से स्थापना की जाय और तीन वर्ष के अन्दर एक लाख वीरो की भर्ती की जाय आर्य समाज एक ऐसी सुसगठित सस्था है कि एक लाख आर्य वीरो की भर्ती करना इसके लिये कोई कठिन कार्य नहीं, परन्तु खेद के साथ कहना पडता है कि कई आर्य समाजो ने इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया, इस शिथिलता का ही कारण है कि आर्य समाज आज विधर्मियो द्वारा अपमानित की जारही है, और उनका साहस यहाँ तक बढ गया है कि वह हमारी धर्म पुस्तक "सत्यार्थप्रकाश" को ही जब्त कराने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। क्षात्र शक्ति के बिना आर्य समाज ही क्या कोई भी सस्था देश मे रक्षा तथा सेवा का कार्य नहीं कर सकती। इसलिये प्रत्येक आर्य समाज के अधिकारी को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये और अपने यहाँ शीघ्र दल की स्थापना करनी चाहिये। आवश्यकता हो तो अपने प्रान्त के दलपति से भी सहायता लेल। दल के परिचय मे आर्य भाइयो की सहायतार्थ उस के उद्देश्य तथा कार्य क्रम के सम्बन्ध मे कुछ बात बतलाना उचित समझता हूँ।

उद्देश्यः—

आर्य वीर दल के उद्देश्य के तीन प्रमुख अग हैं—

(१) आर्य जाति मे क्षात्र धर्म प्रचार करना एवम आत्म रक्षा की योग्यता उत्पन्न करना।

(२) जनता मे सेवा भाव का प्रचार करना।

(३) आर्य धर्म, सभ्यता तथा आर्य सस्कृति की समस्त उचित उपायो से रक्षा करना।

कार्य क्रमः—

उपरि लिखित उद्देश्य की पूर्ति के लिये आर्य वीर दल की ओर से नित्य प्रात तथा सन्ध्या समय उसके ट्रेन्ड शिक्षक शाखा लगाते हैं। नवयुवको को शारीरिक तथा आत्मिक उन्नति के लिये दल की ओर से एक निश्चित कोर्स है, जिनके अनुसार उन्हें व्यायाम, सैनिक ड्रिल, लाठी, छुरा, भाला, तलवार, धनुष, मुक्केबाजी इत्यादि बातें सिखलाई जाती हैं और नित्य शाखा में पन्द्रह मिनिट बौद्धिक शिक्षण दिया जाता है।

दोनो प्रकार की सिखलाई के हेतु सार्व० आ० प्र० सभा व प्रान्तीय सभाओ की ओर से आर्य वीर दल शिक्षण शिविर समय २ पर लगते रहते हैं, जिन मे शिक्षक तैय्यार किये जाते हैं। अनुशासन तथा व्यवस्था का ध्यान रखते हुये इन्हीं प्रमाणित शिक्षको द्वारा स्थापित दल ही प्रमाणित समझा जाता है। परन्तु वर्तमान आपत्तिकाल का ध्यान करते हुये समाजो को इन शिक्षको की प्रतीक्षा मे हाथ पर हाथ रखकर न बैठना चाहिये और अपने यहॉ दल स्थापित कर लेना चाहिये। जब तक उनके यहॉ ट्रेन्ड शिक्षक न पहुच जाय तब तक साधारण डन्ड बैठक ही नित्य करना चाहिये। उसकी रिपोर्ट उन्हें तुरन्त अपने प्रान्तीय दलपति को देदेनी चाहिये।

साहित्यः—

आर्य वीर दल का साहित्य अभी पूर्ण नहीं है, परन्तु फिर भी वीरो की सहायतार्थ निम्न पुस्तकें तैय्यार की जा चुकी हैं। प्रत्येक समाज अथवा दल की शाखा मे इन्हे अनिवाय रूप से तुरन्त मगा लेना चाहिये। पुस्तके निम्न हैं।—

(१)	आर्य वीर दल	बौद्धिक शिक्षण	।≈)
(२)	" "	लेख माला	१)
(३)	" "	शिक्षण शिविर	=)
(४)	" "	नियमावली	*

आर्य वीर दल तथा आर्यसमाज का सम्बन्धः—

आर्य वीर दल सार्व० भा० प्र० सभा के अन्तगत एक सैनिक सगठन है जिसका अपना अनुशासन है। परन्तु प्रत्येक समाज के प्रधान को अधिकार है कि इन से इनके दलपतियो के द्वारा रक्षा तथा सेवा कार्य लें। समाज के अधिकारियो का कर्तव्य है कि वह आर्य वीर दल की सब प्रकार से सहायता करे।

दल तथा रा० स्व० सेवक संघ—

सभा मे आर्य वीर दल तथा रा० स्व० सघ के सम्बन्ध मे अनेक जगहो से झगडे के दुखद समाचार प्राप्त होते रहते हैं। इसका मुख्य कारण यह रहा है कि बहुत सी आर्य समाजो मे तथा समाज से सम्बन्धित सस्थाओ मे सघ की शाखाये लगती है और समाज के अधिकारी तक उसमे भाग लेते रहे हैं। जब वहॉ दल की स्थापना का प्रयत्न किया जाता है तो सघ वाले उसका विरोध करते हैं और परिणाम स्वरूप झगडा हो जाता है भिवानी लुधियाना, अम्बाला स्यालकोट इत्यादि स्थानो पर सघ वालो ने सचमुच दल के सैनिको के साथ अनुचित व्यवहार किया है। इस लिये इस विज्ञप्ति द्वारा यह स्पष्ट करने की आवश्यक्ता है कि आर्य समाज का सघ से कोई सम्बन्ध नहीं है। सघ के सस्थापक श्री डा० हैडगेवर साहब की विचारधारा मे "जन साधारण को इस अव्यक्त स्वरूप का सम्यक् ज्ञान करादेने का मूर्ति पूजा ही एक मात्र सुलभ साधन है।" (परम पूज्य डा० हैडगेवर विचारधारा पृष्ठ ७५ इत्यादि शब्दो के द्वारा मूर्ति पूजा की भावना को आवश्यक बतलाया गया है) और सघ वाले दैनिक व्यवहार मे भी इसी भावना से पूरा काम लेते हैं। आर्य समाज एक प्रगति शील सस्था है, जिसमे मूर्ति पूजा को कोई स्थान नहीं है।

दल की महत्ता, आवश्यकता तथा सघ के साथ सघर्ष से बचने के लिये सार्व० आ० प्र० सभा की अ० भा० भा० वी० दल समिति ने यह प्रस्ताव पास किया है कि आर्य समाज तथा इस

से सम्बन्धित सस्थाओ मे दल को ही शाखा लगाने को स्थान मिलना चाहिये। रा० स्व० सघ को नहीं। इसलिये आर्य भाइयो से सविनय प्रार्थना है कि समय तथा परिस्थितियो का ध्यान करते हुये अपने यहाँ दल स्थापना कर इसे पूर्ण सहयोग दें।

मंत्री
अ० भा० अर्य वीर दल समिति
बलिदान भवन, देहली।

अध्यात्म सुधा

प्रिया देवता

(लेखक—श्री प० जयदेव जी शर्मा विद्यालङ्कार मीमांसातीर्थ चतुर्वेद भाष्यकार, अजमेर)

बालादेकम् अणीयस्कम् उतैकं नेव दृश्यते।
ततः परिष्वजीयसी देवता सा मम प्रिया ॥
अथर्ववेद का० १० सू० ८। २५ ॥

(बालाद् अणीयस्कम्) सूक्ष्म, बहुत सूक्ष्म, इतना सूक्ष्म कि बाल से भी अधिक सूक्ष्म। (उत) और (एक) एक ऐसा तत्व है जो (नेव—न—इव दृश्यते) नहीं सा दीखता है। परन्तु (तत परिष्व जीयसी) उससे भी अधिक व्यापक (देवता) देवता है (सा) वह (मम प्रिया) मेरी प्रिय वस्तु है।

प्रभु की सत्ता बहुत अधिक सूक्ष्म रूप से सर्वत्र विद्यमान है वेद ने उसको किस खूबी से बतलाया है वह अनुभव करने योग्य है। मेरा संसार मेरे शरीर मे सीमित है। शरीर मे सब अगों से अधिक सूक्ष्म देखने वाली इन्द्रिय आँख है। जो पदार्थ को बहुत सूक्ष्मता से देखती है। अन्य अग भी सूक्ष्म सूक्ष्मतर सूक्ष्मतम पदार्थों का अनुभव करते हैं जैसे त्वचा, कान नाक, आदि चक्षु देख कर पदार्थ की स्थूलता और हाथ छूकर पदार्थ की स्थूलता देख लेता है। दोनों के द्वारा बाल या रोम एक बहुत सूक्ष्म पदार्थ है। परन्तु जो वस्तु बाल में भी व्यापक है। वह बाल से भी अधिक सूक्ष्म होनी चाहिये। ऐसी भी एक चीज है। उसको हम सदा अनुभव नहीं कर सकते। जब मनुष्य शीत की लहर में सिहर उठता है तो रोमाच हो जाता है, शरीर का एक २ रोम कापता है वह खड़ा हो जाता है, उसी बाल के समान अनेक छोटे २ जानवरों की नाक पर भी बाल होते हैं स्थावर वृक्षों के पत्तों पर रोए होते हैं उनमें भी अनुभवशक्ति है। वह शक्ति आत्मा की है जो रोम २ में घुसी है, वह तभी उस में घुसी है जब कि वह रोम से भी सूक्ष्म है। तो वह अनुभव करने वाली कौन सी वस्तु है, वह आत्मा है। परन्तु यदि उसको शरीर मे एक तिल २ काट कर भी खोजने लगेंगे तो दीख नहीं सकती। सूक्ष्म से रोम जो कभी आँख के साधन बाह्य उपकरणों द्वारा खुर्दबीन से भी देखें तो वह रोम-रोआ बालसा तो दीख जावेगा पर उसमें बैठी, उस रोए से काम लेने वाली ताकत दीख नहीं सकती। वेद कहता है कि वह (नेव दृश्यते) दीखती सी नहीं। वह है 'आत्मा' अर्थात् मै स्वय हू। मैं अपने को जान तो रहा हू, पर देख नहीं रहा हूँ परन्तु मेरी आत्मा तो मैही हू। उसे मै प्यार क्या करू। मै अपने को प्यार करू यह तो ऐसा ही कथन है जैसे नाक अपने को सू घले। फलत मै अपने से भिन्न उस वस्तु को प्रेम कर सकता हू जिसके बिना मैं रही न सकू। जो मेरी भी गुर्वानी सी होकर मुझे ऐसे ही चलाये जैसे मै रोम मे प्रवेश कर के उसे चलाता हू। वह वस्तु मुझ से सूक्ष्म है वह मेरे भी भीतर व्यापक है मेरे भीतर बाहर ऐसी सटी है कि मै उससे क्षण भी जुदा नहीं हो सकता। मानो उस ईश्वरी सत्ता का

मेरे भीतर और बाहर एक अद्भुत लेप लगा है, वह मुझसे खूब सटी हुई है, मुझे हर प्रकार से चिपटी है, मुझे हर प्रकार से आलिंगन की हुई है कि मेरा उससे वियोग होही नहीं सकता। वेद ऐसी अंगीकृत देवता को 'परिष्वजीयसी' बतलाता है, ऐसी वह देवता मेरी प्रिय प्यारी है, (देवता सा मम प्रिया) 'देवता' भी स्त्री लिंग है। अत उसका विशेषण 'प्रिया' भी स्त्री लिंग है। परन्तु । देव एव देवता। 'देव' ही देवता है। फलत वह सर्वव्यापक मेरे भीतर विद्यमान महती सत्ता प्रभु, परिभू विभु परमेश्वर मेरा प्रिय देव है। चमकाने, प्रकाशमान होने से देव है, कामना पूर्ण करने, पालन करने से प्रिय है।

इस मन्त्र में कहे शब्दों के समानार्थक भाव द्योतक शब्द अन्य निम्न प्रकार से हैं—

अणीयस्कम्—अणोरणीयान्

यस्मान्नाणीय । अतिसूक्ष्मं । गूढः ।

बालाद् अणीय—आराग्रमात्र । बालाग्रशतभाग शत भाग-शतधा कल्पित-भाग

एकम्—एकोदेव । केवल ।

परिष्वजीयसी—सर्वव्यापी । सर्व भूताधिवास परि भू । विभू । परिवेष्टिता ।

प्रिया—सखा । मनसाऽभिक्लृप्त ।

मानसिक स्वास्थ्य कैसे प्राप्त हो सकता है ?

(लेखक -श्री प्रो० सुधाकर जी एम० ए० मन्त्री सार्वदेशिक सभा देहली)

हम जरा जरा सी बातों से घबरा उठते हैं। मन को चिन्ताओं से भर लेते हैं। हृदय ऊब जाता है। ससार मे अन्धेरा दीखने लगता है। मन की स्थिरता, स्वास्थ्य और समता को खो बैठते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य और समता को पाने के लिए मानसिक चिकित्सक की आवश्यकता पडती है। एक अनुभवी मानसिक चिकित्सक ने हमें तीन गुरु मन्त्र बतलाये हैं, जिन पर आचरण करने से हम मानसिक स्वास्थ्य का लाभ कर सकते हैं।

पहिला मन्त्र यह है-अपने जीवन के सम्बन्ध में ठीक ठीक सम्मति बनाओ। अपने विषय में गलत अदाजा लगाते रहना गलत नतीजे पैदा करता है। हम में से बहुत से लोग अपने आपको ससार का केन्द्र बनाए बैठे हैं। बहुत से कर्त्तव्यों का बोझ अपने ऊपर लिये हुए हैं। वे सर्वदा यह कहते सुने जाते हैं कि हमें यह भी करना है, वह भी करना है, कितने जजाल हमारे सिर पर हैं। हम किस किस बोझ को उठावें और किस किस रीति से निभावें। उनके कार्यों मे यदि जरा सा भी परिवतन हो जाता है तो वे मानसिक स्वास्थ्य को खा बैठते हैं।

हमारे जीवन का सच्चा चित्र यह है कि हम रेत-घड़ी के समान, जिसमें रेत का कण कण ऊपर से नीचे को गिरता है, क्षण क्षण को अपने कर्त्तव्य कार्यों में लगायें और एक समय में एक काम को ही दत्तचित्त हो कर करें और संसार के दूसरे झंझटों को उस समय के लिये भूल जॉय। ऐसी दशा में आप अपनी मानसिक समता को नहीं खोयेंगे और अपने मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखेंगे।

दूसरा गुरु मन्त्र यह है-दूसरे लोगों पर अपना आधार कम करो। तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारी ओर देखे, तुम्हारी प्रशसा करें और तुम्हारे कार्यों को अपने ध्यान का विषय बनाए। यह बच्चों का सा व्यवहार है। अपना प्रदर्शन बच्चों को भले ही जचे पर बडों के लिये उचित प्रतीत नहीं होता। जब हम दूसरों से वह प्रशसा नहीं पाते जिसका हम अपने आप को अधिकारी समझते हैं तो हमे मानसिक क्लेश होता है और हम मानसिक समता तथा स्वास्थ्य को खो बैठते हैं। इसका इलाज यह है कि इस प्रकार की आशाओं को छोड दो। दूसरे लोग आप के विषय में क्या कहते हैं इसकी ओर ध्यान न दे कर अपने कर्त्तव्य का पालन करते जाओ और सीधे मार्ग पर चलते जाओ। जो होगा सो देखा जायगा इस नीति का अवलम्बन करो।

तीसरा गुरु मन्त्र यह है—

अपने ससार को सकुचित बनाने की कभी चेष्टा मत करो। हम मे से कई लोग जितना २ आयु मे बढते जाते हैं उतना उतना अपने ससार के विस्तार को कम करते चले जाते हैं, यहाँ तक कि एक दिन ऐसा आता है जब वे अपने आपको अकेला पाते हैं उस समय हमारा भाई गङ्गा राम अपने उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम मे गङ्गाराम को ही देखता है। उसको अपने अथवा अपने परिवार के अतिरिक्त कोई नहीं दीखता

जिसकी सुधबुध लेना वह अपना कर्त्तव्य समझे।

चाहिये तो यह कि ज्यों ज्यों हम बडे हों हमारे हितों का क्षेत्र भी बढता चला जाए। और बुढापे मे पहुँच कर हम विश्व को अपना कुटुम्ब समझने लगे। यही वेदों का उपदेश है, यही धर्म का आदेश है।

परन्तु जो लोग आत्म रत रहते हैं उन्हें अपने से बाहिर की प्रत्येक छोटी छोटी घटना विचलित करती रहती है। क्योंकि वे हमेशा अपना और अपने परिवार का ही चिन्तन करते रहते हैं, अत प्रत्येक घटना जिसका उनके जीवन से सीधा सम्बन्ध नहीं होता, उनकी मानसिक समता को नष्ट कर देती है और उनके मानसिक स्वास्थ्य को बिगाड देती है।

जब तक जियो, अपने प्रयत्न से अपने हितों के ससार को विस्तृत बनाते चले जाओ। जब तुम्हारी आखें बन्द हो जायगी तो विश्वव्यापी कर्ता धर्ता तथा समता के समुद्र मे विलीन हो जावोगे।

सार्वदेशिक सभा का सैंतीसवां वार्षिक विवरण

(गताङ्क से आगे)

सभा का प्रचार कार्य

इस वर्ष सभा के प्रचार कार्य मे निम्नांकित प्रचारक कार्य करते रहे:—

दक्षिण भारत ५
हैदराबाद राज्य १२
उडीसा २
संथाल परगना ३

दक्षिण भारत

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण भारत के आधीन है। इस वर्ष जुलाई मास से दक्षिण प्रचार कार्य सभा की आर्थिक सहायता से इस वर्ष के प्रारम्भ मे दक्षिण भारत मे निम्नांकित उपदेशक कार्य करते थे।

(१) प० मदनमोहन जी विद्यासागर वेदालङ्कार
(२) आदि केशवलु जी
(३) डी सुन्दर राज जी
(४) श्री० मजु नाथ जी
(५) प० लक्ष्मण राव जी ओघले।
(६) साधु शिव प्रसाद जी
(७) केशवार्य जी शास्त्री

परन्तु वर्ष के प्रारम्भ में ही आदि केशवलु जी और पं० लक्ष्मण जी ओघले कार्य से पृथक् हो गये। इनमे से श्री प० लक्ष्मण राव जी ओघले अब सभा के अवैतनिक उपदेशक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

आन्ध्र प्रान्त

इस वर्ष आन्ध्र प्रान्त में पं० मदन मोहन जी विद्यासागर और प० केशवार्य जी शास्त्री कार्य करते रहे है।

इस वर्ष ५० स्थानो पर प्रचार हुआ।

संस्कार

३५ विवाह वैदिक पद्धति से हुये १ वेदारम्भ सस्कार १ गृह प्रवेश ५ उपनयन, ६ गर्भाधान, १ विधवा विवाह।

समाजों के उत्सव

८ समाजो के उत्सव उत्साह पूर्वक मनाये गये।

साहित्य प्रचार

(१) सत्यार्थ प्रकाश का तेलगू अनुवाद तैयार किया गया जो प्रकाशित होने वाला है।

(२) वैशेषिक दर्शन का अनुवाद भी प्रेसमे दिया जा चुका है।

(३) संस्कारो पर तेलगू मे पुस्तके लिखी पड़ी है।

शास्त्रार्थ

प० मदन मोहन जी तथा पं० गोपदेव जी द्वारा एक अमेरिकन मिशनरी के साथ शास्त्रार्थ हुआ जिसका जनता पर अच्छा प्रभाव पडा। अब ईसाई मिशनरी खुले रूप से प्रचार नहीं करते।

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण भारत से समाजों का सम्बन्ध

इस वर्ष आन्ध्र की निम्नांकित समाजो को सम्बद्ध कराया गया।

(१) तेनाली (२) कूचीपुडी (३) गुहूर (४) नैलूर (५) अनन्तपुर (६) पेडना (७) बगान पल्ली (८) पैप्परू (९) पोलूर (१०) भीमावरम् (११) गंगा वरम (१२) नक्केल पालेम (१३) विशात पत्रम् (१४) कारम चहू (१५) पम्टी पाडू

वरंगल प्रचार

यहाँ पौराणिक पण्डित श्री उमामहेश्वर जी ने आर्य समाज के विरुद्ध बहुत दूषित वातावरण पैदा कर दिया था अतः प० गोप देव जी ने उन, स्थानों पर पहुच कर दो व्याख्यान दिये जिसका जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा और उनकी अपील पर आर्य समाजेतर सज्जनो ने २०००) और आर्य समाजी सज्जनो ने ४००), कुल २४००) एकत्रित किया।

इसी वर्ष प० जी द्वारा विलास पुर मे हिन्दू महा सभा के अधिवेशन पर सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी प्रस्ताव लाने मे सराहनीय कार्य किया गया।

इस वर्ष गंगावरम् मे वैदिक साहित्य विद्यालय के विद्यार्थियो की सख्या ११ से बढ़ कर १५ हो गई है और अब वहा प० केशवार्य जी शास्त्री तथा लक्ष्मीनारायण जी दो अध्यापक उत्साह से कार्य कर रहे हैं।

मालावार प्रचार

इस वर्ष मालावार प्रान्त मे साधु शिव प्रसाद जी कालीकट को केन्द्र बना कर कार्य करते रहे। इन्होने वैदिक धर्म के सम्बन्ध मे विविध विषयो पर कई भाषण दिये और ५० सहायक सदस्य बनाये और ३०) वेदप्रचारार्थ धन संग्रह किया। इस वर्ष कई समाजो की स्थापना का प्रयत्न जारी है।

श्रद्धानन्द अनाथालय

मालावार के अकाल पीड़ितों की सहायतार्थ जो अनाथालय गत वर्ष स्थापित हुआ था वह सुचारुरूप से चल रहा है।

कर्णाटक प्रचार

इस वर्ष कर्णाटक मे श्री सुन्दर राज जी तथा मंजु नाथ जी कार्य करते रहे हैं।

औषधि वितरण

विविध स्थानो पर श्री सुन्दर राज जी द्वारा ५६६ रोगियो को औषधि वितरण की गई। जिस सेवा भाव का जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा।

संस्कार

१ सीमन्तोन्नयन, १ उपनयन, १ विवाह सस्कार २ शुद्धि १ चूड़ा कर्म १ अन्नप्राशन संस्कारकराये गये।

धन संग्रह

वेद प्रचारार्थ २४) संग्रह किये गये।

तामिल नाड प्रचार

तामिल नाड प्रान्त मे इस वर्ष श्री केशवालु जी जून मास तक प्रचार करते रहे।

चेमूर प्रचार कार्य भी यथापूर्व चलता रहा।

महाराष्ट्र प्रचार

गत वर्षों की भाति इस वर्ष सितम्बर मास तक प० लक्ष्मण राव जी ओघले महाराष्ट्र प्रान्त मे मास मे १० दिन प्रचार कार्य करते रहे। विशेष कार्य दलित जातियो मे हुआ।

गढ़वाल प्रचार

गत वर्ष की भाति इस वर्ष भी गढ़वाल प्रचार का कार्य यू० पी० सभा के आधीन होता रहा।

गढवाल की डोला पालकी की समस्या को सुलझाने का प्रयत्न इस वर्ष भी यू० पी० सभा की ओर से हुआ। डोला पालकी की नई-नई घटनाये घटित हुई जिनमे रौतेला काड उल्लेखनीय है इसमे आर्य लोगो को उचित कानूनी सलाह दिलाई गई।

उडीसा प्रचार

गत वर्षों की भाति इस वर्ष मे श्री स्वामी धर्मानन्द जी और प० रुद्र देव जी शास्त्री उडीसा मे प्रचार कार्य करते रहे हैं। इनका केन्द्र स्थान वलागीर रहा।

मन्दिर निर्माण

वलागीर मन्दिर का निर्माण कार्य आरम्भ हो चुका है और इसके लिये स्थानीय चन्दे से ७०००) की राशि एकत्र कर ली गई है।

आर्य समाजें

इस वर्ष देवली मे नई समाज बनाई गई। पिछली ५ समाजो मे ७८ सदस्य नये बनाये गये।

सार्वदेशिक के ग्राहक

इस वर्ष ३ नये ग्राहक बनाये गये।

सस्कार

१ विधवा विवाह कराया गया जो बडे धूम धाम से हुआ।

धन संग्रह

आर्य समाज वालागिर मन्दिर के लिये लग भग ४०००) रुपये एकत्र किये गये। तथा कुये के लिये राज्य से स्थान प्राप्त किया।

संथाल प्रचार

गत वर्षों की भाति इस वर्ष भी सथाल प्रचार बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के निरीक्षण मे होता रहा जिसका प्रमुख प्रचार पिछडी हुई जातियो मे था, इस वर्ष (१) श्री कृष्ण शर्मा (२) सुख देव सिंह जी (३) ध्रुव नारायण जी तीन प्रचारक कार्य करते रहे। इस वर्ष १४३ सभासद बनाये गये।

सथाल परगना मे ईसाइयो के बढते हुए प्रचार को रोकने तथा आदिवासियो को ईसाइयो के चगुल से बचाने के लिये सोहर दागा मे एक आश्रम की स्थापना की है। २० प्राइमरी स्कूल झरिया मे चल रहे हैं। एक इङ्गलिश स्कूल छात्रा वास सहित बा० नन्दकिशोर जी ने १००००) की लागत से तैयार किया है। अभी हाल ही मे उन्होने ५० ग्रामो के लोगो को एकत्र करके वैदिक धर्म प्रचार किया। ५०० सथालो की जो ईसाई हो गये थे शुद्धि की गई।

सी० पी० प्रचार

गोंड भीलो को ईसाइयो के चुगल से बचाने के लिए इस दिशा मे सभा सतर्क है। सी पी सभा को प्रेरणा की गई है उक्त सभा ने एक योजना बना कर सभा मे भेजी थी। वह इस सभा ने स्वीकृत करली है और प्रातिय सभाओ को कामयाब बनाने की प्रेरणा की है कि वह गोडो मे प्रचार का विशेष प्रबन्ध करे। स्वामी स्वरूपानन्द जी को भी प्रचारार्थ सी पी भेजा गया जो मडला जिले मे विशेष सफलता से कार्य करते रहे हैं।

हैदराबाद राज्य प्रचार

हैदराबाद राज्य का प्रचार कार्य वहा की आर्य प्रतिनिधि सभा के अधीन है यहा से उक्त सभा को २००) मासिक सहायता दी जाती है।

इस वर्ष के अन्त मे १२ उपदेशक राज्य मे प्रचार कर रहे हैं १२१ सस्कार, कराये गये २२७ नये सदस्य बनाये गये तथा दोवा नाडे पल्ली तथा सुलह पेठ नामक तीन नई समाजें बनाई गई।

सत्यार्थ प्रकाश जब्त नहीं होने देंगे

(एक सिक्ख सज्जन के उद्गार)

सम्पादक के नाम श्री दलजीतसिंह जी का पत्र

क्या आप मेरी कविता, 'सत्यार्थ प्रकाश जब्त नहीं होने देंगे' को 'सार्वदेशिक' मे उचित स्थान देकर अनुगृहीत करेंगे ? धन्यवाद'।

आज हम सब हिंदू यह विचार करते हैं कि, 'सिक्ख अहिंदू हैं सिक्ख सत्यार्थ प्रकाश विरोधी दल के समर्थक हैं, आदि आदि मैं भी सिक्ख हूँ' सिक्ख पथ से मुझे अटूट प्रेम है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि मैं अनार्य—अहिंदू हूँ। मैं शत प्रतिशत हिंदू (आर्य) हूँ। जो सिक्खों को अहिंदू मानते हैं वे स्वय देश-कलक है

इस कविता लिखने का मेरा ध्येय यही है कि 'सिक्ख हिंदू है और सदैव रहेंगे,' हम (सिक्खो) ने भी हिंदुओ के साथ जीना मरना है'—

आपका

दलजीतसिंह त्रियोन

स्यालकोट

'सत्यार्थ प्रकाश जब्त नहीं होने देंगे'

देखो लगा है सिंध मे सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध आज,
ऐसी काली करतूतो से पूर्ण है, लीगियो का राज,
क्या यह सहन हो सकता है ? नहीं ! तो रखेंगे धर्म की लाज,
अत्याचारियो से डर कर रहना, नहीं वीरो का काज,
पाकिस्तानासुर का नग्न रूप देखलो !
इसके बीज देश मे नहीं बोने देंगे,
सत्यार्थ प्रकाश जप्त नहीं होने देंगे' ॥ १ ॥

हैदराबाद की तरह, यहा भी सग्राम मचाना होगा
अपने त्याग, साहस से जग को, सत्य अमृत पिलाना होगा,
सत्याग्रह शस्त्र से हमे, लीग सिहासन हिलाना होगा
कुछ भी होवे सो होवे, यह प्रतिबन्ध अवश्य उठाना होगा,
अत्याचारी ! दिखाले अपनी शठता तू,
पर, हम यह अमूल्य रत्न नहीं खोने देंगे,
सत्यार्थ प्रकाश जप्त नहीं होने देंगे ॥ २ ॥

एक बार सिंह गर्जन करके, सिंध हिलादे हम,
शिव, गुरु, प्रताप के नाद से नभ कम्पादे हम
सगठित रूप से उठे जो, ब्रह्माण्ड उठादें हम,
'सत्यार्थ-प्रकाश अमर रहे' से जग थर्रादें हम,
हिंदू सिंह को छेड़ा है जिसने,
उसे कदापि नहीं हम सोने देंगे
सत्यार्थ प्रकाश जप्त नहीं होने देंगे ॥ ३ ॥

[पाठक महोदय इस की भाषा की अपेक्षा भावना पर अधिक ध्यान दें जिससे उन्हें लेखक की भावना की प्रबलता स्पष्ट ज्ञात हो सकेगी। ऐसी ही भावना प्रत्येक विचारशील स्वतन्त्रता प्रिय व्यक्ति की है ऐसा हमारा विश्वास है। —सम्पादक सा० दे०]

इस्लाम और स्त्रियों की स्थिति

(लेखक—श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति अध्यक्ष अनुसन्धान विभाग सार्वदेशिक सभा देहली)
गताङ्क से आगे

'सार्वदेशिक' के गत अङ्क मे मैंने इस्लाम मे स्त्रियो की स्थिति के विषय मे श्री खुदाबख्श एम० ए० बी० सी० एल्. बैरिस्टर के Essays-Indian and Islamic से कुछ उद्धरण दिये थे जिन मे उन्होने बहु विवाह, पर्दा पद्धति आदि की कठोर आलोचना की है और इन कुप्रथाओ को दूर करने की प्रबल प्रेरणा मुस्लिम जनता को की है। ऐसे ही विचार अनेक सुशिक्षिता मुस्लिम महिलाओ ने भी प्रकट किये हैं उदाहरणार्थ बेगम इक़बालुन्निसा हुसेन बी० ए० ने पर्दा पद्धति आदि क कारण मुस्लिम स्त्रियो की शोचनीय अवस्था पर प्रकाश डालते हुए Changing India नामक अपनी पुस्तक मे लिखा है कि —

In their actual life they (muslim women) are called reasonless beings and incapable of holding a responsible position How could they be wise? They are shut off from the modern world and its civilisation Expres ion of thought is taken to be a great sin Their outlook on life is narrow and degrading' (Changing India by mrs Iqbalun sa Husain B A P 23 quoted here from 'Wom n in Islam by V R and L Bevan J nes P 442

अ..न मुस्लिम स्त्रियो को जी न मे बुद्धिहीन प्राणी क..ा ..ना है जो कोई उत्तरदायित्व पूर्ण पद ग्रहण करने . असमर्थ है। वे ..ः बुद्धिमती बन सकती है? उन्हे वर्तमान ज.. और इस की सभ्यता से सर्वथा पृथक् रखा जाता है। विचारो को प्रकाश करना भी उनक लिये एक बडा पाप माना जाता है। उनका जीवनविषयक दृष्टिकोण सर्वथा सकुचित और अवनति कारक बन जाता है।

इसी प्रकार मिस् अहमद नामक एक सुशिक्षिता मुस्लिम महिला ने मुस्लिम पत्र The light के १ और ८ फर्वरी १९३८ के अङ्को मे पर्दा पद्धति के कारण स्त्रियो की शोचनीय अवस्था का चित्र खैंचते हुए लिखा है कि-

'To understand the mind of the Purdah woman is to feel helpless and hopeless Intellectual senility was inflicted upon them before they (Purdah women) had ceased to be young There is so much tragedy in the lot of the intelligent secluded women They may rebel against their position, but feel themselves bound hand to foot They chafe and rebel helplessly, become bitter because of their helplessness will lessness and powerlessness

(Miss H H Ahmad in the Light 1 and 8 Feb 1938 quoted in Woman in Islam P 225)

अर्थात् पर्दा वाली स्त्रियो की मनोवृत्ति को समझना असहायता और निराशा का अनुभव करना है युवावस्था समाप्त होने से पूर्व ही उन पर बुढापा छा जाता है। समझदार पर्दानशीन स्त्रियो की

अवस्था अत्यन्त शोचनीय है। वे अपनी स्थिति के विरुद्ध विद्रोह कर सकती हैं पर उन के *हाथ पैर बँधे हुए हैं। वे असहायता की अवस्था में* दुःखित होती और विद्रोह करती हैं तथा इस असहायता, इच्छाहीनता और शक्तिहीनता के कारण कटुता अनुभव करती हैं। इत्यादि

बेगम अत्तिया हबीबुल्ला ने Our Cause नामक पुस्तक में 'Seclusion of Women' शीर्षक से पर्दा पद्धति के दोषों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि

"Purda has been the greatest hindrance to the political development of Indian women."

'our cause' (P. 206)

"forcible repression for women has meant mental and physical disease, lack of discipline and rational care in the upbringing of Children, lack of harmony and beauty in the home, which has become the strong hold of convention and orthodoxy."

"Our cause" Kitabistan Allahabad P. 209

अर्थात् पर्दा भारतीय स्त्रियों की राजनैतिक जागृति में सब से अधिक बाधक रहा है।

स्त्रियों के लिए पर्दा पद्धति इत्यादि द्वारा दबाव व अत्याचार का परिणाम मानसिक और शारीरिक रोग, अनुशासन और बच्चों के युक्तियुक्त पालन पोषण का अभाव तथा घर में सामनस्य और सौन्दर्य का अभाव हुआ है जो घर कट्टरपन के दुर्ग बन गये हैं।

इत्यादि आलोचना से भी महर्षि दयानन्द के इस विषयक विचारों का स्पष्ट समर्थन होता है।

औक्सफौर्ड युनिवर्सिटी के एम० ए० श्री खुदाबख्श जैसे विचारशील मुसलमान विद्वान् और *मुस्लिम विदुषियों के इन लेखों से* महर्षिदयानन्द जी कृत समालोचना का पूर्ण तथा प्रबल समर्थन होता है यह लिखने की आवश्यकता नहीं।

अब हम कुछ पाश्चात्य विद्वानों के इस विषयक विचारों को पाठकों के सन्मुख तुलनात्मक दृष्टि से रखते हैं।

रेवरेन्ड जान पूल (Rev, john Pool) ने 'Studies in Mohammedanism' में इस सम्बन्ध में लिखा है कि:-

'There is the treatment of women. Mohammedanism does not shine in this matter, nay, no where on earth will you find woman so degraded as in countries where Islamism reigns supreme. A mohammedan regards woman. not as a companion and helpmate for him, but as a play thing, a petty toy, as soulless as his turban or as his pipe."

('Studies in Mohammedanism' by Rev. John Pool P. 412)

अर्थात् स्त्रियों के साथ व्यवहार का प्रश्न है। इस विषय में मुसलमानी मत चमक नहीं सकता गौरव नहीं प्रकट कर सकता। कहीं भी स्त्रियों की अवस्था को तुम इतना अवनत न पाओगे जितनी उन देशों में है जहाँ इस्लाम का राज्य है। एक मुसल्मान, स्त्री को अपनी सहधर्मिणी वा सहायिका नहीं समझता बल्कि एक खिलौना, सुन्दर खिलौना समझता है जो इतना ही आत्मशून्य है जैसे कि उस की पगड़ी वा हुक्का इत्यादि। Sacred

Books of the East Series मे कुरान के अंग्रेजी अनुवादक मि० पामर (E H Palmer) ने अनुवाद की भूमिका मे लिखा है कि –

'One of the greatest blots on Islam is that it keeps the women in a state of degradation and therefore effectively prevents the progress of any race professing the religion '

(Translation of the Quran by F H Palmer Introduction P 6)

अर्थात इस्लाम पर एक सबसे बडा कलङ्क यह है कि यह स्त्रियो को बडी अवनत अवस्था म रखता है और इस प्रकार अपने अनुयायियो की उन्नति मे बाधा डालता है ।

मि० स्टनली लेनपूल (mr Stanley Lanepool) ने सामाजिक दृष्टि से इस्लाम के विषय मे विचार करते हुये लिखा है कि –

'As a social system, Islam is a complete failure, it has misunderstood the relations of the sexes, upon which the whole charactor of a nation's life hangs and by degrading women, has degraded each successive generation of their chidren down an increasing scale of infamy and corruption, until it seems almost impossible to reach a lower level of vice

(Stanley Lane poole's Introduction to Lane's selections quoted in the Dictionary of Islam P 403)

अर्थात् सामाजिक पद्धति के रूप मे इस्लाम सर्वथा असफल है । इसने स्त्री पुरुष के सम्बन्धो को जिन पर किसी राष्ट्र का जीवन अवलम्बित है अशुद्ध समझा है और स्त्रियो को गिरा कर से भावि सन्तति को इतना गिरा दिया है कि बुराई की उस से निचली सीमा तक पहुंचना असम्भव प्राय है ।

मि० स्टाबर्ट (V W H Stobart) ने Islam and its Founder नामक पुस्तक मे कुरान का विवाह विषयक उद्धरण देते हुए लिखा है –

'To take two or three or four and not more" women as wives (Sura 70 30) and in addition to these as concubines the slave girls 'Which their right hands possess' that is purchased or made captive in war. In reality the number of wives is practically un-limited, as the Koran allows an almost unchecked power of divorce and exchange (Sura 1V—18), the action of the husband who is expressly stated to be superior to the wife is nearly un controlled He may repudiate his wives without any assigned reason, and without warning, may, if apprehensive of disobedience, rebuke, imprison and strike them (Sura 1V—28) and against this the dishonoured spouse has almost no means of redress ',

(Islam and its Founder by V W H Stobart P 150—151)

अर्थात् इस्लाम के अनुसार एक मुसलमान दो, तीन चार तक विवाहित स्त्रियाँ करने के अतिरिक्त रखेली के तौर पर बहुत सी दासियाँ तथा खरीदी हुई वा लड़ाई मे पकड़ी हुई स्त्रियाँ रख सकता है। वास्तव मे स्त्रियो की सख्या क्रियात्मक रूप में असीमित है क्योंकि कुरान तलाक और बदले की अपरिमित सख्या की अनुमति देता है और पति का जिसे स्त्री से स्पष्टतया ऊंचा बताया गया है अधिकार पत्नी पर अनियन्त्रित है। वह बिना कोई कारण बताये तथा चेतावनी दिए हुए भी स्त्री का परित्याग कर सकता है और यदि उससे आज्ञा भङ्ग की शङ्का हो तो उसे झिड़क सकता है, कैद कर सकता है और मार पीट सकता है जिस के विरुद्ध अपमानित पत्नी को प्रतिकार का लगभग नहीं के बराबर अधिकार प्राप्त है।

श्री बौस्वर्थ स्मिथ एम ए. (Bosworth Smith M A) नामक विद्वान् ने जिसे मुहम्मद साहब के अत्यधिक प्रशंसको मे से एक माना जाता है बहु विवाह के विषय मे कहा है कि –

Polygamy tends to degrade love into animal passion and so un-spiritualise all the relations between the sexes It pollutes society at the fountainhead, for the family is the source of all political and of all social virtues

Mohammed and
Mohammedanism
by Bosworth Smith M A.
P. 235

अथात बहुविवाह प्रेम को पाशविक वासना के रूप म अवनत कर देता है और इस प्रकार स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध को आध्यात्मिकता से विच्छिन्न कर देता है। यह समाज को मूल से विकार युक्त कर देता है क्यो कि परिवार ही सब राजनैतिक और सब सामाजिक गुणों का स्रोत है। इसके आगे बहु पत्नीक अंतःपुर के दोषों को दर्शाते हुए मि० स्मिथ ने लिखा है किः–

Triviality, selfishness, heart burnings, deadly hatreds, if nothing worse, are the needs which must in the nature of things, find in the harem a congenial soil."

(Mohammed and Mohammedanism by Bosworth
Smith M A P 302

अर्थात् तुच्छता, स्वार्थ, हृदय की जलन, भयङ्कर घृणा, ये . फल हैं जो बहुपत्नीक अन्तःपुर मे अनुकूल क्षेत्र पाते हैं।

मुहम्मद साहेब के बहुविवाह पर विचार प्रकट करते हुए मि० स्मिथ ने जिन्हें मुहम्मद साहेब के बड़े भारी प्रशसको में माना जाता है लिखा है किः–

"The limitation to the unbounded licence of polygamy which he had himself imposed, he (Mohammed) relaxes in his own behalf (Sura XXXIII 49 and L X 71 11) It is a blot, an indelible blot upon his memory." P. 134

"It must be admitted with sorrow that in the matter of his marriages, Mohammed laid himself open to much mis-conception and to much blame even on the part of the most temperate and most truth loving of his opponents." P. 135

अर्थात् बहु विवाह के अनियन्त्रित सम्भोग के विषय में मुहम्मद साहेब ने जो सीमा स्वय बाँधी थी उसको अपने लिये उन्होने शिथिल कर दिया। यह उनकी स्मृति पर एक कलङ्क, एक अमिट कलङ्क है।

इस बात को दुःख के साथ अवश्य स्वीकार करना चाहिये कि अपने विवाहो के विषय मे मुहम्मद साहेब ने अपने को विरोधियो मे से बहुत ही सत्यप्रिय लोगो की दृष्टि मे भी कलक और भ्रम का पात्र बना दिया। श्री हेनरी मोंट गोमरी (Henry Montgomery D D) ने 'Foreign Mission' नामक पुस्तक मे मुहम्मदी मत पर विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि -

'By the whole teaching of the Kuran, Mohammed has consecrated slavery for ever, has degraded women for ever and has sanctioned the use of sword for ever for the propagation of faith "

(Foriegn Mission by
Henry Montgomery
D D P 65 66)

अर्थात् कुरान की सम्पूर्ण शिक्षा के द्वारा मुहम्मद ने दासता को सदा के लिए अनुमोदित कर दिया, स्त्रियो को सदा के लिये अवनत कर दिया और मत के प्रचार के लिये तलवार के प्रयोग की सदा के लिये अनुमति दे दी।

क्वीन्स युनिवर्सिटी कैनाडा के प्रिन्सिपल श्री ग्रैन्ट डी. डी. एल् एल् डी (G M. Grant D. D. LL. D Principal Queen's University Canada) ने the Religions of the World' नामक पुस्तक मे Success and decadence of Mohammedanism शीर्षक के द्वितीय अध्याय मे लिखा है कि —

'Civilisation can not be permanent if it is not based on a pure family life. It can not reach the highest point, if one half of humanity is not allowed its due share in social life It can have no true refinement if there is no faith in the invate purity of womanhood Servile concubirage and facility of divorce, as well as polygamy, tend to the degradation of family life, and the effect of Mohammed's law forbidding women to appear unveiled before any member of the other sex is to withdraw them from the social circle and to make the highest forms of society impossible "

('The Religions of the
World' by G M
Grant D D LL D P 38

अर्थात सभ्यता स्थायिनी नहीं हो सकती जब तक यह एक पवित्र पारिवारिक जीवन पर अवलम्बित न हो। यह उच्च शिखर पर नहीं पहुंच सकती जब तक कि मनुष्य जाति के अर्ध भाग को सामाजिक जीवन मे अपना उचित भाग लेने की अनुमति न दी जाए इस मे परिष्कृति नही आ सकती जब तक कि स्त्रियो की आन्तरिक पवित्रता मे विश्वास न हो। दासी रखेलियो के साथ भोग, तलाक की सुगमता और बहुविवाह प्रथा परिवारिक जीवन के पतन मे सहायक होती है और मुहम्मद का स्त्रियो के लिये बिना पर्दे के पुरुषो के सामने आने का निषेधपरक नियम उन्हें सामाजिक क्षेत्र से पृथक् करता और समाज के उच्चतम रूप को असम्भव बना देता है।

प्रिंसिपल फेयर बेन (Principal Fairbairn) ने (The City of God) नामक पुस्तक मे इसी भाव को निम्न शब्दो मे प्रकट किया है –

A religion that doesnot purify the home can n t regenerate the race, one that depraves the home is certain to deprave humanity And so it has been with Islam It has reformed and lifted savage tribes, it has depraved and barbarised civilised nations At the root of its fairest culture a worm has ever lived that has caused its blossoms soon to wither and die

(Principal Fairbairn in the City of God P 97)

अर्थात् एक धम जो घर को पवित्र नहीं करता, किसी जाति को भी उन्नत नहीं कर सकता। जो घर का कलुषित करता वा बिगाडता है वह मनुष्य मात्र को दूषित करता है। इस्लाम क साथ भा ऐसा ही हुआ है। इसने जङ्गली जातिया को सुधारा और उठाया है पर सभ्य जातिया का इसने दूषित किया और उन्हे जगली बना दिया है। इस की उत्तम सस्कृति की जड मे भी एक कीडा सदा से रहा है जो इस के पुष्पो क शाघ्र ही झडने और नष्ट होन का कारण बना है।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द जी कृत इस्लाम म स्त्रियो की स्थिति विषयक समालोचना का अनक मुसलमान और पाश्चात्य विचारको के लखो द्वारा समर्थन होता है यह स्पष्ट है। विस्तारभय से इस विषय का यही समाप्त किया जाता है। बोस्वथ स्मिथ एम० ए० (Bosworth Smith M A) न भी जिन्हें पाश्चात्य विद्वानो मे मुहम्मद साहेब के अत्यधिक प्रशसकों मे से जाना जाता है और जिनकी Mohammed and Mohammedanism नामक सुप्रसिद्ध पुस्तक को मुसलमान बन्धु बडे गर्व के साथ सिफारिश करते है स्पष्ट लिखा है कि –

'There is in Mohammedanism no ideal life in the true sense of the word, for Mohammed s character was admitted by himself to be a weak and erring one It was disfigured by at least one huge moral blemish and exactly in so far as his life has inspite of his earnest and re iterated protestations, been made an example to be followed, has that vice been perpetuated

(Mohammed and Mohammedanism by Bosworth Smith M A P 294

अर्थात् मुसलमानी मत मे सच्चे अर्थों मे आदर्श जीवन विद्यमान ही नहीं है क्योकि मुहम्मद साहेब ने अपने चरित्र के विषय मे स्वय स्वीकार किया था कि वह कमजोर और अशुद्धि पूर्ण है। यह चरित्र कम से कम एक बडे भारी नैतिक वा सदाचार विषयक कलङ्क से दूषित था और जहाँ तक मुहम्मद साहेब के सच्चे और बार बार दोहराये प्रतिवाद के होते हुए भी उसे अनुकरणीय माना गया है वहाँ तक उस बुराई की वृद्धि हुई है।

मुहम्मद साहेब के बहुविवाह विषयक स्मिथ महोदय की आलोचना के The limitations to the unbounded licence of polygamy which be (Mohammed) had himself imposed, he relaxes in his own behalf (Sura XXXIII 49 and LXVI 1

It is a blot an indelible blot, up on his memory (P 134) इत्यादि शब्दो को हम पहले उद्धृत कर चुके हैं जिन्हे दुहराने की आवश्यकता नहीं।

अन्य पाश्चात्य विद्वानो ने तो मुहम्मद साहेब की आलोचना प्राय अत्यधिक कठोर शब्दो म की है जिनमे से कुछ को हम पहले उद्धृत कर चुके हैं जिन्होने निष्पक्षपात हो कर मुहम्मद साहेब के गुण दोषका विवेचन किया है उन मे से लेफरौय G A Lefroy) महोदय के "Mohammedanism its Strength and its Weakness" क निम्न उद्धरण को उदाहरणार्थ लिया जा सकता है। प्राय सभी पाश्चात्य आलोचक इस विचार से सहमत प्रतीत होते हैं। लेफरोय महोदय लिखते है —

'I believe Mohammed to have been especially in the beginnig of his career an earnest man genuinely seeking after truth, with in large measure, pure motives and free from personal motives I believe that he saw truths far grander and deeper than those which most of his countrymen and that he laboured hard and long, amid every discouragement and often at the risk of his life, to bring home to his people, the knowledge of these truths, and to redeem them from the gross idolatry, the infanticide and the many social and religious evils in which they were sunk"

'But I believe that with the access of power there came a fatal lowering of aims and of the tone of his own life till from regarding himself so long as the mouthpiece of God, he permitted himself first to disregard his conscience, and then to take that last and awful step of identifying the voice of God with the promptings of his lower nature, and claiming the Divine authority for that which he ought to have repelled as the very tempting, which indeed it was, of the evil one himself" (quoted in Foreign Missions by Henry Montgomery D D P 68)

अर्थात् मै यह मानता हूँ कि मुहम्मद साहेब विशेषत अपने जीवन के प्रारम्भिक भाग मे शुद्ध भावना से स्वार्थरहित हो कर सत्य के जिज्ञासु थे। मेरा विश्वास है कि उन्होने अपने अन्य देशवासियो की अपेक्षा अधिक उत्कृष्ट और गम्भीर सचाइयो का दर्शन किया था और निराशाजनक परिस्थिति मे कई वार अपने जीवन को भी खतरे मे डालकर उन्होने इन सचाइयो को लोगो तक पहुचाने तथा उन्हें घोर मूर्ति पूजा, बालिका हत्या तथा अन्य अनेक सामाजिक और धार्मिक बुराइयो से मुक्त करने के लिये देर तक कठिन परिश्रम किया था। किन्तु मेरा विश्वास है कि शक्ति की प्राप्ति के साथ साथ उनके उद्देश्यो और जीवन में भयङ्कर पतन प्रारम्भ हो गया यहा तक कि अपने को ईश्वर का दूत मानने के स्थान पर उन्होने अब अपनी अन्तरात्मा की भी उपेक्षा कर दी और अपनी हीनतर प्रकृति की आवाज को ईश्वरीय आदेश के साथ मिला दिया तथा जिसे इन्हें सचमुच शैतान की तरफ से आया हुआ प्रलोभन समझना चाहिये था (जैसे कि यह वास्तव मे था) उसके लिये ईश्वरीय आदेश होने का दावा किया।

❋ ऐ सोते सिंहो, जाग उठो ? ❋

(ले०—श्री डा० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालङ्कार, सिद्धान्त शास्त्री, एम० ए० एल० टी०, डी० लिट्, अजमेर)

(१)

ऐ सोते सिंहो ! जाग उठो, देखो तो कौन जगाता है ?
यह आग तुम्हारे उपवन में, देखो तो कौन लगाता है ?
तुम को शृगाल भयभीत बना, देखो तो कौन भगाता है ?
कर खंड तुम्हारे ही घर के, को पाकिस्तान बनाता है ?

(२)

जिस घर की तुमने रक्षा की, न्यौछावर कर सरबस अपना।
मरते दम तक जिसका गौरव अरु नामनिरंतर है जपना॥
उसके ही टुकड़े करने का देखा है अब किसने सपना ?
आर्यत्व तुम्हारा नाप रहा, ले अधम कौन अपना नपना ?

(३)

इस भरत खंड के खंड २ की अब तो केवल बात नहीं।
घर के टुकड़े कर लूट मचादेने की केवल घात नहीं॥
है कौन तुम्हारी वस्तु कि जिस पर है अखिल का दाँत नहीं ?
देखो अब पास बचा क्या है जिस पर उसका आघात नहीं ?

(४)

लो हुये हृदय के खंड कहो अब तुम सिंहो ! क्या कहते हो ?
तुम मृतक हुये या जीवित हो ? क्या दुनियाँ में ही रहते हो ?
यदि जीवित हो तो क्यो अपना अपमान निरंतर सहते हो ?
क्यो तृण समान जलधारा मे निर्जीव निरन्तर बहते हो ?

(५)

क्या धर्म त्याग कोई पदार्थ भी तुमको अतिशय प्यारा है ?
क्या पूर्वजनों ने धर्म हेतु निज तन मन धन नहीं वारा है ?
क्यो वीरो की सन्तान ! आज माता का दूध पजारा है ?
तुम आर्य बने किस हेतु ? तुम्हें क्यों आज काठ ने मारा है ?

(६)

जिसको तुम हृदय समझते हो, वह भी रक्षित अब पास कहाँ ?
जो प्राणो से भी प्यारा है अब वह "सत्यार्थ प्रकाश" कहाँ ?

जिसने सारा तम टारा है अब वह सुन्दर सुप्रकाश कहाँ ?
यदि सोते रहे सदा यों ही उसके बचने की आशा कहाँ ?

(७)

अब देख रहे क्या स्वप्न, तुम्हारे धर्म ग्रन्थ पर वार हुआ ?
देखो प्रकाश के युग मे भी बर्बर अत्याचार हुआ ॥
गुरु वर की पुण्य धरोहर पर अरि का वज्र प्रहार हुआ ।
जो जीवित रह यह सहन करे उस जीवन को धिक्कार हुआ ॥

(८)

अब एक वार तुम उठो वीर वर ! सिंह समान दहाड़ करो ।
मग मे यदि आवे ठोकर से तुम चकनाचूर पहाड़ करो ॥
बन कर दधीचि ऋषि के समान तुम दान रक्त अरु हाड़ करो ।
बन हनूमान् जा सिन्धु पार अरि का उद्यान उजाड़ करो ॥

(९)

वर वीर प्रताप शिवा जी का क्या रहा नसों में रक्त नहीं ?
वह लेखराम श्रद्धानद का क्या गया व्यर्थ बलिदान कहीं ?
क्या भाग्यनगर मे वीरो ने अनगिन विपदायें व्यर्थ सहीं ?
बस उठो तड़प कर एक वार अब सोने की घड़ियाँ न रहीं ॥

(१०)

बलिदानो से, तपत्यागो से निश्चिन्त विजय मिल जाती है ।
अघ अत्याचारो की गद्दी सत्याग्रह से हिलजाती है ॥
"सत्यार्थ प्रकाश" अमर होगा, वह दिव्य गुरु की थाती है ।
तुम रहो "सूर्य" सम अटल वीर ! आँधी तो आती जाती है ॥

आर्य कुमार जगत्

संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन ता० ५-६-७ अक्तूबर सन् १६४५ ई० को गाज़ियाबाद नगर मे श्री कुँवर रणजयसिंह जी अमेठी नरेश के सभापतित्व मे मनाया जावेगा।

१-संयुक्त प्रान्त की आर्य कुमार सभाओ को इस सम्मेलन के अवसर पर अधिक से अधिक प्रतिनिधि भेजने चाहिये।

२-जिन आर्य कुमार सभाओ ने अभी तक वार्षिक शुल्क इस वर्ष का भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् को नही भेजा है शीघ्र भेजें, जिससे उनके प्रतिनिधि इस सम्मेलन मे भाग ले सकें।

३-जो कुमार सभाएं अभी तक भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् तथा संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् मे सम्मिलित नहीं हैं, वे अपना सम्बन्ध शीघ्र करालें।

४-प्रत्येक सम्बद्ध आर्य कुमार सभा को अपने प्रथम २० सभासदो पर २) वार्षिक तथा फिर प्रति १० सभासदो पर १) वार्षिक परिषद् को देना होता है।

५-प्रत्येक आर्य कुमार सभा को सम्मेलन की तिथि के दो सप्ताह पूर्व अपने प्रतिनिधियो की सूची मंत्री के पास भेज देनी चाहिये।

देवीदयाल प्रधान मंत्री

साहित्य समीक्षा

महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र—लेखक श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति। प्रकाशक—विजय पुस्तक भण्डार श्रद्धानन्द बाजार दिल्ली। पृ० स० २१६ मूल्य १॥)

श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति का परिचय देना सूर्य को दीपक दिखाना है। आप को हिन्दी भाषा पर पूर्ण आधिपत्य प्राप्त है। इस जीवन चरित्र की भाषा अत्यन्त सरल, सरस और ओजस्विनी है घटनाओ का वर्णन बडे ही आकर्षक और प्रभावोत्पादक रूप मे किया गया है। पुस्तक एक वार प्रारम्भ करने पर बिना समाप्त किये छोडने को जी नही करता। पुस्तक २० परिच्छेदो मे विभक्त है जिन मे से अन्तिम दो मे स्वामी दयानन्द की महत्ता और सत्यार्थप्रकाश के प्रति श्रद्धाञ्जलियो का उत्तम सग्रह सुयोग्य लेखक महोदय के निर्देशानुसार श्री प० धीरेन्द्र जी विद्यालङ्कार ने किया है इन दो परिच्छेदो मे जिन महानुभावो की श्रद्धाञ्जलियो का सग्रह किया गया है उन के विषय मे पूर्ण प्रतीक (पुस्तक—लेखादि विषयक) देना अधिक उत्तम और उपयोगी होता। पुस्तक सब दृष्टियो से उपादेय और प्रचार करने योग्य है।

ध० दे०

महाराज रतलाम का प्रशंसनीय कार्य

हरस्वरूप जौहरी मंत्री आर्य समाज रतलाम ने श्रीमान् मेजर जनरल हिज् हाइनेस सर सज्जनसिंह जी C. I. E, K. C. S. I, K. C. V. O महाराजा साहब रतलाम से आर्य समाज के डेपुटेशन के वास्ते जिसका उद्देश्य आर्य समाज भवन निर्माण के लिये सहायता प्राप्त करना था मिलने की आज्ञा प्राप्त की। ता० १५-८-४४ को श्रीमान् महाराजा साहब ने आर्य समाज के डेपुटेशन से मुलाकात की। जिसके दौरान मे महाराजा साहब को बतलाया गया कि आर्य समाज रतलाम द्वारा कितने अनाथ व अबलाओं की रक्षा की गई है जिसको सुनने के बाद श्रीमान् महाराजा साहब ने आर्य समाज के इस काम को बहुत सराहा और निहायत खुश होकर आर्य समाज भवन निर्माण की सहायता के लिए रु० १०००) प्रदान किये और यहाँ तक सहानुभूति दिखाई कि चन्दे की सूची देख कर फ़रमाया कि राज्यरत्न श्री सेठ मूलजीभाई दयाल व सेठ श्री पी० एम० राठोड़ ने जो रकमे दी हैं वे बहुत कम हैं उनसे और लेनी चाहियें।

इस धार्मिक कार्य मे श्रीमान् चीफ़ मिनिस्टर साहब मिस्टर टी० जे० राजा एम० ए० एल एल० बी० ने जो सहायता प्रदान की उसके लिये उनको बार बार धन्यवाद है। इस दान की खबर मिलने पर खास तौर से आर्य समाजियो ने और आम तौर से नागरिकों ने श्रीमान् महाराजा साहब की बड़ी प्रशंसा की।

हम आशा करते हैं कि श्रीमान् महाराजा साहब की आर्य समाज पर ऐसी ही दया दृष्टि बनी रहेगी उनको इस सराहनीय कार्य के लिये हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

हरस्वरूप जौहरी
मन्त्री आर्य समाज रतलाम



मेजर जनरल हिज् हाईनेस सर सज्जनसिंह जी C I E K.C S.I K C V O
महाराज साहेब रतलाम

सामाजिक जगत्

कच्छ मॉडवी के डाक्टर तुलसी दासजी दवा वाला पुराने आर्य समाजी और गुरुकुल प्रेमी थे। आप मरते समय ५५५१) गुरुकुल के लिये दान छोड़ गये थे। जो गुरुकुल को प्राप्त हो गये है। हम सब कुलवासी इस पवित्र दान के लिये दानी महोदय का हृदय से आभार मानते हैं। और परमपिता परमात्मा से उस दिवंगत आत्मा के लिये सद्गति की प्रार्थना करते हैं।

[illegible] जी
आचार्य गुरुकुल कांगडी

तेरह पन्थ सम्प्रदाय के आचार्य जी से भेंट—

गत अगस्त मास की १६ ता० को प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति सम्पादक 'सार्वदेशिक' कुछ मित्रो के निमन्त्रण पर श्री डूंगरगढ़ पहुचे और वहा ३ दिन तक ठहर कर उन्होंने जैन श्वेताम्बर तेरह पन्थ सम्प्रदाय के ख्याति प्राप्त योग्य विद्वान् आचार्य श्री तुलसीराम जी से धर्म, अहिंसा, परोपकार, दया, बालदीक्षा आदि विषयो पर प्रेम पूर्वक चर्चा की और एक भाषण सभा मे दिया। इस धार्मिक चर्चा के मुख्य अश 'सार्वदेशिक' के आगामी अक मे पाठको की सूचनार्थ प्रकाशित किये जाएगे।

ध० दे०

केन्द्रीय हिन्दी रक्षा समिति श्रद्धानन्द बाजार, देहली की ओर से हिन्दी रक्षा कार्य क विवरण, नवीन सुझाव, उर्दू हिन्दी का सघर्ष आदि विषयो का पूरा विवरण प्रति मास प्रकाशित होता है जो सज्जन 'प्रचार पत्र' तथा अन्य साहित्य वर्ष भर प्रति मास मगाना चाहे वे उक्त समिति के मन्त्री के पास १) डाक व्यय के लिये भेज दें।

निरजनलाल

सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समिति का प्रस्ताव

सब अधिकार श्री घनश्यामसिंह गुप्त को

नई दिल्ली, १४ अगस्त। आर्य सार्वदेशिक सभा की सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समिति ने अपनी १४ अगस्त की बैठक मे निम्न प्रस्ताव स्वीकृत किया है—

"११ अगस्त को 'ए० प्रे०' ने सिंध सरकार द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के १४वे समुल्लास पर लगायी नवीन पाबन्दी की जो खबर दी और सिंध के गृह मन्त्री मीर गुलाम अली ने १३ अगस्त के अपने वक्तव्य मे उसकी जो व्याख्या की उससे उत्पन्न स्थिति पर इस सभा ने विचार किया।

"सभा स्पष्ट घोषित कर देना चाहती है कि आर्यसमाज अपनी धर्म पुस्तको के सम्बन्ध मे किये जाने वाले किसी भी बाह्य हस्तक्षेप को सहन न कर सकेगा।

"सशोधित हुक्म मे निस्सन्देह इस दृष्टि से कुछ सुधार अवश्य हुआ है कि उसके अनुसार सिर्फ ५ भाषाओ के सत्यार्थप्रकाश पर पाबन्दी लगाई गई है, लेकिन इस हुक्म के कारण सिन्ध मे उक्त पुस्तक के आयात पर भी जो पाबन्दी लगा दी गई है, इससे स्थिति और बिगड जाती है।

"फिर गृह मन्त्री ने इसकी जो व्याख्या की है, वह हुक्म के शब्दो से ध्वनित नहीं होती। सिंध सरकार के अनेक जिम्मेदार व्यक्तियो ने भी इसका विरोध किया है फिर भी यदि यह व्याख्या ठीक हो तो संशोधित हुक्म से हालत और बिगड़ जाती है।

"दो परस्पर विरोधी व्याख्याओ को देखते हुए प्रधान ने सिंध के प्रधानमन्त्री से स्पष्टीकरण की माग पेश की। किन्तु अभी तक इसका कोई उत्तर नहीं आया। सिन्ध सरकार को शिकायत करने का मौका न मिले, इसलिए सभा फौरन ही कोई कार्यवाही न करेगी। सभा अपने प्रधान श्री घनश्यामसिंह गुप्त को सत्याग्रह शुरू करने तथा परिस्थिति के अनुसार और भी उचित कार्यवाही करने का अधिकार देती है, ताकि आर्यसमाज के धार्मिक अधिकारो व स्वाधीनता की रक्षा हो सके।"

श्री घनश्यामसिंह जी का वक्तव्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति के अध्यक्ष श्रीयुत माननीय घनश्याम सिह जी गुप्त ने प्रेस को निम्न वक्तव्य दिया है—

सिंध की सरकार ने अपनी ११ अगस्त १६४५ की घोषणा मे जो एसोसियेटिड प्रेस एजेन्सी ने प्रकाशित की है उन कारणो का उल्लेख किया है जिन के अधीन सत्यार्थप्रकाश पर प्रारम्भ मे प्रतिबन्ध लगाया गया था और यह प्रतिबन्ध जारी रक्खा गया था।

सशोधित घोषणा इस प्रकार है—

यह प्रकाशित किया जाता है कि सिन्ध की सरकार ने अत्यन्त असाधारण स्थिति में सत्यार्थप्रकाश के १४ वे समुल्लास का प्रकाशन और और मुद्रण वर्जित किया था जब कि उनके ध्यान मे यह बात लाई गई थी कि कुछ व्यक्तियो का इरादा सत्यार्थप्रकाश के १४ वे समुल्लास की सहस्रो प्रतिया छापकर मुस्लिम जनता मे मुफ्त वितरण करने का था।

इस सम्बन्ध मे मैं अविलम्ब कहू गा कि आर्य समाज ने ऐसा करने का कभी इरादा नहीं किया और न अब उसका ऐसा इरादा ही है। मैं तो कम से कम यही कह सकता हू कि सिन्ध सरकार का वक्तव्य अशुद्ध है। इसके अतिरिक्त यदि सिन्ध के होम मेम्बर ने अपनी १३ अगस्त की प्रेस प्रतिनिधियो की भेट मे सरकारी घोषणा की ठीक २ व्याख्या की है कि वर्तमान प्रतिबन्ध न केवल सत्यार्थप्रकाश के १४वें समुल्लास के पृथक् प्रकाशन पर है अपितु पूरे १४वें समुल्लास सहित समस्त ग्रन्थ पर है, तो सिन्ध सरकार का उपरिउल्लिखित असाधारण स्थिति का दावा बहाना मात्र रह जाता है। इस असाधारण स्थिति का अभिप्राय किसी व्यक्ति को धोखा देना अथवा अपने वास्तविक इरादो को छुपाना ही हो सकता है।

सरकारी घोषणा में आगे कहा गया है— किसी जाति के धार्मिक विश्वासो अथवा क्रिया कलापो मे हस्ताक्षेप करने की उनकी सरकार की इच्छा नहीं है। इसे स्पष्ट करने के लिये, वे भारत रक्षा विधान डी० आई० आर० की धारा ४१ के अधीन दी हुई आज्ञा को सुधार रहे है।

इस आज्ञा मे किस तरह सुधार हुआ है, यह देखना चाहिये। उन्होने न केवल कुछ सुनिश्चित भाषाओ मे ही जिन मे सिन्धी और उर्दू सम्मिलित है, प्रकाशन और मुद्रण निषिद्ध किया है वरन् सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास का सिन्ध प्रान्त मे आयात भी रोक दिया है।

होम मेम्बर की व्याख्या तो उनके इस दावे को कि किसी जाति के धार्मिक विश्वासो और क्रिया कलाप में हस्ताक्षेप करने की उनकी इच्छा नहीं है थोथा सिद्ध कर देती है यह एक सुप्रसिद्ध बात है कि सिन्ध के बहुसख्यक हिन्दू सिन्धी वा उर्दू जानते हैं और हिन्दी नहीं जानते। आर्य समाज इन लोगो मे भी बिना काट छाट किये सत्यार्थप्रकाश की प्रतिया वितीर्ण नहीं कर सकता। अत मुझे कहना चाहिये कि सरकारी घोषणा सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने और उसे जारी रखने के सिन्ध मन्त्री मडल के वास्तविक इरादे को छिपाती है। यह प्रतिबन्ध तो मुस्लिम लीग के प्रस्ताव के अनुसार लगाया गया था और लगाया गया है।

आर्य समाज के पवित्र ग्रन्थ पर लगा हुआ प्रतिबन्ध जो लगभग ७० वर्ष से जनता के सामने है और जिसका भारत की प्राय सब ही भाषाओ मे खूब प्रकाशन हो चुका है, धार्मिक निरपेक्षता के सिद्धान्त की अवहेलना करता है। भारत रक्षा विधान के अधीन प्रतिबन्ध का लगाना इस विधान का दुरुपयोग करना है। मुस्लिम लीग का यह दावा है कि अल्पमत वालो के हित विशेषतया उनका धर्म और सस्कृति उसके हाथ मे सुरक्षित रहेंगे। सीमित अधिकारो के मिलने पर यदि मुस्लिम लीगी मन्त्री मडलो को पूरे अधिकार प्राप्त हुये तो अल्प सख्यको की जो दशा होगी वह सिन्ध मे परिमित अधिकारो के मिलने पर आर्य समाज जैसे अल्प सख्यक समुदाय के विरुद्ध लगे प्रतिबन्ध से सुस्पष्ट है।

मैंने बार बार यह कहा है कि मुसलमान भाइयो से मेरा कोई झगडा नहीं है। मैं बल पूर्वक यह भी कहता हूँ कि मुस्लिम धर्म के प्रति मेरे हृदय मे निरादर के भाव नहीं हैं। वस्तुत मैं सब धर्मों का सम्मान करता हूँ। इस मामले मे ब्रिटिश सरकार से हमारा कोई झगडा नहीं है। काम रोको, प्रस्ताव पर असेम्बली में हुई बहस में भारत

सरकार के होम मेम्बर सर फ्रासिस मुडी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि इस मामले में भारतसरकार की कोई जिम्मेवारी नहीं है। केवल सिन्ध सरकार ही प्रतिबन्ध के लिये पूर्णतया जिम्मेवार है। सिन्ध के गवर्नर महोदय से मुझे विदित हुआ कि वे सत्यार्थप्रकाश के प्रतिबन्ध के विषय मे अपने मन्त्री मडल की कौंसिल के परामर्श के अनुसार ही कार्य करते हैं।

अत यह तो स्पष्ट और असदिग्ध है और हमे सचाई को आखो से ओझल भी नहीं करना चाहिये कि हमारी शिकायत हर हालत मे मुस्लिम मन्त्री मडल के विरुद्ध ही होनी चाहिये।

मैं सिन्ध के मन्त्रियो हिन्दू और मुस्लिम दोनो से मिला तथा सदस्यो तथा अन्यो से भी मिला। अब मैं आर्य जगत् के सामने यह बात खोल देना चाहता हूँ कि हमारी दीखने वाली सुस्ती का कारण यह था कि प्रतिबन्ध के शीघ्र उठाये जाने की हम से प्रतिज्ञा की गई थी। अत जब तक वे अधिकारी जिन्होने प्रतिज्ञा की थी उचित समय पर उन प्रतिज्ञाओ को पूरा करने की व्यवस्था न करलें तब तक हमें प्रतीक्षा करनी ही थी यद्यपि ऐसा करते हुये हम आर्य जनता को अधीर बना रहे थे। मुझे यह कहते अत्यन्त दु ख है कि उन्हा ने अब तक अपनी प्रतिज्ञाओ को पूरा नहीं किया। पत्र व्यवहार और प्रार्थना आदि की रीति साधारणतया न्याय प्राप्ति मे सफल न हुई। जहा तक हो सके मैं सघर्ष को टालने के लिये उत्सुक हूँ परन्तु मुझे स्वीकार करना चाहिये कि अब मुझे अधिक आशा नहीं देख पडती और अपने धार्मिक अधिकारो के रक्षण के लिये आर्य समाज को पुन कष्ट और बलिदान के परीक्षण मे से गुजरना हो सकता है।

वस्तुत इस प्रश्न से समस्त धर्मों की मौलिक स्वतन्त्रता पर प्रभाव पडता है। मुझे पूर्णाशा है कि आर्य समाज को जाति, सम्प्रदाय और धर्म के भेद भाव के बिना सब की सहानुभूति और सहायता प्राप्त होगी।

जन्म परक जाति भेद और उसके दूर करने के उपाय

(लेखक—श्री पं० गंगा प्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ जज)

गत आर्य सम्मेलन पर जो देहली मे १६,२० तथा २१ फरवरी १६४४ को हुआ था एक निम्न-लिखित महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था।

यतः जन्म मूलक जाति पाति प्रथा हिन्दू जाति की एकता को नष्ट करके हिन्दू जानि के अधः पतन का मुख्य कारण रही है और वह अनेक मामाजिक सुधारो विशेष कर शुद्धि कार्य और अस्पृश्यता के निवारण मे बाधक रही है अतः—

१ यह सम्मेलन समस्त आर्य तथा हिन्दू जाति को प्रेरणा करता है कि वे इसके मूलोच्छेद के लिये समस्त सम्भव उपायो को कार्य में लाये।

२. यह सम्मेलन सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा तथा समस्त प्रान्तीय सभाओ को प्रेरणा करता है कि वे क्रियात्मक रूप से जातिपाति के भाव को मिटाने के लिये उचित योजना बना कर विश्व-विद्यालयो कालेजो और जन साधारण मे इसके विरुद्ध सुव्यवस्थित रूप मे प्रचार करे और आर्य विवाह ऐक्ट को उपयोग मे लाकर जात पात का विचार किये बिना गुणकर्मानुसार विवाहो को प्रोत्साहित करें।"

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ता० २४-३-४४ ई० की अन्तरंग सभा मे यह निश्चय हुआ।

'निश्चय हुआ कि इस सम्बन्ध मे निश्चित योजना बनाने और उसे कार्य मे लाने के लिये निम्न महानुभावो की एक उपसमिति बनाई जाये:—

१ श्री प्रधान जी सार्वदेशिक सभा २. श्री-युक्त राजा ज्वाला प्रसाद जी।

३ श्री प्रो० धर्मेन्द्र नाथ जी शास्त्री।

निज अधिकार के अनुसार श्री प्रधान जी ने निम्न महानुभावो को इस उपसमिति मे और लिया।

१ श्री पं० मदन मोहन जी विद्यासागर वेदालकार।

२ श्री साधु शिव प्रशाद जी प्रचारक माला-बार।

३ श्री प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री

इस वर्ष भी ता. १६-४-४५ को अतरंग सभा ने इस कार्य के लिये एक नई जन्म मूलक जात पात विच्छेदनी उप सभा नियत की जिसका संयोजक मैं नियत हुआ। इस उपसमिति की ओर से एक ड्राफ्ट योजना सम्मति के लिये सदस्यो के पास भेजी गई जिसका साराश नीचे दिया जाता है।

'यह समिति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे कार्य करेगी परन्तु अन्यथा अपने काम मे स्वतन्त्र होगी। समिति के प्रधान को प्रति वर्ष सार्वदेशिक सभा नियत करेगी। इसकी शाखायें बड़े नगरो में तथा सब प्रान्तो में स्थापित होंगी जो प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओकी अध्यक्षतामे कार्य करेंगी। समिति और उसकी प्रत्येक शाखा मे ३ रजिस्टर रहेंगे (१) जो जात पॉत का विचार छोड कर विवाह करना स्वीकार करें और सहायक कहलायेंगे (२) उनका जिन्होंने जात पॉत तोड कर विवाह किया हो।

(३) ऐसे युवकों का जो इस प्रकार विवाह करने का व्रत लेवें। समिति आर्य कुमार परिषद् तथा आर्य वीर दल से सहयोग करके यत्न करेगी कि आर्य कुमार और आर्य वीर ऐसे व्रत धारण करें और उनमे लिखित व्रत पत्र लेवेगी। प्रत्येक शाखा निकटस्थ गुरुकुलो, महाविद्यालय व कालेजो के छात्रो से ऐसी प्रतिज्ञा करावेगी। समिति के सदस्य वे होगे जो नित्य सध्या व अग्निहोत्र करे और सदाचारी हो। उनका कर्तव्य होगा कि अपना वा अपने सन्तान के अन्तर्जातीय विवाह करे। जो सदस्य उच्च जाति का होकर दलित जाति की वा शुद्ध हुई कन्या से विवाह करे उसको विशेष मान की दृष्टि से देखा जायेगा। समिति का एक मन्त्री होगा जो प्रचार का काम भी करेगा। इन उद्देश्यो की पूर्ति के लिए पुस्तक वा पुस्तिकाये प्रकाशित की जायेगी।'

कुछ समय हुआ ऊपर लिखे उद्देश्यो के साथ आर्य परिवार सघ की एक प्रस्तावित योजना बारह सज्जनो के नाम से जिन मे श्री म० खुशहाल चन्द्र जी 'आनन्द' प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पजाब, प० महेन्द्र प्रतापजी शास्त्री, भू पू मत्री आर्य प्रतिनिधि सभा सयुक्त प्रान्त, प्रो० तारा चन्द्र जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा सिन्ध के भी नाम है, प्रकाशित हुई। इसके प्रकाशक मा० बृजलाल जी उपमन्त्री प्राकृतिक चिकित्सक सघ अजमेर है।

इस प्रस्तावित योजना के अनुसार उसके सदस्य केवल वे हो सकेंगे जो आर्य समाज के दस नियमो तथा ५१ सिद्धान्तो को जिनका वर्णन ऋषि दयानन्द ने स्वमन्तव्य प्रकाश मे किया है मानते हो। हमारी समिति की योजनाके अनुसार वे सब सज्जन सदस्य हो सकेंगे जो नित्य सन्ध्या अग्निहोत्र करें तथा सदाचार का जीवन व्यतीत करें चाहे वे आर्य समाज के सभासद न हो और दशो नियमो को मानना भी स्वीकार न करे। इसका अभिप्राय यह सोचा गया है कि समिति का कार्यक्षेत्र अधिक विस्तृत रहे।

आर्य परिवार सघ की योजना मे सदस्यो के रजिस्टर के अतिरिक्त चार और रजिस्टर सदस्यो के विवाह योग्य लडको और कन्याओ के और विवाह योग्य विधुर तथा विधवाओ के रखने का भी विधान है। ये रजिस्टर निस्सदेह उपयोगी होगे। उक्त योजना मे ये भी विधान है कि जो सज्जन अपनी पुत्री वा पुत्र का सम्बन्ध करना चाहेगा सूचना आजाने पर सघ से कन्या व वर की योग्यता क अनुसार दश वरो क व दश कन्याओ के नाम भेजे जावेंगे जिससे कि सरक्षक उनसे पत्र व्यवहार कर सके और जो कोई सघ के द्वारा ही अपने पुत्र वा पुत्री का सम्बन्ध करना चाहेगा यथा शक्ति सघ उसका भी प्रयत्न करेगा। ये बाते भी उपयोगी है।

दोनो योजनाओ का एक सा उद्देश्य होने के कारण मैने २८।६।४५ को एक पत्र अन्य परिवार सघ के सब प्रस्तावको के नाम अपनी योजना की नकल के साथ इस भाव से भिजवाया और इस विषय पर सम्मति माँगी कि दोनो योजनाओ मे कैसे क्या सशोधन वा परिवर्तन किये जावे जिससे एक ही सस्था द्वारा दोनो के उद्देश्यो की पूर्ति हो जावे। मै इस लेख को इस अभिप्राय से प्रकाशित करता हूँ कि इस समिति के सदस्यो और उक्त सघ की योजना के प्रस्तावको के सिवाय अन्य आर्य सज्जन, विद्वान् और

नेता भी पूर्वोक्त प्रश्न पर अपनी सम्मति "आर्य मित्र" लखनऊ वा "आर्य" लाहौर मे लेख द्वारा अथवा सीधा पत्र द्वारा मुझ को लिख कर प्रकट करने की कृपा करे। कार्य बडे महत्व का है। श्री नारायण स्वामी आश्रम की जयन्ती महोत्सव के अवसर पर जो ३ जून से १० जून १६४५ तक रामगढ, नैनीताल, मे मनाई गई, आर्य परिवार सघ योजना के प्रथम प्रस्तावक श्री म० खुशहाल चन्द्र जी भी पधार थे और उनसे मैने इस विषय पर वार्तालाप और विचार विनियम भी किया। उन्होने भी दोनो योजनाओ के एकीकरण और एक अखिल भारतीय सस्था के द्वारा दोनो के उद्देश्यो की पूर्ति के विचार से सहमति प्रकट की थी।

मेरा विचार है कि सार्वदेशिक आर्य प्रति निधि सभा देहली की अन्तरग सभा तिथि १६।६।४५ के अवसर पर देहली मे इस समिति की बैठक पूर्वोक्त विषय पर विचार पूर्वक निश्चय करने के लिये की जावे। उसमे आर्य परिवार सघ की योजना के प्रस्तावक महोदयो को भी निमन्त्रित किया जावेगा।

इस लेख के लिखे जाने के पश्चात् प० धर्मेन्द्र शास्त्री जी एम० ए० की जो इस समिति के उप सयोजक हैं प्रस्तावित नियमावली प्राप्त हुई है। आशा है कि अन्य सदस्य और आर्य परिवार सघ के प्रस्तविक महोदय तथा अन्य आर्य सज्जन भी अपने विचार शीघ्र भेजेंगे जिससे वे सब आगामी बैठक मे रखे जायें और पूर्ण विचार हो कर एक उत्तम योजना तैयार की जा सके।

Dr. Rajender Prasad ji on Sind Ban on the Satyarth Prakash

"I wonder if this ban on a religious book which has remained in circulation for seventy years or more and which is not banned elsewhere in any other part of the world is a foretaste of the kind of freedom which the All India Muslim League would impose upon non Muslims wherever it can", writes Doctor Rajendra Prasad, member of the working committee of the Congress, in reply to a letter written to him by Shri S. Chandra, Assistant Secretary, All-India Satyarth Prakash Defence Committee of the International Aryan League Dr Rajendra Prasad has permitted to release his letter to the press The following is the full text of the letter —

"I have received your letter and the copy of the statement of Shri Ghanshyam Singh Gupta and also the copy of the resolution of the Satyarth Prakash Defence Committee

When I first read the head line in the newspapers, I thought

that a way had been found and some settlement had been reached about the ban imposed by the Sind Government on the Satyarth Prakash But a perusal of the Government communique made it clear that the observance of the modified order of the Government would successfully keep out not only extracts from the Satyarth Prakash but the whole book from the Province in languages which can be read and understood by the people there it therefore leaves the question where it was

It appears from Shri Ghanshyam Singh Gupta s statement that he has been considerate and trying to get the matter settled but the League Ministry has to act according to the resolution of the Muslim League and it has therefore somehow or other to maintain the ban

I consider the banning of any religious book as an encroachment *on the religious right of the people* which should be resisted not only by the people whose book is banned, but even by others, who would not regard the book as their own but who maintain that every religion has a right to propagate itself It would be well if some one collects parallel passages from other religious books which are similar in content to those of the banned book and thus show the futility and injustice of banning some and allowing a free propagation of others

I wonder if this ban on a religious book which has remained in circulation for seventy years or more and which is not banned elsewhere in any other part of the world is a foretaste of the kind of freedom which the All India Muslim League would impose upon Non Muslims wherever it can I still hope that the country would be spared a wide spread agitation which as you are contemplating may assume the form of Satyagrah I will ask you all to work with patience and not to take any decisive step before all avenues of settlement have been *tried and exhausted ?*

S Chandra
~~Secretary~~ All India Satyarth Prakash
Defence Committee
Balidan Bhawan,
Delhi

Sjt. Shri Prakash M.L.A. on the Sind Ban

"Swami Dayanand, the founder of the Aryasamaj, burning with the zeal of reforming society, spared no one, and he always expressed himself most vehemently His great work, the Satyarth Prakash, regarded by his followers the Arya Samajists as their scripture, has been in existence over three quarters of a century, and there can be no reason to try to ban it now and create a situation that might be difficult to handle', declared Shriyut Shri Prakash, M L A (Central) in a signed statement made to Shri S Chandra, Assistant Secretary, All India Satyarth Prakash Defence Committee of the International Aryan League, who interviewed him in connection with the Sind Government's ban on the 14th Chapter of the Satyarth Prakash

Shriyut Shri Prakash further stated "When people feel strongly they express themselves strongly, and religion is one of the subjects on which people have felt most strongly through the ages That is how religious controversies have been most acrimonious As a man of peac I am always anxious, on grounds of general principles, that we should avoid words and deeds that hurt others, but that can be no reason why others should be barred from expressing their opinions I doubt if any religious book can, after scrutiny, be regarded as free of the objections of the type made against the Satyarth Prakash We would have to bar, for instance such of the literature of the Christian missionaries in India, if once we start on such lines This would entail most unwarranted inroad on the civil liberties of the people, and, in a way, make even legitimate discussions of problems that touch the heart, impossible Without venturing on any opinion on the contents of the Satyarth Prakash, I am bound to say that an attempt to ban it or any part of it is most improper and if members of the Arya Samaj feel aggrieved, they are perfectly justified I earnestly hope wise counsels will prevail and that the ban will be removed

S Chandra, ~~Secretary~~
All India Satyarth Prakash
Defence Committee,
Balidan Bhawan,
Delhi



वर्तमान युद्ध का अन्त और विश्वशान्तिः—

जर्मनी के पश्चात् जापान के आत्मसमर्पण से वर्तमान विश्व युद्ध का अन्त हुआ कहा जा सकता है किन्तु यह समझना अशुद्ध होगा कि इस युद्ध की समाप्ति से विश्व में शान्ति का राज्य स्थापित हो गया है अथवा उसके शीघ्र स्थापित होने की कोई सम्भावना प्रतीत होती है। जिन बडे राष्ट्रो ने मित्र बन कर जर्मनी और जापान को आत्म समर्पण के लिये बाधित किया है। उनमे भी परस्पर वैमनस्य के लक्षण अभी से दृष्टिगोचर हो रहे हैं जिनके उत्तरोत्तर बढ़ने और उसके परिणामस्वरूप तीसरे अतिभयङ्कर विश्व युद्ध होने की प्रबल सम्भावना हो सकती है। सयुक्त-राष्ट्रो का जो घोषणा पत्र सनफ्रासिस्को मे तय्यार किया गया वह कुछ अंशो मे प्रशंसनीय होते हुए भी पर्याप्त त्रुटिपूर्ण है और केवल उसके आधार पर विश्वशान्ति स्थापित नहीं हो सकती। विश्वबन्धुत्व, समानता और स्वतन्त्रता के वैदिक आदर्शों का जगत् में जितना प्रचार किया जाएगा और उनको क्रियात्मकरूप देने का जितना अधिक प्रयत्न किया जाएगा विश्वशान्ति उतनी ही मात्रा मे स्थापित हो सकेगी।

इय या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता।
ययैव ससृजे घोर तयैव शान्तिरस्तु न.॥

इद यत्परमेष्ठिन मनो वा ब्रह्मसंशितम्।
येनैवससृजे घोर तेनैव शान्तिरस्तु न॥

इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मन षष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि। यैरेव ससृजे घोर तैरेव शान्तिरस्तु न॥

इत्यादि वेदमन्त्रो में वाणी, मन और इन्द्रियो के शुद्ध ज्ञान द्वारा पवित्र किये जाने पर शान्ति प्राप्त हो सकती है अन्यथा ये घोर अनर्थ का कारण बन जाते हैं ऐसा जो उपदेश किया गया है वह प्रत्येक शान्ति प्रेमी विचारशील सज्जन के लिये अत्यन्त माननीय है।

वैदिक सभ्यता और उसके आदर्शों की सर्वोच्चता को स्वीकार करते हुए आयर्लैंड के सुप्रसिद्ध विद्वान् और कवि डा० जेम्स कज़िन्स ने (जिन्होने इन वैदिक आदर्शों से प्रभावित हो कर अब अपना नाम कुलपति जयराम रख लिया है) अपने Path to Peace अथवा 'शान्ति का मार्ग' नामक ग्रन्थ में ठीक ही लिखा था कि—

"Such an ideal civilisation is that of the Vedic India, and it is because it holds for humanity indications towards salvation, that Europe today in her search for a saner and surer attitude to life and humanity than that which has

brought her to the brink of ruin, is turning towards India"

(Path to Peace P 43)

अर्थात् ऐसी आदर्श सभ्यता वैदिक भारत की है और क्योंकि इसके अन्दर मनुष्यमात्र के लिये मुक्ति के निर्देश हैं यही कारण है कि यूरोप आज जीवन और मानवजाति के प्रति उससे अधिक बुद्धिसगत और निश्चित दृष्टिकोण के लिये जो उसके विनाश का कारण बना है खोज करते हुए भारत की ओर देख रहा है।

उस वैदिक आदर्श की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हुए इस विश्व विख्यात लेखक ने आगे लिखा है कि—

'On this Vedic ideal alone, with its inclusiveness which absorbs and annihilates the causes of antagonism, its sympathy which wins hatred away from itself, is it possible to rear a new earth in the image and likeness of the eternal Heavens'

(Path to Peace P 60)

अर्थात् इस वैदिक आदर्श पर ही जो अत्यन्त व्यापक होने के कारण विरोध के कारणों को नष्ट करता है, और जो सहानुभूति की भावना उत्पन्न करके घृणा को दूर भगा देता है यह सम्भव है कि नये जगत् को स्वर्ग समान बनाया जा सके।

आवश्यकता इस बात की है कि स्वयं भारतीय इन पवित्र वैदिक आदर्शों को समझते हुए क्रियात्मकरूप दें और सन्तप्त जगत् को शान्ति का सन्देश देते हुए विश्वशान्ति की स्थापना में सहायक हो। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को आदर्श मानने वाले वेदानुयायी आर्यों का उत्तरदायित्व इस विषय मे सबसे अधिक है यह लिखने की आवश्यकता नहीं।

हिन्दी-हिन्दुस्तानी विवाद—

महात्मा गाधी जी का हिन्दी साहित्य-सम्मेलन से त्याग पत्र—

हिन्दी हिन्दुस्तानी प्रश्न के विषय मे हम अपने विचार इन स्तम्भो मे कई वार प्रकाशित कर चुके हैं किन्तु गत मास महात्मा गान्धी जी के हिन्दी-साहित्य सम्मेलन से (जिसके साथ गत २७ वर्षों से उनका सम्बन्ध रहा है और जिसके दो वार वे सभापति बन चुके हैं) त्यागपत्र ने इस विषय को प्रमुख चर्चा का विषय बना दिया है। महात्मा गाधी जी का माननीय श्री पुरुषोत्तम दास जी टन्डन से जो पत्र-व्यवहार इसके सम्बन्ध में पत्रों में प्रकाशित हुआ है। उसको ध्यानपूर्वक पढ़ने के पश्चात् हम इस परिणाम पर पहुचे हैं कि महात्मा जी की वर्तमान विचार धारा हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा स्वीकृत नीति तथा कार्य प्रणाली से पर्याप्त भिन्न है अत उनका त्याग पत्र खेदजनक होते हुए भी अनिवार्य सा हो गया था, इस विषयक ता २८ ५ ४५ के पत्र में महात्मा गाधी जी ने महाबलेश्वर से लिखा था कि 'गुजराती सब पूछते हैं कि मैं कैसे हिन्दी-साहित्य सम्मेलन में रह सकता हूँ और हिन्दुस्तानी सभा में भी ? वे कहते हैं सम्मेलन की दृष्टि से हिन्दी ही राष्ट्र भाषा हो सकती है जिसमें नागरी लिपि को ही राष्ट्रीय स्थान दिया जाता है जब मेरी दृष्टि मे नागरी और उर्दू लिपि को स्थान दिया जाता है और जो न फारसी है न संस्कृतमयी है। जब मैं सम्मेलन की भाषा और नागरी लिपि को पूरा

राष्ट्रीय स्थान नहीं देता हूँ तब मुझे सम्मेलन से हट जाना चाहिये ऐसी दलील मुझे योग्य लगती है।"

माननीय पुरुषोत्तमदास जी ने महात्मा जी का समाधान करते और यह इच्छा प्रकट करते हुए भी कि वे हिन्दी साहित्य-सम्मेलन से पृथक् न हो यह स्पष्ट लिखा कि 'मैं आपके इस विचार से कि प्रत्येक देशवासी हिन्दी और उर्दू दोनो सीखे सहमत नहीं हो पाता। मेरी बुद्धि स्वीकार नहीं करती कि आपका यह नया कार्यक्रम व्यावहारिक है। मुझ तो दिखाई देता है कि बगाली गुजराती, मराठी, उडिया आदि बोलने वाले इस कार्यक्रम को स्वीकार न करेंगे इत्यादि।

हम इस विषय मे माननीय पुरुषोत्तम दास जी के विचारो से पूर्णत । सहमत है। हमारा निश्चित और अनुभवसिद्ध विचार है कि हमार देश की राष्ट्र भाषा सस्कृतनिष्ठ हिन्दी ही हो सकती है। हिन्दुस्तानी के नाम उर्दू का प्रचार (जैसे कि प्राय देखने म आ रहा है) हमे राष्ट्रीय हित की दृष्टि से भी सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है। गुजराती, मराठी बगाली, उडिया कन्नडी तिलगू, मलयालम, तामिल आदि हमारे देश की सभी भाषाओ का सस्कृत से विशेष सम्बन्ध है और इसलिए सस्कृत निष्ठ हिन्दी (जिसे स्वनाम धन्य महर्षि दयानन्द जी आर्य भाषा के नाम से सदा स्मरण करते थे) ही राष्ट्र भाषा बन सकती है इसमे हमे जरा सन्देह का कारण नहीं प्रतीत होता। देवनागरी लिपि अत्यन्त वैज्ञानिक और पूर्ण लिपि होने के अतिरिक्त गुरुमुखी, गुजराती मराठी, बगाली, आदि अनेक प्रान्तीय भाषाओ की लिपियो से विशेष समानता रखती है अत अधिकतर देशवासी उसे सुगमता से अपना सकते है उर्दू भाषा और लिपि के सम्बन्ध मे यह बात नहीं है। कोई मनुष्य कितनी ही भाषाओ को सीखे इसमे कोई आक्षेप की बात नहीं किन्तु यह कहना कि प्रत्येक भारतीय हिन्दी उर्दू दोनो भाषाओ और देवनागरी तथा उर्दू लिपियो को (अपनी प्रान्तीय भाषाओ तथा अग्रेजी के अतिरिक्त) अवश्य सीखे अव्यवहार्य तथा अनावश्यक है। इस का एक यह परिणाम भी सम्भव है कि हिन्दू इन दोनो भाषाओ को सीखने का निश्चय करले जब कि मुसलमानो मे से सम्भवत हजार म से एक भी हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि को न अपनाए और कुछ वर्षों क पश्चात् उर्दू के पक्षपातियो की ओर से यह दावा किया जाए कि उसको जानने वालो की सख्या बहुत अधिक है। इन सब बातो को ध्यान मे रखते हुए हम सब भारतीयो विशेषत आर्य हिन्दुओ से यही निवेदन करते है कि वे राष्ट्र भाषा के रूप मे सस्कृत निष्ठ हिन्दी और देवनागरी लिपि को पूर्णतया अपनाये और इस क अधिकारो की रक्षार्थ हमें पूर्ण क्रियात्मक सहयोग प्रदान करें। खेद है कि अभी तक सब आर्यों ने भी अपने इस कर्तव्य के पालन की ओर यथोचित ध्यान नहीं दिया। आर्यों को अपना समस्त पत्र व्यवहार तथा अन्य कार्य स्वाभ आर्य भाषा मे ही करना चाहिए तभी हम डाक तथा रेडियो विभाग आदि की हिन्दी विरोधिनी नीति का मुह तोड उत्तर दे सकेंगे अन्यथा नही।

महाराज रतलाम का अनुकरणीय कार्य:—

जैसे कि पाठक महोदय इसी अङ्क मे अन्यत्र पढ चुक होंग कि रतलाम के महाराजा सर सज्जनसिंह जी ने आर्य समाज मन्दिर के निर्माण मे १०००) रियासत से दिलवाने की

कृपा की है। इस विषयक रियासत से प्रकाशित आदेश मे कहा गया है कि श्री जी हुजूर साहेब बहादुर जी ने आर्य समाज के डेपुटेशन से मुलाकात कर और निहायत खुश होकर हुक्म फरमाया कि यह एक धार्मिक सस्था है और नेक काम के लिये चन्दा किया जा रहा है इसलिये आर्यसमाज के भवन तामीर के वास्ते रियासत से १०००) रु० बतौर इमदाद के दिये जायें।

महाराज रतलाम का यह कार्य न केवल प्रशसनीय बल्कि अनुकरणीय है। अन्य हिन्दू राजे महाराजे भी यदि इसी प्रकार उत्तम धार्मिक सामाजिक संस्थाओ की सहायता रियासतो से दिलाया करें तो उन का कार्य भली भाँति चल निकले तथा जनता को उन से अधिक लाभ पहुच सके। हम इस कार्यार्थ महाराज रतलाम का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं तथा आशा करते है कि आर्य समाज पर उनकी ऐसी ही स्नेह दृष्टि बनी रहेगी।

एक सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् का खेद जनक देहावसानः—

पाठको को यह जान कर अत्यन्त दुःख होगा कि आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान तथा व्याख्याता शास्त्रार्थ महारथी श्री प० व्यासदेव जी शास्त्री M. A LL B. का गत २६ अगस्त को प्रात. क्षयरोग औषधालय देहली मे देहावसान हो गया है। आप अपनी योग्यता वक्तृता शक्ति और शास्त्रार्थ-निपुणता के कारण आर्य जगत् मे अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुके थे और आर्य युवक सङ्घ देहली के प्रधान थे। आप जैसे शास्त्रार्थ महारथी विद्वान् के लगभग ४५ वर्ष की आयु मे देहावसान से आर्य समाज को बड़ी क्षति पहुंची है। हम स्वर्गीय आत्मा की सद् गति के लिये भगवान् से प्रार्थना करते हुये उन के शोक सन्तप्त परिवार के साथ समस्त आर्य जगत् की ओर से समवेदना प्रकाशित करते हैं।

एक जगद्विख्यात देशभक्त और समाजप्रेमी का आकस्मिक निधनः—

जापानी रेडियो द्वारा प्रसारित इस समाचार को जानकर सभी स्वतन्त्रता प्रेमियो को दुःख हुआ होगा कि जगद्विख्यात देशभक्त श्री सुभाषचन्द्र बोस भू० पू० प्रधान राष्ट्रीय महासभा (काग्रेस) का गत १८ अगस्त को हवाई दुर्घटना के बाद देहावसान हो गया है। श्री सुभाषचन्द्र के राजनैतिक विचारो और कार्यक्रम से मतभेद रखते हुए भी कोई इससे इन्कार नहीं कर सकता कि वे एक उग्र देशभक्त थे और देश को स्वतन्त्र कराने की प्रबल आतुरता उनके हृदय मे विद्यमान थी तथा इसी से प्रेरित होकर वे अपने विचारानुसार कार्य करने मे दिन रात तत्पर थे। राष्ट्र सेवा के कारण ही उन्होने बड़े २ त्याग किये थे और अनेक भयङ्कर कष्टो को सहर्ष सहन किया था यद्यपि इन यातनाओ का उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा था। देशभक्त और स्वतन्त्रता के प्रबल प्रेमी होने के अतिरिक्त श्री सुभाषचन्द्र बोस ऋषि दयानन्द के बड़े भक्त और आर्यसमाज के विशेष प्रमी भी थे। दिसम्बर १९२३ मे आयसमाज विषयक एक अंग्रेजी लेख Vedic magazine के लिये लिखते हुये उन्होने लिखा था कि

'Swami Dayanand Saraswati is certainly one of the most powerful personalities who have shaped modern India and are responsible for its moral regeneration and religious revival. His Arya Samaj is

clearly and un-questionably one of the most potent factors in re-building, reforming and regenerating the institutions of Hindu India."

Interacity, capacity for organised work, intensity and compactness, Arya Samaj is second to none"

"May the Arya Samaj which Swami Dayanand founded be ever worthy of him and may it be an instrument for the social, economic, political and spiritual salvation of the India we all love so deeply,'

भावार्थ यह कि "स्वामी दयानन्द जी निसन्देह उन अत्यन्त शक्तिशाली महानुभावो मे से है जिन्होने वर्तमान भारत का निर्माण किया है और जो इसके नैतिक उद्धार और धार्मिक सुधार के लिये उत्तरदायी है। उन के द्वारा स्थापित आर्य समाज स्पष्टतया और निस्सन्देह हिन्दू भारत की संस्थाओ को सुधारने और प्रबल बनाने मे सब से अधिक बलशाली साधनो मे से एक है। आर्य-समाज अपनी दृढ़ता, संगठित कार्य की योग्यता, गम्भीरता और संगठनशक्ति मे किसी से भी कम नहीं है।"

ईश्वर करे स्वामी दयानन्द जी द्वारा प्रवर्तित आर्यसमाज उनके योग्य बने और जिस भारत से हम सब अत्यधिक प्रेम करते है वह उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और आध्यात्मिक मुक्ति का साधन बने।

श्री सुभाषचन्द्र बोस जी के उद्गार उनके समाज प्रेम और समाज के आदर्श विषयक उनकी उच्च भावना को स्पष्टतया सूचित करते हैं। ऐसे महापुरुष का जगत् से उठ जाना सबके लिए शोक जनक है। ध० दे०

सार्वदेशिक परिवार से

सार्वदेशिक पत्र न मिलने अथवा विलम्ब से मिलने की आज दिन सभा कार्यालय में शिकायतें आती रहती हैं। किन्हीं २ महानुभावों को दो दो तीन तीन मास के अङ्को के मिलने की शिकायत रहती है। किसी किसी पत्र मे इन शिकायतो का कारण कार्यालय की असावधानता अव्यवस्था और अकर्मण्यता लिखी आती हैं। इन सब शिकायतो का व्यक्तिगत रूप मे सभा कार्यालय से उत्तर दिया जाता है। फिर भी सार्व-देशिक परिवार की सूचना के लिये इस विज्ञप्ति का प्रकाशन आवश्यक हो गया है।

कई वर्ष हुये जब अंग्रजी भाषा मे पतो की चिटें व्यवहार मे आती थी। इस पर यह आपत्ति की गई कि सभा के मुख-पत्र के पतों मे अंग्रेजी भाषा का व्यवहार नहीं होना चाहिये। यह आपत्ति युक्ति युक्त थी अत. पतो की चिटें हिन्दी भाषा मे छपवा दी गई। और इस समय तक यह परि-वर्तन पूर्णतया कार्य म आ रहा है।

लगभग एक वर्ष से डाक विभाग की उद्घोषित नीति के अनुसार तो नहीं वरन् व्यवहार मे लाई जाने वाली हिन्दी विरोधिनी नीति के अनुसार उन पत्रा आदि को मृत-पत्र कायालय म भेज दिया जाता है जिन पर पहुंचने का स्थान (Destination) हिन्दी भाषा मे लिखा होता है और वे पत्र वहाँ से पहुंचने के स्थानो पर भेजे जाते हे। जिसके फलस्वरूप या तो पत्र मार्ग मे गुम हो जाते हैं अथवा नियत स्थान पर देर में

पहुंचते हैं। सार्वदेशिक पत्र इस नीति का शिकार बनने से नहीं बच सका है। इन दिनो पत्र के विलम्ब से पहुंचने वा गुम हो जाने का मुख्य कारण यही है। जहाँ तक सभा कार्यालय का सम्बन्ध है, यहाँ से पूरी जाँच और पड़ताल के पश्चात् ही पत्र भेजा जाता है:- ग्राहकों को भी पत्र की प्राप्ति (Delivery) लेने का डाकखाने से समुचित प्रबन्ध करना चाहिये। कई बार ऐसा भी हो जाता है कि कोई अन्य व्यक्ति बीच में से ही पत्र को उड़ा लेता है।

आशा है इस विज्ञप्ति के प्रकाशन से पत्र के गुम हो जाने वा विलम्ब से पहुंचने के संभावित मुख्य कारण सार्वदेशिक परिवार को विदित हो जायेंगे। हम जहाँ इस हिन्दी विरोधिनी नीति के निराकरण का यत्न कर रहे हैं वहाँ हम यह यत्न भी कर रहे है कि पत्र समय पर सब ग्राहकों को मिल जाय।

जिन ग्राहकों के पत्र मृतकार्यालयो से हो कर आये उन्हें वे चिटें सभाकार्यालय मे भेज देनी चाहिये।

—व्यवस्थापक

दान सूची सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

सत्यार्थ प्रकाश निधि

मास जुलाई सन् ४५ ई०

संयुक्त-प्रान्त

५) आ० स० गंगा गढ़ (पहासू) बुलन्दशहर
५) श्री जुगल किशोरजी अमरोहा
१३४७६–)॥ गत योग
१३४८६–)॥ योग

सिन्ध प्रान्त

१४३६५।) योग

बम्बई प्रान्त

३८८) आ० स० मानकोठारोड भावनगर
१३०) आ० स० ८ कामठीपुरा बम्बई ८
६८९६॥।) गत योग
७४१४॥।)

बिहार प्रान्त

५००) आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार
५) आ० स० गया (पटना)
५५१२॥।≡) गत योग
६०१७॥।≡) योग

पंजाब व देहली प्रान्त

१००) आ० स० हनुमान रोड नई देहली
६०) आ० स० पसुआ (होशियारपुर)
१०) श्री आर० सी० लाहौर
४६९६।≡)
४८६६।≡)

बंगाल

३९११) योग

राजस्थान

११६।≈) आ० स० फुलेरा
२) श्री बा० सुन्दर लाल जी अजमेर
५०) आर्य समाज टमकौर (जयपुर)
२०७३॥) गत योग
२२४४॥।≈) योग

मध्य प्रदेश

५) श्री बलिराम जी परतवाड़ा (एलिचपुर)
५) श्री भवदेव जी त्रिपाठी (अकोला)
१५॥।) आ० स० बिलास पुर
२१) आ० स० अथरौटा जि० एलिचपुर अमरावती
१२०८॥) गत योग
१२५५।) योग

हैदराबाद

५) आ० स० औरंगाबाद
४१८।) गत योग
४२३।) योग

मद्रास

५) श्री पं० नारायण देव जी सिद्धान्त भूषण श्रद्धानन्द हिन्दी महाविद्यालय कोटायम (ट्रावनकोर)
१०) आ० स० कार्कल
४६३॥) गत योग
४७८॥) योग

विदेश

१००) आ० स० किसूम कीनिया कोलोनी
१६६९) गत योग
१७६९) योग

विविध

९)
४१४४) गत योग
४१५३) योग
६०२६६॥≡)॥ सर्व योग

पुनर्विवाह

सतना आर्य समाज की तरफ से पं० मथुराप्रसाद दीक्षित का पुनर्विवाह श्रीमती श्यामबाई सिबराजपुर पन्ना स्टेट के साथ ता० २५-८-४५ को पं० बुद्धदेव पांडे शास्त्री मास्टर डी० ए० वी० हाई स्कूल इलाहाबाद द्वारा किया गया। उपस्थित हुए वर्ग के महाजन तथा साधारण जनता ३०० के थी, स्त्रियां भी काफी तादाद में शामिल हुई थीं, ब्याह की व्याख्या जिस वक्त हुई स्त्री तथा पुरुष अह्लाद में निमग्न हो गये। समस्त कार्यवाही पूर्ण वैदिक रीति अनुसार हुई। इस प्रान्त मे यह पहिला ही विवाह है, जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। विवाह के बाद आये हुए दर्शकों को मिठाई बांटी गई। उपस्थित जनता ने वर वधू को आशीर्वाद दिया।

मन्त्री
बद्रीप्रसाद अग्रवाल
आर्य समाज सतना

सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा का अधिवेशन ता० १६-९-४५ को देहली में होगा जिसमें अन्यान्य विषयो के अतिरिक्त सत्यार्थ प्रकाश पर से प्रतिबन्ध उठवाने के विषय मे अन्तिम निर्णय किया जावेगा।

मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
देहली।

श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक—प्रकाशक के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा "चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस" श्रद्धानन्द बाजार देहली में मुद्रित।



१६४५ ई०
२००१ सं०

सम्पादक—

वार्षिक मूल्य
विदेश ७शि

विषय सूची

भूल सुधार

पृ० २५५ पंक्ति २६ मे सा-य के स्थान पर सा-द्य पढे । पृ० २५६ पंक्ति २७ म कत्तनमल जी के स्थान पर कानमत जी स्वामी पढे ।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष २१ } अक्तूबर १९४९ ई०] आश्विन २००६ दयानन्दाब्द १२२ { अङ्क ८

* वैदिक प्रार्थना

ओ३म् अस्मभ्यं तद्वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् । इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनुद्यून् बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ॥

ऋ० २।१३।१३

शब्दार्थ —(वसो) हे सब को बसाने वाले व आश्रय देने वाले (इन्द्र) परम ऐश्वर्य शाली प्रभो (अस्मभ्यम) हम सब उपासको को (तत् राध) वह धन (दानाय समर्थयस्व) दान के लिये परोपकार मे लगाने के लिये दीजिये(यत) जो धन (अनुद्यून्) प्रतिदिन (श्रवस्या) यश का बढाने वाला हो क्यो कि (ते) आपका धन (बहु) बहुत (वसव्यम) सब को वास वा आश्रय देने योग्य और (चित्रम्) अद्भुत है । आपका ऐसा दान पाकर हम (सुवीरा) उत्तम वीर बनकर (विदथे) यज्ञो और सभाओ मे (बृहद् वदेम) उत्तम भाषण और आपका यशोगान करे ।

विनय—हे परमात्मन ! आप समस्त ऐश्वर्य के भण्डार और स्वामी है । आप हमे ज्ञानादि ऐसा उत्तम ऐश्वर्य प्रदान करे जो हमारे यश को बढाने वाला हो जिसे हम दानादि परोपकार के कार्यों मे लगाते हुए पुण्यभागी बने । सर्वशक्तिमान् आप का आश्रय ग्रहण करते हुए हम सब सच्चे वीर और आपकी स्तुति तथा धर्म के प्रचारादि शुभ कार्यों मे तत्पर रहे ॥

वेदोपदेश

सम्भूति और असम्भूति की उपासना

(ले०—प्रो० रामनाथ जी वेदालङ्कार गुरुकुल कांगड़ी)

अन्धं तमः प्रविशन्ति ये ऽसंभूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्याᳪं रताः॥
अन्यदेवाहुः संभवादन्यदाहुरसम्भवात्।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद् विचचक्षिरे॥
सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद् वेदोभयᳪं सह।
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते॥

यजुः ४०। ६-११

अर्थ—(अन्ध तम प्रविशन्ति) गाढ़ अन्धकार मे घुसते हैं (ये असभूतिम् उपासते) जो लोग असभूति की उपासना करते है, (ततो भूय इव) उससे भी अधिक (ते तम 'प्रविशन्ति') वे अन्धकार मे घुसते है (ये उ सभूत्या रता) जो सम्भूति मे रत रहते हैं॥ ११॥

(सभवात् अन्यदेव आहु) सभूति का और ही फल कहा गया है (असभवात् अन्यद् आहु) असभूति का दूसरा फल कहा गया है, (इति धीराणा शुश्रुम) ऐसा बुद्धिमानो से हमने सुना है (ये) जिन्होने (न तद् विचचक्षिरे) हमारे सामने इसकी व्याख्या की है॥ २॥

(सम्भूतिं च विनाश च) सभूति और विनाश (तद् उभयम्) इन दोनो को (य) जो व्यक्ति (सह) एक साथ (वेद) जानता है, वह (विनाशेन मृत्यु तीर्त्वा) विनाश से मौत को पार करके (सम्भूत्या अमृतम् अश्नुते) सभूति से अमृत को पा लेता है॥ ३॥

यजुर्वेद के ४०वे अध्याय तथा ईशोपनिषद् मे ये मन्त्र आते है। इनमें सभूति और असभूति की अलग २ तथा इकट्ठी उपासनाओ का फल बताया गया है। यहाँ पहले यह देख लेना चाहिए कि सभूति और असभूति शब्दो का क्या अर्थ है? तीसरे मन्त्र मे असभूति के स्थान पर विनाश शब्द का प्रयोग है। इससे असभूति का अर्थ 'विनाश' है यह स्पष्ट हो जाता है। इसके विपरीत सभूति का अर्थ होना चाहिये अविनाशी अर्थात् अस्तित्व या सत्ता [स भूति, भू सत्तायाम्]। तो सभूति की उपासना का अर्थ हुआ सत्ता की या नित्य वस्तुओ की उपासना और असभूति की उपासना का अर्थ हुआ विनाश की या नश्वर वस्तुओ की उपासना। इस प्रकार उपर्युक्त मन्त्रो मे निम्न तीन बाते कही गई समझनी चाहिये।

(क) जो लोग अकेले 'विनाश' की उपासना करते है और 'सत्ता' की उपेक्षा किये रखते है वे गाढ़ अन्धकार मे गिरते है।

(ख) वे और भी अधिक गाढ अन्धकार में पहुचते है जो अकेली 'सत्ता' के उपासक होते हैं और 'विनाश' की उपेक्षा किये रहते हैं।

(ग) किन्तु जो 'सत्ता, और 'विनाश' दोनो की एक साथ उपासना करते हैं उन्हें सद्गति प्राप्त होती है और वे मौत को तर कर 'अमृत' प्राप्त करते है।

इन कथनो का अभिप्राय हम इस प्रकार समझ सकते है। विनाश और सत्ता इनमे से किसी एक ही कोटि को पकड़ लेना और उसकी पराकाष्ठा पर पहुच जाना अच्छा नहीं है।

१ पहले प्रकार के वे लोग हैं जो विनाश के उपासक हैं। केवल विनाश की उपासना का अभिप्राय यह है कि विनाशवान् वस्तुओं को ही अपना ध्येय बना लेना और यह भूल जाना कि सदासत् वस्तु भी संसार में कोई है जिसके प्रति हमारा कुछ कर्तव्य है। जो लोग विनाश के उपासक होते हैं वे विनाश की पराकाष्ठा पर पहुंच जाते हैं और समझने लगते हैं कि संसार मे सभी कुछ विनश्वर है शरीर की तरह आत्मा भी नश्वर है। इसलिये न पुनर्जन्म होता है, न कर्मफल मिलता है। धर्म-कर्म हमारे किसी काम नहीं आता। और यदि सिद्धान्तरूप से वे आत्मा परमात्मा को मानते भी हैं तो भी आचरण उनका ऐसा होता है जैसे कि आत्मा परमात्मा के प्रति उनका कोई कर्तव्य नहीं है वे आत्मा परमात्मा की तरफ कुछ ध्यान नही देते धर्म कर्म पूजा पाठ को व्यर्थ की चीज समझते हैं। परिणामत उनका जीवन पाप-मय होता है। उन पापो का फल उन्हें मिलता है और वे दुर्गति को प्राप्त होते हैं। मरने के बाद कर्मानुसार पशु पक्षी, कीट पतग या स्थावर योनियो में जाते हैं। यही उनका गाढ अन्धकार में घुसना है।

२ इसी प्रकार जो केवल सत्ता क उपासक होते हैं वे 'सत्ता' की पराकाष्ठा पर पहुंच जाते हैं और नश्वर को भी 'सत्' मान बैठते हैं। जगत् और शरीर की नश्वरता से वे कुछ शिक्षा नही लेते। वे समझते हैं यह ससार सदा रहेगा, शरीर सदा रहेगा, भाई बन्धु-स्त्री पुत्र पौत्र, माता पिता सदा रहेगा। उन्हें जगत् की अनित्यता का ध्यान नहीं आता। यह देखते हुए भी कि रोजमर्रा लोग मौत के ग्रास हो रहे हैं वे चेतते नहीं, मौज मे भोग विलास में लगे रहते हैं। यह जगत् क्षणभंगुर है, मानव-शरीर हमे थोडे दिनो के लिये मिला है, धर्म कर्म करना है करलो, रोज ? यह मनुष्य-शरीर नहीं मिलता, ऐसे विचार उनके मन मे नहीं आते। परिणाम यह होता है कि वे भी अपने जीवन मे पुण्य-कर्म नहीं करते और दुर्गति को पाते हैं।

केवल 'सत्ता' के उपासक दूसरे प्रकार के वे लोग कहे जा सकते हैं जो नाशवान् वस्तुओं-इस जगत तथा शरीर को बिल्कुल हेय समझते हैं और यह मान बैठते है कि बस आत्मा परमात्मा जो कि सदासत् हैं उन्हीं की चिन्ता करनी चाहिये। जगत तो बन्धन मे डालने वाला है। शरीर मल मूत्र का पिण्ड है, इससे दूर भागो, ऐसी उनकी धारणा होती है। पर इस प्रकार दूर भागने से काम नहीं चल सकता। भगवान को पाने के लिये भी जगत् और शरीर की आवश्यकता है। इसलिए ऐसे लोग चाहे कितना ही भगवान् के पीछे भागे उन्हें वह उपलब्ध नहीं होता। इस प्रकार अपने जीवन को वे व्यर्थ हीं गॅवा देते हैं और वैसे ही, बल्कि उससे भी अधिक, दुर्गति को पाते हैं जैसे कि केवल 'विनाश' के उपासक। उससे भी अधिक इसलिये कहा कि इनका अपराध और भी बढ जाता है ये ससार को धोखा देते हैं। विनाश के उपासको को तो दुनियॉ ही जानती है कि वे गलत रास्ते पर हैं, किन्तु ये अपने आप को योगी और साधक घोषित करते हैं, और होते हैं योग से कोसो दूर।

३ तो फिर करना क्या चाहिये ? न 'विनाश को ही पकडे कल्याण है, न 'सत्ता' ही को पकडे कल्याण है। दोनो को एक साथ पकड़ना चाहिए। दोनो का अपने जीवन मे समन्वय रखना चाहिये। एक ही कोटि को पकड़ने से

लक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकती। जैसे कि धनुष की डोरी दोनो धनुष्कोटियो से मिल कर तीर द्वारा लक्ष्य को विद्ध कर सकती है वैसे ही 'सभूति' और 'विनाश' दोनो कोटियों को पकड़ कर चलने से ही लक्ष्यसिद्धि होगी। जो दोनो की उपासना करते हैं वे दोनो पक्षो मे जो अच्छाई है उससे लाभ उठाते है और एक ही पक्ष को पकड़ लेने से जो हानि सभव है उससे बच जाते है। दृष्टान्त से समझना चाहे तो 'सभूति' और 'विनाश, के स्थान पर 'पानी' और 'आग' रखकर समझ सकते हैं। कोई व्यक्ति चाहे कि मै पानी और आग मे से अकेले पानी से प्रीति करू और आग से द्वेष करू तो वह जिन्दा नहीं रह सकता। अकेले पानी से जीवन मे उसका निर्वाह नहीं चल सकता। अकेले पानी तो उसका विनाशक ही सिद्ध होगा। वैसे ही अकेली 'सभूति, मनुष्य को घोरतम अन्धकार मे डालने वाली होती है। इसके विपरीत जो व्यक्ति पानी से द्वेष ठान लेता है। अकेली आग को ग्रहण करता है वह भी जीवित नहीं रह सकता। अकेली आग तो उसे भस्म करने वाली ही सिद्ध होगी। वैसे ही अकेले 'विनाश' की उपासना मनुष्य की दुर्गति कराने वाली होती है। जो व्यक्ति पानी और आग दोनो को ग्रहण करता है, किसी एक के लिये ही आग्रह नहीं करता वही अपने जीवन को आगे चलाता है। वैसे ही जो सभूति तथा विनाश दोनो की एक साथ उपासना करता है वही सफल होता है।

मन्त्र मे सभूति और विनाश दोनो की इकट्ठी उपासना का यह फल बताया है कि "विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्या ऽमृतमश्नुते" अर्थात जब मनुष्य दोनो की एक साथ उपासना करता है तब विनाश की उपासना से तो वह मृत्यु को जीत लेता है और सभूति की उपासना से अमृत को पा लेता है। यहा प्रश्न हो सकता है कि विनाश की उपासना से मृत्यु को जीत लेने का क्या अर्थ है? इसका उत्तर यह है कि जो सभूति के समुच्चय सहित विनाश की उपासना करता है वह अकेले विनाश के उपासक की तरह विनाश का मतलब यह नही समझता कि सभी कुछ नाशवान् है, वह तो जो नश्वर है उसे ही नश्वर समझता है और जो सदासत् या नित्य है उसे नित्य समझता है। इस प्रकार वह इस सचाई को समझे होता है कि यह शरीर सदा नही रहेगा, एक न एक दिन मर जायेगा, पर जो असली 'मै' हूँ अर्थात् आत्मा वह शरीर के मर जाने पर भी नहीं मरता, वह तो अजर अमर है। इस सत्य को जो अच्छी तरह से हृदयगम कर लेता है फिर उसे शरीर का मोह नहीं रहता, मौत मे नहीं डरता। वह मृत्युञ्जय हो जाता है। ऋषि दयानन्द की तरह हॅसते हॅसते प्राण त्याग देने को उद्यत रहता है। जिन्होने मौत के भय को त्याग दिया है, सदा ही उच्च कार्यों के लिये आत्म बलिदान के लिये जो तैयार रहते हैं वे ही लोग मृत्युञ्जय कहाते हैं। और उन्हें यह मृत्युञ्जतता प्राप्त होती है 'विनाश' के तत्व को पूरी तरह से समझ लेने पर, अर्थात् यह समझ लेने पर कि शरीर तो नाशवान् है इससे मोह क्या करना। यही 'विनाशेन मृत्यु तीर्त्वा' का भाव है। यह मृत्युञ्जयता उसे प्राप्त नहीं होती जो अकेले विनाश की ही उपासना करता है, वह तो केवल नाशवान पर ही ध्यान रखता है और इसलिये "आत्मा तो अमर है इसलिये मौत से मैं क्यों डरू" यह विचार उसके अन्दर नहीं आ सकता। इस प्रकार जहाँ केवल विनाश की उपासना मनुष्य को नीचे ले जाने वाली है वहां सभूति की

उपासना के साथ साथ विनाश की उपासना उसे मृत्युञ्जय बना देने वाली है।

इस प्रकार मृत्युञ्जय होकर वह "सम्भूत्या अमृतमश्नुते" सभूति की उपासना से अमृत को पा लेता है। शरीर व जगत् को अनित्य मान कर तथा अपनी आत्मा व परमात्मा को नित्य मान कर इनकी नित्यता अनित्यता से उचित शिक्षा लेता हुआ तथा उसे जीवन मे चरितार्थ करता हुआ जो जिन्दगी व्यतीत करता है उसे 'अमृत' मिलेगा ही। जिन्दगी मे भी उसे 'अमृत' मिलता है और मरने के बाद भी 'अमृत मिलता है। विनाश की उपासना से तो वह मृत्युञ्जय हो गया अब क्योंकि वह सभूति की उपासना भी करता है अर्थात आत्मा परमात्मा को नित्य मानता और उनकी तरफ ध्यान रखता है इसलिये भगवान की आराधना से जीवन मे उसे अपार आनन्द की प्राप्ति होती है यही जिन्दगी का अमृत है। और मरने के बाद भी उसे मोक्ष तथा परम आनन्द' रूपी अमृत प्राप्त होता है। इसलिये मनुष्य को सभूति या विनाश इनमे से किसी एक ही की उपासना न करके दोनो की इकट्ठी उपासना करनी चाहिये। तभी उसे कल्याण प्राप्ति होगी। न तो मनुष्य यह समझे कि यह ससार हौआ है, इससे अलग होकर कहीं गुफा मे जाकर भगवान् की खोज करो, ससार क प्रति हमारा कोई कर्तव्य नहीं। नहीं यह समझे कि सासारिक और शारीरिक आनन्द ही सब कुछ है, आत्मा परमात्मा कुछ नहीं है। किन्तु वह यह समझे कि मेरे कुछ कर्तव्य इस शरीर और अपने समाज के प्रति भी हैं, कुछ कर्तव्य परमेश्वर क प्रति भी है। इस प्रकार समन्वय करके चले। यही सभूति और असभूति की इकट्ठी उपासना है। यही वैदिक मार्ग है।

वेद में विज्ञान

Detailed Scientific discourses in Vedic Suktas

(लेखक श्री दीनदयालु जी, M Sc LL B)

(३)

आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्व मेरिरे । दधाना नाम यज्ञियम् ॥ ऋ० म० १ सू० ६ म० ४ आत् । अह । स्वधाम् । अनु । पुनः । गर्भत्वम् । आऽईरिरे । दधानाः । नाम । यज्ञियम् ॥

पदार्थ —(आ) समुच्चयार्थे । निरु० १-५। तेजोशो की सयुक्त सज्ञा ॥ (आ) अर्वाक् अर्थे निरु० १-३। इधर की पूर्व अवस्था। (आत्) आन न्तर्यार्थे । द० भा० । तेजोशो की पूर्व की अवस्था के उपरान्त । (अह) विनिग्रह अर्थीय । निरु० १-५। प्रथक प्रथक करना । स्वधाम्-उदक नाम-तेज अपि उदक नाम । निघटु १-१२। अनु सादृश्य अपर भाव । निरु० १-३। पुन पश्चात् । (गर्भत्वम्) गर्भ गृणाति अर्थे । यदा हि स्त्री गुणान् गृह्णाति गुणाश्च अस्या गृह्यन्ते अथ गर्भ भवति । निरु० १०-२-२३-१४। गुणो का आदान प्रदान जब हो तब गर्भ होता है। यथा लवण के जल मे घुलने पर लवण जलमय हो जाता है एव जल लवण के स्वाद को ग्रहण कर लेता है। ग्रहे गर्भ । ग्रह ग्रहण करना (धातुपाठे)। निरुक्त भाष्य दुर्गाचार्य । वायव्य गर्भ । तै० ३-६-१७-५। वायु वहने शील आणविक तेज का गर्भ रूप होना अर्थात् वायव्य आणविक तेज अथवा विद्युत् तेजोशो का जल वा जलमय पदार्थ के अन्त सचारी होना। यथा — (यजु ३१-१६) प्रजापति चरति गर्भे अन्त । गर्भ में प्राण वा तेज का अन्त सचारी होना। (दधाना) गर्भ धारका । अन्त सचारी तेजोशों का समूह (मरुद्गण)। (नाम) उदकम्-तेज । निघटु १-१२। (यज्ञियम्) यज्ञ कर्म जहाँ हो सके वह पात्र वा स्थान । (एरिरे) आ ईरिरे। समन्तात् प्राप्नुवन्त । द० भा० । ईर-क्षेते। ईर-गतौ कम्पने च । धातु पाठे ॥

क्षारों का अवयवी करण Electrolysis

व्याख्या —(आ) इधर इस चौथे मत्र से पूर्व अर्थात् तीसरे मत्र मे (केतु और पेश नामक) जो परस्पर विरुद्ध + और —' रूप दो प्रकार के तेजोशो का वर्णन आया है वे तेजोश (आ) पूर्व अवस्था मे (आ) सर्वथा सयुक्त रूप में (पूर्व मत्र ३ के अनुसार विद्युत् सम Electric ally neutral अवस्था मे) थे। (आत्) इस पूर्व की अवस्था के अनतर (स्वधाम् अनु) जल के सदृश अपर भाव को वे प्राप्त होते हैं तब (अह) वे निज +' और —' रूप तेजो को धारण करके पृथक प्रथक् हो जाते हैं। यह तेजोश मरुद्गण हैं, विद्युत भार वाहक (वायव्य) यह तेजोश शीघ्र गति करने वाले होते हैं। यह (मरुन्) इस मत्र के (देवता) व्याख्यात विषय हैं।

(पुन) पृथक् २ होने के उपरान्त (गर्भत्वम्) जल मे सचरण करते हुए—निज गुणो को (नाम) जल को देकर एव (नाम) जल के गुणो को स्वय (दधाना) धारण करते हुए (यज्ञियम्) उस यज्ञ पात्र मे (एरिरे) यह गर्भधारण करने वाले अन्त सचारी तेजोश प्राप्त होते हैं अर्थात् जल में घोलन मात्र से उत्पन्न होते हैं। एव च यह विद्युत् भार वाहक तेजोश Electric Ions (आ-ईरिरे) परस्पर इधर उधर धकेले जाते हैं अथवा (स्वधाम् अनु) विद्युत् प्रवाह के अनुसार निज

अपेक्षित विद्युत् दण्डो (Electrodes) की ओर प्रेरित किये जाते हैं।

इस जल में पूर्व मन्त्र ३ मे कथित (समुपदभि) विद्युत् प्रवाहित होने पर यह (मरुद्गण) तेज वाहक त्रसरेणु (मर्या) विद्युत सम होकर (पेश, मक्त्) निज रूप मे क्षार के (पेश) अवयव रूप से (अजायथा) प्रकट होगे। यह Electrolysis अवयवी करण क्षारो और खनिज पदार्थों से धातु आदि के प्राप्त करने मे सहायक है॥

भावार्थ—क्षार अथवा अन्य संयुक्त पदार्थों को जल मे घोलने पर अथवा पिघला कर जलमय करके, सयुक्त पदार्थ के अंश (Ions) प्रथक प्रथक हो, विद्युत भार को ग्रहण कर शीघ्रता पूर्वक, पात्र मे इधर उधर गति करते है। यह मरुद्गण अथवा तेजोमय वायव्य त्रसरेणु कहाते है। यह जल मे अन्त सचरण करने वाले एव जल के रूप और गुणो को धारण किये हुए(एरिरे)विद्युत प्रवाह द्वारा प्रेरित होते है और विद्युत सम अवस्था को प्राप्त हो—सयुक्त पदार्थ के अवयव रूप प्रथक् प्रथक उत्पन्न होते हैं जिन्हे यज्ञपात्र मे युक्ति पूर्वक इकट्ठा करके, निकाल लिया जावे।

आर्द्र अशनि कोष—बिजली की बटरी Accumulators पूर्व मन्त्र ३ मे कथित (मर्या) विभाजक Commulator चक्र से (आन् अह) दो पृथक् तारो मे उत्पादित विद्युत् तेजो के प्रभाव को ले जाकर (स्वधाम् अनु) सम प्रभाव रूप Current विद्युत् धारा को एक यज्ञ पात्र accumulator मे रखे (नाम) तेजाबी जल मे (ऐरिरे) होकर प्रवाहित किया जावे तो (यज्ञियम् नाम) बिजली से प्रभावित नये रासायनिक परिणाम उत्पन्न होने लगते हैं और (नाम) तेजाबी जल अधिकतर तेजोशो से युक्त होने लगता है अथवा (नाम दधाना) तेज को धारण करने वाले अश Ions (स्वधाम् अनु) विद्युत प्रभाव के फल स्वरूप (आन् अह) यज्ञ पात्र के सयुक्त पदार्थ क बने सघटो से प्रथक पृथक् हो कर (पुन गर्भत्वम् ऐरिरे) पश्चात् जल मे-अपने तेज को धारण कर और स्वय जल मय होकर कार्यक्षम अवस्था मे रजो गुण से सम्पन्न शीघ्र २ गति करते हुये सुरक्षित रहते हैं और समय आने पर विद्युत प्रभाव को उत्पन्न करते है। इस प्रकार आया हुआ विद्युत तेज गर्भावस्था को प्राप्त हो रासायनिक परिणामो मे परिवर्तित हो जाता है यह रासायनिक परिवर्तन पुनरावर्तन द्वारा रासायनिक क्रिया द्वारा (दो सिरो पर तार जोड देने पर) विद्युत प्रभाव को उत्पन्न करने की क्षमता रखता है।

इस यज्ञ पात्र मे उपरोक्त रासायनिक परिणाम त्रसरेणुओ के ध्वस द्वारा एव तेजोशो की तेजाबी जल में प्राप्ति तदनन्तर विद्युत प्रवाह की पुनरावृत्ति किस प्रकार होगी यह अगले मंत्र ४ का विषय है।

(Induction coil) बिजली के पर्वभार Voltage को उन्नत करने वाले यन्त्रो का (condenser) अशनि घन यन्त्रो से समीकरण

(आन् अह) (Primary Current) विद्युत प्रवाह को खड खड प्रवाहित Intermittent करने पर (स्वधाम् अनु) उच्च पर्वभार High voltage के आधार भूत केन्द्रस्थ चुम्बकीय तेज को धारण करने वाले जो (अनु) अपर अर्थात् दूसरे Secondary Currents विद्युत प्रवाह उत्पन्न होते हैं उन्हे (यज्ञियम नाम

दधाना) ऐसे Condensers अशनि घन पात्रो में टो मे धारण एव सचय किया जावे कि (गभ त्वम् दधाना) तेजोशो को घना भूत करके यह Condenser पात्र समय समय पर (ऐरिरे) सामूहिक परिमाण मे फकता रहे और वह घनी भूत एव पर्वभार युत तेज (स्वधाम् विद्युत् ग्रन्न) आकाशको वज्ररूप भेदन,कर (ईर गतिकम्पनेच) कम्पन गति Ethereal Oscillations उत्पन्न करता हुआ अगले मन्त्र मे कथित Spark चिन गारियो और Wireless waves or X ray सुतीक्ष्ण आकाश मे सन्चरण करने वाली किरणो को उत्पन्न कर।

(स्वधा) की व्याख्या स्वधा वै पितृणाम अन्नम्– तेज ही पितरो का आधार भूत अन्न है। श० १३ ८ ८ ४ तद् ये सोमेन एजाना ते पितर सोमवन्त । श० ० ६ ८ ७ । बिजली के युत पितर होते हैं वे बिजली क साथ गति करते है अथवा विद्युत् प्रवाह को उत्पन्न करते है । सोम्या पितर सोम सम्पादिन ते असु ये ईयु । नि० ११ ८ १६ १८ ऊष्मभागा हरण भागा हि पितर । श० २ ६ १ ७ । पितर सोमपजन्त अग्निषु आत्ता बर्हिषद श० ५ ५ ४ २८। इत्यादि मन्त्रो स स्पष्ट है कि पितर विद्युत् की सचित एव उन्नत अवस्था को High Voltage कहेंगे जिसके कारण विद्युत प्रवाह चलता है। यदि न अश्नाति पितृदेवत्य कूप भवति श० ११ १ ७-२। तथा सोमो अक्षर निरुक्त ५ ८ ३ १३ High volt Terminal और निरु० ६ १ ७ ४ मे सोमस्यएव मौजवतस्य भक्ष स स्पष्ट है कि बिजली सचित होकर उच्च धरातल स प्रवाहित होती है और प्रवाह मे यह (मुञ्ज विमुच्यत इषीकया) Voltage गिर जाता है। यह सोमो अत्ता का प्रकरण अगले मन्त्र (वीलु चिदारुजत्नुभि , के साथ स्फुट करेंगे, जिसमे अणु विस्फोट का आश्चर्य जनक वर्णन है।

वर्षा जल का निर्माण।

सूर्य किरणो द्वारा उत्पन्न पूर्व मन्त्र ३ मे विरचित केतु आर पेश नामक + और '— विद्युत त्रसरेणु (स्वधाम अनु) जल मे उत्पन्न हो कर (आत् अह) जल को निखेर देते है (पुन) पश्चात् (गर्भत्वम दधाना) नव वर्षा जल की उत्पत्ति स पूर्व अवस्था को धारण करने वाले यह (मरुद गण) तेजोश समन्वित जल परमाणु निज विद्युत् तेज को नष्ट करते हुए (स्वधाम अनु) वज्ररूप बिजली की चमक और मेघ गर्जन कर क (ऐरिरे) कम्पाते है । तदनन्तर वे (यज्ञियम नाम) बिखरे जल परमाणुओ की सगति करके वर्षाजल की (ऐरिरे) प्राप्ति कराते हैं।

अध्यात्म सुधा

मन को उद्बोधन

(कवयित्री—श्रीमती विद्यावती देवी जी धर्मपत्नी प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति देहली)

१ ऐ मन तू मा के चरणन मे, सर्वस्व कर दे अरपन।
जिस से हृदय की देवी के, दिन दिन मे होवें दरशन ॥

२ चंचल अचल तू होजा, चल माँ जिधर चलावे।
करुणा से जिस की तेरे, कट जाएं क्लेश बन्धन ॥

३ रम जा तू मा मे ऐसे, ममता मे रमता जैसे।
धो ले तू धुन के साबुन, मे अपने दिल का दरपन ॥

४ पल पल में तुझ को पाले, कर खेल वह निराले।
बस तू उसी का पा ले, खुल जाए सारी उलझन ॥

देश और हमारा कर्त्तव्य

आर्य वीर दल का ध्येय

(ले०—प० विद्यानन्द जी वेदालङ्कार)

हमारे समाज मे गुलाम, कर्तव्य से दूर, आलसी एक न रहे, सब वीर स्वयंसेवक (धर्मात्मा) व आर्य बन जाय। यही हमारा कार्य है। आलसी कर्तव्य से दूर, मुर्दा दिल और निराश कोई न रहे। इतना ही हमारा प्रयोजन है। कोई पार्टी या दल हमारा प्रयोजन नहीं। खेत को जोतकर खाद देकर और सींचकर तैयार करना हमारा काम है ताकि हरेक पौदे के उचित विकास के लिये मौका हो। तमाशबीन श्रोता मात्र लोगो के कारण, साथियो की कमी के कारण, जाति के अनेको कार्य नेताओ की चीख पुकार के साथ समाप्त न हो जाय।

हरेक व्यक्ति को पता होना चाहिये कि मैं समाज का हिस्सा हूँ। जैसा मै हूँ वैसा ही समाज का हरेक हिस्सा होना चाहिये। न कि जैसे किसी शरीर मे हाथ बीमार, टाग कमजोर, आख तेज और कान बहरे हो तो वह पूरा बेकार होता है। धीमे २ सब हिस्सो को स्वस्थ करके काम करने वाला बढ़ता है वैसे ही वीर-स्वय सेवक बनाना, अपने समाज के हरेक हिस्से को स्वस्थ और काम करनेवाला बनाना है। ऐसा स्वस्थ काम करनेवाला समाज (देश व राष्ट्र) शक्तिशाली है।

शक्ति सचय का प्रथम मंत्र कर्तव्य भावना है। दूसरा मत्र संगठनभावना है। जब हरेक के दिल मे यह श्रद्धा पक्की हो जायगी कि मै विशाल समाज का हिस्सा हूँ और अपने देश का ऋण चुकाना मेरा परम कर्तव्य है। तब संगठित जीवन की शिक्षण धारा बहाने की जरूरत है। इसे बताने की आवश्यकता है, कि एक विचार से आचरण करने वाले एक परम्परा और सूत्र मे बधे लोग, यदि देश में हों-तभी उन्हे समाज व राष्ट्र कहा जा सकता है। केवल इकट्ठा रहने वाले बाजार, मेलों और जन समूह को राष्ट्र व समाज नही कह सकते। ऐसा संगठित समाज जिसके प्रत्येक व्यक्ति के दिल मे समाज जीवन के भाव (प्रतिदिन) कूट २ कर भरे हो। ससार मे शान के साथ खड़ा हो सकता है।

हमे ऐसा समाज बनाना होगा-जिसमे हरेक व्यक्ति ईटो के ढेर की तरह न हो। किन्तु सगठित दीवार मे—किसी एक विचार और प्रयोजन से पिरोया हुआ हो। वह समाज के बुद्धि पूर्वक चलने वाले काम के लिये स्वयसेवक व मशीन के पुरजे की तरह व्यवस्थित और सगठित दिखाई दे। वह सभ्य समाज मे रहने के नियमो से वाकिफ ही न हो-किन्तु ऐसा समाज बिना बनाये रह न सकता हो। उन नियमो को एक नेता के अनुशासन या आज्ञा मे जरूरत पर पूरा करता हुआ दिखाई दे। जो खुद नियमो को पूरा करने के लिये तैयार है-उसे आज्ञापालन आनन्द उत्साह और रस देता है। इस प्रकार एक सूत्र मे पिरोये आर्य वीरो से बना समाज, एक शरीर की तरह काम करेगा। इस प्रकार राष्ट्रीय-भावना वाले आर्य वीर बनाना, उन्हें संगठन और अनुशासन मे चलना सिखाना, यही हमारा असली काम है। हमे अपना राष्ट्र तैयार करना है। स्वस्थ शरीर बाहरी मल या विदेशी हिस्से को

खुद साफ कर देता है। वह चोट का इलाज करने के लिये पर्याप्त ताकत रखता है। उसी प्रकार समाज भी कर्तव्य भावना वाले वीरो से स्वस्थ कणो से बना होगा हमे किसी सरकार की जगह दूसरी सरकार नहीं कायम करनी। हमे तो सब अपने भाइयों को अपना बना लेना है। ताकि बगुलों में कौआ खुद पहिचान मे आजाय। वह अपनी बदसूरती को खुद छिपाता फिरे। जो बगुला (भारतीय) बन सकता हो, हमारी भाषा, सभ्यता, सस्कृति, रहन सहन को अपना सकता हो—वही हममें रह सके। शेष कौओ के लिये हमारे अन्दर शकल छिपाने को जगह न रह जाय।

हमारी सिंह गर्जना गीदड को भी भगा देगी। जो रगरूप बदल कर हममे छिपना चाहते हैं। कहते हैं कि एक रगरेज की नीली कडाही मे एक गीदड़ गिर पडा। वह अपने को देख कर सारे पशुओं को अचम्भा और डरता हुआ देख कर उनका राजा बन बैठा। पर जब गीदड़ बोले तो वह भी "हुआ ?" कर बैठा। बस ! शेरो ने उसे चीर दिया। ऐसे रगे सियार चाहे फारस के गीत गायें, चाहे इगलैन्ड के, वे अपने को भारतियों में नहीं छिपा सकते। वे देश द्रोही वक्त पर दूसरों के काम आते हैं।

वे हिन्दुस्तानी हैं। अचानक इनको पढ़ा लिखा कर और बहकाकर धर्म और सभ्यता की आड़ मे विदेशभक्त बना दिया गया है। इस्लाम और इसाइयत के प्रचारको ने धर्म की आड़ ली, तो, सरकारी शिक्षा ने सभ्यता की आड़ ली। हमें इनको अपना बना लेना है। ये अपना मजहब न बदलें तो भी इतनी हानि नहीं। वे हमारी भाषा, सभ्यता, संस्कृति जरूर अपना लें। हमें इसके लिये पूरी तैयारी करनी पडेगी कि कौआ अपना बदरंगपना पहिचान ले।

हमे पहला क्षेत्र हिन्दुओ को फिर सभी को एक रग और एक भावना वाला बनाना है। हमें सारे कौए भारत से उडा देने है या ऐसी दवाई तैयार करनी है कि उनका रग बदल जाय। हमे अपने ऊपर चढे बदसूरत रग को भी बदलना होगा। आलसी, बहानेबाज, डरपोक, कमजोर और अपने कर्तव्य से दूर लोगो को अपनी कमजोरी से परिचय देकर उनको बेचैन और अशान्त बनाना होगा। ताकि वे अपनी बदसूरती बदलने के लिये खुद तैयार हो जाय। पजाबी, सिन्धी, और हैद्राबादी भाइयो को पाकिस्तानी (भाषादि) रग मे रग कर शेष हिन्दुसमाज से अलग करके नष्ट करने की चाल भी पहचाननी होगी। जो भाषादि मे उनकी चाल पर खुद चलता है, अपने सगी साथियो को भी चला रहा है। इस देशद्रोह से उसे वापिस करना होगा। उसे पवित्र भाषा, सभ्यता को सीख कर समाज व देश को एक और अखण्ड रखने के लिये तयार करना होगा।

दरद, खश, चीनी पल्हव, कम्बोज और ओड़ आदि हिन्दुस्तान के चारो तरफ बसी जातियाँ (जावा श्याम अफगानिस्तान मिश्रादि मे) मनुस्मृति १० वे अध्याय के अनुसार ब्राह्मणों के बिना शूद्र होगई और आज विदेशी होगई। वे जानती भी नहीं कि कभी हम भारत के हिस्से थे। हमे भारत की प्राचीन सीमा तक पहुचना है। पर हालत यह है कि देश के सर्वत्र गाँवो और पहाड़ों में लोग देश की सभी बातें भूल गये हैं। वे नहीं जानते हम कौन थे और अब क्या होगये हैं ? हमारे पास इसके लिए क्या उपाय है ? क्या, शिक्षा ?

हमारे पढे लिखे लोग देश की सभी चीजो से घृणा करने लगे हैं वे हमारे देश स्वतन्त्रता के लिए काम करने वालो को दु ख देने मे भी दूसरो का साथ देते हैं। वे यह भी नहीं मानते कि हमारे पूर्वज सभ्य सस्कृत और ज्ञानी थे। इस प्रकार सभ्यता की ओट मे शिक्षा ने इनको भारत की जगह योरोप का प्रेमी बना दिया। वे देश की भाषा, सभ्यता के साथ अपना कोई सम्बन्ध नही समझते।

इस समय अनपढ और पढा लिखा सारा देश अपने को नहीं पहचान रहा। एक विचार, एक सभ्यता और एक सस्कृति आदि मे बधकर देश मे एकता और सगठन कायम होता है। जैसे जावा अफगानिस्तान आदि देशो के लोग देश की सभ्यता और आदि का ज्ञान न होने के कारण हम से दूर हो गये। वैसी ही हालत आज सारे देश की है। आज पजाब, सिंध, कश्मीर सीमा प्रात (फ्रटियर) आदि के हिन्दु मुसलमानी प्रभाव मे बदल गये है और लगातार बदलते जा रहे है। मुसलमान तो इतने दूर होगये हैं कि अलग देश की माग करने लग गये हैं। इस प्रकार देश टुकडे २ हो रहा है। अफगानिस्तान की तरह पजाबादि भी भारतीयता से दूर होते २ पृथक् राष्ट्र बनते जा रहें हैं। अस देश की अत्यन्त विनाशकारी स्थिति का हमे विचार करना होगा। इसकी अखण्डता के लिये उपाय सोचना होगा। इसके लिये एक ही उपाय है–देशप्रेमी कर्तव्य शील वीर पुरुषों की सख्या वृद्धि के लिये आर्य वीर दल का प्रोग्राम चालू किया जाय। ताकि देश की सभ्यतादि के प्रचारक, पोषक लोगो से सगठित राष्ट्र की काया प्रतिदिन बढ़ती जाय देश सुरक्षित हो जाय। और सगठित होकर अपने ध्येय को पहिचान सके। यही हमारा उद्देश्य है। यही देश की पुकार है। इसे पहिचानना प्रथम कर्तव्य है। यह आन्दोलन नहीं। समाज साक्षात्कार है। आत्मसाक्षात्कार है।

आवश्यकता

सार्वदेशिक सभा पुस्तकालयार्थ निम्न पुस्तकों की विशेष आवश्यकता है जो सज्जन वा समाज उपहार स्वरूप भेज सकें शीघ्र भेजने का कष्ट करें अथवा सूचित कर दें।

(१) सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम (सन् १८७५) से ५ म सस्करण तक
(२) गीता प्रदीपार्थ भाष्य—पं० आर्य मुनि जी कृत
(३) ईश्वरीय ज्ञान वेद (२ भाग) डा बाल कृष्ण जी कृत
(४) मानवार्य भाष्य–पं० भीमसेन जी कृत
(५) Encyclopedia of Islam 10 Volumes
(६) Encyclopedia of Religions and Ethics 12 Volumes

पुस्तकालयाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
बलिदान भवन देहली।

आर्य वीरों का गीत

(ले०—श्री डा० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालङ्कार सिद्धान्त शास्त्री, एम० ए० एल० टी०, डी० लिट्)

१ हे नाथ ! हमें वह शक्ति मिले, कर्तव्य क्षेत्र मे डट जावें।
हम आर्य वीर हैं आर्य वीर, समराङ्गण से क्यों हट जावे ?

२ जीवन का हमको मोह नहीं, सुख सामानो की जोह नहीं।
फिर क्यो न धर्म की वेदी पर, हम हसते हंसते कट जावे ?

३ दुनिया से हमको काम नहीं, कर्तव्य बिना आराम नहीं।
दिन रात हमारे सारे ही क्षण क्षण परहित में बट जावे ॥

४ आकाश अँगारे बरसावे भूकम्प भयङ्कर भी आवे।
पृथ्वी, नभ, तारे सारे ही, प्रलयङ्कर होकर फट जावें ॥

५ लाखो ही बाधायें आये, हो विघ्न खड़े दायें बायें।
हम डिगे नहीं अपने पथ से, यह तन घावो से पट जावे ॥

६ चाहे पश्चिम पूर्व से मिले, चाहे हिमगिरि भी चले हिले।
बलिदान प्रतिज्ञा से न किन्तु, हम मरते दम तक नट जावे ॥

७ हम अरि को पाठ पढा देंगे, वेदी पर शीश चढ़ा देंगे।
क्यो समुल्लास एक भी हमरे धर्म ग्रन्थ से घट जावे ॥

८ अरि ने हमको जाना क्या है ? अब तक उसने माना क्या है ?
देखे वह "सूर्य" उदय से जब, अघ के बादल दल छट जावे ॥

९. सत्यार्थ प्रकाश हमारा है, वह प्राणों से भी प्यारा है।
हैं चूहे कौन कुतर कर जो इस दृढ़ पर्वत को चट जावे ?

१० हम सब तन, मन, धन वारेंगे, सत्यार्थ प्रकाश उबारेंगे।
हम आर्य वीर जब डट जावे, हट सब सकट झटपट जावे ॥

आर्य कुमार जगत्

ता० १६-६-४५ को दिल्ली प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् की कार्य कारिणी की बैठक श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु के सभापतित्व में हुई। दिसम्बर मास में वार्षिक चुनाव तथा वार्षिक सम्मेलन करने का निश्चय हुवा।

संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन गाजियाबाद

कार्य क्रम

प्रातः काल ५-१०-४५

८ बजे से ८॥ बजे तक सम्मिलित संध्या।

८॥ बजे से १०॥ बजे तक यजुर्वेदीय पारायण यज्ञ।

१०॥ बजे से १२ बजे तक विषय निर्धारिणी समिति का चुनाव

दोपहर

३ बजे से सम्मेलन के सभापति का जलूस

५ बजे से ५॥ बजे तक स्वागताध्यक्ष का भाषण

५॥ बजे से ७ बजे तक सम्मेलन के प्रधान का भाषण

रात्रि

६ बजे से ११ बजे तक राष्ट्र भाषा सम्मेलन सभापति पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति

प्रातः काल ६-१०-४५

८ बजे से ८॥ बजे तक सम्मिलित संध्या

८॥ बजे से १०॥ बजे तक यजुर्वेदीय पारायण यज्ञ

१०॥ बजे से १२ बजे तक विषय निर्धारिणी सभा की बैठक

दोपहर

२ बजे से २॥ बजे तक भजन

२॥ बजे से ४ बजे तक आर्य कुमार सम्मेलन खुला अधिवेशन

४ बजे से ६॥ बजे तक—सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन सभापति पं० रामचन्द्र जी देहलवी

रात्रि—

८॥ बजे से ६ बजे तक भजन

६ बजे से ११॥ बजे तक मौक पार्लियामेन्ट स्पीकर—प्रो० रामसिंहजी एम० ए०, सरकारी दल के नेता प० रामनाथ जी कालिया बी ए, विरोधी दल के नेता श्री देशराज जी चौधरी।

प्रातः काल— ७-१०-४५

८ बजे से ८॥ बजे तक सम्मिलित सध्या

८॥ बजे से १०॥ बजे तक यज्ञ

१०॥ बजे से १२ बजे तक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन

दोपहर

२ बजे से २॥ बजे तक भजन

२॥ बजे से ४ बजे तक आ० कु० सम्मेलन का खुला अधिवेशन।

२ बजे से ५॥ बजे तक आर्य वीरदल सम्मेलन सभापति ला० देशराज जी चौधरी

५॥ बजे से ६॥ बजे—शारीरिक प्रदर्शन आर्य वीरों द्वारा

रात्रि

८॥ बजे से ६ बजे तक भजन

६ बजे से ११ बजे तक प्रचार

अन्त में धन्यवाद तथा शान्ति पाठ।

देवीदयाल कार्यालय मंत्री
भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् देहली

धार्मिक चर्चा

(ले०—पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति)

'सार्वदेशिक' के गत अङ्क से पाठकों को ज्ञात हुआ होगा कि गत अगस्त मास में मुझे डूंगर गढ़ (रियासत बीकानेर) में जैनश्वेताम्बर तेरह पन्थ के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य श्री तुलसीराम स्वामी जी से अनेक धार्मिक विषयों पर वार्तालाप का सौभाग्य ३ दिन तक प्राप्त हुआ था। पूर्व इसके कि पाठको की सूचनार्थ मैं उस धार्मिक चर्चा के मुख्य अशो का उल्लेख करू मै श्री तुलसीराम जी के विषय मे अपने कुछ सस्मरण दे देना उचित समझता हूँ। यद्यपि श्री तुलसीराम जी जिस तेरह पन्थ सम्प्रदाय के आचार्य हैं उसके अनेक सिद्धान्तो से हम वैदिक धर्मानुयायी आर्यों का मौलिक मतभेद है तथापि मुझे उनसे मिल कर बडी प्रसन्नता हुई। आपकी आयु इस समय लगभग ३० वर्ष है। ब्रह्मचर्य व्रत का भली भाति आपने बाल्यावस्था से अब तक पालन किया है और इसके कारण आप बड़े ओजस्वी और तेजस्वी शान्त विद्वान् हैं। आपकी भाषण शक्ति भी बड़ी उत्तम है। सस्कृत के बहुत अच्छे विद्वान् और कवि हैं। आप अपने सब शिष्य शिष्याओ को संस्कृत भाषा के अध्ययनार्थ विशेष रूप से प्रेरित करते रहते हैं और मैं ने सब साधु साध्वियो मे सस्कृत का प्रेम विशेष रूप से पाया। लगभग ६०० साधु साध्विया आपके अनुशासन पर चलती हुई विद्याध्ययन और धर्म प्रचार में अपने जीवन को लगा रही हैं। इन सबका जीवन बड़ा सादा और तपोमय है। वे सर्वत्र पैदल जाते हैं, नगे पैर चलते हैं और अपने सामान को अपने कन्धो पर ही लादते हैं। किसी भी प्रकार की सवारी को वे लोग अपने लिये निषिद्ध समझते हैं। श्री तुलसीराम स्वामी जी प्रात, मध्याह्न और रात्रि में धर्मोपदेश द्वारा शिष्य मण्डली को लाभ पहुचाते हैं। मैंने उनसे जिन विषयो मे विशेष रूप से चर्चा की उन में से बाल दीक्षा विषयक सवाद को मै सब से पूर्व लेता हूँ क्योकि विशेषत इसी प्रश्न को लेकर जैनियो के इतर सम्प्रदाय के विद्वानो ने तेरह पन्थ की आलोचना मे 'धर्म का कलङ्क' आदि पुस्तिकाए प्रकाशित की थीं जिनके आधार पर 'सार्वदेशिक' के जून सन १९५४ के अङ्क मे एक सम्पादककीय टिप्पणी 'परोपकार विरोधी एक विचित्र सम्प्रदाय' शीर्षक से दी गई थी। बाल दीक्षा के विषय मे सिद्धान्त रूप से अब भी मेरा वही विचार है जो 'सार्वदेशिक' मे मैंने बाल दीक्षा विरोधी बिल का समर्थन करते हुए प्रकट किया था कि छोटी आयु मे सन्यास दीक्षा अनुचित है और यही विचार मैं ने श्री तुलसीराम स्वामी जी के सामने प्रबलरूप से प्रस्तुत किया था कि २५ वर्ष से कम आयु के बालक बालिकाओ को आप को ब्रह्मचर्य की ही दीक्षा देनी चाहिये, साधुत्व या सन्यास की नहीं। जिस पर उन्हो ने यह कहा कि हमारे जैन शास्त्र सिद्धान्तानुसार गृहस्थ और सन्यास यही दो आश्रम हैं अत. ब्रह्मचर्य की पृथक् दीक्षा देना सम्भव नहीं पर यह जान कर मुझे प्रसन्नता हुई कि वे अयोग्य दीक्षा के घोर विरोधी हैं। उनके पास दीक्षा लेने के लिये जो व्यक्ति आते हैं वे कई ७ वर्षों तक उनकी

परीक्षा लेते हैं और अपनी तरफ से पूर्ण निश्चय होने पर ही कि वह व्यक्ति साधु या साध्वी के व्रतो का पालन करने को पूर्णतया उद्यत वा समर्थ है वे दीक्षा देते हैं। मै ने स्वय कई छोटी आयु के दीक्षितो और दीक्षा के लिये उत्सुका श्री छगनी बाई (आयु १५ वर्ष) आदि कन्याओ से अनेक प्रश्न कर के देखा कि उनके अन्दर पर्याप्त दृढ़ता पाई जाती है । जहा तक वर्तमान आचार्य श्री तुलसीराम जी का सम्बन्ध है वे इस विषय मे पूर्ण सावधानी वर्तते है, उन व्यक्तियो के अपने प्रार्थना पत्र के अतिरिक्त जो दीक्षा लना चाहते है उनके सम्बन्धियो तथा उस ग्राम व नगर के कम से कम ५ प्रतिष्ठित सज्जनो के जब तक हस्ताक्षर न हो तब तक वे दीक्षा नहीं देत। कइ वार कइ वर्षों तक की देरी कर देते है। दीक्षार्थी प्राय अच्छे प्रतिष्ठित घरानो से सम्बन्ध रखन वाल व्यक्ति होते हैं। उनके वायु मण्डल को श्री तुलसी राम जी आचार्य अधिक स अधिक विद्या-प्रममय तथा परिश्रम-मय बनानेका यत्न करते है जिसस उनका अनुभव है कि इस प्रकार क दीक्षित अन्यो की अपेक्षा भी अधिक दृढ़ रहते है । जरा भी आचारादि विषयक त्रुटि ज्ञात होने पर उन्हे पृथक् कर दिया जाता है इस प्रकार बाल दीक्षा से होने वाली स्वाभाविक त्रुटियो से दीक्षिता को यथा सम्भव दूर रखने का वर्तमान आचार्य श्री तुलसीराम जी प्रयत्न कर रहे है यह मुझे वहा रहते हुए ज्ञात हुआ । तो भी मरा अनुरोध उनसे यही था कि उन्हे कम से कम ~. वष की आयु से पूर्व सन्यास की दीक्षा न दनी चाहिये ब्रह्मचर्य की ही दीक्षा दनी चाहिये। इस बाल दीक्षा के प्रश्न को लेकर उनके विरोधियो ने जो बातें लिखीं उन मे बहुत अधिक अत्युक्ति से काम लिया गया ऐसा विश्वस्त सूत्रो से प्राप्त सूचना के आधार पर मैं कह सकता हूँ।

दूसरा मुख्य विषय जिस पर मेरी श्री तुलसी-राम जी स्वामी से चर्चा हुई वह परोपकार को अधर्म वा पाप मानने का था जो इस तेरह पन्थ का विशेष सिद्धान्त माना जाता है। इस विषय मे मैंने 'धर्म का कलङ्क' नामक पुस्तिका में तेरह पन्थ के प्रवर्तक श्री भिक्षुजी कृत अनुकम्पा ढाल से उद्धृत निम्न प्रकार के कुछ वाक्य पढ के पूछा कि इस विषय मे आप का क्या सिद्धान्त है।

गृहस्थ रे लागी लायो,
घरबारे निकलियो न जायो।
बलता जीव बिलबिल बोले,
साधु जाय किवाड न खोले ।।

अनुकम्पा ढाल २ पृ० ५

अर्थात किसी गृहस्थ के घर मे आग लग गई हो और घर के लोग बाहर न निकल सकते हो। अन्दर ही अन्दर बिलबिला रहे हो और करुण चीत्कार कर रहे हो ऐसे समय भी साधु जाकर किवाड न खोले।

लाय लगी जो गृहस्थ देखे,
तो तुरन्त बुझावे छकाया ने मारी।
यह सावद्य कर्तव्य लोक करे छे,
तिन मे ती धर्म कहे सागधारी ।।

अनुकम्पा ढाल २ पृ० ६

अर्थात् कहीं आग लगी देखकर गृहस्थ लोग उसे तुरन्त बुझाते है और छ काय के जीवो का घात करते है। लोग इस प्रकार का सावद्य-पाप पूर्ण कार्य करत हैं सागधारी (वेशधारी साधु) उसमे भी धर्म मानते है।

कोई लायसू बलताने काढ बचायो
वले कुवे पडताने बचायो
वले तलाब में डूबताने बाहरे काढे
वले ऊचा थी पडता ने झाल लियो तायो।
ओ उपकार ससार तणो छे
ससार तणो उपकार करे छे
तिणरे निश्चय ही ससार बधे ते जाण॥
ढाल ११ पृ० ५२

अर्थात अग्नि में जलते हुये जीवो को कोई बाहर निकाल कर बचावे कूप मे गिरते हुए को बचावे, तालाब मे डूबते हुये को बाहर निकाले अथवा ऊपर स पडते हुए को झेल कर बचा लेवे तो ये सब ससार क उपकार है। ससार का उपकार करने से निश्चय ससार (भव भ्रमण) की वृद्धि होती है अर्थात् ऐसे कार्य करने से प्राणी दुर्गतियो म भटकता है।

व्याधि अनेक कोढादिक सुनीने
तिन ऊपर वैद चलाई न आवे
अनुकम्पा आणी साजे कीधो
गोली चूर्ण दे रोग गमावे।
आ अनुकम्पा सावद्य जाणो॥
अनुकम्पा ढाल १ पृ० ४

अर्थात कोढ आदि अनेक व्याधिया सुनकर रोगी के लिये वैद्य आया और दया कर के गोली चूर्ण आदि देकर रोग मिटा दिया। यह दया सावद्य अर्थात पाप पूर्ण समझो॥

गृहस्थ ने औषध भेषज देइने
अनेक उपाय कर जीव बचायो।
यह ससार तणो उपकार किया मे
मुक्ति रो मारग मूढ बतायो
भेषधारी भूला रो निर्णय कीजे॥
अनुकम्पा ढाल ८ पृ० २८

अर्थात् औषधि आदि देकर अथवा अन्य उपायो से गृहस्थ का जीवन बचाना ससार बढाने वाला उपकार है। मूढ लोग इसे मुक्ति का मार्ग बताते है। हे वेषधारियो! अपनी भूलो का निर्णय करो।

इत्यादि वाक्यो को उद्धृत करते हुए मैंने पूछा कि इस प्रकार क वाक्यो से स्पष्ट प्रतीत होता है कि तेरह पन्थी परोपकार क कार्यों को सावद्य वा पाप युक्त बताते है जो परोपकार पुण्याय, पापाय पर पीडनम। अथात परोपकार पुण्य और दूसरो को पीडा पहुचाना पाप है इस प्राय सर्व सम्मत सिद्धान्त क विरुद्ध है इस पर आपका क्या कथन है? इस क उत्तर मे उन्होन बतलाया कि हम इन बातो का उत्तर अपन जन शास्त्रानुसार ही दे सकते है अन्य धर्मो वा मतो क सिद्धान्तानुसार नही। हमारे जैन शास्त्र सिद्धान्तानुसार धम का लक्षण 'आत्मक विकास मोक्षयोहतुर्धम यह है अथात् जो आत्मा के कल्याण और उन्नति तथा मुक्ति का कारण है वही धम है अन्य बातो को हम धम नही कह सकते चाहे वे ससार की दृष्टि से कितनी भी उपयोगी और अच्छी क्यो न हो। ज्ञान दर्शन चरित्र और तप केवल ये हमारे सिद्धान्त म मुक्ति क साधन है इन्हीं को हम धम कहते है। शेष को लोक व्यवहार वा कर्त्तव्य कह सकते हैं धम नही। मैंने कहा कि धर्म तो बड़ा विस्तृत शब्द है जिस मे व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा ससार को धारण वा उन्नत करने वाली सब बातो का समावेश हो जाता है जैसे कि वेद

व्यास जी ने महाभारत मे उसकी व्याख्या करते हुए कहा है

धारणाद् धर्म इत्याहु धर्मो धारयते प्रजा ।
यत्स्याद् धारण सयुक्त स धर्म इति निश्चय ॥

अर्थात् धर्म शब्द धृ धातु से बनता है जिसका अर्थ धारण करना है जिससे प्रजाओ (प्राणियो) का धारण हो वह निश्चय से धर्म कहाता है। वैशेषिक शास्त्रकार कणाद मुनि ने 'पावमानी र्देधन्तु न इम लोकमथो अमुम् ।' इत्यादि वेद मन्त्रो के आधार पर "यतोऽभ्युदय नि श्रेयस सिद्धि स धर्म" यह धर्म का लक्षण किया है जिसका तात्पर्य यह है कि जिससे भी अभ्युदय अर्थात् इस लोक की उन्नति हो और साथ ही आत्मिक शान्ति तथा मोक्ष की प्राप्ति हो वह धर्म कहाता है। क्या आप धर्म के इस लक्षण को नहीं मानते ? उसको इतना सकुचित क्यो करते हैं ?

इस पर श्री तुलसीराम स्वामी जी ने कहा कि हम अपने जैन शास्त्र सिद्धान्तानुसार धम का 'आत्मिक विकास मोक्षयोर्हेतुर्धर्म' यही लक्षण मानते है। 'यतोऽभ्युदय नि श्रेयससिद्धि स धर्म' इस सूत्र मे भी हमारे मन्तव्यानुसार अभ्युदय का अर्थ लौकिक अभ्युदय नहीं बल्कि आत्मिक उन्नति ही लेना चाहिये। इस पर मैंने कहा कि ऐसा मानने पर नि श्रेयस शब्द व्यर्थ हो जाता है जो आत्मिक शान्ति और मुक्ति का वाचक है अत इसका अर्थ लौकिक उन्नति ही ठीक है। साथ ही वैदिक सिद्धान्तानुसार ज्ञान, कर्म और उपासना तीनो मुक्ति के साधन हैं केवल ज्ञान वा कर्म नहीं।

इस पर श्री तुलसीरामजी स्वामी ने कहा कि हमारे जैन सिद्धान्तानुसार धर्म का सम्बन्ध केवल आत्मिक विकास और मोक्ष से है अन्य किसी वस्तु से नहीं इस लिये गोशाला, पाठशाला, अनाथालय, प्याऊ, अकालपीडितो को अन्नदान आदि किसी भी लौकिक दृष्टि से परोपकार कहलाने वाले कार्यों को हम धर्म नहीं कह सकते।

मैंने पूछा तो क्या अकाल पीडितो को अन्नदान तथा गोशाला स्थापनादि को आप अधर्म वा पाप कहेंगे ? इस पर उन्होने प्रारम्भ मे 'हा' अपने जैन सिद्धान्तानुसार धर्म भिन्न होने के कारण अधर्म वा पाप कहने मे भी हमे सकोच नहीं कह कर फिर बताया कि इन्हें हम लोकव्यवहार, लौकिक कर्तव्य, फर्ज अथवा लौकिक धम भी कह सकते हैं केवल धर्म नहीं। ऐसे कार्यो के लिये साधु न निषेध करते है और न अनुमति देते हैं क्योकि जैन शास्त्रो मे उनके लिये ऐसा ही विधान है। यदि वे कुआ बावडी आदि खुदवावे वा गोशाला, पाठशालादि की अनुमति दें तो उनके कारण जो पृथिवी जलादि अन्तर्गत जीवों की हिसा होती है उसके भी वे भागी बने और यदि सर्वथा निषेध कर तो इन कार्यों के कारण जो लोक का उपकार होता है उससे वञ्चित रखने का पाप भी उन्हें लगे। इसलिये हम जैन साधु इन विषयों मे उदासीन रहते और मौन धारण करते हैं। हम निवृत्ति मार्ग के अनुयायी हैं अत लौकिक विषयो मे हम न अनुमति देते है और न निषेध करते हैं। यह असत्य है कि हम परोपकार करने वालो को रोकते हैं। इन विषयो मे श्रावको (गृहस्थो) को पूर्ण स्वतन्त्रता है इसी लिये हमारे बहुत से शिष्यों ने बगाल मे अकाल पीडितो की सहायतार्थ अन्न तथा वस्त्र द्वारा सहायता दी तथा धमशाला, गोशाला पाठशाला, प्याऊ आदि अनेक परोपकारक काय किये जिन के करने से हमने उन्हे कभी नहीं रोका। हाँ, हम साधु निवृत्ति मार्ग का अनुयायी होने के कारण इन बातो मे नहीं आते।

हम आत्मिक परोपकार मे ही प्रवृत्त रहते हैं। धर्मोपदेश देकर हिंसा चोरी, व्यभिचार आदि पापो को दूर करने और दुष्ट मनोवृत्ति को बदलने का यत्न करते हैं हिंसा और बलात्कार क द्वारा नहीं जिससे द्वेष की वृद्धि होती है। राग और द्वेष से रहित होकर कार्य करना हमारा कर्तव्य है। हम न किसी जीव की हिंसा वा मृत्यु चाहते हैं न जीवन। इसी दृष्टि से हम लौकिक विषयो मे सर्वथा मौन वा उदासीनता का अवलम्बन करते हैं।

मैंने पूछा कि यदि आप किसी स्थान से गुजर रहे हों और वहाँ आग लग रही हो तो क्या आप आग को बुझाने के लिये प्रयत्न करेंगे ?

उन्होने कहा कि नहीं, ऐसा करना हमारे जैन सिद्धान्तानुसार साधुओं के धर्म के विरुद्ध होगा।

मैंने कहा क्या अपने समीपस्थ श्रावको (गृहस्थों) को प्रेरित करेंगे कि वे आग बुझाने का प्रयत्न करें। उन्होंने कहा कि हम अपने शास्त्रानुसार ऐसी प्रेरणा भी शिष्यो को नहीं कर सकते क्यों कि उसमे अग्निअन्तर्गत जीवो की हिंसा होगी पर हा, यदि कोई श्रावक अग्नि बुझाने के लिये यथोचित प्रयत्न करें तो हम उन्हें रोकेंगे नहीं।

मैंने कहा कि केवल न रोकना ही पर्याप्त नहीं है। साधु शब्द का तो अर्थ ही 'साध्नोति पर कार्याणि इति साधु' यह है अर्थात जो दूसरे के कार्यों को सिद्ध करे अथवा परोपकार मे अपने तन मन को लगा दे। इसलिये साधुओ को तो अपने शरीर की भी पर्वाह न करते हुए आग बुझाने तथा अन्य परोपकार कार्य दिन रात करने चाहियें। यदि आप आत्मिक कल्याण को ही धर्म और मोक्ष का साधक मानते हैं तो भी यह समझना चाहिए कि 'आत्मवत्सर्वभूतानि वीक्षन्ते धर्मबुद्धय।' अर्थात् धर्मात्मा लोग सब प्राणियों को अपनी आत्मा की तरह समझते हैं। इसलिये अन्य दु खित प्राणियो का कल्याण करना भी आत्म कल्याण के अन्तर्गत है और इस कारण वह धर्म तथा मोक्ष साधन है। इसी प्रसङ्ग मे मैंने प्रश्न व्याकरणसूत्र के 'सव्वजग जीव रक्खण दयट्ठयाए पावयण भगवया सुकहियम।' अर्थात ससार के सभी जीवों की रक्षा रूप दया के लिये भगवान तीर्थंकर से प्रवचन (जैन शास्त्र) कहा गया है' इस वाक्य को उद्धृत किया कि जैन शास्त्र का तो मुख्य प्रयोजन ही संसार के सभी जीवों की रक्षा रूप दया का उपदेश देना है।

इस पर उन्होंने कहा कि उपर्युक्त वाक्य में आयेहुए रक्षा और दया शब्द पर्याय वाची हैं इसी प्रकार अहिंसा शब्द भी है। इन तीनों का अर्थ जीवों को न मारना है जीवों को बचाना नहीं। मैंने कहा कि अहिंसा शब्द हिंसा न करने रूप निषेधात्मक वृत्ति का बोधक है किन्तु रक्षा विधानात्मक वृत्ति अर्थात केवल न मारना ही पर्याप्त नहीं पर प्राणियो पर दया दृष्टि रखते हुये उनकी रक्षा करना भी धर्म है। भगवद् गीता के 'अद्वेष्टा सर्व भूताना, मैत्र करुण एव च' में भी वही भाव है। अद्वेष रूप निषेधात्मक भाव के साथ मित्रता और दया रूप विधानात्मक भाव मिला होना चाहिए यही तात्पर्य है। श्री आचार्य तुलसीराम जी ने कुछ जैनागमो के प्रमाण देकर यही सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि जैन शास्त्र सिद्धान्तानुसार अहिंसा, दया और रक्षा ये तीनो शब्द पर्याय वाची हैं।

मैंने पूछा 'कोई मात पिता री सेवा करे दिन रात, बले मन मान्या भोजन त्याने खवाय। बले-

कावड़ काधे लिया फिरे त्यारी, वले बेहूँटकोरा स्नान करावे त्याही। ओ उपकार ससार तणो छे॥ अनुकम्पा ढाल ११ शिशुहित शिक्षा २ यभाग पृ७०

अर्थ—कोई दिन रात माता पिता की सेवा करे, उन्हें मन भाती वस्तुए खिलाए, कावड़ मे बिठा कर उन्हें कन्धे मे लिये फिरे, दोनो समय उन्हें स्नान करावे, यह ससार बढाने वाला उपकार है' इत्यादि को लेकर कहा जाता है कि आप माता पिता की पुत्रो द्वारा सेवा को भी पाप मय बताते हैं जैसे कि 'धर्म कलङ्क' मे लिखा है 'पुत्र अपने माता पिता की तथा स्त्री अपने पति की सेवा करे तो उसमे एकान्त पाप है। माता पिता को भोजन देना भी एकान्त पाप है। (धर्म का कलङ्क पृ०)

इस पर उन्होने कहा कि यदि माता पिता मास भक्षण, मद्य सेवन आदि के लिये पुत्र को कहें तो उनकी ऐसी इच्छा की पूर्ति करना पुत्र का कर्तव्य नहीं इतना ही हमारा अभिप्राय है। उनके भी आत्म कल्याण के लिये प्रयत्न करना वास्तविक उपकार और धर्म है। मैंने कहा कि माता पिता की धर्मानुकूल आज्ञाओ के पालन को ही हम भी पुत्र का कर्तव्य और धर्म मानते हैं धर्म विरुद्ध आज्ञाओं का नहीं।मैंने पूछा 'गृहस्थ भूलो उजड़ बन मे, अटवी ने बले उजड जावै। अनुकम्पा आणी साधु मार्ग बतावें, तो चार महीना रो चारित्र जावै। आ अनुकम्पा सावद्य जाणो।

अनुकम्पा ढाल १ शिशुहित शिक्षा पृ ५

अर्थात्—कोई गृहस्थ उजाड बन मे रास्ता भूल जाए और उल्टे रास्ते चलने लगे तो जो साधु उस पर दया करके रास्ता बतावे उसका चार मास का चरित्र चला जाता है ऐसी अनुकम्पा (दया) को सवद्य या पाप मय जानो ऐसा जो आप के मान्य ग्रन्थो मे लिखा है उसका क्या तात्पर्य है? किसी भूले भटके को रास्ता बताने मे क्या हानि है?

उन्होने कहा कि हमारे जैन शास्त्र मे ऐसा ही विधान है इसलिये हम इसे मानते हैं। यह भी विधान है कि 'साधु बैठा नाव माय आई, नावडिये नाव चलाई। नाव फूटी माहे आवे पानी, साधु देखी लोगा नहीं जाणी॥ १८

आप डूबै अनेरा प्राणी, अनुकम्पा किणरी आणी। बतावें तो व्रता में भगो, जिए रो साखी आचाराङ्गो

अनुकम्पा ढाल २।१८ १६

शिशुहित शिक्षा २ य भाग पृ० ८

अर्थात्—यदि किसी नौका मे साधु सवार हो और वह देख ले कि नौका में छिद्र के कारण पानी आरहा है। चाहे वह इसके कारण आप भी डूबे और अन्य भी डूब जाए पर वह दया करके किसी को न बताए यदि बतावे तो उस के व्रत में भङ्ग हो जाता है जिसके लिए आचाराङ्ग सूत्र साक्षी है।

ऐसा हमारे जैन सूत्रों का विधान है इसलिये हमे मानना पड़ता है क्योकि साधुओं का ससार से कोई सम्बन्ध नहीं। ये सूत्र हम तेरह पन्थियों के लिये ही नहीं अन्य जैनियो के लिये भी मान्य हैं अत हमारे पर ही श्वेताम्बर और स्थानक वासी सम्प्रदाय वालों का दोष देना अनुचित है।

मैंने कहा कि ऐसी बातें चाहे कहीं भी लिखी हों वे सामान्य बुद्धि और मनुष्यता की भावना के प्रतिकूल होने के कारण माननीय नहीं। साधु का तो कर्तव्य ही सब प्राणियों का उपकार है सामान्य परोपकार के कार्यों से उसे क्यों पृथक रहना चाहिये यह समझ मे नहीं आता। इस पर उन्होने फिर यही कहा कि इन विषयों में हम

अपने शास्त्रों से बँधे हुए हैं उनके सिद्धान्त को लेकर ही हम चल सकते हैं।

स्नान के विषय में भी श्री आचार्य तुलसी राम जी के शिष्यों और स्वयम् उनसे बात चीत हुई। उन्होंने बताया कि हमारे शास्त्रों में साधुओं के लिये जल से स्नान का सर्वथा निषेध करते हुए अहिंसा, सत्य, मन शुद्धि आदि रूप आभ्यन्तर स्नान का ही प्रतिपादन किया है अत हम वैसा करते हैं। मैंने कहा कि आभ्यन्तर स्नान करना तो उचित ही है किन्तु उसके साथ २ शरीर की शुद्धि और आरोग्य के लिये शुद्ध जल से स्नान भी आवश्यक है।

इस प्रकार अनेक धार्मिक विषयों पर आचार्य तुलसीराम जी स्वामी से प्रेम पूर्वक चर्चा हुई। उनके उत्तम शान्तस्वभाव, बुद्धि मत्ता और विद्वत्ता को देख कर मैं आशा करता हूँ कि जैसे वे अपने मन्तव्यानुसार आत्मिक परोपकार में तत्पर हैं और शिष्य शिष्याओं के जीवनों के सुधार तथा विद्याप्रसार में दिन रात प्रयत्न शील हैं वैसे ही वे लौकिक परोपकार विषयक अपने विचारों में उचित परिवर्तन कर लेंगे ताकि जनता में भ्रम न फैले और जैसे कि मुझ से बात चीत के पश्चात अपने सार्वजनिक भाषणों में भी उन्होंने मेरे सन्मुख कहा कि इन परोपकार के कार्यों को हम 'लौकिक धर्म' भी कह सकते हैं कम से कम उस रूप में भी रक्खेंगे तो जो भावना सर्व साधारण में फैली हुई है कि तेरहपन्थी लोग परोपकार के विरोधी हैं वह बहुत अंश तक दूर हो जाएगी। 'सार्वदेशिक' के गत जून सन् १९४४ के अङ्क में जो सम्पादकीय टिप्पणी प्रकाशित हुई थी पाठक महोदय उसको श्री आचार्य तुलसीराम जी द्वारा की गई उपर्युक्त व्याख्या के प्रकाश में पढ़ने का कष्ट उठाएं।

जाँच करने पर विश्वस्त सूत्र से मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि अनेक तेरहपन्थी सम्प्रदाय के अनुयायी धनी मानी सज्जन औषधालय, विद्यालय, अनाथालय, गोशाला आदि परोपकारक संस्थाओं के सचालनार्थ अपने धन का उदारता पूर्वक उपयोग करते हैं। उदाहरणार्थ गंगा शहर (बीकानेर रियासत) के मेसर्स भैंरुदान ईश्वर चन्द्र चौपड़ा फर्म ने ६० हजार की राशि गङ्गाशहर में अवस्थित सेठ भैरू दान चौपड़ा स्कूल के लिये, बीकानेर शहर में प्रिंस विजयसिंह जी मेमोरियल हास्पिटल के लिये ५१ हजार, गुसाईसर ग्राम में ग्रामवासियों के लाभार्थ कुआँ बनाने के लिये ४५ हजार बनारस के हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए ११ हजार, तथा साबरमती आश्रम के लिये १० हजार, बीकानेर में स० १९९५ और १९९६ में अकाल पीड़ितों की सहायतार्थ १७ हजार, बंगाल में अकाल पीड़ितों की सहायतार्थ २५ हजार की राशि दान रूप में दी। ऐसे ही देहली के सेठ गिरिधारीलाल जी, सेठ मोहनलाल जी कठौतिया आदि ने भी अकाल पीड़ितों की सहायता तथा अन्य परोपकारक कार्यों में पर्याप्त दान दिया। अन्त में आचार्य तुलसीराम जी तथा उनकी शिष्य मण्डली का उनके प्रेममय व्यवहार के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। मुझे यह उत्तम अवसर चन्द्रशेखर शास्त्री जी तथा श्री साधु कस्तूमल जी की विशेष प्रेरणा पर तथा श्री सेठ गिरिधारीलाल जी के सुपुत्र सुमेरचन्द्र जी के साथ प्राप्त हुआ अत वे तीनों भी विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

पुनश्च—एक अन्य आवश्यक विषय का उल्लेख ऊपर के वर्णन में छूट गया है। मैंने श्री

तुलसीराम जी स्वामीसे पूछा कि यह कहा जाता है कि आप के सिद्धान्तानुसार तेरहपन्थी साधुओं के अतिरिक्त अन्य किसी को भी दान देना एकान्त पाप है। वह इतना ही पाप जनक है जैसा मास मद्य सेवन, व्यभिचारादि। क्या यह सत्य है?

इस पर उन्होने कहा कि यह सर्वथा असत्य है। हम लोग देश काल पात्र का विचार किये बिना दान देने के विरोधी हैं। हमारा यह कथन नहीं है कि केवल तेरहपन्थी साधु दान के अधिकारी हैं और अन्यो को दान देने से पाप होता है। साधु से तात्पर्य सभी अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्यादि व्रतों का पालन करने वाले सज्जनो से है केवल तेरहपन्थी साधुओं से नहीं जिस पर मैंने भगवद् गीता के

अदेशकाले यद् दानम्, अपात्रेभ्यश्च दीयते।
असत्कृतमवज्ञात, तत् तामसमुदाहृतम्॥
दातव्यमिति यद् दान, दीयते ऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च, तद्दानं सात्त्विक स्मृतम्॥

इन श्लोको को उद्धृत किया जिन से उन्होने पूर्ण सहमति प्रकट की। इस विषयक आरोप को उन्होंन सर्वथा असत्य बताया।

इस्लाम में सुधार की आवश्यकता

विचार शील मुसलमानों तथा अन्य विद्वानों के विचार

(संग्रहीता-प० धर्मदेवजी विद्यावाचस्पति अध्यक्ष अनुसन्धान विभाग सार्वदेशिक सभा देहली)

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में इस्लाम की आलोचना केवल सुधार और सत्यप्रचार के पवित्र भाव से की इस बात को अनेक उद्धरणो द्वारा पहले भी बताया जा चुका है। समीक्षा स० ३० के अन्त मे महर्षि दयानन्दजी ने लिखा 'हां, जो हम लोग वैदिक हैं वैसे ही तुम लोग भी वैदिक हो जाओ तो बुतपरस्ती आदि बुराइयो से बच सको अन्यथा नहीं, तुम को जब तक अपनी बड़ी बुतपरस्ती को न निकाल दो तबतक दूसरे छोटे बुतपरस्तो के खण्डन से लज्जित हो के निवृत्त रहना चाहिए और अपने को बुतपरस्ती से पृथक् करके पवित्र करना चाहिये।

(देखो समीक्षा स० ३०)

समीक्षा स० १४४ मे महर्षि दयानन्द ने लिखा "परमात्मा मुसलमानो पर कृपादृष्टि करे जिससे ये लोग उपद्रव करना छोड के सबसे मित्रता से वर्तें, (समीक्षा स० १४४)

'परमात्मा सब मनुष्यो पर कृपा करें कि सब से सब प्रीति, परस्पर मेल और एक दूसरे के सुख की उन्नति करने मे प्रवृत्तहो। यह थोड़ा सा कुरान के विषय मे लिखा इसको बुद्धिमान् धार्मिक लोग ग्रन्थकार के अभिप्राय से समझ लेवें। यदि कहीं भ्रम से लिखा गया हो तो उसको शुद्ध कर लेवे। (सत्यार्थप्रकाश चतुर्दश समुल्लास पृ० ७८६ गोविन्द राम हासानन्द संस्करण ५ म सं०)

इत्यादि से महर्षि दयानन्द का पवित्र भाव स्पष्ट है। महर्षि दयानन्द के समकालीन अनेक विचार शील मुसलमान भी इस्लाम में सुधार की आवश्यकता को अनुभव करने लग गये थे यह मौलाना अल्ताफ़ हुसैन हाली आदि के ग्रन्थों के पढ़ने से स्पष्ट ज्ञात होता है। हाली का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ जो मुसद्दसहाली के नाम से विख्यात है पहले पहल जून सन्१८७६ में छपा। उसके सदी एडीशन मे जो हाली पब्लिशिंग हाउस देहली द्वारा सन १६३५ मे प्रकाशित हुआ है पृ० ६२ पर लिखा है:-

नबी को जो चाहें खुदा कर दिखाएं
इमामो का रुतबा नबी से बढ़ाए
मजारो पे दिन रात नज़रें चढ़ाए
शहीदो से जा जा के मांगे दुआएं
न तौहीद मे कुछ खलल इससे आये
न इस्लाम बिगड़े न ईमान जाए ॥

मुसलमानो की उस समय की प्रकृति का चित्रण उन्हो ने इन शब्दो में किया है:—

उसे जानते हैं बड़ा अपना दुश्मन
हमारे करे ऐब जो हम पर रोशन।
नसीहत से नफ़रत है नासेह से अनबन
समझते है हम रहनुमाओ को रहज़न।
यही ऐब है सब को खोया है जिसने
हमे नाव भर कर डुबोया है जिसने ॥

आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी के एम० ए० श्री खुदाबख्श B. C L Bar at Law ने Essays 'Indian and Islamic नामक अपनी सन् १६१२ मे लण्डन (Probsthain & co 41 Great Russell Street

London WC) मे छपी पुस्तक में वर्तमान कालीन इस्लाम के विषय मे लिखा कि–

Modern Islam, with its hierarchy of priesthood, gross fanaticism, appalling ignorance and superstitious practices, is indeed a discredit to the Islam of the prophet Mohamhmed Instead of unity, we have Islam torn into factions, instead of culture, we have indifference to learning instead of liberal minded toleration, we have gross bigotry, but this intellectual darkness must necessarily be followed by intellectual dawn and we trust that it is not now far distant or too long in coming'

(Essays Indian and Islamic by S Khuda Bukhsh M A B C L Bar at Law P 24)

अर्थात् वर्तमान इस्लाम जिस मे धर्माध्यक्षो का प्रभुत्व, भयङ्कर मतान्धता, भीषण अज्ञान तथा अन्धविश्वास पूर्ण अनुष्ठान पाये जाते है वास्तव मे मुहम्मद पैगम्बर के इस्लाम पर कलङ्क रूप है। एकता के स्थान पर हम इस्लाम को अनेक सम्प्रदायो मे विभक्त पाते हैं। संस्कृति के स्थान पर हम शिक्षा की उपेक्षा और उदारता पूर्ण सहिष्णुता के स्थान पर भयङ्कर मतान्धता पाते हैं। किन्तु इस बौद्धिक अन्धकार का स्थान बौद्धिक उषा वा जागृति को अवश्य लेना चाहिये और हमारा विश्वास है कि यह जागृति शीघ्र आने वाली है। 'Religious Observance' शीर्षक के Thoughts on the Present situation के ७ म लेख मे मुसल्मानो के वर्तमान विश्वासो तथा अवस्था का जो वर्णन किया है वह भी इस प्रसङ्ग मे उल्लेखनीय है जिससे स्पष्ट है कि विचारशील मुसलमान इस्लाम मे सुधार की आवश्यकता को कितनी प्रबलता से अनुभव करते हैं।

श्री खुदा बख्श एम० ए० लिखते हैं —

Sin as much as you may, a visit to the Karbalah or blessings from a Mujtahid would white wash all and secure an assured passport to Paradise The belief, though hidden, is yet fully confessed that a pilgrimage to Mecca or a visit to the Karbalah is a sufficiant atonement for the sins, execesses and incontinences of a life time What a caricature what a travesty of Islam in all this (P 264)

We have muftis who would willingly give any fatva you want, provided you only made it worth their while to do so, and mujtahids who would unblushingly sanction incest if their pockets were only well lined with gold and silver

Our modern Indian Islam is a pliant flexible accomodating Islam which fails to make the distinction between right and wrong, religious devotion and rankest fanaticism It is of little moment whether you lead an immoral life, rob an infant of his heritage, break the plighted Oath, commit perjury in law courts, look upon mankind as fair-game, and regard life from the narrow stand—point of personal pleasure and advancement All this

you may do and much more with inpunity, so long as you keep a long, flowing beard, declare the rest of mankind as kafir, doomed to eternal damnation, perform the five daily prayers without under standing or trying to understand what they mean, and fast in the Ramzan These are the creden tials which we now require to enter the Paradise of the Prophet, peopled with huris as fair and exquisite and beautiful as polished ivory While the true spiritof our religion has departed fr m us we are asfanatical as ever, fanaticism Unreasoned and un reasoning, is the Lord we Implicitly obey It is a distressing fact that in India religion is made the base of the most hostile operations by one community against another It is a fact which we must not and dare not over look if we are to share our common burden to work f r our common good (Essay Indian and Islamic by Khuda Bukhsh M A B C L P 264 265)

अर्थात् तुम चाहे जितने भी पाप कर सको करो, कार्बला के दर्शन या मुजतहिद (बडे धर्माचार्य) के आशीर्वाद से वे सब पाप धुल जाएगे और स्वर्ग का पासपोर्ट निश्चिततया मिल जाएगा। यह विश्वास यद्यपि अर्धगुप्त अवस्था मे रक्खा जाता है तथापि पूर्णतया स्वीकार किया जाता है कि मक्का की यात्रा या कर्बला के दर्शन जीवन भर के पापो, ज्यादतियो और अपवित्रता (व्यभिचारादि) के लिये पर्याप्त प्रायश्चित्त है। यह इस्लाम की कसी हँसी उडाना है कितनी हास्यजनक वस्तु है ?

हमारे मे ऐसे मुफ्ती लोग हैं जो खुशी से जो चाहो फतवा देंगे यदि तुम उनकी जेबें भर दो ऐमे ही मुजतहिद है जो बिना सकोचके व्यभिचार तक का समर्थन कर देगे यदि तुम उनको काफी सोना चॉदी दे दो। हमारा वर्तमान भारतीय इस्लाम एक ऐसा लचीला इस्लाम है जो अच्छे और बुरे का, तथा धार्मिक भक्ति और हीनतम मतान्धता का भेद करने मे भी असमर्थ है। इस बात की कोई चिन्ता नहीं यदि तुम दुराचारमय जीवन व्यतीत करते हो, एक बच्चे को उसके उत्तराधिकार से वचित करते हो, शपथ को तोडते हो, अदालतो मे झूठी शपथ खाते वा झूठी गवाहीं देते हो, मनुष्य मात्र का एक खेल समझते और जीवन को केवल वैयक्तिक प्रसन्नता और व्यक्तिकी ही दृष्टि से देखते हो। यह सब कुछ और इससे भी अधिक ऐसी चीजे तुम बिना हानि के कर सकते हो जब तक कि तुम लम्बी दाढी रखते हो, मुसलमानो क अतिरिक्त सब मनुष्यो को काफिर और इसलिए सदा क लिये नरक की यातना का पात्र घोषित करते हो, ५ वार रोज नमाज पढते हो, चाहे उसके अर्थ को न समझो न समझने का यत्न करो और रमजान क रोजे वा उपवास रखो। अब ये प्रमाण पत्र है जिनको हम सुन्दराङ्गी हूरियो से भरे हुए जन्नत (स्वर्ग) मे प्रवेश के लिये आवश्यक समझते है। जब कि हमारे धर्म की सच्ची भावना हममे लुप्त हो चुकी हम इतने ही मतान्ध वा हठ धर्मी है जितने सदा

से रहे हैं। बुद्धि विरुद्ध, तर्क विरुद्ध मतान्धता या हठधर्मिता रूप प्रभु की आज्ञा को हम आँख मूँद कर मानते हैं। यह बड़े दुःख की बात है कि भारत में धर्म एक जाति के दूसरी के विरुद्ध आक्रमण का आधार बनाया जाता है। यह एक सचाई है जिस को हमें कभी न भूलना चाहिये, कभी ऐसा करने का साहस न करना चाहिए यदि हमें अपने समान भार को, वहन कर सकना है अथवा संयुक्तरूप से अपने कल्याण के लिये कार्य करना है महर्षि दयानन्द कृत समालोचना का उद्देश्य इस प्रकार की बुद्धि विरुद्ध मतान्धता व हठ धर्मिता को इस्लाम तथा अन्य मतों से दूर रहना था यह सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से स्पष्ट है।

सन् १९३८ में मैसूर युनिवर्सिटी में ईरानियन भाषा और साहित्य के प्रोफेसर मुहम्मद अली शश्ती (A M A Shushtery Professor of Iranian language and literature University of Mysore) नामक विचार शील मुसलमान विद्वान् ने Outlines of Islamic Culture नाम की पुस्तक दो भागों में लगभग ८०० पृष्ठों में लिख कर प्रकाशित कराई है। इसमें 'Muslim Scholasticism शीर्षक १९ वां अध्याय इस दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है कि उसमें उन्होंने विचार शील मुस्लिम विद्वानों के विचारों का निष्कर्ष दिया है। मतज़ला सम्प्रदाय (Motagala School) जो आठवीं नवीं सदी में विचार शील मुसल्मान विद्वानों के अन्दर प्रचलित था उसके सिद्धान्तों को प्रो० शूश्ती ने अपनी पुस्तक के दूसरे खण्ड के ५५४ से ५६३ पृष्ठ तक विस्तार से दिया है। उसमें से कुछ आवश्यक सिद्धान्तों को जिनका हमारे विषय के साथ विशेष सम्बन्ध है प्रो० शूश्ती के शब्दों में पाठकों के परिचयार्थ उद्धृत करते हैं ताकि उन्हें तुलनात्मक दृष्टि से अनुशीलन का अवसर मिल सके।

(1) Gods attributes are identical with His being Dotlrine No, 2

(2) The words face, hands and eyes of God and His sitting on the throne—must be taken in a Metaphorical sense Doctrine No 3

(3) 'Man has free will and is the author of his action and therefore liable to punishment in hell, if he does evil, and is deserving of reward in paradise, if he acts virtuously

(4) Evil cannot be referred to God It is human Doctrine No 10

(5) God is Just and Justice is indispensable with him Towards man, justice is his animating principle Doctrine No 11

(6) Knowledge is attained through reason, which is a power distinguishing between good and bad, between the real and the not real If reason judges an action to be good, it is good, and if evil, it is evil Distinction between good and bad is within the power of human reasoning. Doctrine No 13

(7) Knowledge of God is attainable through the intellect No. 14

(8) That which accords with reason and wisdom is Justice Doctrine No 16

(9) God does not predestinate Man's action Doctrine No 17

(10) A Muslim guilty of great sin and dying without repentance will be eternally damned Doctrine No 18

(11) One must not obey the law of religion without reflecting and knowing its truth Theology should be subject to investigation and based upon rationalistic foundations and logical conclusions Doctrine No 19

(12) They rejected the idea of the Wali (sage) which involves belief in one Muslim enjoying special privilege by performing miracles and wonderful deeds, on the ground that if one Muslim can do this, the others must be able to do the same Doctrine No 21

(13) They deny the vision of God as believed in by Orthodox Muslims Doctrine No 22,

(14) They did not recognise the idea ef intercession of the Prophet on behalf of guilty Muslims on the day of resurrection, and considered that man does not stand in need of a mediator to retconcile him with God and that each man will be judged according to his deeds Doctrine No 23

(Outlines of Islamic Culture by A M A Shushtery Vol 1 555 556)

१ ईश्वर वा खुदा के गुण उसके अस्तित्व के सहवर्ती और समान रूप हैं उन से पृथक् नहीं। 'सिद्धान्त स० २'

२ खुदा के मुंह, हाथ और आँख तथा उसका तख्त पर बैठना आदि इन को आलङ्कारिक रूप मे लेना चाहिये (सि० स० ३)

३ मनुष्य की स्वतन्त्र इच्छा शक्ति है और वह अपने कार्य का स्वतन्त्र कर्ता है। इसलिये यदि वह बुरे कर्म करता है तो नरक की यातना का और अच्छे काम करता है तो स्वर्ग मे सुख रूप पुरस्कार का अधिकारी बनता है (सि० स० ८)

४ बुराई का परमेश्वर के साथ कोई सम्बन्ध नहीं जोडा जा सकता। यह मानवीय है। (सि० स० १०)

५ परमेश्वर न्यायकारी है और न्याय उस के लिये अनिवार्य है। मनुष्य के प्रति न्याय ही उसका प्रेरक सिद्धान्त है। (सि० स० १०)

६ ज्ञान की प्राप्ति तर्क द्वारा होती है जो अच्छे और बुरे मे, सत् और असत् मे भेद करने वाली शक्ति है। यदि तर्क किसी बात के अच्छे होने का निर्णय करे तो अच्छा और बुरे होने का निर्णय करे तो वह बुरा होता है। अच्छे और बुरे म भेद करना मानवीय तर्क की शक्ति के अन्दर विद्यमान है (सि० स० १३)

७ ईश्वर का ज्ञान बुद्धि द्वारा प्राप्तव्य है।
(सि० स० १४)

८ न्याय वह है जो तर्क और ज्ञान के अनुकूल हो। (सि० स० १६)

९ ईश्वर (खुदा) मनुष्य के कार्यों को पहले से निश्चित नहीं कर लेता (सि० स० १७)

१० एक मुसलमान जो बड़ा पाप करता है और प्रायश्चित्त किये बिना मरता है सदा के लिये दण्ड का भागी होगा (सि० स० १८)

११ किसी को भी धर्म नियम का पालन उसकी सचाई पर विचार किये और जाने बिना नहीं करना चाहिये। धार्मिक सिद्धान्त विज्ञान की भी खोज होनी चाहिए और उसका आधार तर्क सम्मत तथा तर्क के परिणामो पर होना चाहिये। (सि० स० १६)

१२ ये मोतजला लोग वली वा ऋषि के विषय मे इस भाव को कि वह चमत्कार कर सकता है अस्वीकृत करते थे इस आधार पर कि यदि एक मुसलमान ऐसा कर सकता है तो औरो को भी ऐसा करने मे समर्थ होना चाहिये। (सि० स० २१)

१३ वे साधारण कट्टर मुसलमानो द्वारा स्वीकृत खुदा के आँखो द्वारा दर्शन को नहीं मानते और उससे इन्कार करते थे। (सि० स० २२)

१४ वे निर्णय दिवस पर अपराधी मुसलमानो की ओर से पैगम्बर मुहम्मद की सिफारिश के विचार का अनुमोदन नहीं करते थे और उनका विचार था कि मनुष्य का ईश्वर के साथ सबंध जोड़ने के लिये किसी बिचौलिये की आवश्यकता नहीं और प्रत्येक मनुष्य का निर्णय उसके अपने ही कर्मों द्वारा किया जाएगा। (सि० स० २३)

मोतजला सम्प्रदाय के प्रवर्तक वासिर का जो ७५३ ईस्वी मे उत्पन्न हुआ यह सिद्धान्त था कि (1) The Prophet (and not God) was the authoı of Quran

(2) Reason is higher than tradition,
(3) Man possesses free will

(See Outlines of slamic Culture 556

अर्थात् अल्लाह नहीं बल्कि पैगम्बर मुहम्मद कुरान का रचयिता था (२) तर्क जनश्रुति वा परम्परागत विश्वास की अपेक्षा ऊंचा है (३) मनुष्य के अन्दर स्वतन्त्र इच्छा शक्ति है।

मोतजला सम्प्रदाय के अनुयायियो में भी बहुत से भेद हो गये थे । उनमे से अशरस के पुत्र थुमामेह (Thumameh son of Ashras) के विषय मे लिखा है,

"Thumameh son of Ashras, considered matter as eternal God according to him, created the world by His nature, which means, the Divine being, by His nature, is compelled to produce the world as the light of sun shines by its nature and not by intention'

(P 559)

अर्थात् अशरस का पुत्र थुमामेह प्रकृतिको नित्य मानता था। उसके अनुसार खुदा ने ससार को प्रकृति से उत्पन्न किया जिसका तात्पर्य यह है कि खुदा अपने स्वभाव से ससार बनाने के लिये एक प्रकार से बाध्य है जैसे कि सूर्य का प्रकाश अपने स्वभाव से ही चमकता है न कि सकल्प पूर्वक । इन शब्दो को पढ़ते हुए महर्षि दयानन्द के स्वमन्तव्यामन्तव्य के निम्न शब्दो का सहसा स्मरण हुए बिना नहीं रह सकता कि 'सृष्टि का प्रयोजन यही है कि जिस में ईश्वर के सृष्टि निमित्त गुण, कर्म, स्वभाव का साफल्य होना । जैसे किसी ने किसी से

पूछा कि नेत्र किस लिये है ? उसने कहा देखने के लिये। वैसे ही सृष्टि करने के ईश्वर के सामर्थ्य की सफलता सृष्टि करने में है (स्वमन्तव्यामन्तव्य स० ६) हेत (Haet) के पुत्र और नजाम के शिष्य अहमद के विषय में लिखा है कि'

Ahmad divides men into those who are virtrous who will be rewarded with Paradise, and those who are wicked, who will be punished in Hells and those whose deeds are a mixture of good and bad, such people being made to return to this world either as men or as some animals till they are purified This is the Muslim theory of transmigration which some other schools of Motaazlas accepted with certain, modifications

(Outlines of Islamic Culture by A M A Shushtery Vol 1 (P 560)

अर्थात् अहमद ने मनुष्यों को दो श्रेणियों में बटा है जो धर्मात्मा हैं वे स्वर्ग में जायगे और जो पापी हैं उन्हें नरक का दण्ड मिलेगा। जिनके कर्म अच्छे और बुरे कामों के मिश्रण रूप में होंगे उनको मनुष्य या पशुओं के रूप में इसी संसार में फिर लौटा दिया जाएगा जब तक वे पवित्र न हो जाएं। यह मुसलमानों में पुनर्जन्म का सिद्धान्त है जिसको कुछ सशोधनों के साथ मुतजलों के कई सम्प्रदायों ने स्वीकार किया था।

बहर के पुत्र अमीर (उपनाम जहीज) नामक सुप्रसिद्ध विचारक और विद्वान् के विचारों का उल्लेख करते हुए जिस का देहान्त ८७७ ईस्वी में हुआ प्रो० शूस्त्री ने लिखा है कि

Jahiz says that God does not possess a form He is just and can not therefore be the cause of evils Good and evil are connected with a human being for which he alone is responsible Jahiz believed in the eternity of matter and was regarded by orthodox Muslims as a free thinker P 561

अर्थात् जहीज का विश्वास था कि ईश्वर का कोई रूप नहीं। ईश्वर न्यायकारी है और इस लिये वह बुराई का मूल नहीं हो सकता। अच्छाई और बुराई का सम्बन्ध मनुष्य के साथ है जिसके लिये वही जिम्मेवार है। जहीज प्रकृति (माद्दा) की नित्यता में विश्वास करता था और इस लिये कट्टर मुसलमान उसे स्वतन्त्र विचारक मानते थे।

अमीर के पुत्र हिशाम के विषय में जो हिशा मिय्या सम्प्रदाय का प्रवर्तक था प्रो० शूस्त्री ने लिखा है कि —

Hisham emphasised, more than other Motazala scholars the doctrine of free will, to the extent of saying that faith is not granted by God, as stated in the Quran, but gained by human endeavour and understanding He also rejected the idea that God seals the hearts of Unbelievers and asserted that evil is due to human defect and tendency towards evil, on the plea that if evil and good are held to originate from God, man would become irresponsible for his deeds "

(Outlines of Islamic Culture vol. 1 P 561)

अर्थात् हिशाम ने अन्य सब मुतजला विद्वानों

से बढा कर स्वतन्त्र इच्छा शक्ति पर बल दिया था यहां तक कि उसका कथन था कि विश्वास ईश्वर द्वारा नहीं उत्पन्न किया जाता जैसे कि कुरान मे लिखा है बल्कि वह मानवीय यत्न और बुद्धि द्वारा प्राप्त किया जाता है। वह इस विचार से भी इन्कार करता था कि खुदा काफिरो के दिलो पर मोहर लगा देता है और वह कहता था कि बुराई मानवीय दोष और कुप्रवृत्ति के कारण होती है इस आधार पर कि यदि अच्छाई और बुराई का मूल खुदा को माना जाए तो मनुष्य अपने कामो के लिये जिम्मेदार नही ठहराया जा सकेगा।

इन वाक्यो को पढ़ते हुए महर्षि दयानन्दजी की इस समीक्षा का स्मरण हो उठता है जो उन्होने सू० २ आ० ६ 'अल्लाह ने उनके दिलो कानो पर मोहर करदी और उनकी आखो पर पर्दा है और उनके वास्ते बडा अजाब है' इस आशय की आयत पर की है कि -"जो परमेश्वर ही ने उन के अन्तःकरण और कानो पर मोहर लगाई और उसी से वे पाप करते है तो उनका कुछ भी दोष नहीं यह दोष खुदा का ही है फिर उन पर सुख दुःख वा पाप पुण्य नहीं हो सकता पुनः उन को सजा क्यो करता है? क्यो कि उन्होने पाप वा पुण्य स्वतन्त्रता से नहीं किया।"

(सत्यार्थ प्रकाश १४ वा समुल्लास समीक्षा स० ५)

'किसी के मन पर मोहर लगाना, किसी का रोग बढाना यह खुदा का काम नहीं हो सकता क्योकि रोग का बढाना अपने पापो से है।

(समीक्षा स० ६)

ऊपर उद्धृत मोतजला सम्प्रदायके विद्वानो के विचारों को ध्यान पूर्वक पढ़ने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि महर्षि दयानन्द जी ने इस्लाम के सिद्धान्तो पर जो आक्षेप किये थे उनमे से बहुतो की ओर स्वयं विचार शील मुसल्मान विद्वानों का ध्यान गया था और उन्होंने अपनी दृष्टि से उसके सुधार वा उसकी नई व्याख्या का प्रयत्न किया था। किन्तु मुसलमानो के कट्टर पन के कारण उन को अपने प्रयत्न मे सफलता प्राप्त नहीं हुई। कट्टर मुसलमानो ने उनके विचारो का घोर विरोध किया और अबुल हसन अशारी के नेतृत्व मे उनके विरुद्ध बडे जोरो का प्रचार किया। खलीफा हारून आदि ने मुतजला लोगो पर बड़े अत्याचार किये और अन्त मे मुगलो के आक्रमण के समय मुतजला सम्प्रदाय जो इस्लाम को तर्क के साथ मिलाने का विशेष प्रयत्न कर रहा था सर्वथा लुप्त हो गया। उसका स्थान अबुल हसन अशारी द्वारा प्रवर्तित अशेरा सम्प्रदाय ने लिया जिस के मुख्य सिद्धान्त प्रो० शब्ली ने इन शब्दो मे बताये है कि—

(1) God does whatever He pleases

(2) From His eternal will, both good and evil proceed

(3) God's Justice is not in the sense adopted by man He may punish man for good action and reward for bad deeds

(4) God may do whatever He pleases with His creatures No law including Justice, can limit His action

(5) He must be known through religion and not by reflection or rational argument

(6) God has settled upon His throne as He says in the Quran,

'The Beneficent God is firm upon His throne, (Ch XX 5)

(7) He has face as in the Quran, And will endure the face of your Lord' (Ch LV 2)

(8) He has two hands as in the Quran "What prevented you that you should do obes sance to him whom I created with my two hands (Ch 38 75)

(9) All good and bad come from God

(10) He guides some towards right belief and leads astray otheıs to be misguided

(11) Through the intercession of the Prophet, God will release some from the punishment of hell

(12) Men are tempted by Satan as declared in the Quran "But Satan made them both fall from it and caused them to depart from that in which they were, (Ch. 11 36)

(See Outlines of Islamic Culture by A M, A Shusterv Vol 11 P 562)

अर्थात् खुदा की जो मर्जी हो वह करता है (२)उसकी नित्य इच्छासे ही अच्छा बुरा सब निकलता है (३) ईश्वर का न्याय मनुष्य के विचारो के अनुसार नहीं। वह चाहे तो अच्छे कामो के लिये मनुष्य को दण्ड दे सकता है और बुरे कामो के लिये इनाम दे सकता है (४) खुदा अपने बनाये प्राणियों के साथ जो मर्जी कर सकता है जिस में उसकी खुशी हो। कोई भी नियम वा न्याय उसके कार्यों की सीमा नही बाँध सक्ता (५)उसका ज्ञान सिर्फ मजहब द्वारा हो सक्ता है विचार वा तर्क द्वारा नही (६) खुदा अपने तख्त पर बैठा है जसे कि कुरान सूरा २० आ ५ मे कहा है (७) खुदा का मुह है जैसे कि सूरा ५५ आयत २ में लिखा है (८) खुदा के २ हाथ है जैसे कि सूरा ३८ आयत ७५ मे लिखा है (९) अच्छाई बुराई सब खुदा से निकलती हैं (१०)वह कईयो को सीधे रास्ते और विश्वास की ओर लाता है और कइयो को गुमराह वा पथ भ्रष्ट करता है ११पैगम्बर मुहम्मद की सिफारिश पर खुदा कइयो को दोजख (नरक) की सजा स मुक्त कर देगा (१२) शैतान मनुष्यो को बहकाता है जैस कि कुरान ० २६ आदि मे बताया है।

इसप्रकार यह स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द जी ने जिन मुस्लिम सिद्धातो की आलोचना की है कुछ थोडे से विचारक मुस्लिम विद्वानो को छोड़ कर सब उन्हीं को मानने वाले थे और उनकी आलोचना सर्वथा युक्ति युक्त और ठीक है। सर सय्याद अहमदखाँ आदि ने भी अनेक मुस्लिम विश्वासो यथा स्वर्ग कल्पनादि की कठोर आलोचनाकी तथा अन्यो की नई तर्क सङ्गत व्याख्याका प्रयत्न किया। प्रो शूस्त्री ने The Future of Islam नामक २५ वे अध्याय मे इस्लाम के भविष्य क विषय मे कई बड़ी अच्छी बाते कहीं है तथा भारतीय मुसलमानो की वर्तमान शोचनीय दशा का भी उन्होने चित्र खैंचा है। वे लिखते है कि

"Islam is practical though in India, Muslims live in dream land,' 'Islam teaches progress, though Muslims in India are hopelessly backward in most branches of life.' P 765

"Islam encourages social reform Those Muslims who have sense enough for example, the Turks, have torn to pieces all those customs which have proved obstacles in the way of progress and yet remain good Muslims Indian Muslims can do the same They need not give up Islam—and they should not—but they must give up superstition

(Outlines of Islamic Culture by Prof Shushtery Vol II P 766)

अर्थात् इस्लाम उन्नति करना सिखाता है पर भारत मे मुसलमान जीवन के अनेक विभागो मे निराशापूर्ण रीति से पिछड़े हुए है। इस्लाम समाज सुधारको प्रोत्साहित करता है। जो मुसलमान समझदार हैं उदाहरणार्थ तुर्क,उन्होने उन्नति में बाधक सब प्रथाओ के टुकड़े २ कर डाले हैं और तो भी वे अच्छे मुसलमान बने रहे हैं। भारतीय मुसलमान भी ऐसे ही कर सकते हैं। उनको इस्लाम का परित्याग करने की आवश्यकता नहीं—और उनको ऐसा नहीं करना चाहिये—परन्तु उन्हें अन्धविश्वास का परित्याग अवश्य कर देना चाहिये।

महर्षि दयानन्द जी की आलोचना का उद्देश्य इसी अन्धविश्वास को दूर करना था।

इसलाम के भविष्य के विषय मे उपसहार करते हुए सुयोग्य लेखक अपनी पुस्तक क अन्त मे लिखते हैं —

'It is difficult to predict the future of Islam as world religion But it is certain that Islam, as interpreted, taught and brought into practice by the conservative and Orthodox Mullas or Moulvis, can not endure long Similarly, the belief in Pirs and Fakirs (who though they may call themselves Sufis, exploit the ignorant masses) may have to end before long If Islam is to continue to capture the hearts of man kind its future will have to be based upon the following passage of the Quran —

'Those who believe (Muslims) and those who are Jews, and the Christians and Sabians who ever believes in God and the last day and does good deeds, they shall have their reward from their Lord and there will be no fear for them nor they shall grieve (Ch, 11,62)

Islam s great message is the Unity of God and the fraternity of human beings All those who adhere to these principles in theory and practice, can be called true Muslims, in what ever else they may differ and not agree The form of worship may not remain as it is at present and the language of prayer may be changed from Arabic into some local vernacular as has been done in Turkey and Muslims of various nationalities may imitate Christians and translate and read the Quran in their

own language, but the spirit of Islamic teaching is so deep rooted in Muslim hearts that it will re appear brighter and much more refined among future generations, if only its true principles of the Fatherhood of God and the brother hood of man are grasped and acted upon without qualifications and without meaningless abjura tions, which can only lead away those professing it from the Eternal Truth proclaimed by it "

(Out lines of Islamic Culture Vol II P 767 768)

तात्पर्य यह है कि विश्वधर्म के रूप मे इस्लाम के भविष्य के विषयमे कहना कठिन है किन्तु यह निश्चित है कि कट्टर पन्थी मुल्लाओ या मौलवियो द्वारा प्रतिपादित, प्रचारित अथवा क्रियात्मक रूप मे परिणत इस्लाम देर तक नहीं ठहर सकता। इसी तरह पीरो और फकीरो मे विश्वास (चाहे वे अपने को सूफी कह कर अशिक्षित जनता को क्यो न ठगें) भी शीघ्र छोडना पडेगा। यदि इस्लाम ने लोगो के दिलों पर अधिकार जमाना है तो उसे कुरान के निम्न वाक्य के आधार पर स्थापित करना होगा "जो विश्वासी (मुसलमान) है और जो यहूदी, ईसाई पारसी आदि मतावलम्बी है, जो भी ईश्वर और अन्तिम दिवस मे विश्वास करते है और अच्छे कार्य करते है उन को ईश्वर (खुदा) की ओर से इनाम मिलेगा और उन्हे कोई डर वा शोक न होगा।' (कुरान २-६२)

इस्लाम का बडा सन्देश ईश्वर के एकत्व और मनुष्यों के भ्रातृ भाव का है। वे सब जो इन सिद्धान्तो को मानते और इन पर आचरण करते है चाहे वे अन्य बातो मे कितना भी मत भेद रखते हो वे सब सच्चे मुसल्मान कहे जा सकते हैं। पूजा (इबादत) का प्रकार वही न रह सकेगा जो आज कल है और प्रार्थना की भाषा भी अरबी से बदल कर कोई स्थानीय वा देशी भाषा करनी पडेगी जैसे कि तुर्किस्तान मे किया गया है। अनेक देशो के मुसल्मान कुरान का अपनी २ भाषाओ मे अनुवाद करा कर ईसाइयो के समान उसे पढ सकते है किन्तु इस्लाम की भावना मुस्लिम हृदयो मे इतनी बद्ध मूल है कि वह भाविसन्ततिमे अधिक उत्तम रूप म चमकगी यदि केवल इस के ईश्वर (खुदा) के पिता और मनुष्य मात्र के भ्रातृभाव रूप सच्चे सिद्धान्तो का समझा और उन पर आच रण किया जाए तथा निरर्थक शर्त इत्यादि का परित्याग किया जाए जो लोगो को नित्य सत्य से (जिस का यह दावा करता है) विमुख करने मे ही सहायक हो सकते है।

प्रो० शूस्त्री क ये विचार उनके हृदय की विशालता और उदारता क सूचक है जो महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि ग्रन्थ पढने से उनम आई है जो मने तथा अन्य आर्य मित्रो ने उन्हे दिय थे। अपने ग्रन्थ के द्वितीय भाग मे उन्होने स्वामी दयानन्दजी और आर्य समाज का उल्लेख भी पृ० ७५८ ७५९ मे किया है। यह तो स्पष्ट ही है कि वे वर्तमान इस्लाम मे सुधार की आवश्यकता को अनेक अशो मे अनुभव करते हैं।

'The Future of Islam' नामक ग्रन्थ क लेखक मि० ब्लन्ट (W S Blunt) ने इस्लाम

के भविष्य के सम्बन्ध मे बडी सहानुभूति पूर्वक विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि —

'If Islam would not be strangled by these (external) influences, she must use other arms than those of the flesh, aud meet intellectual invasion of hei frontiers with a corresponding intelligence Other wise, she has nothing to look toward but a gradual decay, spiritual as well as political Hei law must become little by little a dead letter and her creed a mere opinion Islam as a living and controlling moral force in the world would then gradually cease

(The Future of Islam by Blunt P 133

अर्थात्—यदि इस्लाम न इन बाह्य प्रभावो से कुचला न जाना हो तो उस प्राकृतिक क अतिरिक्त अन्य अस्त्रो का प्रयोग करना चाहिए और उसकी सीमा पर किये जाने वाले बाद्धिक आक्रमण (युक्ति तर्कादि) का उसी प्रकार की बुद्धि या तर्क आदि म मुकाबला करना चाहिय अन्यथा आध्यात्मिक और राजनैतिक क्रमिक ह्रास क सिवाय उनक आगे कुछ न रहेगा । उसका कानून धीरे एक निर्जीव वा मृत वस्तु के समान बन जाएगा और उसका मन्तव्य केवल एक सम्मति मात्र रह जाएगा । इस्लाम जगत मे जीवित जाग्रत और नियामक नैतिक शक्ति के रूप मे क्रमश लुप्त हो जाएगा ।

मि० ब्लन्ट के इस्लाम के भविष्य के विषय मे लिखे हुये ये शब्द बडे महत्वपूर्ण और यथार्थ हैं । महर्षि दयानन्द तथा अन्य निष्पक्ष विद्वानों ने जो इस्लाम के सिद्धान्तो की समालोचना बुद्धि पूर्वक तर्क का आश्रय लेकर की है उसका उत्तर बुद्धि और तर्क से न दे कर सत्यार्थप्रकाश के चतुर्दश समुल्लास तथा Short History of the World by H G. Wells आदि को जब्त कराने का प्रयत्न, उस पर अदालतो मे मुकदमे चलाना, मुस्लिम लीग सरकार द्वारा सिन्ध मे उस के प्रकाशन पर पाबन्दी आदि वस्तुत इस्लाम के ह्रास के चिन्ह है जिन का परिणाम इस्लाम के लिये कभी शुभ नहीं हो सकता ।

जिहाद, निवाह, तलाक तथा गुलामी आदि विषयो के इस्लाम के नियमो का आलोचना करते हुए मि० ब्लन्ट ने इसी पुस्तक (Future of Islam) म आगे लिखा है कि —

'The Mohammedan law contemplated mainly a state of war and it accepted slavery and concubinage as war s natural commitments It did not undeistand that some day Islam would have to live at peace with its neighbors if it would live at all, or that the general moral sense of the world would be brought to bear upon it with such force, that the higher instincts of Moslems themselves would feel the necessity of restricting its old and rather barbarous license as to marriage and divorce Yet these things have come to pass, or are rapidly coming, and the best thinkers in Islam now admit that

changes in the direction indicated must sooner or later be made,'

(Future of Islam by Blunt, P 167)

"Slavery by some means be made illegal and a strictiter interpretation of the Quranic permission be put on marriage, concubinage and divorce"

(The Future of Islam by Blunt P 167)

अर्थात्—मुहम्मदी कानून मे मुख्यतया एक युद्ध की अवस्था का ही विचार किया गया था और इसने गुलामी और रखेलियो के साथ सम्भोगादि को युद्ध क परिणाम स्वरूप स्वीकार कर लिया था। इसने इस बात को नहीं समझा था कि किसी दिन इसे अपने पडोसियो के साथ शान्ति से रहना पडेगा यदि इसे जीना ही अभीष्ट होगा और ससार की साधारण नैतिक भावना इस पर इतने बल के साथ प्रभाव डालेगी कि स्वय विचार शील मुसल्मानो की उच्च नैसर्गिक बुद्धि इस के पुराने और जङ्गली विवाह और तलाक विषयक नियमोको सीमित करने की आवश्यकता को अनुभव करेगी तथापि ये चीजे अब आ चुकी हैं अथवा बडे वेग के साथ आ रही हैं तथा इस्लाम मे श्रेष्ठ विचारक भी अब स्वीकार करते है कि इस दिशा मे परिवर्तन-शीघ्र या देर मे-अवश्य ही किये जाने चाहिये।

गुलामी को किसी तरह भी कानून के विरुद्ध घोषित कर देना चाहिये और विवाह, रखेलियो के साथ सम्भोग तथा तलाक विषयक कुरान की आज्ञाओ की अधिक कठोर व्याख्या की जानी चाहिये।

ऊपर के उद्धरणो मे मि० ब्लन्ट ने मुसलमानो को जो सलाह दी है कि तर्क का उत्तर बुद्धि पूर्वक तर्क से दे तथा इस्लाम की हानिकारक और जङ्गली विवाह तलाक आदि विषयक प्रथाओ मे उचित परिवर्तन और सुधार कर दे तभी उनका भविष्य उज्ज्वल हो सकेगा अन्यथा नही उसी का समर्थन कमाल पाशा आदि सुधारको ने किया। 'Grey Wolf' इस नाम से मुस्तफा कमाल पाशा के जीवन चरित्र के लेखक आर्म स्ट्रौंग (H C Arm Strong) ने कमाल पाशा के इस्लाम विषयक विचार इन शब्दो मे लिखे है —

For five hundred years these rules and theories of an Arab Sheik said Kamal Pasha the interpretations of generations of lazy good for nothing priests have decided the civil and criminal laws of Turkey

Islam this theology of an immoral Arab is a dead thing Possibly it might have suited tribes of nomads in the desert It was no good for a modern progressive state

(Grey Wolf by H C Arm Strong P 241)

अर्थात्—५०० सालो से एक अरब शेख के बनाये नियम और सिद्धान्त और आलसी निकम्मे पुरोहितो की की हुई व्याख्याए तुर्किस्तान के सिविल (नागरिक) और फौजी कानूनो का फैसला करती रही हैं।

एक दुश्चरित्र अरब निवासी का सिद्धान्त रूप यह इस्लाम अब मरी हुई चीज है। शायद यह

रेगिस्तान के जङ्गली लोगो के लिये अनुकूल हो सकता था। एक आज कल के उन्नति शील राज्य के लिए यह (इस्लाम) किसी काम का नहीं। पाठक देखें कि ये शब्द कितने कठोर हैं। कमाल पाशा ने इस्लाम द्वारा अनुमोदित बहु विवाह, पर्दा आदि बहुत सी बुरी प्रथाओ को हटा कर अपने राष्ट्र को उन्नत किया है यह सब जानते हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने 'भला इस बात को कोई मान सकता है कि पत्थर से ऊटनी निकाले। वे लोग जगली थे कि जिन्होने इस बात को मान लिया और ऊटनी की निशानी देना केवल जगली व्यवहार है (समीक्षा स० ११८) ऐसी २ बातो को सिवाय जङ्गलियो के दूसरा कौन मानेगा ? (समीक्षा स० १४६) आकाश को क्या पशु समझा कि उसकी खाल निकाली जाएगी ? यह बडी ही बे समझ और जगलीपन की बात है (समीक्षा स० १५२) इत्यादि मे 'जङ्गली' शब्द का प्रयोग अरब वासियो तथा इस्लाम की कुछ बातो के सम्बन्ध मे किया है मि० ब्लन्ट, मुस्ताफाकमाल पाशा तथा अन्य अनेक विचारको ने भी ऐसे ही शब्दो का अनेक स्थानो पर इस्लाम और उसके सिद्धान्त के विषय मे प्रयोग किया है। मार्कस डोड्स (Marchs dodr M A D D) ने इस्लाम के विषय मे लिखा है कि

'The dead hand of the short sighted author of the Koran is on the throat of every Mohammedan nation And it is this claim which stultified it in the view o any one who has studied other religions It bears the marks of immaturity on every part of it It proved it self to be a religion only for the childhood of a race It does not even realise that there is a higher religion, that the only true religion is a religion of liberty and of the Spirit (Mohammed, Buddha and Christ by Marcus Dods M A D D P 124)

अर्थात्—प्रत्येक मुस्लिम राष्ट्र के गले पर कुरान के अदूरदर्शी लेखक का मृतक हस्त विद्यमान है और यह दावा है जो अन्य मतो का अनुशीलन करने वालों की दृष्टि मे इसे व्यर्थ व मूर्खवत् बना देता है। इस के प्रत्येक भाग पर अपरिपक्वता के चिन्ह हैं। किसी भी जाति की बाल्यावस्था के ही योग्य मत इसने अपने को सिद्ध किया है।

यह (इस्लाम) इसबात का अनुभव भी नहीं करता कि इसकी अपेक्षा एक उच्चतर धर्म है और सच्चा धर्म स्वतन्त्रता और आत्मा का ही धर्म है इत्यादि। मि ऐन्डे सर्वियर Andre Servier नामक फ्रास देशीय विद्वान् ने La Psychologie die musalman" नामक अपने ग्रन्थ मे जिसका अग्रेजी अनुवाद 'Islam and The Psychology of The Musalman नाम से मौस ब्लन्डल (A S Moss Blundell) नामक अग्रेज ने किया (प्रकाशक Chahman& Hall in London 1924) अरब वासियो और इस्लाम की मनोवृत्ति पर धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से विस्तृत प्रकाश डालते हुए उपसहार के तौर पर लिखा है कि

"Islam is a doctrine of death in as much as it formally forbids any change, any evolution, any progress

In the history of the nations Islam, a secretion of the Arab brain, has never been an element of Civilisation, but on the contrary has acted as an extinguisher upon its flickering light Individuals under Arab rule have only been able to contribute to the advance of civilis tion in so far as they did not con form to Musalman dogma, but they relapsed into Arab barbarism as soon as they were obliged to make a complete submission to these dogmas "

Islamised nations who have not succeeded in freeing themselves from Musalman tutelage, have been stricken with intellectual paralysis and decadence They will only escape from this condition of in feriority in proportion as they succeed in withdrawing themselves from the control of Musalman law

(Islam and the Psychology of the Musalman by Andre Servier P 720 271)

अर्थात् इस्लाम एक प्रकार से मृत्यु का सिद्धान्त है क्योंकि यह परिवर्तन, विकास और उन्नति का प्रतिबन्ध करता है।

जातियो के इतिहास में इस्लाम जो अरबी मस्तिष्क का स्राव व मल है कभी भी उन्नति का साधक नहीं रहा बल्कि इस के विपरीत यह इसकी टिमटिमाती ज्योति का बुझाने वाला रहा है। अरब शासन मे व्यक्ति वहीं तक उन्नति मे सहायक रहे हैं जहाँ तक उन्होने मुसल्मानी सिद्धान्तो के अनुसार कार्य नहीं किया किन्तु ज्यो ही उन्हें इन सिद्धान्तो के आगे सिर झुकाने को बाधित होना पड़ा वे अरब वासियो के जगलीपन की ओर पुनः पतित हो गये।

मुस्लिम राष्ट्र जो मुसल्मानो की शिक्षा से अपने को स्वतन्त्र करने मे सफल नहीं हो सके बौद्धिक अर्धाङ्ग और क्षय का शिकार बन गये हैं। वे केवल उसी अनुपात मे इस पतन की अवस्था से अपना छुटकारा पा सकते है जितने मे कि वे मुसल्मानी कानूनके अधिकार से अपने को अलग रखने मे सफल हो सकें।"

इस्लाम की यह आलोचना कितनी कठोर है और महर्षि दयानन्द जी की युक्ति युक्त आलोचना भी इसके सामने कितनी नर्म है यह लिखने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार यह भी स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द कृत आलोचना न केवल अत्यन्त पवित्र भाव से प्रेरित थी बल्कि यथार्थ और अपेक्षया कोमल भी थी।

सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लासों के पृथक् प्रकाशन के सम्बन्ध मे सभा की नीति

मुझे सूचना मिली है कि कुछ सज्जन जनता से यह कहकर आर्डर एकत्र कर रहे है कि सत्यार्थप्रकाश का १४ वॉं समुल्लास पृथक् छप रहा है।

सभा की अबतक की नीति यही है कि सत्यार्थ प्रकाश के अन्तिम समुल्लासो मे से किसी को पृथक् न छपाया जाय। जो व्यक्ति पृथक् छपाने का आयोजन करता है वह आर्य समाज की अबतक की नीति के विरुद्ध काम करता है और इस का दायित्व आर्य समाज पर न होगा।—

मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
देहली

सामाजिक जगत्

सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन सम्बन्धी आवश्यक समाचार

श्रीयुत ला० देश बन्धुजी गुप्त का सिन्ध में दौरा।

अखिल भारतीय सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति के प्रमुख सदस्य श्रीयुत ला० देश बन्धु जी गुप्त ने अगस्त मास के तीसरे सप्ताह मे सिन्ध मे करॉची तथा हैदराबाद का दौरा किया। आप कराची मे सिन्ध के गवर्नर, प्रीमियर, हिन्दू मिनिस्टरो, कॉग्रेस के नेताओ, हिन्दू सभा के नेताओ, सिन्ध के अन्य प्रमुख प्रतिष्ठित व्यक्तियो तथा प्रसिद्ध पत्रकारो से मिले और सिंध मे सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध सम्बन्धी बात चीत की। आपने अपने इस तमाम दौरे के सम्बन्ध मे एक विस्तृत रिपोर्ट अखिल भारतीय सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समिति के प्रधान माननीय श्रीयुत घनश्याम सिंह जी के सन्मुख प्रस्तुत कर दी है।

श्रीयुत ला० देशबन्धु जी गुप्त की उपस्थिति में सिन्ध ऐसम्बली की काग्रेस पार्टी ने सत्यार्थ-प्रकाश पर प्रतिबन्ध की निन्दा तथा घोर विरोध करते हुये निम्न प्रस्ताव स्वीकार किया.—

"सिन्ध सरकार का यह कार्य बहुत ही निन्दनीय तथा अनुचित है और इसके द्वारा भारत रक्षा विधान का केवल घोर दुरुपयोग ही नहीं किया गया किन्तु धार्मिक विषयो मे हस्ताक्षेप न करने के मौलिक सिद्धान्तो का भी हनन किया है।

पार्टी आशा करती है कि अधिकारी अपनी त्रुटि को अनुभव करेंगे और उसे शीघ्र ही सुधार देंगे। वर्तमान मिनिस्टरी के बनते समय प्रीमियर के आर्य समाज के नेताओ को प्रतिबन्ध को शीघ्र ही हटा लेने के सम्बन्ध मे आश्वासन देने पर भी इस कमेटी को इस बातका अत्यन्त दुःख है कि जब वर्तमान मिनिस्टरी समस्त सम्प्र-दायो के धार्मिक विश्वासो तथा कार्यों मे हस्ताक्षेप न करने की नीति को मानती है परन्तु वह इस पर भी सत्यार्थप्रकाश पर से पूर्णतया प्रतिबन्ध हटाने के तैयार नही है।

पार्टी आशा करती है कि सरकार अब भी बुद्धिमत्ता से काय लेगी और अधिकारी अपने उस वचन को जो उन्होने एक अत्यन्त अल्पमत वालो को दिया था उसका पालन करेंगे और प्रान्त को सत्याग्रह के दुर्भाग्य पूर्ण परिणामो से बचा लेगे।

माननीय श्रीयुत घनश्याम सिंह जी गुप्त का पूना का दौरा

अखिल भारतीय सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति के प्रधान माननीय श्रीयुत घनश्याम सिंह जी गुप्त ता० ७ सितम्बर को पूना पधारे और स्टेशन पर उनका स्थानीय नानापेठ तथा कैम्प आर्य समाजों की ओर से स्वागत किया गया। उन्होंने पूना मे महात्मा गॉधी से भेट की और सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन सम्बन्धी बात चीत की। ता० ६ सितम्बर को प्रातः वे नानापेठ आर्य समाज में पधारे और उन्होने आर्यो को आदेश की प्रतीक्षा करने और उस आदेश को कार्य रूप मे परिणत करने के लिये तैयार रहने के लिये कहा।

ता० ६ सितम्बर की सांयकाल को महाराष्ट्र

प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान श्रीयुत गेड़गिल जी के सभा पतित्व मे एक विशाल सार्वजनिक सभा मे माननीय श्रीयुत गुप्त जी ने सत्यार्थप्रकाश की समस्या पर भाषण दिया। पूना की आर्य समाजो की ओर से आपको १२००) की थैली भेंट की गई।

शिवचन्द्र
स० मत्री
अ० भा० सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति

कराची आर्य समाज का वार्षिकोत्सव

कराची आर्यसमाज का ५६वा वार्षिकोत्सव बड़ी धूम धाम से ता० १ से ५ सित० तक किया गया १ को नगर कीर्तन बड़ी शानसे बिनाकरावट के निकाला गया। उत्सव मे राजगुरु श्री० प० धुरेन्द्र शास्त्री जी, प० धर्म देव जी विद्यावाचस्पति अध्यक्ष अनुसन्धान विभाग सावदे शक सभा, प० यशपाल जी शास्त्री, प्रो० ताराचन्द जी एम ए, तथा अन्य महानुभावो के मुख्यतया सत्यार्थप्रकाश विषयक प्रभावशाली व्याख्यान और श्री राम स्वरूप जी आर्य मुसाफिर आदि के भजन हुए। ४ सितम्बर को लाहार के श्री प० भगवद्दत्त जी रिसर्च स्कालर के सभापतित्व मे हिन्दी सम्मेलन हुआ।

मलीर गुरुकुल (कराची) का प्रथम वार्षिकोत्सव

ता० ८ से १० सितम्बर तक गुरुकुल मलीर का जिसके आचार्य श्री प० सुरेन्द्र शर्मा जी काव्य तीर्थ हैं प्रथम वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से गुरु कुल भूमि में किया गया। राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री, प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति प० यश पाल जी शास्त्री, प० लोकनाथ जी शास्त्री तथा स्वामी धर्मानन्द जी आदि के प्रभावशाली भाषण हुए। पं० धर्मदेव जी के सभापतित्व मे ८ सितम्बर को राष्ट्र भाषा सम्मेलन और सात वेला के स्वामी जीवन लाल जी के सभापतित्व मे धर्म सम्मेलन हुए। धर्म सम्मेलन मे मुख्य प्रस्ताव सत्यार्थ प्रकाश पर सिन्ध सरकार के प्रतिबन्ध के विरोध मे था। स्वा जीवन लाल जी ने घोषित किया कि सब सनातनी साधु भी इस आन्दोलन मे आर्य समाज के साथ हैं क्यो कि महर्षिदयानन्द जी ने ही सोती हुई मृत प्राय आर्य (हिन्दू) जाति म नव जीवन का सचार किया। प० रुद्रदेवजी शास्त्री के धनुर्विद्या के प्रद शन भी बड़े प्रभाव जनक थ। अपील पर लगभग ४०००) प्राप्त हुए।

लुधियाना आर्य समाज का निश्चय

लुधियाना आय समाज (साबुन बाजार) ने आर्य कालिज खोलन का निश्चय कर लिया है—

यहा की जनता तथा बाहर के सज्जनो को यह मालूम करके हर्ष होगा कि आय समाज (साबुन बाजार) लुधियाना की अन्तरग सभा ने लुधियाना मे आर्य डिग्री कालिज खोलने का प्रस्ताव पास करलिया है। और इसके लिये बल पूर्वक धन एकत्र करने का कार्य आरम्भ कर दिया है। आशा है कि आर्य समाज के हितैषी इस कार्य के लिये अपनी उदारता से दिल खोल कर धन की सहायता देकर इस शुभ कार्य को सफल करेंगे।

लब्भू राम आनन्दाश्रम लुधियाना

एक आवश्यक वक्तव्य

ट्रावनकोर सरकार नेराज्य की प्राइमरी शिक्षा को अपने हाथ मे लेने का जो निश्चय अभी कुछ दिन हुये किया है उसके सम्बन्ध मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री प्रो० सुधाकर

जी एम० ए० ने निम्न वक्तव्य समाचार पत्रों को दिया है —

"ट्रावनकोर सरकार ने अपनी दोनों धारा सभाओं की लगभग सर्व सम्मत मांग को स्वीकार करके प्राइमरी शिक्षा को अपने अधिकार में कर लिया है जिससे शिक्षा को नि शुल्क और अनिवार्य किया जा सके। इस पग के लिये हम ट्रावनकोर सरकार को बधाई दिये बिना नहीं रह सकते। उसने इस दिशा मे न केवल अन्य देशी राज्यो के ही अपितु भारत सरकार के सामने भी एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। जिस प्रकार कुछ वर्ष हुये ट्रावनकोर ने अपने समस्त मन्दिर हरिजनो के लिये खोल कर भारत वर्ष का मार्ग प्रदशन किया था उसी प्रकार इस दिशा मे भी मार्ग प्रदर्शन किया है।

यह दुर्भाग्य की बात है कि कैथौलिक मिशन इस उपयोगी कार्यवाही के विरुद्ध निस्सार आन्दोलन कर रहे है परन्तु हम उनके विरोध को भलीभाँति समझते है। मुझे ज्ञात हुआ है कि ट्रावनकोर राज्य के लगभग २५०० प्राइमरी स्कूलो में से २००० का प्रबन्ध और सचालन कथोलिक मिशन के द्वारा होता है जिन्हें राज्य के १५ लाख के शिक्षा के वार्षिक बजट मे से लगभग १२ लाख रुपया सहायता रूप मे मिलता है। इसकापरिणाम यह हुआ कि राज्य की सहायता के बल पर कैथोलिक मिशन दृढ बनता गया और इस रीति से उसे अपने ईसाई मत के प्रचार करने का सस्ता और सुगम साधन मिल गया था।

वस्तुत यह स्थिति बड़ी अस्पष्ट थी और हिन्दु माता पिताओं और बच्चो के प्रति अन्याय था। उनको अपने बच्चों को मिशनरी स्कूलों मे भेजने के लिये बाध्य होना पड़ता था। यह अच्छा हुआ कि एक अन्याय का प्रतिकार हुआ।

राज्य की सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जो सगठन अपने विशेष धार्मिक सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तो का प्रचार करना चाहेंगे उन्हें ऐसा करने की स्वतन्त्रता होगी और ट्रावनकोर राज्य उनके काय मे कोई बाधा न डालेगा परन्तु राज्य की धार्मिक निरपेक्षता की उद्घोषित नीति के अनुसार उन सगठनो को सरकारी आर्थिक सहायता न मिलेगी, यदि एक विशेष प्रकार की धार्मिक शिक्षा देने के लिये उन का सचालन होगा। और उन सगठनो के वे स्कूल प्राइमरी शिक्षा की योजना के अन्तर्गत नहीं समझे जायेंगे। कैथोलिक मिशन इस स्पष्टीकरण से लाभ उठा सकता है।

हमे अबतक स्मरण है कि राज्य के मन्दिरों को हरिजनो के लिये खोल देने पर विरोध का एक प्रचड बवडर उठा दिया गया था परन्तु राज्य की वह घोषणा उस बवडर मे से जीवित निकल कर अब तक कायम है और हमे आशा है कि राज्य की यह योजना भी इसी प्रकार जीवित और कायम रहेगी भले ही इसका कितना ही विरोध क्यो न किया जाये। हमे यह भी आशा है कि राज्य प्रत्येक मूल्य पर अपने इस शुभ निश्चय पर डटा रहेगा।

प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ और देश विदेश के आर्य समाजो को इस निश्चय के लिये ट्रावनकोर सरकार को बधाई देनी चाहिये और कैथोलिक मिशन के विरोध की निन्दा करनी चाहिये और अपने प्रस्ताव ट्रावनकोर सरकार को त्रिवेन्द्रम् (Trivendram) के पते पर, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा समाचार पत्रों को भेजने चाहिये।

सम्पादकीय

राष्ट्रीय महासभा और मुस्लिम लीगः—

गत सितम्बर मास मे राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) की कार्य कारिणी का पूना मे और अखिल भारतीय राष्ट्रीय महा सभा समिति का बम्बई मे जो शानदार अधिवेशन हुआ उसका वृत्तान्त पाठक समाचारपत्रो मे पढ़ चुके होगे। ३ वर्षा के पश्चात् लगभग ३० हजार की उपस्थिति मे अ० भा० कांग्रेस कमेटी का घोर वर्षा के होते हुए भी इतनी धूम धाम से सफल अधिवेशन होना जनता की स्वातन्त्र्यप्रियता का द्योतक है। स्वतन्त्रताकी प्रबल भावना को सरकार का बडे से बड़ा दमन चक्र भी कुचल नहीं सकता यह इस शानदार अधिवेशन ने स्पष्ट प्रमाणित कर दिया है। लार्ड वैवल की नवीन योजना को कांग्रेस कमेटी ने अस्पष्ट, अपर्याप्त और असन्तोषजनक घोषित करते हुए भी जनता की पूर्णस्वतन्त्रता विषयक इच्छा के प्रदर्शनार्थ चुनाव लड़ने का जो निश्चय किया, जहाँ तक सम्भव हो समझौते के मार्ग द्वारा और आवश्यकतानुसार असहयोग और सत्याग्रह द्वारा अपने उद्देश्य की प्राप्ति विषयक सिद्धान्त की जो घोषणा की तथा अन्य जो प्रस्ताव स्वीकृत किये उनके विषय मे हमे यहा विचार करने की आवश्यकता नहीं किन्तु राष्ट्रीय महासभा के नेताओं ने मुस्लिम लीग के विषय में अब जो मनोवृत्ति प्रदर्शित की है उस पर कुछ अंश तक सन्तोष प्रकट किये बिना हम नहीं रह सकते। कांग्रेसकी प्राय मुसलमानो के आगे घुटने टेकने की नीति की आलोचना हम इन स्तम्भो मे कई वार कर चुके है और हमारा यह विश्वास है कि इस मुसलिम लीगियो को हर प्रकार से सन्तुष्ट करने की नीति का परिणाम देश के लिये घातक सिद्ध हुआ है। राष्ट्रीय महासभा के श्री प० जवाहिरलाल जी नेहरू तथा सर्दार वल्लभ भाई पटेल जैसे प्रमुख नेताओ ने एक प्रकार से अपनी भूल को स्वीकार करते हुए जो यह स्पष्ट घोषणा की है कि अब हम मुस्लिम लीग से समझौते का प्रयत्न नहीं करेंगे तथा आवश्यकतानुसार लड़ेंगे हम उसका अभिनदन करते है। यदि कांग्रेस के नेता मुस्लिमलीगियोकी अनुचित मागोको भी पूरा करने की प्रवृत्ति का सर्वथा परित्याग करके सच्ची राष्ट्रीयता पर दृढ रहें तो जहाँ सभी राष्ट्रीयता वादी स्वतन्त्रता प्रिय व्यक्तियोका, कांग्रेस नीति से इस विषयक असन्तोष दूर हो सकता है वहाँ मुस्लिम लीग का प्रभाव भी बहुत अश तक कम किया जा सकता है जिसे इस नीति ने सिर पर चढा दिया है। कॉंग्रेस की कार्यकारिणी का आत्मनिर्णय विषयक प्रस्ताव इस सम्बन्ध मे विचारणीय है जो न जाने क्यों अ० भा० कांग्रेस कमेटी के सामने विचारार्थ नहीं प्रस्तुत किया गया। इसमे जहाँ एक ओर यह स्पष्ट घोषणा

की गई है कि कांग्रेस भारतीय स्वतन्त्रता और अखण्डता के सिद्धान्तो पर दृढ है वहा साथ ही वह आत्मनिर्णय के सिद्धान्त को मानती हुई किसी प्रदेश को उसकी घोषित इच्छा के विरुद्ध भारतीय सघ मे रखने को बाध्य नहीं कर सकती ऐसा उस प्रस्ताव मे कहा गया है। श्री प० जवाहर लाल नेहरू तथा अन्य अनेक कांग्रेस के नेता इन समय पाकिस्तान का म गको बेहूदा बताते हुए उसका प्रबल विरोध कर रहे है यह प्रसन्नता की बात है किन्तु 'आत्मनिर्णय' का नाम लेकर कईलोग किसी अश मे उस माग की यथार्थता को भी सूचितकर रहे ह जो अत्यन्त हानि कारक बात है। आवश्यकता इस बात की है कि अब कांग्रस के नेता अपनी पुरानी भूल को स्वीकार करके सर्वथा स्पष्ट शब्दो म पाकिस्तान तथा मुस्लिम लीगियो की अन्य अनुचित मागा का विरोध करते हुए पूर्ण राष्ट्रीय भावना का परिचय दें तथा ऐसे कार्य न करे जिससे हिन्दू हितो की हत्या होती हो जैसा दुर्भाग्यवश अब तक कइ बार हो चुका है।

दलित बन्धुओ पर अमानुषिक अत्याचारः—

यह बडे खेद की बात है कि दलित वर्ग पर नृशस अत्याचार के समाचार आये दिन पत्रो मे प्रकाशित होत रहत है जिन से स्पष्ट ज्ञात होता है कि जन्मसिद्ध ऊच नीच की भावना ने अभी तक लोगो के हृदयो पर शासन कर रक्खा है जो सामाजिक प्रेम, ऐक्य और सगठन के मार्ग मे अत्यन्त बाधक है। अभी कुछ दिन पूर्व राज स्थानीय रेगर सभा के प्रचार मत्री श्री सूर्यमल मौर्यव्यावर का एक वक्तव्य पत्रो मे प्रकाशितहुआ है जिस मे बताया गया है कि बेगार न देने पर जयपुर रियासत के कई सवर्ण और किसान लोग रेगरो की स्त्रियो को मारते पीटते है। एक स्त्री को कमरेडा ग्राम मे जाट किसानो ने खूब मारा जिससे उसे लगभग २० दिन अजमेर के विक्टोरिया हस्पताल मे रहना पडा। मेरवाड़ा जिले में रेगर स्त्रियो को चादी के भूषण पहनने पर मारा पीटा गया। इसी प्रकार गढवाल मे डोलापालकी के हाईकोर्ट द्वारा स्वीकृत प्रश्न को ले कर 'शिल्पकार' के नाम से प्रसिद्ध भाइयो पर जो अत्याचार अनेक विवाहादि अवसरों पर होते रहते है उन से पाठक परिचित है। गत मासो मे भी ऐसी अमानुषिक अत्याचार पूर्ण घटनाओ का वर्णन पाठको ने पत्रो मे पढा होगा जिस के परिणाम स्वरूप श्री वेदव्रत जी शर्मा आर्य, स्वामी आप्रकाशानन्द जी, प्रज्ञाचक्षु बालक राम जी नामक आर्य उपदेशको ने आमरणान्त अनशन तक का व्रत लिया जबतक उनकी मागें पूरी न कर दी जाए। ऐसे अत्याचार सर्वथा निन्दनीय और आर्य हिन्दू जाति पर घोर कलङ्क रूप हैं। इस प्रकार की घृणित मनोवृत्ति की जो कल्पित जात्यभिमान के मद मे अपने भाई बहिनो पर ऐसे नृशंस अत्याचार करने मे भी सकोच नहीं करती जितनी निन्दा की जाए थोडी है। उसके परिवर्तनार्थ प्रेम और लगन के साथ विशेष रूप से सर्वत्र प्रचार द्वारा प्रयत्न करना चाहिये। प्रत्येक आर्य और सुधारवादी हिन्दू को इस विषय की ओर विशेष ध्यान देकर आर्य जाति के इस घोर कलङ्क को दूर करने मे किसी प्रकार की कसर न उठा रखनी चाहिये। सरकार का भी कर्तव्य है कि ऐसे अत्याचार करने वालो को घोर दण्ड देकर न्याय की रक्षा करे।

सिंध सरकार की सत्यार्थप्रकाश विषयक टालमटोल—

सिन्ध सरकार ने सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध के सम्बन्ध मे सर्वत्र घोर असन्तोष की ज्वाला प्रज्वलित होने पर भी जिस टालमटोल की नीति का अवलम्बन किया हुआ है वह अत्यन्त निन्दनीय है। १८ अगस्त को सिन्ध सरकार की ओर से जो विज्ञप्ति असोशियेटेड् प्रेस द्वारा सशोधिताज्ञा के रूप मे पत्रो मे प्रकाशित हुई थी उसे अभी तक सरकारी गजट मे प्रकाशित नहीं कराया गया। इसका कारण यह ज्ञात हुआ है कि उसमे सिन्धी, उर्दू, अंग्रेजी, अरबी और फारसी भाषा मे न केवल सत्यार्थप्रकाश के सिन्ध मे छपवाने पर अपितु उसके प्रचार और वितरणार्थ बाहर से लाने पर भी जो पाबन्दी लगाई गई थी क़ानून के विशेषज्ञो Legal Remembrancer आदि की सम्मति मे वह सर्वथा नियम विरुद्ध थी और भारत रक्षा कानून की जिस धारा ४१ के अधीन पूर्व वा सशोधित आज्ञा जारी की गई थी उस में इस का समावेश नहीं हो सकता। ऐसी अवस्था मे सिन्ध सरकार का स्पष्ट कर्तव्य यह था कि वह अपनी सत्यार्थप्रकाश विषयक अत्यन्त अनुचित प्रतिबन्धाज्ञा को तत्काल लौटा लेती पर ऐसा न कर के वह टालमटोल की नीति को अपना रही है। वैधानिक दृष्टि से यह माना जाता है कि जब तक कोई आज्ञा सरकारी गजट में प्रकाशित न हो जाए तब तक उसे आज्ञा नहीं समझा जा सकता और इसलिये उस के विरुद्ध निश्चयात्मक कदम उठाने में भी कठिनाई है पर सिन्ध सरकारको समझ लेना चाहिये कि वह ऐसी टालमटोल से आर्य हिन्दू जनता के घोर असन्तोष को जो प्रति दिन बढता चला जा रहा है दूर नहीं कर सकती। उसके लिये सर्वथा सरल और उचित मार्ग यही है कि वह अपनी भूल को स्वीकार कर के अपनी अन्याय पूर्ण प्रतिबन्धाज्ञा को तत्काल वापिस ले ले। आर्यों का भी सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समिति के प्रधान माननीय श्री घनश्यामसिह जी गुप्त क आदेशानुसार सब प्रकार के त्याग और बलिदान के लिये अपने को उद्यत रखना चाहिये।

आर्य भाषा (हिन्दी) की रक्षा और आर्यों का कर्तव्यः—

हम 'सार्वदेशिक' के सम्पादकीय स्तम्भो मे आर्य जनता का ध्यान आर्य भाषा (हिन्दी) के प्रति अपने कर्तव्य की ओर निरन्तर आकर्षित करते रहे हैं क्यो कि भाषा का धर्म और संस्कृति के साथ घानष्ठ सम्बन्ध है महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश को आर्य भाषा (हिन्दी) मे लिख कर जो आदर्श हमार सामन प्रस्तुत किया तथा प्रत्येक आर्य को संस्कृत वा आर्य भाषा अवश्य सीखने का जो आदेश दिया उसका हम कई बार उल्लेख कर चुके हैं। हम आशा करते हैं कि इस अत्यावश्यक विषय की ओर आर्य जनता अधिकाधिक ध्यान देकर न केवल आर्य भाषा (हिन्दी) को पूर्णतया अपनाएगी बल्कि सरकारी डाक विभाग और रेडियो विभाग आदि द्वारा इस पर होने वाले आक्रमणो का भी क्रियात्मक प्रतिकार करेगी। इस सम्बन्ध मे 'सार्वदेशिक' के प्रेमी परिवार से भी हमे एक विशेष निवेदन करना है। 'सार्वदेशिक' के पतो को हिन्दी मे छपवा कर हमने इस दिशा मे एक साहसपूर्ण कदम उठाया था और केन्द्रीय हिन्दी

रक्षा समिति देहली के अत्यन्त सक्रिय सहयोग से (जिस सहयोग की प्रत्येक आर्य भाषा प्रेमी से हमे पूर्ण आशा करनी चाहिए) डाक विभाग के अधिकारियो से निरन्तर पत्र व्यवहार करके इस विषयक कठिनाइयों को दूर करने का प्रयत्न किया था किन्तु डाक विभाग के अनेक आश्वासन दिलाने पर भी हिन्दी पतों के कारण कई ग्राहकों को पत्र अनियमित रूप से वा देर मे प्राप्त होते रहे ऐसा ज्ञात हुआ और इस पत्र के व्यवस्थापक महोदय ने भी सार्वदेशिक पत्र के हित मे यह उचित समझा कि हिन्दी पतो के साथ २ केवल शहर का नाम अंग्रेजी मे लिखवा दिया जाए ताकि ग्राहको को शिकायत न हो। ऐसी व्यवस्था से ग्राहको को कुछ अधिक सुविधा हो सकती है किन्तु हमे लज्जा के साथ स्वीकार करना पड़ता है कि यह आदर्श से गिरना और अपनी निर्बलता सूचित करना है। इस विषय मे जहाँ हम अपने समस्त प्रेमी पाठकों से सब व्यवहारों में आर्य भाषा (हिन्दी) को अपनाने की प्रार्थना करते हैं वहाँ यह भी स्पष्ट जानना चाहते हैं कि इस पतों के हिन्दी मे ही लिखने के विषय में उनका क्या विचार है। प्रत्येक ग्राहक महोदय यदि एक कार्ड द्वारा इस विषयक अपने विचार से हमें सूचित करने की कृपा करें तो हमे अन्तिम निश्चय करने और यथा सम्भव अपने आदर्शानुसार कार्य करने में बड़ी प्रसन्नता होगी। हमे पूर्ण आशा है कि हमारे प्रेमी पाठक इस विषय में अपने परामर्श से हमें अवश्य अनुगृहीत करेंगे और आर्य भाषा के अधिकार रक्षा विषयक इस पुण्य कार्य में हमारा हाथ बँटा कर पुण्य के भागी बनेंगे यदि इसके कारण उन्हें कुछ असुविधा भी उठानी पड़े जिसे दूर कराने का हम निरन्तर प्रयत्न कर रहे हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे।

दान सूची सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

सत्यार्थ प्रकाश निधि

मास अगस्त सन् १९४५

संयुक्त प्रान्त

२) श्री दयाल जी आर्य धिरोर (मैनपुरी

१३४८६)॥ गत योग

१३४८८)॥

सिन्ध प्रान्त

१६३६५।) योग

बम्बई प्रान्त

५१) आर्य कुमार सभा बड़ौदा

७४१४।।।) गत योग

७४६५।।।) योग

बिहार प्रान्त

॥) श्री काशी प्रसाद जी विद्यार्थी जगदीश पुर जमालपुर

६०१७।।।=) गत योग

६०१८।=) योग

पंजाब व देहली प्रान्त

१०४) श्री मन्त्री जी आ० स० भगौती पुरा रोहतक

३३।) सदस्य ट्रक ऐक्सचेंज देहली

४८६६।=) गत योग

५००३।।।=) योग

बंगाल प्रान्त

३९११) योग

राजस्थान प्रान्त

१०००) स० प्र० रक्षा समिति जोधपुर

१२४४।।।=) गत योग

१२४४।।।=) योग

मध्य प्रदेश प्रान्त

१००) श्री मन्त्री जी आ० स० अकोला

१०५५।) गत योग

१३५५।) योग

हैदराबाद स्टेट

४२३।) योग

मद्रास प्रान्त

४७८।) योग

विदेश

१७६९) योग

विविध

४१५३) योग

६१५५८।=)॥ सर्व योग

आ० स० स्थापना दिवस दान

१०) आ० स० हिंगोली (हैदराबाद स्टेट)

१५) आ० स० राय बरेली

३४) आ० स० आगरा नगर

८) आ० स० एटा

४।।=) आ० स० टाउन बम्बई बाजार कराची

१०) आ० स० गाजियाबाद

१३।) आ० स० सागर सी० पी०

२६) श्री किशोर चन्द्र जी मन्त्री आ० स० पाई कोर्स

१५) आ० स० सरदारपुरा (जोधपुर)

५) आ० स० वस्तूरा, पट्टी शीला, पो० डुगड्डा
५) आ० स० आबू रोड़ (राजपूताना)
२) आ० स० सरैया चौबेपुर (कानपुर)
६।≈) आ० स० फिल्लौर (जालधर)
१५४॥) योग
१५११।)२ गत योग
१६६६)२ सर्व योग

जिन समाजो का भाग अभी तक अप्राप्त है उन्हें सभा के पत्रो और स्मरण पत्रो की प्रतीक्षा किए बिना अपना भाग अविलम्ब भेज देना चाहिए।

सुधाकर एम. ए.
मन्त्री सार्वदेशिक सभा देहली

विविध दान

॥) श्री काशी प्रसादजी विद्यार्थी जगदीशपुर, जमालपुर
२) श्री गुरुदत्त जी गौतम बिरला मिल्स देहली (वे० प्रचार)
१) श्री इरोदी रामदास जी उड़पी
१७) श्री मन्त्री जी आ० स० उज्जैन
२०॥) योग
१००२)१० गत योग
१०२२॥)१० सर्व योग

मन्त्री
सार्वदेशिक सभा देहली

एक महत्व पूर्ण प्रस्ताव

इण्डियन नैशनल व आर्य सेनायें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग सभा ने १६ सित० को निम्न प्रस्ताव पास किया है:—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग सभा सरकार से अपील करती है कि वह १९४२ में वा उसके पश्चात् ब्रह्मा, मलाया और अन्यत्र बनी इन्डियन नैशनल और आर्य सेनाओ के सदस्यों को जिन परिस्थितियो मे ये सेनायें बनी थीं उन्हें ध्यान मे रखते हुए, युद्ध बन्दी समझे।

यतः अब युद्ध समाप्त हो चुका है इन सेनाओ के सदस्य पहले ही पर्याप्त कष्ट उठा चुके हैं अतः यह सभा अनुभव करती है कि वे सब अब तत्काल मुक्त कर दिये जांय।

सभा

हर्ष समाचार

आर्य जनता को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि हैदराबाद दक्षिण सरकार ने अपनी वह आज्ञा रद्द करदी है जिसके अनुसार धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठानो मे खाद्य सामग्री का जलाया जाना निषिद्ध कर दिया गया था और जिससे आर्यों के हवन यज्ञ इत्यादि के बन्द हो जाने की आशङ्का उत्पन्न हो गई थी।

मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा।
'चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस' श्रद्धानन्द बाजार देहली में मुद्रित

नाम पुस्तक — लेखक व प्रकाशक — मूल्य

(१) वैदक सिद्ध त स० (सार्व० सभा) १)

( ) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका बड़ा साइज , १।)

(३) विदेशों में आर्य समाज ,, ॥)

(४) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर ,, १।)

(५) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श ,, १॥)

(६) समस्त समाजों की सूची ,, ॥)

(७) सार्वदेशिक सभा का इतिहास ,, अ० ८)

(८) बलिदान ,, ॥)

(९) आर्य डायरेक्टरी ,, अ० १।)

(१०) आर्य वीर दल शिक्षण शिविर ,, =)

(११) आर्य वीर दल बौद्धिक शिक्षण प इन्द्रजी ।=)

(१२) आर्य वीर दल लखमाला श्री ओमप्रकाश ज १)

(१३) यम पितृ परिचय प० प्रियरत्न जी आर्ष २)

(१४) अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र ,, २)

(१५) वैदिक सूर्य विज्ञान , =)

(१६) वेद में असित् शब्द -)।

(१७) ऋग्वेद में देवृकामा ,, -)

(१८) वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां ,, १)

(१९) विमान शास्त्र ,, ।=)

(२०) मातृत्व की ओर श्री प० रघुनाथप्रसाद जी पाठक अ० १।), स० १॥)

(२१) आर्य्य जीवन गृहस्थ धर्म ,, ।=)

(२२) कथा माला ,, ॥।)

(२३) आत्म कथा श्री नारायण स्वामी जी २।)

(२४) श्री नारायण स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ ५)

(२५) उपनिषद् ईश ।=) केन ॥) प्रश्न ।=) कठ ॥), माण्डूक्य =), ऐतरेय ।) बृहदारण्यक २)

(२६) वैदिक सन्ध्या रहस्य ,, =)॥

(२७) शहीदी पद्धिका ।=)

(२८) आर्य समाज मन्दिर चित्र)

(२९) हजहारे हकीकत श्री ला० ज्ञानचन्द्रजी आर्य ॥।=)

(३०) भक्ति कुसुमाञ्जलि श्री प० धर्मदेवजी वि०वा० ॥)

(३१) त्रिदेव निर्णय श्री प० शिवशङ्कर जी १)

(३२) भूमिका प्रकाश श्री द्विजेन्द्रनाथ जी १॥)

(३३) कुमुदिनीचन्द्र अनु० श्री प० मेधाव्रतजी २)

(३४) वेद और गोमेध श्री बा० श्यामसुन्दरलाल जी =)

(३५) बहिनों की बातें श्री प० सिद्धगोपालजी कविरत्न १)

(३६) दयानन्द (कवित) प० यज्ञदत्त त्यागी ।=)

(३७) ध्यान योग प्रकाश स्वामी लक्ष्मणानन्द जी १॥-)

(३८) सत्यार्थ प्रकाश गान ।=)

(३९) हमारे घर श्री निरञ्जनलाल जी गौतम ॥=)

(४०) भारतवर्ष में जाति भेद ,, ।)

(४१) सत्यार्थ प्रकाश की सार्वभौमता -)

(४२) हम और ' मालोचक -)



१९४५ ई०
२००२ सं०

सम्पादक—

वार्षिक मूल्य
विदेश ७शि.

विषय सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष २१ | नवम्बर १९४५ ई० | कातिक २००२ | दयानन्दाब्द १२२ | अङ्क ९

* वैदिक प्रार्थना *

ओ३म् धाता विधाता भुवनस्य यस्पतिर्देवः सविताभिमातिषाहः। आदित्या रुद्रा अश्विनोभा देवाः पान्तु यजमानं निर्ऋथात् ॥

अथर्व ५।३।९

अर्थ—(यः) जो (भुवनस्य पतिः) ससार का स्वामी (धाता) धारण करने वाला (विधाता) कर्मफल का देने वाला और न्यायकारी (अभिमाति षाहः) काम क्रोध लोभ मोह अभिमानादि शत्रुओ का नाश करने वाला (सविता) सर्व जगत् का उत्पादक (देव.) शान्ति सुख देने वाला और सर्व प्रकाशक परमात्मा है वह और (आदित्याः) सूर्य के समान तेजस्वी और परोपकारी आदित्य ब्रह्मचारी (रुद्रा.) दुष्टो को दण्ड देने वाले न्यायाधीश तथा रुद्र ब्रह्मचारी (उभा अश्विनौ) अध्यापक उपदेशक तथा अन्य (देवा.) सत्यनिष्ठ विद्वान् (यजमानम्) यज्ञ करने वाले को (निर्ऋथात्) पाप और दुःख से (पान्तु) बचाए रक्षा करें।

विनय—हे समस्त जगत् के स्वामिन् परमेश्वर ! आप सर्वथा पवित्र है। हम भी पवित्र जीवन व्यतीत करना और विशुद्ध आर्य होना चाहते है आप हमारी सब प्रकार के पापो और दुःखो से रक्षा करें। हम आपके पवित्र स्वरूप का चिन्तन करते हुए कभी पाप न करे और उनके परिणाम स्वरूप दु ख न भोगे। आप की कृपा से हमारे देश मे महर्षि दयानन्द जी जैसे आदित्य ब्रह्मचारी उत्पन्न हों जो सत्य का उपदेश देकर हमे सब प्रकार के पापो और दुःखो से बचाए। सब अध्यापक उपदेशक तथा अन्य विद्वान सत्योपदेश द्वारा जनता को पापो और दु खों से बचाने वाले हो ऐसी कृपा आप करे। सब के सब मनुष्य यज्ञादि शुभ कर्मों मे सदा तत्पर रहें और कभी पाप कार्यों मे प्रवृत्त न हों। सब आपके सच्चे भक्त, धर्मात्मा और सुखी हो ॥

वेदोपदेश

सत्य की अद्भुत शक्ति

(लेखक—आचार्य अभयदेव जी सन्यासी)

ओ३म् सा मा सत्योक्तिः परिपातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च। विश्वमन्यन्निविशते यदेजति विश्वाहापो विश्वाहोदेति सूर्यः। ऋ० १० । ३७ । २

अर्थ—(यत्र) जिस सत्यप्रकाश मे (द्यावा च) द्युलोक भी और सब दिन भी (ततनन्) विस्तृत हुए हैं, विस्तार को प्राप्त हुए हैं (सा) वह (सत्योक्ति) सत्य भाषण का व्रत (मा) मुझे, मेरी (विश्वत.) सब तरफ से (परि पातु) रक्षा करे। (अन्यत्) सत्य के अतिरिक्त (विश्वम्) और सब कुछ (यत् एजति) जो हिल रहा है, आकार, बल व जीवन युक्त दीखता है वह (निविशते) लीन हो जाता है, मिट जाता है (विश्वाहा) सदैव तो (आप.) व्यापक सत्य नियमो का प्रवाह चल रहा है और (विश्वाहा) सदा तो (सूर्य.) सत्य रूप सूर्य उदय हुआ है।

हे भगवन्! मै सत्य ही भाषण करने का व्रत ग्रहण करता हूँ। यह महाव्रत मेरी रक्षा करे, सब तरफ से रक्षा करे। दुनिया तो कहती है कि झूठ के बिना काम नहीं चल सकता, कि असत्य द्वारा बहुत बार रक्षा मिलती है। परन्तु मैं देखता हूँ कि एक मात्र रक्षा कर सकने वाले, हे सत्यस्वरूप! तुम ही हो। तुम्हारा सत्य ही है। सत्य वह महान् प्रकाश रूप वस्तु है जिसके प्रकाश से संसार के सब द्युलोक जगमगा रहे हैं और जिसके कि आंशिक प्रकाश को पाकर ये हमारे दिन अनन्तकाल तक प्रकाशित होते रहेंगे। सत्य प्रकाश है और असत्य अन्धकार। सत्य सनातन है असत्य क्षण भंगुर है। भला अन्धकार हमारी कैसे रक्षा कर सकता है? भगुर (विनाशी) वस्तु का आश्रय हमे कब तक बचा सकता है? जो इसे समझते हैं वे महर्षि दयानन्द के समान, सत्य के कारण आई विपत्तियो को देखकर कभी घबराते नहीं और दीन होकर कभी असत्य का आश्रय नहीं पकड़ते क्योकि वे देखते है कि सत्य के अतिरिक्त ससार मे जो भी कुछ है वह सब विनश्वर है। वह असत्य चाहे कितना भी जीता जागता दीखता हो चाहे कितने बडे आकार वाला, चाहे कितना शक्तिशाली, चाहे कितना कीमती दीखता हो—पर वह सब थोडी देर मे विलीन हो जाने वाला है, राख हो जाने वाला है, मिट जाने वाला है। सत्य ही अचल है। झूठ कपट की आलीशान दीखने वाली विजयें भी संसार मे निस्सदेह आती हैं पर वे क्षण मे चली जाती है और हमे वहीं का वहीं गिरा कर छोड़ जाती हैं। देर तक ईश्वरीय सत्य नियमो को दबाया नहीं जा सकता। घोर से घोर रात्रिया आएगी, पर फिर सूर्य उदय होना निश्चित है। सदा प्रकाशमान सूर्य को केवल थोड़ी देर के लिए किसी आवरण द्वारा ओझल रखा जा सकता है। जरा देखो, जो अप्रतिहत रूप से बह रहा है, वह तो ईश्वरीय, व्यापक सत्य नियमो का प्रवाह ही है और जो प्रतिदिन उदय हो रहा है और असल मे सदा उदित रहता है वह महान् सत्य का सूर्य ही है।

[सत्य के परम पुजारी महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण के दिवस पर ऐसे वेद मन्त्रो का विशेष मनन करते हुए प्रत्येक आर्य नर नारी को सत्य का व्रत विशेष रूप से धारण करना चाहिये।

सम्पादक]

अध्यात्म सुधा

१ परमेश ! तुम्हारे चरणो मे, अति विनत भाव से आते हैं ।
हम बैठ तुम्हारी गोदी मे, नित दिव्य शान्ति को पाते हैं ॥
२ तुम शाश्वत सुख के दाता हो, तुम ही भक्तो के त्राता हो ।
तुम बन्धु पिता अरु माता हो, स्थिर मन से तुम को ध्याते हैं ॥
३ ये रवि शशि पर्वत तरु तारे, ये सरिता सागर मिल सारे ।
अपनी अनन्त जिह्वाओ से, तव अद्भुत गुण गण गाते हैं ॥
४ ये विविध वर्ण के सुमन सभी, जो मन को सुषमा से हरते ।
भुवनेश ! तुम्हारे चरणो मे, मोहन ! श्रद्धाञ्जलि लाते हैं ॥
५ हे सोम ! पिला तुम सोम सुधा, सुत को आनन्दित करते हो ।
बन मस्त तुम्हारे सुख सागर, हम सन्मुख सीस नवाते हैं ॥
६ करुणा वरुणालय ! तुम करना, ऐसी करुणा जो मस्त करे ।
अति घोर विपत् मे भी हँसते, 'ध्रुव' शरण तुम्हारी आते हैं ॥

—ध्रुव

श्री स्वामी दयानन्द जी और तेज़ खण्डन ?

(लेखक—श्री प्रो० महेशप्रसाद जी मौलवी आलिम फाजिल हिन्दू यूनिवर्सिटी बनारस।)

जो व्यक्ति किसी बात को नहीं जानता और ऐसे व्यक्ति को यदि कुछ बतलाना आवश्यक होता है तो साधारण शब्दो मे उसे बतलाया जाता है किन्तु जो व्यक्ति किसी बात को सुनने के पश्चात् कहने वाले की बात को नही मानता अथवा उस पर विश्वास नहीं करता तो उस सुनने वाले को अधिक जोरदार शब्दो मे बतलाना परम आवश्यक होता है। यही कारण है कि कुरान शरीफ मे अनेक अवसरो की बाते साधारण शब्दो मे और अनेक अवसरो की बाते अधिक जोरदार शब्दो मे है। उदाहरण के रूप मे जिन आयतो या उनके शब्दो को पाठको के सन्मुख रखना है उनको अर्थ सहित दिया जा रहा है —

१ इन्नल् लाहा या मरोकुम (सूरत २ आयत ६७) निश्चय अल्लाह आज्ञा देता है तुमको।

२ योसीकुम् अल्लाहो फी औलादकुम् (सू० ४ आ० ११) वसीअत करता है अल्लाह तुमको बीच औलाद तुम्हारी के।

३ इन्नल् लजीना तदऊना मिन दूनिल् लाहे (सू० ७ आ० १९४) निस्सन्देह जिन को पुकारते हो सिवाय अल्लाह के।

४ वल् लजीना तदऊना मिन् दूनहि (सू० ७ आ० १९७) और जिन को कि पुकारते हो सिवाय उसके।

५ लन् तनालुल् बिर्रा (सू० ३ आ० ९२) हरगिज़ । हु चोगे तुम भलाई को।

६ वलक़द् सदक़कुमुल लाहो वादहू (सू० ३, आ० १५२) और अलबत्त निस्सन्देह सच्चा किया है अल्लाह ने तुमसे वचन।

७ ला जरम अन्नहुम फिल् आख़रते हुमुल अख़सरून (सू० ११ आ० २२) नहीं सन्देह इसमे कि अन्त मे वही है टोटा पाने वाले।

यदि विचार किया जाय तो ऊपर बतलाया हुआ सिद्धान्त परीक्षा-फल विषयक बात पर भी बहुत कुछ लागू होता है। जो विद्यार्थी किसी परीक्षा मे बैठा। जब उसको किसी ने परीक्षाफल की सूचना दी कि आप पास हैं। यदि सुनने वाले ने इस प्रकार की बात की—क्या यह बात सच है ? आप को कैसे मालूम हुआ ? ऐसी दशा मे कहने वाला प्राय इस प्रकार का उत्तर देता है— सचमुच आप पास है। मै ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूँ। मैने आप का नाम (अथवा रोल नम्बर) अमुक डिवीजन सहित देखा। आप अवश्य विश्वास रखिये। इत्यादि

अब देखना यह है कि जिस विचार-धारा (सिद्धान्त) की पुष्टि मे कुरान शरीफ सतर्क है वह श्री स्वामी दयानन्द जी पर कहा तक लागू है। चौदहवे समुल्लास से स्पष्ट है कि श्री स्वामी जी ने इस्लाम के जिन सिद्धान्तो के विषय मे कुछ कहा है उनमे से एक विषय स्वर्ग विषयक है। श्री स्वामी जी का मत चौदहवें समुल्लास से स्पष्ट है किन्तु कुछ मुसलमानो का जो मत है उस का विवरण इस प्रकार है —

१ शेख इब्राहीम जौक (स्वर्गीय सन् १८५४ ई०) उर्दू के एक बड़े कवि और दिल्ली में सम्राट् बहादुरशाह के गुरु (उस्ताद) थे, उन्हीं का एक शेर है:—

कब हक परस्त जाहिदे जन्नत परस्त है।
हूरो पै मर रहा है वह शहवत परस्त है।

जो ईश्वर भक्त स्वर्ग की प्राप्ति के विचार से ईश्वर का उपासक है, वह ईश्वर भक्त कहां ? वह वास्तव मे स्वर्ग की हूरो (सुन्दर स्त्रियो) का इच्छुक है वह भोग विलासी है।

२ दिल्ली के सुप्रसिद्ध विद्वान् मिर्जा गालिब (स्वर्गीय सन् १८३६ ई०) के कथन कई है। एक शेर है—

हम को मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन। दिल के बहलाने को गालिब यह ख्याल अच्छा है।

जन्नत (स्वर्ग) का हाल हमको मालूम है। वास्तव मे दिल को बहलाने के लिये स्वर्ग का विचार (चित्र) अच्छा है।

उक्त विद्वान् के एक मित्र मिर्जा हातिम अली 'मिहर' जी आगरा निवासी थे। उन को एक पत्र में मिर्जा गालिब ने स्वर्ग के विषय मे लिखा था—

"मैं जब बिहिश्त का तसौवर (विचार) करता हूँ और सोचता हूँ कि अगर (यदि) मग फरत (मुक्ति) होगई और एक कसर (भवन) मिला और एक हूर मिली। इकामत (ठहरना) जीवदानी (स्थायी) है और उसी एक नेकबख्त के साथ जिन्दगानी है। इस तसौवर से जी घब राता है और कलेजा मुँह को आता है। है ! है !! वह हूर अजीरन होजायगी। तबीअत क्यो न घबरायेगी ?

श्री सर सैयद अहमदखॉ महोदय ने स्वर्ग के विषय मे जो कुछ कहा है वह जनता के सन्मुख आ चुका है। हॉ, उर्दू के एक सुप्रसिद्ध कवि श्री दाग (जन्म सन् १८३० ई०) ने कहा है—

जिस मे लाखो बरस की हूरे हो
ऐसी जन्नत को क्या करे कोई

अधिक विचार करने से पता चलता है कि श्री स्वामी जी महाराज के कार्य काल सन् १८३३–१८८३ ई० मे जो लोग हुये हैं अथवा यह कि उनके समय से कुछ पहिले जो लोग हुये हैं उनसे कई लिखे पढे मुसलमानो ने अपना मत स्वर्ग के विषय मे बड़ा अनोखा प्रकट किया किन्तु लोग प्राय ऐसे रहे है जो अपने विचारो पर अटल थे। ऐसी अवस्था मे श्री स्वामी जी महाराज के लिये जरूरी था कि वह स्वर्ग के विषय मे कुछ लिखें बहुत जोरदार शब्दो मे लिखे। अत यह बात भी स्पष्ट है कि जिस प्रकार श्री स्वामी जी महा राज के लिये आवश्यक था कि वह स्वर्ग के निमित्त जो कुछ लिखते जोरदार शब्दो मे लिखते उसी प्रकार अनेक विषय की बाते भी ऐसी दशा मे थी कि श्री स्वामी जी महाराज उनके विषय में भी जो कुछ लिखते जोरदार शब्दों मे लिखते।

खुदा का मानवीकरण

Anthropomorphic Conception of God

(ले०—श्री डा० सूर्य देव जी शर्मा साहित्यालङ्कार सिद्धान्त शास्त्री, एम ए एल टी, डी लिट्, अजमेर)

सृष्टि के आदि से अबतक ईश्वर क स्वरूप का वर्णन दर्शनकारो और ऋषि मुनियो न अनेक प्रकार से किया है। विभिन्न मतो के आचार्यो ने और भक्तो ने अपने प्रभुका दर्शन अपने ढग से अलग अलग किया है लेकिन मनुष्य की कल्पना अधिकतर अपने ईश्वर को भी अपना ही जैसा शरीर धारी समझने की रही है। यह कल्पना अनेक मत वालो मे पायी जाती है। कोइ तो अपने शरीरधारी भगवान् को क्षीर सागर मे सुलाते हैं, कोई उन्हे सीता के लिये रुलाते है, कोई अपने खुदा को चोथे आसमान पर बिठाते है तो कोई उसे सातवें आसमान तक उठाते हैं। जैसा कि प्रोफेसर मैक्समूलर आदि विद्वानो ने लिखा है, यह ईश्वर का मानवीकरण और उसकी भावना (Anthropomorphic Conception) वैदिक काल क ऋषियो की उपज नहीं थी। उस समय ईश्वर का स्वरूप निराकार ही माना जाता था। बाद मे पौराणिक काल मे ईश्वरके विभिन्न रूप कल्पित हुये और उनक अनेक प्रकार के आकार माने गये। ब्रह्मा, शिव, विष्णु आदि का अनुकरण ही जनी बौद्ध ईसाई और मुसलमान मतवालो ने किया और उन्होने भी अपना खुदा शरीरधारी, सीमाबद्ध, एक स्थान पर बैठा हुआ और मनुष्य की तरह व्यवहार करता हुआ मान लिया लेकिन सब से पूर्व ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के अन्तिम चार समुल्लासो में ईश्वर के मानवीय स्वरूप का जोरदार खडन किया और ईश्वर का सच्चा स्वरूप हमारे सामने रखा। ईश्वर क ऊपर से इस गदगी को हटाने और असली खुदा को लोगो के सामने लाने के लिये पौराणिको और ईसाई मुसलमानो को ऋषि दयानन्द का आभार मानना चाहिए था लेकिन—

छन्द— "जो सत्य की खोज नहीं करते,
आभार भला वे क्या मानें।
जो खुद को ही जानते नहीं,
वे कहो खुदा को क्या जाने ॥"
क्यों मुसलमान, ईसाई अब,
ऋषि पर भौ नाक चढाते है।
अपने ग्रथो को पढे नहीं,
वे झगडा व्यर्थ बढाते है ॥"

सत्यार्थ प्रकाश क तेरहवें समुल्लास मे बाइबिल के अनेक उद्धरण स्वामी जी ने यह दिखलाने के लिये दिय है कि ईसाइयो का खुदा मनुष्यो की तरह शरीरधारी है जैसे समीक्षा न० ११ मे 'और हनूक मतूशिला की उत्पत्ति के पीछे ३०० वर्ष लो ईश्वर के साथ साथ चलता था" (समीक्षा) "भला ईसाइयों का ईश्वर मनुष्य नहीं होता तो हनूक उसके साथ साथ क्यो चलता ?"

आगे समीक्षा न० १६ मे लिखा है, "जब ईश्वर अब्राहम से बाते कर चुका तो ऊपर चला गया' (तौरेत = १७—२४) (समीक्षा इससे यह सिद्ध होता है कि ईश्वर मनुष्य या पक्षीवत् था जो ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर आता जाता रहता था। इसी प्रकार अनेक स्थानो पर बाइबिल मे खुदा को शरीरधारी और हजरत ईसा को उसका बेटा माना गया है लेकिन स्वामी दयानन्द

ने इन बातो का जो खडन किया उसका समर्थन ईसाई लेखक आज स्वय ही कर रहे है, जैसे "Science and Theology" नामक पुस्तक के लेखक Mr Westaway पृष्ठ ३७१ पर लिखते हैं यदि बाइबिल मे से कोई बात सबसे पहिले निकाल देने के काबिल है तो वह यह कि खुदा शरीरधारी है और हजरत ईसा मसीह उससे पैदा हुये। उसी प्रकार थॉमसपेन ने अपनी पुस्तक 'The Age of Reason' मे तथा कर्नल इङ्गर सोल ने अपने निबन्ध "About the Holy Bible' मे बाइबिल की इस प्रकार की असभव बातों की वह धज्जिया उडाइ है जो ईसाइयो को सर्वदा याद रहेगी।

इसी प्रकार सत्यार्थ प्रकाश के १४ वे समुल्लास मे ऋषि दयानन्द ने इस्लामी खुदा की खबर ली है। इस सबध मे मैंने "सार्वदेशिक" के गत फरवरी मास के अक मे एक लेख "इस्लामी खुदा और सत्यार्थ प्रकाश" के नाम से लिखा था जिसमे १४ वे समुल्लास मे से १४ बाते खुदा के बारे मे लिखी थीं जैसे कि कुरान ३२-५ मे खुदा को आसमान पर चढने वाला लिखा है इसी प्रकार कुरान ६६-१७ के अंग्रेजी अनुवाद मे लिखा है, "And the angels shall be on the sides thereof and above them eight shall bear on that day thy Lord s throne" अर्थात् प्रलय के दिन फरिश्ते उसके दोनो तरफ होगे और आठ फरिश्ते खुदा के तख्त को उठायेंगे। उसी प्र ार कुरान ७-५४, १०-३, १३-२, २०-५, इत्यादि अनेक स्थानो पर खुदा को एक देशी और शरीरधारी कहा गया है जिसका कि खडन स्वामी दयानन्द जी ने अपनी ७० और ८८ आदि नम्बर की समीक्षाओ मे किया है।

हमे आश्चय तो तब होता है जब हम अपने मुसलमान भाइयो को स्वामी जी पर तो इसलिये नाराज होता हुआ देखते है कि उन्होने १४ वें समुल्लास मे कुरान के शरीरधारी खुदा का क्यो खडन किया लेकिन दूसरी ओर उन्हीं के आलिम खुदा को हर जगह हाजिर नाजिर मानते है। इन परस्पर विरोधी बातो से कुरान के अंग्रेजी अनुवाद कर्त्ता मोलाना मोहम्मद अली एम० ए० एल एल बी भी नहीं बच सके। वह अपने अनुवाद की भूमिका के पृष्ठ ५८ पर लिखते है, 'The use of these words (seeing, hearing speaking etc) is by no means an indication of an anthropomorphic conception of God'

अर्थात् खुदा क लिये देखना, सुनना, बोलना आदि शब्दो का प्रयोग यह सिद्ध नही करता कि वह शरीरधारी है। वाह, मोलवी साहब, देखते सुननेकी क्रिया तो इन्द्रियोंके बिना शायद मानीभी जा सकती हे लेकिन बोलना ओर अश पर चढना उतरना और फरिश्तो के द्वारा साधे हुये तख्त पर बैठना यह सब बाते निराकार और सवव्यापक खुदा मे कैसे सभव हो सक्ती है? इस बात को शायद मौलाना साहब भी समझते थे, इसलिये उन्होने खुदा के देखने सुनने का समाधान करने का तो यत्न किया लेकिन तख्त पर बैठने का कोई समाधान नहीं किया।

वास्तव मे स्वामी दयानन्द ने खुदा के सम्बन्ध मे उसके सच्चे गुणो को लिख कर उसके महत्व को बढाया ही है और जैसा कि स्वामी जी ने

खुदा को हाजिर नाजिर माना है, और लिखा है वैसा ही ईसाई और मुस्लिम विद्वान् मानते भी हैं। फिर स्वामी दयानन्द ने इस्लामी या ईसाई खुदा की ताहीन (अपमान) क्या करदी ? ठीक है.—

"खुदा तो एक है सचम,
नहीं इन्सान बन सकता।
अर्श पर बैठना उठना,
न उसका तख्त तन सकता॥
हमारे दोस्त जब अपने,
खुदा को ठीक जानेंगे।
तो फिर स्वामी दयानन्द से,
न वे तक्रार ठानेंगे॥

"सूर्य"

आर्य कुमार जगत्

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की परीक्षा विभाग की सूचनाएं

प्रत्येक वर्ष की भांति, इस वर्ष भी अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की ओर से सिद्धान्त शास्त्री आदि परीक्षाएं, जनवरी १९४६ मे होंगी। इस वर्ष प्रत्येक परीक्षार्थी से अलग २ आवेदन पत्र नहीं भरवाये जायगे। बल्कि दिल्ली कार्यालय से छपी हुई सूची प्रत्येक केन्द्र मे भेजी गई है, उसकी खाना पूरी करके केन्द्र अध्यक्ष महोदय कार्यालय को शुल्क सहित ३० नवम्बर तक भिजवायेंगे। प्रत्येक परीक्षार्थी को, केवल इसी सूची मे एक खाने मे अपने हस्ताक्षर करने होंगे। यदि वह सूची पत्र अभी तक किसी केन्द्र-अध्यक्ष महोदय को न पहुची हो, तो एक कार्ड लिख कर मगालें।

परीक्षाओं की तिथि

परीक्षा समिति ने, परीक्षाओं की तिथिया, २० जनवरी तथा २७ जनवरी सन् १९४५ नियत कर दी हैं। चारों परीक्षाओं के प्रथम व द्वितीय प्रश्न पत्रों की परीक्षा २० जनवरी को होगी और सि० शास्त्री व सि० भास्कर के तृतीय व चतुर्थ प्रश्न पत्रों की परीक्षाए २७ जनवरी को होंगी।

नये केन्द्र

जिन स्थानों पर अभी तक केन्द्र नहीं हैं उनको शीघ्र अपना यहा केन्द्र स्थापित करा लेना चाहिये।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करना चाहिये—

देवादयाल, कार्यालय मंत्री

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् दिल्ली।

आर्य कुमार जगत्

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की कार्य कारिणी समिति का एक विशेष अधिवेशन ता० ५-१०-४५ शुक्रवार को ८ बजे रात्रि से गाजियाबाद मे सयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन के पण्डाल में, श्रीयुत प० देवव्रत जी धमन्द के सभापतित्व मे हुवा। जिसमे निम्नलिखित निश्चय हुवे—

१—अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् का वार्षिक सम्मेलन करने का विषय प्रस्तुत हुवा तथा जो पत्र-व्यवहार श्री माननीय सेठ मदन मोहन जी चीफ जस्टिस (Chief Justice) भरतपुर के साथ, भरतपुर मे सम्मेलन करने के सम्बन्ध मे हुवा, वह भी कार्य कारिणी के सम्मुख प्रस्तुत हुवा।

कार्य कारिणी, सारी स्थिति को ध्यान मे रखते हुवे, यह निश्चय करती है कि भरतपुर मे सम्मेलन करना, आर्य कुमारों के हित मे लाभकारी होगा, सम्मेलन को सफल बनाने के लिए भरतपुर, श्री नन्दकिशोर जी खन्ना तथा श्री विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी, शीघ्र से शीघ्र जाने का प्रयत्न करें।

२—कार्यकारिणी, यह भी निश्चय करती है कि श्री सेठ मदनमोहन जी प्रधान, सयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रति नधि सभा से निवेदन किया जावे कि वे प्रतिनिधि सभा के किसी योग्य उपदेशक को कम से कम दो मास के लिये सयुक्त प्रान्त की आर्य कुमार सभाओं मे जागृति व प्रोत्साहन करने

के लिये बिना कोई व्यय लिये नियत कर दें।

३—धन एकत्रित करने का प्रयत्न किया जावे।

४—श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु ने विचार प्रस्तुत किया कि आर्य समाज व ज़ार सीताराम के उत्सव पर दिल्ली प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् का प्रान्तीय सम्मेलन करने की स्वीकृति प्रदान की जावे। कार्यकारिणी, उनके विचार से सहमत है, और वे सम्मेलन कर सकते हैं। जिसमे १० १२ ४५ को सम्मेलन तथा ११ १२ ४५ को वार्षिक निर्वाचन हो।

मेरठ जिला आर्य कुमार परिषद्

मेरठ जिला आर्यकुमार परिषद् की अन्तरङ्ग सभा का एक विशेष अधिवेशन ता० ७-१० ४५ रविवार को २॥ बजे से, गाजियाबाद मे, श्री प० शिवदयालु जी के सभापतित्व मे हुवा। जिसमे आगामी गढ़ मुक्तेश्वर मे गगा स्नान के मेले मे वैदिक धर्म का प्रचार तथा सेवा कार्य करने का निश्चय हुआ।

सयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन

गाजियाबाद नगर मे, सयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन ता० ५ ६ ७ अक्तूबर १९४५ को सद्गुरु श्री पंडित धुरेन्द्र जी शास्त्री न्याय भूषण के सभापतित्व मे समारोह के साथ मनाया गया। जिसमें सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन, श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी के सभापतित्व मे, राष्ट्र भाषा सम्मेलन, श्री प० धर्मदेव जी के सभापतित्व में, आर्य वीरदल सम्मेलन, श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी के सभापतित्व मे मनाये गये।

मॉक पार्लियामेन्ट का आयोजन भी हुवा। सरकारी दल के नेता श्री चौ०देशराज जी थे और विरोधी दल के नेता लाला रामगोपाल जी दुशाले वाले थे। अध्यक्ष पद पर श्री प्रो० रामसिंह जी एम० ए० विराजमान थे।

इस पार्लियामेन्ट मे, श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु तथा श्री विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी तथा सयुक्त प्रान्त से आये प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

प्रस्ताव—पार्लियामेन्ट का यह अधिवेशन महारानी विक्टोरिया द्वारा दी गई धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा को दृष्टि में रखते हुए, अपने अन्तर्गत भारतवर्ष राज्य मे मुस्लिम लीगी सरकार द्वारा सत्यार्थप्रकाश पर लगाये गये प्रतिबन्ध को महारानी की ऐतिहासिक घोषणा का निरादर समझता है—यह अधिवेशन भारत की केन्द्रीय सरकार को आदेश देता है कि वह सिन्ध सरकार के इस निश्चय को शीघ्र लौटाने की आज्ञा जारी करें क्योंकि ऐसे प्रतिबन्ध को पार्लियामेट, भारत की दो विशेष जातियों के बीच वैमनस्य उत्पन्न करने वाला समझती है।"

इस प्रस्ताव पर गर्मागर्मी से बहस हुई, समयाभाव से आगामी अधिवेशन तक स्थगित हुई।

सयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्तावः—

प्रस्ताव स० १—

यह सम्मेलन नवयुवकों के लिये दहेज की प्रथा को अत्यन्त हानिकारक समझता है और नवयुवकों से अनुरोध करता है कि वे इस दशा में अधिक से अधिक कार्य करने के हेतु नवयुवकों, युवतियों, तथा उनके माता पिताओं से मुरादाबाद सम्मेलन द्वारा निश्चित प्रतिज्ञा पत्र अधिक से अधिक सख्या में भरवा कर तथा अन्य रचनात्मक कार्यों द्वारा नवयुवकों को बाध्य करें कि वे अपने विवाह के समय किसी प्रकार की ठहरावनी आदि न करने देवें।

प्रस्ताव सं० २

संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन का यह अधिवेशन, संयुक्त प्रान्त की समस्त आर्यकुमार सभाओं, विद्यालयों, पाठ शालाओं को आदेश देता है कि वे अपने सभासदों तथा विद्यार्थियों आदि को प्रेरणा करें कि अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की सिद्धान्त शास्त्री, सि० भास्कर, सि० रत्न तथा सि० सरोज की परीक्षाओं में, जो प्रत्येक वर्ष जनवरी मास में होती हैं, अधिक से अधिक संख्या में बैठा करें।

प्रस्ताव सं० ३—

संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमारों का यह सम्मेलन प्रान्त भर की आर्य कुमार सभाओं के अधिकारियों से यह अनुरोध करता है कि वे सब अपने २ यहां व्यायाम शालाओं व वाचनालयों की स्थापना करें जिससे नवयुवक आर्य समाज की ओर खिचें।

प्रस्ताव सं० ४

यह सम्मेलन समस्त आर्य पत्रों के संचालकों से प्रार्थना करता है कि वे आर्य कुमारों व आर्य कुमारियों की लेखन शक्ति बढ़ाने के लिये तथा उनके शिक्षा व ज्ञान वृद्धि के लिये अपने अपने पत्रों में "एक पृष्ठ सुरक्षित कर देवें जिसका नाम" 'आर्य कुमार पृष्ठ' हो और उसमें केवल कुमार व कुमारी उपयोगिता लेख, कवितायें आदि छपा करें।

प्रस्ताव सं० ५

यह सम्मेलन रेडियो विभाग की भाषा नीति का विरोध करता है और भारत सरकार से प्रार्थना करता है कि वह इस भाषा नीति को दूर करने का उचित प्रबन्ध करे और कलाकारों से प्रार्थना करता है कि जब तक इस नीति को दूर न किया जावे तब तक वे रेडियो पर बोलना बन्द रक्खें।

राष्ट्र भाषा सम्मेलन

संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन के अवसर पर ता० ५—१०—४५ को राष्ट्र भाषा सम्मेलन श्रीयुत प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति के सभापतित्व में हुआ—जिसमें निम्न प्रस्ताव स्वीकृत हुवे—

प्रस्ताव—१.

इस राष्ट्र सम्मेलन की निश्चित सम्मति है कि समस्त देश वासियों में परस्पर प्रेम, एकता और संगठन की भावना उत्पन्न करने के लिये एक राष्ट्र भाषा का होना अत्यन्त आवश्यक है और वह भाषा भारत में संस्कृत निष्ठ हिन्दी ही हो सकती है न कि उर्दू व हिन्दुस्तानी। अतः यह सम्मेलन समस्त भारतीयों से अनुरोध करता है कि वे इस राष्ट्रभाषा हिन्दी को पूर्णतया अपना कर अपना समस्त पत्र व्यवहार तथा अन्य कार्य-कलाप इसी में किया करें।

प्रस्ताव—२

यह राष्ट्रभाषा सम्मेलन, सरकारी डाक विभाग और रेडियो विभाग की हिन्दी विरोधिनी नीति की घोर निन्दा करता है और समस्त जनता से अनुरोध करता है कि वे इस नीति को परिवर्तन कराके राष्ट्र भाषा हिन्दी के अधिकारों की रक्षार्थ प्रबल आन्दोलन (जिसमें रेडियो का बहिष्कार भी सम्मिलित है) करें और तब तक चैन न लें जब तक हिन्दी प्रेमियों की न्याय संगत मांग पूरी न कर दी जाए।

सत्यार्थप्रकाश—सम्मेलन

संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन के अवसर पर ता० ६—१०—४५ को सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी के सभा-

पतित्र में हुआ"—जिसमें निम्न प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुवा।

प्रस्ताव—यह सम्मेलन सिन्ध की मुसलिम लीगी सरकार द्वारा इस युग के बड़े निर्माता महर्षि दयानन्द प्रणीत आर्यों के पवित्र धर्म ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें सम्मुल्लास के मुद्रण तथा प्रकाशन पर भारत रक्षा विधान के अन्तर्गत लगाये गये अन्याय पूर्ण, अनावश्यक, तथा अनुचित प्रतिबंध को घृणा की दृष्टि से देखता है और इस प्रतिबन्ध को आर्यों के धार्मिक अधिकारों में हस्ताक्षेप मानता हुवा उसका घोर विरोध करता है यह सम्मेलन भारत सरकार तथा सिंध की मुसलिम लीगी सरकार के इस निन्दनीय व्यवहार को अपने लिये अपमान जनक समझता है जो निरन्तर ग्यारह मास तक हमारे नेताओं के समझाने, लिखा पढ़ी करने और सम्पूर्ण हिन्दू जगत् के विरोध प्रकट करने पर भी यह प्रतिबन्ध अभी तक नहीं हट या गया, जिससे हमारे धैर्य्य और शान्ति का अन्त हो गया है।

यह सम्मेलन सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति से आग्रह पूर्वक अनुरोध करता है कि सत्यार्थप्रकाश पर से प्रतिबन्ध हटवाने में समिति द्वारा किये गये सम्पूर्ण वैधानिक उपायों के सफल न होने पर अब समिति को शीघ्र से शीघ्र अन्तिम उपाय सत्याग्रह प्रारम्भ करके आर्यों को अपने धर्म ग्रन्थ की रक्षा के निमित्त अपना सर्वस्व न्योछावर करने का अवसर देना चाहिये जिससे विरोधियों को आर्यों की शक्ति तथा अपने धर्म ग्रन्थ की रक्षा के लिये बलिदान देने का परिचय मिले, यह सम्मेलन सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति को विश्वास दिलाता है कि उनके सत्याग्रह निर्णय करने पर समस्त प्रान्त के आर्य नवयुवक अपना सर्वस्व बलिदान करने पर उद्यत रहेंगे।

देवीदयाल—कार्यालय मंत्री
भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्
दीवान हाल—दिल्ली।

संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् का वार्षिक निर्वाचन इस प्रकार हुवा।

१—प्रधान राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री न्याय भूषण। २—उपप्रधान मास्टर शुगन चंद्रजी मुजफ्फर नगर। ३— „ श्री सत्य प्रकाश जी गोयल, प्रयाग। ४— „ श्री ईश्वर दयालजी बिजनौर। ५—प्रधान मंत्री श्री ब्रजमोहन जी गाजियाबाद। ६—उप मन्त्री „ अम्बा शंकर जी बाराबंकी। ७— „ „ चन्द्रकुमार जी धामपुर। ८— „ „ ओ३म प्रकाश जी—सि.शा० मुजफ्फरनगर। ९—कोषाध्यक्ष श्री हीरालाल जी बी ए सि शा, गाजियाबाद। १०—पुस्तकाध्यक्ष श्री प्रियव्रतजी सि० शा० भवाना कलाँ।

अन्तरंग—सदस्य

११—श्री देवी दयाल जी, गाजियाबाद
१२— „ विश्वम्भर सहायजी प्रेमी, मेरठ
१३— „ हरिश्चन्द्र—सरायतरीन, मुरादाबाद
१४— „ सतीश चन्द्रजी—बाराबंकी
१५— „ राम स्वरूपजी गुलावठी—(बुलन्दशहर
१६— „ अमीचन्दजी शेरकोट—जि० बिजनौर
१७— „ रमा कान्तजी हरदोई
१८— „ रमेशचन्द्र जी गाजियाबाद
१९— „ मोतीलालजी बांसी, जिला बस्ती
२०— „ रूमालसिंह जी भवानाकलाँ
२१— „ शिवचन्द जी मुरादाबाद

२२— „ वेद प्रकाश जी मेरठ
२३— „ नरोत्तम प्रसादजी, साधु आश्रम, हरदुवागज।

संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् की अन्तरंग सभा का प्रथम अधिवेशन ता० ७–१० ४५ई० को रात्रि के ६ बजे से श्री राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री न्याय भूषण के सभा पतित्व मे हुवा।

जिसमें आगामी वर्षका कार्यक्रम तथा बजट स्वीकृत हुवा तथा निम्न महानुभावों की एक उप-समिति बनाई जो प्रान्तीय कुमार परिषद् के नियम बना कर आगामी अन्तरंग सभा में प्रस्तुत करे।

श्री देवीदयाल जी
„ हीरालाल जी
„ ब्रजमोहन जी

—मंत्री

वैदिक वर्ण व्यवस्था में शिल्पकारों का उचित स्थान और वैश्य शब्द का व्यापक अर्थ।

जब वैदिक धर्म का अधःपतन हो कर पौराणिक मत फैला तो वैदिक वर्ण व्यवस्था ने विकृत हो कर वर्तमान जन्म परक जाति भेद का रूप धारण किया। वैदिक समय मे केवल चार वर्ण थे और वे भी गुण कर्मानुसार थे जन्म के आधार पर नहीं थे। परन्तु पौराणिक समय मे उनके स्थान मे सहस्त्रों जात पात बन गई और वे सब केवल जन्म के आधार पर बनीं। इससे वैदिक धर्मियों की जातीय एकता बिलकुल नष्ट हो गई और भी जो अनेक सामाजिक हानिया हुई वे स्पष्ट ही हैं।

इस के साथ एक बड़ा परिवर्तन यह हुआ कि लोहार, बढ़ई, राज, धोबी, जुलाहे, चमार, आदि सब शिल्पकार शूद्रों मे गिने जाने लगे। इससे एक बडी हानि यह हुई कि ये सब व्यवसाय भी तुच्छ वा नीच समझे जाने लगे। और इसलिये इनकी उन्नति न हो सकी क्यों कि जब इन व्यवसाय और धन्धों के करने वाले नीच समझे जाने लगे और उनकी समाज में मान मर्यादा न रही तो उनको उन्नति करने के लिये कसे साहस या उत्साह हो सकता था। योरूप में ऐस २ व्यवसाय करने वालों ने समाज मे बड़ा मान और आदर पाया जिससे योरुप मे शिल्प की इतनी उन्नति हुई। वेदों मे ऐसे व्यवसायों की बडी प्रशसा पाई जाती है और उनके करने वालों का बडे आदर के साथ वर्णन आता है। स्व० प शिवशकर जी काव्यतीर्थ ने अपने लिखे पुस्तक जातीयनिर्णय मे इस प्रकार के अनेक वेद मन्त्र दिए हैं। जैसा मैं आगे दिखलाने का यत्न करूगा इन सब शिल्पकारों की गणना वैश्य वर्ण में होनी चाहिये।

१ वर्ण व्यवस्था के विषय में वेद का सुप्रसिद्ध मन्त्र यह है --

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत। ऋ० १०। ९०। ११। यजु० ३१। ११। इस मन्त्र का शब्दार्थ यह है --

ब्राह्मण उसका (मनुष्य समाज का) मुख था, क्षत्रिय बाहु किया गया। जो उसका मध्यभाग है वह वैश्य है और शूद्र पाव रूप बनाये गये। इसमे अलकार रूप से यह बतलाया गया कि मनुष्य समाज मे जो विद्वान् और समाज के नेता हैं वे ब्राह्मण कहलाते हैं। इनमे केवल पुरोहित वा अध्यापक ही नहीं किन्तु न्यायाधीश वकील (Judge & Lawyers) कानून बनाने वाले (Legislators) इजीनीयर चिकित्सक Medical men) ऊंची श्रेणी के कलाकार (Artists) आदि सब शामिल हैं क्यों कि वे सब समाज के शिर स्थानीय है। जो लोग समाज की रक्षा करते हैं वे बाहु के सदृश होकर क्षत्रिय कहलाते है। इनमे केवल फौज के सिपाही नहीं किन्तु पुलिस, मैजिस्ट्रेट और शासन विभाग के अधिकारी (Executive Officers) शामिल है। वैश्य वर्ण की तुलना मध्यभाग मे की गई। उनमे केवल किसान और साहूकार ही

नहीं किन्तु हर प्रकार का व्यापार करने वाले, कारखाने वाले, फैक्टरी रेल व मोटर आदि के संचालक और सब प्रकार के शिल्पकार शामिल हैं जैसे बढ़ई, लुहार, सुनार जुलाहे, रंगरेज, चर्मकारादि। शूद्र वर्ण की तुलना पांवों से को गई है उनमें घरेलू नौकर और छोटी श्रेणी के मजदूर आदि शामिल हैं।

४ बहुत से लोग यह सुनकर चौंकेंगे कि चमार आदि की गणना वैश्यों में की जाए क्यों कि वे साधारणतया शूद्र वा नीच ही समझे जाते हैं। इसको स्पष्ट करने के लिये यह लिखना उचित होगा कि ऊपर लिखे मन्त्र में ऊरू शब्द का अर्थ जो बहुधा जंघा या जानु किया जाता है ठीक नहीं। उसका इस मन्त्र में ठीक अर्थ मध्यम भाग है। इसका प्रमाण इससे अधिक दृढ़ और क्या हो सकता है कि यह मन्त्र अथर्ववेद में भी आया है और वहा पाठ इस प्रकार है अर्थात् ऊरु के स्थान पर मध्यम् शब्द है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य कृत।
मर्ध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।

किसी वैदिक शब्द के सत्य अर्थ जानने के लिये इससे अच्छा साधन और कोई नहीं हो सकता कि वह किसी दूसरे वेद में किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है और जब एक वेद मन्त्र ज्यों का त्यों केवल एक शब्द के पाठान्तर के साथ दूसरे वेद में आया हो तो उस शब्द के अर्थ उक्त पाठान्तर के अनुसार मानने में कोई सन्देह नहीं हो सकता।

५. ऊरु शब्द के अर्थ मध्यम भाग होने में उपरोक्त प्रमाण के सिवाय एक महत्वपूर्ण युक्ति भी है वह यह है कि जब ब्राह्मण वर्णों की तुलना सिर के साथ, क्षत्रिय वर्ण की बाहु से और शूद्रों की पांवों से की गई तो शरीर का शेष भाग अर्थात् मध्य भाग वैश्यों के लिये ही रह जाता है। वैश्य वर्ण की तुलना जंघा के साथ करने पर शरीर का मध्यभाग (Trunk of the human body) बिलकुल छूट जाता है इस मध्य भाग में ही शरीर के लगभग सब महत्वपूर्ण अंग और अवयव हैं अर्थात् मेदा, जिगर व आँतें जिनके द्वारा भोजन पचता है और उसका रस निकलता है, दिल वा हृदय जिसके द्वारा रुधिर सारे शरीर में पहुंचता है, फेफडे जिनके द्वारा रुधिर शुद्ध करते हैं गुर्दे व गुदा जिनके द्वारा मूत्र और मल शरीर से बाहर निकलते हैं, और जननेन्द्रिय जिनके द्वारा गर्भ रह कर संतान उत्पत्ति होती है। शिर में केवल दिमाग और सब ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, उसकी तुलना ब्राह्मणों से की गई जिनकी संख्या अधिक नहीं हो सकती। बाहु वा भुजाओं में जिनकी तुलना क्षत्रियों से की गई केवल बाहुइन्द्रिय हैं उनकी संख्या भी अधिक नहीं होनी चाहिये परन्तु आज कल शूद्रों की वा शूद्र समझे जाने वाले मनुष्यों की संख्या इतनी अधिक है कि शेष तीन वर्णों की संख्या मिल कर भी उनसे बहुत कम होती है। इसका मुख्य कारण यह है कि शिल्पकारादि अनेक मनुष्य जिनकी गणना वास्तव मे वैश्यों मे होनी चाहिये वे शूद्रों मे डाल दिये गये हैं व जैसे शिर, भुजा, और पावों को छोड़ कर शरीर के सारे अंग मध्यम मे हैं इस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय और वास्तविक शूद्रों के सिवाय जो संक्षेप रूप से ऊपर गिन ये आ चुके हैं शेष सब मनुष्य ऊपर दिये वेद मन्त्र के अनुसार वैश्य वर्ण में गिने जाने चाहियें। वैश्य शब्द विट् वा विशः शब्द का

रूपान्तर है जो 'विश प्रवेशने' धातु से बना है। विश' शब्द का अर्थ प्रजा है, जैसे "राजा विशा म्पतिः" अर्थात् राजा प्रजा का पालक वा रक्षक है। इसलिये विश शब्द के विस्तृत अर्थ में सारी प्रजा अर्थात् चारों वर्ण आ जाते हैं। उसके दूसरे वा सकुचित अर्थ मे ब्राह्मण क्षत्रिय और शूद्र को छोड़ कर जिनकी सख्या अपेक्षया अधिक नहीं हो सकती, शेष सारी प्रजा शामिल है अर्थात् जो मनुष्य ब्राह्मण क्षत्रिय वा शूद्र नहीं वे वैश्य हैं। सस्कृत का विश्व शब्द भी जिसका अर्थ सब है इसी विश धातु से बना है।

६ वैदिक वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध बहुधा लोग एक यह शका किया करते हैं कि यदि वर्ण मनुष्यों की वृत्ति रोजगार या पेशे क अनुसार माने जायें तो मनुष्य के अनेक वा असख्य व्यव साय वा पेशों मे यह बतलाना वा निश्चित करना कठिन होगा कि कौन सा पेशा किस वर्ण मे माना जावे। उदाहरणार्थ श्री माननीय सम्पूर्णानन्द जी ने (जो युक्त प्रान्त क गत कांग्रेस मन्त्री मडल मे शिक्षा सदस्य थे) अपनी पुस्तक "समाजवाद' मे इसी शका को उठाकर बहुत से पेशों के सम्बन्ध मे ऐसा ही प्रश्न किया है जिसका उत्तर देना कठिन नही। बकों क स्वामी प्रजापति, कारखानों के मैनेजर जिनको उन्होंने उदाहर णार्थ लिखा स्पष्ट रूप से वैश्य है क्षत्रिय नहीं। रेलवे कम्पनियों के कर्मचारी भी चाहे ऊचे दर्जे के हों वा नीचे सब वैश्य हैं। जमीन्दार स्पष्ट रूप से वैश्य हैं। मिल या कारखानों मे काम करने वाले जो छोटे दर्जे का काम (Unskilled Labours) मजदूरों के समान करते हैं वे शूद्र और शेष सब वैश्य समझे जाने चाहिए। वास्तव मे जैसा ऊपर कहा गया जो कोई भी मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय या शूद्र नहीं वह वैश्य है। जैसा कि कहावत है कि हाथी के पाव में सबका पाव। यदि किसी मनुष्य के कई पेशे हों तो जो उसका मुख्य पेशा है जिससे उसकी वृत्ति वा जीवन निर्वाह होता है उसके अनुसार उसका वर्ण माना जायेगा। वर्ण और वृत्ति (रोजगार) दोनों शब्द वृ धातु से बने हैं जिनका अर्थ To Choose पसन्द करना है अर्थात् वर्ण Choice of Profession या पेशा पसन्द करने का नाम है।

७—चूकि जन्म परक जाति भेद के अनुसार समाज मे केवल द्विज कहलाने वालों अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य नामधारियों का मान होता है, चाहे उनमे बहुत से मूर्ख निर्धन और दुराचारी भी हों, परन्तु शूद्र कहलाने वालों का मान वा आदर नहीं होता चाहे वह पठित धनी और सदाचारी भी हों। इसलिये कुछ समय से यह प्रथा हो गई कि शूद्र कहलाने वाली जातियों मे जो कोई अपनी योग्यता और उद्योग से धन सम्पन्न हो जाते है वे अपने आपको ब्राह्मण वा क्षत्रिय कहने लगते हैं और हमारे बहुत से पौरा णिक पडित उनके लिये ऐसी कथायें सस्कृत मे गढ देते ह जिससे उनका समर्थन हो। इस प्रकार नाइ और बढ़ई जाति के लोग अपने को ब्राह्मण बताने लगे है और मर्दमशुमारी वा अन्य सरकारी कागजों मे भी अपना यही वर्ण लिखाते है। बहुत सी और जातिया जो साधारणतया शूद्र समझी जाती है अपने को क्षत्रिय वर्ण मे मानने और कहने लगी है। ये जातिया अपने आपको वैश्य वर्ण मे शामिल करने का यत्न शायद इसलिये नही करती कि वैदिक व्यवस्था विकृत होने पर हमारे पौराणिक पंडितों ने जिन्होंने जन्मपर

जाति भेद की स्थापना या वृद्धि की केवल अपने ब्राह्मण वर्ण को और क्षत्रियों को जो उनके भी शासक और हाकिम थे ऊंचा दर्जा दिया और वैश्य वर्ण को भी एक प्रकार से गिरा दिया और उसको भिन्न २ करके उसके बहुत से भागों वा अंगों को उससे काट कर शूद्र या नीच वर्ण मे डाल दिया। यह एक बड़ा दुःख का विषय है। यदि जन्म परक जाति भेद जड़मूल से दूर हो जावे तो फिर किसी जाति को अपनी सामाजिक स्थिति उन्नति करने के अभिप्राय से ऐसे असत्य व्यवहार न करने पड़े और ऐसी झूठी कथाओं की रचना कराने की आवश्यता न हो। वैश्य वर्ण मनुष्य समाज के लिए उपयोगी है। ऊंच नीच का भेद नहीं होना चाहिए। शूद्रों का भी समान भाव से समाज में आदर होना उचित है। छल, झूठ आदि असत्य व्यवहार मनुष्य को नीच बनाने वाले हैं परन्तु जो मनुष्य सत्यव्यवहार और धर्म के अनुसार अपना रोजगार या धन्धा करता है चाहे वह धन्धा छोटा वा हलका हो वा बड़ा हो वह सम्मान का पात्र है। ईश्वर ऐसा आशीर्वाद देवे कि हमारे देश वासी सत्य को समझें और उसके अनुकूल व्यवहार करें।

८ यह विषय बड़े महत्व का है इसलिये मैं इसकी एक प्रति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा मे इस अभिप्राय से भेजता हू कि इस विषय को धर्मार्य सभा मे भेज कर उसकी व्यवस्था प्राप्त की जाये जिससे शिल्पकारों के ठीक वर्ण के विषय में पूर्ण विचार कर कम से कम आर्य समाज के लिए एक निर्विवाद व्यवस्था हो जाये और कोई भ्रम न रहे। हमारे सनातनी भाई साधारणतया ऐसे विषयों मे आर्य समाज के ही सिद्धान्त को अपना कर उसके अनुकूल व्यवहार करने लगते हैं। इस प्रकार ऊपर लिखी व्यवस्था सारी हिन्दू जनता के लिये मार्ग प्रदर्शक होगी।

आत्मोत्कर्ष

(लेखक—श्री महात्मा नारायणस्वामी जी नारायणाश्रम रामगढ़ जिला—नैनीताल)

आत्मा के समझने में विद्वानों में मतभेद चिरकाल से चला आता है। छान्दोग्योपनिषद् के अन्त में प्रजापति ने इन्द्र को आत्मा की शिक्षा देते हुये आत्मा की व्याख्या इस प्रकार की है— "अथ यो वेदेद मन्वानि इति स आत्मा।" अर्थात् जो यह मनन करे कि ऐसा जानता हूँ वह आत्मा है। ग्रीक विद्वानों ने इसी का Cogitoerg osum"—I think therefore I am इस सूत्र मे वर्णित किया है। फ्रेंच दार्शनिक डेकार्ट ने भी इसी का समर्थन किया है। चेतना क्या है ससार में कहा से आई इस प्रश्न का उत्तर,आत्म सत्ता स्वीकार किये बिना नहीं दिया जा सकता। ग्रीन महाशय ने अपने ग्रन्थ "Psolegomena to Ethics" मे जीवात्मा को Spiritual principle in man और परमात्मा को Spiritual Principle in nature वर्णन किया है।

(२) एक पश्चिमी दार्शनिक ने जीव को मनुष्य शरीर का अत्यंत सूक्ष्म रूप प्रकट किया है। महाभारत में भी एक जगह कुछ इसी प्रकार की चर्चा की गई है—अगुष्ठमात्रं पुरुषं निश्चकर्ष यमो बलात् (महाभारत वन पर्व २९७।१६) अर्थात् सत्यवान् के शरीर से अगूठे के बराबर एक पुरुष (जीव) को यम ने बाहर निकाला॥ महाभारत में कदाचित् यह भूल उपनिषद् के इस वाक्य से हुई प्रतीत होती है जिस में लिखा है 'अगुष्ठ-मात्र पुरुषो मध्ये आत्मनितिष्ठति" उपनिषद् का अभिप्राय तो अंगुष्ठ मात्रा वाले हृदयाकाश में रहने वाले पुरुष से था परन्तु उससे जीव की मात्रा ही अगुष्ठ मात्रा-अगूठे के बराबर समझ ली गई। जब जीव अप्राकृतिक है तो वह अगुष्ठ मात्रा वाला अर्थात् अगूठे के बराबर कैसे हो सकता है? इस बात पर वर्तमान महाभारत के लेखक ने ध्यान नहीं दिया।

(३) उपनिषद् मे वर्णित आत्मा का उत्कर्ष किस प्रकार हो सकता है। इसके लिये आवश्यक है कि हम कौटिलीय अर्थ शास्त्र के सूत्र भाग के प्राथमिक १० सूत्रों पर दृष्टि डालें। वे सूत्र इस प्रकार से हैं.—

(१) सुखस्य मूलधर्मं। अर्थात् सुख प्राप्ति का कारण धर्माचरण है।

(२) धर्मस्य मूलम् अर्थं। अर्थात् धर्म पर आचरण करने के लिये धन आवश्यक है।

(३) अर्थस्य मूल राज्यम्। अर्थात् धन प्राप्ति के लिये अपने राज्य का होना जरूरी है।

(४) राज्य मूलमिन्द्रियजय। अर्थात् राज्य की प्राप्ति के लिये इन्द्रियों पर या यों कहिये कि अपने ऊपर अधिकार होना आवश्यक है क्योंकि राज्य अन्यों पर अधिकार करने का नाम है। जिसका अपने पर अधिकार नहीं उसका क्या अधिकार है कि अन्यों पर अधिकार कर सके?

(५) इन्द्रियजयस्य मूल विनय। अर्थात् विनय से इन्द्रियों पर अधिकार होता है।

(६) विनयस्य मूल वृद्धोपसेवा। अर्थात् वृद्धों की सेवा से विनय प्राप्त होती है।

(७) वृद्ध सेवाया विज्ञानम्॥ अर्थात् वृद्धों की सेवा से विज्ञान प्राप्त होता है।

(८) विज्ञानेनात्मान सपादयेत् । अर्थात् विज्ञाग से आत्मा मे समता आती है।

(९) सपादितात्मा जितात्मा भवति । अर्थात् समता मय आत्मा जितात्मा होता है।

(१०) जितात्मा सर्वार्थैसयुज्येत ।। अर्थात् आत्मजित् होने से सर्वार्थता की सिद्धि हो जाती है। स्पष्ट है कि सर्वार्थता (मोक्ष) की सिद्धि का क्रम इन सूत्रों मे वर्णन किया गया है।

(४) महाभारत शान्ति० अध्याय १५५ मे आत्म सपदा का विवरण इस प्रकार दिया गया है—

बहुश्रुतं तपस्त्य ग श्रद्धा यज्ञक्रिया क्षमा ।
भाव शुद्धिर्दया सत्य सयमश्चात्मसपद ।।

अर्थ (१) बहुश्रुत = स्वाध्यायशीलता, (२) तप = द्वन्द्वो का सहन, (३) दया = अपनी ओर से किसी के लिये अनिष्ट चिन्तन न करना अपितु सभव सहायता देना, (४) त्याग = स्वार्थ = कर्मफल त्याग (५) श्रद्धा = सत्य का धारण करना, (६) यज्ञ = निष्कामना के साथ उत्तम कर्मों का करना (७) क्रिया = पुरुषार्थ मय जीवन बनाना, (८) भाव शुद्धि = भावों सकल्पों का शुद्ध हाना, (९) सत्य = सत्याचरण शीलता, (१०) सयम = इन्द्रिय और मन पर अधिकार रखना ।।

महाभारत के इन १० आत्म सपदाओं और कौटिल्य के उपर्युक्त १० सूत्रों में, प्राय मिलती जुलती साधन सपन्नता का विवरण दिया गया है।

(५) आत्मा क्या है और उसकी उन्नति के साधन क्या हैं, इनका विवरण देने के बाद, अब मै कुछेक बातें अपने अनुभव की यहा बतलाना चाहता हू कि जिनसे मनुष्य इस अध्यात्म वाद की यात्रा का सफल यात्री बन सकता है।

(क) मुक्ति उस स्वतन्त्रता का नाम है जिससे बढ़कर लोक और परलोक मे कोई स्वतन्त्रता नही, परलाक की स्वतन्त्रता की यह चरम सीमा है। मनुष्य का निश्चय यह होना चाहिये कि इस स्वतन्त्रता के पथ का पथिक बने और बन्धन के छोटे से छोटे कारणों को दूर करता हुआ स्वतत्रताग्नि की छोटी सी छोटी चिनगारी को भी ग्रहण करे। यदि कोई व्यक्ति सिग्रेट छोड देता है तो उसने मानो इस पथ मे एक पग बढाया है। यदि वह अन्य नशों का परित्याग करता है तो समझो उसने इस पथ के कुछेक मार्ग को तै कर लिया।

(ख) आत्म निरीक्षण = नियमपूर्वक सोने से पहिले प्रति दिन, अपने किये कामों पर एक दृष्टि डालकर, उनमे जो बुरे प्रतीत हों उन के भविष्य मे न करने की दृढ प्रतिज्ञा कर लेनी चाहिये।

(ग) जीवन के प्रत्येक कार्य मे चाहे वे लोक सम्बन्धी हों या परलोक सम्बन्धी उन के करने मे निष्कामता और निष्पक्षता को आधार बनाना चाहिये और इन से किसी अवस्थामें भी विचलित नहीं होना चाहिये।

(घ) ईमानदारी और परिश्रम से कमाये धन ही का सेवन करना चाहिये।

(च) प्राणायाम और धारणा के अभ्यास जितना कोई बढा सकता हो उसे उतना अवश्य बढाना चाहिये।

इन साधनों से मनुष्यों का आत्मा उत्कर्ष को प्राप्त हुआ करता है जिसका आदर्श महर्षि दयानन्द जी के जीवन में दिखाई देता है।।

आर्य समाज के लिये कानून की ज़रूरत

(लेखक श्री पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

आर्य समाज मे प्रविष्ट और अप्रविष्ट हुये आर्य बहिनों और भाइयों की सख्या अब इतनी अधिक हो गई है कि उन्हे नियम और मर्यादा में रखने के लिये विशेष प्रबन्ध की आवश्यकता है। आर्य समाज के प्रारम्भिक जीवन में जिसे आर्य समाज का सुनहरा युग कहना चाहिये आर्य समाज मे न केवल प्रविष्ट अपितु स॰ानुभूति रखने वाले व्यक्ति भी ऐसे थे, जो आर्य समाज और उसके मन्तव्यों के जानने के उत्सुक और यत्नवान् रहा करते थे। इस उद्द श्य की पूर्ति के लिये उन्हे स्वाध्याय शील होना पडता था और इस स्वाध्याय से वे इतनी निखरी और सुलझी प्रकृति के व्यक्ति हो जाते थे कि उनके लिये किसी नियन्त्रण की जरूरत नहीं रहती थी। वे स्वय व्याख्यान देते भजन गाते,सस्कार कराते, शास्त्रार्थ करते थे। इसके लिये उन्हे किसी उपदेश की जरूरत नही होती थी। ये सब आय समाज के प्रचार युग के काम थे। इसके बाद सस्थायुग ने आर्यसमाज के प्रचारयुग का स्थान लिया। इस दूसरे युग में आर्य समाज के सदस्यों की योग्यता क्रमश कम होती गई। सस्थाओं के लिये दूसरे प्रकार की योग्यता अपेक्षित होती है। प्राय इस दूसरी योग्यता वाले समाजों में बहुसंख्या मे प्रविष्ट हुये। कुछेक स्वार्थवश भी समाज में प्रविष्ट हुये इस विचार से कि आर्य समाज के अधिकारी बन कर किसी संस्था पर अधिकार करके अपना प्रभाव बढावेंगे। ऐसे व्यक्तियों की सख्या भी अब आर्य समाज में कम नहीं रही। ऐसे व्यक्तियों को आर्य समाज के मन्तव्य और सिद्धान्तों को जानने की उतनी चिन्ता नहीं होती थी जितनी चिन्ता अधिकारी बनने की हुआ करती थी। कई जगह देखा गया है कि आर्य समाज और प्रान्तिक सभाओं के निर्वा न के अवसरों पर उसी प्रकार का निकम्मा प्रोपेगेंडा होता है जैसा म्यूनिसिपेलटियों आदि के निर्वाचन के अवसरों पर हुआ करता है। लोग बात बात पर कचहरियों के द्वार खटखटाने लगे। लखनऊ और जालन्धर की ताजी घटित घटनायें आर्य जनता के सामने हैं। इस सस्था-युग को बदल देना अब आर्य समाज की शक्ति से प्राय बाहर है। इसलिये अब उसे नियम में रखने की जरूरत है। आर्य समाज के नियमों के नाम पर नैतिक अपील इन मुकदमे बाजी के इच्छुकों से भी की जाती है वह निष्फल सिद्ध होती है। इसके लिये इन्हे कानूनी डडे की जरूरत है। उसी से ये काबू मे रह सकेंगे या रखे जा सकेंगे।

२ आर्य समाज के ऐसे कानून में क्या क्या बातें होनी चाहियें इसका निर्णय तो वह समिति करेगी जो आर्य समाज की ओर से इस उद्द श्य के लिये बनाई जावेगी परन्तु एक साधारण व्यक्ति की हैसियत से कुछेक बातों का यहा उल्लेख किया जाता है।

१ जो सोसायटी आर्य समाज के नाम से अब स्थापित है अथवा भविष्य मे स्थापित हो उसके लिये आर्य समाज के १० नियमों और ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में वर्णित वेदानुकूल मन्तव्यों के सिवा, आर्य समाज के उपनियमों का मानना आवश्यक होगा। उपनियम कानूनी तौर

से वे ही स्वीकार किये जावेंगे जो आर्य समाज की सब से बड़ी संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने बनाये या स्वीकार किये हों। उपनियमों के सम्बन्ध में उस संस्था की सम्मति अन्तिम Final होगी उस में कोई कोर्ट हस्तक्षेप न कर सकेगा।

२ यदि कोई आर्य समाज अपनी पृथक् रजिस्ट्री करावे, जिसकी जरूरत नहीं तो उसे उन्हीं उपनियमों को अपने नियम ठहराकर जो उस समय प्रचलित हों रजिस्ट्री करानी होगी। उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन या न्यूनाधिक्य करने का अधिकार उस समाज को न होगा। कोई आर्य समाज सोसाइटी ऐक्ट के अनुकूल रजिस्टर्ड न किया जा सकेगा जब तक उसके साथ प्रशासित सार्वदेशिक सभा का प्रमाण पत्र उपनियमों के विहित होने का साथ न हो।

३. कोई आर्य समाज जिस सूबे मे हो वह उस सूबे की प्रतिनिधि सभा के अधिकार क्षेत्र में रहेगा उसके लिये उस सभा के नियमों और आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक होगा चाहे वह उस सभा में प्रविष्ट हो या न हो।

४ कोई आर्य प्रतिनिधि सभा जो किसी सूबे में हो वह सार्वदेशिक सभा के अधिकार क्षेत्र में रहेगी। उसके लिये आवश्यक होगा कि वह सार्वदेशिक सभा में प्रविष्ट हो और उसके नियमों और आज्ञाओं का पालन करे।

५. आर्य समाज के इस कानून के उद्देश्य से जो सूबे, सार्वदेशिक सभा प्रान्तिक सभाओं की सम्मति लेकर बनावेगी वे स्वीकार किये जावेंगे। उनमे कोई कोर्ट रद्दोबदल करने का अधिकार न रखेगी।

६. संस्थाओं आदि के सम्बन्ध मे और भी आवश्यक बातों का समावेश इस कानून में हो सकेगा जिनका करना उपर्युक्त समिति आवश्यक समझे।

३ यह प्रस्ताव मैं आर्य समाजों आर्य प्रतिनिधिसभाओं और सार्वदेशिक सभा और अन्य सभी आर्य बहिनों और भाइयों के सम्मुख विचारार्थ रखता हू। सभी इस पर विचार करके यत्नकरें कि अच्छे परिणाम पर पहुंचें। आर्य समाज के प्रेस से भी आशा है कि वे अपनी मूल्यवान् सम्मति इस प्रस्ताव के सम्बन्ध में दें। सम्मति देने वाले प्रत्येक पत्र संस्था और व्यक्तियों से प्रार्थना है कि वे उसकी एक २ प्रति सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे भेजें। सम्मतियों के प्राप्त होने पर पहले यह विषय सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा मे उपस्थित होगा और अन्तरंग सभा की अनुकूल सम्मति होने पर फिर एक आर्य विद्वानों के सम्मेलन के सम्मुख रखा जायेगा।

दिव्य दयानन्द की दीपावली

(लेखक—पं० चन्द्रकान्त जी वेदवाचस्पति आचार्य गुरुकुल सूपा, सूरत)

विजयादशमी और दीपावली, विजय एव ऐश्वर्य के उत्सव है। प्राचीन समय से एक क्षत्रियों के लिये देश विजय का और दूसरा वैश्यो के लक्ष्मी-पूजन का त्यौहार माना गया है। क्षात्र प्रकोप (Militarism) तथा वैश्य प्रकोप (Industrialism) से क्षुब्ध इस युग मे इनसे हम पर्याप्त सदेश ले सकते है। सभवत सबसे प्रथम मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र ने अनार्य राक्षसो को हराकर इस पुण्यदिन आर्य विजय की घोषणा की थी। भारत के राजपूत, मराठे तथा अन्य क्षत्रिय लोग दशहरे पर सीमोल्लघन एवं पूजन करके विजय तथा ऐश्वर्य का हर्ष दीपावली पर मनाया करते थे और लक्ष्मीनंदन व्यापार यात्रा से लौटकर लक्ष्मीपूजन करते थे। आज यहा पर वह विजय कहाँ ? और सच्ची लक्ष्मी की पूजा कहाँ ? इतिहास बताता है कि विजय के लिए सदा कटिबद्ध रहने वाली जातियो के पैरो में लक्ष्मी लोटा करती है। स्वामी दयानन्द ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के आधार पर हमे धर्म विजय का संदेश देते हुए रोम रोम से दिव्य दिवाली मनाई है। उन्होने उपदेश दिया है कि आर्योंने बाह्य शत्रुओ को हराकर सुख,ऐश्वर्य तथा शांति के धाम साम्राज्य स्थापित किये थे। ये साम्राज्य आत्म विजय के आधार पर प्रजा के कल्याण के लिए थे। कपिलवस्तु के सिद्धार्थ ने ३० वर्ष की आयु तक देश विजय के स्वप्न लिये परन्तु मार—विजय के बाद ही वे सच्चे बुद्ध (Enlightened) बन सके। बुद्धदेव ने विजयादशमी के दिन दिव्य जन्म लेकर क्षत्रिय जाति को क्या आत्म विजय का उपदेश नहीं दिया है ? क्या आजकल के राजा महाराजा तथा दुनिया के तानाशाह लोग इस सदेश को सुनेंगे ? आज प्राय लोग साम्राज्यवाद की निन्दा तथा साम्यवाद की स्तुतियाँ गा रहे हैं परन्तु देखा जाय तो कोई भी "वाद" अपने आप मे प्रायः सर्वथा अच्छा या बुरा नही होता है। इन वादोको प्रयोग करने वाले नेताओ के हाथ मे आकर ये अच्छे या बुरे बन जाते है। साम्यवाद तथा समाजवाद के नाम पर प्रजा का कल्याण भी किया जा सकता है। यदि राम, कृष्ण, ईसा, अशोक तथा दयानन्द के साम्राज्य-स्थापन की भित्ति आत्मसयम है वहा नेपोलियन, हिटलर, मुसोलिनी ने भ्रातृभाव एव सस्कृति प्रसार के पवित्र सदेश के नाम पर अबीसीनिया को हड़पा, इटली को वायुयानो से ढक्कर विश्व के सहार का स्वप्न लिया परन्तु अन्त मे उसे कुत्ते की मौत मरना पड़ा, जनता ने ठोकरें मारी, उस पर थूका। नेपोलियन के समान हिटलर ने ससारको मुट्ठी मे रखने की महत्वाकाँक्षा रक्खी परन्तु अतमे उसेशायद आत्महत्या करनी पड़ी, यही दशा लावेल तथा टोजो की है। आश्चर्य तो यह है कि अब तक न देखे, न सुने गये इस विश्व युद्ध मे ब्रिटिश साम्राज्य के तारण हार महान् चर्चिल का तख्ता देखते ही देखते पलट गया। सम्राट् को त्यागपत्र देकर इस वीर को अनशन करना पड़ा और रहने के वास्ते मकान न रहा। क्या महान चर्चिल और नेपोलियन की वीरता मे किसी को सदेह हो सकता है। प्रश्न यह है कि इन विजेताओ के जीवन के अन्त मे

हार, दुःख और रुदन क्यो है ? राज्याभिषेक से एक दिन पूर्व ही वल्कल वस्त्र पहिन कर वन मे जाते हुए सीता और राम के हर्ष की सीमा नहीं है। महाभारत युद्ध मे विजय के सूत्रधार होकर भी राज्य एव नैवेद्य तिलक के समान से अलिप्त रहने मे ही कृष्णचन्द्र को हर्षोत्कर्ष है। इसलिये कवि के "विकार हेतौ सति विक्रियन्ते येषा न चेतासि त एव धीरा" शब्दो मे येही धीर और विजयी है। नेपोलियन, हिटलर और चर्चिल ने अनेक राष्ट्रो को जीता था पर अपने को न जीत सके थ। इनकी जीत मे हार छिपी हुई है। जब कि राम, कृष्ण, दयानन्द और गाधी की विजय तथा हार मे भी विजय है। विजेता चर्चिल को रहने के मकान के लिये चिंता हो सकती है पर भारत के हृदय सम्राट दयानन्द तथा गाधी के लिये राजाओ के महल और गरीबो की कुटीरे स्वय खुल जाती है। दिवाली के टिमटिमाते दीये हमे अपनी रोशनी स सच्ची विजयलक्ष्मी का मुख दिखा रहे है। कलिग क जीतने वाले अशोक महान् है या धर्म विजयी देवाना प्रियदर्शी अशोक ? गुलामी मे सडकर पराधीनता की तमोमय शाति मे चैन लेने वाले, पशु की मौत मरने वाले हम लोगो की अपेक्षा हिटलर एव टोजो महान एव विजयी अवश्य है परन्तु आत्मविजेता बुद्ध, दयानन्द तथा गाधी के सामने ये वामन है। इस महान् युद्ध ने राष्ट्रो तथा उनके विधाताओ के उत्थान और पतन की क्षणिकता मे हमे आत्मविजय की झाकी नहीं दिखाई है ? क्या कोई कह सकता है कि विश्व के रगमच पर वस्तुत कौन जीता है ? पेरे शूट टैंक और अणुबम के आविष्कार क्या मनुष्य जाति को फिर विजयी बनाने का स्वप्न रख सकते है ! इस महान् युद्ध ने क्या हमे नहीं सुझाया है कि मृत्युञ्जय दयानन्द जैसे पुरुष ही जीते और मरते हुए अमर है। और हम लोग श्वास लते हुए भी मृत प्राय है। हमे दीवाली के 'आत्मदीपो भव' आत्मदीपक जलाने का पाठ सीखना होगा।

महर्षि दयानन्द ने दीपावली के पुण्य दिन देह छोडते हुए नास्तिक प० गुरुदत्त विद्यार्थी को पूर्ण आस्तिक बनाकर इनके बुझ हुये हृदय दीपक को जगाया था। रोम रोम से 'ओ३म् तथा "प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो" का पुकारते हुए सच्ची दिवाली मनाई थी। भाइयो। इस गायत्री-गर्भ प्रसूत आजन्म ब्रह्म-कुमार ने हमे आदश दिया है कि अनार्यो को हराकर हमे आर्य—चक्रवर्ति साम्राज्य की स्थापना करनी चाहिये। क्या दीपावली इस अधेरी रात मे हमे वह प्रभात दिखायेगी ?

विदेश में आर्य समाज

आर्य समाज नैरोबी के इतिहास की एक झलक

(सन् १९०३ से सन् १९४५ तक)

(लेखक—प० सत्यदेवजी वेदालङ्कार मन्त्री आर्यसमाज नैरोबी)

भारतीय बगीचे का जब कोई विशेष अपना माली न रहा, बगीचे मे भिन्न २ तरहके घास पात उग खड़े हुए, जिसने जैसा चाहा वैसा भारतीय आर्य संस्कृति (हिन्दुत्व) के वृक्षों फूलों को तोड़ दिया और क्रूरता से मसल दिया ऐसी अवस्था में तेजस्वी और प्रखर तापस जीवन वाले माली की तरह—नव भारत के निर्माता महर्षिदयानन्द भारतीय आर्य संस्कृति की रक्षार्थ आगे आये। संसार मे विज्ञान की उन्नति तथा यन्त्रवाद से प्रख्यात यह उन्नीसवीं सदी थी। उस ऋषि ने जहाँ मतमतान्तरों के घास पात को अपनी पैनी तर्क शक्ति की दराती से भारतीय हिन्दुजीवन के बगीचे मे से काटना शुरु किया वहां उस बगीचे मे लगे फूलों और फलों को तोड़ने और मसलने वालों को भी ललकारा। यह है आर्य समाज की प्रगति की पृष्ठभूमि। भारत और भारत से बाहर जहां भी ऋषि के भक्त अपने साथ इस प्रगति को ले गए उन्होंने अपने उपयुक्त विशेषरूप को—जो उन्हें अपने तेजस्वी नेता से प्राप्त हुआ था—आचार धर्म के प्रकाश से उज्ज्वल रक्खा और यही आज तक आर्य समाज को प्राणित कर रहा है।

उन्नीसवीं सदी की अन्तिम दशाब्दियों मे पूर्वीय अफ्रीका (केनिया) मे रेल्वे लाइन बनाने आदि के लिए सामूहिक रूप से पर्याप्त संख्या मे पञ्जाबी तथा कुछ गुजराती भारतीय इधर आये। हर तरह की यातनाओं को सहते हुए भी वे देश को संसार की नयी सभ्यता के सम्पर्क मे लाने मे, रेल्वे बनाने के साथ २ सफल हुए। यह प्रदेश उन दिनों से अबतक एक ब्रिटिश उपनिवेश है जहां यूरोपियन लोगों का हर क्षेत्र मे प्रभुत्व है। भारत से दूर सम्बन्धियों आदि द्वारा नैतिक भयों से मुक्त होने से सदाचार की शिथिलता का होना स्वाभाविक था अपने धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन का विशेष रक्षा भी उन में जागृत होती न दिखाई देती था। इसी अवस्था में पञ्जाब की वीरभूमि में भारतीय सामाजिक क्रान्ति की अग्रदूत आर्य प्रगति के विचारों से अनुप्राणित कुछ नवयुवकों ने बड़ी दूरदर्शी से उस अवस्था पर ध्यान दिया हर तरह की विषम परिस्थितियों के होते हुए भी भारतीयों में नैतिक जीवन की रक्षा के लिए तथा उन्हें अपने सांस्कृतिक तथा जातीय जीवन में संगठित करने के लिए उन नवयुवकों ने बीसवीं सदी के प्रारम्भ में ५ अगस्त १९०३ को ईस्ट अफ्रीका की वर्तमान सबसे मुख्य तथा ईस्ट अफ्रीका में आर्य सामाजिक प्रगतियों की केन्द्र आर्यसमाज नैरोबी की स्थापना की। यह वह समय था जब कि भारत में महात्मा मुन्शीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द) भारतीय शिक्षा क्षेत्र में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रचलित करने के लिए गुरुकुल काङ्गड़ी की स्थापना कर रहे थे। इन नवयुवकों में श्रीयुत बद्रीनाथजी म० मथुरादासजी बिहारीलालजी वजीरचन्दजी गणेशीलालजी

तथा प० वैसाखीरामजी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। आज भी इन सब का नाम बड़ी श्रद्धा से स्मरण किया जाता है और इनके विस्तृत परिवारो का सम्बन्ध इस समाज से चिरस्थायी हो चुका है। श्री बद्रीनाथजी की अनथक सेवा, त्याग लगन और वृद्धावस्था की असमताओ मे भी नवयुवको से बढ़कर उत्साह चिरस्मरणीय और अनुकरणीय रहेंगे।

प्रारम्भिक कुछ वर्षों तक यह समाज सदस्यो के घरो मे साप्ताहिक सत्सग करती रही और बाद मे प्रथम विश्वयुद्ध के दिनो की विषम परिस्थितियो मे बडे साहस और त्याग से अपना शानदार मन्दिर बनवाया।

१९१४ १८ के विश्वयुद्ध के कारण जिन आर्य समाजी भाइयो को आयसमाज की सेवाए करते हुए विशेष जेलखाने आदि के दारुण कष्टो को उठाना पड़ा उन मे विशनदास जी शर्मा विशेषत उल्लेखनीय है। इन के मित्र बहुत से अन्य भाई भी—गुजराती तथा महाराष्ट्री और आर्यसमाज के वर्तमान प्रधान श्री लालचन्द जी भी उन दिनो जेल मे थे।

भारतीय विचारधारा, कलह, तथा प्रचार पद्धतियो का सीधा प्रभाव इस देश पर प्रारम्भ से ही पडता रहा है। भारतीय आर्यजगत् के समुद्र मे उठती हुई लहरे अफ्रीका क किनारे पर भी पहुचती रहीं है। यदि अपने धर्म, भाषा और सस्कृति की रक्षा के साथ पाश्चात्य सभ्यता के अन्धे अनुकरण का तीव्र विरोध आर्यवीरो ने भारत मे गुजाया तो यहा भी गूज गया। यदि विभिन्न धर्मा और हिन्दु मतमतान्तरो के अन्ध विश्वासों की परख के लिए भारत मे शास्त्राथ हुए तो उन्हीं दिनो में भारत से आर्य विद्वानो को बुला कर इस पूर्वीय अफ्रीका की भूमि पर भी शास्त्रार्थ हुए। कभी २ तो ऐसे भी समय आये कि साधारण जनता, विरोधी पण्डितो के युक्ति-जाल की पैतरेबाजी के देखने में ही आनन्द लेने लगी जिससे विरोधी समुदायो में दोनो तरफ़ कटुता ही पैदा हुई और इसके बाद धीरे २ भारत की तरह ही यहा भी शास्त्रार्थ-युग समाप्त होगया और इन्हीं दिनो मे सस्था या पाठशाला निर्माण-युग विशेषरूप से प्रारम्भ हुआ।

आर्य कन्या पाठशाला

ईस्ट अफ्रीका की सब से पहिली भारतीय कन्यापाठशाला आर्यसमाज द्वारा ई० सन् १९१० मे प्रचलित की गई। इस के कुछ प्रारम्भिक वर्षों मे श्रीबद्रीनाथजी के सुपुत्र श्रीउत्तमचद अवैतनिक रूप से सेवा करते रहे। धीरे २ यह पाठशाला बढ़ती गयी और अब यह कन्या पाठशाला पजाबी तथा गुजराती कन्याओ मे सरकारी शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित साधारण शिक्षा के अतिरिक्त भारतीय सास्कृतिक जीवन की भावनाओ, राष्ट्रीय विचारो तथा भारतीय राष्टभाषा हिन्दी के प्रचार का सर्वोत्तम कार्य कर रही है। इसमे इस समय लगभग ३८० कन्याये शिक्षा पा रही हैं। श्री प० आर्यमुनि जी के प्रिन्सिपल होते हुए तथा श्री वी० आर० शर्मा जी के प्रबन्धक होते हुए यह सस्था वर्षों से लगातार उन्नति कर रही है। ईस्ट अफ्रीका तथा भारत के विख्यात दानी सेठ श्री नानजी कालीदास का आर्यसमाज तथा कन्या पाठशाला के साथ देर से सम्बन्ध चला आरहा है। पाठशाला के साथ आप की धर्मपत्नी का नाम सलग्न है। आप की तरफ से पुष्कल धन राशि

इस संस्था को समय २ पर प्राप्त हो रही है। साथ ही सब भारतीय—जिनमें विभिन्न धर्मों के व्यक्ति सम्मिलित हैं—इस संस्था को समय २ पर विशेष दान देते रहे हैं। इस संस्था का अनुसरण करते हुए कुछ देर बाद भारतीयो के दूसरे विभागो ने भी धर्म और प्रान्तों के आधार पर अन्य बहुत सी पाठशालाओ को प्रचलित कर दिया। प्रारम्भ मे आर्य कन्या पाठशाला आर्यसमाज मन्दिर के साथ की भूमि पर स्थित थी, परन्तु बाद मे सन् १९६८ मे पाठशाला की इस भूमि को सरकार ने वापिस ले लिया और इसकी इमारत को तोड कर दूसरी भूमि पर बनाना पडा। यह स्थान अब अधिक उपयोगी साबित हुआ है।

सन् १९०५ से कुछ व्यक्तियों ने आचारधर्म में भक्ष्याभक्ष्य की कुछ अवहेलना कर मास तथा शराब के कटु विरोध को आर्यप्रगति मे शिथिल-रूप देने के विचारो को प्रकट करना शुरू किया और पञ्जाब प्रान्त की तरह गुरुकुल तथा कालिज विभागों के विरोध का बीज बोया गया। देर तक यह विरोध चलता रहा। कालिज विभाग के पोषक भारत के एक विद्वान् प० ऋषिराम जी ने भी अपने विचारों के अनुसार प्रचार किया। इन के व्याख्यानों के विवादास्पद स्थलों का विद्वत्ता पूर्ण लिखित उत्तर श्री प० आर्यमुनि जी तथा कृष्णदेव जी कपिल की अध्यक्षता में प्रकाशित संक्षिप्त पैम्फलैट द्वारा दिया गया था जिसका जनता पर विशेष प्रभाव रहा। साधारण रूप से कालिज विभाग स्थापित हुआ, मन्दिर बना, परन्तु यह स्पष्ट है कि पूर्वीय अफ्रीका में सब प्रयत्नो क करने पर भी यह विभाग सफल न हो सका और इस की प्रगति देर से समाप्त प्राय हो चुकी है। गुरुकुल विभाग ही स्थायीरूप से उन्नत होता रहा है। ऐसी अवस्थाओं में मास तथा शराब के विरोधी प्रचार से भारतीय जनता विशेष प्रभावित रही है। परन्तु फिर भी भक्ष्याभक्ष्य के आचार मे शिथिल व्यक्तियो के सगठन के लिए कुछ समुचित आर्यप्रगति आवश्यक है यह कुछ व्यक्ति गम्भीरता से अनुभव करते हैं। यह दिशा भविष्य के गर्भ मे छिपी प्रतीत होती है।

यह निश्चित है कि भारतवर्ष मे जैसे आर्य-समाज के दृढ़ सगठन का केन्द्र बहुत समय तक पंजाब की भूमि मे लाहौर शहर रहा है ठीक वैसे ही पूर्वी अफ्रीका मे नैरोबी का स्थान है। नैरोबी आर्यसमाज या उसके कार्य कर्ता सम्पूर्ण आर्य-समाज प्रगति के नेतृत्व को सभाले रहे हैं। बाद मे भारतवर्ष मे देहली की सार्वदेशिक सभा की तरह आर्य प्रतिनिधि सभा ई० अ० की स्थापना हुई जो सार्वदेशिक सभा से सम्बन्धित हो गयी। इस प्रतिनिधि सभा का विशेष कार्य भी आर्य समाज नैरोबी के सभासदों द्वारा ही मुख्यतः चलाया जारहा है क्यो कि प्रतिनिधि सभा का केन्द्रस्थान भी नैरोबी शहर ही है।

आर्य स्त्री समाज

पुरुषो में आर्यप्रगति के साथ स्त्री जाति की उन्नति भी पीछे नहीं रही। लगभग २७ वर्ष पूर्व आर्य स्त्री समाज का सगठन हुआ था। तब से निरन्तर संगठित रूप मे यह संस्था अपना कार्य कर रही है। सम्पूर्ण ईस्ट अफ्रीका मे सब से पुरानी तथा सबसे अधिक सगठित स्त्रियो की स्वतन्त्र सार्वजनिक सस्था होने का इसे श्रेय प्राप्त है। इस समाज मे उत्साह तथा जनसेवा के कार्यों में सहायता के भाव पूर्ण रूप से विकसित पाये

जाते हैं। गतवर्षों मे इस सस्था ने अपनी रजत जयन्ती बडी धूमधाम म मनायी थी। हैदराबाद सत्याग्रह के दिनो मे इस सस्था ने प्रति महीना ३८०। —शि० का दान प्रदान किया था। आर्य समाज नैरोबी की इमारतो मे कई कमरे इसी के दानो से बने है। निकट भविष्य मे एक बडे आर्य स्त्रीसमाज भवन (हॉल) क निर्माण के कार्य को प्रारम्भ करने का विचार है। प्रति वष वेदपारायण यज्ञो के अतिरिक्त शिशुस्वास्थ्य प्रदर्शिनी का आयोजन भी इस सस्था द्वारा किया जाता है इस सस्था के रजिस्टर्ड सदस्य १६० से अधिक है।

आय वीर दल

अबसे करीबन १० वष पूव तक आयसमाज नरौबी से सम्बन्धित यह दल बडी उन्नति पर था। स्वयसेवको के रूप मे यह दल सदा आयसमाज के उत्सवो तथा अन्य सार्वजनिक कार्योंम सहायता देता रहता था। इस दल का सगठित बैण्ड अपने समय की शान रखता था। बाद मे यह दल शिथिल होता गया। परन्तु गत कुछ वषो से 'आर्य क्रीडा सघ' के रूप मे नवयुवको ने पुन अपने योग्य शारीरिक खेलो आदि द्वारा भारतीय जनता को आकृष्ट किया है। इस सघ की प्रवृत्तियो म भारतीयो मे शारीरिक व्यायामो, खेलो आदि के सान्मुख्यो का प्रति वर्ष आयोजन होता है और हजारो भारतीय नरनारी इसम सम्मिलित होते है। इस सघ के सगठन का श्रेय श्री जयदेव तथा उन के सहयोगियो को है।

प्रचार कार्यः—

राष्ट्रीय भावनाओ से ओत प्रोत सामाजिक और धार्मिक सुधारो द्वारा भारतीय जनता के पुनर्जागरण के नवयुग को लाने मे आर्यसमाज की भारतवर्ष की तरह ईस्ट अफ्रीका मे भी विशेष ख्याति है। भारत की राष्ट्रीय भावनाओ का मूर्तरूप इस सस्था मे पाया जा सकता है। आर्य समाज नैरोबी के प्रचार कार्य का इतिहास सराहनीय है। भारतवर्ष से बडे २ विद्वानो को बुला कर उनके व्याख्यानो द्वारा भारतीय जनता को लाभ दिया जाता रहा है। नैरोबी आर्यसमाज द्वारा मगवाये गए निम्न विद्वान् प्रचारको को भारतीय जनता अब भी गौरव से स्मरण करती है। इनमे मुख्य है प० पूर्णानन्दजी, महाराणी शङ्कर जी, श्रा ईश्वरदत्त जी विद्यालङ्कार, श्री स्वामी स्वतन्त्रा नन्द जी बालकृष्णजी, बुद्धदेव जी मीरपुरी प० चमूपतिजी, प० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार, महता जैमिनि जी श्री रामदेव जी आचार्य, श्री प० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार, श्रीमती शन्नोदेवी जी (जालन्धर विद्यालय) श्री प० सत्यपाल जी सिद्धान्तालङ्कार महता रामचन्द्र जी शास्त्री आदि। इसके अतिरिक्त भी बहुत से विद्वानो ने यहाँ आकर प्रचार कार्य तथा आर्य कन्या पाठशाला मे अध्यापन का कार्य किया है।

प्रारम्भिक वर्षो मे आर्यसमाज नैरोबी अपने धनसग्रह को या तो पञ्जाब आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचारार्थ अर्पण करती रही है या गुरुकुल काङ्गडी की सहायतार्थ भेजती रही है। इसके प्रतिदान रूप मे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि ईस्ट अफ्रीकाके इतिहास मे गुरुकुल काङ्गडी के स्नातकों ने आर्यसस्कृति के सन्देश के फैलाने में प्रचारको तथा अध्यापको के रूपमें सराहनीय कार्य किया है। विशेष रूप से आर्यसमाज नैरोबी के वर्तमान पुरोहित श्री पं० सत्यपाल जी सिद्धान्तालङ्कार

पूर्वीय अफ्रीका मे आर्यसमाज की प्रगति के साक्षात् जीवन रूप समझे जा सकते हैं। उनका निष्कलङ्क ब्रह्मचर्यव्रत, सौम्य विनोदमयी भव्यमूर्ति निर्भय तथा सेवापरायण स्वभाव किसी से अप रिचित नहीं है विभिन्न धर्मों के व्यक्ति भी श्रद्धा स "आर्यसमाज के पण्डित जी' के नामसे उन्ह सदा स्मरण रखते हैं। अपने तेजस्वी गम्भीर तथा मधुर व्याख्यानो की स्पष्टवादिता तथा सरसता मे वे पूर्वीय अफ्रीका मे अद्वितीय है। पूर्वीय अफ्रीका मे इनका सेवा कार्य लगभग १५ वर्ष रा है। उसके साथ ही लगभग दो दर्जन गुरुकुल स्नातको तथा स्नातिकाओ द्वारा समय २ पर आर्य सस्कृति प्रचार कार्य लगातार अग्रसर होता रहा है। हैदराबाद सत्याग्रह के समय समाज की तरफ से करीब १० हजार शिलिङ्ग एकत्रित होकर भेजे गए थे।

कन्या गुरुकुल बडौदा की कन्याओ के डेपु टेशन ने सन् १६३५ मे भारतवर्ष से ईस्ट अफ्रीका मे पहुच कर और विशेषत नैरोबी में आकर आर्यसमाज के सन्देश के फैलने मे बहुत सहायता प्रदान की थी इससे गुजराती जनता आर्यसमाज की तरफ असाधारणरूप से आकर्षित हुई थी। यह सब होते हुए भी प्रतीत होता है कि यहाँ भारतीयो में गुजरात प्रान्तीय व्यक्तियो की बहुसंख्या होते हुए भी मुख्य कार्यकर्ता पञ्जाबी ही रहे हैं। गुजराती कार्यकर्ता तथा आर्यसभा सदों की संख्या आसानी से गिनी जा सकती है श्री छोटाभाई जी पटेल की सेवायें इस दिशा में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। गुजराती जनता को आर्यसमाज की तरफ अधिकाधिक खींचने के प्रयत्न जारी हैं।

नैरोबी आर्यसमाज अपने प्रचार कार्य को साप्ताहिक सत्सगों, पर्वों, सस्कारो और विशेषतः वार्षिकोत्सवो द्वारा करती रही है। नैमित्तिक अवसरो पर भी विशेष व्याख्यानो, यज्ञो, भजनोपदेशो और सम्मेलनो द्वारा भारतीय विचारधाराओ को प्रभावित करती है। हिन्दी भाषा के प्रचार की सब कठिनाइयो का मुकाबला करते हुए भी यह कार्य लगातार बढ़ाया जा रहा है और इसमे सफलता प्राप्त हो रही है।

आयसमाज तथा स्थानिक निग्रो जनताः—

इस क्षेत्र में भारतीयो तथा आर्यसमाज की सेवायें तुच्छ है यदि सास्कृतिक प्रचार की दृष्टि से ही देखा जाय। अप्रत्यक्षरूप से, सम्पर्क जन्य प्रभाव दूसरी बात है। बहुत वर्ष पूर्व नीग्रो जनता की शिक्षा के लिए आर्यसमाज ने सायकालीन स्कूल को प्रारम्भ किया था, जिस का स्वागत नीग्रो प्रजा ने बड़े उत्साह से किया और बड़ी सख्या में अध्ययन के लिए प्रविष्ट होने लगे थे। क्यो कि आयसमाज के मुख्य कार्यकर्ता सरकारी महकमो मे थे और सरकारी अधिकारियो की दृष्टि मे यह कार्य स्तुत्य न समझा जा सकता था और इस कार्य मे विघ्न बाधाओ के उपस्थित हो जाने का सदा भय था जैसा कि अप्रत्यक्ष सरकारी निर्देशो से अनुभव किया गया था अत यह प्रवृत्ति आर्यसमाज को बन्द करनी पड़ी। जब तक भारतीयो की राजनैतिक शक्ति का विकास नहीं होता अ र भारतीय सामाजिक साधा द्वारा बहुत दूर तक उचितरूप मे सुधर नहीं आता इस दिशा में विशेष सहायताओं को पाना भी बहुत कठिन है। भविष्य मे नीग्रो जनता मे हिन्दू सास्कृतिक प्रचार मे यदि कोई भारतीय संस्था

कार्य करेगी तो केवल मात्र आर्यसमाज ही होगी यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है।

आर्थिक अवस्थाः—

आर्यसमाज नैरोबी के पास अपना मन्दिर, अतिथि विश्राम गृह आर्य कन्या पाठशाला तथा कुछ अन्य भूमि है जो सब आर्य प्रतिनिधि सभा ई० अ० के नाम पर है इस सब की कीमत लगभग २ लाख शिलिङ्ग होगी। स्थिर कोष मे पर्याप्त धन है जिस की बड़ी रकम लगभग ७५ हजार शिलिङ्ग निकट भविष्य मे पाठशाला के अन्य नये कमरो के बनाने मे व्यय किया जाने वाला है। भारतीय जनता के हार्दिक सहयोग से प्रतिवर्ष आवश्यकतानुसार पर्याप्तधन सग्रह वार्षिकोत्सव के समय तथा अन्य अवसरों पर जनता से प्राप्त किया जाता है। भारतीय जनता की सहानुभूति की पूंजी के आधार पर यह निश्चित है कि समाज की आर्थिक दशा सन्तोष जनक है बशर्ते कि उत्साही कार्य कर्ता सामाजिक क्षेत्र मे कार्य करने के लिए अग्रसर होते रहें।

नवयुवकों को आकर्षित करने के लिए किसी भी सघर्षात्मक कार्य-क्रम की आवश्यकता अनुभव की जा सकती है तभी नये कार्यकर्ता तथा सभासद् बढ़ सकते हैं अन्यथा इस विषय मे बहुत बार कुछ निराशा प्रतीत होती है। इस समय आर्य सभासदों तथा सहायकों की सख्या जो रजिस्टर्ड हैं १५० व्यक्तियों से अधिक नहीं, यद्यपि आय परिवार के व्यक्तियों की सख्या हजारों में है।

सक्षेप मे, यह एक जागृत संस्था है, इसकी नींव महान् वैदिक भारतीय सस्कृति के प्रचार कार्य पर स्थिर है। भारतवर्ष के भविष्य के साथ २ इस का भविष्य उज्वल होता रहेगा, इस के सुधार भारतीयों को प्रिय बन चुके हैं। आर्यसमाज नैरोबी के प्रारम्भ से अब तक निम्न महानुभाव प्रधानपद तथा मन्त्री पदों पर रह चुके हैं।

प्रधान—

श्रीयुत —इन्द्रसिंह जी, सालिगराम जी, बिहारीलाल जी, बजीरचन्द जी, गणेशीलाल जी, वैसाखीराम जी, कालीदास जी पटेल, रुल्हाराम जी, मास्टर लाहौरीराम जी, द्वारिकादास जी, बद्रीनाथ जी, विशनदास रलाराम जी शर्मा, छोटा भाई पटेल, ए० प्रीतम जी, बाबूराम जी भल्ला, कृष्णदेव जी कपिल, रामरक्खा जी।

मन्त्री—

श्रीयुत —बद्रीनाथ जी, वैसाखीराम जी, कृपाराम जी, बजीरचन्द जी, लालचन्द जी, सालिगराम जी शर्मा, देवीदास जी पुरी, तुलसी राम जी ईश्वरदास जी, नाहरसिंह जी, रामरक्खा जी, कृष्णदेव जी कपिल, बाबूराम जी भल्ला, प्रभुदयाल जी, रामरक्खा जी, दौलतराम जी, गुरदासराम जी लालचन्द जी, प्यारेलाल जी, प० सत्यदेव जी वेदालङ्कार।

इस समय निम्न अधिकारी वर्ग कार्य कर रहा है—

श्रीयुत —प० लालचन्द जी (प्रधान), गुरदासराम जी (उपप्रधान) प सत्यदेव जी (मन्त्री), सीताराम जी मङ्गल (उपमन्त्री), जगन्नाथ जी (स० मन्त्री), कर्मचन्द जी (कोषाध्यक्ष), रतनचन्द जी (उप कोषाध्यक्ष) हरबसलाल जी (स० कोषाध्यक्ष), सीताराम जी (भण्डाराध्यक्ष), किशोरचन्द जी (पुस्तकालयाध्यक्ष), जगन्नाथ पराशर (उपपुस्तकालयाध्यक्ष), विशनदास वेरी (शालानिरीक्षक)

अन्तरङ्ग सभा के अन्य सदस्य—विशनदास जी शर्मा, बी० आर० देसाई जी, कृष्णदेव जी कपिल, महेन्द्रपाल जी, गुरदासराम जी, बाबूराम भल्ला जी, जयदेव जी, विद्याप्रकाश जी।

आर्य कन्या पाठशाला के प्रबन्धक— श्री विशनदास जी शर्मा।

आर्य क्रीड़ा संघ—लाहौरीराम जी (प्रधान), श्री जयदेव जी (मन्त्री)

आर्य स्त्री समाज—श्रीमती चननदेवी जी (प्रधान), साबित्रीदेवी जी (मन्त्रिणी)

मूलशंकर का गृह त्याग

(कवि—श्री प० सत्यभूषण जी योगी, वेदालङ्कार)

—१—

भरी जवानी में मैंने वह अपना प्यारा घर छोड़ दिया,
जितने भी नाते रिश्ते थे उन सबसे नाता तोड़ दिया।
आखों का पानी और हृदय की आह न बाहर आने दी,
बन कृपण खजाना यो अपना मैंने उस दिन था जोड़ लिया॥

—२—

जिस आसू मे शक्ति गिरावे बड़ी बड़ी चट्टानो को,
जिन आहो मे शक्ति उठादे बड़े बड़े तूफानो को।
वह जाता नहीं गिराया यो, वे जाती नहीं निकाली यो,
कभी दबा देना पड़ता है अतर के उठते गानो को॥

—३—

बूद बूद कर जमा किया अपनी आखो के पानी को,
फिर उसमे बहा दिया अपनी हॅसती अलमस्त जवानी को।
फिर उससे जो तूफान उठा इस दुनिया ने वह देखा है,
रोक न पाए पर्वत भी मेरी पुरजोश रवानी को॥

—४—

जब मैंने घर छोड़ा था तब मेरी मा भी रोई थी,
और पिता ने दिल थामा भगिनी आसू मे खोई थी।
पर अपनी युग युग की मा की अपनी भारत माता की,
तब मैंने वह चीख सुनी थी है क्या मेरा कोई भी॥

—५—

भारत मां रोती थी देखा आंसू का सागर लहराता,
करुण चीखकी ध्वनि आहो का वह तूफां उठता आता।
उस आंसू के सागर में दो बूंदे और मिली तो क्या,
अगणित आहों मे एक आह का पता भला मैं क्या पाता!

—६—

यौवन के स्वर्णिल सपनो को मैं देख नहीं तिल भर पाया,
लखता भी कैसे जब आंखों को मूंद नहीं क्षण भर पाया।

मैं निज यौवन का क्या करता, मीठे सपनो का क्या करता,
मेरी मां बहनों का यौवन जब जाता था नित तड़पाया ॥

—७—

इसको तोड़ा उसको फोड़ा रसहीन मुझे जग बतलाता,
मैं आँसू भी न बहा पाया फिर कैसे जीवन रस पाता ।
मैं जिधर गया तूफान उठा, मैं जिधर उठा पाखंड गिरा,
अपने तन मन मे आग लिए मैं बढा सत्यपथ दिखलाता ॥

—८—

मत पूछो कैसी थी पीडा की वह मृत्यु भरी काली छाया,
मैं हँस न सका मैं गा न सका ऋषि भूमि थी पडी निरुपाया ।
टूटी सितार थी घर घर की झनकार कहो कैसे सुनता,
मैं जीवन मे ठक् ठक कर बस थोडे से तार बना पाया ।

—६—

ओ तार बनाने वाला तो झनकार नहीं है सुन पाता,
वह तो बस ठक् ठक् करता करता सुन कभी रुन झुन पाता ।
वह सितार मे बजने वाले तारो मे भरता निज गायन,
स्वयं गा सके इतना गायन पास न उसके बच पाता ॥

—१०—

चलना ही था चल दिया अरे, मैं उस क्षण घर से बन निष्ठुर,
उस काली घोर यामिनी मे लघु यौवन की ऊषा तज कर ।
जग कहता है उस रात्रि मुझे था पत्थर से वैराग्य हुआ,
किसे पता है उस क्षण में बन गया स्वय ही था पत्थर ॥

महर्षि दयानन्द वचनामृत

अत्यन्त मननीय उपदेश

(१) सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है ॥ सत्यार्थ प्रकाश भूमिका श्री गोविन्द राम हासानन्द पञ्चम संस्करण पृ० ३।

(२) जो बलवान् होकर निर्बलो की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश पर हानि मात्र करता रहता है वह जानो पशुओ का भी बड़ा भाई है ॥ सत्यार्थप्रकाश भूमिका पृ० ४

(३) वस्तुत. जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य ! वह सन्तान बडा भाग्यवान् ! जिस के माता और पिता धार्मिक विद्वान् हो। जितना माता से सन्तानो को उपदेश और उपकार पहुचता है उतना किसी से नहीं ॥ सत्यार्थप्रकाश २य समुल्लास पृ० २६

(४) सन्तानो को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, धर्म और स्वभाव रूप आभूषणो का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियो का मुख्य कर्म है ॥ सत्यार्थप्रकाश ३य समुल्लास पृ० ४०

(५) जिस देश मे यथायोग्य ब्रह्मचर्य विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभाग्यवान् होता है ॥

सत्यार्थ प्रकाश ३ य समुल्लास पृ० ६२

(६) जो कोई गृहाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है। परन्तु तभी गृहाश्रम में सुख होता है जब स्त्री और पुरुष दोनो परस्पर प्रसन्न, विद्वान्, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारो के ज्ञाता हो। इस लिये गृहाश्रम के सुख का मुख्य कारण ब्रह्मचर्य और स्वयंवर विवाह है ॥

स० प्र० ४र्थ समुल्लास पृ० १४३

(६) जो स्वय धर्म में चल कर सब संसार को चलाते हैं जिस से आप और सब ससार को इस लोक अर्थात् वर्तमान जन्म मे, परलोक अर्थात् दूसरे जन्म मे स्वर्ग अर्थात् सुख का भोग करते कराते है वे ही धर्मात्मा जन संन्यासी और महात्मा है। स० प्र० पञ्चम समुल्लास पृ० १७३

(७) राज धर्म का विशेष वर्णन वेद, मनुस्मृति, शुक्र नीति, महाभारत आदि मे देख कर पूर्ण राजनीति को धारण करके माण्डलिक अथवा सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य करे और यह समझे कि "वयं प्रजापते. प्रजा अभूम" यजु० १८।२६। हम प्रजापति अर्थात् परमेश्वर की प्रजा और परमात्मा हमारा राजा, हम उसके किंकर-भृत्यवत् हैं वह कृपा करके अपनी सृष्टि मे हम को राज्याधिकारी करे और हमारे हाथ मे अपने सत्य न्याय की प्रवृत्ति करावे ॥ स० प्र० षष्ठ समुल्लास पृ० २२७

(८) स्तुति का फल यह है कि जैसे परमेश्वर के गुण है वैसे गुण कर्म स्वभाव अपने भी करना। जैसे वह न्यायकारी है तो आप भी न्यायकारी होवे और जो केवल भाड के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता जाता और अपने चरित्र नहीं सुधारता उसकी स्तुति करना व्यर्थ है ॥

जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है उस को वैसा ही वर्तमान करना चाहिये अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिये परमेश्वर की

प्रार्थना करे उसके लिये जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करे अर्थात् अपने पुरुषार्थ के उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है ॥

उपासना का फल—

जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दु.ख छूट कर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिये परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। इससे इसका फल पृथक् होगा। परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दु.ख प्राप्त होने पर भी न घबराएगा और सब को सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है? और जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह कृतघ्न और महा-मूर्ख भी होता है क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिए दे रक्खे हैं उसका गुण भूल जाना, ईश्वर को ही न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है ॥

स० प्र० सप्तम समुल्लास पृ० २४१, २४४

६. स्वराज्य का महत्त्व —

"अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त मे भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है वह भी विदेशियो के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र है। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियो को अनेक प्रकार के दुःख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत मतान्तर के आग्रह-रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय, और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। परन्तु भिन्न २ भाषा, पृथक् २ शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है ॥

स० प्र० अष्टम समुल्लास पृ० २६६

१० जब स्वदेश ही मे स्वदेशी लोग व्यवहार करते और परदेशी स्वदेश मे व्यवहार वा राज्य करे तो बिना दारिद्र्य और दु.ख के दूसरा कुछ भी नही हो सकता ॥

स० प्र० दशम समुल्लास पृ० ३५१

११. विदेशियो के आर्यावर्त मे राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना पढ़ाना वा बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषणादि कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचारादि कुकर्म है। जब आपस मे भाई भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पञ्च बन बैठता है। आपस की फूट से कौरव पाण्डव और यादवो का सत्यानाश हो गया सो तो हो गया परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा वा आर्यों को सब सुखो से छुड़ा कर दुःख सागर मे डुबा मारेगा? उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्र हत्यारे, स्वदेश विनाशक, नीच के दुष्ट मार्ग मे आर्य लोग अब तक भी चल कर दुःख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्यों मे से नष्ट हो जाए।

स० प्र० दशमसमुल्लास पृ० ३५४-३५५

१२ मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य के निर्णय करने कराने के लिये है न कि वाद विवाद विरोध करने कराने के लिये। इसी मत मतान्तर के विवाद से जगत् मे जो २ अनिष्ट फल हुए, होते हैं और होगे उन को पक्षपात रहित विद्वज्जन जान सकते हैं। जब तक इस मनुष्य जाति मे परस्पर मिथ्या मत मतान्तर का विरुद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योन्य को आनन्द न होगा। सर्वशक्तिमान् परमात्मा एक मत मे प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यो के आत्माओ मे प्रकाशित करे।

स० प्र० एकादश समुल्लास भूमिका पृ० ३६४

१३ कुछ सौ वर्षों से ऊपर इस देश मे आये यूरोपियनो को हुए और आज तक ये लोग मोटे कपड़े आदि पहिरते हैं जैसा कि स्वदेश मे पहरते थे। परन्तु उन्होने अपने देश का चाल-चलन नही छोड़ा और तुम मे से बहुत से लोगो ने उनकी नकल करली इसी से तुम निर्बुद्धि और वे बुद्धिमान् ठहरते हैं। अनुकरण करना किसी बुद्धिमान् का काम नहीं।

स० प्र० समुल्लास ११ पृ० ४१०

१४ इस लिये जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिल कर उसके उद्देशानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ न हाथ लगेगा क्यो कि हम और आप को अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा उसकी उन्नति, तन मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है क्यों कि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है एक का नहीं।

स० प्र० समुल्लास ११ पृ० ४१५

१५ हम तो यही मानते हैं कि सत्यभाषण, अहिंसा, दया आदि शुभगुण सब मतो मे अच्छे हैं बाकी वाद विवाद, ईर्ष्या द्वेष, मिथ्या भाषणादि कर्म सब मतो में बुरे है। यदि तुम को सत्यमत ग्रहण की इच्छा हो तो वैदिक मत को ग्रहण करो॥ स० प्र० समुल्लास १४ पृ० ७८८

१६ मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत मतान्तर चलाने का लेश मात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यो के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्व-सामर्थ्य से धर्मात्माओ की चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुण रहित क्यो न हो उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महा बलवान् और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहा तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियो के बल की उन्नति सर्वथा किया करे, इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दु:ख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जायें परन्तु इस मनुष्य-पन रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे॥

स० प्र० स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश पृ० ७६०

Mr. Abdul Jabbar's Indictment.

(by Prof Tara Chandra ji M A)

Mr Abdul Jabar Vice president Anti-Satyarth Prakash Committee Hyderabad (Sind) has issued a statement after the publication of the modified order regarding the ban put on the 14th Chapter of the Satyarth Prakash

According to Mr Abdul Jabar the Satyarath parkash is not a revelation and therefore it can be banned Revelation or no revelation no scripture should be banned. Buddhists & Jains do not believe in God Hence they have no revelation word But they haye got their scriptures Can these be banned ? To the Sikhs Grant Sahebi Can we therefore put a ban on any portion of that sacred scripture ?

What is revelstion to a Mohammedan, may not be so in the eyes of a Hindu and vice versa All revelation may only be the words of primitive humanity in the eyes of the rationalists Can therefore these scriptures be banned ? No, none can be banned and none should be banned Banning of scriptures is negation of religious and Civil liberty The Arya Samajists consider Satyarth Parkash as their sacred scripture. Therefore it occupies the same place as the Granth Saheb, Koran, Bible, Dharmpad etc and hence it can not be banned

Mr Abdul Jabar does not know the history of the Satyarth-prakash, therefore he says that the last two chapters are not the work of Swami Dayanandji The first edition of 1875 clearly states that the book will consist of 14 chapters That the last two chapters will deal with Islam and Christianity This internal evidence is sufiicient to prove that the omission of the last two chapters was due to the printers' mistake and not Swamiji's intention Then the second edition of 1884 was nearly wholly printed during the life of Rishi Dayanand and the proofs of the greater part of it were corrected by him. The language of the book the anecdotes of the life of Swamiji and his letters amply coroborates this

Lastly Mr Abdul Jabar says that muslims cannot bear the slander of their prophet. The Arya samajists rightly deny that there is any thing slenderous in the Satyarath Prakash They say that it is all fair criticism But if the muslims view is correct why should'nt ban be put on H G. Well's, Washington Irvin s and other peoples writings ? Why should'nt libraries be reduced to ashes ? But that would be all barbarianism

If Mr Abdul Jabar and his friends do not want to give great publicity to the contents of the Satyarath-Parkash, they should press for the removal of the ban, and remain quiet so long as the ban is there, there will be vexations and the public will be anxious to read the book The ban injuring the delicate suceptibilities of the Arya Samajists & Hindus, may drive some to collect really slanderous quotations from other books and publish them in various languages and defeat the very object with which ban is to have been put

Lastly if Mr Abdul Jabar wants to keep eyes and ears of Muslims unpolluted by the contents of the Satyarath Prakash, let him press for a legislation, which will make it a crime for a muslim to purchase & possess this sacred book written by one of the greatest prophets of the world

Tara Chandra M A President Arya Pratinidhi Sabha Sind (Karachi)

SATYARTH PRAKASH BAN CONDEMNED

Sir RadhaKrishnan's call to Government

'Suppression of any form of liberty specially religious liberty is not to be tolerated and the ban on the Satyarth prakash imposed by the Government of Sind has no justification whatsoever, observed Sir S Radhakrishnan in the course of an interview to the Staff correspondent of the Sind Observer on the eve of his departure for Jaipur yesterday morning

The Indian philosopher added that criticism and countercriticism provided enough scope for both sides and for the Government's use of its *executive powers and the Defence* of India rules for the suppression of what the Arya Samajists had considered most sacred in the realm of literature was an indefensible action

Sir S Radhakrishnan hoped that the Government would reconsider its decision and lift the ban altogether as early as possible

(Sind Obseroer 19-10-45)

साहित्य समीक्षा

"प्रकाश" देहली का सत्यार्थ प्रकाशाङ्कः—

(सम्पादक—श्री हितैषी जी अलावल पुरी सीताराम बाजार देहली)

इस अङ्क का मूल्य ।–)

श्री लालचन्द्र जी हितैषी अलावलपुरी सम्पादक प्रकाश ने अपने उर्दू साप्ताहिक पत्र 'प्रकाश' का सत्यार्थप्रकाश अङ्क अक्तूबर के प्रारम्भ मे निकाला है जो अत्यन्त उपयोगी है। इसे उन्होने 'सत्यार्थप्रकाश आन्दोलन का इतिहास' यह नाम देकर २ भागो मे लगभग १३० प्रष्ठो की पुस्तक के रूप में निकाला है।

सत्यार्थप्रकाश का उद्देश्य और महत्व, १४ वा समुल्लास ऋषि दयानन्द का ही लिखा हुआ है। चौदहवा समुल्लास क्यो लिखा गया? क्या उसमें दिया अनुवाद अशुद्ध है? इस समुल्लास का लाभ, क्या स्वामी दयानन्द जी की समालोचना दिल दुखाने वाली है? ऋषि दयानन्द और सत्यार्थप्रकाश के विषय मे देशी विदेशी विद्वानो की सम्मति, सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध के विषय मे मुसलमान तथा अन्य नेताओ और विद्वानो के विचार, सत्यार्थप्रकाश विषयक आन्दोलन इत्यादि विषयो पर मुख्यतया 'सार्वदेशिक' के विशेषाङ्को तथा कुछ अन्य ग्रन्थो से सहायता लेकर उर्दू मे बहुत अच्छा प्रकाश डाला गया है। मुस्लिम जनता के लिये यह अङ्क विशेष उपयोगी हो सकता है। श्री हितैषी जी के इस परिश्रम की हम प्रशसा करते हैं और आशा रखते हैं कि अन्य भाषाओ में भी इस प्रकार के सग्रह तैयार कराये जाएगे जिससे सत्यार्थप्रकाश विषयक भ्रम दूर हो जाए और इस पवित्र ग्रन्थ के प्रचार मे सहायता मिले।

सामाजिक जगत्

श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम का वार्षिकोत्सवः—

श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम (हरदुआ गज, अलीगढ़) का वार्षिकोत्सव तारीख १६-१७-१८ नवम्बर सन् १९४५ ई० को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जायेगा जिसमे आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् साधु महात्मा तथा भजनोपदेशक पधारेंगे। जैसे श्री महात्मा खुशहालचन्द जी आनन्द (पंजाब), पं० प्रकाशचन्द्र जी कविरत्न (अजमेर), श्री पंडित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु (लाहौर) श्री कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर इत्यादि।

समस्त आर्य देवियो एवं आर्य बन्धुओ से प्रार्थना है कि उत्सव मे अवश्य पधारने की कृपा करें। प्रार्थी

सरदारसिंह मंत्री

श्री पं० विश्वश्रवा जी की वेदकथा

आर्य समाज दीवान हाल देहली मे २ अक्तूबर से ८ अक्तूबर तक यह वेद विषयक कथा हुई। आपने ऋषि दयानन्द सरस्वती की वेद भाष्य शैली का सविस्तार वर्णन करते हुये दर्शाया कि दूसरे आचार्यों ने जो वेद के विषय मे डरावना भूत खड़ा कर रखा था उसे ऋषि ने समूल नाश करके यह सिद्ध कर दिया कि वेदों की भाषा बड़ी ही सरल है उनकी गूढ़ता तो विषयों में है। जनता पर आपका प्रभाव बहुत ही उत्तम रहा, योग्य विद्वानों ने आपको बड़ा सम्मान दिया।

धर्मवीर वेदालङ्कार
मंत्री आर्य समाज दीवान हाल देहली।

आर्यसमाज उकलाना (जिला हिसार) का वार्षिकोत्सवः—

उकलाना आर्य समाज का वार्षिकोत्सव २१ से २४अक्तूबर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, श्री पं० रामस्वरूप जी, श्री वीरेन्द्रजी सत्यवादी (भू० पू० मौलाना खलीफ सिद्दीकी) तथा श्री प० समरसिंह जी वेदालङ्कार आदि विद्वानो के प्रभावशाली व्याख्यान और श्री वीरेन्द्र जी धनुर्धर आदि के भजन हुए। २३ अक्तूबर को मध्याह्न मे श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति के प्रधानत्वमे सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन हुआ जिसमे जनताने सत्यार्थप्रकाशकी रक्षार्थ सब प्रकार के त्याग और बलिदान के लिए अपनी सिद्धता की घोषणा की। सायंकाल वैदिक सिद्धान्त विषयक शङ्का समाधान श्री प० समरसिंह जी और पं० धर्मदेव जी ने किया।

धर्ममित्र
मन्त्री आर्य समाज उकलाना

श्री मद्दयानन्द अनाथालय नीमच छावनी—

धर्म प्रेमी सज्जनो की सेवा मे निवेदन है कि श्रीमान् सेठ गुमानमलजी पूनमचन्दजी नोगांग (आसाम) के सहयोग से स्थानीय आर्य समाज के अन्तर्गत छावनी नीमच मे श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, की स्थापना विजया दशमी मंगलवार संवत २००२ तदनुसार ता० १६-१०-४५ को हो गई है।

उपरोक्त अनाथालय में १२ वर्ष तक की आयु के अनाथ बालक तथा बालिकायें प्रविष्ट किये जा सकेंगे।

अत सर्व महानुभावो से निवेदन है कि जो सज्जन अनाथ बालको को इस अनाथालय मे प्रविष्ट करना चाहे वे मत्री आर्य समाज छावनी नीमच को पूर्व सूचित करें।

अर्जुनलाल गार्ड
मन्त्री आर्य समाज छावनी नीमच

डूगरपुर (राजपूताना) में आर्य समाज की स्थापना

ता० १४ १० ४५ को श्रीमान् पूज्य देश भक्त कुवर चादकरण जी शारदा राजस्थान केसरी डूगरपुर पधारे थे। डूगरपुर नरेश से आपकी बातचीत हुई। उसी रोज आपकी उपस्थिति मे हैदराबाद स्टट के आर्यसमाजी कार्यकर्ता श्री मास्टर रघुबीरसिह जी आर्य के हाथो से यहा आर्य समाज की स्थापना हुई। और उसी दिन शाम को डूगरपुर मे दो ढाई हजार जनता की उपस्थिति मे कुवर साहेब तथा मास्टर रघुबीरसिंह जी का यहा क महारावल हाई स्कूल के हैडमास्टर श्रीमान् कृष्णानन्द जी चौधरी की अध्यक्षता मे आर्य समाज की आवश्यकता पर भाषण हुए। जनता पर बडा अच्छा प्रभाव पड़ा।

भवदीय—
शकरलाल मत्री

श्री नारायणाश्रम जयन्ती विषयक आवश्यक सूचना

जैसा कि जनता को ज्ञात हो चुका है श्री० नारायण आश्रम रजत जयन्ती ३ जून से १० जून १९४५ तक रामगढ़ (जि० नैनीताल) मे बड़ी सफलता पूर्वक मनाई गई। उसके लिए जो चन्दा बिना किसी विशेष प्रयत्न के प्राप्त हुआ वह ४५००) से ऊपर था। उसमे से लगभग २०००) व्यय हुआ। जिसका विस्तृत विवरण रिपोर्ट में छपेगा २७८९।।)।।। की बचत रही। २२। ९। ४५ को रामगढ में जयन्ती प्रबन्ध समिति की बैठक मे हिसाब स्वीकृत होकर बचत के सम्बन्ध मे जो निश्चय हुआ उसकी एक नकल प्रकाशनार्थ आपके पास भेजता हूँ। उससे जनता को प्रकट होगा कि जो आधी से अधिक प्राप्त धन बचत मे रहा उस का उपयोग किस प्रकार किया गया है अर्थात् उसमे से २५०) श्री० ना० आ० के अत्यन्त आवश्यक सुधार के लिए रखा गया है और शेष धन ना० स्वा० हाईस्कूल में २ स्थायी छात्रवृत्ति धर्म शिक्षा और सदाचार मे सर्वश्रेष्ठ छात्रों के लिये और 'अभ्युदय" शिविर के फड को बीज रूप से स्थापित करने के लिए दिया गया है।

मै प्रबन्ध कमेटी की ओर से आर्य जनता तथा सब सज्जनों को जिन्होंने प्रशसनीय उदारता के साथ जयन्ती उत्सव के लिये चन्दा दिया हार्दिक धन्यवाद देता हू।

निश्चय हुआ कि शेष बचत जो इस समय तक है वह दो हजार सात सौ नवासी रुपये आठ आने नौ पाई है। उसके उपयोग के विषय मे विचार होकर निम्न निश्चय हुए।

(१) २५०) श्री नारायण आश्रम की सड़क की दुरुस्ती तथा पुल की तैयारी के लिए रखा जावे,

(२) १०००) जयन्ती महोत्सव की रिपोर्ट की छपाई आदि के लिये रहे। यदि उनमें से कुछ बचे तो शेष धन तथा रिपोर्ट की बिक्री से जो आय होवे यह अभ्युदय शिविर रामगढ के फड की बीज रूप सम्पत्ति समझी जाय।

(३) शेष १५००) रु० श्री० नारायण स्वामी हाईस्कूल को दिया जावे और उसके ब्याज से एक

छात्रवृत्ति ३) रुपये मासिक की तथा दूसरी २) मासिक की ऐसे विद्यार्थी को दी जाया करे जो धर्म शिक्षा तथा सदाचार में सर्वश्रेष्ठ समझे जावें और यदि कभी ब्याज की आय ५) मासिक से अधिक आवे तो छात्रवृत्तियां बढाई जावें। इस निधि का नाम श्री नारायण आश्रम जयन्ती निधि रखा जावे तथा छात्रवृत्तियों का नाम जयन्ती छात्रवृत्ति रखा जावे।

(४) शेष धन जयन्ती हिसाब में जमा रहे।

गगाप्रसाद

प्रधान ना० स्वा० आश्रम जयन्ती प्र० कमेटी

जाति भेद निवारक आर्य परिवार संघ की योजना

ता० १४-१० ५५ को मध्याह्नोत्तर बलिदान भवन मे जाति भेद निवारिणी समितितथा आर्य परिवार सघ का संयुक्त अधिवेशन ३॥ बजे से श्री पं० गङ्गा प्रसादजी एम ए रि चीफ जज के सभापतित्व में हुआ। जाति भेद निवारिणी समिति के सदस्यों तथा आर्य परिवार सघ के प्रस्तावकों के पत्र पढ़े गये और प्रारम्भिक योजना मे जो सशोधन उन्होंने भेजे थे सुनाये गये। इसके पश्चात् दोनों सस्थाओं की सयुक्त योजना पर विचार होकर निम्न योजना सर्व सम्मति से स्वीकृत हुई—

आर्य परिवार जाति भेद निवारक सघ की योजना

१ नाम तथा प्रस्तावना—समस्त आर्य (हिन्दू) जाति मे प्रचलित जात पात के भेद को मिटाने का सुसगठित प्रयत्न करने के लिये और आर्यों मे आर्य परिवारों की वृद्धि करने के लिये एक स्वतन्त्र जाति भेद निवारक आर्य परिवार संघ के स्थापित होने की आवश्यकता है। इसलिये यह सघ स्थापित किया जाता है।

इस सघ का नाम जाति भेद निवारक आर्य परिवार संघ होगा।

२ उद्देश्य ०—इस संघ के उद्देश्य निम्न लिखित होंगे ०

१ गुण, कर्म, स्वभावानुसार वैदिक वर्ण व्यवस्था की स्थापना के लिये साधन प्रस्तुत करना।

२ जन्मगत जात पात का विचार छोड़ कर आर्यों में गुण कर्म स्वभावानुसार विवाह सम्बन्ध कराना और विशेष कर युवक युवतियों से व्रत कराना कि वे जात पात का विचार छोड़ कर अपना विवाह करेंगे।

३. सहयोग तथा सहानुभूति द्वारा आर्यों में परस्पर प्रेम तथा भ्रातृ भाव उत्पन्न करना।

४ आर्य पुरुषों के परिवारों को सच्चा आर्य परिवार बनाना।

सगठनः०

३ सहायक—जो मनुष्य संघ के उद्देश्यों से सहानुभूति रखता हुआ यह प्रतिज्ञा करे कि वह जाति सभाओं मे किसी प्रकार का भाग न लेगा और अपने किसी कार्य से जाति भेद को प्रोत्साहन नहीं देगा और सघ को १ रु० वार्षिक चन्दा देवे वह इस सघ का सहायक समझा जायेगा।

४ सदस्य—जो मनुष्य सघ के उद्देश्यों पर चलने की प्रतिज्ञा करे, नित्य सन्ध्या अग्निहोत्र करने तथा सदाचार से जीवन व्यतीत करने की प्रतिज्ञा करे और सघ को कम से कम ३ रु० वार्षिक चन्दा देवे वह इस सघ का सदस्य समझा जायेगा।

प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह यदि अविवाहित हो तो अपना विवाह और यदि विवाहित हो तो अपनी सन्तान और ऐसे युवक व युवतियों का विवाह जिनका कि वह सरक्षक हो जात पात तोड कर ही करेगा। उन सदस्यों को मान की दृष्टि से विशेषता दी जायेगी, जो जन्म से उच्च जाति में उत्पन्न होते हुए भी किसी दलित वर्ग के वर या कन्या से अथवा किसी शुद्ध हुये वर या कन्या से विवाह करेंगे।

५ सघ की शाखायें—इस सघ की यथा सम्भव भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त मे बड़े नगरों में तथा विदेशों में भी शाखायें खोली जायेंगी। जो

मनुष्य किसी शाखा के सदस्य होंगे वे सब संघ के सदस्य गिने जावेंगे।

६. सघ का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धः—यह सघ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता तथा संरक्षण में कार्य करेगा। परन्तु अन्य प्रकार से अपना काम स्वतन्त्र रूप से करेगा।

सघ अपने सब अधिवेशनों की कार्यवाही की एक प्रति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजेगा। सघ की प्रान्तिक और नागरिक शाखायें अपने अधिवेशनों की कार्यवाहियों की एक २ प्रति अपने प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभाओं को भेजेंगी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान या अन्तरग सभा को अधिकार होगा कि वह सघ को आवश्यकता होने पर उचित आदेश देवे वह सघ को मान्य होगा, परन्तु विशेष दशा में उसकी अपील सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन में हो सकेगी।

कार्य कारिणी समिति और अधिकारी

७. इस संघ की एक कार्य कारिणी सभा होगी जो कि संघ का सचालन करेगी इस सभा के सदस्य अधिक से अधिक २१ होंगे जिनमें अधिकारी भी सम्मिलित होंगे। इसको सघ के प्रबन्ध सम्बन्धी सब अधिकार होंगे और यह अपने कार्य संचालन के लिये अपने नियम स्वयं बनावेगी।

कार्य कारिणी के सदस्यों की योग्यता

८. जो आर्य समाज के १० नियमों को केवल मानते ही न हों प्रत्युत उन पर स्वयं चलने तथा अन्यों को चलाने में सदैव तत्पर रहते हों।

जो वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञाता तथा प्राचीन आर्य ग्रन्थों में से कम से कम एक ग्रन्थ के अवश्य विद्वान् हों।

९. सघ के तीन अधिकारी होंगे:—१ अध्यक्ष २. सचालक तथा ३ कोषाध्यक्ष।

आवश्यकता होने पर एक उपाध्यक्ष और एक वा अधिक उपसचालक नियत किये जायेंगे।

अध्यक्ष व उपाध्यक्ष :—आर्य समाज का वह विद्वान् कि जो आर्य समाज के सिद्धान्तों पर पूर्ण श्रद्धा रखता हो। जो वेद, ब्राह्मण, निरुक्त, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद् आदि विषयों में से कम से कम एक विषय का अच्छा ज्ञाता हो तथा जो क्रियात्मक रूप से अपना या अपने पुत्र पुत्रियों वा अन्य सम्बन्धियों का जन्मगत जात पात को तोड़कर गुण कर्म स्वभावानुसार विवाह सम्बन्ध कर चुका हो।

११. अध्यक्ष के कर्तव्य—१ संघ के प्रत्येक कार्य का निरीक्षण करना।

२. संघ के सब अधिवेशनों तथा सभाओं का सभापति बन कर उनका ठीक २ सचालन करना।

३. सघ सम्बन्धी विवादास्पद विषयों की उचित व्यवस्था देना।

४ संघ की उन्नति में सदा तत्पर रहना।

उपाध्यक्ष—का कर्तव्य अध्यक्ष के कार्यों में पूर्ण सहायता देना।

सचालक—सचालक व उपसचालक भी आर्य समाज का ऐसा विद्वान् होगा जो अध्यक्ष की उपर्युक्त योग्यता की समान योग्यता से सम्पन्न हो।

१३. सचालक के कर्तव्य—१. सघ का भली प्रकार से संचालन करना।

१ सघ के सदस्यों के विवाह योग्य वर और कन्याओं के गुणकर्म स्वभाव को मिला कर तद् नुसार उनको वरों तथा कन्याओं की सूचना देना।

३ यदि कोई सदस्य सघ द्वारा ही अपने लडके या लडकियों का सम्बन्ध कराना चाहे तो दोनों की योग्यतानुसार विवाह सम्बन्ध निश्चय करना।

४ सघ विषयक सब प्रकार का पत्र व्यवहार करना।

५. संघ के अधिवेशनों को सगठित करना।

६. सघ के लिये दान आदि द्वारा धन सग्रह करना।

कोषाध्यक्ष:—जो पूर्ण विश्वासपात्र हो।

१५ कोषाध्यक्ष के कर्तव्य :० १. सघ के कोष को सुरक्षित रखना।

२ नियम पूर्वक सघ के आय व्यय का हिसाब रखना।

३ सघ के सदस्यों से चन्दा एकत्रित करना तथा धनादि ग्रहण करना।

४ सदस्यों को चन्दे की और दान दाताओं को दान की रसीदें आदि भेजना।

१६. अधिकारी और कार्यकारिणी सदस्यों का निर्वाचन —

जब तक इस संघ के ५० सहायक और ५० सभासद् न बन जावें तब तक सघ की प्रारम्भिक अवस्था समझी जायेगी और तब तक सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा अधिकारियों का निर्वाचन करेगी। संघ का उपर्युक्त प्रकारसे पूर्ण संगठनहोने पर संघ का एक विशेस अधिवेशन होगा जिसमें अधिकारी और कार्यकरिणी के सदस्य एक वर्ष के लिये चुने जाए गे।

प्रथम अध्यक्ष का निर्वाचन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा करेगी। इसके पश्चात् अध्यक्ष तथा अन्य अधिकारियों और कार्य कारिणी सभा के अधिकारियों का निर्वाचन प्रति तीसरे वर्ष सघ के साधारण अधिवेशन मे हुआ करेगा।

१७ सघ का कार्यालय—इस सघ का एक कार्यालय होगा। कार्यालय सचालक के निवास स्थान पर होगा, कार्यालय मे निम्न सात प्रकार के रजिस्टर रहेंगे।

१ इस सघ के सदस्यों के नाम तथा पूरे पते आदि का।

२ उन सदस्यों के नाम तथा पूरे पते आदि जिन्होंने जातपात तोड कर विवाह किया हो।

३. आर्य परिवारों का रजिस्टर तथा पता आदि।

४ सदस्यों के विवाह योग्य लडकों के नाम, आयु, शिक्षा आजीविका तथा स्वास्थ्य आदि का।

५. सदस्यों की विवाह योग्य कन्याओं के नाम, आयु, शिक्षा तथा स्वास्थ्य आदि का।

६. विवाह योग्य विधुरों के नाम आयु, शिक्षा, आजीविका, पूर्व स्त्री के देहान्त का समय पूर्व सन्तान के विवरण आदि का।

७ विवाह योग्य विधवाओं के नाम, आयु, शिक्षा, पूर्व पति के देहान्त का समय, पूर्व सन्तान के विवरण आदि का।

सघ के सब सदस्यों को अपने विवाह योग्य लडकियों विधवाओं तथा विधुरों के नाम तत्सम्बन्धी प्रश्नावली सहित संघ के कार्यालय में भेजने होंगे जो कि उपर्युक्त रजिस्टरों में अंकित कर दिये जायेंगे।

१८ सदस्यों को अपनी सन्तान के विवाह करने में सुविधा।

जो सज्जन अपनी पुत्री का सम्बन्ध करना

चाहेंगे आर्य परिवार सघ में उसकी सूचना आजाने पर कन्या की योग्यता के अनुरूप सघ उस सज्जन के पास कम से कम पाच वरों के नाम पूरा पता तथा योग्यता आदि सहित भेज देगा। जिससे कि कन्या का पिता या सरक्षक उनसे पत्र व्यवहार आदि द्वारा योग्य वर का चुनाव कर उससे अपनी कन्या का सम्बन्ध कर सके। इसी प्रकार जो सज्जन अपने पुत्र का सम्बन्ध करना चाहेगा सघ मे उसकी सूचना आजाने पर सघ उस वर के अनुरूप कम से कम पाच कन्याओं का नाम पूरा पता तथा योग्यता आदि सहित भेज देगा।

यही व्यवस्था विधुर और विधवाओं के विवाह की होगी।

जो सज्जन सघ के द्वारा ही अपना या अपनी पुत्र पुत्री का सम्बन्ध करना चाहेगा यथा शक्ति संघ उसका भी प्रयत्न करेगा। किन्तु ऐसी अव स्था में वर तथा कन्या पक्ष वालों को सघ का सम्बन्ध यथा सम्भव मान्य होगा तथा सघ का वर या कन्या को देखने आदि के निमित्त जो मार्ग व्यय आदि होगा वह उभय पक्ष को देना होगा।

१६ सघ के उपदेशक—भविष्य में स्थान स्थान पर जाकर सघ के सदस्यों को सघ के उद्देश्यों पर कटिबद्ध रहने तथा सर्व साधारण में वर्तमान जात पात को छोड कर गुण कर्मानुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि बनने का उपदेश देंगे तथा इस बात का निरीक्षण करेंगे कि सघ के सदस्य सघ के उद्देश्यों का पालन कर रहे हैं या नहीं। ये उपदेशक दो प्रकार के होंगे (१) एक वे जो सघ से बिना कुछ दक्षिणादि लिये कार्य करें (२) दूसरे वे जिन को इस कार्य के लिये दक्षिणा दी जाएगी।

२० सघ का मासिक या सा ाहिक पत्र—

सघ यथाशक्ति अपना एक मासिक या साप्ताहिक पत्र भी निकालेगा जिस में वैदिक सिद्धान्तों तथा अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर उच्चकोटि के लेखों के अतिरिक्त संघ की सूचनायें तथा विवाह योग्य वर वधुओं की नामावली भी निकला करेगी।

२१ कार्यक्रम—सघ अखिल भारतीय आर्य कुमार परिषद् तथा आर्य वीर दल का सहयोग प्राप्त करके ऐसा यत्न करेगा जिससे सब आर्य कुमार और आर्य वीर अन्तर्जातीय विवाह करने का व्रत धारण करें और जो युवक ऐसा करें उनसे लिखित व्रत पत्र लिये जायें।

२२ प्रत्येक प्रान्तीय सघ का कर्तव्य होगा कि वे अपने निकटतम गुरुकुलों महाविद्यालयों तथा कालिजों के छात्रों मे इस सघ के उद्देश्यों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करावें और उनसे प्रतिज्ञा करावें कि जब वे अपने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करेंगे तब अन्तर्जातीय विवाह ही करेंगे।

२३. जनता और विशेषत युवक युवतियों का ध्यान इस महत्वपूर्ण विषय की ओर आकर्षित करने के लिये गुण कर्म स्वभावानुसार वैदिक वर्णव्यवस्था की शास्त्रीयता तथा उपयोगिता और जन्मगत जाति भेद की अशास्त्रीयता और हानि प्रदर्शक साहित्य भी विशेषतया छोटी पुस्तिकाओं के रूप मे प्रकाशित किया जायेगा।

२४ इस सघ का सगठन और अधिकारी तथा कार्य कारिणी सभा का निर्वाचन हो जाने पर वह उप समिति जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से विशेष कर इस सघ की योजना तैयार करने और कार्य आरम्भ करने के लिये बनाई गई थी समाप्त हो जायेगी।

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और आर्य समाज

आर्य नेताओं से नम्र निवेदन।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज के सिद्धान्तो की रक्षा तथा वेद के आदेशानुसार ससार में परमात्मा की कोई मूर्ति नहीं होती, परन्तु आज इस वेद कथन के विरुद्ध कई आर्य समाजो में मूर्ति पूजा एक प्रकार से आरम्भ हो चुकी है आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने जिस काम का सारी शक्ति लगा कर खण्डन किया था उसको कुछ आर्य समाज क मान्य नेताओ ने एक प्रकार से अपना लिया है।

हिन्दू शब्द किसी कोष मे नहीं है न प्राचीन किसी संस्कृत पुस्तक मे है परन्तु आज मैं अनेक आर्यों से यह सुनता हूँ कि हिन्दू धम की रक्षा के लिये रा० सघ का सदस्य बनना हमारा कर्तव्य है।

कई आर्य समाजो के प्रधान मन्त्री तथा अन्य सदस्य भी इस बात का समर्थन करते है। जिस कलङ्क को हमारे माथे से धोने के लिए ऋषि को १३ बार विष खाना पडा उसी को हम आज अपने माथे पर ही नहीं, आने वाली सन्तान के ऊपर भी दृढ़ता के साथ लगा रहे है। जिस मूर्तिपूजा का खण्डन करने पर ऋषि ने तलवार का वार राव कर्णसिंह से सहा उसका आज हम मे से कई एक तरह से मान करने लगे हैं।

आप कहेंगे किकैसे ? सुनो सघ की शाखा कई समाज मन्दिरो में लगती है। वहा ' र लोग मूर्ति पूजा करते हैं क्यों कि सघ के संस्थापक श्री डा० हेडगेवर की विचार धारा मे यह स्पष्ट लिखा है कि "जन साधारण को इस अव्यक्त स्वरूप का सम्यक् ज्ञान करा देने का मूर्ति पूजा ही एक मात्र सुलभ साधन है।" विचार धारा पृष्ठ ७५ मे ये शब्द मूर्ति पूजा की भावना को दृढ बनाते हैं। और सघ इसको दैनिक व्यवहार में भी पूरा करता है। आर्यसमाज ने १०० वर्ष मे जो महान् कार्य किया था। कितने ही बलिदान देकर, उस कार्य को सघ ने आर्य समाज के घर मे प्रवेश करक नष्ट कर दिया है। समाजो मे शाखा लगने से जो आय वीरदल के सैनिक होते थे वे सघ के सैनिक बने। मै एक ही नेता का उल्लेख करूगा जो कभी दृढ आर्यवीर दल का भी सचा लक रहा है ला० हरदयाल जी जालधर निवासी। में सभा के प्रोग्राम पर आर्य समाज गोविन्दगढ़ जालधर मे प्रचारार्थ गया था वहाँ पर रा० स्वय सघ की शाखा लगती थी मैंने अपने व्याख्यानो मे उसका विरोध किया तो सघ की एक शाखा के अधिकारी मेरे पास आया मैंने उनसे प्रश्न किया कि भाई साहब आप सब का नाम अपने भजनो मे लेते हैं, स्वामी दयानन्द जी का क्यो नहीं लेते उसने उत्तर दिया कि स्वामी जी ने देश के लिये कोई काम नही किया इसलिए हम तो उन पुरुषो का नाम लेते हैं। जिन्होने देश के लिए कार्य किया है। यह विचार हैं एक शाखा के अधिकारी के जिससे सब आर्य सज्जन अनु मान लगा सकते हैं कि आगे आने वाले समय में अवश्य ही हिन्दू राज्य में ऋषि दयानन्द के कार्य का कोई महत्व नहीं होगा। मैंने इस बात का प्रति उत्तर देने के लिये रात्रीको ११।८।४५ को समाज मन्दिर में राष्टीय स्वयं संघ की नीति पर

व्याख्यान दिया जिसमें पंजाब राष्ट्रीय सघ के नेता लाला हरदयाल जी भी उपस्थित थे उन्होने भी वही बात कही जो एक अधिकारीने कही थी।

मैंने सितम्बर मास के सार्वदेशिक पत्र मे आर्य वीर दल के मन्त्री श्री चौ० देशराज जी का लेख पढ़ा जिससे कुछ विश्वास हो चला है कि आर्य वीरो के हृदय में ऋषि की आत्मा का प्रभाव पड़ा है, प्रत्येक समाज तथा प्रतिनिधि सभाओ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कीं आज्ञा होनी चाहिये कि कोई भी आर्य सस्था रा० स्व० सघ को अपना स्थान न दे। आर्य वीर दल को कई आर्य नेताओ और आर्य समाज के अधिकारियो ने जितनी हानि पहु चाई है उतनी अन्य किसी ने नही। सबसे बडी हानि मै यह समझता हूँ कि जिस सिद्धान्त का आर्य समाज खण्डन करता था उसको आज राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ का पक्ष लेकर समर्थन किया है। कोई समय आयेगा कि राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ का अधिकार समाज मन्दिरो पर होगा।

आर्य समाज का जो उद्देश्य कि संसार से अज्ञानता दूर कर देंगे वह रह जायेगा क्योंकि आज जो दस वर्ष पूर्व आर्य समाज पर तथा आर्य वीर दल पर विश्वास रखते थे वह आज संघ पर विश्वास रख कर भगवे झंडे की पूजा करते है। और करते कहा है आर्य समाज मन्दिरो मे। मैंने सभा की आज्ञा से प्रचार कार्य करते हुए सारे पंजाब मे भ्रमण किया क्या आय पाठशालाये क्या आर्य विद्यालय क्या समाजे कई स्थानो पर रा० स्व० संघ की शाखाएँ लगती है, और एक घटना तो मैंने आर्य समाज लक्कड बाजार शिमला के वार्षिकोत्सव पर देखी कि सब समाज के आर्य तथा उपदेशक हवन यज्ञ कर रहे हैं उधर रा० स्व० सघ की शाखा लग रही है, उन से कहा गया कि इस समय आप शाखा बन्द करदे तो उत्तर मिला कि तुम घी को जलाना बन्द करदो इससे क्या लाभ है? अधिक कहने पर लड़ने को तैयार हो गये। परन्तु अब पछताये क्या होत है जब चिड़ियो ने खेत पर अधिकार कर लिया है। मैं आशा करता हूँ कि अब आर्य विद्वान् मेरे इन तुच्छ विचारो पर ध्यान देकर आर्य वीर दल को शक्तिशाली बनाने का यत्न करेंगे। नहीं तो फिर पछताना पड़ेगा। अब आर्य समाज और रा० स्व० सघ का आपस मे संघर्ष होगा क्योकि सघ ने आप के सिद्धान्तो का खण्डन करना है आपके ही समाज मन्दिरो मे खड़े होकर उस समय सब को कष्ट होगा कि हमने इसका समर्थन करके बड़ा भारी पाप किया। आप तो अपने पुत्रो को आर्य वीर दल से हटा कर सघ मे हिन्दू धर्म की रक्षा करने के लिये प्रवेश करते है। परन्तु एक दिन आयेगा आप को रोना पड़ेगा। आपके सुपुत्र कहेगे कि हम आर्य नही है। हम ससार का भला नही करना चाहते हम तो केवल भगवान् की मूर्ति जो मन्दिर मे है उसकी रक्षा करके हिन्दू धर्म की रक्षा करेंगे उस समय आर्य पुरुषों की क्या दशा होगी। क्यो कि हम अब भी देख रहे है कि आर्य समाज के लाल जिन्होने आर्य वीर दल की शक्ति को बढ़ाया था वह अब घटा रहे है । क्यो कि लाहौर आर्य समाज बच्छे वाली के वार्षिक उत्सव पर सघ के साथ आर्य वीर दल की टक्कर हो चुकी है सघ वालो ने जलसे मे विघ्न डाला। आप सब के सामने आये दिन ऐसी घटनाएं देखने मे आती है।

मेरा आपसे सविनय निवेदन है कि अपने बच्चो को आर्य बनाने का प्रयत्न करें नहीं तो वे या तो संघ मे चले जायेंगे या नास्तिको के दल मे मिल जायेगे।

आर्य विद्वानो का सेवकः—
नरेन्द्रदेव आर्य उपदेशक आर्यसमाज लोअर बाजार शिमला।

सम्पादकीय

सुधारक शिरोमणि महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धाञ्जलिः—

वैदिक धर्मोद्धारक तथा सुधारक—शिरोमणि आचार्यवर महर्षि दयानन्द सरस्वती का धर्म वेदी पर अमर बलिदान आज ६२ वर्ष पूर्व दीपमाला के दिन ३० अक्तू० सन् १८८३ मे हुआ था। यद्यपि हमारे देश में अन्य भी अनेक सुधारक हुए हैं किन्तु हमे महर्षि दयानन्द जी को सुधारक शिरोमणि कहने में जरा भी सकोच नहीं। क्योंकि आदर्श सुधारक वह होता है जिस के अन्दर समाज और देश के लिये सच्चा प्रेम हो, जो समाज और देश की धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक अवस्था को ठीक तौर पर जान कर और साथ ही उनकी अवनति के कारणों को पहिचान कर सब प्रकार के सुधार का प्रयत्न करे तथा जिस के अन्दर साहस और निर्भयता कूट २ कर भरी हुई हों, जो समाज के अन्दर अज्ञान वा स्वार्थवश आई हुई बुराइयों को दूर करने के प्रयत्न के साथ २ समाज के वास्तविक उच्च आदर्श को सबके सामने अपने पवित्र आचरण द्वारा रख सके। ये सब आदर्श सुधारक शिरोमणि के लक्षण स्वनाम धन्य महर्षि दयानन्द जी मे पूरे तौर पर घट सकते हैं अन्यों में नहीं क्यों कि अन्य महानुभावों ने अपने २ विचार और शक्ति के अनुसार कुछ थोड़ी सी धार्मिक व सामाजिक बुराइयोंको दूर करनेका ही प्रयत्न किया पर समाज और देश की सर्वतोमुखी उन्नति की ओर ध्यान देने और उसके लिये दिन रात निरतर प्रयत्न का श्रेय निस्सन्देह महर्षि दयानन्द जी को ही दिया जा सकता है जिन्होंने विशुद्ध रूप में सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार द्वारा मृतप्राय आर्य जाति में नव जीवन का सचार कर दिया तथा धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, औद्योगिक और शिक्षा वैज्ञानिक क्षेत्र मे एक अद्भुत क्रान्ति का सूत्रपात किया। मध्यकालीन आचार्यों ने जिन वेदों को मान्य धर्मग्रन्थ मानते हुए भी क्रियात्मक रूपेण उनका स्थान उपनिषदों, वेदान्तसूत्रों तथा भगवद्गीतादि को दे रक्खा था, जिनके अध्ययन का अधिकार भी उन्होंने प्राय शूद्र कुलोत्पन्न व्यक्तियों और स्त्रियों से छीन रक्खा था, जिन में वे बहु देवता पूजा, यज्ञों में पशुबलि आदि का विधान मानते थे ऐसे वेदों की पवित्र, युक्तिसङ्गत, वैज्ञानिक और सार्वभौम शिक्षाओं को महर्षि दयानन्द ने ही इस युग में शिक्षित जनता के सन्मुख सरल और स्पष्ट रूप मे रख कर उनकी आखे खोल दीं। जगद्विख्यात विचारक स्व० रोमारौला ने महर्षि दयानन्द की इस उदारहृदयता के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुये ठीक ही लिखा था कि—

"It was in truth an epoch-making date for India when a Brahmin

not only acknowledged that all human beings have the right to know the Vedas, whose study had been previously prohibited by orthodox Brahmins, but insisted that their study and propaganda was the duty of every Arya "
(The Life of Ram Krishna P 159)

अर्थात् वह सचमुच भारत मे एक नवीन युग का निर्माण करने वाला दिन था जिस दिन एक ब्राह्मण ने (स्वामी दयानन्द सरस्वती) न केवल यह स्वीकार किया कि प्रत्येक मनुष्य को वेद पढ़ने का (जिसका अध्ययन कट्टर पन्थी ब्राह्मणों ने अनेकों के लिये बन्द कर रक्खा था) अधिकार है बल्कि इस बात पर बल दिया कि वेदों का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

बाल विवाह, विषम विवाह, जन्ममूलक वर्ण-व्यवस्था, अस्पृश्यता इत्यादि पद्धतियों को वेद विरुद्ध और हानि कारक सिद्ध करते हुए महर्षि दयानन्द ने सामाजिक क्षेत्र मे भी क्रान्ति ला दी और देवियों को अपने पुराने गौरवास्पद स्थान पर प्रतिष्ठित किया। वे इस युगमे सब से प्रथम महानुभाव थे जिन्होंने स्वराज्यस्वदेशी और असहयोग आदि का महत्त्व जनता के सन्मुख रखकर (जैसे कि इसी अङ्क मे अन्यत्र सत्यार्थप्रकाश से 'महर्षि दयानन्द वचनामृत' शीर्षक से उद्धृत वाक्यों द्वारा स्पष्ट है) राजनैतिक दासता की शृङ्खलाओं को तोड़ने के लिये उसे प्रेरित किया जिसको ध्यान में रखते हुए स्व ऐनी बीसेन्ट ने अपनी पुस्तक "India a nation" में लिखा कि—

Swami Dayananda was the first to proclaim India for Indians."

अर्थात् स्वामी दयानन्द प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने इस बात की घोषणा की कि भारत भारतवासियों के लिये है।

प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार कर के महर्षि दयानन्द ने शिक्षा क्षेत्र में एक नवीन क्रान्ति को जन्म दिया जिसे अमर-धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने मूर्तरूप दे दिया। अमेरिका के सुप्रसिद्ध योगी श्री ऐन्ड्रू जैक्सन डेविस के शब्दों में ससार भर की सब धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक बुराइयों को भस्म करने वाली पवित्र अग्नि के जलाने वाले आदर्श क्रान्तिकारी सुधारक शिरोमणि महर्षि दयानन्द को हम बार बार प्रणाम करते है तथा सत्यनिष्ठता, पवित्रता, निर्भयता, दयालुता, अदम्य साहस और उत्साह इत्यादि उनके दिव्य गुणों को अपने अन्दर धारण करने का सब आर्यों से अनुरोध करते हैं।

हिन्दू विश्वविद्यालय में ऐसा अनर्थ?—

महामना श्री प० मदन मोहन जी मालवीय द्वारा स्थापित हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस से प्रत्येक शिक्षित भारतीय भली भाति परिचित है। इसके उद्देश्यों में से सब से प्रथम 'हिन्दुओं के श्रेष्ठ विचार और सस्कृति तथा भारत की प्राचीन सभ्यता में जो उत्तम और महत्त्व पूर्ण तत्त्व हैं उनको सुरक्षित रखने और लोकप्रिय बनाने के लिये हिन्दू शास्त्रों और साहित्य के अनुशीलन को प्रोत्साहित करना' बताया गया है।

ऐसे उच्च उद्देश्य से स्थापित विश्वविद्यालय में अब्राह्मण कुलोत्पन्न होने अथवा स्त्री जाति की होनेके कारण वेद के अध्ययन पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध सचमुच आश्चर्य जनक है किन्तु गतमास

इस प्रकार का एक अत्यन्त स्पष्ट उदाहरण समाचार—पत्रों के द्वारा जनता के सामने आया है जो हिन्दूविश्वविद्यालयान्तर्गत धर्म विज्ञान महा विद्यालय के आचार्यों की सकुचित मनोवृत्ति का सूचक है।

श्री प्रो० महेशप्रसाद जी मौलवी आलिम फ़ाज़िल हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस मे अरबी फ़ारसी विभाग के अध्यक्ष हैं उनकी सुपुत्री कुमारी कल्याणी देवी की इच्छा हुई कि वह वेद विद्या में प्रवीणता प्राप्त करे। इस के लिये उसने तय्यारी प्रारम्भ की और धर्म विज्ञान विभाग की प्रथमा परीक्षा घर पर अध्ययन करके उसने दे डाली और बहुत अच्छे अङ्कों मे उत्तीर्ण हुई। आगे विषय कठिन होने और घर पर ही पढ़ने की अनुकूलता न होने के कारण उसने हिन्दू विश्व-विद्यालय के धर्म विज्ञान महा विद्यालय (College of theology)मे प्रविष्ट होनेके लिए प्रार्थना पत्र भेजा पर वह स्वीकृत नहीं हुआ। इस विषय में मेरे कारण पूछने पर श्री प्रो० महेशप्रसाद जी ने इतना ही लिखा कि 'मेरी पुत्री के प्रवेश में नियम बाधक नहीं किन्तु आचार्य लोगों के विचार से मेरी पुत्री अधिकारिणी नहीं कि वह धर्म विज्ञान विद्यालय (College of theology) में भरती हो सके। आप विश्व विद्यालय से पूछ सकते हैं कि मामला क्या है ? (१५।१०।४५ का पत्र)। धर्म विज्ञान विद्यालय के अध्यक्ष जी को मैंने पत्र लिखा हुआ है पर अभी तक उत्तर अप्राप्त है। इस बीचमें "आज" आदि पत्रों में निम्न लिखित समाचार प्रकाशित हुआ है।

ब्राह्मणेतर और वेदाध्ययन

सर राधा कृष्णन् द्वारा स्पष्टी करण

काशी गुरुवार। काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय के वाइस चान्सलर सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने पजाब के कुछ पत्रकारों को इस आशय का वक्तव्य दिया है कि साहित्य के सदृश वेद पढ़ने की मनाही हिन्दू विश्वविद्यालय में नहीं है किन्तु पौरोहित्य कला मे केवल ब्राह्मण ही वेद पढ सकते हैं और यह निश्चय पिछले २५ वर्षों से चला आ रहा है। आपने यह भी कहा कि इस परम्परा को तोडना मेरी सामर्थ्य के बाहर की बात है।

"स्मरण रहना चाहिये कि हिन्दू विश्वविद्यालय के अरबी फ़ारसी विभाग के अध्यक्ष मौलवी महेशप्रसाद आलिम फ़ाज़िल की कन्या कुमारी कल्याणी का हिन्दू विश्वविद्यालय की वेदकक्षा में इस कारण प्रवेश न हो सका कि वे अब्राह्मण हैं।"

सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० भगवान् दासजी एम.ए का जो लेख 'आज' तथा ससार 'आदि काशी के पत्रों मे प्रकाशित हुआ है उससे ज्ञात होता है कि कुमारी कल्याणी देवी को केवल ब्राह्मणेतर कुलोत्पन्ना नहीं बल्कि महिला जाति की होने के कारण वेदविद्यालय में प्रवेश की अनुमति नहीं मिल सकी। ता० २६-१०-४५ के 'विश्वमित्र' देहली में इस सम्बन्ध में निम्न लिखित समाचार प्रकाशित हुआ है।

वेदों की शिक्षा

बनारस २० अक्तूबर। गत मङ्गलवार को काशी विद्यापीठ पत्रकारकला विभाग के विद्यार्थी श्री योगेश्वर प्रसाद ने पूज्य मालवीय जी से मौलवी महेश्वर प्रसाद जी आलिम फ़ाज़िल की कन्या

कुमारी कल्याणी के वेदकक्षा के पौरोहित्य विभाग में प्रवेश न हो सकने के सम्बन्ध में भेंट की। पूज्य मालवीय जीने स्पष्टीकरण करते हुए कहा कि कुमारी कल्याणी विशुद्ध वेद वेदान्त तो पढ़ सकती हैं किन्तु पौरोहित्य कार्य करने की वेद की आज्ञा नहीं है। स्त्रिया सकल्प पढ कर किसी से न दान ले सकती हैं और न किसी को दान दिला सकती हैं यह अधिकार वेद की मर्यादा के विरुद्ध है। अत: कुमारी कल्याणी का प्रवेश पौरोहित्य विभाग में नहीं हो सकता।"

इस के सम्बन्ध मे श्री प्रो० महेश प्रसादजी के १६-१०-४५ के सार्वदेशिक सभा के नाम लिखे पत्रके निम्न अश को उद्धृत करना पर्याप्त है जिससे पूज्य मालवीय जी का उपयुक्त स्पष्टीकरण अनावश्यक हो जाता है। वे लिखते हैं 'भली भाति स्पष्ट रहे कि मै अपनी कन्या को वेद मध्यमा में भरती कराना चाहता था पौरोहिती की किसी परीक्षा के लिये नहीं चाहता था।" ऐसी अवस्था मे यदि पूज्य मालवीय जी की उपयुक्त सम्मति को मान भी लिया जाए तो भी वेद मध्यमा मे कुमारी कल्याणी देवी के प्रवेश की अनुमति न मिलने का कारण समझ मे नहीं आता। श्री प्रो० महेशप्रसाद जी ने उसी पत्र मे लिखा है कि 'धर्म विज्ञान महाविद्यालय (College of Theology) में ही वेद मध्यमा क्लास भी है। इस में पढ़ने के लिये हिन्दू होना चाहिये। और प्रवेशिका या इसके बराबर की किसी परीक्षा का पास होना आवश्यक है। मेरी लड़की वेद प्रथमा है जो प्रवेशिका के बराबर स्वीकृत है। यदि इस क्लास में भरती होने के लिये ब्राह्मण होना आवश्यक है ऐसी युनिवर्सिटी कहे तो मतलब यह हुआ कि युनिवर्सिटी में अंग्रेजी के द्वारा बी ए एम ए. मेंवेद पढ़ाने का साधन प्रत्येक के लिये है किन्तु "सस्कृत द्वारा केवल ब्राह्मण ही पढ सकता है अन्य कोई नहीं।" पौरोहित्य डिप्लोमा का चलन सन् १६३३ ई० से हुआ है। यह २५ वर्ष से चालू नहीं।" हम नहीं चाहते कि कि किसी के साथ भी किसी तरह का अन्याय हो और किसी अश में भी असत्य युक्त आन्दोलन हो अत वस्तुस्थिति पर प्रकाश डालने के लिये धर्म विज्ञान महा विद्यालय के आचार्य श्री चिन्न स्वामी शास्त्री और प्राच्य विद्या विभाग के अध्यक्ष श्री के पी मिश्र के २—६—४५ के पत्रों का निर्देश देना उचित प्रतीत होता है जिस में उन्होंने लिखा है "कि मध्यमा परीक्षा मे जो वेद का पाठ्यक्रम निश्चित है उस में वैदिक पद्धतियों का कुछ भाग भी है जो केवल उन्हीं के लिये है जो प्रचलित हिन्दू सस्कारों को पुरोहित रूप से करवाने के अधिकारी हैं। हम नही समझते कि प्रार्थिनी (कल्याणी देवी) वेद पढने की जिस में कर्मकाण्ड भी सम्मिलित है अधिकारिणी है" उन के अंग्रेजी मे ये शब्द हैं "We do not think that the candidate in question is qualified to study the Veda which includes karma kanda also,"

इस पत्र मे प्रकाशित सम्मति से श्री प० मदन मोहन जी मालवीय जी ने अपने ५-६-४५ के पत्र मे सहमति प्रकट करते हुए लिखा है कि उपर्युक्त नियम प्रसिद्ध सनातनी पण्डितों की अनुमति से दीर्घकाल तक विचार के पश्चात् निश्चित किया गया था और इस लिये अब इस का भङ्ग न होना चाहिये।

हिन्दू विश्व विद्यालय के वाइस चान्सलर सर राधाकृष्णन् ने ता० ६-९-४५ को श्री प्रो० महेश-प्रसादजी को श्री प० मालवीयजी आदिकी सम्मति से सूचित करते हुए लिखा कि 'खेद है कि अब इस मामले मे कुछ नहीं किया जा सकता।'

इस प्रकार उपयुक्त घटना पर यथार्थ प्रकाश डालने के पश्चात् हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि किसी भी कारण से कुमारी कल्याणी देवी को वेद मध्यमा में प्रवेश की अनुमति न देना सर्वथा अनुचित और वेदादि सत्य शास्त्र विरुद्ध है तथा यह कुछ पण्डितों की सकुचित मनोवृत्ति का परिचायक है। वेदों के अनुसार वेद पढने का अधिकार प्रत्येक सदाचारी स्त्री पुरुष को प्राप्त है जैसा कि यजुर्वेद अ० २६ के २य मन्त्र मे भगवान् का उपदेश है।

यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य.।
ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाय
चारणाय, यजु० २६।२

जिसका अर्थ स्पष्ट है कि मैं जिस प्रकार सब मनुष्यों (स्त्री पुरुषों) के लिये—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अतिशूद्रों के लिये इस सबका कल्याण करने वाली वेदवाणी का उपदेश करता हूँ ऐसे तुम सब भी करो।

बगाल के सुप्रसिद्ध विद्वान्, वेद विषयक अनेक ग्रन्थों के निर्माता और सम्पादक श्री प० सत्यव्रत जी सामाश्रमी ने 'ऐतरेयालोचन' में महर्षि दयानन्द जी के विचार का समर्थन करते हुए लिखा है कि—

'शूद्रस्य वेदाधिकारे साक्षाद् वेदवचनमपि प्रदर्शित स्वामि दयानन्देन (यजु २६।२) यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य । ब्रह्म राजन्याभ्याँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय। इति

तदेव वेदविवे पक्षपात दोषभाकत्व न कथमपीति स्पष्टम्। (ऐतरेयालोचनम् पृ० १७)

अर्थात् स्वामी दयानन्द जी ने यजु० २६।२ यथेमा वाच कल्याणीम्। इस वेद मन्त्र को उद्धृत करते हुए शूद्रों के भी वेदाधिकार को स्पष्ट दिखाया है और वेदों के विधान में कोई भी पक्षपात नहीं यह बात भी इससे स्पष्ट है।

ऋग्वेद के 'समानोमन्त्र समिति समानी समान मन सह चित्तमेषाम्। समान मन्त्रमभि मन्त्रये व समानेन वो हविषा जुहोमि ॥" (ऋ० १०।१९१।३) इस मन्त्र मं भी स्पष्ट रूप से भगवान् ने उपदेश किया है कि तुम मनुष्यों के लिए मैंने समान रूप से वेदों का ज्ञान दिया है जैसे कि अन्य जल वायु पृथिवी सूर्यादि पदार्थ सबके लिये दिये है। ऋ० १०।५३।४ मे "पञ्चजना मम होत्र जुषध्वम्" ऐसा भगवान् का उपदेश है जिसमें पञ्चजन का अर्थ औप मन्यव आदि आचार्यों ने "चत्वारो वर्णा निषाद पञ्चम" ऐसा किया है यह भी यास्कमुनि कृत निरुक्त के ३य अध्याय २ य खण्डमें बताया गया है। अत मन्त्र का अर्थ स्पष्ट है कि ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र अतिशूद्र सब यज्ञ मे सम्मिलित होवो। महर्षि वेदव्यास ने महाभारत में—

सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वो भद्राणि पश्यतु।
श्रावयेच्चतुरो वर्णान्, कृत्वा ब्राह्मणमग्रतः।
वेदस्याध्ययन हीद, तच्च पुण्य महत्स्मृतम् ॥
महाभारत शान्ति पर्व अ० ३२७।४८।४९
इत्येते चतुरो वर्णा, येषा ब्राह्मी सरस्वती।
ब्रह्म धारयता नित्य, व्रतानि नियमास्तथा ॥
म० भा० शान्तिपर्व अ० १८९।१६

इत्यादि श्लोकों द्वारा बताया है कि सब मनुष्य दुःखों से दूर हों और कल्याण को प्राप्त करे इसके लिए विद्वानों को चाहिए कि सब वर्णों को वेदों का उपदेश करें क्यों कि वेद का अध्ययन महापुण्य है। यह वेद की ईश्वरीय वाणी चारों वर्णों के लिये है जो नियम, व्रत आदि धारण करने को उद्यत हों। इसलिये हमारे वैदिक मन्तव्यानुसार तो श्री प्रो० महेशप्रसाद जी सुयोग्य उपाध्याय और पूर्ण सदाचारी होने के कारण ब्राह्मण है अत उनकी कन्या को वेद पढने पढ़ाने का पूर्ण अधिकार है उनका जन्म कायस्थ कुल में होने के कारण यदि किसी को आक्षेप हो तो वह भी उपर्युक्त सैकडों प्रमाणों की उपस्थिति मे अनुचित है। कायस्थ अपने को क्षत्रिय वर्णान्तर्गत मानते हैं पर शूद्रवशज मानने पर भी उनका वेदाधिकार सिद्ध है। कवष ऐलूष जैसे दासीपुत्र वेदों के ऋषि तक हो गये और जैसे कि सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री प० सत्यव्रत सामाश्रमी जी ने ऐतरेयालोचन मे पुष्ट प्रमाणों से सिद्ध किया है ऋग्वेद के प्रथम भाष्य ऐतरेय ब्राह्मण (जिसको हमारे पौराणिक भाई वेद ही मानते हैं।) के निर्माता महीदास ऐतरेय इतरा नामक दासी के पुत्र थे। यदि एक शूद्रा पुत्र का वेद भाष्य निर्माण का भी अधिकार हो सकता है तो वेदाध्ययन के निषेध की बात करना तो सर्वथा असङ्गत है। पारस्कर गृह्यसूत्र मे शूद्राणामदुष्ट कर्मणाम् उपनयनम का २ पृष्ट ६० छापा संवत् १६३६ हरिहर भाष्यमे बताया गया है कि सदाचारी शूद्रों का उपनयन हो सकता है जिसका स्पष्ट उदाहरण भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व ३।४। २० में आता है जहा बताया गया है कि कण्व और कश्यप ऋषि सरस्वती देवी की आज्ञा से मिश्रदेश (ईजिप्ट) में गये और वहा उन्होंने १० हजार म्लेच्छों की शुद्धि की जिनमें से १००० को ब्राह्मण बनाया। वे श्लोक निम्न लिखित हैं—

मिश्रदेशोद्भवा म्लेच्छा, काश्यपेनैव शासिता।
सस्कृता शूद्रवर्णेन, ब्रह्मवर्णमुपागता ॥
शिखा सूत्रं समाधाय, पठित्वा वेदमुत्तमम्।
यज्ञैश्च पूजयामासु, देव देव शचीपतिम्॥

यहा यह बताया गया है कि शुद्धि सस्कार के पश्चात् वे १००० म्लेच्छ शिखा और यज्ञोपवीत धारण करके और उत्तम वेद का अध्ययन करके यज्ञों द्वारा भगवान् की पूजा करने लगे। यदि जन्म से म्लेच्छ भी वेदाध्ययन कर सकते हैं तो प्रो० महेशप्रसाद जी जैस गुणकर्म से ब्राह्मण की पुत्री की तो बात ही क्या है?

यदि यह कहा जाए कि 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम् इति श्रुते" के अनुसार स्त्रियों और शूद्रों को वेद पढने का अधिकार नहीं तो वह भी सर्वथा कपोल कल्पित बात है जो किसी श्रुति में नहीं पाई जाती। इस के विपरीत 'वेद न केवल "चोदयित्री सूनृताना चेतन्ती सुमतीनाम्" यज्ञ दधे सरस्वती ॥ ऋ० १।३।११

कुलायिनी घृतवती पुरन्धिः स्योने सीद सदने पृथिव्या। अभित्वा रुद्रावसवो गृणन्तु इमा ब्रह्म पीपिहि सौभगाय अश्विनाध्वर्यू सादयतामिहत्वा॥ यजु० १४।२ ता त्वा विश्वे अभि गृणन्तु देवा स्तोम पृष्ठा घृतवतीह सीद ॥" यजु० १४।४

इत्यादि मन्त्रों द्वारा स्त्रियों के लिये वेदाध्ययन और यज्ञ करने का विधान करता है बल्कि गोधा घोषा, विश्ववारा, अपाला उपनिषत्, निषत, शची,

सरमा, श्रद्धा इत्यादि सैकड़ों ब्रह्मवादिनी ऋषिकाएं प्राचीन काल में हुई हैं जो वेद मन्त्रों के रहस्यों को जान कर उनका प्रचार करती थीं। बृहद् देवता के २ य अध्याय में उनमें से कुछ के नाम इस प्रकार दिये हैं।

घोषा गोधा विश्ववारा, अपालोपनिषन्निषत्।
ब्रह्मजाया जुहूर्नाम, अगस्त्यस्य स्वसादितिः॥ ८४
इन्द्राणी चेन्द्र माता च, सरमा रोमशोवशी।
लोपामुद्रा च नद्यश्च, यमी नारी च शाश्वती॥८५
श्रीर्लक्ष्मी सार्पराज्ञी वाक्, श्रद्धा मेधा च दक्षिणा।
रात्री सूर्या च सावित्री ब्रह्मवादिन्य ईरिताः॥८६

ब्रह्म का अर्थ वेद होता है उसका उपदेश करने वाली ये ब्रह्मवादिनी ऋषिकाएं थीं। इनके विषय में हारीत स्मृति से निम्न वचन पाराशर माधवीय में उद्धृत किये गये हैं "तत्र ब्रह्मवादिनीनाम् उपनयनम् अग्नीन्धनं वेदाध्ययन स्वगृहे भिक्षाचर्येति॥"

अर्थात ब्रह्मवादिनियोंके उपनयन (यज्ञोपवीत संस्कार) अग्नि होत्र, वेदाध्ययन और घर मे भिक्षा कर्म इत्यादि होते थे। यम स्मृति से निम्न वचन वहीं उद्धृत है।

पुरा कल्पे तु नारीणा, मौञ्जी बन्धनमिष्यते।
अध्यापनं च वेदाना, सावित्री वाचनं तथा॥

अर्थात पहले शास्त्र विधि के अनुसार (कल्प-का अर्थ शास्त्रविधि भी होता है) स्त्रियो का मौञ्जी वन्धन जो उपनयन सम्कार का अङ्ग है, वेदों का पढ़ाना और गायत्री का उपदेश करना आदि होते थे।। श्री कौशल्या, सीता देवी, तारा द्रौपदी आदि के वेद पढने और संध्या हवनादि करने के अनेक प्रमाण रामायण महाभारतादि पाये जाते हैं। महाभारत उद्योग पर्व मे शिवा ब्राह्मणी का वर्णन इन शब्दों मे आया है।

अत्र सिद्धा शिवानाम, ब्राह्मणी वेदपारगा।
अधीत्य सकलान् वेदान्, लेभेऽसन्देहमक्षयम्॥

म० भा० उद्योग अ० १०८। १८। १९

अर्थ शिवा नाम की ब्राह्मणी ने चारो वेदोको पढ के और उनमे पारङ्गत हो कर मोक्ष पद को प्राप्त किया। ब्रह्मवैवर्त पुराण के प्रकृति खण्ड अ० १४ मे कुशध्वज राजा की पुत्री कमलाशा के विषय मे लिखा है:—

सततं मूर्तिमन्तश्च, वेदाश्चत्वार एव च।
सन्ति यस्याश्च जिह्वाग्रे, साथ वेदवती स्मृता॥

अर्थात क्यो कि उस कमलाशा को चारो वेद भली भाँति कण्ठस्थ थे इसलिये लोग उसे वेदवती के नाम से पुकारते थे।

गोभिल गृह्यसूत्र मे प्रावृता यज्ञोपवीतिनीम् अभ्युदानयन जपेत। (प्र० २ ख०१ सू० १९) विवाह समय मे यज्ञोपवीत धारिणी कन्या का स्पष्ट विधान है।

इस प्रकार सैकड़ो श्रुति, स्मृति तथा पुराणों तक के प्रमाणोसे स्त्रियोंकेवेदोके वेद पढ़ने पढानेका स्पष्ट विधान सिद्ध होता है। आश्चर्य है कि धर्म विज्ञान महाविद्यालय के आचार्य कैसे इन के विषय में अपनी अनभिज्ञता प्रकट कर रहे हैं? पूज्य पण्डित मालवीयजी का यह कथन भी शास्त्रानुकूल नहीं कि स्त्रियो को यज्ञ कराने का अधिकार नहीं। यज्ञं दधे सरस्वती। ऋ० १।३।११ सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने॥ (ऋग्१०—१७—७)इत्यादि वेद मन्त्रों मे इसविषयक स्पष्ट निर्देशो के अतिरिक्त वेदाङ्ग अष्टाध्यायी व्याकरण के "इन्द्र वरुण भवशर्व रुद्र मृड हिमारण्ययवन मातुलाचार्याणामानुक्॥ ४।१।४९" इससूत्र द्वारा आचार्य पत्नी के लिये आचार्याणी शब्द

बनता है किन्तु जो स्वयम् आचार्या हो उसे आचार्या ही कहा जाएगा जैसे कि सिद्धान्त कौमुदी में भी महाभाष्य के आधार पर लिखा है।

आचार्यस्य स्त्री आचार्याणी। पु योग इत्येव।

आचार्या स्वयं व्याख्यात्री। (सिद्धान्त कौमुदी स्त्री प्रत्यय) आचार्य का लक्षण मनुस्मृति मे निम्न है:—

उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विज ।
सकल्प सरहस्य च, तमाचार्यं प्रचक्षते ॥
मनु० २।१४०

अर्थात् आचार्य वह कहलाता है जो शिष्य का उपनयन सस्कार कराकर रहस्य और विधि सहित वेद पढावे। इस लक्षणानुसार जो कन्याओ कायज्ञोपवीत सस्कार कराकर साङ्गोपाङ्ग वेद पढावे वही आचार्या हो सकती है। इस लिये स्त्रियो को न केवल वेद पढ़ने पढ़ाने बल्कि यज्ञ करने कराने का भी पूर्ण अधिकार है यह सर्वथा स्पष्ट है अतः हिन्दू विश्वविद्यालय तथा तदन्तर्गत धर्म विज्ञान महाविद्यालय के अधिकारियो का श्रीमती कल्याणी देवी को वेद मध्यमा मे प्रवेश की अनुमति न देना सर्वथा अनुचित और वेदादि सत्य शास्त्र विरुद्ध है जिस का डा० भगवान् दासजी के समान सभी उदार हृदय वैदिक धर्मियों को प्रतिवाद करना चाहिये। आशा है पूज्य प० मालवीय जी जैसे उदार महानुभाव इस अनर्थ को अवश्य दूर कर देंगे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रशंसनीय निश्चय:-

यह प्रसन्नता की बात है कि उदयपुर के हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में यह निर्णय किया गया कि "महात्मा गान्धी जी के त्याग पत्र के पश्चात् भी सम्मेलन अपनी अनेक बार घोषित नीति के अनुसार देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा का ही प्रचार करेगा और उसके विचार मे देवनागरी तथा फारसी दोनो लिपियो का प्रचार अव्यावहारिक तथा अग्राह्य है।"

हम इस विषयक अपने विचार इन स्तम्भो में कई बार प्रकट कर चुके है। हमे आशा है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन सस्कृत निष्ठ हिन्दी और देवनागरी लिपि के प्रचार मे पूर्वापेक्षया अधिक तीव्र गति और तत्परता से प्रयत्न शील होगा।

उत्साही ग्राहकों का प्रशंसनीय आर्य भाषा प्रेम:—

'सार्वदेशिक' के गत अङ्क मे 'आर्य भाषा की रक्षा और आर्यों का कर्तव्य' इस शीर्षक से हम ने जो टिप्पणी दी थी उसे पढ कर हमारे अनेक ग्राहको ने पत्र भेजे है और उन सब मे यही अनुरोध किया है कि पते भी हिन्दी मे ही लिखे जाने चाहियें और इसके कारण यदि पत्र देर मे प्राप्त होगा तो भी हमे आप से शिकायत न होगी। एटा आर्य समाज ने इस आशय का प्रस्ताव स्वीकृत करके भेजा है। हमारे उत्साही ग्राहक श्री बद्रीप्रसाद जी ने हैदराबाद दक्षिण से लिखा है कि 'आप के हिन्दी मे पता लिखने के कारण 'सार्वदेशिक' हैदराबाद न आकर मद्रास के मृत पत्र कार्यालय की सैर कर बहुत देरी से मुझे मिलता था। किन्तु उसकी रिपोर्ट मैंने स्थानिक और मद्रास पोस्ट आफिस में की जिसका परिणाम यह हुआ कि अब मुझे डेढ़ वर्ष से उचित समय पर सार्वदेशिक मिल रहा है। मेरी जोरदार माग यही है कि किसी भी रूप मे पते हिन्दी भाषा के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा में न लिखे जाएं। हम आप ने तो हिन्दी को सर्वोच्च स्थान भारत

में दिलवाने का सकल्प किया है तो फिर हम कैसे उस चिर अभिलषित उद्देश्य की प्राप्ति के प्रयत्न में ढील दे सकते हैं ?" इसी आशय के पत्र बंगाल,बिहार,पजाब,युक्त प्रान्त आदि के ग्राहको से प्राप्त हुए हैं जिन से अपने प्रेमी ग्राहको के आर्य भाषा प्रेम को देख कर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई है। महर्षि दयानन्द जी के पत्र व्यवहार से ज्ञात होता है कि उन्होने भी आर्यों को यह आदेश दिया था कि वे पते भी देवनागरी लिपि मे लिखा करे। हमारे अन्य ग्राहक भी इस विषयक अपने विचार से शीघ्र सूचित करे ताकि बहुत शीघ्र इस विषयक निश्चय करके हम अपने आदर्शानुसार कार्य कर सकें।

एक आर्य महिला का भारतीय स्वतन्त्रता की वेदि पर अमर बलिदानः—

अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की दौहित्री, सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्री श्रीमती सत्यवती जी का गत २१ अक्तूबर को क्षयरोग औषधालय देहली मे जो दुःखप्रद देहावसान लगभग ३८ वर्ष की आयु मे हुआ उसे निस्सन्देह भारतीय स्वतन्त्रता की वेदि पर एक अमर बलिदान कहा जा सकता है। बहिन सत्यवती जी के अन्दर स्वतन्त्रता प्राप्ति की जो प्रबल ज्वाला जल रही थी उस से प्रेरित होकर उन्होने पारिवारिक सुख को तिलाञ्जलि देकर ११ बार जेल की यातनाएं सहीं और क्षयरोग का शिकार हो कर भी कभी अनुचित सरकारी आज्ञाओ के आगे सिर न झुकाया। जैसे कि उनके अन्त्येष्टिसंस्कार के पश्चात् प्रार्थना कराते हुए मैंने कहा था वेद के 'यतेमहिस्वराज्ये' इत्यादि आदेशों का पालन करने मे उन्हो ने अपने जीवन की आहुति दे दी जिस के कारण उनका नाम भारतीय स्वतन्त्रता युद्ध के इतिहास में स्वर्णाक्षरो में लिखा जाएगा। "मेरे लिये रोना नहीं,अपने आसुओ को आजादी की आग जलाने के लिये सुरक्षित रक्खो।" ये देहावसान से कुछ समय पूर्व लिखे उनके शब्द उनकी स्वतन्त्रता की आतुरता को स्पष्ट प्रकट करते हैं। हम स्वर्गीया बहिन सत्यवती जी के पवित्रात्मा की सद्गति के लिये भगवान् से प्रार्थना करते हुए उन के शोक सन्तप्त परिवार से हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं। उनके इस असामयिक देहावसान से हमारे देश ने एक अमूल्य रत्न खो दिया है जिसकी पूर्ति अत्यन्त कठिन है। भगवान् कृपा करे कि सब भारतीय नर नारियों के अन्दर बहिन सत्यवती जी के समान उज्ज्वल देश भक्ति और स्वतन्त्रता की प्रचण्ड ज्वाला जलती रहे। हम समस्त आर्य जगत् की ओर से बहिन सत्यवती जी के अदम्य उत्साह और बलिदान भावना के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

धर्म देव विद्यावाचस्पति

दान सूची सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

मास सितम्बर सन् ४५

सत्यार्थ प्रकाश निधि

संयुक्त प्रान्त

५) श्री मन्त्री जी आ० स० सुरीर (मथुरा)
१) श्री ब्रह्म नारायणजी वगदोधी मधाना (कानपुर)

६)
१३४८८)॥ गत योग
१३४६४)॥ योग

सिन्ध प्रान्त

१४३६५) गत योग

बम्बई प्रान्त

१००१) श्री मन्त्री जी आ० स० नानापेठ (पूना)
१०१) श्री मन्त्रिणीजी स्त्री आ० स० नानापेठ (पूना)
५१) श्री मन्त्री जी आ० स० किरकी (पूना)
५१) श्री मन्त्री जी आ० स० कैम्प (पूना)

१२०४)
७४६५॥) गत योग
८६६६॥) योग

यह १२०४) श्री माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त को थैली में मिला।

बिहार प्रान्त

३०) श्री मन्त्री जी आ० प्रति० सभा बिहार

६०१८॥=) गत योग
६०४८॥=) योग

पंजाब व देहली प्रान्त

१३॥) श्री मन्त्री जी आ० स० मंडप विलपुर
७) श्री दीनानाथजी चड्डा जौराह, गुजरात
६६) ग्राम गढ़ी (रोहतक) द्वारा श्री चौ० अमीरसिंहजी नम्बरदार
३४) ग्राम खेड़ी (रोहतक) द्वारा श्री चौ० धर्म सिंहजी सूबेदार
२०) ग्राम खरमाण (रोहतक) द्वारा श्री चौ० केवल रामजी
१५) ग्राम बुपनिया (रोहतक) द्वारा श्री चौ० छोटू रामजी
५) ग्राम शाहपुर (रोहतक) द्वारा श्री चौ० मानसिंहजी
२००) ग्राम जोणधी (रोहतक) द्वारा श्री चौ० बलबीरसिंह जी
१३५) श्री मन्त्री जी हरियाना प्रान्तीय आर्य कान्फ्रैन्स रोहतक

४६८॥)
५००३॥=) गत योग
५५०२॥=) योग

बंगाल प्रान्त

३६११) गत योग

राजस्थान प्रान्त

३७४४॥=) गत योग

मध्यप्रदेश प्रान्त

१३५५) गत योग

हैदराबाद स्टेट

४२३) गत योग

मद्रास प्रान्त

४७८।) गत योग

विदेश

१७६९) गत योग

विविध

४।)
४१५३) गत योग
४१५७।) योग
१७४३।) इस मास का कुल योग
६१५५८।≈)॥ गत योग
६३३०१॥।≈)॥ सर्व० योग

आ० स० स्थापना दिवस (२)

२६) श्री मन्त्रीजी आ०स० पानीपत(करनाल)
५) „ „ „ „ „ भटपुरा असमौली (मुरादाबाद)
३) „ „ „ „ „ काजिमाबाद (अलीगढ़)

३४)
१६६६)२ गत योग
१७००)२ योग

दान

५००) श्री राजा नारायण लालजी पित्ती बम्बई (मद्रास प्रचारार्थ)
१५०) श्री केप्टन एन० बी० गेडरे सुपरिन्टेन्डिंग इन्जीनियर पिरोजेक्ट सरकिल सेन्ट्रल औफिस पूना (दान)
७॥≈) श्री मन्त्री जी आ० स० सनौर (वेद प्रचार)
१६।।) „ „ „ „ महम (रोहतक) (दक्षिण प्रचार)
६।≈) „ „ „ „ शिमला हिल्स (दान सत्या० बलि० दिवस)
७) „ „ „ „ वरंगल हैदराबाद स्टेट (दान सत्या० बलि० दिवस)
१३) „ „ „ „ जहानाबाद (गया) (दान सत्या० बलि० दिवस)
१०) „ „ „ „ पानीपत (करनाल) (दान सत्या० बलि० दिवस)
७।) श्री मन्त्री जी आ० स० अकोट (अकोला) दक्षिण प्रचार।
६॥≈) „ „ „ „ उज्जैन (सत्याग्रह बलिदान दिवस
२) „ „ „ „ भेलसा (ग्वालियर) दक्षिण प्रचार
१) „ „ „ „ बालनगीर (दक्षिण प्रचार)
२३) श्री पं० मदन मोहन जी विद्यासागर द्वारा (दक्षिण प्रचार)
११) श्री मन्त्रीजी आ० स० जालना (हैदराबाद स्टेट)
७।।) „ „ „ „ लहरापुर
।।) „ काशीप्रसाद जगदीशपुर

७७७।–)
१०२२।।) १० गत योग
१७९९।।।–) १०

सब दानदाताओं को सभा की ओर से धन्यवाद।

जिन समाजों का आर्य समाज स्थापना दिवस का भाग अभी तक अप्राप्त है उन्हें अ... भाग शीघ्र से शीघ्र सभा में भेज देना चाहिये और इस प्रकार सभा कार्यालय को स्मरण पत्रों के भेजने का अवसर नहीं देना चाहिए। जिन समाजों का भाग अप्राप्त है, कार्यालय उनकी सूची पृथक् बना रहा है। और उनमें से प्रत्येक

को प्रेरणा करेगा। यदि समाजें इस प्रेरणा का अवसर न देंगी तो कार्यालय डाक व्ययादि के अनावश्यक व्यय तथा इस कार्य्य में लगने वाले अनावश्यक समय से बच जायगा।

सुधाकर एम० ए०

मन्त्री सार्वदेशिक सभा

आर्यसमाज और असेम्बली निर्वाचन

केन्द्रीय असेम्बली और प्रान्तीय असेम्बलियों के लिये देश मे जो निर्वाचन होने वाले हैं उनके सम्बन्ध में अपना कर्तव्य निश्चित करने के लिये अनेक सज्जन इस सभा की नीति जानना चाहते हैं उनके तथा सभी आर्य समाजों और आर्यों की जानकारी के लिये घोषणा की जाती है कि आर्य समाज का सामूहिक रीति से इन निर्वाचनों से कोई सम्बन्ध नहीं है और उन्हे किसी पक्ष के सम्बन्ध में कोई सम्मति नहीं देनी चाहिये परन्तु व्यक्तिगत स्थिति मे प्रत्येक आर्य स्वतन्त्र है कि वह जिसके लिये भी चाहे सम्मति देवे उसके लिये किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है। उसे अपना वोट देते समय यह देखना चाहिये कि वह जिस उम्मीदवार को अपना वोट दे रहा है उससे आर्य संस्कृति और आर्य जाति के अधिकारों की रक्षा हो सकेगी या नहीं। आर्य समाजों को यह भी चेतावनी दी जाती है कि आर्य समाज का कोई विषय निर्वाचन प्रोपेगेंडा में वर्णित न किया जाय।

सुधाकर एम० ए०

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

सत्यार्थ प्रकाश विषयक साहित्य

In defence of Satyarth Prakash By Prof Sudhakar Ji M. A., Secretary Sabha Price =)

सत्यार्थप्रकाश और उसकी रक्षा (उपयुक्त पुस्तक का हिन्दी अनुवाद) -)

विषय नाम से ही स्पष्ट है। वर्तमान आन्दोलन के स्वरूप और महत्व को समझाने के लिए ये छोटी सी पुस्तकें अत्यन्त उपयोगी हैं।

(२) सत्यार्थप्रकाश की सार्वभौमता—इसमे सत्याथ प्रकाश की रचना का उद्देश्य महर्षि दयानन्द के अमर शब्दो मे बताकर विविध भाषाओ मे उसके अनुवादो की विस्तृत तालिका प्राप्त सूचनाओ के आधार पर दी गई है। मू॰ -)

(३) Maharshi Dayananda and Satyarth Prakash–Tributes paid by many prominent persons of the east and the west

Compiled by Pt. Dharma Dava Ji Vachaspati price— As. 6

हम और हमारे समालोचक—अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री पं॰ रामचन्द्र जी देहलवी द्वारा मिर्जा गुलाम अहमद साहब कादियानी की पुस्तक से संकलित—कुरान मे अन्य मतावलम्बियो के लिये प्रयुक्त अपशब्दो की सूची सहित (हिन्दी मे) मू॰ -) English Translation -)॥

नोट—'सत्यार्थ प्रकाश और उसकी रक्षा मे" तथा सत्यार्थप्रकाश की सार्वभौमता सौ सौ वा अधिक लेने पर ५) सैंकड़ा के हिसाब से दी जायगी।

मिलने का पता—कार्यालय सार्वदेशिक सभा, बलिदान भवन, देहली।

हमारी प्रकाशित धार्मिक सामाजिक युवकोपयोगी स्त्रियोपयोगी तथा बालोपयोगी पुस्तकों की नामावली।

धार्मिक

भक्ति दर्पण	१)
अमृतवर्षा (नारायण स्वामी जी)	१।)
छान्दोग्य उपनिषद ”	३)
आत्मदर्शन ”	२)
आर्य समाज क्या है ”	।।।)
प्राणायामविधि ”	–)।।
आनन्द संग्रह (भवदान दजी)	१।)
धर्म का आदि स्रोत (प० गंगा प्रसाद एम ए)	४)
मैं और मेरा भगवान् (प० गंगाप्रसाद उपाध्याय)	।)
उपनिषद् प्रकाश (दर्शनानन्दजी)	३)
स्वाध्याय समन (स्व० वेदानन्दजी)	२)
ऋषिज वन कथा	१)
सन्ध्यारहस्य (प० चमूपति एम ए)	।।=)
प्रार्थना समन	।।)
हवन यज्ञ प्रदीपिका	।।।)
देवयज्ञ (प० चमूपति एम ए)	।=)
वैदिक तर्क संग्रह	।।।)
लिंग पुराण की आलोचना	।≡)
श्रीमद् भगवद् गीता (प० राजा रामजी)	१)
योग दर्शन	१।)
अथर्ववेद भाष्य	१६)
आहारविज्ञान	१)
वेदसुधा	।।)
ओंकार उपासना	)
संस्कृत स्वयं शिक्षक (तीनों भाग)	४।।)

युवकोपयोगी

हिन्दू पद पादशाही (वीर सावरकर)	४)
हिन्दुत्व ”	१।।)
क्रान्ति कारी विद्रोह ”	१।।)
अन्तर्ज्वाला ”	२)
वीर मराठे	२।।)
अखण्ड हिन्दोस्थान	१।।)
शिवाजी	१।।।)
वीर वैरागी (भाई परमानन्दजी)	१।।।)
मेरा सन्देश ”	।)
चिनगारियां	२)
सिंह गढ विजय	१।)
वीर पेशवा	१।)
सिंहल विजय	१।)
राणा प्रताप	१।)
स्वास्थ्य का मूलमन्त्र	२)

स्त्रियोपयोगी

गृहस्थ जीवन	२)
स्त्री शिक्षा	।।)
शिशुपालन	१)
आदर्शपत्नि	।।=)
स्त्रियों की स्थिति	१)
सीता बनवास	१)
नारी भूषण	१।।)
हारमोनियम पुष्पांजलि	२)
पुष्पांजलि (सादा)	१)
देश गीताञ्जलि	।।)

बालोपयोगी

बालसत्यार्थ प्रकाश	।।।)
हमारे स्वामी	।।)
वैदिक धर्म आर्य समाज प्रश्नोत्तरी	।।)
बाल शिवाजी	।=)
वीर अभिमन्यु	।=)
महाराणा प्रताप	।=)

इसके अतिरिक्त उर्दू में भी सब प्रकार की पुस्तकें हमारे यहां से मिल सकती हैं। हिन्दी में भी उच्च कोटि के लेखकों के उपन्यास तथा कहानी संग्रह हमसे मंगाएं।

पता—म० राजपाल ऐण्ड सन्स, सञ्चालक, आर्य पुस्तकालय

अनारकली, लाहौर

श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा

ओ३म्

विषय सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष २१ { दिसम्बर १६४५ ई०] मार्गशीर्ष २००२ दयानन्दाब्द १२२ { अङ्क १०

* वैदिक प्रार्थना *

ओ३म् यद् वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम् वसु स्पार्ह तदाभर ॥ सामवेद म० २०७

शब्दार्थः—(इन्द्र) हे परमेश्वर (यत) जो (वसु) धन (वीडौ) दृढ, न दबने वाले पुरुष मे रहता है (यत् स्थिरे) जो अपने निश्चय पर स्थिर रहने वाले मे तथा (यत) जो (पर्शाने पराभृतम्) विचारशील पुरुष मे धारण किया हुआ होता है (तत) उस (स्पार्ह वसु) चाहने योग्य उत्तम निर्भयता, चित्त शुद्धि, सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति आदि रूप दिव्य धनको (नःआभर) आप हमारे में धारण कराइये।

विनय—हे प्रभो! आप समस्त बाह्य और आन्तरिक भौतिक और आत्मिक ऐश्वर्य के स्वामी है। हम आप से जिस उत्तम ऐश्वर्य की प्रार्थना करते है वह दृढ बलवान, अपने निश्चय पर स्थिर तथा विचार शील पुरुषो मे रहने वाला अदम्य उत्साह वीरता तथा विवेक शीलता रूप स्पृहणीय ऐश्वर्य है। महर्षि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसे महात्माओ मे पाये जाने वाले इस श्रेष्ठ ऐश्वर्य को आप हमे भी प्राप्त कराइये यही हमारी कामना है।

वेदोपदेश

ब्रह्मचर्य

(लेखक—श्रीस्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज)

आचार्यो ब्रह्मचारी ब्रह्मचारी प्रजापतिः ।
प्रजापतिर्विराजति विराडिन्द्रोऽभवद्वशी॥१६॥

अथर्व, काण्ड ११, अ० ३, सूक्त ५, १६ ॥

मन्त्रसार

आचार्य पद के योग्य ब्रह्मचारी होता है। ऋषि दयानन्द इसी आशय को लेकर संस्कार विधि में लिखते हैं। "आचार्य उसको कहते हैं कि जो साङ्गोपाग (अङ्गो, शिक्षा कल्पादि-और उपाङ्गों—न्याय वैशेषिक, साङ्ख्य, योग, मीमासा, वेदान्तसहित) वेदो के शब्द अर्थ सम्बन्ध और क्रिया का जानने हारा, छल कपट रहित, अति प्रेम से सबको विद्या का दाता, परोपकारी, तन, मन और धन से सब को सुख बढाने मे तत्पर,जो पक्षपात किसी का न करे और सत्योपदेष्टा, सबका हितैषी धर्मात्मा जितेन्द्रिय होवे।' आचार्य के पास शिष्य किस उद्देश्य से जाता है? इसका वर्णन यजुर्वेद २६ वे अध्याय के मन्त्र ४६ मे किया है—

अग्नीते परि वृङ्ग्धि नोऽश्मा भवतु नस्तनूः ।
सोमो अधिब्रवीतु नोऽदितिः शर्म यच्छतु ॥

"हे आचार्य! अपने तेज से हमारे (शारीरिक तथा मानसिक) रोगो को सब ओर से दूर कीजिए, हमारा शरीर चट्टान की न्याई दृढ हो, अमृत और मृत्यु का हमे उपदेश कीजिए और हमारे लिए सुख का विधान कीजिए (अर्थात् मौत से बचा कर अमृत पान कराइए)।" जिस मे ऊपर कहे गुण निवास करते हो, जो सहज में ही उपरोक्त गुणो को धारण करने वाला हो वही पुरुष आचार्य होने के योग्य है। जिस का अपना शरीर बज्र के तुल्य नहीं वह दूसरो का शरीर दृढ कैसे कर सकेगा? जिसको स्वय जिन्दगी और मौत का ज्ञान नहीं वह दूसरो को अमृत कैसे पिला सकेगा?

इसीलिए यहा अन्तिम बल इस बात पर दिया है कि अब्रह्मचारी पुरुष वा स्त्री कभी भी आचार्य के पवित्र आसन पर न बैठाए जाय। मक्कारी से जनता को धोखा देकर यदि कोई अब्रह्मचारी आचार्य बन भी जाय तब भी उसके प्रयत्न का परिणाम उसके वास्तविक रूप को प्रकाशित कर देता है। वृक्ष अपने फल से पहिचाना जाता है। जिस गुरु के चेले तप के जीवन में न ठहर सकें और स्वार्थ तथा भोग से न बच सकें, उस को ब्रह्मचारी न समझना चाहिए।

जहा आचार्य पूर्ण ब्रह्मचारी हो वहा प्रजा का रक्षक राजा भी अवश्य ब्रह्मचारी ही होगा। एक सत्तात्मक राज्य वा प्रजातन्त्र राज्य दोनो में शासक ब्रह्मचारी ही होने चाहिए। राजा वा प्रधान पुरुष से लेकर चपरासी और चौकीदार तक सब प्रजा की रक्षा के लिए नियुक्त होते हैं। यदि प्रजा के "जान और माल की हिफ़ाजत" वे नहीं करते तो उन्हें प्रजापति नहीं कह सकते। परन्तु क्यो ब्रह्मचारी ही प्रजापति बनने के योग्य है? इस लिए कि उसे राष्ट्र से ऊचा उठना पड़ता है। रक्षक

वही हो सकता है जो अपने से रक्षित प्रजा से ऊंचा उठा हुआ है। निर्बलों की सहायता वही कर सकता है जो स्वयम् सबल हो, अन्यथा अन्धे को अन्धा गढे मे ही गिरा देगा।

जब शासक प्रजा से ऊपर उठा हुआ हो तभी वह सारे ऐश्वर्य का मालिक होता है। जो काम नाओं का दास है, सम्पत्ति का मालिक वह नहीं बन सकता। जो सम्पत्ति के पीछे स्वार्थ के मद से अन्धा होकर दौड़ता है उस से सम्पत्ति कोसों दूर भागती है, परन्तु जो सम्पत्ति को लात मार कर ऊपर उठता है उसके पीछे सम्पत्ति भागी फिरती है। मुनिवर पतञ्जलि के शब्दो मे "अस्तेय-प्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्" जो दूसरों के पदार्थ पदार्थ पर दृष्टि नहीं रखता उसके सामने सारी दौलत हाथ बाचे खड़ी रहती है। गुसाईं तुलसी-दास ने ठीक कहा—

"जिमि सरिता सागर पंह जाहीं,
जद्यपि ताहि कामना नहीं।
तिमि सुख सम्पत्ति बिन ही बुलाए,
धर्म शील पहि जाहिं सुभाए।"

अपने अन्दर के पशु भाव पर विजय प्राप्त करके ही स्वर्ग प्राप्ति होती है। मर कर स्वर्ग प्राप्ति की लोकोक्ति के यही अर्थ हैं।

शासक वही हो सकता है जो तप और सत्य के प्रभाव से साधारण प्रजा से ऊपर उठ जाये। तभी उस के वश मे सारी प्रजा हो सकती है। इसी वेदाज्ञा का प्रभाव था कि भारतवर्ष में राजा के बेटे को राजगद्दी देने से पहले आचार्यकुल में रक्खा जाता था। एक दृष्टान्त से इस वेद मन्त्र का भाव उत्तम रीति से स्पष्ट है। एक युवराज का गुरुकुल निवास का समय समाप्ति पर आया तो उसका पिता (राजा) उसे घर लाने के लिये आचार्य कुल मे, सजे हुए घोड़े सहित गया। दीक्षान्त की सारी विधि पूरी होने पर आचार्य ने राजा से कहा कि अन्तिम एक शिक्षा बाकी है, उसके पूरा होते ही राजकुमार को उनके हवाले कर दिया जायेगा। यह कह कर आचार्य कोड़ा हाथ मे ले कर घोड़े पर चढ गया और राजकुमार को को साथ भागने की आज्ञा दी। आज्ञा पालक शिष्य साथ चल दिया। गुरु ने घोड़े को बहुत तेज कर दिया और जब राजकुमार पीछे रहने लगा तो उस के कोड़े जमाता गया। राजा की आखे क्रोध से लाल हो गयीं। चरणछूने की आज्ञा दी और राजा को सम्बोधन करके कहा— "राजन्! शायद कल ही इस मेरे शिष्य को राजगद्दी मिल जाय और वह लाखों के जान और माल का रक्षक बने। तब अन्याय और अत्याचार से बचने के लिये इसे आज की शिक्षा काम आयेगी, क्यो कि इसने समझ लिया है कि परा-धीनता और दासता मे कितना कष्ट है।" राजा सन्तुष्ट हो कर राजकुमार को घर ले गया। संसार इस समय नरक कुण्ड इसी लिए बना हुआ है कि प्रजा के रक्षक ब्रह्मचारी नहीं हैं।

शब्दार्थ—(आचार्यो ब्रह्मचारी) "ब्रह्मचारी आचार्य होता है,(ब्रह्मचारी प्रजापतिः)ब्रह्मचारी ही प्रजापालक राजा होता है। (प्रजापतिर्विराजति) राजा प्रजापति हो कर विविध प्रकार से राज करता है, राष्ट्र से ऊपर उठता है (विराड् इन्द्रो भवद् वशी) ऊंचा उठ कर प्रजा को वश में कर मालिक होता है।

अध्यात्म सुधा

(लेखक अमर धर्मवीर श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज)

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदुसर्वस्यास्य बाह्यतः ॥

उपदेश

आपके पाव तले एक भारी कोष गडा है पर यदि आपको उसका ज्ञान नही तो आपके निकट होते हुवे भी यह आपसे बहुत दूर है। आप चाहे सारा ससार खोज डाले जब तक कि उस विशेष स्थान को नहीं खोदगे वह कोष आपको प्राप्त नहीं हो सकेगा। आपकी गिरह मे कुछ धन पडा है परन्तु आपको उसकी याद भूल गई है। इधर उधर बहुतेरा खोजते फिरते है पर जब तक आप अपनी गिरह मे हाथ नहीं डालते आपको वह धन हाथ नहीं लगता। इसी प्रकार परमात्मा यद्यपि सारे ब्रह्माण्ड के अन्दर बाहर एक समय व्यापक हैं, सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र कोई भी ऐसा स्थान नहीं जहा कि हर समय विद्यमान न हो। यहा तक कि आकाश भी उनके अन्तर्गत है इसलिए वह निकट से निकट है परन्तु यदि आपको उनके स्वरूप का ज्ञान नहीं तो आप चाहे सारा ब्रह्माण्ड खोज डालें आपको उनका चिन्ह न मिलेगा। इसी अवस्था मे वह आपसे दूर से दूर होंगे। किन्तु जब आपको उनके स्वरूप का ज्ञान होगया तो आपको उनके दर्शन अन्दर ही हो जावेगे। कारण कि वह किसी स्थान विशेष मे स्थित नहीं है। अपितु घट घट में व्यापक हैं। यदि आपके हृदय नेत्रो का अन्धकार दूर होगया और ज्ञान चक्षु खुल गये हैं तो आप उन्हें हर समय अपने आत्मा के अन्दर ज्ञान नेत्रों से देख सकते हैं। जैसा कि एक कवि ने कहा है —

दिल के शीशे मे है तस्वीरे यार,
जब जरा गरदन झुकाई देखली।

यद्यपि यह पद्य पूर्णरूप से असली भाव को प्रकट नहीं करता परन्तु तात्पर्य यह है कि वह सर्वमित्र हम से दूर नहीं है किन्तु हमारे हृदय के अन्दर विद्यमान है। जिसमे हम उनके ज्ञान नेत्रो द्वारा वैसे ही दर्शन पा सकते हैं—जैसे कि एक दर्पण मे किसी मित्र का चित्र देख सकते हैं। इसी भाव को दर्शाने के लिये ऊपर कही श्रुति मे बताया गया है कि वह परमात्मा मूर्खों से जिनके आत्मिक चक्षु अन्धे है दूर से दूर है। वह युगों पर्यन्त भी यदि उसे ढूढते फिरें और सारा ब्रह्माण्ड खोज डाले तो भी वह उनको प्राप्त नहीं हो सकता, परन्तु जिनके ज्ञान नेत्र खुले हुवे हैं उनके लिये वह निकट से निकट है। वह कहीं भी जावें परमपिता को अपने अन्दर विद्यमान पाते है। इसीलिये एक विद्वान ने कहा है कि परमात्मा एक वृत्त है जिसका केन्द्र सब जगह है परन्तु परिधि कहीं भी नहीं। अहा ! ज्ञान और अज्ञान मे कैसा भारी भेद है। एक लक्ष्य तक पहुचा देता है और दूसरा सत्यमार्ग से भटकाता है। एक परमात्मा के साक्षात् दर्शन करा देता है दूसरा नास्तिक बना देता है। इसी लिये कहा गया है कि 'ऋते ज्ञानान्न मुक्ति' कि ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती है।

अतएव भक्त जनो ! यदि सचमुच परमात्मा के दर्शन करना चाहते हो, यदि उस सुन्दर स्वरूप की अद्भुत छवि के दर्शन पाने की अभिलाषा है

तो वेदोक्त कर्मों द्वारा अपने अन्त करण के अन्धकार को दूर करके ज्ञान अवस्था को प्राप्त होवो जिससे तुम्हारे आत्मिक चक्षु खुलकर उस सर्वान्तरात्मा के जो तुम्हारे समीप से समीप है दर्शन पा सको। कल्याण का मार्ग एक मात्र यही है। नही तो युगो पर्यन्त भी तुम्हारा उद्धार नही होगा। जन्म जन्मान्तर के चक्र मे भूलते भटकते और ठोकरे खाते फिरोगे। परमदेव ! हमारे हृदय अन्धकार से आच्छादित हैं, अविद्या ने हमारे आत्मिक चक्षु अन्धे कर रक्खे हैं। विषय विकारों ने हमारे अन्त करण की उज्वलता को हर लिया है। हम हर प्रकार से अत्यन्त मलिन और बलहीन है। तुम हमारे हृदयो को अपनी ज्योति से प्रकाशित करो जिससे हमारे ज्ञान नेत्र खुल जावें जिसस हम आपको जो कि सदा हमारे अग सग है जान सके।

अपूर्व नैतिक नेता

(लेखक-श्री पं० गङ्गाप्रसादजी उपाध्याय एम ए उप प्रधान सार्वदेशिक आ० प्र० सभा)

आर्य्य समाज के निर्माताओ मे श्री पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का पद एक उच्च स्थान रखता है। उन्होने जीवन के आरम्भ मे ही आर्य समाज का काम आरभ किया और लगभग चालीस वर्ष तक अनन्यमनस्क होकर केवल आर्य समाज के ही निर्माण मे लगे रहे। श्री स्वामी जी का हाथ आर्य्य समाज के प्रत्येक विभाग मे था। यद्यपि उनका सबसे बडा कार्य और स्मारक गुरुकुल कागडी है जिसकी ख्याति के समक्ष उनकी अन्य कृतिया मन्द सी पड गई हैं। तथापि उनके कार्यों की तुलना उन्हीं के कार्यों से की जा सकती हैं। यों तो उनका छोटे से छोटा कार्य्य भी दूसरो के बडे बडे कार्य्यों से ऊचा उठ जाता है। यह कहना सरल है कि उन्होने क्या किया। यह कहना कठिन है कि उन्होने क्या नहीं किया। सामाजिक सुधार, शिक्षा सम्बन्धी सुधार, नैतिक सुधार तथा साहित्यिक सुधार सभी ओर उनका ध्यान जाता था। मैंने जब से होश सभाला और आर्य समाज मे प्रवेश किया उसी समय से श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यों का आलोचनात्मक अवलोकन करता रहा। वे मुझे नहीं जानते थे। मैं दूर से उनके दर्शन कर लेता था। परन्तु मैं एक ही बात कह सकता हूँ कि शायद ही किसी अन्य आर्य्य नेता के कार्य्य का इतना विस्तृत क्षेत्र रहा हो। आजकल के लोग सद्धर्म प्रचारक के नाम को भूल गये हैं, पचास वर्ष पूर्व सद्धर्म प्रचारक की बड़ी धूम थी। यदि श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी और कोई अन्य कार्य्य न करते तो भी सद्धर्म प्रचारक द्वारा हिन्दी की सेवा उनकी स्मृति को अमर रखने के लिये पर्याप्त थी। परन्तु जब उन्होने गुरुकुल प्रणाली को हाथ मे लिया तो समस्त संसार के शिक्षको को पीछे फेंक दिया। दूर देशों से आये हुए शिक्षा शास्त्र विशारद मुक्त कण्ठ से उनकी सराहना करते थे। शुद्धि आन्दोलन के कार्य को प्रगतिको उनके हाथो विशेष प्रोत्साहन प्राप्त किया। इससे पूर्व शुद्धि केवल व्यक्तिगत बात थी। राजनीतिक क्षेत्र मे स्वामी जी को आरभ से ही रुचि थी और वह काग्रेस मे बराबर भाग लेते रहे। रौलट ऐक्ट के पश्चात् पजाब मे जो विचित्र परिस्थिति उत्पन्न हो गई उसमे काग्रेस के सिर को ऊचा करना स्वामी जी का ही कार्य्य था। परन्तु स्वामी जी को महर्षि दयानन्द के मिशन से सबसे अधिक प्रेम था। वह अन्य समस्त कार्यों को इसी की शाखा समझते थे। उन्होने कभी जोश या उद्वेग मे आकर आर्य्य समाज को अपने तात्कालिक जोश के पीछे घसीटा नहीं। मैं इस को स्वामी जी की विशेषता समझता हूँ। यह बात अन्य नेताओ मे नहीं पाई जाती, वह क्षणिक उद्वेग मे आकर आर्य्य समाज को अपनी गाड़ी के पीछे खींचने लग जाते हैं। स्वामी जी ने ऐसा कभी नहीं किया। वे जोश को उद्देश्य का साधक समझते थे साध्य नहीं। इस विषय में सभी नेता स्वामी जी से शिक्षा ले सकते हैं। स्वामीजी का व्यक्तित्व विद्युन्मय था। कठिनाई के समय उनका साहस कई गुना हो जाता था। साधारण समय स्वामी जी साधारण मनुष्य थे परन्तु संकट और विरोध के समय वह विद्युत् पुंज प्रतीत होने लगते थे। स्वामी जी की अनुपस्थिति में हम कल्पना कर

कर सकते हैं कि आर्य्य समाज के लिए स्वामी जी ने क्या किया ? यों तो कार्य्य कर्त्ताओं से कोई सस्था खाली नहीं रहती। परन्तु स्वामी जी का स्थान सर्वथा खाली पड़ा है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान

आर्य सभ्यता और आर्य समाज की पूर्ण विजय

(लेखक श्री लभ्भूराम जी आनन्दाश्रम, लुधियाना)

१६ वर्ष हुए जब पूज्य स्वामी श्रद्धानन्दजी का बलिदान हुआ। २४ दिसम्बर को प्रात तार द्वारा यह शोक जनक समाचार मिला। ऐसा बज्र गिरा कि मानो दिलो दिमाग पर पहाड टूट पडा हो। व्याकुल चित्त रात की गाडी मे अगले दिन प्रात देहली पहुच कर अपने पूज्य स्वामी श्रद्धानन्दजी के चरणो मे गिरकर अन्तिम प्रणाम किया। किस शान से उनकी अर्थी का जलूस निकला, वह एक ऐतिहासिक घटना किसी स छिपी नहीं है। स्वामी . श्रद्धानन्दजी को मतान्धता वश निशाना गोली बना शहीद कर दिया। जिससे आर्य जाति के बच्चे २ का सीना छलनी हो रहा था। स्वामी श्रद्धानन्दजी उन बहुत से नेताओ मे से न थे जो लहर के साथ बह जाते हैं। परन्तु उन विशेष नेताओ मे से थे जो स्वय लहर पैदा करते हैं ? और उस लहर मे लोगो को बहा कर ले जाते हैं।

महात्मा गान्धी जी ने आपके बलिदान पर क्या खूब कहा था

माल्लूम नहीं स्वामी श्रद्धानन्दजी का अन्तिम सन्देश क्या था। परन्तु निस्सन्देह परमात्मा से यही प्रार्थना की होगी कि परमात्मा क़ातिल को क्षमा करदें।"

महात्मा गान्धी जी का ऐसा कहना उचित था वह जानते थे कि स्वामी श्रद्धानन्द जी उस महर्षि दयानन्दके शिष्य थे जिन्होने अपने जहर देनेवाले भृत्य को राह खर्च देकर भाग जाने को कहा था। यद्यपि अमर शहीद स्वामीजी अब हमारे बीच नहीं परन्तु यथार्थ मे वह जीवित है। एक बात जो स्वामी श्रद्धानन्दजी को वर्तमान युग के सुधारको से विशेषता देती थी वह यह है कि जिन बातो का वह प्रचार करते थे उनको अपने जीवन मे भी दर्शाया।

स्वामीजी की मृत्यु आर्य सभ्यता की विजय है।

स्वामिन्। आप हमम नहीं आर आप अमर हो गये। मुझे तो अब भी गुरुकुल भूमि मे हर जगह और वहा क प्रत्येक पत्त २ व ईट २ पर पूज्य धर्म पिता स्वामी श्रद्धानन्दजी की सुन्दर छबि दिखलाई दे रही है आपकी पुण्य स्मृति हम इस प्रकार मान सकते है कि उनके आरभ किये पवित्र कार्य 'गुरुकुल' आदि की सफलता के लिये कटि बद्ध हो जावे। समय की लहर को कोई बन्ध नहीं लगा सकता। शान्ति क साथ शुद्धि का आन्दोलन स्थिर रहेगा इस कोई हग नही सकता।

क्या हम अपना कर्तव्य पालन करेंगे। इसी में हमारा कल्याण है।

श्री श्रद्धानन्द वचनामृत

(१) अत्यन्त मननीय उपदेश

जीवन यात्री के पथिक! अपने पथ प्रदर्शक को भूल कर तू ने अपनी कैसी दुर्दशा कर ली। अभी सभलने का समय है। नहीं नहीं सभलने का तो अदब समय है। हम अपनी कुटिलता से कितनी वार उस प्रेम, उस पवित्रता, उस प्रकाश के स्रोत से अलग होने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु क्या इतनी ही वार हमारे कुटिलता से खडे किये हुए बन्धन को छिन्न भिन्न कर के वह अमृत का स्रोत हमे आनन्दित नहीं करता? पथिक! निराश न हो। शुद्ध स्वरूप प्रकाशमय पिता, ससार की एक एक घटना मे शुद्धि का सचार कर रहे हैं। चाहे हम उन्हें छोड क्यों न दें, परन्तु वे हमे कभी नही त्यागते। तब भय को त्याग कर उसी की प्रेम भरी गोद म क्यों न बैठें?

('मुक्ति सोपान" पृ॰ ३-४)

(२) आदर्शशिक्षकः—

शिक्षक को परमात्मा से प्रकाश लेना चाहिये। तब उस प्रकाश से प्रदीप्त होकर वह अपने शिष्यों को प्रकाश दे सकता है। उस समय उसे वल लगाने की आवश्यकता न होगी। उसका जीवन, उस का रोम रोम स्वय बोलेगा और बिना परिश्रम के ही शिष्यों के अन्दर विद्यारूपी सूर्य के प्रकाश का सञ्चार करेगा। धन्य है वह जाति, और धन्य है वह देश, जहा पर इस प्रकार की, गुरु शिष्य के सम्बन्ध द्वारा शिक्षा होती है।"

(मुक्ति सोपान पृ० १५)

(३) तप की आवश्यकता

"कौन सा स्थान है जहां हम अपने प्यारे प्राणपति की ज्योति से जुदा होते हैं? सब स्थानों और सब अवस्थाओं में वही हमारे अङ्ग सङ्ग है। वह हमारा निवास स्थान, अन्दर बाहर सब जगह परिपूर्ण हो रहा है। वह 'आदित्यवर्ण' ज्वलन्त प्रकाश है। जहा और जब कभी हम ज्योति का साक्षात्कार करते है उसी समय हमारे दुर्गुण जल कर भस्म हो जाते है और आनन्द ही आनन्द का अनुभव होने लगता है। तपके पश्चात् ही ठीक विश्राम मिलता है। तपाये जाने पर ही स्वर्ण, मल रहित होकर चमकता है। आत्मा को भी स्वच्छ करने के लिये तप रूपी अग्नि मे प्रवेश कराने की आवश्यकता है।

(मुक्ति सोपान पृ० १७)

(४) ज्योतिः स्तम्भ की खोजः—

पाठक वृन्द! शरीर मन और आत्मा की सारी शक्तियों को कुछ काल के लिये ज्योति स्तम्भ की की ढूढने मे लगा दो। विद्युत् की तरह उसका चमत्कार कई वार तुम्हारे आत्मा को प्रकाशित कर चुका है। वह शुभ घडी फिर भी आ सकती है जब कि वह प्रकाश फिर तुम्हारे अन्दर चमक उठे। अब की वार उस प्रकाश की रेखा के पीछे अपनी दृष्टि को दौड़ा दो। उस असीम मैदान मे दृष्टि को एक वार उस के पीछे लगा देने से वह लौट कर नहीं आवेगी और तब आश्चर्य से देखोगे कि अज्ञात दैवीय शक्ति तुम्हारी सहायक हो कर उस स्थिर प्रकाश को तुम्हारी दृष्टि से ओझल न होने देगी।"

(मुक्ति सोपान पृ० २३)

(५) जीवन की पवित्रताः—

परमात्मा का आदेश है कि जो पवित्रता को देख नहीं सकते, जो पवित्र जीवन की श्रेष्ठता को समझ नहीं सकते, उनके लिये ससार में जीवन नहीं है। इस प्रकार के पुरुषों की आखें खोलने का काम ईश्वर के प्यारे, पवित्रात्मा पुरुष ही कर सकते हैं।

(मुक्ति सोपान पृ० २६)

(६) गृहस्थ में प्रवेश का अधिकारः—

'जिन के अन्दर धारणावती तीक्ष्ण बुद्धि नहीं, जिन्हों ने उस तीक्ष्ण धारणावती बुद्धि को वैदिक ज्ञान के अजन से माज कर स्वच्छ नहीं किया, और फिर जिन्होंने अभ्यास द्वारा उस बुद्धि की प्रेरणा और सहायता से कर्म करना नहीं सीखा उनको गृहाश्रम में प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं है।

(मुक्ति सोपान पृ० ४३)

(७) आदर्श नेताः—

'नेता कौन हो सकता है? वेद उत्तर देता है कि जिस मे नीचे लिखे गुण न हो उसे नेता बनने का साहस नहीं करना चाहिये।

प्रथम, नेता में सब सौम्य गुणों का निवास होना चाहिये, जिसका स्वभाव सरल नहीं जो विपत्तियोंको प्रसन्नता पूर्वक सहन नहीं कर सकता, जिसे कष्ट उस के उपासन से डिगा सकता है वह नेता होने के योग्य नहीं। लोक समह का कार्य वही कर सकता है जो कर्मवीर हो। नेता का धर्म यही नहीं कि वह कर्मवीर हो किन्तु उसका यह भी कर्तव्य है कि कर्महीन पुरुषों को कर्मशील बनावे। तब उसे सब कर्मवीरों से भी आगे चलने वाला होना चाहिये अर्थात् कर्मवीरों में भी उत्तम कर्म वीर होना चाहिये।

नेता वही सच्चा है जो परोपकार का काम कर के रुक न जाए। लोकैषणा से मुक्त हो कर ही नेता जनता को अपने पीछे चला सकता है। कोई स्तुति करे, कोई निन्दा करे, उसे सेवा करते चले जाना है। उसे ठहरना नही है। वह जनता पर सुखों की वर्षा करता चला जाए यदि उसके अन्दर शक्ति है। और सुखों की वर्षा करने की भी शक्ति न हो तो नेता बन कर आगे कभी नहीं बढ़ना चाहिये। (मुक्ति सोपान पृ० ४६-५७)

(८) ज्ञान और आचरणः—

केवल ज्ञान से उद्देश्य की प्राप्ति नहीं होती, बल्कि जब उस के साथ साधन और कर्तव्य सम्मिलित हो जाए तब मनुष्य जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करता है। विद्या, बिना आचरण के बजाय सुख के, दुःखका साधन बन जाती है। इस लिये अगर शक्तिमान, प्रकाश स्वरूप, परम रक्षक परमात्मा तक पहुँचना है तो शक्ति, प्रकाश और रक्षा धर्म को अपने अन्दर धारण करो। (स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के धर्मोपदेश १ म भाग— श्री ला० लभ्भूराम जी द्वारा सगृहीत पृ० ६)

(९) प्रिय वाणी का महत्त्वः—

'अपनी वाणी को प्रिय बनाओ। प्रेम भाव उस के अन्दर कूट कूट कर भर दो। फिर मनुष्यों के दिल तुम्हारे कथन की तरफ स्वयं खिचे चले आएगे। जिस कथन के अन्दर यह शक्ति है कि तुम से समाज को दूर फैंक दे उसी कथन के अन्दर यह शक्ति भी है कि वह हृदयों को खैंच कर सौंप दे।

(स्वामी श्रद्धानन्द जी के धर्मोपदेश १ म भाग पृ० १२)

(१०) स्वाध्याय की उपयोगिता और महत्त्व

नित्य वेदों का अर्थ सहित पाठ करना ही स्वाध्याय कहलाता है। आज वेदार्थ का समझना तो दूर रहा आर्यों मे से दस प्रतिशत भी वेदों का पाठ तक नहीं कर सकते। ऐसी अवस्था में उनको चाहिये कि ऋषि प्रणीत धर्मग्रन्थों का पाठ नियम से करें। आर्य समाज के सदस्यों के लिये ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका बडा रास्ता दिखाने का काम दे सकते हैं। जो मनुष्य इससे आगे बढ़ना चाहते हैं वे वेद भाष्यका विचार आरम्भ कर सकते हैं। स्वाध्याय मनुष्य को गिरते गिरते बचा सकता है। इस लिये वाणी को कठोरता रहित करने, उसे प्रिय हितकारी बनाने और सत्य के सीधे सरल मार्ग से न डगमगाने देने के लिये आवश्यक है कि स्वाध्याय का कभी त्याग न किया जाए। हर देश, प्रत्येक सम्प्रदाय और प्रत्येक समय मे महापुरुषों ने स्वाध्याय पर बड़ा भारी यत्न दिया है।

(स्वामी श्रद्धानन्दजी के धर्मोपदेश प्रथम भाग पृ० १४)

(११) आचार शुद्धिः—

आर्य पुरुषो! आचार शुद्धि मे मन से लग जाओ तब तुम आर्यपद ग्रहण करने की ओर चल सकोगे और न केवल अपना ही यह लोक तथा परलोक सुधार सकोगे बल्कि अपने पड़ोसियों को भी बिना अपना मुख खोले वैदिक धर्म की शरण मे ला सकोगे।

('आर्यों के नित्य कर्म' पृ० ६६-६७)

वीर वर श्रद्धानन्द

(लेखक —श्री प० भद्रसेन जी विद्यालङ्कार शास्त्री एम० ए० आर्य समाज लश्कर)

किसी कवि ने कहा है महत्सु धैर्यम्। अर्थात् जिस प्रकार शुष्केन्धन मे अग्नि विशेष रूप से प्रदीप्त होती है उसी प्रकार धैर्य गुण का विकास महान् पुरुषों मे वस्तुस्वभाव के ही कारण विशेष रूप से पाया जाता है।

इसी महान् गुण के कारण आचार्य मु शीराम जीको जनता ने महात्मा मु शीराम नाम से पुकारना आरम्भ किया। नीचे दिए उनके जीवन सम्बन्धी कुछ मेरे सस्मरणों से पाठकों को मालूम होगा कि इस विभूति के साथ महात्मा शब्द का प्रयोग कितना समुचित था।

* * *

यदि मैं ग़लती नहीं करता १९१४ या १५ की घटना है। वर्षा ऋतु के दिन थे। मूसलाधार पानी पड़ रहा था। दिन भर होगया। रात तक भी वही सिलसिला जारी रहा। लग भग ६ बजे का समय था। विद्यालय के आश्रम मे बिजली की तरह फैलता हुआ यह समाचार सुनाई पड़ा कि गङ्गा का पानी चढ़ रहा है। उत्तर पश्चिम मे टिन शेड को पक्ति से टकरा रहा है और पश्चिम में आचार्य जी के बँगले तक तथा पूर्व मे गोशाला तक पहुँचने वाला है। ४०० पुत्रों के पिता कुल पति मुन्शीराम जी को उस समय किस घोर चिन्ता ने घेर रक्खा होगा यह या तो उस कुलपति का हृदय या उसका एक मात्र आधार परमात्मा ही जानता होगा। कोई दर्शक उस भव्य चेहरे से तो उस चिन्ता का अनुमान भी नहीं लगा सकता था लगा भी कैसे सकता। उस पर तो भीतर की महान् आत्माकी उ ोतिका प्रतिबिम्ब पड़ रहा था।

सपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता

रात्रि के एक या दो बजे के लग भग फिर सुनाई पडा कि आचार्य जी ने महाविद्यालय के विद्यार्थियों को साथ लेकर गङ्गा के बढते हुए जल वेग को रुकवा दिया है। गुरुकुल भूमिके डूबने का खतरा टल गया दीखता है। प्रात काल होने पर हम लोगों ने बडी प्रसन्नता के साथ सुना कि गगा की बाढ उतार पर है।

❀ ❀ ❀

दूसरी घटना १९१७ या १८ की है। मै एक दूसरे विद्यार्थी के साथ गुरुकुल के समीपस्थ काङ्गडी ग्राम से गुरुकुल विद्यार्थियों द्वारा वहा पर लगी आग के शान्त कर देने के बाद लौट रहा था। कुछ दूर आजाने पर आचार्य जी भी पीछे आते दिखाई दिए। हम दोनों ने रुक कर चरण स्पर्श पूर्वक अभिवादन किया और उन्हीं के साथ हो लिए। मार्गमे आचार्य जीने हमको एक आप बीती घटना सुनाई।

आचार्य जी प्राय स्वास्थ्य सुधार के लिए पर्वतों पर यात्राके लिये जाया करते थे। एक बार का जिक्र है कि वे अपने सेवक धर्मसिंह के साथ इसी प्रकार एक पर्वत पर यात्रा कर रहे थे। एक दिन पड़ाव पर पहुँचने से पूर्व ही मार्ग में सन्ध्या हो गई। सायकालीन सन्ध्या करने के लिए आचार्य जी मार्ग के एक झरने पर ही रुक गए। अपना सामान झरनेके किनारे रखकर ऊपर पहाड़ शौचादि से निवृत्त होने को गए। लौटते समय क्या देखते हैं कि सिंह वहीं झरने पर पानी पी रहा है। आचार्य जी कन्धों पर एक स्तरीब चद्दर

ओढे रहा करते थे। उन्होंने उसको खोला उसके एक छोर मे एक पत्थर बाँधा और वेग के साथ घुमाना शुरू कर दिया। वनवासी सिंह के लिये यह दृश्य एकदम नवीन अतएव भयप्रद था। अतएव वह वहां से चलता हुआ। आचार्य जी के स्थान पर कोई दूसरा व्यक्ति होता तो उसकी क्या दशा हुई होती इसकी कल्पना आसानी से की जा सकती है।

* * *

तीसरी घटना उस समय की है। जब मैं गुरुकुल के महाविद्यालय विभाग मे पढ़ता था। महात्मा मुन्शीरामजी श्रद्धानन्द सन्यासीनवचुक थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब ने उनसे फिर गुरुकुल का कार्य भार सम्हालने का अनुरोध किया था अतएव वे कुछ समय के लिए फिर गुरुकुल मे लौट आए थे। एक बार फिर वही उनका पुराना बँगला सनाथ हुआ मालूम होने लगा।

सर्दियों के दिन थे। सिंह आदि वन्य पशु जल की खोज मे गुरुकुल भूमि की ओर सरक आया करते थे स्वामी जी अपने बँगले के बीच के हॉल में मेज के पास बैठे लिख पढ रहे थे। इसी बीचमें उनको ऐसा मालूम पड़ाकि पश्चिमाभिमुख द्वार की चिक को कोई उठा रहा है। बाहर अंधेरा होने के कारण वे पहिचान न सके और अपने काम में लगे रहे। थोड़ी देर बाद क्या देखते हैं कि वह चिक उठाने वाला सिंह था और अब वही उनकी मेज पर अपने अगले पंजे रख कर उनके पास खड़ा है। उन्हों ने एक साथ अपने पुराने सेवक धर्मसिंह को पुकारा और लैम्प को और भी तेज करके उसका हरा ग्लोब हटा दिया। लैम्प को सिंह की आँखों के ऊपर किया। शेर चौंधियाकर वहाँ से लौट पडा।

❀ ❀ ❀

उपर्युक्त घटनायें यह दिखाने को पर्याप्त हैं कि किस प्रकार रौद्ररूप धारण की हुई प्राकृतिक शक्तियों के बीच मे और भयानक हिंस्र जन्तुओं के सामने भी स्वामी जी की धीरता अपने सदा-तन और सहज रूप में ही बनी रहती थी। उस को उपर्युक्त भय भी नहीं डिगा सकते थे।

यहां पर उनके सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में घटित होने वाली ऐसी कितनी ही घट-नाओं का लिखा जा सकता है जो इस बात की साक्षी है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्मा एक असाधारण आत्मा थी वह महान् थी और धीरता से ओत प्रोत थी। अपने इसी महान् गुण के कारण उन्होने अनेक महान् कार्यों को अपने हाथ मे लिया और सब प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए उनको सफल कर दिखाया। व्याकुलता और परेशानी उनके लिए अपरिचित सी थीं।

"महारम्भा कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुला"

अन्तर्जातीय विवाहों के सम्बन्ध में शंकासमाधान

(लेखक —श्री प० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ जज)

सितम्बर १६४५ के सार्वदेशिक मे मेरी ओर से "जन्मपरक जाति भेद और उसके दूर करनेके उपाय" शीर्षक क साथ एक लेख छपा था उसमे मैंने जाति भेद निवा क आय परिवार-सघ की योजना का उल्लेख किया था और यह सूचना दी थी कि देहली मे इस योजना पर विचार करने के लिए उस उप समिति का जो इस काय क लिए श्रीमती सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा को ओर स बनाई गई है एक विशेष अधिवेशन होगा। तद सार ता०१४।१०।४५ को बलिदान भवन देहली मे उक्त समिति और प्रस्तावित आय परिवार सघ के सदस्यों का एक सयुक्त अधिवेशन हुआ और पूर्वोक्त योजना पूर्ण विचार के पश्चात् कुछ सशोधनों के साथ स्वीकृत हुई, जो सशोधितरूप में "सार्वदेशिक" क गत नवम्बर के अक मे प्रकाशित हो चुकी है।

२ प्रथम, योजना मे नियम सख्या ४ का एक भाग इस प्रकार था 'उन सदस्यों को मान की दृष्टि से विशेषता दी जायगी जो जन्म से उच्च जाति मे उत्पन्न होते हुए भी किसी दलित वर्ग की कन्या से अथवा किसी शुद्ध हुई कन्या से विवाह करेंगे" इस नियम की आलोचना के रूप में दो सज्जनों के पत्र प्रधान सार्वदेशिक सभा के नाम आये हैं जिनको सभा ने उचित कार्य वाही तथा सूचनार्थ मेरे पास भेजा है मै इस लेख द्वारा दोनों पत्रों का उत्तर "सार्वदेशिक' मे प्रकाशित करना उचित समझता हू।

३ एक पत्र श्री निर्भयानन्द जी बेधड़क (गुरुदत्त भवन लाहौर) का भेजा हुआ है, जिस मे यह प्रश्न किया गया है—"जैसे उस सदस्य को जो दलित जाति की कन्या को व्याहेगा मान की दृष्टि से देखा जायगा तो उस सदस्य को जो अपने उच्च वर्ण की कन्या को शिक्षित दलित जाति के युवक को देगा क्या उसे भी मान की दृष्टि से देखा जायगा कि नहीं कृपया शीघ्र उत्तर दीजिएगा यदि प्र ान जी की बात पर मान प्राप्ति के लिए अमल हो गा ता दलित जाति क युवक व कुआरे ही रह जा ँगे। आप की बात इसलिये एकतर्फा है"

४ इसके उत्तर मे केवल यह लिखना पर्याप्त होगा कि प्रथम योजना मे भी पूर्वोक्त शब्दों का यह भाव कदापि नहीं था कि दलितवर्ग की केवल कन्याओं के साथ उच्च जाति क पुरुष विवाह करें और दलित जाति के युवकों के साथ किसी जन्म मूलक उच्च जाति जाति की कन्या का विवाह न हो यदि उनके गुण कर्म स्वभाव समान हों। परन्तु १४।१०।४५ के अधिवेशनमें इस नियमके शब्द बिलकुल स्पष्ट कर दिये गये है। सशोधित नियम मे (जो नवम्बर १६४५ के सार्वदेशिक के ३०८ पृष्ठ पर छपा है यह शब्द है—"उन सदस्यों को मान की दृष्टि से विशेषता दी जायगी जो जन्म से उच्च जातिमे उत्पन्न होते हुये भी किसी दलितवर्ग के वर या कन्या से अथवा किसी शुद्ध हुए वर या कन्या से विवाह करेंगे। इससे स्पष्ट है कि पूर्वोक्त नियम एकतर्फा नहीं है

५ दूसरा पत्र श्री मुनीश्वर देव सिद्धान्त शिरोमणि आर्योपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का भेजा हुआ है। उसमें लेखक महोदय

ने पहिले यह लिखा है कि अजमेर में निर्वाण अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर भी ऐसी योजना तय्यार हुई थी परन्तु वह योजना और आन्दोलन जल बुद् बुद की भांति विलीन हो गए। उसका मुख्य कारण उन्होंने यह बतलाया है कि कई समाजों और सभाओंके उच्च अधिकारी प्रथम अपने आचरणों से योजना को निस्तेज बना देते हैं और शर्म्मा, वर्म्मा, गुप्त आदि जन्म मूलक चिन्हों के बगैर वे अपना नाम ही अधूरा समझते हैं। यद्यपि पहले आन्दोलन के असफल होने के और भी कारण हो सकते हैं तथापि इस आपत्ति के विषय में मैं यह लिखना उचित समझता हूं कि उक्त दोष समिति के ध्यान में है और १४।१०। ४६ की बैठक के अन्त में इस पर कुछ वार्तालाप हुआ था। विचार यह है कि नियम ४ में जो सदस्य की परिभाषा की गई है उसमें और शर्तों के साथ यह शर्त भी जोड़ दी जावे कि 'जो केवल जन्म के आधार पर अपने नाम के साथ किसी वर्ग द्योतक शब्द शर्म्मा, वर्म्मा, गुप्त आदि का प्रयोग न करें।

६ श्री मुनीश्वर देव जी ने पत्र के अन्त में लिखा है 'मैं प्रशासित पंडित जी की शेष योजना से सर्वथा सहमत हूं केवल उस भाग से जिस पर उन्होंने विशेष बल दिया है अर्थात "जो सदस्य उच्च जाति में उत्पन्न होते हुए भी किसी दलितवर्ग की कन्या से विवाह करेगा उसको मान की दृष्टि से विशेषता दी जायगी," सहमत नहीं हूं। इससे पूर्व लेखक महोदय ने लिखा है क्या आपको यह विश्वास है कि उच्च अधिकारी युवक इस पर अमल करेंगे ?" ..... क्या आप समझते हैं कि एक सदाचारी वेदपाठी युवक इस कुपढ़ दलित कन्या से विवाह करने को तैयार होगा ?' एक नीरोग बलशाली वीर युवक शुद्ध हुई अनपढ सदा बीमार भीरु स्वभाव वाली कन्या से विवाह कर लेगा" इससे प्रतीत होता है कि लेखक महोदय ने पूर्वोक्त विषय का अभिप्राय यह समझा है कि उच्च जाति के लोग गुण कर्म स्वभाव का कुछ भी ध्यान न रखते हुए दलितवर्गकी अथवा शुद्ध हुई कन्यासे विवाह कर लेवें। उक्त नियम वा उक्त योजनाका यह भाव कदापि नहीं कि गुण कर्म स्वभाव का विचार न करके अन्तर्जातीय विवाह किये जावें। ऐसे विवाह वैदिक सिद्धान्त और वर्ण व्यवस्थाके बिलकुल विरुद्ध होंगे। जन्ममूलक जाति भेद को तोड़ने का अभिप्राय यही है कि सच्ची वैदिक वर्ण व्यवस्था स्थापित हो सके। योजना के नियम दो में संघ के जो उद्देश्य वर्णन किये गये हैं उनमें पहले और दूसरे उद्देश्यों में यह बात बिलकुल स्पष्ट करदी गई है जो इस प्रकार है— १ 'गुण कर्म स्वभावानुसार वैदिक वर्ण व्यवस्था की स्थापना के लिये साधन प्रस्तुत करना। (२) जन्मगत जात पात का विचार छोड़ कर आर्यों में गुण कर्म स्वभावनुसार विवाह सम्बन्ध करना"

७ यह समझना कि दलितवर्ग की कन्यायें सब 'कुपढ़' व "अनपढ सदा बीमार भीरु स्वभाव वाली" होंगी कोरी कल्पना होगा और दलित वर्गों के साथ घोर अन्याय करना होगा। इसी प्रकार यह विचार भी कि जन्मगत जाति भेद के अनुसार उच्च जाति के युवक सब "सदाचारी वेदपाठी" और नीरोग बलशाली वीर" होंगे एक असत्य कल्पना ही होगा। विवाह वर और कन्या के गुण कर्म और स्वभाव के समान व अनुकूल होने पर ही होने चाहियें अन्यथा नहीं।

८ यदि लेखक महोदय को दलित वर्ग की

वा शुद्ध की हुई कन्या और कथित उच्च जाति के वर के गुण कर्म स्वभाव समान होने की दशा में भी उनके परस्पर विवाह मे आपत्ति हो, यद्यपि मुझे ऐसी आशा नहीं,) तो मैं ऐसे विचार को वैदिक सिद्धान्त के प्रतिकूल ही कहूंगा और वह अनुपयोगी भी है। शुद्धि के कार्य मे जो बडी भारी रुकावट हुई उसका मुख्य कारण यह है कि शुद्ध हुए पुरुषों या युवकों को आर्य लोग विवाह मे अपनी कन्या देने के लिए तय्यार नहीं। मलकाना जाति के हजारों लोगों ने जो पहिले राजपूत जाति के थे और मुसलमानों के राज्यकाल मे मुसलमान हो चुके थे मथुरा आगरा, आदि जिलों मे अपनी शुद्धि कराके आर्य धर्म को स्वीकार कर लिया क्योंकि उनकी बिरादरी के अन्य लोगों ने जो मुसलमान नहीं हुए थे उनको अपनी बिरादरी मे मिला कर उनके साथ रोटी बेटी का व्यवहार करना स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार के सहस्रों और लोग जो राजपूत जातियों से मुसलमान हो गये थे इस्लाम मत को छोड कर आर्य धर्म स्वीकार करने का तय्यार थे परन्तु उन्होंने इसलिए अपनी शुद्धि कराना स्वीकार नहीं किया कि उनकी पहली बिरादरियों के हिन्दू लोग उनको अपनी बिरादरी मे मिलाने को तय्यार नहीं हुए और न आर्यसमाज उनको यह आश्वासन देसका कि शुद्धि होने पर उनके पुत्र और पुत्रियों के विवाह अन्य बिरादरियों के आर्य लोगों मे हो सकेंगे आर्य जनता अब्दुल गफूर बी० ए० के उदाहरण को भूली नहीं होगी जिसने शुद्धि कराके अपना नाम धर्मपाल रक्खा था, और बडे उत्साह से आर्य समाज में काम करने लगा था। वह एक युवक था। कई आर्य नेताओं के उद्योग करने पर भी कोई आर्य समाजी उसके साथ अपनी कन्या का विवाह करने को तैयार नहीं हुआ। परिणाम यह हुआ कि वह फिर मुसलमान होगया और आर्य समाज का कट्टर शत्रु बन गया। यह एक उदाहरण मात्र है। जैसा ऊपर लिखा गया हजारों मनुष्य जो जन्म के हिन्दू थे और पीछे मुसलमान हुए थे फिर आर्य धर्म को स्वीकार कर लेते यदि उनके और उनकी सन्तान के आर्यों मे विवाह होने की कठिनाई न होती यह स्वाभाविक बात है कि शुद्ध कराने से पहले एक मनुष्य को इस बात का भरोसा दिलाया जा सके कि वह और उसकी सन्तान शुद्ध होकर अछूतों से भी अधिक हीन दशा मे न हो जावेंगे। जन्ममूलक जाति भेद की आधार शिला अब विवाह की समस्या ही रह गई है। खानपान का भेद अब बहुत कम होगया है और भिन्न भिन्न जाति व उपजातियों के लोग अब बहुधा बिना सकोच परस्पर भोजन करने लगे है। परन्तु विवाह के समय प्रत्येक हिन्दू अपनी बिरादरी मे ही वर या कन्या की तलाश करता है। मुझ को दुःख के साथ लिखना पडता है कि अधिकाश मे आर्य समाजियों की भी यही मनोवृत्ति है। और अन्य बातों मे अपनी बिरादरी के साथ अधिक सम्पर्क न रखते हुए भी वह अपनी सन्तान के विवाह के अवसर पर बिरादरी की ही शरण लेते हैं। अन्तर्जातीय विवाहों मे जो कानूनी कठिनाई थी उसको दूर करने के लिए "आर्य विवाह विधान" Arya Marriage Validation Act of 1936 बन चुका परन्तु कितने आर्यसमाजी हैं जो उनसे लाभ उठाते हैं? आर्य समाजियों की सन्तान के सौ विवाहों में शायद दस विवाह भी ऐसे नहीं होते जो अपनी बिरादरी के बाहिर किये गए हों। जन्मगत जाति भेद तभी टूटेगा जब कि अन्तर्जातीय विवाह

एक साधारण प्रथा हो जाय। ईश्वर करे कि आर्य समाजी तथा अन्य आर्य हिन्दू इस बात को समझें और उसके अनुकूल व्यवहार करें।

६ अछूत प्रथा की जो कि हिन्दू धर्म व जाति के मस्तक पर घोर कलङ्क है जड़मूल यही जन्म मूलक जाति भेद है। यदि अछूतपन को नष्ट करना अभीष्ट है जैसा कि आर्य तथा अन्य नेता पुकार पुकार कर कहते हैं, और उन से समानता का व्यवहार करना अभीष्ट है तो उन की सतान के साथ अपनी सतान के परस्पर विवाह के लिए, यदि उन व्यक्तियों का खान पान रहन सहन शिक्षा आदि समान हों, अथवा दूसरे शब्दों में यह कहो कि उनके गुण कर्म स्वभाव समान हों तय्यार रहना चाहिए। लेखक महोदय का यह विचार सत्य ही है कि ऐसे बहुत कम आर्य्य होंगे जो इस प्रकार दलित वर्ग वा शुद्ध की हुई कन्याओं के साथ विवाह करना स्वीकार करें। इसी लिये इस सघ की योजना मे यह नियम रखना उचित समझा गया कि उसके जो सदस्य ऐसे विवाह करेंगे उनको मान की दृष्टि से विशेषता दी जायगी। इसलिये उक्त नियम उचित तथा आवश्यक ही है।

[अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जन्मसिद्ध वर्ण व्यवस्था वा जाति भेद और उसके परिणाम स्वरूप अस्पृश्यता के घोर विरोधी थे और उन्होंने अनेक कष्ट सहन कर के भी इन विषयों में क्रियात्मक उदाहरण रक्खा तथा इस जाति भेद निवारक आन्दोलन का पूर्ण समर्थन किया था। उन्होंने जीवन के अन्तिम दिनों में यहां तक नियम बना लिया था कि वे केवल उन्हीं विवाहों में आशीर्वाद भेजेंगे जो जाति बन्धन तोड़ कर गुण कर्मानुसार होंगे। उनके द्वारा विशेष रूप से प्रवर्तित संगठन, शुद्धि और दलितोद्धार आन्दोलनों की सफलता जाति भेद के क्रियात्मक परित्याग पर ही निर्भर है। उनके ता० ११-५-२५ को मेरे द्वारा आर्यों के नाम भेजे सदेश के निम्न शब्द इस विषय में विशेष उल्लेखनीय हैं जो जाति भेद निवारक आर्य परिवार सङ्घ की योजना के प्रबल समर्थक है।

'Take a solemn pledge today that you will break the fetters of unnatural Caste system and will work the वर्णाश्रम व्यवस्था in your lives and that you will root out the curse of untouchability from the land of your birth"

अर्थात् आज एक गम्भीर प्रतिज्ञा करो वा व्रत लो कि तुम अस्वाभाविक जाति भेद की जजीरों को तोड़ डालोगे और वर्णाश्रम व्यवस्था को अपने जीवनों में क्रियात्मक रूप दोगे और तुम अपने देश से अस्पृश्यता के अभिशाप का समूलोन्मूलन कर दोगे। अत' हमारा समस्त आर्य धर्म और संस्कृति के प्रेमियों से अनुरोध है कि वे जाति भेद निवारक सङ्घ की योजना को क्रियात्मकरूप देने में पूर्ण सहायक हों अन्यथा आर्य समाज की यथार्थ उन्नति सम्भव न होगी।

—सम्पादक]

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के विषय में मेरे संस्मरण

(लेखक—आचार्य चन्द्रशेखरजी शास्त्री)

पूज्य स्वामी श्रद्धानन्दजी से मेरा सर्व प्रथम परिचय काशी में सन् १६२३ में हुआ था। उस समय मैं काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में अध्यापक था और स्वामीजी अखिल भारतीय हिन्दू महासभा का पुनरुद्धार करने के लिये काशी आये हुए थे। उस समय कमच्छा में रणवीर संस्कृत पाठशाला के सुभव्य भवनमें उनके भाषण का आयोजन किया गया था। श्री प० मालवीयजी प्रधान बनने वाले थे। किन्तु मालवीयजी ने अपने सभापति अभिभाषण में लगभग तीन घंटे का समय ले डाला और जनता को यह देख कर अत्यधिक निराशा हुई कि निद्रा से युद्ध करने पर भी उनको स्वामीजी का भाषण बीस पचीस मिनट से अधिक समय तक सुनने को नहीं मिला। स्वामीजी के तत्कालीन भाषण से पता चलता था कि यह घटना उनको भी अच्छी नहीं लगी।

❁ ❁ ❁ ❁

मेरा परिचय उसी भेंट में स्वामीजी से पर्याप्त घनिष्ठ हो गया था। उस समय स्वामीजी ने भारतीय साधु समाज के विषय में निराशा सी प्रकट करते, हुए अपना एक अनुभव सुनाया उन्होंने कहा—

"१६१४ १८ वाले महायुद्ध का समय था। मैं रेलगाड़ी में बैठा हुआ एक स्थान को जा रहा था। गाड़ी में एक युवक साधुसमाज की बड़ी तीव्र शब्दों में आलोचना कर रहा था। उसने मेरी ओर संकेत करते हुए कहा कि मेरा वश चले तो मैं सभी साधुओं को पकड़ पकड़ कर लड़ाई में भर्ती करदूं। मैंने मन में सोचा कि बेचारा बात तो ठीक कह रहा है। उसको क्या पता कि इस वेष मे मैं वैसा साधु नहीं हूँ। मुझे अगले स्टेशन पर ही उतरना था। भीड़ मेरा स्वागत करने को स्टेशन पर उपस्थित थी। उसने गाड़ी पहुंचते ही स्वामी श्रद्धानन्द की जय' की घोर ध्वनि से सारे स्टेशन को गुंजा दिया। जब उस युवक को पता चला कि जिस व्यक्ति की ओर उसने संकेत किया था वह स्वामी श्रद्धानन्द थे तो उसको बड़ी लज्जा आई। वह भीड को चीरता हुआ मेरे पास आया और मेरे चरणों में पड़कर क्षमा मांगने लगा। मैंने उससे कहा कि भाई तुमने तो तत्त्व की बात ही कही थी। अधिकांश साधु समाज की दशा तो वास्तव में गिरी हुई ही है। तुमको क्या पता था कि मैं वैसा साधु नहीं हूं।"

* * * * *

इस घटना के बाद कई वर्ष बीत गए। मैंने काशी को छोड़ कर दिल्ली को अपना निवास स्थान बना लिया और यहां एक कालेज में अध्यापकी मिल जाने पर भी अध्यापकी छोड़ कर अपनी आजीविका ग्रन्थ लेखन द्वारा करने लगा। दिल्ली में स्वामीजी के पास मेरी पर्याप्त बैठक रहा करती थी मैं अपने प्रत्येक व्यक्तिगत मामले में उनसे परामर्श किया करता था, तब मैंने उनसे अपने लेखन वृत्ति अपनाने की बात कही तो उन्होंने मुझ को अपना एक उर्दू ग्रन्थ दिया। उसका नाम था—

'मुस्लिम सांबिरा का इंकशाफ़'

स्वामीजी ने इस ग्रन्थ में मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के षड्यंत्र का

विस्तृत विवरण दिया था। उन्होंने मुझ से अनुरोध किया कि मैं उसका हिन्दी अनुवाद करदं। मैंने कुछ ही समय में उस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद करके स्वामीजी को दे दिया। स्वामीजी ने प्रथम वह अनुवाद लाला देश बन्धुजी गुप्त को दिखलाया और उनके पसद करने पर उन्होंने उसको आखिल भारतीय शुद्धि सभा की ओर से छपवा दिया। उसका नाम मैंने रखा था —

'मुहम्मदी षडूयन्त्र का रहस्य भेद'

स्वामीजी ने ग्रन्थ छपते ही मुझे उसके एक संस्करण का पारिश्रमिक दे दिया। आज मुसलमानों की पाकिस्तान की आवाज का मुकाबला करने के लिये स्वामीजी का उक्त ग्रन्थ बड़ी सहायता करेगा।

श्री श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में —

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान रंग ला रहा है

(लेखक—कुंवर चांदकरण जी शारदा प्रधान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा अजमेर)

आज धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस देश भर में बड़े उत्साह से मनाया जा रहा है। उनकी याद हमारे हृदय में आज के रोज द्विगुणित उत्साह के साथ इसलिए आ रही है कि वे राष्ट्र के सच्चे सेवक थे और आर्यसमाज के त्यागी तपस्वी कर्णधार थे। वे आर्य संस्कृति के सच्चे समर्थक थे। और बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक अधिकारों को बलि देकर मुसलमानों को राजी रख कर स्वतन्त्रता नहीं लेना चाहते थे। श्री स्वामी जी महाराज के साथ रहने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वे शुद्धि आन्दोलन में भारत की स्वतन्त्रता के लिये सम्मिलित हुए थे। यदि उनके शुद्धि आन्दोलन को भारतीय जनता अपना लेती तो आज पाकिस्तान का प्रश्न जो ज़ोरों पर उठ रहा है वह उठने ही न पाता। श्री स्वामी जी महाराज आर्य संस्कृति को संसार की सब सभ्यताओं से ऊँचा मानते थे। और वैदिक धर्म का संसार के सब धर्मों से श्रेष्ठ मानते थे इसी कारण वे मुसलमान भाइयों के लाभार्थ शुद्धि आन्दोलन चलाते थे। उनका किसी से द्वेष नहीं था। श्री स्वामी जी महाराज फौजी शिक्षा में विश्वास रखते थे। उनको महात्मा गांधी जी का कोरा अहिंसावाद पसन्द न था। हमें हर्ष है कि लोग आज सैनिक शिक्षण प्राप्त किये हुये अपनी आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों की स्तुति कर रहे हैं। और उन्हें छुड़ाने का पूर्ण प्रयत्न कर रहे हैं। जिस दिल्ली में स्वामी जी महाराज का बलिदान हुआ वहां पर ही लाल किले में आजाद हिंद फौज के वीर सैनिकों पर देश को स्वतन्त्र करने के अपराध में मुकदमे चल रहे हैं। अब सारा भारत बालक से बूढ़े व्यक्ति एक स्वर से इन देश भक्तों की प्रशंसा कर रहा है और लाठी चार्ज, गोली काण्ड, जेल आदि से न डर कर इनको जेल से मुक्त कराने के लिये आतुर है। इस निर्भयता का पाठ श्रद्धानन्द जी ने सबसे पहिले उनको पढ़ाया। उन्होंने चाँदनी चौक में घंटा घर के पास अपने सीने को बन्दूक के सामने तान दिया था। आज उसी स्वामी का बलिदान, वही निर्भयता का रंग सारे भारत में ला रहा है।

पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज देश भक्त होने के साथ २ सच्चे ईश्वर भक्त थे। मानवी सभ्यता की प्रतीक हमारी प्यारी ओ३म् ध्वजा को फहराते हुए पुलकित हो उठते थे। वे अपनी ईश्वर भक्ति के कारण निराशावादियों को आशावादी बना देते थे। और अनेक विघ्न बाधाओं के होते हुए भी वे जहां जहां जाते उत्साह का वातावरण उत्पन्न कर देते थे। शुद्धि आन्दोलन में जब मैं उनके साथ भरतपुर, मथुरा और आगरे के जिलों में घूमता था और कभी २ ग्रामवाले मलकाने भाई मौलवियों के बहकाने में आकर शुद्ध होने के लिये इन्कार कर देते थे तो भी वे साहस नहीं छोड़ते थे। और अपने काम को पूरा करके ही लौटते थे। यह उनके अटल ईश्वर विश्वास का फल था। श्री स्वामी जी महाराज जनता जनार्दन की सेवा ही सच्ची प्रभु सेवा

मानते थे उनका सदा उपदेश यही होता था कि उद्देश्य रहित जीवन मत बिताओ। वर्तमान अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली की बुराइयों को जितना उन्होंने अनुभव किया था उतना शायद ही किसी ने अनुभव किया होगा। वे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को ही हृदय से लाभप्रद मानते थे। और गुरुकुल खोल कर अपने मन के भावों को और उच्च आदर्शों को ससार के सामने रक्खा। यद्यपि आज कुछ आर्य भाई गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली छोड़ कर पश्चिमी सभ्यता फैलाने वाले अंग्रेजी स्कूल कालेज खोल रहे हैं। परन्तु आज सारा सभ्य ससार उनके बताये मार्ग की भूरि भूरि प्रशसा कर रहा है। ससार की भावी शिक्षा प्रणाली-गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही होगी। दीन दुखियों की सेवा मे आत्मसमर्पण करने को वे सदा तत्पर रहते थे। ऊच नीच का भेद मिटाकर सब के साथ समानता का व्यवहार करने के लिये उन्होंने जो दलितोद्धार का रचनात्मक कार्य किया वह कदापि भुलाया नहीं जा सकता। आज मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिए कुछ आर्य भाई हिन्दुस्तानी के पोषक बन गये हैं। परन्तु हमारे पूज्य स्वामी जी ने स्पष्टतया उपदेश दिया था कि आर्य भाषा का ही प्रचार भारत के लिये हितकर है। उपरोक्त सब बातें श्री स्वामी जी ने गुरुकुल मे भली प्रकार अपने श्रीमुख से पढ़ाईं। आज उनके विपरीत कालेजों में राष्ट्रीयता विरोधी रूस की गुलामी सिखाने वाले कम्युनिज्म का प्रचार हो रहा है। यह कम्युनिज्म मुस्लिम लीग और पाकिस्तान का समर्थक है। कौटुम्बिक जीवन का नाश करने वाला है। राष्ट्रीय भावनाओं का अन्त कराने वाला है। और हिंदू कौटुम्बिक जीवन को छिन्न भिन्न कर हमारे में तलाक प्रथा को प्रवेश करने वाला है। मुझे दुख होता है जब मैं दयानन्द कालेज और स्कूलों के कई विद्यार्थियों को धर्म को तिलाञ्जलि देते हुए और ईश्वर को गालियां देते हुए देखता हूँ। विद्यार्थियों की राय मे किसी हिंदू का ईसाई मुसलमान होजाना कोई महत्त्व की बात नहीं है। जो धोखे से विधर्मी हो गये हैं उन्हे शुद्ध करना ये अपना कर्त्तव्य नहीं समझते। अगर कोई हिंदू औरत मुसलमान ईसाई हो जावे तो ये खुश होते हैं। रशिया से मदद पाने वाले लोग इन विद्यार्थियों को बहकाते रहते है। प्यारे ओ३म् के झण्डे के स्थान मे इन्हें हासिया और हथौडे वाला रशिया का लाल झण्डा अच्छा लगता है। पूज्य स्वामी जी महाराज खेती वालों और मजदूरों का भला चाहते थे और सबको समान अधिकार दिलाना चाहते थे। इसी वास्ते वे दलितोद्धार का काय करते थे। परन्तु रोटी ही एक मात्र हमारी समस्या को हल नहीं कर सकती। कोरे उद्योगों के राष्ट्रीयकरण से हमारे दुःख नहीं मिट सकते। हम रोटी के साथ साथ धार्मिक,सांस्कृतिक और शिक्षा सम्बन्धी सब समस्याएँ हल करना चाहते हैं। प्रत्येक को अपनी २ लाइन मे विकसित होने का अवसर देना चाहते हैं, और दिल और दिमाग दोनों से काम लेना चाहते हैं। शुद्धि आन्दोलन के प्रवर्तक स्वामी श्रद्धानन्द जी यदि आज कल के शुद्धि विरोधी नास्तिक विद्यार्थियों को देखें तो उनकी आत्मा रो उठे। यदि आप को सच्चे हृदय से स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाना है तो आप निर्भय होना सीखें। सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा का आंदोलन इतना शिथिल कभी न होता

यदि आज स्वामी श्रद्धानन्द जी जीवित होते। मेरे नवयुवक मित्रो। प्यारे सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा के लिये और महर्षि दयानन्द जी के मिशन की पूर्ति के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी के समान सीने पर गोलियाँ खाना सीखो। कभी भी साहस न छोड़ो। और आगे २ कदम बढ़ा कर वीरता से विधर्मियों से युद्ध करके उनके सिरों को अपने सामने नीचा करो। विश्व शान्ति के लिए हमारी मातृभूमि का स्वतन्त्र होना अत्यन्त आवश्यक है। अपनी मातृभूमि की दुर्गति को मिटा कर उसे विधर्मियों के और पश्चिमी सभ्यता के पंजे से छुड़ाओ। जोर से, जुल्म से, गोलियों से, तोपों से, तलवारों से कभी न डरो। और पवित्र ओ३म् के झण्डे को हाथ में लेकर सारे विश्व को आर्य बनाने का व्रत लो तभी आप स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाने के अधिकारी बन सकते हैं।

"बोलो स्वामी श्रद्धानन्द जी की जय"

लोगों की विचित्र मनोवृत्तियाँ

अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी का अनुकरणीय कार्य।

(ले०—प० सिद्धगोपाल जी 'कविरत्न' 'साहित्य वाचस्पति' देहली)

प्राय: देखा जाता है, आर्यसमाज के उत्सवों के समय जहां उपदेशक लोग ठहरे हुए होते हैं, वहा प्रश्नकर्त्ता महाशय बहुत आया करते हैं। अधिकाश बूढ़े और अधेड़ लोगों का होता है। वे लोग दार्शनिक प्रश्न बहुत उठाते हैं। जीवात्मा अणु है या विभु ? ईश्वर जीव में व्याप्य व्यापक सम्बन्ध कैसे ? चेतन में क्या चेतन की व्याप्ति हो सकती है ? मुक्ति सावधि है या निरवधि? मुक्ति कैसे होती है ? मुक्त जीव से ईश्वर का सान्निध्य कैसे होता है ? बिना शरीर के मुक्ति का सुख कैसे भोगा जा सकता है ? बिना इन्द्रियों के जीवात्मा को ज्ञान कैसे रह सकता है ? इत्यादि २ प्रश्न बहुत करते हैं। कोई २ महानुभाव धार्मिक और सामाजिक प्रश्न भी करते हैं ? अनेक महानुभाव ऐसे विचित्र और भ्रांतिमूलक प्रश्न करते हैं, कि उन्हें देखकर आश्चर्य होता है। वश नहीं, नहीं तो ऐसे विचित्र व्यक्तियों को अजायबघर में रखवा देता, ताकि वे उसकी शोभा खूब बढ़ा सकते।

मुझे उत्सवों पर जाने का बहुत अवसर मिला है। स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण मैं अब बहुत कम आया जाया करता हू। अभी थोडे दिन हुए, मैं इलाहाबाद आर्यसमाज के उत्सवों पर गया 'रानी मण्डी' और 'कटरा आर्य समाज' के उत्सव थे। दोपहर में एक आर्यसमाजी सज्जन जहां मैं ठहरा हुआ था, आये। बोले—वाह ! पं०जी वाह ! क्या कहने हैं ? आप बहुत प्रभावशाली भाषण देते हैं जनता मन्त्र मुग्ध हो जाती है। आपके बोलने का तरीका अत्यन्त सुन्दर है। इस प्रकार न जाने कितनी तारीफों के पुल बाधते रहे। फिर आप थोड़ी देर में बोले—'श्रीमान् जी आप कौन हैं ?' इस प्रश्न पर मैं उसकी शक्ल को देखने लगा। मैंने कहा आपको कौन दिखाई देता हू, घोड़ा, गधा, हिरण, सुअर, उल्लू, साप, बिच्छू। थोड़ी देर ही-ही-ही करके बोले—दिखाई तो आप मनुष्य ही देते हैं। श्रीमान् जी आप तो बात मजाक में ले गये। मेरा मतलब यह था, कि आप ब्राह्मण हैं, वैश्य हैं, कौन हैं ? मैंने कहा, अच्छा। आपका यह मतलब है। मैंने पूछा—यह प्रश्न आप आर्यसमाज के दृष्टिकोण से कर रहे हैं या सनातन धर्म के दृष्टिकोण से ? इस पर आप चकराये,क्योंकि पहले आप अपनेको कट्टर आर्यसमाजी कह चुके थे। बस थोडी देर बैठकर आर्य समाजों के झगड़ों का कुछ वर्णन करके खेद प्रकाशित किया, तदन्तर यह कह कर चलते बने, कुछ भी कहो, ऐसे प्रभावशाली व्याख्यान ब्राह्मण ही दे सकते हैं। अच्छा, पं० जी नमस्ते। मैंने उत्तर में 'नमस्ते' कह दिया।

इटावा आर्यसमाज के उत्सव पर

आर्यसमाज में हम कई उपदेशक ठहरे हुए थे, मेरे पास ही पं० शीतलचन्द्र भजनोपदेशक भी ठहरे हुए थे। एक सज्जन आकर मेरी खाट पर बैठ गये। बोले—महाशय जी, आप बड़ा अच्छा लेक्चर देते हैं, आपकी हिन्दी की शायरी गजब की है। कभी २ आप उर्दू के अलफाज अदा करते हैं, वह निहायत दुरुस्त होते हैं। जो अशयार आप पढ़ते हैं, बडे दिलकश होते हैं। आपका

तसफ्फुज यह साबित करता है, कि आप कायस्थ खानदान से हैं। क्या आप कायस्थ हैं? अगर हैं तो हम लोगों की बड़ी खुशकिस्मती है। हमारा खानदान सारा आर्यसमाजी है। दसियों साल से हमारे यहां शराब और गोश्त कोई नहीं खाता। मैं बड़े ध्यान से उसकी सूरत देख रहा था, कि यह कह क्या रहा है। प० शीतलचन्द्र जी हँसते २ लोट पोट हो रहे थे। उन्होंने उसे जरा और उकसा दिया, बोले—हाँ, हाँ, इन्हें मैं खूब जानता हू, यह सिद्धगोपाल जी कायस्थ हैं। परन्तु उन्होंने इन शब्दों को इस 'टान' में कहा, कि वह समझ गया कि यह मजाक करते हैं। थोड़ी देर बैठकर वह व्यक्ति वहा से चल दिया।

आर्यसमाज आगरा

एक सज्जन जो अपने को पुश्तैनी आर्यसमाजी कहते थे, उनसे मैंने कहा—यदि आपको कष्ट न हो तो किसी को साथ भेज दीजिये, मुझे अपने एक रिश्तेदार से मिलना है। तागा, इक्का, शायद गलियों मे न जा सके। बोले—वाह। महराज मैं ही आपके साथ चल रहा हूँ। मैंने कहा बड़ी कृपा। रास्ते मे बोले—आपकी कहाँ २ रिश्तेदारी है? मैंने कहा—अनेक स्थानों पर है। फिर बोले—आर्यसमाज मे आकर ब्राह्मण तो असल मे डूब गये। सब के हाथ का खाने पीने लगे। असल मे आर्यसमाज मे इसीलिये ऊचे लोग नहीं आते। वे जानते हैं, कि समाज मे तो भगी,चमारों,जाटों अहीरों, कुर्मी, कहारों, नाइयों और अन्य नीच कौमों का बोलबाला है। मैंने कहा—इन सब लोगों को आप नीच कैसे मानते हैं? जन्म से कोई ऊचा नीचा नहीं होता, ऊचा नीचा अपने सुकर्मों और कुकर्मों से प्रत्येक व्यक्ति होता है। फिर आप तो आर्यसमाजी अपने को कहते हैं। ऋषि दयानन्द का तो कहना ही यह है, कि जन्म से प्रत्येक मनुष्य है गुण कर्म के अनुसार मनुष्य ऊची अथवा नीची पदवी पाता है। मेरे ऐसा कहने पर बोले—'महाशय जी, मुझे प०से महाशय तत्काल कहने लगे पहिले पडित जी कहके बोलते थे) आप कौन हैं? मैं मुस्कराकर बोला—मैं मनुष्य हूँ। बोले—आप क्षमा करें, मनुष्य तो भगी चमार भी होते हैं। मैंने कहा—भगी और चमार मनुष्य होते हैं। अगर वे मनुष्य होते हैं, तो फिर आप कौन हैं, मनुष्य या पशु? बोले—मैं भी मनुष्य हूं मैंने कहा—फि आप भगी चमार हैं या नहीं? बोले—मैं क्यों भगी चमार हू? मैंने कहा—आप ही तो कहते है भगी चमार मनुष्य होते हैं। उन्हें आप पशु क्यों नहीं कहते? वह महानुभाव मुझे गली तक तो पहुँचा आये, पर चलते वक्त नमस्ते भी करके न गये।

देहली मे

करपात्री जी की सरक्षता मे विशाल यज्ञ हो रहा था। कई लाख रुपये जिसमें खर्च किये गये। एक मेरे मित्र ने एक तम्बू में बैठे कई विद्वान् साहित्यिकों से मेरा परिचय कराया उन्होंने कुछ अपनी कृष्णलीला परक अनुप्रासात्मक कवितायें सुनाईं। मेरे मित्र ने मुझे भी प्रेरणा की, मैंने भी कुछ अपनी रचनायें सुनाईं वे लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए, और पर्याप्त प्रशसा की। उनमे से एक व्यक्ति बोला—आप कौन जाति हैं? मैंने कहा—आप क्षमा करें, मैं जाति नहीं हूँ, व्यक्ति हूँ। मै मनुष्य होने के नाते जाति वाचक सज्ञा तो हूँ, स्वय जाति कैसे हो जाऊगा? मेरा नाम सिद्ध गोपाल है, इस लिए मैं व्यक्ति हू।

परन्तु चूंकि 'मनुष्य' हूँ इस लिए मानव जाति का बोधक हू। फिर आप बोले–आप ब्राह्मण हैं क्षत्रिय हैं, कौन हैं? मेरा मतलब जाति से यह था। मैंने कहा–यदि जाति से आप का यह मत लब था, तो गलत था, क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि शब्द तो 'व्यक्ति' के विशेषण हैं। जो कि योग्यता पर निर्भर हैं।" फिर आप बोले— क्या आप 'वर्ण व्यवस्था' नहीं मानते?" मैंने कहा–"मैं वर्ण को तो मानता हूँ 'व्यवस्था' को नहीं, क्य कि आज कल कोई व्यवस्था है नहीं? आप जिस व्यवस्था को मानते हैं, वह पूर्णत अशुद्ध और मानवता की घातक है।"यह सुन कर आप बोले—क्यों जी? हम जिसे मानते हैं, वह मानवता की घातक क्यों है? मैंने कहा— "आप जन्म से वर्ण मानते हैं जिसने अनेक दुर्गुण, दुर्व्यसन और मिथ्या अभिमान को जन्म दिया है। जन्माभिमानी समझते हैं, कितने ही पाप करो रहेंगे तो हम ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य ही। यही कारण है कि शराबी, मांसाहारी, वेश्या गामी भी ब्राह्मण,क्षत्रिय और वैश्य ही माने जाते यदि वर्णों की व्यवस्था गुण कर्मों पर आश्रित होती, तो लोग अपने २ वर्ण के कर्त्तव्य कर्मों मे स्थिर होते। उन्हें भय होता, कि यदि हम निकृष्ट कर्म करेंगे तो अपनी पदवी से गिर जायेंगे। छोटी श्रेणी के लोगों को यह प्रलोभन होता, कि यदि हम अपनी योग्यता बढ़ायेंगे, और पवित्र कर्म करेंगे, तो उत्कृष्ट पदवी प्राप्त करेंगे। इस प्रकार भय और प्रलोभन से लोग उन्नति शील होते। यह सुन कर आप बोले—'सारे वेद शास्त्र जन्म से ही वर्ण मानते हैं। मैंने कहा—अच्छा यह बताओ, यह वेद शास्त्र मनुष्य मात्र के लिए हैं या केवल हिन्दुओं के लिए?" आप बोले— "मनुष्य मात्र के लिये।" फिर मैंने कहा–यह वर्ण व्यवस्था केवल हिन्दुओं के लिए ही है, या मनुष्य मात्र क लिये?' आप बोले—'अखिल भूमण्डल के लिये'। मैंने कहा–अच्छा यह बताओ यदि वेद शास्त्र और वर्ण व्यवस्था अखिल भूमण्डल के लिये है, और वर्ण व्यवस्था है जन्म से, तो इङ्गलैंड में जन्म से कैसे ब्राह्मण बनेगा? जापान जर्मनी और चीन में जन्म से कैसे बनेगा? इस दृष्टि से आप के वेद शास्त्र मनुष्य मात्र के लिये कैसे हो सकेंगे? और वर्ण व्यवस्था भी मनुष्य मात्र के लिये कैसे हो सकेगी? वह तो हिन्दुओं के दायरे मे ही कैद हो जायगी। हां, गुण कर्म के अनुसार प्रत्येक देश के लोग ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि वर्ण ग्रहण कर सकेंगे। वस्तुत वेद शास्त्र मनुष्य मात्र के लिए तभी माने जा सकते हैं, जब वे गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन करते हों। और वेद शास्त्रों का तो सिद्धान्त ही यह है कि वर्ण जन्म से न होकर गुण कर्मों की योग्यता से है। सच तो यह है, ऋषि दयानन्द ही ऐसा एक व्यक्ति हुआ है जिसने आप के वेद शास्त्रों को मनुष्य मात्र के लिए सिद्ध करके दिखा दिया, अन्यथा लोगों ने तो उन्हें सीमित बना रक्खा था।" ऋषि दयानन्द का नाम सुनते ही आप बोले–"अच्छा तो आप आर्य समाजी हैं। अच्छा महाशय जी यह बताओ, अभी तक समाज ने कितने ब्राह्मण कितने क्षत्रिय, कितने वैश्य, और कितने शूद्र गुण कर्मों की योग्यता से बनाये हैं। हम तो देखते हैं वही जाति पाति के पचड़े मे समाजी पड़े हुए हैं। महाशय जी कहने से कुछ नहीं बनता कुछ करके

दिखाओ।" इस बात को सुन कर मेरे मन ने कहा—कि इस विद्वान् का आत्मा तो स्वीकार करता है, कि वर्ण व्यवस्था गुणकर्मानुसार मानने मे ही मानव जाति का कल्याण है। परन्तु जो इसके दावेदार हैं वह स्वय क्या कर रहे हैं। वास्तव मे इस सम्बन्ध मे कतिपय आर्यसमाजियों का छोड कर और सबकी मनोवृत्तियाँ, ऐसी ही हैं, जसी पौराणिकों की। क्या ऋषि दयानन्द के मिशन की इन भावनाओं से पूर्ति हो सकेगी? अनेक समाजों मे हम देखते हैं, कहीं कायस्थो का जोर है, कहीं जाटों का, कहीं बनियों का, कहीं ठाकुरों का। जन्मना जाति की कीचड़ मे ऐसे आकण्ठ लिप्त हैं कि जरा भी ऊपर नहीं उभरते। अनेक आर्यसमाजी जातीय सभाओं का सचालन कर रहे हैं, उपदेशक और कवि होने के नाते कई आर्यसमाजी विभिन्न अवसरों पर मुझे अपनी २ जातीय सभाओं मे ले गये। वहा मैंने आर्य समाज के सिद्धान्तों पर लेक्चर दिये। ठाकुरो की सभामे मुझे ठाकुर समझा गया, बनियों की सभा में बनियाँ, और ब्राह्मणों की सभा में ब्राह्मण, नाई और कहारों की सभा मे नाई कहार। उन लोगों ने अपने भाग्य को सराहा देखो, हमारी जाति में कैसे कैसे रत्न भरे पडे हैं।" मुझे उन जातीय सभाओं के सचालक आर्य समाजियों से घृणा हुई, मेरे मन ने कहा—देखो। ये लोग कैसा आर्य समाज के सिद्धान्तों के साथ विश्वासघात कर रहे हैं। जिस चीज को महर्षि दयानन्द देश से निकालना चाहते थे, उसी चीज की जडे यह पातालमें पहुँचा रहे हैं। इस अनेक सस्थावाद और इन जातीय सभाओं ने आर्य समाज का कमनीय कलेवर छिन्न भिन्न कर दिया।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

ऋषि दयानन्द जी महाराज के बाद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ही ऐसे व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने इस जाति पात के जजाल को तोडने का अथक परिश्रम किया। उन्होंने शुद्धि, सगठन दलितोद्धार, हिन्दी प्रचार और स्वदेशी व्यवहार का अपने जीवन मे क्रियात्मक परिचय दिया वे अत्यन्त निर्भीक, सफल वक्ता और सुलेखक थे। उन्होंने अनेक स्थानों पर मिथ्या जाति पाति के विरुद्ध क्रांतिकारी कार्य किये अनेक लोगों को उन्होंने अन्तर्जातीय विवाहों के लिये प्रेरित किया और वे खूब सफल हुए। असल मे श्री स्वामी जी के समान आर्य समाज मे कोई प्रभावशाली सफल नेतृत्व करने वाला ही उत्पन्न नहीं हुआ। यदि आर्य समाज उस महान् सन्यासी के आदेशों का पालन करता, तो आर्य समाज आज इतना सगठित होता, कि विश्व को कम्पायमान कर देता। वे मरते २ भी जाति पाति के विरुद्ध कार्य करते रहे, और आर्य समाजियों को आदेश करते रहे, परन्तु अनेक आर्य समाजियों ने उस महान् नेता की बात न मानी और वहीं जाति पाति के चक्कर में तन्मय रहे, मुझे दुःख के साथ कहना पड़ रहा है, यदि यही जाति पाति का चक्कर रहा तो आर्य समाजका भविष्य अत्यन्त अन्धकार मे है। अभी समय है, कि आर्य समाज प्रबल क्रान्ति करके इन मनोवृत्तियों को दूर करे। यही समस्त रोगों की जड़ है। नहीं तो फिर पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

अमर धर्म वीर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

कई सुप्रसिद्ध महानुभावों द्वारा समर्पित श्रद्धाञ्जलियाँ

स्व० कवि सम्राट् श्री रवीन्द्रनाथ जी ठाकुरः—

"सत्य के प्रति निष्ठा रखने का आदर्श स्वामी श्रद्धानन्द इस दुर्बल देश को दे गये हैं। अपनी साधना का परिचायक सन्यास आश्रम का द्योतक) जो नाम उन्होंने ग्रहण किया था वही नाम (श्रद्धानन्द उनके जीवन में सार्थक हो गया। सत्य में उनकी असीम श्रद्धा थी। इस श्रद्धा में सृष्टि शक्ति है। उस शक्ति द्वारा अपनी साधना को उन्होंने मूर्तरूप दिया और उसे सजीव किया है। इसलिए उनकी मृत्यु ने आलोक के समान प्रज्वलित होकर उनकी श्रद्धामयी, भय हीन, कीर्तिमती अमृत छवि को उज्ज्वल करके प्रकाशित किया है।"

महात्मा गांधी जीः—

'स्वामी श्रद्धानन्द जी का पवित्र स्मरण कौन भूल सकता है? उन का सच्चा स्मरण तो अस्पृश्यता जड मूल से निकाल कर ही हो सकता है।"

"आप का पत्र मुझे बल देता है। मेरी ये आजिजी है कि थोडे दिनों के लिये अहमदाबाद को और इस आश्रम को पावन करो। आश्रम वासी आप का दर्शन कर कृतार्थ होंगे।" (महात्मा गाधी जी के स्व० श्रद्धानन्द जी के नाम लिखे एक पत्र से उद्धरण)

सरदार वल्लभ भाई पटेलः—

'स्वामी श्रद्धानन्दजी की याद आते ही १६१६ का दृश्य मेरी आंखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं। स्वामी जी छाती खोल कर सामने जाते हैं और कहते हैं—लो चलाओ गोलियां। उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता? मैं चाहता हूं कि उस वीर सन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।"

प० जवाहरलाल जी नेहरूः—

सन् १६२६ के आखिर में हिन्दुस्तान में एक भारी दुखद घटना से अंधेरा सा छा गया। इस घटना से हिन्दुस्तान भर घृणा व रोष से कांप उठा। इससे पता चलता था कि साम्प्रदायिक उन्माद हमारे लोगों को कितना नीचे गिरा सकता था। स्वामी श्रद्धानन्द को जब कि वे बीमारी से चारपाई पर पड़े हुए थे एक मजहब के अन्धे ने कतल कर दिया। जिस पुरुष ने गोरखों की संगीनों के सामने अपनी छाती खोल दी थी और उनकी गोलियों का सामना किया था उसकी ऐसी मौत १६२० में इसी आर्य समाजी नेता ने दिल्ली की विशाल जामा मस्जिद की वेदी पर खड़े होकर हिन्दुओं और मुसलमानों के एक बहुत बड़े जन समूह को एकता का और भारत वर्ष की आजादी का उपदेश दिया था। उस विशाल भीड़ ने 'हिन्दू मुसलमानों की जय' के नारों से उनका स्वागत किया था और मस्जिद से बाहर गलियों में उन्होंने उस ध्वनि को अपने खून की एक मुहर लगा दी थी। और अब अपने ही देश भाई द्वारा मारे जाकर उनके प्राण पखेरू उड़ गये। हत्यारा यह समझता था कि वह एक ऐसा काम कर रहा है जो उसे बहिश्त को ले जाएगा।

विशुद्ध शारीरिक साहस का किसी भी अच्छे काम में शारीरिक कष्ट सहने और मृत्यु तक की भी परवाह न करने वाली हिम्मत का मैं हमेशा से प्रशंसक रहा हूँ। स्वामी श्रद्धानन्द में इस निर्भीकता की आश्चर्य जनक मात्रा थी। लम्बा कद, शाही शकल, सन्यासी के वेश में बहुत उमर हो जाने पर भी बिल्कुल सीधी, चमकती हुई आंखें और चेहरे पर कभी २ दूसरों की कमजोरियों पर आने वाली मन्यु की छाया का गुजरना—मै इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हूँ? अक्सर वह मेरी आंखों के सामने आ जाती है।

श्री चक्रवर्ती विजयराघवाचार्यः—

स्वामी श्रद्धानन्द जी ज्ञानी और महात्मा थे। उनका जीवन तथा प्राणोत्सर्ग धर्म और देश के लिये हुआ। मै उस महान् आत्मा के प्रति कृतज्ञता पूर्वक अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करता हू।

देशरत्न श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद जीः—

स्वामी श्रद्धानन्द जी स्पष्ट वादिता और निर्भीकता के मूर्तिमान् स्वरूप थे। वह निर्भीकता जिस प्रखर ज्योति के साथ अंग्रेजी सरकार के सामने चमकती थी उसी ज्योति के साथ औरों के मुकाबले में भी अपनी छटा दिखलाती थी। जो लोग काले कानून के विरोधी आन्दोलन के समय दिल्ली के चादनी चौक मे मौजूद न भी थे उनके हृदय पट पर भी स्वामीजी की वह मूर्ति अमिट रूप से चित्रित है जो सीने को अंग्रेजी गोलियों और संगीनों के सामने खोलकर हृदय की शुद्धता और निर्भीकता दिखलाती है। उसी शुद्धता ने जामा मस्जिद के मिम्बर पर से उपदेश करवाया और हिन्दू मुस्लिम ऐक्य का मनोरम दृश्य दिखलाया और उसी दृढ़ता, सत्यनिष्ठा, स्पष्ट वादिता और निर्भीकता ने आततायी के हाथों शरीरपात भी कराया। भारत के आधुनिक इतिहास मे स्वामी जी का स्थान पथ प्रदर्शक का है और जिन को साक्षात्कार का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ उनके लिये जीवन वृत्तान्त पढ़ना ही मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने वाला है। स्वामी जी ने गुरुकुल की स्थापना करके कुछ ब्रह्मचारियों के शिक्षक का ही प्रबन्ध नहीं किया, उनका सारा जीवन देश के लिये एक महान् गुरुकुल का काम कर रहा है और करता रहेगा।

श्री पं० मदनमोहन जी मालवीयः—

श्रद्धेय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का उत्कृष्ट उदाहरण युवक पीढ़ियों के लिये स्फूर्ति का स्रोत होगा जो सदा उनमे आत्मत्याग, तपस्या और कष्ट सहन की भावना का विकास करने वाला और कर्तव्य पालन में उत्साह और साहस का सचार करने वाला होगा।

प्रो० विनय कुमार सरकार आयोवा युनिवर्सिटी अमेरिकाः—

स्वामी श्रद्धानन्द जी मनुष्य जाति के एक महान् पुनर्निर्माता थे। पजाब को स्वामी दयानन्द जी के बताये मार्ग पर उत्तर भारत में की हुई स्वामी जी की सेवाओं के लिये गर्व हो सकता है।

धार्मिक चर्चा के सम्बन्ध में

(ले०— श्री बच्छराज जी सिंघी आनरेरी मजिस्ट्रेट सुजानगढ़)

गत अक्तोबर के सार्वदेशिक मे धार्मिक चर्चा शीर्षक श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति का एक लेख मैंने देखा जिसमे उन्होने डूगरगढ़ के जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सम्प्रदाय के आचार्य महाराज श्री तुलसीराम जी स्वामी से उनके धार्मिक विषय पर हुए वार्तालाप के विषय मे लिखा है। इसमे तो कोई सन्देह ही नहीं है कि श्री आचार्य महाराज संस्कृत प्राकृत भाषा के वडे विद्वान् तथा कवि हैं। आपके अनुशासन मे इस समय उनके साधु साध्वियो का समुदाय विद्याध्ययन मे बहुत सुन्दर प्रयत्न कर रहा है। जैन कहलाने वालो के इस समय दिगम्बर और श्वेताम्बर नाम से मुख्य दो सम्प्रदाय है। श्वेताम्बर जैन मे भी नाना विषयो पर मत भेद होकर मूर्ति पूजक, स्थानकवासी और तेरा पथी नाम स अलग अलग तीन सम्प्रदाय बन गये है। जिस प्रकार की एकता और सगठन इस समय जैन श्वेताम्बर तेरापथी सम्प्रदाय के साधु साध्वियो मे है वैसा अन्य किसी मे नही है। तेरा पंथी सम्प्रदाय के साधु साध्विया सब एक गुरु की आज्ञा मे चल रहे है और आज्ञा पालन करने मे सर्वदा तत्पर रहते हैं तेरापंथी सम्प्रदाय मे अनेक खूबिया है परन्तु ससार के नि.स्वार्थ परोपकार मे गृहस्थ को भी एकात पाप होने का मानकर उन्होने स्व और पर दोनों के हितोसे विरुद्ध मान्यता खड़ी करली है। संसार के जितने भी परोपकार के कार्य हो सकते हैं उनको नि:स्वार्थ भाव से करने पर भी गृहस्थ को एकान्त पाप होकर परिणाम स्वरूप दुःख भोगना पड़ता है ऐसा इनका कथन है। इस प्रकार परोपकार में एकान्त पाप मानकर मानव समाज मे उसका प्रचार होना सामाजिक व्यवस्था के लिये अत्यन्त हानिकारक है। मानव समाज परस्पर के सहयोग और सहायता पर टिका हुआ है। मनुष्य का यदि परस्पर के सहयोग और सहायता करने का भाव मिटा दिया जावे तो मानव समाज—समाज ही नहीं रह सकता—उसकी मानवता नष्ट हो जावेगी। गृहस्थी मे लिपटा हुवा मनुष्य अपने स्वार्थों के लोभ मे तो अनेक प्रकार स पाप भी कर सकता है परन्तु निःस्वार्थ परोपकार मे यदि पुण्य की भावना नहीं होकर एकान्त पाप होने की भावना हो तो ऐसा कौन अज्ञानी और मूर्ख होगाजो व्यर्थ ही अपना समय धन और परिश्रम खर्च करके पाप उपार्जन करेगा और परिणाम म अपने आपको दु खो क गर्त मे डालेगा। तेरापथी सम्प्रदाय के अतिरिक्त दिगबर, श्वेताम्बर अन्य सब जैन सम्प्रदाय ससार के नि.स्वार्थ परोपकार मे गृहस्थ के लिये एकान्त पाप नहीं मानते परन्तु पुण्य होना मानते है।

श्वेताम्बर के तीनो सम्प्रदायो (मूर्ति पूजक, स्थानकवासी और तेरापथी) के शास्त्र सब एक हैं परन्तु एक होते हुवे भी केवल शास्त्रो के अर्थ और भावो के समझने मे इन तीनो ने आकाश पाताल का अन्तर उत्पन्न कर रखा है। एक का किसी कार्य मे पुण्य कहना और दूसरे का ठीक उसी मे एकान्तपाप कहना उतना ही अन्तर है जितना प्रकाश और अन्धकार मे है।

वर्तमान आचार्य श्री तुलसीराम जी महाराज बड़े बुद्धिमान और दूरदर्शी हैं अतः ससार के निःस्वार्थ परोपकार के लिये अब वे इस प्रकार

कहने लगे हैं कि ऐसे कामो के लिये हम निषेध नहीं करते।

इन विषयों मे गृहस्थो को पूर्ण स्वतन्त्रता है। हमारे बहुत से श्रावकों ने बंगाल मे अकाल पीड़ितो की सहायतार्थ अन्न वस्त्र द्वारा सहायता की है तथा धर्मशाला, पाठशाला आदि अनेक परोपकार मे एकान्त पाप होने की मान्यता को व्यक्त करने मे भी बहुत परिवर्तन कर दिया है। ऐसे कामो को वे लोकव्यवहार, लौकिक कर्तव्य अथवा लौकिकधर्म बताकर एकान्त पाप के कथन से मानव समाज पर होने वाले बुरे परिणामो को रोकने का शुभ प्रयास करते है परन्तु मूलतः सिद्धान्त की मान्यता मे एकान्त पाप होने के कारण अधिक खुलासा चाहने पर इन्हे भी कहना पड़ता है कि इसका अधर्म वा पाप कहने मे भी हमे सकोच नहीं है जैसा कि श्री प० धर्म देवजी ने अपने लेख मे इनके विषय मे लिखा है।

किसी कार्य को अधर्म और पाप कहकर यह कहना कि इसके लिये हम निषेध नहीं करते है— यह साधुवाद नहीं। अधर्म और पाप कहने के पश्चात् तो साधु मुनिराजो का यह पावन कर्तव्य हो जाता है कि उसके लिये वे गृहस्थो को अवश्य निषेधात्मक उपदेश दे। अलबत्ता यह बात अलग है कि यदि ऐसा कार्य जिसम पृथ्वी जलादि स्था वर एवम् त्रस जीवो की हिसा सम्भव हो, करने के लिये साधु से कोई पूछ कि महाराज मैं पाठ शाला के भवन बनाने का कार्य अभी प्रारम्भ करने जा रहा हूँ कृपया आप मुझे उपदेश दीजिये तो जैनशास्त्रो के अनुसार ऐसे कामो के लिये शुद्ध साधु आदेश नहीं दे सकता कारण भवन बनाने का आदेश करता है तो त्रस स्थावर जीवो के मरने की हिसा होती है जिसका साधु को भागी बनना पड़ता है और निषेध करता है तो लोकोपकारक कार्य के लाभ से लोगो को वञ्चित करता है जिसकी अन्तराय लगती है। इसलिये साधु आरम्भ समारम्भ की वर्तमान क्रिया मे उदासीन और मौन रहता है—न निषेध करता है और न अनुमति देता है परन्तु भविष्य मे किये जाने वाले कार्य मे पाप होता हो तो गृहस्थ का समझना और निषध करना साधु के लिये आव श्यक कर्तव्य होता हे।

इनके पूर्वाचार्यो ने ससार के निःस्वार्थ परोप कार को निसकोच एकान्त पाप माना और स्थान स्थान पर खुल शब्दो म कहा तथा निषेधात्मक उपदेश दिया है जिसको इनके प्रथम आचाय महाराज श्री भीखन जी तथा श्री जयाचार्य महा राज की रची हुई ढालो और अन्य रचनाओ मे स्पष्टतया देखा जा सकता है।

वतमान आचार्य ने सम्प्रदाय म चली आने वाली अनक रूढ़ियाँ और परिवतन योग्य मान्य ताओ मे उचित परिवर्तन करके अपने सुसाहस का भी परिचय दिया है जिनके विषय म अन्य किसी लेख मे विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला जायगा। हमे आशा है कि भविष्यमे भी आचार्य महाराज इसी प्रकार अपने सम्प्रदाय की अयथार्थ मान्य-ताओ मे उचित परिवर्तन करते रहेगे।

कुछ दिनो की बात है एक सज्जन ने आचार्य महाराज से एक प्रश्न पूछा कि जेवर पहिने हुवे एक बच्चे की लोभवश एक दुष्ट ने हत्या की और एक अबोध बच्चे के छत पर से गिरकर बेहोश हो जाने पर एक व्यक्ति ने निःस्वार्थ सेवा करके होश मे लाकर उसके माता पिता को सौंपा तो

इन दोनो व्यक्तियो को पाप पुण्य और धर्म म से क्या क्या हुवा। आचार्य महाराज ने फरमाया कि दोनो व्यक्तियोको एकान्त पाप हुवा। उस सज्जन ने फिर पूछा कि महाराज दोनो मे से तब अधिक पाप किस को हुवा तो महाराज साहब फरमाने लगे कि यह तो उनके रागद्वेष के परिणामो की तीव्रता पर निभर करता है। यदि लोभवश हत्या करने वाले दुष्ट से नि स्वार्थ सेवा करने वाले दयालु के भावो मे तीव्रता अधिक होगी तो सेवा करने वाले को हत्या करने वाले से अधिक पाप होगा।

स्वामी भीखम जी ने अनुकम्पा की ढाल मे फरमाया है कि—

जितना उपकार ससार तणा छै
जे जे कर तेह मोहवस जाणो।
साधु तो त्याने कदे न सरावे, ससारी
जीव तिणरा कर बखाणो।
ससार रो उपकार किया मे
जिन धम रो अश नहीं छे लिगार।
ससार तणा उपकार किया म,
धर्म कहे ते तो मूढ गवार॥

सिद्धातो को प्रतिपादन करते समय जैन शास्त्रो म कतिपय बुनियादी दोष Defects रहे हुवे हैं। उनही का यह परिणाम है। जब तक शास्त्रो पर लोगो की अन्धश्रद्धा बनी रहेगी तब तक इन दोषो को मिटाना बहुत कठिन है। शास्त्र कारो ने शास्त्रो को सर्वज्ञ वचन अथवा भगवद्वचन बता बता कर उनपर से श्रद्धा हटाने मे अनन्त ससार परिभ्रमण का मिथ्या भय दिखा रखा है और लिखे हुवे में एक मात्रा का भी हेर फेर करने का निषेध कर रखा है। इस मिथ्या भय क कारण इस विषय पर कलम चलाने का किसी ने सत्साहस नही किया।

'जैन शास्त्रोकी असगत बातें' नाम की पुस्तक, मर लेखो का सग्रह, बुद्धिवादी सघ, ४६ स्ट्रान्ड रोड कलकत्ता से प्रकाशित हुवा है जिसको पढकर समझदार व्यक्ति आसानी से समझ सकता है कि शास्त्रो के वचनो मे सर्वज्ञता की यथार्थता किस सीमा तक प्रमाणित हो रही है।

सार जैन समाज से मैने अपील की है कि शास्त्रो म कही हुई असत्य, अस्वाभाविक और असम्भव बातो को तथा उन विधि निषधो को जो मानव हितो के विरुद्ध पडते हैं शास्त्रो से अविलम्ब हटाकर आमूल परिवर्तन करना चाहिये। हमे यदि जैन समाज मे दिन प्रतिदिन बढते हुवे सम्प्रदायो को रोकना है, समाज के टुकड टुकडे करने वाली साम्प्रदायिकता को नष्ट करना है, मानवहितो के साथ साथ एकता और सगठन को स्थापित करना है तथा शास्त्रो को विकार रहित करना है तो शास्त्रो मे रहे हुवे दोषो को अवश्य निकाल देना होगा और शास्त्रो मे अवश्य परिवर्तन करना होगा।

विचारशील विद्वानो और मानव हित चाहने वाले सज्जनो से मेरा नम्र निवेदन है कि इसके लिए कोई उचित योजना सोचें और उसे कार्य रूप मे परिणत करने का प्रयत्न करें।

[अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज आदर्श सन्यासी कर्मयोगी और परोपकार के लिये तन मन धन समर्पित करने वाले जगद्बन्धु महानुभावो मे से थे। हम चाहते हैं कि सब साधु उनके समान पूर्णतया परोपकार मय जीवन व्यतीत करके समाज राष्ट्र और जगत् का उद्धार

करें और परोपकार विषयक अशुद्ध भावनाओं को सर्वथा दूर कर दें। "परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्" यह सर्व आर्ष शास्त्र सम्मत सिद्धान्त है जिसको स्वीकार करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपना सर्वस्व परोपकार के लिये अर्पित कर दिया था। यदि सब साधुसन्यासी उनके बताये शुभ मार्ग पर चलने लग जाएं तो समस्त विश्व का कल्याण हो। सम्पादक]

स्वामी श्रद्धानन्द निराला

(कवयिता—श्री प० सत्यभूषण जी 'योगी' वेदालङ्कार लाहौर)

ऋषि से सच्चा ज्ञान प्राप्त कर।
  छोड़ दिया अपना प्यारा घर ॥
जङ्गल में जा कुटी बनाई।
  ऋषियों की शिक्षा अपनाई ॥
वैदिक संस्कृति दीप जला कर।
ज्ञान ज्योति का किया उजाला।
  स्वामी श्रद्धानन्द निराला ॥
दलितो को जा गले लगाया।
  सब पर प्रेमामृत बरसाया ॥
जाति धर्म की सेवा के हित।
  किया खुशी से सर्वस अर्पित ॥
धार गेरुआ पिया निडर हो।
देश भक्ति के रस का प्याला।
  स्वामी श्रद्धानन्द निराला ॥

जला ज्वाल मे वह जीवन भर।
  ज्वाला बढ़ी गोलियाँ खाकर ॥

फैली वह आर्यों के मन मे।
  चमकी वह उन के जीवन मे ॥

आर्यों कभी न बुझने पाए।
यह शहीद की उज्ज्वल ज्वाला।
  स्वामी श्रद्धानन्द निराला ॥

सामाजिक जगत्

पूर्वीय अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा की रजत जयन्ती

सर्व साधारण जनता को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि ५ अगस्त १९४९ ई० रविवार के दिन आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वीय अफ्रीका का रजत जयन्ती महोत्सव बड़े उत्साह से मनाया गया । सभा को इस देश में स्थापित हुए पूरे २५ वर्ष व्यतीत हो गये। इन २५ वर्षों मे सभा ने अफ्रीका देश में साधारण भारतीय जनता के वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन पर भारतीय सभ्यता तथा सस्कृति की छाप बनाए रखने मे स्मरणीय काम किया है। यह सत्य है कि भारतीय जहाँ २ भी विदेशो मे जा बसे है। उनकी धार्मिक तथा सॉस्कृतिक भूख आर्य समाज ने ही पूरी की है। और उन्हें विधर्मियो के भयकर हाथो से बचाने का भी श्रेयस्कर काम आर्य समाज ने किया है। प्रतिनिधि सभा पू. अ ईस्ट अफ्रीका की सभी समाजो की शिरोमणि सभा है। इसी के द्वारा सभी समाजो का नियन्त्रण होता है।

विनयकुमार

द० अमेरिका में प्रचारः—

श्री प्रो० भास्करानन्द जी एम ए. बी. एल एम. आर. ए. एस. ने श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम जार्ज टाऊन ब्रिटिश गयाना से पत्र लिखते हुए निम्न समाचार भेजा है जिससे पाठको को प्रसन्नता होगी।

"भगवान् की दया से ऋषि दयानन्द की कीर्ति का अचल स्तम्भ अमेरिका के इन देशो मे गड़ गया है। ब्रिटिश गयाना की राजधानी जार्जटाउन मे १०० फीट लम्बा तथा ४० फीट चौड़ा दो तल्ला आर्य मन्दिर और महा विद्यालय लगभग १७००० डालर या ४७००० रु० की लागत से बन कर तैयार हो गया है तथा काम ठीक प्रकार से चलने लगा है। साथ ही साथ ब्रिटिश गयाना को केन्द्र मान कर अमेरिकन आर्यन लीग के तत्वावधान मे ब्रिटिश गयाना, ट्रिनिडाड और सुरिनाम [डच गयाना] मे एक सूत्र में आर्य समाज का संगठन हो गया है। इस समय इन तीनो देशो मे लगभग १० हजार आर्यसमाजी हो गये हैं।

गुरुकुल वृन्दावन महोत्सव

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का महोत्सव ता० २५ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक बड़े समारोह के साथ कुल भूमि मे मनाया जायगा, इसमे आर्य संसार के उच्च कोटि के प्रसिद्ध विद्वान्, व्याख्याता तथा उपदेशक सम्मिलित हो रहे हैं, साथ ही देश के अन्य नेताओ के भी पधारने की आशा है, उत्सव के समय नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश तथा कुल की शिक्षा दीक्षा प्राप्त कर निकलने वाले स्नातकों का दीक्षान्त संस्कार विशेष रूप मे दर्शनीय होगे, उत्सव पर सम्मिलित होने वाले महानुभावो के लिए ठहरने की उचित व्यवस्था गुरुकुल की ओर से रहती है, जो सज्जन अपने विद्यार्थियो को गुरुकुल मे प्रविष्ट कराना चाहें वे गुरुकुल कार्यालय से फार्म तथा नियम मंगालें।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन.

कन्या गुरुकुल महा-विद्यालय, हाथरस का वार्षिकोत्सव

सर्व जनता को सूचित किया जाता है कि कन्या गुरुकुल हाथरस का वार्षिकोत्सव २२ दि० से २५ दिसम्बर तक बड़े दिन की छुट्टियो मे मनाया जावेगा । उत्सव की तैयारियां प्रारम्भ हो गई हैं । जो सज्जन सपरिवार उत्सव मे आना चाहें वे अभी से अपने लिए ठहरने का स्थान रिजर्व करालें।

उत्सव मे एक बृहद्-यज्ञ और कई सम्मेलन विशेष रूप से होगे। इसी अवसर पर २५ दि० को नवीन कन्याओं का प्रवेश होगा। जो सज्जन अपनी कन्याओ को प्रविष्ट करना चाहें वे कार्यालय से पत्र-व्यवहार करलें।

लक्ष्मीदेवी मुख्याधिष्ठात्री—
आचार्या

अमेरिकन ईसाई दार्शनिक का वैदिक धर्म मे प्रवेश

आर्य हिन्दू जगत् को यह जान कर हर्ष होगा कि आर्य समाज जबलपुर के विद्वान् आचार्य आयुर्वेदाचार्य श्री प० सत्य व्रतजी शास्त्री साङ्ख्य काव्यतीर्थ के साथ लगभग चार मास तक प्रति दिन वैदिक सिद्धान्तो की महत्ता के विषय मे प्रेम पूर्ण वार्तालाप तथा वैदिक ग्रन्थो के अंग्रेजी मे स्वाध्याय करने के पश्चात् अमेरिकन दार्शनिक मिस्टर ऐडवर्ड साम्युऐल हैस्लिम (Edward Samuel Haislem) महोदय ने दीपावली के अवसर पर ता० ४-११-४५ रविवार को प्रातः ६ बजे आर्यसमाज मन्दिर जबलपुर मे श्रीयुत आचार्य जी से वैदिक धर्म प्रवेश की दीक्षा ग्रहण की। आर्य नाम श्री सत्य प्रिय जी रक्खा गया यज्ञोपवीत भी धारण कराया गया।

धर्म तथा उपनयन से दीक्षित अमेरिकन श्री सत्यप्रिय जी ने अंग्रेजी में ओजस्वी भाषण दिया जिस मे पवित्र वेद तथा वैदिक धर्म की महत्ताओं का सुन्दर वर्णन किया गया और कहा कि यही विशेषतायें मैंने अपने धर्म गुरु श्री आचार्य जी से इतने समय मे सीखी हैं जिनसे आकृष्ट होकर मैं आपके इस पवित्र धर्म मे प्रविष्ट हो रहा हूँ, वास्तव मे धर्म, जीवन में धारण करने की वस्तु है न कि केवल बोलने मात्र की, मै, आप सब का, धन्यवाद पूर्वक कृतज्ञ हूं । इस शुद्धि से स्थानीय ईसाई मिश्नरियो मे खलबली मच गई है ।

मन्त्री—

आदर्श विवाहः—

श्रीयुत प० सोमाहुति जी भार्गव (मेरठ निवासी) महोपदेशक आ० प्र० नि० सभा, सिंध का शुभ विवाह श्री० राम प्रसादाख्य की रक्षिता सुपुत्री आयुष्मती कौशल्या देवी मुख्याध्यापिका आ० क० पाठशाला कर्णपुर, देहरादून से श्री० पं० जयदेव जी शर्मा चतुर्वेद भाष्यकार विद्यालंकार अजमेर द्वारा २२-११-४५ की सायं आर्य स० देहरादून मे जात पात व रूढियें तोड़कर सम्पन्न हुआ। वर वधू दोनों सुयोग्य हैं । इस अवसर पर वर पक्ष की ओर से १५०) दान स्वरूप भिन्न भिन्न संस्थाओ को दिया गया।

भवदीय—
शिवदयाल
मेरठ सदर

आर्य्य-समाज, लश्कर का ४५ वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज लश्कर का ४५ वा वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ आर्य समाज मन्दिर मे ८।११।४५ से लेकर ११।११।४५ तक मनाया गया।

श्रीयुत पं० वाचस्पतिजी ने अपने व्याख्यानो द्वारा जनता को स्तुति प्रार्थना उपासना का वैज्ञानिक स्वरूप तथा वर्ण-व्यवस्था की उत्तमता बड़े ही सरल तथा सुबोधरूप मे अपने विद्वत्तापूर्ण भाषणो मे बताई।

श्रीयुत पं० धर्मदेवजी विद्या वाचस्पति ने वैदिक धर्म का महत्व श्रोताओ के सामने बड़े सुन्दर व आकर्षक रूप मे रखा तथा दैनिक व व्यावहारिक जीवन की पवित्रता पर विशेष बल दिया।

श्री प० रामचन्द्रजी देहलवी शास्त्रार्थ महारथी के व्याख्यानो को जनता ने बड़े चाव व उत्सुकता से सुना। उनके दिलचस्प चुटकुले तर्कपूर्ण युक्तिया तथा कटुताहीन व्यङ्ग्य श्रोताओ को मन्त्र मुग्ध सा किये रखते थे।

श्री स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी ने अपने उपदेशो से जनता को आध्यात्मिक उन्नता की शिक्षा दी। श्री स्वामी परमानन्दजी की कथा तथा श्री ज्ञानेन्द जी के भजनों ने लोगो को बहुत प्रभावित किया।

आर्य समाज लश्कर के सदस्य उपर्युक्त महानुभावो के प्रति उनकी सेवाओ के लिये धन्यवाद पूर्वक कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं।

भद्रसेन विद्यालङ्कार शास्त्री एम ए.
स० मन्त्री आर्य समाज लश्कर (ग्वालियर)

वैदिक धर्म सभा डीडवाना (मारवाड़) का वार्षिकोत्सवः—

वैदिक धर्म सभा डीडवान का वार्षिकोत्सव १७ से २१ नवम्बर तक बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः श्रीस्वामी नारायणनन्दजी की अध्यक्षता मे सम्पूर्ण यजुर्वेद द्वारा यज्ञ और वेदोपदेश होता रहा। उत्सव में पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति अध्यक्ष अनुसंधान विभाग सार्वदेशिक सभा के सत्य सनातन वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द तथा सत्यार्थ प्रकाश के महत्व पर ४ विद्वत्ता पूर्ण भाषण हुए जिन का समस्त शिक्षित जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। श्री मोहरचन्द्रजी भजनोपदेशक के भजनो की भी अच्छी धूम रही।

रत्नलाल—मन्त्री वैदिक धर्म सभा डीडवाना

सार्वदेशिक दयानन्द संन्यासी वानप्रस्थ मण्डल ज्वालापुर विषयक सूचना

बहुत से आर्य भाई आश्रम मे निवासार्थ और आश्रम की दिनचर्य्या के सम्बन्ध मे प्रायः पत्र भेजा करते हैं, इसलिये ऐसे जिज्ञासुओ और आर्य जनता की सूचनार्थ निवेदन करता हूँ, कि यह मण्डल एक रजिस्टर्ड संस्था है जिसके अध्यक्ष व प्रधान श्री पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज हैं। इस मण्डल का मुख्य उद्देश आर्य संन्यासियो और वानप्रस्थियो को संगठित करना है। जिनके भोजन वस्त्र आदि के खर्च का भार मण्डल पर है, ऐसे प्रचारको को मंडल के प्रोग्राम के अनुसार बाहर प्रचार करने के लिये जाना होगा। और प्रचार के पश्चात् वे आश्रम में स्वाध्याय और विश्राम के लिये निवास कर सकते है, इसलिये ऐसे महानुभावो की सेवा मे, जिन्हें प्रचार मे लग्न है, निवेदन है कि वे मेरे से पत्र व्यवहार करें।

आश्रम में प्रातः काल नित्य प्रति सम्मिलित

दैनिक यज्ञ के पश्चात् आश्रम निवासियों को एक योग्य पंडितजी वेद अध्ययन कराया करते हैं और आश्रम निवासी सम्मिलित वेद का पाठ करते हैं। इसी प्रकार सायंकाल को एक घंटा सत्संग होता है, जिसमे वेद और सत्यार्थ प्रकाश से कथा होती रहती है और बारी २ से आश्रम निवासी (पुरुष और देवियाँ) कार्यवाई मे भाग लेते रहते है। आजकल श्री पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज उपनिषदो की कथा कर रहे हैं।

सम्मिलित भोजन के लिये आश्रम मे एक भंडार भी है। इसके अतिरिक्त एक पुस्तकालय है और दैनिक व साप्ताहिक समाचार पत्रिकाए मण्डल के नाम आया करती हैं, इसीलिये आर्य भाई और बहिनें जिन्हें आध्यात्मिक उन्नति और कुछ समय पश्चात् बानप्रस्थ और संन्यास आश्रम मे दीक्षित होने की भावना हो, वही केवल निवासार्थ पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

आशा है कि आर्य जिज्ञासु और प्रचार के प्रेमी सज्जन इस सस्था से संगठित होकर अपना कर्त्तव्य पालन करेंगे और लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे।

आश्रम मे एक धर्मार्थ औषधालय भी है, जिसमे कोई अनुभवी विरक्त वैद्य सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता है। मण्डल को उनके निर्वाहार्थ देने में प्रसन्नता होगी और मण्डल ऐसे सज्जनो का हार्दिक स्वागत करता है।

निवेदक

सुन्दर दास आर्य बानप्रस्थी मत्री

आर्य कुमार जगत्

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषत्-परीक्षा विभाग की सूचनाए

धार्मिक परीक्षाओं की तिथिया

अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परषद् की धार्मिक परीक्षाए गत वर्षों की भाति इस वर्ष भी २० जनवरी तथा २७ जनवरी सन १६४६ ई० को भारत के लगभग १५० केन्द्रों में होंगी। सिद्धान्त शास्त्री आदि चारों परीक्षाओं के पहले और दूसरे प्रश्न पत्र ता० २० जनवरी को तथा सि० भास्कर और सि० शास्त्री के तीसरे और चौथे पत्र २७ जनवरी को होंगे। पहला प्रश्न पत्र प्रात १० बजे से १ बजे तक तथा दूसरा १॥ बजे से ४॥ बजे तक हुवा करेगा। परीक्षाओं का सामान सब केन्द्रों मे १० जनवरी तक न पहुचे तो तत्काल कार्यालय को सूचित करना चाहिए।

दिल्ली प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् का प्रथम वार्षिक सम्मेलन

ता० ९ १० ११ दिसम्बर सन् १६४५ को श्री प्रो० सूर्यदेव जी सि० शास्त्री के सभापतित्व मे हो रहा है।

सयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् के प्रधान का दौरा

श्री राज गुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री न्याय भूषण-प्रधान संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् ने निम्न कुमार सभाओं का पुन सगठन किया–

बादा कुमार सभा जो ५ वर्ष से टूट गई थी, अब ३० सदस्य बन गये और कार्य सुचारु रूप से चलने लगा है। जिला पीलीभीत के आर्य समाजों के मन्त्री तथा प्रधानों से मिलकर कुमार सभाओं की आवश्यकता बतलाई और स्थापितों को समुन्नत करने का वचन लिया। आपने पूरन पुर कुमार सभा का भी निरीक्षण किया। आप शीघ्र ही बिजनौर जिले की कुमार सभाओं का दौरा करेंगे।

मेरठ जिला आर्य कुमार परिषद्

गत वर्ष की भाति इस वर्ष भी गङ्गा स्नान के मेले के अवसर पर श्री प० ओ३म् प्रकाश जी त्यागी के सभापतित्व में आर्य युवक सम्मेलन हुआ।

देवी दयाल कार्यालय मन्त्री
भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्
दीवान हाल देहली।

"आय वीर दल शिक्षण शिविर"

समस्त आर्य वीरों को यह सूचित किया जाता है कि योग्य शिक्षकों का अभाव अनुभव करके यह निश्चय किया गया है कि फ्रंटियर, पजाब तथा देहली प्रान्त के लिये गुरुदत्त भवन लाहौर ता० २३ १ ४५ से १ २ ४६ तक एक शिक्षक शिक्षण शिविर श्री सत्य बन्धु जी दलपति पजाब प्रान्त तथा श्री ओम्प्रकाश जी स० प्रधान सेनापति अ० भा० आर्य वीर दल की अध्यक्षता मे लगेगा। इस शिविर मे समस्त दलों के नायकों का आना अत्यावश्यक है क्योंकि इस शिविर मे सशोधित कोर्स निश्चित विचारधारा तथा नया उत्साह दिया जायगा। अलग २ दलों में प्रचार करने की कठिनाई को अनुभव करके ही यह शिविर लगाया जा रहा है इसलिय अत्यव

नायक को आदेश दिया जाता है कि इस शिविर में अपना प्रतिनिधि अवश्य भेजे। शिविर-व्यय के के लिये श्री पं० ज्ञानचन्द्र जी बी० ए० अधिष्ठाता आर्य वीर दल गुरुदत्त भवन रोड लाहौर से पत्र-व्यवहार करना चाहिये। शिविर में आने वाले वीरों को सफेद कमीज, सेन्डोकट बनियान, निकर (खाकी), लोटा, थाली तथा यथेष्ट बिस्तर लाना चाहिये।

ओमप्रकाश
स० प्र० सेनापति
अ० भा० आर्य वीर दल

आचार्य राम देव जी

(कवयिता—प उदयवीर जी वेदालङ्कार देहली)

भारत की प्राचीन सभ्यता,
की धुन मे थे वे दीवाने॥
एक लगन थी, एक ध्येय था।
वेद ज्योति के थे परवाने॥

थे अगाध विद्या के सागर।
दयानन्द के वीर सिपाही।
निशि दिन अपने पथ पर बढ़ते।
कभी न रुकने वाले राही॥

साहित्य समीक्षा

जैन शास्त्रों की असङ्गत बातें—लेखक श्री बच्छराज जी सिंघी उप प्रधान म्युनिसिपल बोर्ड सुजान गढ। प्रकाशक–मन्त्री बुद्धिवादी सङ्घ ४६ स्ट्रान्ड रोड कलकत्ता पृ० २२८ मूल्य १।)

इस पुस्तक के लेखक श्री बच्छराज जी एक बड़े योग्य जैनी स्वतन्त्र विचारक सज्जन हैं जिन्होंने वर्तमान जैन सूत्रों में वर्णित अनेक असत्य, असम्भव और अस्वाभाविक बातों का सप्रमाण दिग्दर्शन कराकर जैन विद्वानों से प्रार्थना की है कि "इन सब शास्त्रों का प्रारम्भ से आखिर तक सब का सशोधन होना चाहिये और इनमें के असत्य अस्वाभाविक और असम्भव प्रमाणित होने वाले तथा मानव हितों के विरुद्ध पड़ने वाले वाक्यों तथा पाठों को हटा देना चाहिये। केवल उन वचनों को रखना चाहिए जो मानव जीवन का निर्माण तथा कल्याण करने वाले हों।" ध० दे०

देखना चाहिए कि जैन विद्वान् इनकी प्रार्थना पर कितना ध्यान देते हैं। यह तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि इस पुस्तक ने जैन मतावलम्बियों में एक विचार क्रान्ति सी उत्पन्न कर दी है। पुस्तक अच्छी शैली में लिखी हुई और सभी विचारकों के लिए उपयोगी है जिसके लिए लेखक महोदय धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं।

वैदिक नित्यकर्म पद्धति—सम्पादक—श्री पूरनचन्द्र जी उपप्रधान अजमेर आर्य समाज मूल्य ≡॥

इस पुस्तक में प्रात काल उठ कर तथा सोते समय बोलने योग्य वेदमन्त्र, ईश्वर स्तुति प्रार्थनो पासना, स्वस्तिवाचन, शान्ति प्रकरण, सन्ध्या हवन, बलि वैश्वदेव यज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ आर्यों के पर्व, १६ संस्कारों का समय, पुरुष सूक्त, यज्ञोपवीत मन्त्र इत्यादि के अतिरिक्त अन्त में १६ उपयोगी भजन दिये गये हैं। इस प्रकार यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी बन गई है। पृ० २२ पर 'स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा' इस वेदमन्त्र को 'चन्दन लगाने का मन्त्र' इस शीर्षक के नीचे लिखा गया है जो एक कोरी कल्पना मात्र है। इसके इस प्रकार के विनियोग के लिये हमें कोई प्रमाण किसी प्रामाणिक ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं हुआ। सम्पूर्णतया पुस्तक अत्यन्त उपयोगी और सस्ती है।

प्रिय ग्राहकों से निवेदनः—

'सार्वदेशिक' के कुछ पुराने अङ्क 'सार्वदेशिक' के प्रेमी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि इसके निम्न मासों के विशेषाङ्कों की जो अधिक सख्या मे छपवाये गये थे कुछ प्रतियां अवशिष्ट हैं जिन्हें प्रचारार्थ छ आ० प्रति अङ्क के हिसाब से देने का निश्चय किया गया है। ग्राहक तथा अन्य आर्य महानुभाव उन्हें प्रचारार्थ मगा कर नये ग्राहक बनवाने में विशेष सहायक बन सकते हैं। वैसे भी प्रचार में इन से विशेष सहायता ली जा सकती है।

(१)फरवरी सन् ५५ का 'सत्यार्थप्रकाश चतुर्दश समुल्लासाङ्क' जिस में श्री म[illegible] [illegible] स्वामी जी, प्रो महेशप्रसाद जी मौलवी आलम फाजिल प० सूर्यदेव जी शर्मा एम [illegible] लिट, प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार, प० धर्म

देव जी विद्यावाचस्पति, प्रो० हरिदत्त जी वेदालङ्कार आदि महानुभावों के विद्वत्ता और गवेषणापूर्ण तुलनात्मक लेख सत्यर्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लास के विषय में प्रकाशित हुए हैं।

(२) अक्तूबर १६४५ का अङ्क जिसमें वेदों में विज्ञान तथा इस्लाम में सुधार की आवश्यकता इत्यादि पर तुलनात्मक लेख प्रकाशित हुए हैं।

(३) नवम्बर १६४५ का ऋष्यङ्क जिसमें महर्षि दयानन्द जी तथा वेदाध्ययन के अधिकारादि विषयों पर अनेक विद्वानों के उत्तम लेख हैं।

प्रत्येक ग्राहक महानुभाव वर्ष में कम से कम ५ मित्रों को ग्राहक बनाने का प्रयत्न करे तो विशेष लाभ हो सकता है। आशा है हमारे प्रेमी ग्राहक बन्धु इस कर्त्तव्य का पालन प्रसन्नता से करेंगे। व्यवस्थापक 'सार्वदेशिक'

Atomic Bombs

A statement issued to the press by Shri Mahatma Narayan Swamiji, the head of the Arya Samaj Movement in India and the President of the International Aryan League Delhi, in connection with the use of the Atomic Bomb

The use of the Atomic Bomb is now universally cond mned, but the condemnation has not been effective The Imperialistic Governments responsible for the use of this bomb are still gloating over the Victory achieved in the speediest possible way Modern Civilization has proved its bankruptcy in moral and spi itual values There is no sadder spectacle of Humanity than its own helplessness in crying halt to the Imperialistic Governments from the indiscriminate use of destructive powers which science has placed in their hands

Sir Stafford Cripps has recently declared that the Atomic bomb is the most disastrously destructive discovery ever made by man and the most compelling force ever set in motion to bring about *a speedy solution to the age old problem of how to avoid war*"

The first portion of Mr Cripp's declaration is undoubtedly true, but the conclusion is absolutely wrong and speaks of the great illusion under which the present day statesmen are labouring No destructive power, as a matter of fact, can ever help in avoiding wars and bringing about peace, in the world Peace springs up in human hearts and if those hearts are corrupt and filled with the lust of power politics surely no use of atomic bombs will establish peace Man the wielder of these destructive powers, must first be radically changed

What a great tragedy in human history that the use of atomic bomb was made by America, which hitherto boasted of her great Idealism The thinking world was horrified when it realized that the atomic bombs were dropped with out any propaganda warnings and that one bomb was enough to kill 2½ lacs of people in a single city of Japan

Imagine what would happen if other countries become aware of the use of these bombs! No secret in the scientific world can be maintained for a very long time We must be prepared for the entire destruction of Humanity and of civilization if it does exist The prospects are gloomy indeed But shall we look upon this prospect with equanimity ? Shall we not stir and do something to change this world situation ?

I call upon the religious minded people of the whole world, who still have faith in the moral and spiritual values, and who believe in the higher purposes of humanity, to come out openly, discarding all fears of their governments, and assemble in a world congregation, at a place and in a country congenial for the purpose, to lodge a strong, unmistakable protest against this diabolical use of atomic bomb by the imperialistic powers of the world Let masses in all countries be roused against this tragedy My appeal is specially directed to the hearts of the scientists, philosophers theologians and followers of all living religions in all countries, whose support the imperialistic powers always seek for propping up their claims to humanity and justice Let that support be withdrawn if they do not heed their timely warning

Naranyan Swami

6 10-45

अप्यधिकारः अतएव प्रावृता यज्ञोपवीतिनी–मभ्यु दानयन् (गोभिल २ । १ । १९) मनसा भर्तुरति चारे सावित्र्या अष्टशतेन जुहुयात् पूता भवति (वसिष्ठ स्मृति २० । ५) इत्यादि उपलभ्यते च प्राचीनेतिहासेषु सीता महाश्वेतादीना सन्ध्योपा सनमपि" । (जैमिनीय न्यायमाला विस्तार पृ० ३ ५ आनन्दाश्रम प्रस)

अर्थात् इस अधिकरण के अनुसार उपनयन में स्त्रियों का भी अधिकार है इसी लिये स्त्रियों के लिये यज्ञापवीतिनीम्' यह विशेषण गोभिल गृहयसूत्र मे आया है तथा वसिष्ठ स्मृति मे स्त्रियों के १०८ बार गायत्री को जप करके हवन करने का विधान है। प्राचीन इतिहासों में सीता महा श्वेता आदि के सन्ध्योपासन का स्पष्ट वर्णन है।

हम महामहोपाध्याय प० शिवदत्त जी के उपर्युक्त लेख तथा अन्य प्रमाणोंकी ओर मान्य श्री पं० मदनमोहन जी मालवीय तथा अन्य सनातन धर्मावलम्बी विद्वानों का ध्यान आकर्षित करते हुए उनसे उदारता प्रदर्शित करने का अनुरोध करते हैं।

एक दाक्षिणात्य आर्य का दुःखद अवसान

हमे यह जान कर अत्यन्त दु ख हुआ कि द० कर्णाटक प्रात के एक अ यन्त उत्साही और परिश्रमी अवैतनिक आय कार्यकर्ता, मगलौर आर्यसमाज के प्राण, श्री श्रद्धानन्द अनाथालय और विद्या बोधिनी पाठशाला (मगलौर) के सस्थापक श्री गोपाल नायक जी का सप काटने स अकस्मात् दुःखद देहावसान हो गया। हम दिवगत पवित्रात्मा की सद्गति और उनके सम्ब न्धियों को शान्ति प्रदान करने के लिये भगवान् से प्रार्थना करते है। उनके विषय मे श्री मजुनाथ जी सि० भू० का लेख हम अगले अङ्क में अपनी टिप्पणी सहित प्रकाशित करेंगे।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति

आवश्यकता

सार्वदेशिक सभा पुस्तकालयार्थ निम्न पुस्तकों की विशेष आवश्यकता है जो सज्जन या समाज उपहार स्वरूप भेज सकें शीघ्र भेजने का कष्ट करें अथवा सूचित कर दें।

(१ सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम (सन् १८७५) से ५ म संस्करण तक
(२) गीता प्रदीपाय भाष्य—प० आर्य मुनि जी कृत
(३) ईश्वरीय ज्ञान वेद (२ भाग) बा बाल कृष्ण जी कृत
(४) मानवार्य भाष्य–पं० भीमसेन जी कृत
(५) Encyclopedia of Islam 10 Volumes
(६) Encyclopedia of Religions and Ethics 12 Volumes

पुस्तकालयाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
बलिदान भवन देहली।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।

आय व्यय चित्र १३-२-४४ से १३-२-४५ तक

आय

विविध दान	२४५१।)	
दान स्थापना दिवस	११७१=)	
	३६२२।=)	३६२२।=)
पंचमांश	१७८०।=)६	
दशांश	३८७)	
	२१६७।=)६	२१६७।=)६
सूद व मकानों का किराया	७८१८≡)	
सूद रक्षा निधि	१०००)	
	८८१८≡)	८८१८≡)
आय दक्षिण प्रचारार्थ		
श्री बिरलाजी से	४८००)	
अन्य दान	६३८।=)६	
	५४३८।=)६	५४३८।=)६
	योग	२००४६।।=)
दक्षिण प्रचार का शेष धन लिया		२८०३।।।)१
	सर्व योग	२२८५०।=)१

वास्ते जगदीश प्रसाद एण्ड कम्पनी

ह० जगदीशप्रसाद बी ए. बी कोम (बम्बई)।

जी डी ए आर ए. रजिस्टर्ड एकाउन्टेन्ट

आडीटर्स चादनी चौक देहली। ६ ४ ४५

रघुनाथ प्रसाद पाठक — एकाउन्टेन्ट

सुधाकर एम. ए. — मन्त्री

व्यय

सार्वदेशिक पत्र कागज छपाई पोस्टेज इत्यादि	३८००।।।-)६	
वेतन लेखक	४५०)	
	४२५०।।।-)६	
आय चन्दा व विज्ञापन	३६३६।।।-)६	
	६११)३	६११)३
कार्यालय		
वेतन उपमन्त्री	१६२०)	
अन्य व्यय	३२४८।।।-)	
प्रोवीडेन्ट फण्ड	३६२≡)	
	५२६१,३	५२६१)३
टैक्स व मरम्मत इत्यादि		
बलिदान भवन	४५८।-)७	
सार्वदेशिक भवन	५४२।।=)	
	१००१।≡)७	१००१।≡)७
मार्ग व्यय अन्तरग सदस्य		२०७।।)
संगठन कार्य आर्यवीर दल		२४६५।≡)
प्रचार व्यय		
दक्षिण प्रचार	१०८८५=)	
गढवाल ,,	३७८=)	
संथाल ,,	६५७≡)	
उडीसा ,,	८६७।≡)	
केन्द्रीय आर्य धर्म रक्षा समिति प्रचार	२०४।।)६	
पुस्तक प्रचार	२६६।।-)३	
	१३२८६≡)६	१३२८६≡)६
इस वर्ष की बचत		१४।≡)३
	सर्व योग	२२८५०।=)१

नारायण दत्त — कोषाध्यक्ष

गंगाप्रसाद एम. ए. — प्रधान

बेलेंस शीट आगामी अङ्क मे प्रकाशित की जाएगी। —सम्पादक सा० दे०

श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये लाला सेवाराम चावला द्वारा "चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस" श्रद्धानन्द बाजार देहली में मुद्रित।